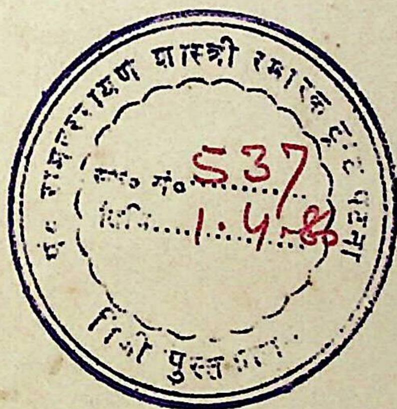
— होमियोपैथिक —

पारिवारिक चिकित्सा

एम. भट्टाचार्य एण्ड कं.

2·3

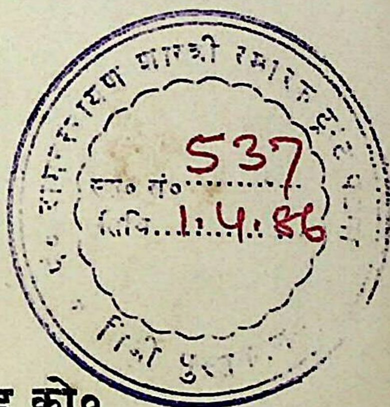


होमियोपैथिक

पारिवारिक चिकित्सा

द्वितीय खण्ड

दसवाँ संस्करण



एम० भट्टाचार्य एण्ड को०

कर्तृक

संगृहीत और प्रकाशित

८४, क्लाइव स्ट्रीट, कलकत्ता

ई० १९४५

दाम ६) रुपया

खाद्य-विषाक्तता
(Food Poisoning)

खाद्य-विषाक्तता (अर्थात् भोजनके पदार्थोंका विष फैल जाना) बहुत तरहका हो सकता है। विषैले उद्भिद, जानवरोंका दूध इत्यादि खानेकी वजहसे या ताँबेके और ऐल्युमीनियमके बर्त्तन आदिमें रसोई बनाना और इन धातुओंमें सिझाये पदार्थ आदि खाना वगैरह बहुतसे कारणोंसे यह विष फैल सकता है। कभी-कभी तो ऐसा होता है, कि भोजन करनेके साथ-ही-साथ मृत्यु हो जाती है और किसी-किसी स्थानपर वमन, पतले दस्त इत्यादि होकर मृत्यु हो सकती है और किसी-किसी जगह यह विष धीरे-धीरे पैदा होकर जीवनका अन्त हो जाता है।

भोजनके साथ साधारणतः छिपे भावसे क्षय-रोग, टाइ-फायड, क्रिमि वगैरहके जीवाणु शरीरमें प्रवेशकर रोगको फैला सकते हैं। कितने ही समय बड़ी-बड़ी बैरकें, होस्टल या छात्र-निवास और उत्सव आदिमें भोजनके पदार्थों में इस विषके फैल जानेके कारण जो खाता, वही रोगी हो जाता है। कभी-कभी ऐसा भी होता है, कि रसोई बनानेके समय, रसोइयाकी असावधानीसे या उसे दिखाई न देनेके कारण कोई विषैली चीज़ या प्राणी खाद्य-सामग्रीके साथ मिलकर भोजनको विषैला बना देते हैं। ऐसी जगह प्रायः बहुतसे आदमी मर जाया करते हैं। एक बात यह भी है, कि सभीपर एक तरहका

विष एक समान ही प्रभाव नहीं जमाता, इसके सिवा यदि वह विष एकदम मारात्मक मात्रामें न हुआ, तो कोई प्रभाव नहीं होता। साथ ही ऐसा भी होता है, कि एक मनुष्यके लिये जो सांघातिक है, दूसरा उसे सहजमें ही पचा जाता है। उसपर उस विषकी कोई भी क्रिया नहीं होती। ताँबेके बर्त्तनमें रसोई बनाने या खट्टी चीज़ रखनेपर या गर्म तर पदार्थ ताँबे या पित्तलके बर्त्तनमें रखनेपर, ताँबेका विष या गुण उस पदार्थमें मिल जाता है, इससे वमन, पतले दस्त, अकड़न इत्यादि ताँबेके विषके लक्षण प्रकट हो जाते हैं। इस समय ऐल्युमोनियमके बर्त्तन बाज़ारमें सस्ते दामोंमें बिक रहे हैं। लोग नहीं जानते, कि इसमें कौन-सा विष है। इसका सस्ता दाम तथा चमकीलापन देखकर धनी, दरिद्र सभी ऐल्यु-मोनियमके बर्त्तनमें रसोई बनाने लगे हैं। इसका परिणाम यह हुआ है, कि अजीर्ण, अम्ल, पित्त-शूल, पाकाशयका जखम, स्नायवीयता प्रभृति बीमारियाँ हो जाया करती हैं और थोड़ा-सा ख़याल न रखनेके कारण सदाके लिये बेकार हो जाते हैं और जीवनभर दुःख, कष्ट भोगा करते हैं।

रसोई बनानेके काममें, भारतवर्षके हिन्दुओंकी पद्धति समस्त संसारमें आदर्श है। रसोईके प्रायः सभी बर्त्तन आदि प्रत्येक बार रसोई बनानेके पहले और बाद माँजे ज़ाते हैं। इससे सफाई तो रहती ही है, साथ ही भोजन भी साफ़ बनता है और रोगके आक्रमणकी सम्भावना बहुत कुछ घट जाती है। जहाँ रोज़ बासन माँजनेकी सुविधा

नहीं है, वहाँ नये मिट्टीके बने बर्त्तनका व्यवहार करना उचित है।

यदि खाद्य विषाक्तताके लक्षण आदि प्रकट हों तो तुरन्त पासके किसी अच्छे चिकित्सकको बुलाना चाहिये। चिकित्सकके आनेके पहले ही रोगीको शय्यामें सुला देना चाहिये और जलीय पदार्थ (थोड़े परिमाणमें) खिलाना तथा सोडा-वाटर आदि पिलाना चाहिये। रोगी यदि निर्जीव हो पड़े तो शरीरपर गर्म सेंकका प्रयोग करना चाहिये तथा त्वचा और गुह्यद्वारकी राहसे नमक मिले पानीकी पिचकारी या डूश और उत्तेजक दवाएँ आदिका सेवन कराया जा सकता है। यदि यह मालूम हो कि पाकाशयमें विषैला पदार्थ है, तो तुरन्त वमन लानेवाली दवाका प्रयोग करना चाहिये।

जिस विषसे विषाक्त हुआ हो, उसकी प्रतिषेधक दवाका भी प्रयोग करना चाहिये। पाइरोजेन, कार्बो-वेज, कार्बो-ऐनिमेलिस, नक्स-वोमिका, ऐल्युमिना प्रभृति होमियोपैथिक दवाएँ लक्षणके अनुसार प्रयोग करनेपर विशेष लाभ दिखाई देता है।

———



अन्त्र-प्रदाह

(Enteritis)

पाकस्थलीके नीचे "अन्त्र" (आतें या नाड़ी) है (दूसरा चित्र देखिये)। आँतोंके दो अंश हैं—(क) छोटी आँत small intestine (प्रायः चौदह हाथ लम्बी); (ख) बड़ी आँत large intestine (प्रायः चार हाथ लम्बी)। छोटी आँतकी अपेक्षा बड़ी आँत ज्यादा मोटी और छोटी आँतको प्रायः घेरे हुई है (ज्यादा हालके लिये, हमारा प्रकाशित "नरदेह परिचय" और इस पुस्तका आरम्भिक अंश "मानव-शरीरकी रचना" देखिये); बड़ी और छोटी दोनों ही आँतोंमें प्रदाह हो सकता है।

(क) वृहदन्त्र-प्रदाह

(Mucous Bolitis)

बड़ी आँत बहुत समयतक प्रदाहित रह जाये तो उससे आम या स्लेष्मा निकलता है। यह रोग सहजमें ही अच्छा नहीं होना चाहता। हाइड्रेस्टिस १x (पाकाशयमें दर्द या टटाना ; पेटमें खालीपन मालूम होना, तीता स्वाद), मर्क, आस, कोलचि वगैरह इसकी उत्कृष्ट दवाएँ हैं।

बड़ी आँत प्रदाहित हो जाये तो उसे "रक्तामाशय" कहते हैं ("रक्तामाशय" देखिये)।

(ख) क्षुद्रान्त्र-प्रदाह

(Inflammation of the Small Intestine)

छोटी आँत प्रदाहित होनेपर—पहले कम्पके साथ बोखार ; पेटमें (खासकर नाभीके चारों ओर) लगातार तेज़ दर्द होता है और दबाव पड़नेसे यह दर्द बढ़ता है ; धीरे-धीरे दर्द इतना बढ़ जाता है, कि रोगी हिल नहीं सकता और दर्दके कारण रोगी चित होकर पड़ा रहता है और वाध्य होकर घुटने समेटकर पेटके ऊपर रख लेता है ; अरुचि, कब्जियत, मिचली, पेट फूलना, पेटमें शब्द होना, गड़गड़ाहट, कभी-कभी पतले दस्त आना वगैरह लक्षण दिखाई देते हैं।

यह रोग छोटे बच्चोंको ही ज्यादा होता है। इसमें तेज़ बोखार प्रभृति मारात्मक उपसर्गके साथ अतिसार होकर मृत्यु हो जाती है। गरमीके दिनोंमें यह ज्यादा होता है।

चिकित्सा।—बोखार और प्रदाह घटानेके लिये, **एकोनाइट ३x**। बोखार, प्रदाह, शीत, चेहरा लाल, सरमें दर्द और पतले दस्तके लक्षणमें **बेलेडोना ३**। नाभीके चारों ओर जलन-जैसा तेज़ दर्द, बहुत कमजोरी और सुस्ती, खाने-पीने बाद ही कै, दस्त पानी जैसा या खून-भरा, लगातार तेज़ प्यास, परन्तु थोड़ा पानी पीनेसे ही थोड़ी देरके लिये तृप्ति मालूम होना लक्षणमें **आर्सेनिक ३x—६**। बहुत काँखनेपर खून-मिले श्लेष्माका दस्त होनेपर **मर्क-कोर ६**।

छोटी आँतमें दर्दके साथ बोखार, पाखानेका वेग, बहुत पेट , नाभीके चारों ओर सिकुड़नेकी तरह दर्द, सारे पेटमें दर्द और मिचलीके लक्षणमें, **कोलोसिन्थ ६** । छोटी आँतमें सामान्य प्रदाहके साथ (या विभिन्न प्रकृति और अनेक रङ्गोंके दस्तके साथ) अतिसार, सवेरे रोग बढ़ना, सब शरीरका रङ्ग पीला, पेट फूलना प्रभृति लक्षणोंमें, **पोडोफाइलम ६** । बार-बार पाखाना लगना, पाखाना होनेके बाद दर्दका घटना, पेटमें वायु-सञ्चय, हर बारका दस्त दूसरी तरहका ; गरमीके दिनोंके पतले दस्त वगैरह लक्षणोंमें **पल्स ३** । पतले दस्तोंके साथ कै या मिचलीके लक्षणमें, **इपिकाक ३x—६** (पल्सेटिलाके पहले या बाद सेवन करना चाहिये) । बार-बार वेगसे दस्त, पेटमें दर्द, सर्दी मालूम होना, कपालमें पसीनेके लक्षणमें, **विरेट्रम-एल्ब ६** । पतला श्लेष्मा भरा दस्त और बहुत शीत, कैल्के-कार्ब ६ (खासकर बच्चोंकी बीमारीमें) । बहुत तेज़ दर्दमें पाइरोजिन ३० की परीक्षा करनी चाहिये । **मैग्नेशिया-फास २x चूर्ण** (गर्म पानीके साथ) देनेपर दर्द कम हो सकता है । "अतिसार" और "पाकाशयके दर्द" की दवाएँ देखिये ।

"गलित या विषाक्त पदार्थ" खाने-पीनेकी वजहसे पैदा हुए उपसर्गोंके साथ इस रोगका भ्रम पैदा हो सकता है । भेद जाननेके लिये, हमारी "हैजा-चिकित्सा" पुस्तक देखिये ।

साधारण नियम।—गर्म पानीका सेंक। रोगको प्रबल अवस्थामें साबूदाना, बार्ली और आरारूट वगैरह हलकी चीजें देनी चाहियें।

अन्त्रावरक-झिल्ली-प्रदाह

(Peritonitis)

निचले पेट और आँतके भीतरी भाग झिल्लीके द्वारा ढँके हुए हैं, उस झिल्लीको "अन्त्रावरक-झिल्ली" (peritoneum) कहते हैं। इस झिल्लीके प्रदाहको "अन्त्रावरक-झिल्लीका प्रदाह" कहते हैं। बच्चेकी नाभी प्रदाहित हो जाती है, तो "अन्त्रावरक-झिल्लीका प्रदाह" भी हो जाया करता है। इसके अलावा सर्दी लगना, नश्तर लगना (surgical operation), चोट लगना, खूनकी विषैली क्रिया (pyæmia, septicæmia etc.), पाकाशयकी आँतोंका छिद्र (perforation) होना वगैरह कारणोंसे "अन्त्रावरक-झिल्ली-प्रदाह" होता है।

जाड़ा लगकर बोखार होना, पेट फूलना, पेटमें दर्द, ऐंठन, कै और हिचकी, पेटमें वायु इकट्ठा होनेके कारण डकार आना, कब्जियत, पाखाना-पेशाब रुक जाना, रोगीका चित्त होकर सोना, नाड़ी क्षुद्र, द्रुत, तीरकी तरह होना वगैरह इस रोगके प्रधान लक्षण हैं।

चिकित्सा

ऐकोनाइट ३x ।—रोगके आरम्भमें बहुत फायदा करता है। **बेलिडोना ३**—तेज़ बोखार, नाड़ी भरी, माथे या छातीमें रक्त-सञ्चय, पेट फूला और कराहता, पेशाब बन्द, पित्तकी कै वगैरह लक्षणोंमें फायदा करता है। पतन या हिमाङ्गावस्थामें—**कार्बो-वेज ३०** ; पेटकी गड़बड़ीके साथ मूत्राशयमें कूथन रहनेपर—**कैन्थरिस ३** ; गहरी सुस्ती, बराबर कै, पेटमें जलन, शूलकी वेदना, ठण्डा पसीना वगैरह लक्षणोंमें—**आर्सेनिक ३** ।

मर्क-वा ६x, मर्क-कोर ६, कोलचि ६, ओपियम ६, नक्स-वोम ३, कोलोसिन्थ ६, सलफर ३०, लाइको ३x चूर्ण (पेटमें वायु-सञ्चय), ब्रायोनिया ३, विरेट्रम-ऐल्ब ६ या टेरिबिन्थिना वगैरह दवाएँ भी बीच-बीचमें आवश्यक हो सकती हैं।

पेट ज्यादा फूलनेपर गर्म पानीका सेंक या तीसीकी पोल्टीसके साथ चार-पाँच बून्द तारपीनका तेल पेटपर लगानेसे अच्छा फल दिखाई देता है। नयी बीमारीमें हलका पथ्य देना चाहिये।

रोगका पुराना आकार धारण करनेपर मर्क्यूरियस-डलसिस ३ विचूर्ण या लाइको ६x विचूर्ण सेवन करना चाहिये।

पतले दस्त आनेपर "अतिसारकी दवाएँ" देखिये। "गुटिका-दोष" रहनेपर—आर्स ३x—६, सल्फर ३०, कैल्के-कार्ब ६-३०।

जरूरत पड़नेपर नश्तर भी लगवाया जा सकता है।

शूल-वेदना (अम्लशूलादि)

(Colic)

शूल-वेदना बहुत तरहकी होती है। इनमें बड़ी आँत या आँतकी पेशियोंके अकड़नेके कारण जो शूल होता है, उसे अम्ल शूल कहते हैं। शूल-वेदनामें बहुत तकलीफ़ होती है। इसमें अकसर बोखार नहीं रहता। दर्द और वमन (या मिचली) रहनेपर उसे पित्त-शूल कहते हैं। पेट फूलना और दर्द रहनेपर, उसे आध्मान-शूल कहते हैं। पेट (खासकर नाभीके चारों ओर) मरोड़ या खींचनकी तरह दर्द, दबानेसे दर्दका कम मालूम होना, कब्जियत, बार-बार पाखाना लगना, परन्तु दस्त साफ़ न होना, वायु निकलना, ओकाई या कै, पेट कड़ा हो जाना और डकार आना वगैरह लक्षण दिखाई देते हैं। भारी या उत्तेजक चीज़ खाना, ओस या सर्दी लगना, बरफ वगैरह ठण्डी चीज़ोंका बाहरी प्रयोग, पसीना रोकना, क्रिमि, कब्जियत वगैरह कारणोंसे यह बीमारी हुआ करता है। ["मूत्र-शूल", "सीस-शूल",

"पित्त-शूल", "रक्तामाशय", "ऋतु-शूल" या (बाधक-वेदना) वगैरहका पूरा हाल इस ग्रन्थमें यथा-स्थान लिखा गया है, उसे देखिये]।

चिकित्सा

कोलोसिन्थ ६, ३० ।—नाभीके चारों ओर असह-नीय खींचन या काटने या मरोड़की तरह दर्द, ज्यादा दर्दकी वजहसे रोगी बेचैन होकर छटपटाने लगता है और सामनेकी ओर झुककर दोहरा हो जाता है और वाध्य होकर हाथसे नाभी दबाये रहता है। दबानेसे दर्द थोड़ी देरके लिये घटता है, छोड़ देनेपर फिर पहलेकी तरह ही दर्द होने लगता है; कभी-कभी पेट फूल जाना, चेहरा मलिन, बहुत पेट फूलना, डकार आना, वायु छूटना और कब्जियत रहनेपर इसके साथ लाइकोपोडियम ३० (पर्यायक्रमसे) कोई-कोई व्यवहार करनेकी सलाह देते हैं।

नक्स-वोमिका ६, ३० ।—पेट फूलनेके साथ तेज़ आक्षेप और इसी वजहसे शूल, साथ ही मूत्राशयमें कतरनेकी तरह दर्द और कब्जियत।

कैमोमिला ϴ, १२ ।—नाभीके चारों ओर मरोड़ और खोंचा मारनेकी तरह दर्द, कब्जियत या पतले दस्त आना, पेट फूलना; रातमें और गर्मीमें दर्दका बढ़ना।

आइरिस-वार्स ३।—बहुत पेट फूलना; पेटके ऊपरी भागमें जलन और पित्तकी कै; मरोड़की तरह दर्द। ऊपर कही हुई तीनों दवाओंसे अगर फायदा न हो, तो इसके प्रयोगसे अकसर फायदा होता है।

मैग्नेशिया-फास २x चूर्ण।—गर्म पानीके साथ सेवन (यदि कैमोमिलाके प्रयोगसे फायदा न हो)।

डायस्कोरिया १x।—पहले नाभीके बीचमें दर्द शुरू होकर धीरे-धीरे समूचे पेटमें (पीछे सब बदनमें, यहाँतक कि अंगुलीतकमें फैल जाता है); इस दर्दके साथ पेट फूल जाना, जीभ मैल-चढ़ी, सोते रहनेपर दर्दका बढ़ना, सीधे खड़े रहनेपर और **पीछेकी ओर टेढ़े होनेपर** दर्दका घटना; खाई हुई चीज़ वमन करनेके साथ एकाएक शूलका दर्द और गर्भावस्थामें पित्तसे पैदा हुए शूलमें भी यह लाभ करता है।

विरेट्रम-एल्बम ६।—रातमें और भोजनके बाद पेट फूलकर दर्द; पेट गड़गड़ाना और आवाज़ होना; समूचे तलपेटमें दर्द; मुँहमें पानी भर आना; मुँह और हाथ-पैर ठण्डे; ऐंठन।

ओपियम ६, ऐकोनाइट θ, प्लम्बम ६ (बहुत कब्जियतमें), बार्बेरिस-वलगेरिस θ—६ कभी-कभी व्यवहार किया जाता है।

स्त्रियोंकी गर्भावस्थामें पेट फूलनेके साथ शूल-वेदनामें काक्युलस ६; भारी चीजें खानेके बाद शूल-वेदनामें पल्सेटिला

६ या कोलोसिन्थ ६, इसके साथ कब्जियत और पेट फूलनेका लक्षण रहनेपर—पलसेटिला ६ या लाइकोपोडियम ३० ; हिस्टीरियासे पैदा हुई शूल-वेदनामें—इग्नेशिया ६ ; क्रिमिसे पैदा हुए शूलमें "क्रिमि" देखिये।

पथ्यापथ्य।—हलका पथ्य (जैसे—सागू, बार्ली, गर्म दूध) रोग दबनेपर, पुराने चावलका भात, छोटी मछलीका शोरवा, परवर, मोचा, ओल और कच्चू। पेट गर्म कपड़ेसे ढँक रखना और दोनों पैरोंमें सर्दी न लगे, इस बातपर नज़र रखनी चाहिये। जरूरत पड़नेपर, गरम पानीकी पिचकारी देनेसे पाखाना हो जाता है।

सीस-शूल
(Lead-Colic)

किसी तरह सीसा शरीरमें घुसनेपर, आँतोंमें बहुत दर्द होता है, इसीका नाम "सीस-शूल" है। जो सीसेका काम करते हैं या बहुत दिनोंतक सीसेके बर्त्तनमें खाते-पीते हैं या छापेखानेमें जो कम्पोजिङ्ग करते हैं (अक्षर जोड़ते हैं), उनके दाँतकी जड़ स्लेटके रङ्गकी हो जाती है, कब्जियत, कै और पेटमें तेज़ दर्द वगैरह लक्षण प्रकट होते हैं। टीन (या रांगा) से बने बर्त्तनमें सूँघनी या शराब रखकर उसे व्यवहार करना, सीस-पेन्सिल, सीसेकी कंघी या कलके पानीके

सीसेका नल वगैरह व्यवहार करनेसे भी कुछ-न-कुछ सीस-शूल हुआ ही करता है।

चिकित्सा।—ओपियम २x, पन्द्रह-पन्द्रह मिनटके अन्तरपर देनेसे दर्द बन्द होता है। इससे फायदा न हो, तो ऐल्यूमेन ३—३० या ऐल्यूमिना ६—३० घण्टे-घण्टेपर देना चाहिये। यदि इससे भी फायदा न हो, तो प्लैटिना ६। बेलेडोना १x, पोडोफाइलम ३ और ऐसिड-सल्फ २x, प्लम्बम ३० बीच-बीचमें दिया जा सकता है। ज्यादा दूध पीना और गर्म पानीकी पिचकारी लेना फायदेमन्द है।

प्रतिषेधक।—कलकत्ता या दूसरे बड़े शहरोंमें जहाँ रोज़ कलका पानी व्यवहार होता है, उनके परिवारमें किसीको रक्त-स्वल्पता, स्नायु-शूल, हाथमें कमजोरी या मसूढ़ेमें नीली रेखा वगैरह लक्षण दिखाई देनेपर समझना होगा, कि सीसेके अपव्यवहारसे (अर्थात् पानीकी कलके सीसेके दोषसे) यह रोग हुआ है। ऐसे मौकेपर घरके अन्य चंगे आदमियोंको उसे दूर करनेका पूरा-पूरा उपाय करना चाहिये।

पित्त-पथरी

(Gall-Stone or Biliary Calculus)

पित्त-कोष (gall bladder) या पित्तवाही-नली (biliary ducts) में अगर पित्त-रस (bile) खाने-पीनेके दोषसे पैदा होकर, पत्थरके कण (gravel or stone) के रूपमें हो जाये, तो उसे **पित्त-पथरी** कहते हैं। बालूका कण (gravel) कबूतरके अण्डे या मटरके बराबर छोटा, बड़ा, मझोला, गोल, सादा, काला, खाकी या हरा, एक या बहुत पथरी-रोगके रोगीमें पैदा हो जाता है। सैकड़े दस आदमियोंको ही यह बीमारी होती है, उनमें भी औरतोंको संख्या ही अधिक है। इस रोगका प्रधान लक्षण है—पेटमें थोड़ा-बहुत दर्द। इसके अलावा, जिन्दगीभर पित्त-कोषमें पथरी रहनेपर भी किसी-किसीको बिलकुल ही तकलीफ़ नहीं होती।

पथरी जबतक पित्त-कोषमें रुकी रहती है, तबतक तो रोगीको किसी तरहकी तकलीफ़ नहीं मालूम होती ; कभी-कभी पेटमें दर्द मालूम होता है ; परन्तु जब यह पथरी पित्त-कोषसे निकलकर पित्तवाही-नलीमें आ पहुँचती है, तब धीरे-धीरे या जोरसे पेटमें एक तरहका दुःसह दर्द पैदा होकर रोगीको एकदम व्याकुल कर देता है। इस भयानक दर्दका नाम **पित्त-शूल** (biliary colic) है। यह शूलका दर्द दाहिनी कोखसे शुरू होकर चारों ओर (खासकर दाहिने कन्धे

और पीठतक) फैल जाता है और दर्दके साथ अकसर कै, ठण्डा पसीना, नाड़ी कमज़ोर, हिमाङ्ग (collapse), कामला ; साँसके कष्ट, मूर्च्छा वगैरह लक्षण दिखाई देते हैं। यह दर्द कई घण्टेसे लेकर कई सप्ताहतक ठहर सकता है और फिर एकाएक बन्द हो जाता है (अर्थात् पथरी आँतके अन्दर duodenum में आ जानेपर सब तकलीफ़ दूर हो जाती है), उस समय मलको धोनेपर पत्थरके कण हाथमें लगनेसे ही समझना होगा, कि पथरी निकल गयी है।

पित्त-पथरी शूल और मूत्र-पथरी शूलका भेद

पित्त-पथरीके शूलमें कै नहीं होती ; परन्तु मूत्र-शूलमें पेशाबकी नलीसे लेकर अण्ड-कोषतक यह दर्द फैल जाता है और इसके साथ ही बराबर पेशाब करनेकी इच्छा, पेशाबके साथ खून और पथरी मौजूद रहती है, कामला नहीं रहता। पित्त-पथरी रोगमें शूलका दर्द पैदा होते ही आक्रान्त अङ्गमें खूब गर्म सेंक देनेपर और गर्म **जायतूनका तेल** (olive oil) सेवन करनेपर दर्द बन्द हो जाता है।

चिकित्सा।—(१) शूलका दर्द जल्दी दूर हो ; (२) मलके साथ पथरी शरीरके बाहर निजल जाये और फिर पित्तकोषमें पथरी न जमने पाये—इन दोनों बातोंपर ध्यान रखकर दवा और पथ्यका प्रबन्ध करना चाहिये।

शूल-वेदनाके समय।—पित्त-पथरीके इलाजमें सिद्धहस्त डाक्टर सेण्डस् मिल्स और इङ्गलैंडके विख्यात डाक्टर ह्यूज़ पित्त-पथरीकी तकलीफ़ दूर करनेके लिये कैल्के-कार्ब देकर कभी विफल मनोरथ नहीं हुए। कैल्के-कार्ब ३०—२०० पित्तसे पैदा हुए शूलको बन्द करनेकी बहुत ही बढ़िया दवा है; पन्द्रह मिनटका अन्तर देकर यह दवा देनी चाहिये। तीन घण्टे सेवनके बाद भी इससे यदि दर्द बन्द न हो तो बार्बेरिस θ फी खुराक बीस मिनटके अन्तरसे देना चाहिये। कार्डुयस-मेरियेनस θ (५—१० बून्द रोज़ तीन घण्टेका अन्तर देकर सेवन करना चाहिये) यकृतमें, खासकर उसके बाएँ उन्नत अंश (left lobe) में दर्द रहनेपर। आर्निका ३x—६—नयी हालतमें उपसर्ग कुछ घट जायें और धीमा दर्द मौजूद हो तो। चायना θ—बीमारीके जोरके समय शूल-वेदना पैदा होने और बन्द होनेतक।

चियोनैन्थस θ, हाइड्रैष्टिस θ (फी मात्रा एक बून्दसे दस बून्दतक), डायस्कोरिया θ, चेलिडोनियम २x, जेलसिमियम १x, बेलेडोना २x और आर्सेनिक ३x—३०, डिजिटेलिस ३०, लोरोसि ३ वगैरह दवाएँ, दर्द बन्द करनेके लिये प्रयोग की जाती हैं। मैग्नेशिया-फास ३x (गर्म पानीमें) खाना और लगाना—इस ढङ्गका प्रयोगकर सैण्डस् मिल्स वगैरह डाक्टरोंने इन्द्रजालकी तरह फल पाया है और इसकी बड़ी प्रशंसा की है।

अमेरिकाके डाक्टर खानने कोलिष्टेरिनम् २ का, पित्त-पथरी-जनित वेदनामें प्रयोगकर जो अद्भुत फल पाया है, उसे देखकर वे मुग्ध हो गये हैं (vide Allen's Nosodes, edition 1910) २य क्रमको सुविधा न हो तो नीची शक्तिका भी व्यवहार किया जा सकता है। इङ्गलैण्डके डाक्टर बार्नेट पित्त-पथरी रोगको भिन्न-भिन्न अवस्थाओंमें ३x—३ विचूर्ण सेवन करा, बहुतसे रोगियोंको आराम कर चुके हैं।

ऐकोन, मर्क, चायना (मैलेरिया बोखारके साथ), नक्स-वो, फास्फो वगैरह दवाएँ मौकेपर काम देती हैं।

आनुसङ्गिक चिकित्सा।—हलकी, जल्द पचनेवाली चीजें खिलाना; पावरोटी आगमें सेंककर, खूब गर्म पानीमें डुबोकर चीनीके साथ खाना चाहिये। भूना हुआ सेव, (roasted) इच्छापूर्ण ठण्डा पानी, रोज़ खुली हवामें घूमना, (खासकर घोड़ेपर) वगैरह फायदा करता है। दर्दसे बहुत कातर हो जानेपर, रोगीको खूब गर्म पानी पिलाना, गर्म पानीके टबमें बैठाना और सरल आँतमें यन्त्रके द्वारा बून्द-बून्द-कर गर्म जलको धारा देकर बराबर भिजाते रहना (rectal irrigation) और दाहिनी कोखमें गरम पोल्टीस लगाना वगैरह उपायोंसे दर्द बहुत कुछ कम हो जाता है।

ऐसे उपायोंसे दर्द एकदम अच्छी तरह आराम हो जानेपर और पथरी पूरी तरह निकल जानेके बाद, जिससे फिर पित्त-कोषमें पथरी न पैदा हो, उसका उपाय करना चाहिये।

नीचे लिखी व्यवस्थाके अनुसार चलनेपर फिर पथरी नहीं होती।

दुबारा आक्रमण बन्द करनेके लिये—चायना θ बहुत अच्छी दवा है। पित्त-पथरीके इलाजमें सिद्धहस्त डाक्टर थेयरने नीचे लिखी व्यवस्थासे बीस वर्षसे भी अधिक दिनोंमें जितने रोगियोंका इलाज किया है—सभी अच्छे हो गये हैं। चायना ६x की मात्रामें छः गोलियाँ रोज़ दो बार कर देनी होंगी, जबतक दस मात्रा दवा पेटमें न चली जाये। इसके बाद एक दिन नागा देकर एक मात्रा (छः बटिकाएँ) कर दवा देनी चाहिये, जबतक दस मात्रा न खतम हो। इसके बाद क्रमसे तीन दिनका नागा देकर और चार दिनों तथा पाँच दिनोंका अन्तर देकर दवा देनी होगी। यह तबतक, जबतक इसी तरह एक महीनेका अन्तर देकर एक मात्रा (अर्थात् छः बटिकाएँ) न हो जाये। बहुतसे मशहूर डाक्टरोंने देखा है, कि ऊपर लिखे उपायसे चलनेपर, पहले रोगीको पथरी जल्दी निकल जाती है और इसके बाद पित्त-कोषमें पथरी पैदा नहीं होती (अर्थात् रोग जड़से आराम हो जाता है)। डा० ऐम्बर्स **चेलिडोनियम** और डा० बौर्जोसको **कार्डुयस-मेरियानस** का प्रयोग करना बताते हैं। इससे भी रोगीको दुबारा पथरी नहीं होती।

पथ्यादि।—समयपर खाना-पीना, पाखाना, पेशाब और नहाना-धोना, बँधा हुआ भोजन, उपयुक्त शारीरिक

परिश्रम, वायु-सेवन और क्षार-पानी (alkaline water) बहुत ज्यादा पीना वगैरह स्वास्थ्यके नियम पालन और यथा-विधि होमियोपैथिक दवाएँ सेवन करनेपर रोग जल्दी जड़से आराम हो जाता है। जिन खानेकी चीजोंमें ज्यादा शक्कर (sugar), चर्बी (fat) या श्वेतसार (starch) और चूना (lime) हो, उन चीजोंको जितना ही न खाया जाये उतना ही अच्छा है और मांस, तेलकी चीजें, मछली और सोडा (Bicarbonate of soda) रोगीको नुकसान पहुँचानेवाले हैं। गर्म झरनेका पानी व्यवहार करनेसे ज्यादा फायदा होता है।

यह तो बताना ही वृथा है, कि बहुत दिनोंतक शूल-वेदनासे तकलीफ़ पानेपर यदि रोगीके पित्त-कोषमें पीव हो जाये, फोड़ा (abscess), कर्कटिका (cancer) वगैरह भयानक लक्षण दिखाई दें तो अच्छे डाक्टरोंसे तुरन्त नश्तर लगवा देना चाहिये। "मूत्र-पथरी" देखिये।

कोष्ठकाठिन्य (कब्जियत)

(Constipation)

कब्जियत बहुत कारणोंसे हो सकती है। यह बहुतसे रोगोंका लक्षण भी समझी जाती है। किसी तरहका शारीरिक परिश्रम न कर घरमें बैठे रहना, रातमें जागरण, तेज़ काफी या चाय और दूसरी नशीली चीजें खाना, शोक, दुःख या भय होना, गिर जाना, यकृतका रोग, बुढ़ापा, नुकसान पहुँचानेवाली चीजें खाना वगैरह बहुतसे कारणोंसे कब्जियत होती है। कब्जियत होनेपर जमा हुआ मल आँतोंमें सड़ा करता है और उस सड़े हुए मलका सूक्ष्म अंश खून और मांसमें मिलकर रक्त मांसको पुष्ट किया करता है। इस तरह शरीरको बहुत कुछ नुकसान पहुँचता है। भोजनके सार भागसे जिस तरह रक्त-मांस बनता है, सड़े मलसे भी उसी तरह रक्त-मांस पुष्ट होता है; परन्तु वास्तवमें वह रक्त-मांस बहुतसे रोगोंका कारण बन जाता है। कब्जियत होनेपर अकसर सरमें दर्द, बोखारका भाव, अरुचि, अस्वच्छन्दता वगैरह लक्षण दिखाई देते हैं। बहुत दिनोंतक कब्जियत रहनेपर, फिर बवासीर, गृध्रसी वात वगैरह बीमारियाँ पैदा हो जाती हैं।

चिकित्सा।—डाक्टर सैण्डस मिल्सके मतसे—ब्रायोनिया, ग्रैफाइटिस, ओपियम, प्लम्बम और नक्स-वोमिका इसकी उत्तम दवाएँ हैं। हमलोग भी उनके इस मतका अनुमोदन करते हैं।

ग्रैफाइटिस ६।—(दिनमें दो बार कई महीनोंतक सेवन करना चाहिये)—मल बड़ा और निगलनेमें कष्ट। प्लम्बम ६।—कब्जियतके साथ शूल-वेदना। नेट्रम-म्यूर १२x चूर्ण—२०० इसकी एक उत्तम दवा है। लगातार पखाना लगना, पर कोठा साफ न होना। बड़ा लेंड़ बड़ी तकलीफ़से निकलता है, थोड़ा-सा पतला पाखाना होता है, सर भारी, तलपेटमें दबाव और अरुचिके लक्षणमें। नक्स-वोमिका ३० (जिन्हें ज्यादा पढ़ना पड़ता है, जो खिन्न रहते हैं, जिन्हें घरमें आलसीकी तरह बैठे-बैठे दिन बिताना पड़ता है, जो थोड़ी-सी बातमें ही चिढ़ जाते हैं और जिन्हें कब्जियत और पेटमें गड़बड़ी रहती है, उनके लिये नक्स-वोमिका लाभदायक है)। सिहरावन मालूम होना, सर-दर्द, यकृतमें दर्द, सूखा, बड़ा और कड़ा लेंड़; वातसे पैदा हुई कब्जियत; गर्भावस्थामें और गर्मी के दिनोंकी कब्जियतमें तथा बच्चोंकी कब्जियतमें ब्रायोनिया ६—३०। (नक्स-वोमिका और ब्रायोनियाके लक्षणमें यह भेद है, कि बराबर पाखानेकी हाजतके साथ कब्जियतमें नक्स-वोमिका और बिना पाखानेकी हाजतकी कब्जियतमें ब्रायोनिया फायदा करता है) सर भारी, सरमें चक्कर, कुछ दिनोंतक लगातार कोठा साफ़ न होना, कड़ा लेंड़, सदा तन्द्रा आती रहना, चेहरा लाल, पेशाब

थोड़ा, इन लक्षणोंमें **ओपियम ३०** (बूढ़े, शांत प्रकृति तथा रक्त-प्रधान धातुवाले मनुष्योंके लिये ओपियम ३० ज्यादा लाभ-प्रद है); कब्जियत या बड़ी तकलीफ़से सूखा, कड़ा मल थोड़ा-सा निकलना; पेट फूल जाना, पेटमें आवाज़ होना, भोजनके बाद ही तलपेटका फूलना; पेटमें गर्मी मालूम होना; पाखाना लगना, पर न होना; मुँहमें पानी भर आना—लक्षणमें—**लाइकोपोडियम ३०** देना चाहिये। बहुत तेज़ कब्जियत; **गांठोंके रूपमें दस्त**; बहुत दिनोंतक पाखाना न लगनेके लक्षणमें **ऐल्यूमेन ३०**। पाखानेकी हाजत, परन्तु पाखाना निकालनेकी चेष्टा करते ही उसका बन्द हो जाना लक्षणमें, **ऐनाकार्डियम ३—६**। लंम्बा और खूब सँकरा लेंड़ निकलनेपर **फास्फोरस ३—३०**। प्रबल सूखी खाँसीके साथ कब्जियत, **नाइट्रिक-एसिड ३**। कब्जियतके साथ अर्श रोगमें, **कालिन्सोनिया ३**। सीस-शूल या भ्रमणकी वजहसे कब्जियत होनेपर; ढीला मल भी बड़ी कठिनतासे निकलनेके लक्षणमें, **प्लेटिना ६—३०**। औरतोंकी बहुत दिनोंकी कब्जियतमें, **टैबेकम ३०** (रोज़ एक बार); मलद्वारमें दर्द; जरायु रोगवाली या गर्भवती औरतोंकी कब्जियतमें, **सिपिया ३०**। ऋतुमती स्त्रियोंकी कब्जियतमें, मल थोड़ा निकलकर फिर सरलान्त्र (rectum) में घुस जाता है, इस लक्षणमें **सिलिका ३०**। तलपेट और गुह्य-द्वारमें

भार और गर्मी मालूम होना, गुह्य-द्वार कुट्-कुट् करना और जलन, मल त्यागनेके कुछ हों पहले और बाद मलद्वारमें अस्वच्छन्दता मालूम होना; पुरानी कब्जियतमें, बार-बार पाखानेकी हाजत, पर उसका पूरा न होना, बवासीर रहना— **सलफर ३०—२००।** बार-बार दस्तावर दवाएँ खानेसे पैदा हुई कब्जियतमें, **हाइड्रैष्टिस ३** (खासकर कमजोर दुबले मनुष्योंके लिये)। **सिलिका-मेरिना ३—३०** (२x—३x विचूर्ण) बहुत दिनोंतक सेवनसे कब्जियत दूर हो जाती है। बारह बायोकेमिक दवाएँ भी लक्षणके अनुसार फायदा करती हैं।

पुरानी कब्जियत।—सलफर ३०, एसिड-नाइट्रिक ३—६, नेट्रम-म्यूर ३०, पोडो, सिपिया, विरे-ऐल्ब, कार्बो-वेज, हाइड्रैष्टिस (साधारण कब्जियतमें); ऐलोज (बवासीरके साथ कब्जियतमें); ऐल्यूमिना (सूखा, कड़ा मल, पाखाना लगता ही नहीं, कोमल मल भी बड़े कष्टसे निकलता है); लाइको (पेट फूलनेके साथ कब्जियतमें); ब्रायो (माथेमें टनकके साथ एकदम पाखाना न लगना); नक्स-वोम (पाखाना लगनेपर भी बिलकुल ही दस्त न होना); प्लम्बम (कब्जियतके साथ पेटमें शूलका दर्द); ओपि (कब्जियतके साथ औंघाई)।

आनुसङ्गिक चिकित्सा।—कब्जियत होनेपर बार-बार जुलाब लेना अच्छा नहीं है; क्योंकि उससे आदत पड़

जाती है और फिर बिना जुलाब लिये दस्त नहीं होता। होमियोपैथिक दवा खानेसे यदि दस्त न हो, तो १२ आउन्स गरम पानीमें १ ड्राम ग्लिसरिन मिलाकर मलकी आँतमें पिचकारी देनेसे गांठ-गांठ मल निकल जाता है। रोज़ खाटसे उठते ही ठण्डा पानी पीना और रोज़ ठण्डे पानीसे नहाना फायदेमन्द है। बँधे समयपर खाना, पाखाने जाना, दिनमें ज्यादा ठण्डा पानी पीना और पेटपर हाथ फेरना अच्छा है। अंगूर, सेब, किशमिश, मुनक्का, सन्तरा, पका केला, पपीता, बेल, जाँतेका पीसा आटा, शहद, दूध, मक्खन, पाती या कागज़ी नींबू, कच्चा गूलर और सूरन फायदेमन्द है। बँधे समयपर खाना, सोना और कसरत करना फायदा करता है। हड़, इस्फगोल, हींग, डाबका पानी, सोडा-वाटर वगैरह रोज़ काममें न लाकर, कभी-कभी पीनेसे फायदा करता है। ओलिव्-आयल (या जायतूनका तेल) स्वास्थ्यकर खाद्य और हलका विरेचक है। इसके सेवनसे पित्त निकलनेमें मदद मिलती है और दस्तावर दवाओंके बराबर सेवनसे जो शरीरकी हानि पहुँचती है, इससे वह नहीं होती। जुलाब लेनेके बाद ही रोगीकी कब्जियत अधिक बढ़ जाती है। डाक्टर हेरिङ्गने कहा है, कि कब्जियतवाले रोगी ज्यादा दिन जीते हैं (यदि वे दस्तावर दवा खाकर आत्महत्या न करें), सूखी गोली या दस्तावर दवामें तरी नहीं है, इसलिये जबर्दस्ती पाखाना लानेसे रोगीके शरीरसे रस निकल जाता है। बार-बार या बहुत दिनोंतक इसी तरह जुलाब लेनेपर कब्जियत

बढ़कर रोगीके शरीरमें अच्छी तरह घर बना लेती है।*
"अजीर्ण-रोग" देखिये।

ऐपेण्डिक्स† (या उपाङ्ग) प्रदाह

(Appendicitis)

पाकस्थलीकी उपाङ्ग-नाली दूसरी ओर बन्द रहती है (अर्थात् एक ओरकी नलीसे खानेकी चीजें या कोई दूसरा पदार्थ उसमें घुस जानेपर, उसके निकलनेकी कोई दूसरी राह

---

* हमारे पाठक-पाठिकाओंमें जो जुलाब लिये बिना न रह सकते हों, उन्हें बहुत जरूरी होनेपर नीचे लिखा निर्दोष जुलाब लेना चाहिये :—जङ्गी हड़, मिसरी, सनायकी पत्ती, सौंफ और किसमिस (सभी एक-एक तोला) ये पाँच चीजें पावभर पानीमें रातमें भिजा रखनेपर दूसरे दिन सवेरे उसे गर्मकर साफ़ कपड़ेमें छान यह पावभर पानी पीनेसे, कोठा साफ़ हो जाता है। यदि आँव निकलनेके कारणसे पेटमें दर्द हो, तो डरनेकी जरूरत नहीं—थोड़ा गर्म पानी या गर्म दूध पीनेसे ही दर्द बन्द हो जायगा। दो-तीन दस्त हो जानेपर मूंगकी दालके साथ भात खाना और भोजनके बाद कच्चे नारियलका पानी पीना और पपीता खाना चाहिये। जवानोंके लिये एक पाव, बालकोंको आधा पाव, बच्चोंको एक छटाक और पांच वर्षसे कम उमर होनेपर समझकर मात्रा देनी चाहिये।

† मनुष्यके शरीरके निचले भागका दाहिना अंश देखनेमें क्रिमि-जैसा है। इसीका नाम vermiform appendix या कीटाकार उपाङ्ग है। (चित्र देखिये)।

नहीं है)। कब्जियत, ज्यादा मांसाहार, उपाङ्गमें मल, मछलीका कांटा, छोटी हड्डीका टुकड़ा इत्यादि कोई चीज़ घुस जानेपर एक तरहका प्रदाह पैदा हो जाता है। इसी प्रदाहका नाम "उपाङ्ग-प्रदाह (appendicitis)" है। बच्चे और वृद्धोंकी अपेक्षा युवकोंको, स्त्रियोंकी अपेक्षा पुरुषोंको और मांसाहारियोंको यह बीमारी ज्यादा होती देखी जाती है। प्रदाह होनेपर, रोगी दर्दसे घबड़ा उठता है, यहाँतक कि इस तकलीफ़से मौततक हो सकती है। इसलिये, नश्तर लगानेवाले डाक्टर प्रदाहके समय उपाङ्गको चीर डालते हैं। ज्यादा खानेसे ही यह बीमारी होती है, डाक्टर नोयाकका ऐसा ही मत है।

वर्त्तमान शताब्दीके आरम्भसे ही इसका यह नया नाम रखा गया है; परन्तु वास्तवमें यही रोग इतने दिनोंसे "टिफ्लाइटिज" या "पेरिटिफ्लाइटिज" कहलाता था। खायी हुई चीज़ सहजमें न पचनेपर (खासकर गठिया या सन्धि-वातवाले रोगियोंको) बहुत बार यह बीमारी हुआ करती है। पेटकी दाहिनी ओर दर्द (कभी-कभी रोगीको कई हफ़्ते तक यह दर्द मालूम नहीं होता), इसके बाद इस दर्दका धीरे-धीरे बढ़ना और साथ-ही-साथ बोखार और पाकाशय यन्त्रकी क्रियाकी गड़बड़ीसे पैदा हुई तकलीफ़, इस रोगका **प्रथम लक्षण है।** इस अवस्थामें यदि प्रदाह अच्छा न हुआ, तो शरीरके दूसरे-दूसरे यन्त्र भी आक्रान्त होकर, रोगीकी मृत्युतक हो सकती है। इस रोगका नाम सुनते ही लोग हताश हो, नश्तर

लगवानेका उद्योग करते हैं ; परन्तु पहलेसे ही होमियोपैथिक मतसे अच्छी तरह इलाज होनेपर, नश्तर लगवानेकी जरूरत नहीं पड़ती। एकाएक तलपेटमें नाभीके दाहिनी तरफ असह्य दर्द होता है, स्पर्श सहन नहीं होता, वमन, ऊँचा बोखार प्रभृति उपाङ्ग-प्रदाहके लक्षण प्रकट होनेपर तुरन्त किसी उत्तम अस्त्र-चिकित्सककी सहायता लें। यह बीमारी अकसर दोहराती है, परन्तु नश्तर लगवाकर उपाङ्ग निकलवा देनेपर फिर नहीं होती।

लक्षण।—सरमें जोरका दर्द, आँखोंमें रोशनीका बिलकुल ही सहन न होना, कै (कभी-कभी लगातार), जीभ मैली, कभी-कभी कब्जियत रहती है, कभी नहीं भी रहती है। हवा न छूटना, पैर मोड़े रहना, उदरके नीचेवाले भागमें नाभीकी दाहिनी तरफ तेज़ दर्द, शरीरका ताप १००° से १०२° डिगरी हो जाता है और कभी-कभी यकृत और प्लीहा भी बढ़ी रहती है।

चिकित्सा।—एकोन ३x (बोखार ज्यादा रहनेपर); बेल ३x—६ (सरमें दर्द, चेहरा लाल, टपक-जैसा दर्द वगैरह, माथेकी गड़बड़ीके लक्षणमें); ब्रायो (कांटा गड़नेकी तरह और जलनकी तरह दर्द, हिलने-डोलनेसे दर्दका बढ़ना ; कब्जियत); रस-टक्स ६ (हिलने-डोलनेसे दर्दका कम हो जांना); मर्क-कोर ६ (बदन पीला ; जीभ पीली ; पेट फूलना ; घाव)।

लैकेसिस ३० ।—इसकी एक बहुत बढ़िया दवा है (खासकर पेटमें दाहिनी ओर काटनेकी तरह दर्द और कमरके कपड़ेका सहन न होना, सामान्य बोखारके साथ, कैके लक्षणमें); परन्तु दर्द सुई बेधनेकी तरह या जलन पैदा करनेवाला हो, तो (खासकर टीका लगवाने बाद या औरतोंको ऐपेण्डिक्स-प्रदाह होनेपर) **लैकेसिसकी** अपेक्षा **एपिस ३०** ज्यादा फायदा करता है ; परन्तु यदि **लैकेसिस** या **एपिसके** प्रयोगसे फायदा न हो, तो **आर्द्धरिस ३०** देना पड़ेगा। मृत्युका भय, उत्कण्ठा, जीभ लाल, बराबर पानी पीनेकी इच्छा, परन्तु थोड़ा पानी पीनेसे ही प्यास बुझ जाना, बिछावनपर छटपटाना और बहुत सुस्तीके लक्षणमें, **आर्सैनिक ३X—३०** । **मैग्नेशिया-फास २X** गर्म पानीके साथ १०—१५ मिनटका अन्तर देकर सेवन करनेपर दर्द बन्द हो जाता है। पीव होनेका लक्षण होनेपर **हिपर-सल्फर ६** देना चाहिये।

डाक्टर हेल और सैण्डस मिल्स बेलेडोना ३x और मर्क-सोल ३x आधे-आधे घण्टेके अन्तरपर पर्यायक्रमसे देकर कई घण्टोंमें ही बहुत फायदा होता देख चुके हैं।

विरिड्रम ३, कोलोसिन्थ ६, सलफर ३० वगैरह दवाओंको लक्षणके अनुसार कभी-कभी जरूरत पड़ सकती है। डाक्टर यूनन रोगीकी बिगड़ी हालतमें, सलफर २०० के प्रयोगसे आश्चर्यजनक लाभ होता देख चुके हैं।

आनुसङ्गिक चिकित्सा।—बोतलमें खूब गर्म पानी भरकर पेटको सेंकना ; बहुत गर्म पानी बार-बार पीना ; जरूरत पड़नेपर गरम पानीकी पिचकारी लेना, रोगकी नयी हालतमें सिर्फ बार्लीका पानी खिलाना चाहिये। **ऐलोपैथिक** डा० इस रोगको जितना भयानक समझते हैं, **होमियोपैथिक** डाक्टर उतना भयानक नहीं समझते। कभी-कभी नश्तर लगवानेकी जरूरत पड़ती है।

पेट फूलना

(Tympanitis)

यह हमेशा बोखार, हैज़ा, सान्निपातिक ज्वर वगैरह रोगके उपसर्ग रूपमें होता है।

चिकित्सा

ऐसाफिटिडा ३।—हिस्टोरिया रोगमें पेट फूलनेपर घण्टे-घण्टेपर एक खुराक देनी चाहिये।

टेरेबिन्थिना ३।—ज्वर या प्रदाहके कारण पेट फूलना (खूब गर्म पानीमें फ्लानेल भिजाकर, निचोड़ने बाद उसमें कई बून्द तारपीनका तेल डालकर पेटपर लगाना चाहिये), यह घण्टे-घण्टेभरपर लगाना चाहिये। पेट फूलनेकी यह एक उत्कृष्ट दवा है।

रैफेनस ६ ।—पेट कड़ा और फूला हुआ ; ऊर्द्ध या अधोभागसे वायु न निकल पाना (Dunham) ।

कोलोसिन्थ ६, चायना ३, हायोस ३, आइरिस ६, आर्स ३, लाइको ६, कार्बो-वेज ६—३०, नक्स-वोम ६ की कभी-कभी जरूरत पड़ती है। पेटमें मल इकट्ठा होनेकी वजहसे पेट फूलता हो, तो गर्म पानी या जैतूनके तेल (olive oil) की पिचकारी लेनी चाहिये ।

"सान्निपातिक ज्वर", "हैज़ा", "पेटमें वायु-सञ्चय", "अतिसार" वगैरह रोगोंकी दवाएँ देखिये ।

उदरमें वायु-सञ्चय

(Flatulence)

यह दूसरे रोगका उपसर्गभर है। कलेजेमें जलन, श्वास-कष्ट, कलेजा धड़कना, पेट फूलना, डकार आना, पेटमें भड़भड़ शब्द होना, हवा छूटना, बार-बार पेशाब या मूत्रकृच्छ्रता, इस रोगके प्रधान लक्षण हैं।

चिकित्सा

कार्बो-वेज ३x चूर्ण—६ ।—पेटमें (खासकर ऊपरी पेटमें) वायु जमा होना, साँसमें तकलीफ़ या कलेजेमें जलन, पतले दस्त ।

लाइकोपोडियम ६।—तलपेटमें वायु जमा होना और कब्जियत।

कार्बोलिक-एसिड ३।—पेट फूलनेके साथ डकार आना।

लैकेसिस ६।—डकार आनेपर आराम मालूम होना।

कैमोमिला १२।—वायु-सञ्चय, डकार आनेसे आराम मालूम होना। नाभीके चारों ओर मरोड़की तरह दर्द।

नक्स-वोमिका ३।—तीती या खट्टी डकारें आना, कलेजेपर भार मालूम होना, कब्जियत।

सलफर ३०, नक्स-मस्केटा ३०, रैफेनस ६, टेरेबिन्थ ६, आर्ज-नाई ६, कैल्के-आयोड ६x विचूर्ण, सिलिका ६, साइना ३x, ब्रायोनिया ६, आर्सेनिक ३, कालिन्सो ३x वगैरह दवाएँ कभी-कभी आवश्यक हो सकती हैं ("पेट फूलना" देखिये)।

ऊपरी पेटमें वायु-सञ्चय—नक्स-वोमिका, पल्स, कार्बो-वेज।

तलपेटमें वायु-सञ्चय—लाइकोपोडियम, ऐसाफिटिडा, चायना।

अतिसार या उदरामय

(Diarrhoea)

बिना काँखे बार-बार जो पतले दस्त आते हैं, उसे अतिसार कहते हैं। साधारणतः चार तरहका अतिसार दिखाई देता है :—(१) देरसे पचनेवाली चीजें खाना, गदला पानी पीना और उत्तेजक दवाएँ खानेसे पैदा हुए उपदाहकी वजहसे पतले दस्त ; (२) पचनेकी क्रियामें गड़बड़ीके कारण न पची हुई चीजें निकलती हैं ; इस ढङ्गका अतिसार ; (३) गर्म शरीरमें ठण्डा पानी पीना या बरफ वगैरह पीना या ठण्डी हवामें जाकर एकदम पसीना रोक देना और इस वजहसे प्रदाह होनेके कारण पैदा हुआ अतिसार ; (४) गर्मीके दिनोंका अतिसार।

अतिसार और हैजेका भेद "हैज़ा" के इलाजमें लिखा है। अतिसारमें पेटमें मरोड़ और कूथन नहीं रहती : परन्तु आमाशयमें ये दोनों लक्षण मौजूद रहते हैं।

मिचली, पेट फूलना, पेटमें दर्द ; श्लेषा, पित्त या कई रङ्गोंके और बदबूदार पतले दस्त ; मैल चढ़ी जीभ, साँस लेने-छोड़नेमें बदबू, कड़वी डकार, सुस्ती वगैरह अतिसारके प्रधान लक्षण हैं। बहुत खाना-पीना, सड़ी शाक-सब्जी या मांस खाना, गदला पानी पीना, वायु या ऋतुका बदलना, मानसिक

भावोंकी अधिकता (जैसे—क्रोध, भय, दुर्भावना, शोक आदि), यक्ष्मा रोग आदि भोगनेके कारणोंसे यह रोग हुआ करता है।

चिकित्सा

पल्स, इपिकाक, ऐकोनाइट, जेलसिमियम, आर्स, कैल्के-कार्ब, मर्क-सोल, मर्क-कोर और विरेट्रम-ऐल्बम अतिसारकी प्रधान दवाएँ हैं।

पानीकी तरह दस्त—ऐलो, आर्स, चायना, फेरम-मेट, पोडोफाइलम।

पीव-भरे दस्त—**आर्स, मर्क,** नाइट्रिक-एसिड, फास, कैल्के-फास, कैन्थ, लेके।

खून-मिले दस्त—**मर्क, आर्स,** आर्निका, कैन्थरिस, इपिका, नाइट्रिक-एसिड, बैप्टीशिया, क्रोटेलस, लेकेसिस, रस-टक्स, फास-एसिड।

स्पिरिट-कैम्फर।—जाड़ा, कम्प, पाकस्थलीमें दर्द, हाथ-पैर और मुँह ठण्डे ; गरमीके दिनोंके पतले दस्त और सर्दीसे पैदा हुए अतिसारमें। नया अतिसार एकाएक शुरू हो जानेपर।

क्विनिनम आर्स ६x।—साधारणतः जो अतिसार दिखाई देता है, वह इसी दवासे अच्छा हो जा सकता है।

रियूम ३।—रोगीके मलमें खट्टी गन्ध, रोगीके समूचे शरीरसे खट्टी गन्ध निकलना (खासकर बच्चोंके दाँत निकलते

समयके उदरामयमें), पेटमें शूल-वेदना ; पाखाना लगना, पर न होना।

क्रोटन-टिग्लियम ६।—पीले रङ्गका पानीकी तरह दस्त बहुत ज्यादा परिमाणमें होना।

एपिस ३X, ३०।—दर्दके समय सब्ज आभा लिये पीले रङ्गका दस्त ; रोज़ सवेरे पतले दस्त।

रियुमेक्स ३।—सवेरेके समय पतले दस्त, भूरे रङ्गके पतले दस्त, दस्तका वेग ज्यादा, सवेरे रोगीकी नींद खुल जाती है और तुरन्त लोटा लेकर पाखाने दौड़ जाता है। (ऐलो, सलफर)।

ऐकोनाइट ३X।—जाड़ेके दिनोंकी ठण्ड (अर्थात् सूखी ठण्डी हवा लगना) लगनेके कारण पतले दस्त ; पहाड़ी जगहोंके अतिसार ; सिहरावन मालूम होना ; बोखार और प्यासका लक्षण रहनेपर।

जेलस १X।—ऐकोनाइटके लक्षण मिले अतिसारके साथ सरमें दर्द होनेपर।

कैमोमिला।—हरे रङ्गके, पानीकी तरह, गर्म या बदबू-भरे दस्त, पित्तकी कै, पेटमें ऐंठन, सर-दर्द, बच्चोंको दाँत निकलनेके समय पतले दस्त ; बच्चा हमेशा रोता रहता है और हमेशा गोदमें चढ़कर घूमना चाहता है। दस्त गांठ-गांठ या पानीकी तरह, हरा या भूरे रङ्गका दस्त, सड़े अण्डेकी तरह गन्ध आनेवाले दस्त।

पल्सेटिला ३, ३० ।—एक-एक बार एक-एक तरहका दस्त; मुँहका स्वाद तीता; कै या मिचली; डकार आना; तेल, घी या चर्बीसे बनी देरमें पचनेवाली चीजें खानेके कारण पतले दस्त; पेटमें वायु-सञ्चय, खानेके बाद खाई हुई चीजोंका स्वाद; गरमीके दिनोंका अतिसार; आम मिले या श्लेष्मा-भरे दस्त; रातमें रोगका बढ़ना।

ऐण्टिम-क्रूड ६ ।—सफेद क्लेद-भरी जीभ; डकार आना; मिचली; अरुचि; पानीकी तरह पतले दस्त; पित्त-मिला बलगम।

इपिकाक ३x, ६ ।—कै या मिचली; बदबूदार मल; खून-मिला पेशाब; पेटमें दर्दके साथ गर्मीके दिनोंका अतिसार; बच्चोंको पीला या पीलापन मिले हरे रङ्गके दस्त होनेवाला अतिसार; कैके साथ पतले दस्त (पलसेटिलाके पहले या बाद यह फायदा करता है)।

ओलियेण्डर ३, ३० ।—(पुराने अतिसारमें) अनपचका मल।

जिञ्जिबार ६ ।—दूषित पानी पीनेके कारण पतले दस्त।

नक्स-वोमिका १x, ३० ।—ज्यादा भोजन या रातमें जागरण अथवा मद्यपान आदि अत्याचारोंके कारण पैदा हुआ अतिसार।

थूजा ६, ३० ।—पतले पीले पानीकी तरह दस्त ; रक्त-भरे, चर्बी-जैसे या तेलमय दस्त ; गड़गड़ाकर जोरसे दस्त आते हैं ; टीका लगवानेके कुफल रूपमें दस्त ; धातुमें प्रमेह विष रहनेकी वजहसे अतिसार ; पुराना उदरामय ; दाँतकी जड़ खोखली, पर ऊपरी भाग ठीक रहता है ; रोगी जल्दी-जल्दी दुबला होता है ।

चायना ६, १२ या ३० ।—भोजनके बाद, रातमें या सवेरे दर्दके साथ या बिना तकलीफका, कुछ लाल रङ्ग लिये दस्त ; खाये हुए अजीर्ण पदार्थ दस्तमें निकलना और इसके साथ ही कमजोरी, अरुचि और प्यास ; गरमीके दिनोंका अतिसार ; बार-बार पानीकी तरह पतले दस्त और इसके साथ ही पेटमें ऐंठन, बहुत ज्यादा परिमाणमें पतले दस्त बड़े वेगसे निकलते हैं । फल खानेके कारण पतले दस्त ।

कोलचिकम ३x ।—नये अतिसारमें तेज़ मिचली और सुस्ती ; खानेकी गन्धसे ही कै होने लगना । शरद्-ऋतुका आमाशय और अतिसार । मलमें सफेद खण्ड-खण्ड कण दिखाई देते हैं ।

आर्सेनिक ३x, ३० ।—पाखाना होनेके पहले बेचैनी ; पेटमें या तलपेटमें दर्द ; पाखानेके समय मिचली या ओकाई ; काँखना ; पाखानेके वक्त मलद्वारमें जलन ; कलेजा धड़कना ; बदबू-भरा, मटमैला थोड़ी मात्रामें दस्त ; पाखाना होने बाद सुस्त बना देनेवाली कमजोरी ; तेज़ प्यास ; खाने-

पीनेके बाद वमन; बार-बार खून भरे या पतले दस्त; बहुत ज्यादा पसीना; सुस्ती; बेचैनी; पुराना अतिसार। फल, खटाई, बरफ, आइस-क्रीम, सड़ी मांस-मछली, बासी तरकारी, बासी खीर वगैरह खानेकी वजहसे अतिसार।

डाल्कामारा ६।—ओस या ठण्डी तर हवा लगकर या सर्दी से पैदा हुआ उदरामय; रातमें पित्तके दस्त होना; पेट फूलनेके साथ तीसरे पहर दस्त; कई रङ्गोंके दस्त; पतले दस्तके साथ टुकड़ा-टुकड़ा मल; दस्त, कै एक साथ; मलद्वारमें जलन होना; बरसातके दिनोंका अतिसार।

आइरिस-वार्स ६।—हैज़ाका लक्षण रहनेवाला अतिसार; पेटमें बहुत दर्द; मलद्वारमें जलन; कै या मिचली; शरद्-ऋतुके पित्त-मिले दस्त; सरमें दर्द; अनजानमें मल निकल जाना वगैरह लक्षण मिले गरमी और शरत् ऋतुके उदरामयमें यह उपयोगी है। शिशु अतिसार और शिशु-विसूचिका।

मर्क्यूरियस-कोर ३।—खून-मिले या पित्त-मिले दस्त; पेटमें दर्द; आम-भरे दस्तके साथ कूथन; पाखाना होने बाद ही कूथन बन्द नहीं हो जाती; मिट्टीकी तरह या पीले रङ्गके दस्त; सुस्ती।

मर्क्यूरिस-वाइवस ६।—कूथन और दर्द; रोगी पाखाना छोड़ना ही नहीं चाहता, समझता है, कि अभी और

भी पाखाना होगा, खुलासा नहीं हुआ। खून-मिले या बिना खूनके पित्त-मिले दस्त।

मर्क्युरियस-सोल ६, ३०।—पित्त-मिले, आम-भरे या खून-भरे दस्त; पाखाना होनेके पहले पेटमें दर्द और पाखाना होनेके बाद इस दर्दका बन्द होना; काँचकी तरह या पीले रङ्गका मल; बार-बार पतले दस्त; दोहरा जानेपर पेटका दर्द बन्द हो जाना; पेट खाली मालूम होनेपर भी रोगीका ज्यादा भोजन न कर सकना।

ब्रायोनिया ६, ३०।—गरमीके दिनोंका अतिसार, ठण्डे जलीय द्रव्य पीनेके कारण अतिसार; बैठनेपर मिचली या बेहोशी आ जाना; ज्यादा गर्मीके बाद एकाएक सर्द हवा लगकर पतले दस्त आने लगना; ज्यादा मात्रामें पानी पीनेकी इच्छा; दस्तमें बदबू और दस्तका रङ्ग मटमैला।

विरेट्रम-एलबम ६, ३०।—पानी या चावलके धोवनकी तरह ज्यादा परिमाणमें दस्त; आवाज़के साथ या बड़ी तेज़ीसे मल निकलना; अनजानमें मल निकल जाना; पेटमें मरोड़, पैरोंमें ऐंठन; नाड़ी लुप्तप्राय; ठण्डा पसीना (खासकर कपालमें); तेज़ प्यास; कै; सब शरीर ठण्डा; तेज़ीसे अवसन्न हो जाना।

पोडोफाइलम ६।—बच्चोंको दाँत निकलनेके समय अतिसार; कई रङ्गोंका ज्यादा परिमाणमें दस्त; खून-मिला या खूनी पेचिशकी तरह दस्त होना; खाने या पीनेके बाद ही

पाखाना लग आना और तलपेट खाली मालूम होना ; बिना दर्दके पतले दस्त, सवेरे रोगका बढ़ना । पित्त-प्रधान रोगियोंके लिये यह ज्यादा लाभदायक है ।

फास्फोरस ६, ३० ।—पेट फूलना और खट्टी डकारोंके साथ (पुराना अतिसार) कमजोरी ; हैजेके बादका अतिसार ; पतले दस्तोंके साथ चर्बीके टुकड़े या साबूदानेकी तरह दाना-दाना मल निकलना ; यक्ष्मा रोग-प्रवणता ।

कैल्केरिया-कार्ब ६, ३० ।—कमजोरी और शीर्णता ; चेहरा रक्तहीन ; कभी अरुचि या कभी ज्यादा भूख ; अम्लसे पैदा हुए पुराने उदरामयमें पतला लसदार दस्त ; बच्चोंका अतिसार (खासकर जिन शिशुओंके माथेमें पसीना ज्यादा होता है), बच्चेका बदन ठण्डा ; गण्डमाला-ग्रस्त रोगियोंका अतिसार ।

ऐलो ३x, ३० ।—पीले रङ्गके बदबूदार दस्त ; वेग आते ही मल निकल जाता है । (पाखाना होनेके पहले और पीछे) वस्ति-गह्वरमें दर्द ; सवेरेके समय पतले दस्त ; मलके साथ वायु निकलना ; पाखाना होनेके समय रोगी समझता है, कि पेटकी सब चीजें ही बाहर निकल पड़ेंगी, मानो मलको धारण करनेका सामर्थ्य उसमें बिलकुल नहीं है ।

बोविस्टा ३ ।—औरतोंको ऋतुके पहले या पीछे पतले दस्त आना ।

बैप्टीशिया १X, ३ या पाइरोजेन ३०।— नाली वगैरहकी भाफ़के कारण पतले दस्त आने लगना।

एसिड-फास ३X, ६।—बिना दर्दके पतला सफ़ेद दस्त; अनजानमें निकल जानेवाले तथा सुस्ती लानेवाले दस्त; दस्तके बाद कमजोरी नहीं मालूम होना।

ट्राम्बिडियम ३०।—खाने-पीनेके बाद ही पेटमें दर्द और कूथन; बदबूदार दस्त, कभी-कभी खून-मिले दस्त। रक्तामाशय। मलद्वारमें जलन।

सोरिनम २००।—बहुत बदबूदार दस्त; रोगीके शरीर और श्वास-प्रश्वाससे बदबू निकलती है। जहाँ चुनी हुई दवासे कोई लाभ नहीं होता, वहाँ एक मात्रा सोरिनमके प्रयोगसे आश्चर्यजनक लाभ दिखाई देता है।

पेट्रोलियम ३।—बाँधा-कोबीकी तरकारी खानेकी वजहसे पैदा हुआ उदरामय। **सिर्फ दिनमें पतले दस्त।** रातमें दस्त नहीं आते।

मैग्नेशिया-कार्ब ६।—खट्टी गन्ध-भरे, गदली सेवारकी तरह हरे दस्त।

नूफर-लुटिया ३X।—सवेरे (४ से ७ बजेतक) अतिसार; खट्टी गन्ध-भरे पीले रङ्गके पानीकी तरह पतले दस्त; उदरमें वायु-सञ्चय; पाखाना होनेके बाद मलद्वारमें जलन।

कोलोसिन्थ ३ ।—उदरमें या नाभीके चारों तरफ काटने या सिकुड़नेकी तरह दर्द ; दर्दसे रोगी दोहरा हो जाता है। भोजन करनेपर दर्द बढ़ जाता है और दस्त भी ज्यादा आने लगते हैं ; ज्यादा मात्रामें पाखाना होनेपर थोड़ी देरके लिये दर्द घट जाता है, फिर दर्द पहलेकी तरह ही होने लगता है ; पहले पानीकी तरह, फिर पित्त-मिले और कभी-कभी खून-मिले दस्त आते हैं ; दबाने या झुकनेसे दर्द कम हो जाता है।

फेरम-मेट ६, ३० ।—बहुत दिनोंतक अतिसार भोगनेके कारण रोगीके बहुत कमजोर हो जानेपर और बहुत कूथन रहनेके साथ अनपचके दस्त हुआ करते हैं ; रक्त-स्वल्पता।

सलफर १२ या ३० ।—पीले रङ्गके या मैले सफेद रङ्गके दस्त ; बिना दर्दके दस्त होना ; अजीर्णके दस्त ; सवेरे रोगका बढ़ना ; पुराना अतिसार (पुराने उदरामयमें) ; मल-द्वारमें जखम ; मलके वेगसे रोगीकी नींद खुल जाती है और उसी समय दौड़कर पाखाने जाना पड़ता है।

कैफेइन (मात्रा चौथाई ग्रेन Caffein $\frac{1}{4}$ grain a dose) ।—बार-बार दस्त होनेके कारण रोगीके हृत्पिण्डकी क्रिया तुरन्त बन्द होनेकी सम्भावना होनेपर इसका प्रयोग होता है (वास्तवमें "कैफेइन" हृत्पिण्डको उत्तेजना देनेवाली और पेशाब लानेवाली एक बढ़िया दवा है)।

मैग्नेशिया-फास १२x विचूर्ण, रिसिनस ६, इथ्यूजा ६, कैल्केरिया-कार्ब ६, लैकेसिस ६, एपिस-मेल ६, कार्बो-वेज ३० और साइना ३x—२०० की भी कभी-कभी जरूरत पड़ती है।

देरमें पचनेवाली चीजें खानेके कारण अतिसारमें—पल्सेटिला ६, नक्स-वोमिका ३०, ऐण्टिम-क्रूड ६, इपिकाक ६।

दूषित पानी पीने या कटहल खानेके कारण अतिसारमें।—कैमोमिला १२, आर्स १२, बैप्टी ६x।

बरफ, बरफका पानी या आइसक्रीम खानेके बाद पचनेमें गड़बड़ी (अर्थात पेट फूलना, कै वगैरह लक्षणोंमें) होनेपर—आर्सेनिक ३ या कार्बो-वेज ६।

अशुद्ध वायु सेवनसे पैदा हुए अतिसारमें—बैप्टीशिया ३x या आर्सेनिक ६ लक्षणके अनुसार।

ओस या जाड़ेमें सर्दी लगकर अतिसार होनेपर—स्पिरिट-कैम्फर, ऐकोनाइट ३x या ब्रायोनिया ३।

दिनमें गर्मी और रातमें सर्दी होनेकी वजहसे अतिसारमें—ब्रायोनिया ३x—३०।

बर्सातमें सर्दी लगकर पतले दस्त होनेपर—डाल्कामारा ६ या रस-टक्स ६।

बाँधा-कोबी खानेके कारण पतले दस्तोंमें—पेट्रोलियम ३।

मानसिक उत्तेजनासे पैदा हुए पतले दस्तोंमें—इग्नेशिया ६, कैमोमिला १२ या विरेट्रम ६।

दूध पीनेसे पैदा हुए अतिसारमें।—इथ्यूजा ६, कैल्के-कार्ब ६।

घी या तेलमें पका भोजन खानेके कारण पैदा हुए अतिसारमें—पल्सेटिला ६।

दाँत निकलनेके समयके अतिसारमें—कैमोमिला १२, कैल्के-कार्ब ६, मार्क ३०, कोलोसिन्थ ६x, पोडो ६, बेल ६, सलफर ३०, आर्स ६।

भय या प्रसन्नतासे पैदा हुए अतिसारमें—काफिया ६, ओपि ३०।

शोक-जनित अतिसारमें—इग्नेशिया ६।

गर्भावस्थामें या प्रसवके बादके अतिसारमें—ऐण्टिम-क्रूड ६, चायना ६।

फल या खट्टे पदार्थ खानेसे पैदा हुए अतिसारमें—आर्स ३०, कोलोसिन्थ ६, चायना ६।

वायु परिवर्त्तन आदि कारणोंसे।—कैम्फर θ (बहुत जाड़ा); ऐकोन ३ (जाड़ेके दिनोंकी सूखी हवा

लगनेके कारण); ब्रायो ३ (गर्मीके बाद सर्दी लगनेके कारण); डाल्का १२ (बरसाती हवा या तरीकी वजहसे); कोलोसिन्थ ६ (शूलके दर्दके साथ)।

गर्मीकी ऋतुके अतिसारमें—चायना ६ (सामान्य अतिसारमें); विरे-ऐल्ब ६ (अतिसारके साथ ऐंठन); आइरिस ६ (कैके साथ सरमें दर्द); आर्स ६ (गहरी सुस्ती) एसिड-फास ६ (गर्मी या शरत् ऋतुका अतिसार अगर व्यापक रूपमें दिखाई दे); कोल्चि ६, पोडो ६, पल्स ६, ब्रायो ६ ।

दुर्बल या वृद्ध मनुष्योंके अतिसारमें ।—फास ६, ऐसिड-फास ३०, ऐसिड-नाइट्रिक ३०, ऐण्टिम-क्रूड ३० ।

पुराने अतिसारमें—सलफर ३०, कैल्के-कार्ब ३० ; लाइको ३०, ऐलो ३०, एसिड-फास ६, चायना ३x, आर्सेनिक ३x, ६ ; फास ३, आयोड ६, एसिड-नाइट्रिक ३, फेरम-आयोड ३x ।

हैजेका आक्रमण और पूर्ण विकासावस्थाकी दवाएँ और "रक्तामाशय" रोगकी दवाएँ देखिये। काँच बाहर निकलनेपर "काँच निकलना" देखिये। आजकल शिशु अतिसारमें कुउएटन प्रवर्त्तित आइसोटानिक (isotonic) समुद्र जलके इञ्जेक्शन प्रयोगसे शायद बहुत कुछ उपकार होता है।

नियम।—ओस या सर्दी न लगे, ऐसे कमरेमें रोगीको रखना चाहिये। गर्म पानीमें कपड़ा भिंजाकर, अच्छी तरह निचोड़, रोगीका शरीर अच्छी तरह पोंछ डालना चाहिये। रोगीका पेट हमेशा गर्म कपड़ेसे ढँका रहना चाहिये।

पथ्य।—आरारूट, गन्दभादुलियाका शोरवा, बार्ली, मठा, नेबू, सिङ्गी या माँगुर मछलीका शोरवा; इसके बाद खूब पुराने चावलका भात। पतली चीजें ज्यादा परिमाणमें खाना हानिकारक है। ज्यादा भोजन, गुरुपाक द्रव्य खाना, बार-बार भोजन, असमयमें भोजन और ज्यादा परिमाणमें खट्टे पदार्थ खाना मना है।

आमाशय या पेचिश

(Dysentery)

बड़ी आँतोंमें घावके साथ प्रदाहको "**आमाशय**" कहते हैं। पेटमें दर्द, पाखानेके वक्त कूथन, सफेद आम या आमके साथ दस्तमें खून आना इसका **प्रधान लक्षण** है। दस्तमें आमका भाग कम और खून ज्यादा रहनेपर—**रक्तामाशय** कहते हैं। **रोगके आरम्भमें** भूख न लगना, कै या मिचली, नाभीके चारों ओर तेज़ दर्द, पानीकी तरह पतले दस्त, कूथनके साथ बार-बार दस्त होना और सामान्य ज्वर-भाव होना, धीरे-धीरे समूचे पेटमें दर्द, काँखनेके साथ बार-बार पाखाना लगना, खून-

मिला श्लेष्मा-स्राव या सिर्फ खून या मछलीके धोए हुए पानीकी तरह दस्त होते हैं। **रोग बढ़ जानेपर**—रोगीके शरीरसे एक तरहकी बदबू आने लगती है; चेहरा लाल, द्रुत और क्षीण नाड़ी, हिचकी, अनजानमें पाखाना हो जाना, हाथ-पैर ठण्डे, शरीरका ताप १०२ से १०३ डिगरी, जीभ लाल और चमकीली, यकृतमें फोड़ा, सान्निपातिक बोखारके उपसर्ग, आँतोंके आवरणका प्रदाह, प्रलाप वगैरह लक्षण प्रकट होते हैं। यदि बीमारी बहुत कड़ी या सांघातिक न हुई तो दस्त, पेटमें दर्द और कूथन धीरे-धीरे कम होने लगती है, दस्तमें मल दिखाई देता है और रोग आराम होने लगता है। यही रोग पुराना या ग्रहणीका आकार जब धारण कर लेता है तो रोगी बहुत दुबला हो जाता है और दिनमें तीन-चार बार दस्त हुआ करता है। आमाशयके साथ मैलेरिया रोग रहनेपर या यकृतमें फोड़ा हो जानेपर समझना चाहिये, कि अवस्था नाजुक हो गयी है।

जीवाणु ही इस बीमारीकी पैदाइशके खास कारण हैं। खाने-पीनेका अनियम, खूब गर्मी या सर्दी लगना, दूषित पानी पीना वगैरह कारणोंसे जब शरीर कमजोर हो जाता है, तभी जीवाणु सहजमें ही शरीरपर आक्रमण कर सकते हैं। रोगीके शरीर या पाखाने-पेशाबसे जो भाफ़ निकलती है, उससे ही शायद इस तरहके जीवाणु आकर यह बीमारी पैदा कर देते हैं। मक्खियोंके द्वारा यह बीमारी फैलती है।

शीगा (Shiga), ओस्लर (Osler) वगैरह आजकलके निदान जाननेवालोंने भारतवर्ष और दूसरे-दूसरे गर्म देशोंके

आमाशयको दो तरहका बताया है :—(क) अमीबासे (Amæba) पैदा हुआ आमाशय; (ख) बेसिलससे (Bacillus) पैदा हुआ आमाशय।

(क) **अमीबा जीवाणुसे पैदा हुआ आमाशय (Amæboid dysentery)—**दस्तमें "अमीबा" नामके छोटे जीवाणु दिखाई दें और इसी वजहसे बड़ी आँतोंमें प्रदाह और बहुत ज्यादा घाव हो जाये, तो उसे "अमीबासे पैदा हुआ आमाशय रोग" हुआ है, यह निश्चय हो जाता है। दर्द और कूथनके साथ एकाएक रोगका आक्रमण, बार-बार श्लेष्मा-मिला या थोड़ा खून-मिला दस्त होना, हलका बोखार या बिलकुल ही बोखार न रहना, शीर्णता और गहरी सुस्तीका बहुत जल्द बढ़ जाना, जीभ लाल और चमकीली दिखाई देना, बहुत ज्यादा रक्त-स्राव, यकृतमें दर्द, कभी बोखार और पसीनेके साथ यकृतमें फोड़ा हो जाना, इस तरहके आमरक्तका यह प्रधान लक्षण है। गहरी सुस्ती या ज्यादा खून जाना या बहुत बलगम निकलना या आँतोंके आवरणका प्रदाह वगैरह कारणोंसे रोगी बहुत जल्द मर जा सकता है।

चिकित्सा।—खाटसे न उठना, पतली और हलकी चीजें खाना (जैसे—आरारूट, बकरीका दूध, बेदानाका रस), बहुत गर्म पानीमें (दो-एक बून्द तारपीनका तेल डालकर) फ्लानेल निचोड़कर पेटको सेंकनेसे बहुत फायदा होता है। इङ्गलैण्डके ह्वीलर, मैकगाविन और अमेरिकाके मिल्स वगैरह

सुप्रसिद्ध होमियोपैथिक डाक्टर इस रोगमें इञ्जेक्शन देते हैं। चमड़ेके भीतर पिचकारीसे एक ग्रेन मात्रा एमिटीनका (emetine) प्रयोग करना इस बीमारीकी अमोघ दवा है। (यकृत-प्रदेशमें फोड़ा रहे या न रहे जरूरत पड़नेपर) पाँच-छः बार इस तरह इञ्जेक्शन लेनेसे यह रोग अच्छा हो सकता है। कभी-कभी नश्तर लगवानेकी जरूरत पड़ती है।

(ख) **बेसिलससे** (या शलाकाकी तरह जीवाणु) **पैदा हुए आमाशय** (Bacillary-dysentery) खूनमें एक तरहके जीवाणु रहने, बड़ी आँतका प्रदाह होने और उसमें बहुत गहरा जखम होनेपर समझना चाहिये, कि "बेसिलस-जात आमाशय रोग" हुआ है। जीवाणु प्रवेश करनेके ४८ घण्टे बाद भी कोई उपसर्ग न दिखाई देना, पेटमें दर्द, बोखार, बार-बार (२० से ४० या और ज्यादा) श्लेष्मा या खून-भरा दस्त; फिर शरीरकी गर्मी और पेटके दर्दका बढ़ना, जीभ मैल चढ़ी रहना, बहुत शीर्णता; प्रलाप, जी मिचलाना वगैरह उपसर्ग पैदा होकर, तीन-चार दिनोंमें ही रोगी मर जा सकता है। कभी-कभी रोग तीन-चार हफ्ते तक बना रहता है। इस जातिके आमाशयमें आँतोंके आवरणका प्रदाह या यकृतमें फोड़ा होते देखा जाता है।

चिकित्सा

मर्क-कोर ३x, ६x।—इस जातिके आमाशयकी प्रधान दवा है। पेटमें हमेशा काटनेकी तरह दर्द, बहुत कूथन

या वेग होना ; बार-बार आमके साथ खूनके दस्त, दस्त होनेके बाद भी तकलीफ़का कम न होना, रोगीको पाखानेमें बैठे रहनेकी इच्छा, पेशाब थोड़ा होना ; आधी रातके बाद मलाशयके सब यन्त्रोंकी तकलीफ़का बढ़ जाना वगैरह इस दवाके लक्षण हैं।

नयी बीमारीमें नीचे लिखी दवाएँ भी दी जा सकती हैं। जैसे—**आर्सेनिक ३X, ६X** (दस्त ज्यादा पानीकी तरह और बदबूदार, जलनका दर्द); **बैप्टीशिया θ, ३X** (बोखारके साथ गहरी सुस्ती); कार्बो-वेज ६—३० (हिमाङ्ग या पतनावस्था); डायस्कोरिया θ—३x (तेज़ दर्द और कूथन); फास्फो ३x—६ (बिना तकलीफ़के दस्त) और **लैकेसिस ६** (नींद खुलने बाद ही रोगी तकलीफ़से अधीर हो जाता है)।

इन दोनों तरहोंके आमाशयके अलावा एक तरहका आमाशय और भी है, जिसे "उपभिल्लीक (diphtheritic) आमाशय" कहते हैं।

संक्षिप्त चिकित्सा

सामान्य आक्रमणमें—(जैसे—ज्यादा परिमाणमें हरे रङ्गका आम निकलना)—मर्क्युरियस-डलसिस ६x, १२x।

उष्ण-प्रधान देशोंके आमाशयमें—(खासकर ज्यादा कूथनके साथ बहुत अधिक रक्त दिखाई देनेपर)—

मर्क्युरियस-कोर ३x—३० प्रधान दवा है। कैन्थरिस ३x या आर्सेनिक ३x की भी कभी-कभी जरूरत पड़ती है।

कूथनमें—बेलेडोना ६x, ऐलो ६ या नक्स-वोमिका ३०।

पेटमें असह्य दर्द—इपिकाक ३x—३, कैन्थरिस ६, मैग्नेशिया-फास १x—६x चूर्ण (गर्म पानीके साथ) या क्यूप्रम-आर्स ६x चूर्ण।

रक्त-स्रावमें—आर्निका ३x, इपिकाक ३x, हैमामेलिस १x या हाइड्रैस्टिस ३x।

मैलेरिया ज्वरके साथ आमाशयमें।—सिड्रन θ या किनिनम-सल्फ १x—३x चूर्ण, ऐल्स्टोनिया θ।

मैलेरिया ज्वरके साथ आमाशय और रक्त-स्वल्पताके साथ अजीर्ण रोग-ग्रस्ता (जिसके पेटमें दूध भी न पचता था) एक प्रौढ़ा स्त्रीको ऐल्स्टोनिया θ खिलाकर तीन हफ़्तोंमें आराम किया गया है।

रोगका पुराना आकार धारण करनेपर।—सलफर ३० या नाइट्रिक-एसिड ६ और फी खुराक दो-तीन बून्द काड-लिवर आयल रोगीको देना चाहिये। रोग कुछ पुराना होनेपर, **वेक्सिनिनम-मार्टिलस** θ ज्यादा फायदा करता है।

चिकित्सा

ऐकोनाइट ३x, ३० ।—बोखार, पेटमें दर्द, खून-भरा आम, प्यास, मृत्यु-भय और बेचैनी ।

कार्बो-वेज ६, ३० ।—वायु निकलनेमें बहुत बदबू ; पेट फूलना ; ज्यादा डकार ; गर्मी से आकर बरफ पी लेनेके कारण आमाशय ; पैर ठण्डे हो जाना ; पेशाबमें दुर्गन्ध या पेशाब बन्द ; सड़े मुर्देकी तरह बदबूदार दस्त, नाड़ी बहुत क्षीण, यहाँतक कि कलाईमें नाड़ीका पता ही नहीं लगता । (नये रोगमें साधारणतः यह दवा नहीं दी जाती) ।

हैमामेलिस १x ।—गाढ़े या कालिमा लिये खूनके साथ ज्यादा मल निकलनेके लक्षणमें ।

मर्क्यूरियस ।—यह आमाशयकी एक बढ़िया दवा है । भिन-भिन्न प्रकारके मर्क्यूरियस इस रोगको भिन्न-भिन्न अवस्थाओंमें ज्यादा फायदा करते हैं । खूनके साथ आमके दस्त होना, कूथन रहना, पाखाना हो जानेके बाद भी रोगी समझता है, कि और भी पाखाना होगा, मुँहमें थूक भरना—मर्क्यूरियसके ये कई विशेष लक्षण हैं । बहुत ज्यादा परिमाणमें ये उपसर्ग मौजूद रहनेपर, **मर्क-कोर ३x, ३० ;** ये लक्षण थोड़े रहनेपर, **मर्क-वाइवस ६x विचूर्ण** या **मर्क-सोल ६** और बहुत थोड़ी मात्रामें इन सब लक्षणोंके रहनेपर मर्क-डलसिस ६x विचूर्ण देना चाहिये ।

आमाशय रोगमें मर्क-कोर (३x, ६, ३०) बहुतसे मौक़ोंपर महौषध-सा काम करता है। सिर्फ खून या खून-मिला आम; बहुत कूथनके साथ बार-बार पाखानेकी इच्छा; पाखाना होनेके पहले और बाद, पेटमें तेज़ दर्द; मूत्राशयमें जलनके साथ बड़े कष्टसे थोड़ा पेशाब (कभी-कभी एकदम पेशाब होता ही नहीं); इसके साथ ही रोगी निस्तेज हो पड़े, तो यह दवा देनी चाहिये। पाखाना होनेके बाद "और पाखाना होगा" समझकर बैठे रहना और उसके साथ ही बराबर कूथनके लक्षणमें **मर्क-कोर** खूब फायदा करता है। पाखानेमें खूनका भाग जितना ज्यादा रहेगा, यह दवा भी उतनी ही ज्यादा फायदा करेगी। यदि मलमें खूनका भाग कम होकर श्लेष्माका भाग ज्यादा हो या अन्त्र-प्रदेशके निचले भागपर रोग हुआ हो, तो **मर्क-वाइवस ६x विचूर्ण** या **मर्क-सोल ६ देना चाहिये** और हरे रङ्गका आम या लाली लिये पतले दस्त होते हों या अन्त्र-प्रदेशके ऊपरका अंश रोग-ग्रस्त हुआ हो, तो **मर्क-डलसिस ६x** सेवन करना चाहिये।

ट्राम्बिडियम ६, ३०।—खाने-पीने बाद ही पेटमें जोरका दर्द और काँखनेसे उपसर्गका बढ़ना; यकृतमें रक्त-सञ्चय; भूरे रङ्गका पतला खून-मिला दस्त और उसके साथ ही कूथन। मर्क्यूरियस सेवनके बाद यह फायदा करता है।

नक्स-वोमिका ३X, ३०।—पाखानेके वक्त या उसके पहले बहुत कूथन ; परन्तु पाखाना हो जानेके बाद कूथन वगैरह तकलीफोंका बन्द हो जाना। खूनके साथ थक्का-थक्का आम निकलना, कई बार होनेपर भी परिमाणमें कम होना। पाखाना होने बाद ऐसा मालूम होना, कि अभी पेटमें मल मौजूद है।

मर्क्युरियस और नक्स-वोमिकाका प्रभेद।—नक्स-वोमिकामें, पाखाना होने बाद कुछ देरके लिये कूथनकी तकलीफ़ बन्द हो जाती है ; परन्तु मर्क्युरियसमें पाखाना होने बाद कूथनकी तकलीफ़ मौजूद रहती है।

मैग्नेशिया-फास १X, ६X चूर्ण।—(गर्म पानीके साथ सेवन) पेटमें बहुत दर्द ; मलनालीमें बेहद तकलीफ़।

ऐलस्टोनिया θ, ३X।—मैलेरिया बोखारके साथ आमाशय ; खूनकी कमी।

बेलिडोना ६X।—पेट फूलना ; लगातार कूथनके साथ थोड़ा दस्त ; मलनालीमें प्रदाह ; ऐसा मालूम होना कि मूत्राशय और मलनाली ठेलकर नीचेकी ओर उतर जाती है। तेज़ बोखार, आँखें चमकीली ; चेहरा लाल और प्रलाप ; पाखाना हो जानेके बाद ज्यादा काँखनेकी इच्छा (बच्चोंके आमाशयमें यह ज्यादा फायदेमन्द है)।

पोडोफाइलम ६, ३०।—ताजे खूनका दस्त; खूनकी लकीर पड़ी हुई आम-भरा दस्त; बहुत कूथन; शूल-वेदना (पेटमें); काँच बाहर निकल आना; मिचली; हरा आम या खून-मिले दस्त; बच्चोंके अतिसारमें।

कोलोसिन्थ ३ या ६।—पेट फूलना; खींच रखने या मरोड़की तरह दर्द; दबाकर पकड़नेसे (या झुककर दोहरा जानेकी तरह हो जानेसे) दर्दका कम होना; जीभ सफ़ेद मैल चढ़ी; खून-भरी, चिकना आम निकलना और मिचली, परन्तु कै न होना।

एलो ६।—मलिन और गर्म रक्त-स्राव; बहुत कूथन, कमरमें दर्द, उरु-देशमें भार; नाभीके चारों ओर काटनेकी तरह दर्द; मुँह सूखते रहना; प्यास; तलपेटका फूलना और कभी-कभी पाखाना होते वक्त बेहोशी। पुराने आमाशयकी यह एक बढ़िया दवा है।

कैल्केरिया-कार्ब ६; ३०।—हरा दस्त या सफेद अथवा पीली आभा लिये दस्त; माथेमें पसीना; पैरके तलवे बरफकी तरह ठण्डे; पैरकी पोटलीमें ऐंठन; मलद्वारमें तकलीफ़।

कैल्केरिया-फास ६, ३०।—आम और रक्त-मिला मल, बारमें अधिक, पर परिमाणमें कम। पाखाना होनेके समय खब तकलीफ़, गहरी कमजोरी, पेट धँस जाता

है ; रोगीको खानेकी इच्छा नहीं रहती ; छोटी उमरके बालक-बालिकाओंके लिये उपयोगी है ।

ड्रुपिकाक ३x, ६ ।—घासकी तरह हरे रङ्गका या पुराने गुड़की तरह काली आभा लिये फेन-भरा दस्त ; पेटमें दर्द और कूथनके साथ-ही-साथ पहले फेन-भरा बदबूदार खूनका दस्त, पीछे खून-मिला आम निकलना ; लगातार कै या मिचली ; बहुत ग्लानि। कच्चे फल या खट्टी चीजें खानेके कारण आमाशय होनेपर ।

कास्टिकम ६ ।— बहुत कूथनके साथ टुकड़ा-टुकड़ा रक्त-मिला श्लेष्मा निकलना ; मलद्वार हिला करता है और बहुत तकलीफ होती है, पेट फूला रहता है ।

पल्सेटिला ३, ३० ।—सादा श्लेष्मा-भरे दस्त ; तलपेटमें दर्द ; घीसे पकी चीजें खानेके कारण आमाशय रोग ; रातमें बीमारीका बढ़ना ।

आर्सेनिक ६ ।—शरीरमें जलन, तेज़ प्यास, रोगीका निस्तेज हो जाना ; सड़ी बदबूके साथ खून-मिला काला दस्त, तेज़ प्यास ; थोड़ा-थोड़ा पानी कई बार पीना । बेचैनी ; मृत्यु-भय ।

गैम्बोजिया ६ ।—बदबूदार पतले दस्त ; खाने-पीनेके बाद रोग बढ़ता है ; पेट दबा रखनेपर दर्द घटता है । पेटमें ऐंठनके साथ एकाएक दस्तका वेग पैदा हो जाता है ।

फास्फोरस ६ ।—हरे रङ्गका लसदार या खून-मिला दस्त ; किसी तरहका दर्द नहीं रहता ; सवेरे या बाईं करवट सोनेपर रोग बढ़ता है ; ठण्डी पतली चीजें पीनेकी तेज़ इच्छा । साबूदानेकी तरह पदार्थ दस्तपर तैरता रहता है ।

लाइकोपोडियम ३० ।—आमाशयमें पेट फूलनेका लक्षण रहनेपर ।

बैप्टीशिया १x ।—विकारके लक्षण-मिले रक्तामाशयमें ; रोगी बिलकुल ही सुस्त हो पड़े । बहुत बदबूदार मल, पतला, काला, खून-मिला । वृद्धोंका रक्तामाशय ।

कैन्थरिस ३x ।—रोग सङ्कटापन्न होनेपर तथा बहुव्यापक आमाशयमें ; तकलीफ़से पेशाब निकलना ; पेशाब करनेके बाद बहुत जलन ; मांस धोए पानीकी तरह दस्त ; पेटमें तेज़ दर्द ; पेट फूलना ; प्यास, परन्तु पानी पीनेकी इच्छा न होना ; हिमाङ्ग ।

कैप्सिकम ३x ।—बार-बार काले खूनके साथ श्लेष्मा-भरा पाखाना होना ; बहुत कूथन और पेशाब करनेके समय जलन ; पेट फूलना ।

कोल्चिकम ३x ।—भाद्र या आश्विन महीनेके आमाशयमें ; काँखना, पेटमें मरोड़, पैरकी पीटलीमें ऐंठन, उदरी, निस्तेज-भाव ।

आर्निका ३x, ६ ।—ज्यादा लाल खून निकलना और कूथन ।

रस-टक्स ३ ।—रातके समय बेखबरीमें मल निकल जाना ; तलपेटमें काटनेकी तरह दर्द ; बराबर पाखाना लगा ही रहना ; पुराने आमाशयमें (खासकर विकारके लक्षण रहनेपर), रस-टक्स ३० महौषध है ।

सलफर ६, ३० ।—पाखाना होनेके बाद कूथन बन्द हो जाये और खून-मिले आमके दस्त न होकर आमके ऊपर सूतकी तरह खूनकी रेखा दिखाई दे । रोग दुःसाध्य होने या किसी दवासे उपकार न होनेपर, **सलफर ३०** देना चाहिये । पुराने आमाशयकी यह एक उत्कृष्ट दवा है ।

नाइट्रिक-एसिड ६ ।—पुराने आमाशय रोगमें (खासकर पेटके भीतर जखम होने और पीव निकलनेपर) ; हरे या खून और आम-मिले दस्त ; दस्तमें सड़ी गन्ध ; पाखाना होनेके समय काँखना और हो जानेके बाद कमजोरी मालूम होना । उपदंशके रोगीके लिये या जिन्होंने पहले बहुत ज्यादा पारदसे बनी दवाएँ खायी हैं, उनके लिये नाइट्रिक-एसिड बहुत फायदेमन्द है ।

वैक्सिनिनम-मार्टिलस θ (फी मात्रा ८ से १२ बूंद सवेरे-शाम)।—नये और बहुत पुराने आमाशय—दोनों तरहकी बीमारियोंमें फायदा करता है। यह दवा प्रयोग करनेपर आँतें न सड़नेवाली (aseptic) अवस्थामें रहती हैं और शोषण-क्रिया (absorption) और रोग फैलना बन्द होता है ।

एपिस ३, ऐल्यूमिन ६, चायना ६, ब्रायोनिया ३, हाइड्रेस्टिस १x, लैकेसिस ६, प्लम्बम ६, विरेट्रम-ऐल्बम ६, ज़िङ्कम ६ प्रभृति दवाएँ बीच-बीचमें काममें लायी जा सकती हैं। "अतिसार" रोगकी दवाएँ देखिये। काँच बाहर होनेपर "काँच निकलना" देखिये।

पथ्यादि।—रोगीका कमरा और बिछावन हमेशा साफ़-सुथरा रखना चाहिये और दस्त, कै वगैरह दूर फेंकना चाहिये। इस रोगमें रोगी बहुत कमजोर हो जाता है, इसलिये, लघुपाक और बलकारक पथ्य देना उचित है। थूलकड़ी (या थानकुनी) "सागका शोरवा"* ज्यादा फायदा करता है। आमाशयके साथ मैलेरिया और रक्त-स्वल्पता उपसर्ग रहनेपर, कुलेकाँटा नामक सागका शोरवा बहुत फायदेमन्द है। इसे खानेसे खूनके लाल कण बढ़ जाते हैं और आमाशय तथा मैलेरिया बोखार बन्द हो जाया करता है।

कसेरू, मैंङ्गोस्टीन, कच्चा सिंघाड़ा, आरारूट, मठा, धानके लावेका माँड़, सिङ्गी या माँगुर मछली या गन्धभादुलियाका शोरवा, बार्ली, कच्चे बेलका सिझाया हुआ अंश, थोड़ा बेदानाका रस, बकरीका दूध और (बोखार कम रहनेपर) भातका माँड़ देना चाहिये। नींबू, अनारस, खट्टा अंगूर, दही वगैरह खट्टी (acid) चीजें, नये आमाशयमें मना है; परन्तु

* थानकुनी सागका पत्ता निचोड़कर उसका रस निकाल, एक कांटी (या लोहेका टुकड़ा) आगमें डालकर, खूब लाल हो जानेपर, उस रसमें थोड़ी देर डुबा रखनेके बाद, छानकर पीनेसे बहुत फायदा होता है।

रोग बहुत दिनोंतक भोगनेपर, खूब पुरानी इमली एक पोर और मिश्री एक टुकड़ा रातमें पानीके साथ भिंगोकर दूसरे दिन सवेरे (कई हफ़्ते तक) सेवन करनेसे फायदा होता है। समूचा पेट फ्लानेलसे ढँके रखना चाहिये। जबतक रोग अच्छी तरह आराम न हो जाये, तबतक खाटसे उठना न चाहिये। गिरिडिह, छोटा नागपुर, जिन स्थानोंकी मिट्टीमें लोहा (iron) या अबरख ज्यादा हों, उन जगहोंमें आमाशयके रोगीको न रहना चाहिये। (पुरानी बीमारीमें) भोजनके तुरन्त बाद ही दो-एक बून्द काड-लिवर आयल सेवन करना अच्छा है और रोगीके दुबले हो जानेपर, यह तेल पेटपर मलना उत्तम है। यदि कहीं होमियोपैथिक दवा मिलनेकी सुविधा न हों और रोगीका मलान्त्र बाहर निकल पड़े, पाखानेके साथ बहुत-सा खून निकलता हो, तो एक ड्राम पानीके साथ कन्दुरीके पत्तेका रस सेवन करना चाहिये।

आमाशयका जखम

(Ulcer of the Stomach)

पाकस्थली और छातीकी हड्डीके ठीक नीचे जलनकी तरह दर्द और खानेके बाद दर्दका बढ़ना, कै हो जाने बाद दर्दका बन्द होना, इस रोगका प्रधान लक्षण है। यदि चित्त सोनेसे दर्द कम होता हो, तो समझना चाहिये, कि आमाशयके ठीक

सामनेवाले हिस्सेमें जखम हुआ है। यदि पट सोनेसे दर्द कम हो जाता हो, तो समझना चाहिये, कि "पीछेकी ओर" जखम हुआ है। मल जमा होना, अजीर्ण, रजकी गड़बड़ी, रक्त-स्वल्पता, खूनकी कै वगैरह उपसर्गों के साथ यह बीमारी हमेशा दिखाई देती है। ज्यादातर औरतोंको ही यह बीमारी हुआ करती है। आजतक इस रोगका सच्चा कारण-तत्व मालूम न हो सका।

चिकित्सा।—युरेनियम-नाइट्रिकम ३x विचूर्ण (छः घण्टेका अन्तर देकर, दो ग्रेनकी मात्राके हिसाबसे) इसकी प्रधान दवा है (खासकर पाकाशयके निचले भागमें जखम होनेपर)। कैलि-बाई ३x विचूर्ण (मात्रा दो ग्रेन, छः घण्टेका अन्तर देकर), जल जानेके बाद जखम होनेपर या पाकाशयके सामनेवाले भागमें जखम होनेपर। आर्जे-नाइट्रिक ६, आर्स ३, क्रियोजोट ६, हाइड्रैस्टिस २x, लैकेसिस ६, आर्निथोगैलम-ऐम्बेलेटम (एक ही बार, एक बून्द खाना चाहिये) बीच-बीचमें आवश्यक हो सकते हैं।

पथ्यादि।—दूध, मठा, बहुत थोड़ा बरफ और सोडा-वाटर, कभी-कभी बीच-बीचमें ऐट्रोपाइनम-सल्फ ४x दो ग्रेनकी मात्राके हिसाबसे सेवन करना चाहिये। तम्बाकूका सेवन एकदम छोड़ देना और पूरी तरह विश्राम लेना चाहिये।

———

हिचकी

(Hiccough)

पेट और कलेजेकी व्यवधायक-पेशी (उदरवक्ष-व्यवधायक-पेशी diaphragm) के और साँस-नलीके दरवाजे (glottis) में क्षणिक आक्षेपके साथ साँस लेनेमें कर्कश शब्द होनेका नाम "हिचकी" है। यह हमेशा किसी तेज़ बीमारीका भयावह लक्षण है। पाकाशयकी बीमारी या किसी दूसरे कारणसे एकाएक छाती और पेटकी व्यवधायक-पेशी सिकुड़ जाती है। इस तरह सिकुड़नेके कारण हवा जोरसे फेफड़ेके भीतर घुसती है। इस कारणसे स्वरयन्त्रके मुँहपर हिचकी पैदा होती है। पाचन-यन्त्रके गड़बड़ीके कारण हिचकी, हिस्टीरियाकी हिचकी या बच्चोंकी हिचकी, इतनी चिन्ताकी बात नहीं है; परन्तु किसी कड़ी बीमारीमें बराबर हिचकी आनेपर नाड़ी लोप हो जाती है और रोगी मर जा सकता है।

चिकित्सा।—सब तरहकी हिचकियोंमें जिन्सेङ्ग θ का प्रयोग किया जा सकता है। इससे अगर फायदा न हो तो नक्स-वोमिका ३ (खासकर भोजनके पहले अगर हिचकी आती हो) या साइक्लामेन् ३ भी व्यवहार किया जा सकता है। क्यूप्रम ६ या क्यूप्रम-आर्सेनिकम् ६, हिचकीकी बहुत बढ़िया दवा है (खासकर साँसमें कष्ट, कै, डकार आना, पानी पीनेके बाद हिचकीका बन्द होना लक्षणमें)। काकुलस ६, हिचकी

या डकार आना और खोंचा मारनेकी तरह दर्द होना। खाने-पीने या बीड़ी, सिगरेट वगैरह पीने बाद हिचकी आती हो तो, इग्नेशिया ३। लगातार तेज़ हिचकी (खासकर मैलेरियाके बीमारीकी), नेट्रम-म्यूर ६। आक्षेप और जोरकी आवाज़के साथ हिचकी आनेपर, साइक्यूटा ३। जीभ एकदम बाहर निकल आये और फिर सिकुड़कर भीतर चली जाये तो समझना चाहिये, कि शारीरिक यन्त्र पर्य्यायक्रमसे सिकुड़ते और शिथिल होते हैं। ऐसी अवस्थामें डाक्टर साल्ज़र लाइकोपोडियम ३० व्यवहार कर, बहुत कुछ फायदा देख चुके हैं।

डाक्टर सरकार हैज़ेकी हिचकीमें इन कई दवाओंसे बहुत कुछ फायदा देख चुके हैं—बेलेडोना, साइक्यूटा, हाइयोसायेमस, कार्बो-वेज, एग्नस, पल्सेटिला, स्टैफिसाइग्रिया, फास्फोरस, इग्नेशिया, सलफर।

डाक्टर साल्ज़र लाइकोपोडियम, क्यूप्रम-ऐसेटिकम, साइक्यूटा, बेलेडोना, नक्स-वोमिका, लक्षणके मुताबिक काममें लानेकी सलाह देते हैं। ये सभी दवाएँ θ—३० शक्तिकी व्यवहार की जा सकती हैं। ज्यादा हालके लिये, हमारी प्रकाशित "हैज़ा-चिकित्सा" पुस्तक देखिये।

आनुसङ्गिक चिकित्सा।—टोटकेकी दवासे भी कभी-कभी फायदा होता है। ताड़के फलका गूदा या कच्चे डाबका पानी और तालके बीयाके भीतरका पका गूदा वगैरह

योगोंसे भी कभी-कभी तुरन्त फायदा होता है। रोगीको हलका पथ्य देना चाहिये।

अगर पाकाशयकी गड़बड़ीकी वजहसे कभी-कभी बहुत दिन (कई हफ़्ते या महीने) तक हिचकी आती रहे और उस समय अकड़न या दर्द मालूम होता हो तो ऐसी अवस्थामें कमरमें एक मजबूत बन्धन (बैण्डेज) बाँध देनेसे बहुत कुछ फायदा हो जाता है। थोड़ा पानी या दूध पिला देनेसे बच्चोंकी हिचकी सहजमें ही बन्द हो जाती है।

बवासीर (अर्श)

(Piles or Haemorrhoids)

इस रोगमें मलद्वारकी शिराएँ फूलती और बढ़ जाती हैं। इन बढ़ी हुई शिराओंको **"बलि या मसा"** कहते हैं। "बलि" (मसा) देखनेमें मटर-जैसी होती है। कभी सिर्फ एक मसा दिखाई देता है, तो कभी कई मसे, एकके साथ एक जुड़े अंगूरके झब्बेके आकार जैसे मालूम होते हैं। यदि यह बलि मलद्वारके बाहर रहे तो इसे "बहिर्बलि" कहते हैं और भीतरकी ओर रहे, तो वह "अन्तर्बलि" कहलाता है। ये सभी बलियाँ या मसे फटकर इनसे खून बहता है (खूनी बवासीर); एक तरहकी बलि और भी होती है, जिससे खून नहीं बहता है, इसे "अन्धबलि" (बादी बवासीर) कहते हैं। मलद्वारके

पास कुटकुटाना, जलन होना, काँटा गड़नेकी तरह दर्द, कब्जियत, बार-बार पाखाना होनेकी इच्छा वगैरह इस बीमारीके लक्षण हैं। बार-बार जुलाब लेना; घुड़सवारी करना; उत्तेजक पदार्थ खाना या पीना; शराब पीना; रातमें जागना, घी और मसालेदार चीजें खाना या बिना मिहनतके दिन काटना; पेटमें ज्यादा वायु जमा होना; गर्भावस्थामें कसकर कमर बांधना या कपड़ा पहनना; कब्जियत; यकृतके रोग; पाखाना, पेशाबके समय काँखना, ठण्डे पत्थर, भींजी घास या खूब मुलायम चीज़पर बराबर बैठे रहना आदि कारणोंसे यह बीमारी होती है। बसन्त और बरसातमें यह बीमारी ज्यादा बढ़ती है।

संक्षिप्त चिकित्सा

(१) मिहनत न करने या ज्यादा भोग-विलाससे पैदा हुई बवासीरमें—नक्स-वो, सल्फ, पोडो।

(२) कब्जियतके कारण अर्शमें—इस्क्यु, नक्स-वो, सल्फ, कालिन्सो, कार्बो-वेज।

(३) गर्भावस्थाके अर्शमें—कालिन्सो, नक्स-वो, ऐलो।

(४) खूनी मसावाले बवासीरमें—ऐकोन (ज्यादा खून जानेपर), सलफर, हैमा (काला खून), इस्क्युलस, ऐलो, चायना (बहुत खन जानेपर सेवन करना चाहिये)।

(५) बादी बवासीर (अन्धबलि)—ऐकोन (ज्यादा दर्द), कैप्सि (जलन और खुजली), नक्स-वो, सल्फ़।

(६) सफ़ेद (आम निकलनेवाले) बवासीरमें—मर्क (पानी लगनेकी तरह खाल उधड़नेके लक्षणमें); ऐकोन (सफ़ेद आम निकलनेवाली बवासीरमें)।

(७) बवासीर रुक जानेपर—सलफर, पल्स।

(८) पुरानी बवासीरमें—सलफर, आर्स (दुबले रोगियोंके लिये); फेरम (धातु-विकार होनेपर); नाइट्रिक-एसिड, हिपर-सलफर।

कई प्रधान दवाओंके लक्षण

नक्स-वामिका १X, ३०।—कभी-कभी पतले दस्त। पाखाना होते वक्त मसा बाहर निकल आना; कमरमें दर्द; पेशाब होते वक्त तकलीफ़; ज्यादा देरतक सोचने और भोजनके बाद रोगका बढ़ना; जो किसी तरहकी मिहनत नहीं करते, बल्कि ज्यादा घी और मसालेदार चीजें खाते हैं या ज्यादा शराब पीते हैं, उनके वास्ते नक्स-वोम ज्यादा फायदेमन्द है। कब्जियत; पाखाना लगता है, पर बहुत कुछ कोशिश करनेपर भी पाखाना बिलकुल ही नहीं होता।

सलफर ३०।—बवासीरकी (खासकर पुरानी बवासीरकी) एक उत्कृष्ट दवा है। बहुत कब्जियत; छोटी-छोटी गांठोंमें खून लिपटा हुआ मल (खून रहे या न भी रहे);

मलद्वारमें जलन और कुटकुटाहट ; बार-बार पाखाना जानेकी इच्छा, पर बिलकुल ही पाखाना न होना ; अनुबलि, खून मिले पतले दस्त।

शामको—सूर्यास्तके समय **नक्स-वोमिका ३०** और सवेरे सलफ़र ३० प्रयोगकर बहुतसे अच्छे डाक्टर अर्श रोग आराम हुआ बताते हैं।

लैकेसिस ६, ३० या सिपिया ३०।—मसा देखनेमें प्याजकी तरह या मसा निकलकर मलद्वारमें ठेपी जैसा बैठ जाना।

इस्क्युलस ३।—सेवन (और इस्क्युलसका मरहम लगाना)—थोड़ा खून निकलना ; गुदा स्थान, पीठ और कमरमें दर्द ; कब्जियत ; रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो गुदा-स्थानमें धारदार कांटी अटकी हुई है।

ऐकोन ३x।—सेवन (और ऐकोनका ही धावन लगाना) ; बोखारके साथ बेचैनी ; तेज़ दर्द ; गर्मी मालूम होना ; श्लेष्मा या खून निकलना।

आर्स ३x, ६।—गर्मी मालूम होना ; ऐसा मालूम होना, मानो अर्शके भीतरसे गर्म सुई गड़ रही है ; पीठमें जोरका दर्द ; मसेका बाहर निकलना ; कमजोरी या सुस्ती।

कालिन्सोनिया २x।—कब्जियतके साथ बवासीर, पुराना दुरारोग्य रोग ; मलद्वार खुजलाता है ; खूनी या बादी मसा। मलद्वारमें भार मालूम होना।

कालि-स्रोनियासे अगर फायदा न हो तो, ऐलुमिनियमका प्रयोग करनेसे अकसर लाभ होता है।

ऐरिटम-क्रूड ६ ।—अण्डेके सफेद अंशकी तरह श्लेष्मा निकलना। पाखाना होनेके समय बहुत तकलीफ़; ऐसा मालूम होता है, मानो मलद्वारमें जखम हो गया है। कड़ा मल, रक्त-स्राव।

रैटान्हिया ३ ।—बहुत खुजली। पाखाना होनेके बाद मलद्वारमें बहुत देरतक जलन और दर्द हुआ करता है; ऐसा मालूम होता है, मानो मलद्वार आगमें जल गया है या कोई छुरीसे खरोंचता है; ठण्डा पानी लगानेपर कुछ देरतक जलन घटी रहती है; बहुत चेष्टा करनेपर पाखाना होता है। मसा बाहर निकल आता है; मलद्वारमें फटा घाव, ऐसा मालूम होता है, कि मलद्वारमें काँचके टुकड़े भरे हैं।

ग्रैफाइटिस ६ ।—गांठ-गांठ बहुत बड़ा लेंड़ (बाहर निकलते समय तकलीफ़)। मसा बहुत बड़ा बतौड़ीकी तरह, दबाकर बैठनेपर दर्द होता है। लम्बे-लम्बे डेगोंसे चलनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो मलान्त्रको कोई छुरीसे काटता है। कभी-कभी मलद्वार कुटकुटाता है, कभी छूनेपर दर्द होता है। बवासीरके साथ मलद्वारका फटना।

हैमामेलिस २x ।—अर्शके मसेसे बहुत ज्यादा खून बहनेपर। यदि मसा बाहर रहे, तो आध पाव पानीमें २०

बून्द हैमामेलिस θ मूल अरिष्ट मिलाकर, उसमें साफ़ चिथड़ा भिंगो, मसेपर पट्टी लगा देनेसे खून बहना बन्द हो जाता है।

ऐलो ६।—बवासीरके साथ पतले दस्त; बहुत जलन और काटनेकी तरह दर्द और बहुत कूथनके साथ ज्यादा परिमाणमें मैले रङ्गका गर्म खून निकलना और पतले दस्त।

बेलेडोना ६, आरम ६, कैप्सिकम ३, मर्क्यूरियस ३, नाइट्रिक-एसिड ६, फास्फोरस ६, साइलिसिया ६, बार्बेरिस १x—३, डायस्कोरिया θ और हिपर ३—३० लक्षणके अनुसार व्यवहार करना चाहिये।

लक्षणके अनुसार दवा

रोगकी पहली अवस्थामें मसेमें दर्द रहनेपर—ऐकोनाइट ६।

यकृतमें खूनकी ज्यादती और कीचकी तरह मल दिखाई देनेपर—पोडोफाइलम ६ या सलफर ३०।

गर्भावस्थामें कब्जियतके साथ मसेसे खून बहने और दर्द रहनेपर।—कालिन्सोनिया ६।

अतिसार मिले बवासीर रोगमें।—ऐलो ६।

बादी बवासीरमें—पहली अवस्थामें बहुत दर्द रहनेपर—ऐकोनाइट ३; जलन और कुटकुटाहटमें, कैप्सिकम

६ और पुरानी अवस्थामें, नक्स-वोमिका ३० (सन्ध्याके समय) और सलफर ३० (सवेरे)।

आम निकलनेवाली बवासीरमें।—ऐकोनाइट ६, मर्क्युरियस-सोल ६।

पुराने अर्श रोगमें।—रोगी बहुत कमजोर और दुबले हो जानेपर—आर्सेनिक ३०, फेरम ३०, कार्बो-वेज ३०, ऐसिड-फास ६ या चायना ६।

निगाण्डो θ, स्क्राफुयलेरिया θ, ऐलो ६, थूजा ३०, नाइट्रिक-एसिड ३०, फास्फोरस ३०, कास्टिकम ३०, म्यूरियेटिक-एसिड ३x वगैरह दवाओंकी कभी-कभी लक्षणके अनुसार जरूरत पड़ सकती है।

पथ्यादि।—भूँनी या सेंकी वगैरह उत्तेजक चीजें, धूप या आगका ताप, शराब, मछली, मांस, दही, उड़द, मिर्चा, मिर्च वगैरहका खाना मना है। टेढ़े होकर बैठना, घोड़ेकी सवारी करना, पाखाना, पेशाब वगैरहका वेग रोकना, स्त्री-सङ्ग, रूखा पदार्थ खाना, उपवास करना और एकदम मिहनत करना ही नहीं या ज्यादा मिहनत करना; बहुत नरम रूई या परके बिछावनपर सोना या बहुत देरतक खड़े रहना हानिकर है। पपीता, ओल, मक्खन, मुनक्का, पिश्ता, बादाम, नासपाती, सेब, पुराने चावलका भात, पका कोहड़ा, मठा, दूध (खासकर बकरीका दूध) सुपथ्य हैं। मिसरी और मक्खनके साथ छिलका उतारा हुआ तिल (न मिले, तो भींजा

हुआ चना) रोज़ सवेरे खानेसे (तिल या चूना एक दिन पहले ही रातमें भिंगो देना चाहिये), कब्जियत दूर हो जाती है। तीसी (या सरसों) का गर्म पोल्टीस गुह्यद्वारमें रोज़ चार-पाँच बार लगानेसे, बवासीरका दर्द कम पड़ जाता है (पानीके बदले अगर दहीमें सरसोंका पोल्टीस तैयार किया जाये तो ज्यादा फायदा होता है)। एक छटाँक पानीके साथ, १५ बून्द हैमामिलिस θ मिलाकर बाहरी मसेमें पट्टी लगानेसे खून बहना बन्द हो जाता है। सवेरे उठनेपर और रातमें सोते समय एक गिलास गर्म पानी पीना फायदेमन्द है। ठण्डा पानी या कुछ सुसुम पानीसे बादी बवासीरके मसेको धो डालनेसे दर्द कम हो जाता है। ठण्डा पानी पीनेके बाद एक घण्टेभर पड़े रहनेसे खूनी मसेकी तकलीफ़ दूर हो जाती है। खाटपर रोगीको सीधे लम्बे-लम्ब सुलाना चाहिये। यदि बवासीरमें ज्यादा तकलीफ़ हो, तो गर्म पानीकी भाफ़पर कुर्सी रखकर उसपर रोगीको बैठा देना चाहिये। कभी-कभी नश्तर लगवानेकी ज़रूरत भी पड़ सकती है। हैमामेलिस, इस्क्युलस, रैटानहिया और कालिन्सोनिया—इन चार दवाओंका मदर टिञ्चर एक साथ मिलाकर, एक बत्तीमें डालकर गुह्यद्वारमें प्रवेश कराना चाहिये, इससे बहुत फायदा होता है। छोटा नागपुर, गिरिडिह वगैरह जिन जगहोंकी मिट्टीमें लोहा ज्यादा है, वह ऐसे रोगियोंके लिये फायदेकी जगह नहीं है। पुरी, बालेश्वर, वाल्टेयर वगैरह समुद्र किनारेकी जगहें फायदेकी हैं।

गुह्य और सरलान्त्रका निकलना

या

काँच निकलना

(Prolapsus Recti and Prolapsus Ani)

बड़ी आँतके निचले भागका नाम "सरलान्त्र (rectum)" है और सरलान्त्रके सबसे निचले अंशको "गुह्यद्वार" या "मलद्वार (anus)" कहते हैं। इसी मलद्वारसे सरलान्त्र (काँच) के बाहर निकल आनेका नाम "काँच निकलना" है। हमेशा एकसे लेकर ६ इञ्चतक काँच बाहर निकलती है। यदि समूची श्लैष्मिक-झिल्ली बाहर निकल आये तो उसे "गुह्यद्वार निकलना (prolapsus ani)" कहते हैं और मलद्वारकी चहार-दीवारीके सब अंशके बाहर निकलनेका नाम "सरलान्त्र-निर्गमन (prolapsus recti)" है। क्रिमि, बवासीर, मलद्वारकी खुजली, उद्भेदका बैठ जाना, पेटमें मल जमा होना, अफ़ीम खाना, आमाशय, उदरामय, कब्जियत, पाखानेके समय काँखना वगैरह कारणोंसे यह रोग होता है (खासकर बच्चों, बूढ़ों और गर्भिणियोंको होता है) ; मूत्राशयकी पथरी, सुखशायी-ग्रन्थिका बढ़ना वगैरह कारणोंसे शरीर खराब हो जानेपर काँच बाहर निकल आती है। बवासीरके साथ कभी-कभी गुह्यद्वार निकलता है और बच्चोंके रक्तामाशय वगैरह रोगमें साधारणतः काँच बाहर निकल आया करती है।

चिकित्सा

ऐलो θ, ३X।—खूनके साथ पतले दस्त; सवेरे सोकर उठनेपर और भोजनके बाद पाखाना लग आना।

इग्नेशिया ३।—पाखानेका वेग होता है; परन्तु कोशिश करनेपर भी पाखाना नहीं होता; कूथन; बहुत तकलीफ़से पाखाना होता है, खुजली रहती है।

पोडोफाइलम ६।—पतले दस्त (खासकर सवेरे), पाखाना होनेके बाद ही काँच निकलना, कूथन, बदबूदार दस्त, दाँत निकलनेके समय काँच बाहर निकलना।

नक्स-वोम ३।—कब्जियतके साथ काँच निकलना, काँखना।

मर्क-वाइवस ३।—काँच निकलनेके साथ खुजली और पीले रङ्गका श्लेष्मा निकलना। अतिसार, पेट कड़ा और फूला।

लाइको ६, ३० या सलफर ३०।—सभी दवाओंसे अगर फायदा न हो।

गैम्बोजिया।—पतले दस्त, मलका रङ्ग हरा या पीला, जलन-जैसा दर्द, वेग ज्यादा रहनेपर भी थोड़े अंशमें कड़ा पाखाना होना।

फेरम-फास।—बच्चोंके लिये।

एसिड-फ्लूर, रैटानहिया, आर्निका θ, फास्फोरस (खासकर बच्चोंके काँच बाहर निकलनेपर)। कैल्के, सिपिया, आर्स, ब्रायोनिया, इस्क्युलस वगैरहकी भी कभी-कभी जरूरत पड़ती है। सिफालैण्ड्रा इण्डिका इसकी बढ़िया दवा है।

आनुसङ्गिक चिकित्सा।—काँखना मना है। बच्चे खड़े होकर बिना काँखे ही मल त्याग करें ; हल्का, पर पुष्टिकर भोजन देना चाहिये। आँत बाहर निकल आनेपर, उसे खूब ठण्डे पानीसे तरकर, भीतर डाल देना चाहिये। काँच अपनी जगहपर घुस जानेपर, एक कपड़ेकी गोली बना, गुह्यद्वारपर रख, दूसरे कपड़ेसे उसे कस देना चाहिये। तीन हिस्सा तेल-कूचा पत्तेका रस, एक भाग सुरासारके साथ मिलाकर कभी-कभी रोगीको खिला देनेसे फायदा होता है। दूसरी-दूसरी दवाएँ और पथ्यके लिये "अर्श" "क्रिमि" "रक्तामाशय" "उदरामय" "कब्जियत" और "अजीर्ण" वगैरह रोग देखिये।

आँत उतरना

(Hernia)

पेटके भीतरकी कुछ नाड़ियाँ (आँत) पुट्ठेमें, नाभीके गड़हेमें या अण्डकोषमें घुस आनेका नाम **"आँत उतरना"** है। भारी चीजें उठाना, चोट लगना, कब्जियत, जोरसे हँसना, रोना, छींकना, खाँसना या बाँसुरी बजाना, ज्यादा

घोड़ेपर चढ़ना, बराबर घूमना, ज्यादा मिहनत करना, पाखाना, पेशाबके वक्त या प्रसवके समय बहुत काँखना, पेटकी पेशियोंपर दबाव पड़ना वगैरह कारणोंसे इस तरह आँत उतर आती है। धीरे-धीरे चढ़ा देने या दबा देनेपर आँत भीतर चली जाती है; परन्तु यदि किसी तरह भी आँत पेटमें न जाये तो दर्द, बोखार, कै, हिचकी, पेट फूलना वगैरह लक्षण प्रकट होते हैं या धीरे-धीरे आँत सड़कर मौत हो जाती है।

चिकित्सा

नक्स-वोमिका २x।—खासकर बाईं ओरकी बीमारीमें।

इस्क्युलस २x।—दर्द दाहिनी ओरतक फैला हुआ हो और **लाइकोपोडियम ६, ३०**—इसकी बढ़िया दवा है।

प्लम्बम ६।—बहुत कब्जियतके साथ आँत बढ़नेपर।

सल्फ्युरिक-एसिड ३।—आँत उतरनेपर कै ज्यादा होती हो।

लैकेसिस ३०।—आँत सड़ जानेका उपक्रम हो।

बेलिडोना ३।—नाभीके चारों ओर चपक जानेकी तरह दर्द और पेट फूलनेके लक्षणमें।

ऐकोन ३x, आर्स ३, कार्बो-वेज ६, कूप्रम ६, विरे-ऐल्ब ६ भी इसकी आवश्यक दवाएँ हैं।

बच्चोंकी आँत उतरनेपर—नक्स-वोमिका ३, कैल्केरिया ६ (खासकर मोटे-ताजे बच्चोंके लिये), सिलिका ६ (खासकर दुबले बच्चोंके लिये) उत्कृष्ट दवाएँ हैं।

यदि इन दवाओंसे फायदा न हो, तो अच्छे डाक्टर—नश्तर लगानेवालेसे—नश्तर लगवाना चाहिये।

आनुसङ्गिक चिकित्सा।—रोगीको चित्त सुलाकर या दोनों पैर ऊँचेकर पकड़े रहनेसे, आँत आप-से-आप भीतर घुस जाती है। दर्दवाली जगहपर गर्म पानीका सेंक देना और बीच-बीचमें रोगीको मिश्री या चीनीका शरबत पिलाना अच्छा है। उतरी हुई आँत भीतर जानेके बाद रोगीको कमरबन्द (truss) पहना देनेसे फायदा हो सकता है। बाल-रोगमें "बच्चोंका आँत उतरना" देखिये।

भगन्दर

(Fistula-in-Ano)

मलद्वार या सरलान्त्रके विधान-तन्तुके चारों तरफ एक तरहका जखम होता है, उसे "भगन्दर" कहते हैं। यह जखम सहजमें सूखता नहीं, इसीलिये "नासूर" हो जाता है।

चिकित्सा।—फुन्सियाँ होने बाद टपककी तरह दर्द, गुह्यद्वार लाल और सरमें दर्दके लक्षणमें—**बेलेडोना ३x** या **मर्क-वा ३x**। फुन्सियाँ सूजकर पीव होनेकी तैयारी हो तो **हिपर-सलफर ३** विचूर्ण। घावसे ज्यादा पीव बहता हो या नासूर हो, तो **सिलिका ३०**।—यक्ष्मा रोगीके लिये, बैसिलिनम ३० (हफ़्तेमें सिर्फ १ बार)। भगन्दरकी कैल्केरिया-फ्लोर १२x विचूर्ण एक उत्कृष्ट दवा है। दो आउन्स पानीमें एक ड्राम कैलेण्डुला θ या हाइड्रैस्टिस θ मिलाकर पट्टी लगानी चाहिये या पिचकारी देनी चाहिये।

खास-खास लक्षणोंमें कास्टिकम ६, चायना ३०, कैल्केरिया-कार्ब ३०, नक्स-वोम ३०, नाइट्रिक-एसिड ६, ग्रैफाइटिस ६, इस्क्युलस ३, रैटानहिया ३ की जरूरत पड़ सकती है।

आनुसङ्गिक चिकित्सा।—प्रदाहित अङ्गपर खूब गर्म सेंक देना फायदेमन्द है। मछली या मांस खाना मना है ("अर्श" रोगके "पथ्य" देखिये)। पौष्टिक भोजन देना चाहिये।

मलद्वारका फट जाना

(Fissure-in-Ano)

कब्जियतके कारण पाखाना होते वक्त काँखने या जोर देनेके कारण मलद्वारकी मांस-पेशी या उसके चारों ओरकी श्लैष्मिक-झिल्ली फट जाती है। इसी वजहसे पाखानेके समय या पीछे बहुत जलन मालूम होती है और पाखानेमें खूनकी लकीर-सी पड़ी दिखाई देती है। इस तरह फटनेके वक्त रोगीको बहुत ज्यादा तकलीफ़ होती है, यहाँतक कि बेहोशी भी आ जाती है। ऐसी तकलीफ़ तीन-चार घण्टोंतक रह सकती है।

चिकित्सा

ग्रैफाइटिस ६।—फटने-जैसा दर्द, श्लेष्माके साथ थोड़ा कड़ा पाखाना होना। बवासीरके साथ मलद्वारका फटना या फटा घाव।

नाइट्रिक-एसिड ६, ३०।—पाखाना होते समय और पीछे काटनेकी तरह तेज़ दर्द, कब्जियत और कड़ा मल निकलना।

इस्क्युलस ३।—मलद्वारमें जलन करनेवाला जखम, सूखा और कड़ा गांठें-मिला दस्त होना, पीठमें दर्द।

रैटानहिया ३ ।—पाखाना होनेके बाद बहुत जलन मालूम होना (पहले ज्यादा), काटनेकी तरह दर्द, पतले दस्त या कब्जियत।

हैमामेलिस १ (रक्त-स्रावके लक्षणमें) और आर्स ३ (रक्त-स्राव या दर्द न रहनेके लक्षणमें) की भी कभी-कभी जरूरत पड़ सकती है।

आनुसङ्गिक चिकित्सा ।—पाखाना जानेके कुछ ही पहले मलद्वारमें तेल या घी लगानेसे, मल सहजमें ही निकल सकता है। कब्जियतमें खूब गर्म पानीकी पिचकारी लेना; जरूरत पड़नेपर कैलेण्डुला या हैमामेलिस अथवा इस्क्युलसका मरहम लगाना, कब्जियत दूर करनेवाले फल-मूल (जैसे—पका पपीता, पका केला, अंगूर, अनारस, नींबू; किशमिश) वगैरह खाना चाहिये। "अर्श" रोगकी दवाएँ और पथ्य आदि देखिये।

———

मलद्वार और बाहरी जननेन्द्रियमें खुजली

(Pruritus-Ani and Pruritus-Pudendi)

बवासीर, क्रिमि, रजोरोध, एकाएक किसी चर्म-रोग या स्रावका रुक जाना, मल-सञ्चय, अफ़ीम या क्लोरलका बराबर सेवन करना, यकृतका दोष वगैरह कारणोंसे मलद्वार कुट-कुटाता, सुड़सुड़ाता है और खुजली होती है।

चिकित्सा

रेडियम-ब्रोमेटम ३० प्रति सप्ताह एक मात्रा सेवन करना चाहिये। अगर इससे फायदा न हो, तो मूल रोग (जैसे—क्रिमिसे पैदा हुई खुजलीमें साइना या टियुक्रियम) निश्चयकर उसका प्रतिकार करना चाहिये। सलफर ३०, लाइको ३०, पेट्रोलियम ३०, आर्स ३० और नेट्रम-म्यूर १२x विचूर्ण मल-द्वारकी खुजलीकी उत्तम दवाएँ हैं। कैडमियम, ऐम्ब्रा, कार्बो-वेज, कालिन्सोनिया, लाइको, कोनायम—बाहरी सङ्गम-इन्द्रियकी खुजलीकी प्रधान दवाएँ हैं।

ओपियम, नक्स-वोम, मर्क, इग्नेशिया, एसिड-नाइट्रिक, ऐल्यूमिना, ऐण्टिम-क्रूड, डलिकस वगैरह दवाओंकी भी कभी-कभी आवश्यकता होती है। बोरैक्स, कार्बोलिक-एसिड, मर्क्यूरी, कैलेण्डुला, इसक्युलस, हैमामेलिस या बार्बेस्कम

प्रभृति दवाओंका मरहम या धावनके बाहरी प्रयोगसे भी कभी-कभी फायदा होता है।

क्रिमि
(Worms)

क्रिमि या पराङ्गपुष्ट कीड़े शरीरके भीतर मिलते हैं। तीन तरहकी क्रिमि हमेशा मनुष्य शरीरकी आँतें या पाकाशयमें दिखाई देती हैं:—(१) छोटी-छोटी सूतकी तरह क्रिमि (Small thread worms); (२) गोल लम्बी केंचुएकी तरह क्रिमि (long round worms); (३) खूब लम्बी फीतेकी तरह क्रिमि (tape worms)।* कभी-कभी नाक या कानके छेदमें भी क्रिमि मौजूद रहती है।

(१) सूतकी तरह क्रिमि।—ये क्रिमियाँ दल बाँधकर मलद्वारके पास रहती हैं। कभी मूत्र-नली या योनि-द्वारमें भी चली जाती हैं। इसी कारणसे इन स्थानोंमें खुजली होती है, जलन होती है और धातु निकलता है। छोटी

---

* इन तीन तरहकी क्रिमियोंके अलावा और भी कई तरहकी क्रिमि आजकल रक्तमें पायी गई है। इनके विवरणके लिये "शोणित क्रिमि" अध्याय देखिये।

क्रिमिका **साधारण लक्षण** है :—नाकका अगला भाग या गुह्यद्वारमें खुजली, श्वास-प्रश्वासमें दुर्गन्ध, पाखाना होते वक्त बेहद तकलीफ़, गुह्यद्वारमें बराबर खुजली रहनेके कारण नींद न होना, नींदमें दाँत कड़मड़ाना। छोटी क्रिमिकी लम्बाई चौथाई इञ्चसे एक इञ्चतक होती है।

(२) **केंचुएकी तरह लम्बी क्रिमि।**—यह छोटी आँतमें रहती है, देखनेमें सफेद; कभी पाकस्थलीकी राहसे मुँहमें आकर कैके साथ निकलती है; कभी पाखानेके साथ बाहर निकलती है। **साधारण लक्षण** :—पेट फूलना और पेटमें बहुत दर्द, दाँत कड़मड़ाना, नींदमें एकाएक चीख उठना, नाकके अगले भाग और गुदामें खुजली, पेट कड़ा और गर्म, शरीर दुबला, चेहरा पीला, आँखोंकी पुतली फैली, आम-मिला मल, कभी बहुत भूख, कभी अरुचि, साँसमें बदबू, बेहोशी, कभी मिचली, मुँहमें बराबर पानी भर आना। इसकी लम्बाई ४ से १२ इञ्चतक होती है।

(३) **फीतेकी तरह क्रिमि।**—सफेद, चिपटी, गांठ-गांठ। लम्बाई १० फीटसे २०० फीटतक। यह भी छोटी आँतमें रहती है। मनुष्यके शरीरमें एकसे ज्यादा नहीं रहती। मलके साथ उसका कुछ अंश टुकड़े-टुकड़े होकर निकलता है।

कच्चे फल-मूल, ज्यादा पके केले, सड़ी मछली, ज्यादा मीठा खाना, गन्दी हालतमें रहना वगैरह कारणोंसे पेटमें

क्रिमि पैदा होती है। इनके अलावा कान या नाकसे स्राव वगैरह होनेकी वजहसे, नींदमें उसमें मक्खी घुसकर अण्डा दे देती है। यही अण्डा फूटकर नाक या कानमें कीड़ी पैदा कर देता है। इस क्रिमिका कीड़ा नाक या कानके छेदका क्षय किया करता है और रोज़ दो या इससे ज्यादा निकला करता है। कीड़े निकलते ही समझना चाहिये, कि वहाँ क्रिमि पैदा हो गयी है। बच्चोंके दूसरे रोगोंके साथ अकसर क्रिमि मौजूद रहती है।

चिकित्सा

सिना २x, २००।—आँखकी पुतली फैली; नींदमें एकाएक चौंक उठना; बेहोशी; कै या मिचली; हिचकी; नाकका अगला भाग खुजलाना; मलद्वारमें सुरसुरी; पेटमें ऐंठन; पेशाब थोड़ा और दूधकी तरह; **राक्षसी भूख।** सिना सब तरहकी क्रिमिकी बढ़िया दवा है। इससे फायदा न हो, तो—

स्टैनम ६, ३०।—व्यवहार करना चाहिये। इस दवाके खानेसे शरीरमें क्रिमि नहीं रहती।

टियुक्रियम १x।—गुह्यद्वारमें तेज़ जलन; स्नायवीय उत्तेजनाके कारण सरमें चक्कर और नींद न आना। यदि **सूतकी तरह क्रिमि हो, तो टियुक्रियम फायदा करता है।**

सैण्टोनाइन १x विचूर्ण ।—सब तरहकी क्रिमिमें यह फायदा करता है। पेटके दर्दके लक्षणमें।

स्पाइजिलिया ३ ।—छोटी क्रिमिकी अच्छी दवा है। मलद्वारमें खुजली होती है। मलके साथ क्रिमि निकलती हैं, मल कड़ा, भेंड़के मलकी तरह।

सलफर ३० ।—क्रिमिसे उत्पन्न शूल-वेदनामें अथवा दूसरी दवा खानेके कारण बीमारी कुछ घट जानेपर।

फीतेकी तरह क्रिमिमें ।—फिलिक्समास θ, मर्क-कोर ३x, कूप्रम-ऐसेटिकम ३ या स्टैनम ३ क्रमका विचूर्ण, फीतेकी तरह लम्बी क्रिमि और केंचुएकी तरहकी क्रिमिको नष्ट करता है।

केंचुएकी तरह क्रिमिके लिये।—सिना २x, २००, सैण्टोनाइन १x विचूर्ण।

सूतकी तरह क्रिमिके लिये ।—सैण्टोनाइन १x विचूर्ण, टियुक्रियम १x।

कान और नाककी क्रिमिके लिये ।—थोड़े पानीमें बहुत थोड़ा चूर्ण मिलाकर उससे नाक या कानमें पिचकारी देनी चाहिये

गोल क्रिमिके (ROUND WORMS) लिये—चेनोपोडियम तेल, फी मात्रा १० बून्द दो घण्टेके अन्तरसे

तीन मात्राएँ देनी चाहिये। इतनेमें ही फायदा मालूम होने लगता है।

डाक्टर ह्यूज और टेस्टका कहना है, कि लाइकोपोडियम ३०, दो दिनोंतक ; विरेट्रम १२, चार दिन और इपिकाक ६, सात दिनोंतक सेवन करानेसे क्रिमि नष्ट हो जाती है। क्रिमि-धातुवाले बच्चोंके लिये कैल्केरिया ३०।

डाक्टर ग्रेड कहते हैं, कि अन्न खानेके पहले वायोला-ओडोरेटा ६ और सोनेके पूर्व रातमें स्टैनम ३० सेवन करनेसे पिच्छिल या आम-भरा दस्तवाला क्रिमि-धातु-दोष अच्छा हो जाता है।

नियम।—एक काँचके बर्त्तनमें या पथरीमें कच्चे पपीतेकी लसी* एक चम्मच और शुद्ध शहद एक चम्मच, अच्छी तरह मिलाकर ; उसमें पाँच चम्मच खूब गर्म पानी मिला देना चाहिये। दो घण्टे बाद शुद्ध रेंड़ीका तेल (refined castor oil) और नींबूके रसके साथ तीन दिनोंतक सेवन करनेसे क्रिमि नष्ट हो जाती है। तितलौकीके बीजका चूर्णकर†

* कच्चे पपीतेके पत्ते और डण्ठलसे जो सादा गाढ़ा दूधकी तरह रस निकलता है, उसीका नाम "पपीतेकी लसी" है।

† कद्दूके बीजका चूर्ण (Cucurbita Pepo or Pumpkin-seed) लम्बी क्रिमिकी एक बढ़िया दवा है। यह इस तरह बनता है :—तितलौकीका बीज गरम पानीमें उबालकर उसका छिलका अलग कर डालना चाहिये। उसके भीतरका गूदा दवाके काममें आता है। दो आउन्स बीयेमें एक आउन्स गूदा निकलता है। मात्रा—दूधकी मलाईके साथ एक आउन्स

खानेसे, बहुत कुछ फायदा दिखाई देता है। सहजनेकी तरकारी रोज़ दोनों शाम खाना बहुत फायदेमन्द है।

एक बोतल पानीमें थोड़ा-सा नमक मिलाकर रोज़ ३-४ बार सरलान्त्रमें पिचकारी देनेसे फायदा होता है। ताक़त देनेवाली हलकी चीजें खिलानी चाहिये। मीठे पदार्थ, कच्चे फल-मूल, गदला पानी, सड़ी मछली या माँस खाना मना है; हमेशा साफ़-सुथरे रहना चाहिये। तीती, नमकीन और तेलसे पकी चीजें फायदेमन्द हैं। सेंधा नमकके साथ कागजी नींबूके १०-१२ पत्ते पीसकर खिलाना फायदेमन्द है।

कुछ दूसरे क्रिमि-रोग

पहले अध्यायमें बताई क्रिमिके अलावे और भी कई परांगपुष्ट क्रिमियाँ हैं। जैसे—"शोणित क्रिमि" वगैरह। शोणित क्रिमि भी बहुत तरहकी होती है। इस जगह परांगपुष्ट कीटसे उत्पन्न छः रोगोंका हाल लिखा जाता है। (१) शोणित क्रिमि रोग, (२) श्लीपद, (३) तन्तु खननकारी क्रिमि रोग, (४) वक्र-कीट रोग, (५) चिपटा क्रिमि-रोग, (६) दंश-मच्छिका-जनित रोग

गूदा खाना चाहिये। बारह घण्टेतक उपवासकर दूसरे दिन सवेरे यह खाया जाता है और दो घण्टे बाद विशुद्ध रेंड़ीका तेल (Castor oil) सेवन करना चाहिये।

१। शोणित क्रिमि

(Filariasis)

Filaria bancrofti नामकी क्रिमि ही इस रोगकी खास वजह है। यह दूसरेके अङ्गमें पुष्ट तथा देखनेमें लम्बी, पतले सूतकी तरह रहती है। सूतकी तरह पतली यह क्रिमि चार हाथतक लम्बी और ⅛ इञ्चतक मोटी हो सकती है। रोगीके खून या लसिका-प्रवाहमें यह मौजूद रहती है।

इस क्रिमिके बीजाणु मच्छड़ द्वारा अच्छे-भले शरीरमें पहुँचते हैं अर्थात् जिन्हें यह रोग होता है, उनका खून चूसकर मच्छड़के काटनेसे इसके अण्डे स्वस्थ शरीरमें पहुँचते और अपना वंश बढ़ाते हैं।

इस रोगमें कोई खास उपद्रव नहीं दिखाई देता है, किसीकी ग्रन्थियाँ बढ़ी हुई (खासकर दोनों पैरोंकी—जैसे, फीलपाया होना) किसीका पेशाब दूधकी तरह और किसीके अण्डकोषमें रोग पैदा हो जाता है।

चिकित्सा।—दवा खानेसे ज्यादा फायदा नहीं होता। जरूरत पड़नेपर नश्तर लगवाना पड़ता है। मच्छड़ न काटने पाये, इसका प्रबन्ध करना और जहाँ यह बीमारी फैलती दिखाई दे, वहाँ पानी गर्मकर पीना चाहिये।

२। श्लीपद या फीलपाया

(Elephantiasis)

ऊपरवाले अध्यायमें बताई हुई शोणित क्रिमि ही गर्म देशोंमें श्लीपद रोग पैदा करनेका खास कारण है। जो ऐसे प्रदेश हैं, जहाँ न ज्यादा सरदी, न गरमी होती है, वहाँ दूसरे कारण (जैसे,—प्रदाह, विसर्प, श्वेतपद, अकौता, लसिका-प्रणालीका रुकना) से भी यह बीमारी पैदा हो सकती हैं। "शोणित-क्रिमि" रोगकी दूसरी अवस्थामें हमेशा यह बीमारी होती देखी जाती है। रोगी अङ्गके (जैसे—अण्डकोष आदिके) तन्तु बेढंगी तौरसे बढ़ जाते हैं; रक्त-वहा-नाड़ी, पेशी, स्नायु या अस्थियोंका आयतन बढ़ जाता है, जलवटिका पैदा हो जाती है और उससे दूध या पानीकी तरह रस निकलता है। अकौता, चमड़ेपर पीव-भरे घाव होना और बोखार वगैरह इस बीमारीके प्रधान लक्षण हैं।

चिकित्सा।—हाइड्रोकोटाइल θ—१x का सेवन करना इसकी सबसे बढ़िया दवा है। हाइड्रोकोटाइलसे फायदा न हो तो ऐनाकार्डियम १x—३ सेवन करना चाहिये। ऐनाकार्डियमसे भी फायदा न हो, तो नश्तर लगवा देना आवश्यक हो सकता है। घाव, अकौता और ज्वर आदिको दवानेके लिये उन रोगोंकी दवाओंसे दवा चुन लेनी चाहिये।

३। तन्तु-खननकारी क्रिमि-रोग

(Dracontiasis)

Dracunculus medinensis नामक एक जातिकी शोणित-क्रिमिसे यह बीमारी पैदा होती है। भारतीय द्वीपपुञ्ज और अफ्रिकामें इस रोगका प्रादुर्भाव हुआ था।

सम्भवतः पुरुष और स्त्री दोनों जातिकी क्रिमि किसी तरह पेटमें पहुँच जानेपर; स्त्री-क्रिमि गर्भवती होती है और पुरुष-क्रिमि मर जाती है तथा मनुष्यके शरीरसे बाहर निकल जाती हैं; परन्तु वह स्त्री-कीट आँतोंको छेदकर, चमड़ा खोदती-खोदती घुटने और पैरके तलवेकी ओर बढ़ती है। यहाँतक कि छोटा-सा जखम होता है और उसी जखमसे उसके भ्रूण निकला करते हैं। जब भ्रूण निकल जाते हैं, तब वह स्त्री-कीट भी आप-से-आप निकल जाता है।

चिकित्सा।—टियुक्रियम और हींग खानेसे फायदा हो सकता है। जखमपर पानी ढालनेसे भी क्रिमि निकल जाती है। कभी-कभी वह आप ही निकलती है, उस समय एक महीन कांटीसे उसे इस तरह घुमाकर निकाल डालना चाहिये, कि उसका कुछ अंश टूटकर शरीरमें न रह जाये।

४। क्षुद्रान्त्र क्रिमि-रोग या वक्र-कीट
(Hook-Worm)

भारतवर्ष या दूसरे-दूसरे उष्ण-प्रधान देशोंके अधिवासियोंकी छोटी आँतमें सूतकी तरह एक प्रकारकी छोटी क्रिमि होती है और उसके कोमल चमड़ेको भीतर-ही-भीतर खाया करती है। इस परांगपुष्ट कीटकी लम्बाई आध इञ्चसे ज्यादा नहीं होती और मोटाई केशके बराबर। इनके माथेमें हुकके आकारके टेढ़े दो दाँत होते हैं, इसलिये इन्हें "हुक (hook) वर्मस्" कहते हैं। त्वचा, खासकर पैरोंके तलवे और पैरोंकी अंगुलियोंका चमड़ा छेदकर या खाये हुए पदार्थके संयोगसे किसी तरह यह कीड़ा शरीरमें घुसकर दाँतोंसे छोटी आँतका ऊपरी अंश पकड़ रखता है और पिशाचकी तरह मनुष्यका रक्त चूसता हुआ बढ़ता है। इसीलिये इस रोगके सभी मनुष्योंको "वक्रकीट या हुक-वर्म-जनित रोग" हुआ करते हैं। १०० में ८० आदमियोंको यही रोग होता है। खूनकी कमीका बराबर बढ़ते जाना (जैसे,—दुबलापन, चेहरा पीला, पचनेकी शक्तिका कम होना, थकावट मालूम होना, आँखोंकी ज्योति-हीन होना, कलेजा धड़कना, पैर और पेटका फूलना, पिलही और यकृतका बढ़ना, हाथ-पैरोंमें फोड़े और खुजली होना, बच्चोंकी देह उचित परिमाणमें न बढ़ना) इस रोगका प्रधान लक्षण है। खुर्दबीनके सहारे किसी-किसीके मलमें इन

वक्रकीटोंके अण्डे दिखाई देते हैं इसीसे मालूम होता है, कि यह रोग हो गया है।*

चिकित्सा

थाइमल (Thymol) इस रोगमें बहुत फायदा करता है। दवा खानेके दो-एक दिन पहले रोगीको कोई भारी—गरीष्ट चीज़ न खिलानी चाहिये (जरूरतपर उपवास भी किया जाना चाहिये)। सवेरे पहले ६ बजे और फिर ८ बजेके समय एक-एक मात्रा (रोगीको उमर और रोगकी अवस्थाकी कमी-वेशीके अनुसार) थाइमल ७ से ३० ग्रेनतक सेवन कराना चाहिये। इसके बाद १० बजनेके समय कैस्टर आयल, एप्सम्-साल्टस, हड़ या कोई दूसरी दस्तावर दवा खिलाकर जुलाब देना चाहिये। दूसरे सप्ताहमें भी एक बार इसी तरहसे इलाज कराना चाहिये। कमजोर रोगीको थोड़ी मात्रामें थाइमल ज्यादा दिनोंतक खिलाना चाहिये।

* कई उपायोंसे अण्डे या इनसे उत्पन्न कीड़े नष्ट किये जा सकते हैं। जैसे (१) मैदान या जङ्गलकी किसी खास जगहमें पाखाना जाकर उसे जला देना; (२) गाँवसे कुछ दूर दो फीट गहरा गढ़ा खोद, उसमें विष्ठाको ढक देना; (३) ईंट चूनेसे बने जलभरे गड़ेमें इस तरह मल छः महीनेतक रख देना; कि उसमें मक्खी न लगे; (४) खाली पैर न घूमना और सतर्क रहना, कि मिट्टीका पानी पैरोंमें न लगने पाये। (५) कोड़ा बड़ा होनेपर वह पानीमें भी रह सकता है और तैरना नहीं जानता; इससे मिट्टीमें सटा रहता है; इसलिये, गन्दा पानी पीना मना है। इन उपायोंपर ध्यान

थाइमलके बदले फिलिक्स-मास काममें लाया जा सकता है। चेनोपोडियम (Chenopodium) ऐन्थेलमेटिकम तेल θ दस बून्दकर दो घण्टेका अन्तर देकर तीन मात्रा, एक दिन सिर्फ सेवन करनेपर कभी-कभी आशासे अधिक लाभ होता है।*

इस उपायसे शरीरसे हुक-वर्म बाहर निकल जानेपर "रक्त-स्वल्पता" और क्रिमि रोगकी दवाएँ (जैसे—चायना, फेरम, एसिड-फास, स्टैनम, सिना, स्पाइजिलिया, टियुक्रियम वगैरह) लक्षणके अनुसार कुछ दिनोंतक प्रयोग करनी होंगी।

५। चिपटी क्रिमि रोग

(Bilharziasis)

Bilharzia Hematobia नामके एक प्रकारके शोणित-कीटके कारण यह बीमारी पैदा होती है। अरब, फारस, पश्चिम भारत और मिस्र वगैरह देश इस रोगकी लीला-भूमि

रखनेसे कीड़ा शरीरमें नहीं घुस सकता (भारतवर्षीय मेडीकल सर्विसके डिरेक्टर जेनरलकी अनुमतिसे Major Clayton Lane, M. D. I. M. S. की बनायी 'The Hook-worm" पुस्तिका देखिये)।

* १९२० ईस्वीमें वक्र-कीट रोग दूर करनेके लिये डाक्टर ग्रिफिनको भारत सरकारने नियुक्त किया था उन्होंने चार हजार रोगियोंको यही चेनोपोडियम तेल खिलाकर अच्छा किया था। उनकी रायमें यह थाइमलसे ज्यादा फायदेमन्द है।

हैं। चर्म, मुख-विवर, पेशाबकी नली या किसी दूसरे उपायसे यह मनुष्य शरीरमें घुस जाता है।

शायद पीनेके पानीके साथ इनके अण्डे रोगीके शरीरमें घुस जाते हैं, तो मूत्राशय, मलान्त्र वगैरहपर रोगका हमला होता है।

मूत्राशयपर रोगका आक्रमण होनेपर—मूत्राशयमें उपदाह या दर्द, रक्त-स्राव, मूत्राशय-प्रदाह, मूत्र-पथरी (सरलान्त्रपर रोग होनेपर), कूथन, आम-रक्त निकलना, मलद्वारका प्रदाह, जलन वगैरह इस रोगके प्रधान लक्षण हैं।

चिकित्सा।—सरलान्त्रमें रोग होनेपर—हाइड्रैस्टिस १x, रूटा २x, एसिड-नाई ३ फायदा करते हैं। मूत्राशयमें रोग होनेपर—कैनाबिस-सैट θ, हैमामेलिस θ, कैन्थरिस ३, टेरिबिन्थ ३x, ओसिमम ६, बेञ्जोयिक-एसिड ३ वगैरहकी परीक्षा करनी चाहिये। बहुतसे स्थानोंमें नश्तर लगवानेकी भी जरूरत पड़ती है।

६। दंश-मक्षिका-जनित रोग

(Jigger)

Púlex Penetrans नामकी मक्खी काटनेसे यह रोग पैदा होता है। इस रोगमें खासकर दोनों पैरोंपर रोगका आक्रमण होता है। मक्खी यदि चमड़ेको छेद दे या गड्ढा

कर दे, तो वहाँ जल-भरी फुन्सी या पीव-भरी फुन्सी और जलन होती है।

चिकित्सा।—सुईसे कीड़े बाहर निकाल डालना और यह कीड़ा फिर शरीरमें न प्रवेश करे, इसलिये सुगन्धित उद्भिदका तेल (essential oils) व्यवहार करना चाहिये।

उड़नेवाली क्रिमि

(Flying Worms)

लड़के-लड़कियोंके पतले दस्तके साथ कभी-कभी एक तरहका उड़नेवाला कीड़ा निकलता है। इसीका नाम "उड्डीन-कीट" है। किसी-किसी आमको काटनेके साथ ही जिस तरह उसमेंसे एक तरहका कीड़ा उड़ जाता है, ठीक उसी तरहका कीड़ा किसी-किसी लड़केको पाखाना होते ही, उसमेंसे उड़ जाता है। फरीदपुर जिलेके बरहमगञ्ज, कलमरिधा वगैरह स्थानोंमें आमकी फसलके समय (अर्थात् जेठ, आषाढ़ महीनेमें) दस्तके साथ एक तरहका कीड़ा दिखाई देता है। कुछ ऐलोपैथिक डाक्टर इस रोगमें Saccharated lime solution और a mixture containing Nux-v, sodi-bicarb, inf-quassia का व्यवहार कर फायदा दिखा चुके हैं। (The Indian Medical Gazette for April, 1920, p. p. 157—158 देखिये) होमियोपैथिक

चिकित्सक आर्सेनिक, चायना, कैल्के-कार्ब, नक्स-वोम, सलफर, पोडोफाइलम, फास्फोरस वगैरह दवाएँ लक्षणके अनुसार देकर फायदा उठाते हैं। वभिन्न जातीय "क्रिमि" और "वक्र-कीट" रोगकी दवाएँ देखिये।

यकृत-प्रदाह

(Hepatitis)

पुराना मैलेरिया बोखार, पारा या क्विनाइनका अपव्यवहार, ज्यादा शराब पीना, गर्म जगहमें रहना वगैरह कारणोंसे यकृतमें खून जमा होकर प्रदाह होता है। यह प्रदाह पुराना हो जानेपर, यकृत बढ़ जाता है और कड़ा हो जाता है तथा धीरे-धीरे पेटकी दाहिनी ओर फैल जाता है। रोगीकी नयी अवस्थामें पहले जाड़ा और कँपकँपीके साथ बोखार आता है; इसके बाद यकृतके ऊपर दर्द, सरमें दर्द, मुँहका स्वाद बिगड़ा, मैल-चढ़ी जीभ, भूख न लगना, कीचड़की तरह मैला या सफेद दस्त; दाहिने कन्धेमें थोड़ा-थोड़ा दर्द, दाहिने कोखमें भार मालूम होना वगैरह लक्षण प्रकट होते हैं। पहली अवस्थामें रक्त-सञ्चय बन्द हो जाता है, तो दूसरे लक्षण भी कम हो जाते हैं। यदि रक्त-सञ्चय न दूर ह सके, तो लक्षण सब धीरे-धीरे तेज़ हो जाते हैं। जैसे—दाहिने कन्धेमें तेज़ दर्द, जोरसे साँस छोड़ने या बाईं करवट सोने या खाँसनेसे दर्दका

बढ़ना ; कै या मिचली ; पेशाब पीला ; कब्जियत या पतले दस्त आना वगैरह लक्षण प्रकट होकर यकृत और भी बढ़ जाता है। रोग जब आराम होनेकी ओर पलटता है, तब ये सब लक्षण कम हो जाते हैं ; न हो, तो धीरे-धीरे सर्दी और कँपकँपी (कम्प) के साथ रातमें तेज़ बोखार होकर, यकृतमें एक प्रकारका फोड़ा पककर रोगी मर जाता है। इसके अलावा, कभी-कभी यकृतका आकार छोटा हो जाता है और ऊपर शरीरमें शोथ होकर रोगी मर जाता है। यकृतके रक्त-सञ्चयके साथ कभी-कभी उसकी क्रियामें विकार और स्राव रुक जाता है। भारतमें जगह-जगह क्रिमि-दोषके कारण भी यकृतमें स्थूल-कोष (hydatid disease) होते देखा गया है।

बहुतसे स्थानोंके अच्छे डाक्टरोंके मतसे **चेलिडोनियम** θ (मात्रा एकसे पाँच बून्द, दिनमें दो बार सेवन) सब तरहके यकृत रोगकी बहुत अच्छी दवा है। यकृत और प्लीहाके बढ़ने और दर्दमें, **कार्डुयस-मेरियानस** θ पाँच बून्दकर रोज़ सवेरे और सन्ध्याके समय सेवन करना लाभदायक है। यकृतमें कर्कट या कैन्सर होनेपर, **काली टेरिनम ३ विचूर्ण** फायदा करता है।

संक्षिप्त चिकित्सा

(१) **यकृत बढ़ जानेपर**—मर्क, नाइट्रिक-एसिड, ऐगरिकस, फास्फोरस, आर्स, चायना (मैलेरिया ज्वर आदिके बाद यकृत बढ़नेपर)।

(२) **यकृत-प्रदेशमें दर्द**—ऐकोन (ठण्डी सूखी हवा लगनेके कारण यकृत कड़ा हो जाये या उसमें दर्द होनेपर), ब्रायो (जलन या खींच रखने या डङ्क मारनेकी तरह दर्द या वात-रोगकी तरह दर्द), मर्क, सैबाडि ।

(३) **पित्तकी अधिकताकी उपसर्गमें** ब्राइयो (पित्त या स्लेष्माकी कै करना), नक्स (उत्तेजक या ज्यादा मात्रामें खाने-पीनेके कारण या अर्श रोगके साथ), सलफर (कब्जियत), मर्क (सफेद दस्त), ऐकोन (सर्दी लगकर पित्तकी अधिकता), कैमो (क्रोधके कारण रोग), आइरिस (वमनसे पैदा हुआ सर-दर्द), लाइको, हिपर, सलफर, पल्स, पोडो, चेलिडो, टैराक्स ।

(४) **पित्तसे पैदा हुए अतिसारमें**—पोडो (मुँहका स्वाद तीता और पेशाब काला); आइरिस (गर्मीके दिनोंका कै-दस्त); चायना (गर्मीके दिनोंका सामान्य अतिसार); कैमो (औरतों तथा बच्चोंके अतिसारमें) ।

(५) **पेटमें शोथ होनेपर**—क्रोटोन-टिग, आर्स, एसिड-नाइट्रिक ।

कई प्रधान दवाओंके लक्षण

ऐकोनाइट १, ६ ।—(यकृतका नया प्रदाह), शीत और कम्पके साथ बोखार; यकृतमें दर्द; कामला होनेकी तैयारी ।

नक्स-वोमिका १x, ३०।—ज्यादा या उत्तेजक खान-पान या शराब पीनेसे पैदा हुआ यकृतका पुराना प्रदाह ; कब्जियत और भोजनके साथ दर्दका बढ़ना ; "गर्म" दवा खानेके बाद यकृतका प्रदाह। (नक्स सेवनके बाद अकसर लाइकोकी जरूरत पड़ती है)।

चायना ६, ३०।—बहुत दिनोंतक बोखार भोगनेकी वजहसे शरीरमें खूनकी कमी ; प्लीहाका बढ़ना ; यकृतका बड़ा और कड़ा होना ; कमजोरी ; ज्यादा मात्रामें (ऐलोपैथिक) मर्करी सेवनके कारण पैदा हुए यकृतके रोगमें इसका प्रयोग होता है।

मर्क-वाइवस ६x, ३०।—यकृतका नया प्रदाह या पुराने प्रदाहके कारण यकृतकी वृद्धि, यकृतमें सूजन और कड़ापन, यकृत-प्रदेशमें दबा रखनेकी तरह दर्द (इसी कारणसे रोगी दाहिनी करवट नहीं सो सकता) ; पीली आँखें ; भूख मन्द ; सफेद रङ्गका कड़ा मल या पित्त-मिले पतले दस्त ; मुँह बेस्वाद, साँसमें कष्ट, जाड़ा लगनेके बाद बहुत ज्यादा लसदार पसीना, परन्तु पारेके अपव्यवहारसे पैदा हुई यकृतकी बीमारीमें (खासकर मटमैला दस्त होनेपर) हिपर-सलफर ६ सेवन करना चाहिये।

चेलिडोनियम १x, ३०।—यकृतमें जोरका दर्द ; दाहिने कन्धे या दाहिने कन्धेकी हड्डीके भीतर दर्द ; पीले रङ्गका पतला दस्त अथवा सफेद रङ्गका कड़ा मल ; सब शरीर

पीला, पीले रङ्गका गाढ़ा पेशाब ; यकृतकी पुरानी बीमारीमें जीभपर गहरा पीले रङ्गका मैल और कब्जियत ।

कैलि-कार्ब ६, ३० ।—यकृत-प्रदेशमें सुई गड़नेकी तरह दर्द ; कामला ; शोथ ; कमरसे जांघतक (खासकर दाहिनी ओर) दर्द ; ठण्डी हवा लगनेके कारण सुई गड़नेकी तरह दर्द ; पेट फूलना ; वायु छूटना ।

लैकेसिस ६ ।—यकृत-प्रदेशमें दर्द ; कमरमें कपड़ा-तक सहन न हो ; तलपेट वायुसे भरा और दर्द ; ऐसा मालूम होना, मानो मलद्वारसे नाभीतक कोई खींच रहा है, शराबियोंका यकृत-प्रदाह ।

साइलिसिया ६, ३० ।—पेट कड़ा और वायुसे भरा ; शूल या काटनेकी तरह दर्द ; हाथ पीले और नाखून नीले ; यकृतमें फोड़ा ।

थिरिडियन ३० ।—यकृतमें फोड़ेके साथ सरमें चक्कर और मिचली ; यकृत-प्रदेशमें जलन ; बायें पेटमें दर्द (खासकर प्लीहाके ऊपर) ।

फेरम-पिकरिक ६ ।—पित्तकी गड़बड़ीसे पैदा हुई कमजोरीमें ।

माइरिका θ, ३ ।—बच्चोंके कामला या यकृत-दोषमें, चमड़ा तांबेका रङ्ग लिये पीला ; नींद न आना, भूख न लगना, पेशाब थोड़ा, पीला या फेनभरा, पित्तहीन खाकी रङ्गका मल ।

नेट्रम-म्यूर ३०।—यकृतमें "सुई गड़ने" या "चिकोटी काटने" या "दबा रखने" की भाँति दर्द ; पेट बड़ा और फूला ; कभी-कभी पेट गड़गड़ाना और इसके साथ ही बोखार।

नेट्रम-सल्फ ३०।—छूने, हिलने-डोलने या लम्बी साँस लेनेपर यकृतमें दर्द मालूम होना ; पेट खाली रहनेपर नाभीके चारों ओर दर्द मालूम होना, भोजन करनेपर यह दर्द घट जाता है। डाक्टर सुसलरके मतसे सब तरहके यकृत रोगमें बहुत फायदा करता है।

पोडोफाइलम ३, ३०।—(यकृतके नये प्रदाहमें अगर कब्जियत रहे तो ३य क्रम ; पुराने प्रदाहमें, ३० क्रम) यकृत बड़ा और उसके साथ ही पित्तकी कै होना ; पित्त-मिले पतले दस्त ; पाखाना होनेके समय काँच बाहर निकल आना ; मुँहका स्वाद तीता ; पेशाब काला ; चेहरा मलिन ; सरमें दर्द (खासकर सामने कपालमें बहुत दर्द)।

फास्फोरस ३, ३०।—पहले यकृत बड़ा और कड़ा हो जाता है, फिर धीरे-धीरे घटकर छोटा होता जाये और अन्तमें उदरी रोग हो जाये और कामला रोगमें भी इसका प्रयोग होता है।

बार्बेरिस १x या १।—यकृतमें रक्त-सञ्चय होकर, मूत्रनली, उरु, कमर और पुट्ठेमें दर्द होनेपर।

ब्रायोनिया ३x, ६, ३० ।—यकृत बड़ा और कड़ा। सुई गड़नेकी तरह या जलनकी तरह दर्द, कसकर पकड़नेपर यह दर्द बढ़ जाता है; कब्जियत (पाखानेकी हाजत नहीं होती); सरमें चक्कर, दाहिने कन्धेमें दर्द; आँखें और शरीरका चमड़ा कुछ पीला; यकृतका नया प्रदाह। मर्क्युरियसके साथ पर्यायक्रमसे इसका प्रयोगकर किसी-किसी चिकित्सकको फायदा होता दिखाई दिया है।

लाइकोपोडियम १२, ३० ।—वायुके कारण पेट फूला और कब्जियत; सदा दबावकी तरह दर्द; दबाने और जोरसे साँस लेनेपर दर्द बढ़ जाता है; दाहिनी बगल और पीठमें दर्द होता है।

लेप्टेण्ड्रा १x, ६ ।—जीभ पीली, पित्तकी कै, बहुत-सा, काला और सड़ी बदबूसे भरा दस्त; मलका रङ्ग अलकतरेकी तरह काला; यकृतमें असह्य वेदना (यह दर्द पीठकी रीढ़तक फैल जाता है); कामलाके साथ कीचकी तरह दस्त, आमाशय रोग, बोखार, उदरी या शोथ।

आर्सेनिक ३x, ३० ।—यकृत बड़ा; शोथ, पेशाब थोड़ा; जीवनी-शक्तिका घटना; प्यास, नया या पुराना यकृत रोग; जलन करनेवाला दर्द; कै, पाखाना होनेके बाद ही सुस्त हो जाना।

सिपिया ३०।—जरायु और मूत्राशयके क्रियाके विकारके साथ यकृतका पुराना प्रदाह ; कमजोरी ; अग्निमान्द्य और ग्रन्थिवात ; शोथ।

हिपर-सलफर ३x विचूर्ण—३०।—साँस लेने, खाँसने या हिलनेसे दर्दका बढ़ना (यह दर्द बढ़कर पुट्ठे तक जाता है) ; बवासीरकी बीमारीके साथ यकृतमें रक्त-सञ्चयसे पैदा हुआ पुराना प्रदाह ; पारेके अपव्यवहारसे पैदा हुआ यकृत-रोग होनेपर।

कार्डुयस-मेरियानस θ (फी मात्रा एकसे पाँच बून्द)।—यकृतके साथ प्लीहाका रोग ; कै या मिचली ; कभी-कभी मूत्र-ग्रन्थिमें कष्ट या शिरा फूली रहती हैं।

आरम, नाइट्रिक-एसिड, हाइड्रैस्टिस, लोबेलिया-एरिनस, आर्निथोगेलम वगैरह दवाएँ भी कभी-कभी आवश्यक होती हैं।

नियम।—यकृतपर छोटे गायके बच्चेका कण्डा गर्म कर सेंकना चाहिये। बोखार रहनेपर सागू, बार्ली, आरारूट इत्यादि लघु-पथ्य देना चाहिये। रोगीका भोजन अच्छी तरह पकाया हुआ होना चाहिये। मांस, मछली, घीमें बनी चीजें खाना मना है। यकृत रोगमें विश्राम करना और पुरी, बालेश्वर आदि समुद्रके किनारेकी जगहोंमें रहना बहुत फायदेमन्द है।

पाण्डु या कामला

(Jaundice)

यकृतकी क्रिया बिगड़ जानेकी वजहसे पित्तका शोषण अच्छी तरह न होनेके कारण रक्तमें मिल जाता है, इसीसे "पाण्डु-रोग" पैदा होता है। ऐयाशी, परिश्रम न करना, मानसिक उद्वेग या पित्त-पथरी रोग होना, अधिक मात्रामें क्विनाइन, कैलोमिल या रूबर्ब वगैरह सेवन करनेकी वजहसे भी यह बीमारी होती है। इस रोगमें रोगीके शरीरका चमड़ा, आँखका सफेद अंश, नखकी जड़ और पेशाब पीला होता है। यहाँतक कि रोगी जिधर और जिस चीज़को देखता है, वही उसे पीली दिखाई देती हैं और बिछावनपर जहाँ पसीना लगता है, वहाँ भी पीला दाग पड़ जाता है। कब्जियत या पतले दस्त, पेटमें दर्द, मुँहका स्वाद तीता, कीचकी तरह या सफेद रङ्गके दस्त, नाड़ी तेज़ या धीर और दुर्बल होना, कै, हिचकी, सुस्ती वगैरह लक्षण इस बीमारीमें दिखाई देते हैं। रोग कठिन होनेपर अक्सर रोगीकी मृत्यु हो जाती है।

संक्षिप्त चिकित्सा

(१) नये पाण्डु रोगमें—ऐकोन, कैमो, मर्क, नक्स-वो, हाइड्रैस्टिस θ (फी मात्रा ५ बून्द)।

(२) पुराने पाण्डु रोगमें—चेलिडो, चायना, पोडो, फास्फो, डिजि, एसिड-नाइट्रिक।

(३) पित्त-पथरीसे पैदा हुए पाण्डु-रोगमें—ऐकोन, कैल्के-कार्ब ३०, बार्बेरिस θ, बेल वगैरह पित्त-पथरी रोगकी दवाएँ सेवन और पथरी निकलते समय पेटमें जिस जगह दर्द हो, वहाँ बहुत गर्म पानीकी पट्टीका प्रयोग करना चाहिये।

कई प्रधान दवाओंके लक्षण

पाण्डु-रोगके साथ प्रदाह अवस्थाके लक्षणोंमें और यकृत-प्रदेशमें तेज़ दर्द रहनेपर—**ऐकोन ३x**। कब्जियत, वर्ण-हीन या पीला पेशाब, बिछावनमें पीला दाग लगना, नाड़ी चीण और कोमल, समूचा शरीर पीला, लक्षणमें—**मर्क-वा ६x** (ऐकोन सेवनके बाद मर्क फायदा करता है)। मैलेरियासे पैदा हुए पाण्डु-रोगमें; पित्त-मिले पतले दस्त; सविराम पाण्डु; पित्त-पथरी; मलिन और पीला चेहरा; यकृतमें सुई गड़नेकी तरह दर्द; मुँहका स्वाद तीता; अरुचि; बहुत कमजोरी प्रभृति लक्षणोंमें—**चायना ३x, ६**। भरपूर मात्रामें पाण्ड-रोग, नींद न आना; कन्धेकी दोनों हड्डियोंमें दर्द; वायु छूटना; पेशियोंमें दर्द वगैरह लक्षणोंमें,—**माइरिका θ, ३**। कामलाके साथ कब्जियत, यकृत-प्रदेशमें दर्द; उत्तेजक खान-पान या परिश्रम न करनेके कारण पाण्ड-

रोग होनेपर, नक्स-वो १X, ३० । दाहिनी ओर दबाकर सोनेपर यकृतकी जगहपर तेज़ दर्द हो, तो ब्रायोनिया ३ । कामलाके साथ यकृत-प्रदेशमें और दाहिने कन्धेमें दर्द और अकड़न; साफ या गहरे लाल रङ्गकी जीभ; मुँहका स्वाद तीता, पीले रङ्गके दस्तके लक्षणमें, चेलिडोनियम ϕ, २X । शरीरका चमड़ा और आँखें भूरी पीले रङ्गकी; बार-बार बहुत ज्यादा धुमैले रङ्गके दस्त; काली आभा लिये, भूरा पेशाब; स्वरभङ्ग; खाँसी और निराशा वगैरह तेज़ लक्षणोंमें फास्फो ३, ६ । सान्निपातिक या उत्कट उपसर्गोंमें दुबलापन; नये पाण्डु-रोगके बाद अजीर्ण रोग होनेपर; पारेके अपव्यवहारके कारण पाण्डु होनेपर; कमजोरी, दुबलापन और बोखारके बाद दुरारोग्य पाण्डु रोग होनेपर आर्स ३X, ३० [डाक्टर बार्नेटने कार्डुयस θ प्रयोगकर (खासकर पुरानी अवस्थामें) बहुत फायदा होते देखा है]। डर या क्रोधके कारण कामला या तुरन्तके पैदा हुए बच्चेको कामला होनेपर,—कैमोमिला ६ । खून खराब होकर कामला रोग होनेपर—क्रोटेलस ३ । पुरानि कामला रोगमें—आयोड ३, ६ ।

डिजिटेलिस ३, पोडोफाइलम १x, हाइड्रेस्टिस θ, लेपेण्ड्रा ६, ऐसिड-फास ३०, डलिकस ३x वगैरह दवाएँ लक्षणके अनुसार बीच-बीचमें प्रयोग की जा सकती हैं। डाक्टर

मुसलर और उनका मत माननेवाले सभी तरहके पाण्डु-रोगमें नेट्रम-सल्फ १२x चूर्ण व्यवहारकर फायदा हुआ बताते हैं।

आनुसङ्गिक चिकित्सा।—हलका पथ्य; पाव रोटी सेंकी हुई, सेब भूँना हुआ (roasted), भरपूर ठण्डा पानी पीना; छेनेका पानी; खूब गर्म पानीमें फ्लानेल भिगो, निचोड़कर दर्दवाली जगहपर सेंक देना। आबहवा बदलना, नित्य घुड़सवारी करना फायदेमन्द है।

पथ्यपर पूरी नज़र रखनी चाहिये। बोखार रहनेपर सागू, बार्ली, आरारूट; बोखार न रहनेपर पुराने चावलका भात, शोरबा, बिना मांसका शोरबा देना चाहिये। मछली, दूध, घी और मिठाई खाना मना है। पके फल-मूल थोड़ी मात्रामें खाना फायदेमन्द हैं।

बढ़ी हुई प्लीहा

(Enlarged Spleen)

शरीरमें मैलेरियाका विष प्रवेश करनेके कारण प्लीहा बढ़ती है। बोखारमें शीत अवस्थामें, प्लीहामें रक्त-सञ्चय होनेपर वह बढ़ जाया करती है। इसके अलावा, हृत्पिण्डकी बीमारियाँ, रजोलोप, काला-ज्वर या बवासीरका खून रुक

जानेपर प्लीहा बढ़ जाती है। प्लीहा बढ़नेपर समूचा शरीर रक्त-शून्य और पीले रङ्गका हो जाता है तथा अग्निमान्द्य, कब्जियत या पतले दस्त और कमजोरी वगैरह लक्षण प्रकट होते हैं। प्लीहा धीरे-धीरे बड़ी होकर, पेटकी बाईं ओर फैल जाती है और इतनी कड़ी हो जाती है, कि मालूम होता है—पत्थरका एक टुकड़ा रखा है। रोग कठिन होनेपर—पतले दस्त या रक्तामाशय होता है, भूख नहीं रहती, दाँतकी जड़ या मसूढ़े फूलकर खून निकलता है और अन्तमें उदरी या शोथ होकर रोगी मरता है।

चिकित्सा।—मैलेरिया ज्वरके साथ प्लीहाका नया प्रदाह अगर हो जाये, तो पहले बोखारका ही इलाज करना चाहिये। सब तरहके प्लीहा रोगमें ही डाक्टर बार्नेट **सियानोथस** व्यवहार करनेकी सलाह देते हैं और इससे फायदा भी हुआ है। अतएव कोई दूसरी दवा काममें लानेके पहले सियानोथस θ पाँच बून्दके हिसाबसे सेवन करायें। यदि इससे कोई फायदा न हो, तो लक्षणके अनुसार दूसरी दवाएँ देनी चाहियें।

नये प्लीहा-प्रदाहमें **ऐकोनाइट ३x**। प्लीहाके ऊपर सुई गड़नेकी तरह दर्द हो या ऐंठन हो, दबानेसे यह दर्द बढ़ता हो और खूनकी कै होती हो, तो इन लक्षणोंमें—**आर्निका ६** सेवन करना चाहिये। पेटके बायें भागमें दबा रखने या सुई गड़नेकी तरह तेज़ दर्द, प्लीहा बड़ी और

कड़ी, बायीं करवट सो न सकना, कमजोरी और चेहरा मलिन तथा शरीर हमेशा गर्म रहनेके लक्षणमें—आर्सेनिक ३, ३०। बहुत दिनोंतक काला-ज्वर या विषम-ज्वर भोगनेके कारण प्लीहा धीरे-धीरे बड़ी हो जाये और इसके साथ ही रोगी बहुत कमजोर हो पड़े, तो **चायना** ६ **या** ३०। कभी-कभी प्लीहामें चिलक मारनेकी तरह दर्द होनेपर—**कार्बो-वेज ३x या नेट्रम-म्यूर ३०।** यकृत और प्लीहाकी वृद्धि और दर्दमें—**कार्डुयस-मेरियानस** θ पाँच बून्दकी मात्रामें नित्य सवेरे और सन्ध्याके समय सेवन करना फायदा करता है।

इनके अलावा नक्स-वोमिका ३०, पोडोफाइलम ६, मर्कुरियस-बिन-आयोडेटम ३x विचूर्ण, फास्फोरस ६, एसिड-नाइट्रिक ६, लेप्टेण्ड्रा ३x, फेरम ६, सेगरिकस ३, कैलि-ब्रोम ३x विचूर्णकी भी समय-समयपर जरूरत पड़ा करती है।

आनुसङ्गिक चिकित्सा।—अगर प्लीहा बड़ी और कड़ी मालूम हो तो (जब बोखार न रहे या बोखार कम हो जाये, उस समय) कच्चे पपीतेकी जो लसी निकलती है, वह दो-एक बून्द उस रोगीको चीनी (या दूधकी चीनी) के साथ खिलानेसे खासा फायदा होता है।

प्लीहा और यकृतकी वृद्धिके साथ रक्त-स्वल्पता

(Speno-Megaly)

यह प्लीहा रोगका पहला उपसर्ग है—इसके बाद प्लीहाका बढ़ना, खूनकी कमी, खूनका स्राव होना और अन्तमें यकृतका बढ़ना, कामला या उदरी रोग हो जाता है। इसका कारण अभी जाना नहीं गया है; परन्तु मैलेरिया या उपदंशके कारण धातु-विकार हो जानेपर यह रोग सहजमें ही पैदा हो सकता है।

यह रोग हमेशा पुराने आकारमें ही दिखाई देता है। बढ़ी हुई प्लीहा ही इसका पहला लक्षण है; किसी तरहका दर्द नहीं मालूम होता; कोई ग्रन्थि नहीं फूलती; परन्तु बादमें शरीरमें खून कम हो जाता है; खूनकी कै होती है और इसी कारणसे यकृत बड़ा हो जाता है, पाण्डु और उदर-शोथ पैदा हो जाता है।

चिकित्सा

कार्डुयस-मेरियानस θ और **सियानोथस** २x इस रोगकी उत्कृष्ट दवाएँ हैं। रक्त-स्राव होनेपर **फास्फोरस** ३, ६ या **क्रोटेलस** ३, ६ देना चाहिये। जरूरत होनेपर नश्तर लगवाकर प्लीहा कटवा देनी चाहिये।

---

१२ । मूत्रयन्त्रकी बीमारियाँ

नया मूत्रग्रन्थि-प्रदाह
(Acute Nephritis or Acute Bright's Disease)

खूनसे पेशाब निनकालनेके लिये गुर्देमें कितनी ही बहुत पतली-पतली नलियाँ है। किसी कारणसे भी एकाएक सर्दी लग जाना, डिफ्थीरिया, चेचक, पीत ज्वर आदि कितनी ही नयी बीमारियाँ और तारपीन, आर्सेनिक, कार्बोलिक-एसिड, कैन्थरिस, कोपेवा प्रभृति कितनी ही दवाओंके व्यवहारसे अथवा बहुत शराब पीने या आगसे जल जानेपर मसानेकी इन सूक्ष्म नालियोंमें प्रदाह पैदा हो जाता है। जिन्हें पहले-पहल लड़का होनेवाला हो, उन स्त्रियोंको सातवें या आठवें महीनेमें यह प्रदाह होता दिखाई देता है। नये प्रदाहको नया मूत्रग्रन्थि-प्रदाह कहते हैं। इस प्रदाहके कारण मसाना या मूत्रग्रन्थि फूल जाती है, कोमल हो जाती है और लाल रङ्ग धारण करती है।

पहले ज्वर, कमरमें कुचलनेकी तरह दर्द, मिचली और वमन होने लगता है। शरीरकी त्वचा सूखी कड़ी हो जाती है। इसके बाद गुर्देमें दर्द होता है और दर्द नीचेकी

ओर फैलता है। बार-बार पेशाबका वेग होता है, पर हर बार पेशाब थोड़ा और लाल रङ्गका होता है। चेहरेपर शोथ या सूजन पैदा हो जाती है और फिर धीरे-धीरे वह सारे शरीरमें फैल जाती है। इसके बाद श्वास-कष्ट और फिर रक्तमें युरिया अधिक हो जानेके कारण प्रलाप, आक्षेप और युरेमिया (हैजामें पेशाब रुक जानेके कारण जैसा होता है) होकर रोगीकी मृत्यु हो जाती है। पेशाबकी परीक्षा करनेपर पेशाबमें युरिमिया (मूत्रक्षार) की अधिकता और ऐल्बुमेन (अण्डलाल) की कमी, प्रदाहका लक्षण, स्वरूप, रक्तकणकी अधिकता आदि लक्षण पाये जाते हैं। इस रोगका भोग काल साधारणतः १ सप्ताहसे तीन मासतक है। ठीक-ठीक इलाज होनेपर रोगी आरोग्य हो सकता है।

इस रोगमें शय्यापर एकदम पड़े रहना; तरल पतली चीजें जैसे—दूध, बार्ली, सागू इत्यादि खाना, बहुत ज्यादा परिमाणमें पानी पीना और बीचमें स्पञ्ज द्वारा त्वचाको पोंछ डालना आवश्यक है।

पुराना कोरण्ड-घटित मूत्रग्रन्थि-प्रदाह

(Chronic Paranchymatous Nephritis or Chronic Bright's Disease)

इस रोगका यथार्थ कारण अबतक नहीं जाना जा सका। साधारणतः पुरुष और खासकर जवानोंको ही यह बीमारी अधिक होती है। बहुत ज्यादा शराब पीना, उपदंश, यक्ष्मा, सीसेका विष और पाराका दोष इस बीमारीके उत्तेजक कारण हैं।

रोगकी प्रथम अवस्थामें—मूत्रग्रन्थि या गुर्दा फूल जाता है, रक्तशून्य हो जाता है और उसका रङ्ग सफेद हो जाता है। इस अवस्थाको वृहत् श्वेत मूत्रग्रन्थि कहते हैं।

द्वितीय अवस्थामें—मूत्रग्रन्थि संकुचित हो जाती है, इसीलिये, इसको क्षुद्र श्वेत मूत्रग्रन्थि कहते हैं।

रोगका पहला आक्रमण बहुत हलका होता है। पहले भूख न लगना, अग्निमान्द्य, पतले दस्त वगैरह लक्षण प्रकट होते हैं, इसके बाद शक्ति, सामर्थ्य और वजन घटने लगता है। शरीर दुबला हो जाता है। शरीरकी त्वचा सूखी, कड़ी तथा चेहरा मलिन और उजला हो जाता है। पहले आंखकी निचली पलकपर शोथ दिखाई देता है और वह क्रमसे सारे

शरीरमें फैल जाता है। हृत्पिण्डका बढ़ना भी अक्सर देखा जाता है। कितनी ही बार यह रोग कुछ दिनोंतक दबा रह सकता है, पर कुछ शोथ और पेशाबमें अण्डलालकी अधिकता रहती है। पेशाबका परिमाण बहुत घट जाता है ; पर कभी-कभी पेशाबके रङ्ग और परिमाणमें किसी तरहका हेरफेर नहीं होता दिखाई देता। पेशाबमें ऐल्बुमिन (अण्डलाल), दूसरे-दूसरे बाहरी पदार्थ पाये जाते हैं। इस रोगके कारण न्युमोनिया, अन्त्रावरण-प्रदाह, मस्तिष्कावरण प्रदाह, छोटी आँतका सूजना प्रभृति उपसर्ग दिखाई देते हैं। इस बीमारीका नतीजा अच्छा नहीं होता ; परन्तु अच्छी तरह इलाज होनेपर आराम होना असम्भव नहीं है।

सम्पूर्ण मानसिक और शारीरिक विश्राम, शरीर गर्म रखनेके लिये गर्म ऊनी कपड़े पहनना ; रोज़ ठण्डे पानीसे नहाना और बहुत पतला दूध और मठा पीना चाहिये।

कई प्रधान दवाओंके विशेष लक्षण

ओस या सर्दी लगकर ज्वर और प्रदाहके लक्षणोंके साथ रोगकी पहली अवस्थामें—**ऐकोनाइट ३x**। बून्द-बून्द पेशाब (कभी-कभी खून मिला), अण्डकोष लाल, तलपेटमें जलन करनेवाला दर्द, पेशाब करनेके समय जलन या पेशाब न होना लक्षणमें, **कैन्थरिस ३x, ६**। मैला या खून-मिला पेशाब, अण्डकोष लाल, पेशाब रुका, और शरीरमें जगह-जगह शोथके

लक्षणमें, टेरिबिन्थिना ६ । बार-बार पेशाब लगना, मूत्र-कोषमें कुछ गड़नेकी तरह दर्द, आँख और चेहरा लाल, कभी-कभी प्रलापके लक्षणमें—बेलेडोना ६ । मसानेकी जगहपर दर्द (खासकर दबानेपर), बहुत कष्टसे और थोड़ी मात्रामें या लाल रङ्गका पेशाब, पैरमें काँटा गड़नेकी तरह असह्य दर्द, शोथ प्रभृति लक्षणोंमें—एपिस ३, ३० । रक्त-स्वल्पताके साथ मूत्रग्रन्थिका प्रदाह होनेपर—आर्सेनिक ३x । पानीमें भींजकर रोग होनेपर—डाल्कमारा ३ या रटसक्स ६ । शराब पीनेके कारण या अजीर्णके कारण हो तो, नक्स-वोम १x-३x । गर्भावस्थामें यह बीमारी होनेपर—मर्क-कोर ६ । कैनाबिस-सैट ६, लाइकोपोडियम ३०, सिपिया ६, सलफर ३० को भी समय-समयपर जरूरत होती है ।

रोग **पुराना** होनेपर—एपिस, आर्जे-नाई, आर्स, कैन्थरिस, डिजिटेलिस, हेलोनियस, मर्क-कोर, टेरिबिन्थिना, फास्फोरस, स्ट्रिकनियम, कैम्फर, (हृत्पिण्डकी क्रिया स्थगित होनेकी आशङ्का होनेपर, स्पिरिट कैम्फर ५ बून्दकी मात्रामें, ५ मिनटके अन्तरसे देना चाहिये। **कैफीन** (चायके वृक्षका सूखा पत्ता या काफीके सूखे बीजसे प्रस्तुत ३x, ३ सेवनसे हृत्पिण्डकी क्रिया बलवती होती है ; पेशाबका परिमाण बढ़ जाता है और स्नायविक दौर्बल्य घट जाता है ।

सान्तर मूत्रग्रन्थि-प्रदाह

(Interstitial Nephritis)

मूत्रग्रन्थिका एक तरहका पुराना प्रदाह है और उसके साथ तन्तुका प्रदाह और इस तन्तुका सङ्कोचन होकर गुर्दा संकुचित और आकारमें छोटा हो जाता है। इसका दूसरा नाम— Cirrhodiotic Bright's disease है।

साधारणतः मध्यम उमरमें ही इस रोगका आक्रमण हुआ करता है। वात, गठिया वात, बहुत अधिक शराब पीनेका अभ्यास और उपदंश इस रोगका प्रधान कारण है। इस रोगका आक्रमण एकाएक होता है, परन्तु रोग बहुत धीरे-धीरे प्रकट होता है। दिनोंदिन बलक्षय, रक्तकी कमी, उदर और आँतमें दर्द, हृत्पिण्डकी सूजन, नाड़ी कड़ी, सरमें चक्कर और अनिद्राकी बीमारी पैदा हो जाती है। शोथ कभी रहता है, कभी नहीं रहता। आँखकी प्रतिच्छाया पर्देके प्रदाहके कारण दृष्टिहीनता भी पैदा हो जाती है। सफेद, पीला, बहुत पेशाब, पेशाबका आपेक्षिक गुरुत्व घटना, पेशाबमें अण्डलालकी अधिकता।

हृत्पिण्डकी बीमारी, आँखके चित्रपत्रका प्रदाह, संन्यास, मूत्रद्वार विकार, न्युमोनिया, ब्राङ्काइटिस वगैरह बीमारियाँ इस रोगके उपसर्ग रूपमें पैदा हो सकती हैं।

विश्राम (मानसिक या शारीरिक), दूध या मठा पीना, गर्म जलसे नहाना और ऊनी वस्त्र पहनना लाभदायक है।

चिकित्सा

एपिस ६, ३०।—सारे शरीरमें शोथ, यह शोथ चेहरेमें विशेषकर आँखकी ऊपरी पलकमें, बार-बार थोड़ा-थोड़ा पेशाब होना, **प्यास न रहना**, उदरमें शोथ और **पसीना न होना**, उदरमें थोड़ा भी स्पर्श सहन न होना, पेशाबमें नाना प्रकारका श्वेतसार, रक्तके कण और मूत्रपिण्डके तन्तुओंका अस्तित्व मौजूद रहता है। मूत्राशय-प्रदाहके प्रायः सभी रोगियोंकी शरीरकी त्वचा सूखी रहती है। इसीलिये एपिस इस रोगकी एक उत्कृष्ट दवा है।

आर्सेनिक ३०, २००।—रोगकी नयी अवस्थामें यह दवा अधिक व्यवहृत होती है। पहले हाथ-पैर और पलकें, इसके बाद सारे शरीरमें सूजन दिखाई देती है; श्वास-प्रश्वासमें तकलीफ़ होती है, रातके समय और शय्यामें सोनेपर ऐसा हो जाता है, मानो साँस रुक जायगी। शरीरकी त्वचा ठण्डी और लसदार पसीनेसे तर, **पर भीतरी जलन, बेचैनी, तेज प्यास**, सुस्ती प्रभृति आर्सेनिकके प्रकृतिगत लक्षण वर्त्तमान रहनेपर इससे बहुत फायदा होनेकी आशा की जाती है। पेशाबमें बहुत **ज्यादा परिमाणमें श्वेतसार**

और चर्बी-मिले तन्तु निकलते हैं। आर्सेनिकके बहुतसे लक्षण एपिसके विपरीत हैं।

आरम-मैंकु ३०, २००।—मूत्रग्रन्थि सिकुड़ी हुई, हृत्पिण्डकी क्रियामें गड़बड़ीकी वजहसे पेशाबकी बीमारी; हृत्पिण्डका फैलना, उपदंश और पाराके दोषकी वजहसे बीमारियाँ, यकृतका बढ़ना, आरम्भमें अधिक पेशाब होना, अन्तमें थोड़ा और अण्डलाल मिला पेशाब होना, श्वास-कष्ट; कलेजा धड़कना, **मृत्यु-भय** प्रभृति लक्षणोंमें लाभ-दायक है।

ब्रैकि-रिपेन्स १X, ६X।— बहुत ज्यादा परिश्रम करनेकी वजहसे बीमारी होनेपर इसके निम्न क्रमसे बहुत लाभ होता है।

बार्बेरिस ३०।—वात-प्रधान धातु और शराबियोंकी बीमारी, थोड़ा पेशाब, बार-बार पेशाब होना, पेशाब होनेके समय जलन और दर्द, पेशाबमें बहुत अधिक श्वेतसार और रक्तके कण निकलना; मिचली, कमरमें दर्द और अकड़न।

कैल्के-आर्स ३०।—सुस्ती, निस्तेजता, चेहरा मलिन, प्यास, बार-बार पेशाब, बेचैनी, दुश्चिन्ता, हाथ-पैरोंमें शोथ, ज्वर, पेशाबमें बहुत ज्यादा अण्डलाल निकलना, तन्द्रालुता वगैरह लक्षणोंकी एक बहुत बढ़िया दवा है।

कैल्के-कार्ब ३०, २००।—गोटियोंवाली बीमारी विशेषकर चेचकके बाद पेशाबमें बहुत अधिक अण्डलाल

निकलना, कमर और मसानेमें दर्द, दर्द दबा रखनेकी तरह; जरा भी हिलने-डोलनेपर कलेजा धड़कना और छातीमें शून्य मालूम होना; यकृत और प्लीहाका बढ़ना तथा कड़ापन; बार-बार पेशाब होना।

कैन्थरिस।—रोगकी नयी अवस्थामें, एकाएक आब-हवाके बदलने या कोखकी जगहपर चोटकी वजहसे बीमारी, मूत्राशयमें दर्द, अकड़न, पेशाब थोड़ा, जलनकी तरह दर्द, पेशाबमें खून जाना, तेज़ ज्वर, प्यास, बार-बार पेशाब करनेकी इच्छा, पर बूंद-बूंद पेशाब निकलना।

कक्कस-कैक्ट १x, १२।—उदरके शोथसे उत्पन्न श्वासकष्ट और खाँसी, इसके द्वारा अच्छी हो जाती है। इसके साथ ही बलगमका स्वाद मीठा, बार-बार पेशाब लगना, सारे शरीरमें सुस्ती, सर-दर्द रहनेपर इससे विशेष लाभ होता है।

डिजिटेलिस θ, ३०।—हृत्पिण्डकी कमजोरी, धीमी सविराम नाड़ी, त्वचाका रङ्ग नीला, सारे शरीरका विशेषकर तलपेटका शोथ, थोड़ा पेशाब, पेशाबमें श्वेतसार, मूत्र-ग्रन्थि सिकुड़ी और औंघाईके लक्षणमें लाभदायक है।

कौलचिकम ६, ३०।—रोगकी पहली अवस्थामें पेशाब थोड़ा, बून्द-बून्दकर होता है। पेशाबमें सफेद तली, स्याहीकी तरहका काला पेशाब, पेशाबमें रक्त या श्वेतसार। सीधे होकर खड़े होनेपर या सोनेपर मूत्रपिण्डमें दर्द।

हेलिबोरस ६, ३० ।—पेशाबमें बहुत ज्यादा काला धमनीका रक्त निकलना ; पात्रके नीचे काली गाढ़ी तली जमती है ; हृत्प्रदेशमें बेचैनी ; डिफ्थीरियाके बादकी बीमारी ।

कैलि-बाई ३०, २०० ।—उपदंशकी वजहसे बीमारी ; हृत्पिण्ड-प्रदेशमें ठण्डक अनुभव होना ; हृत्प्रदेशमें दबाव मालूम होता है । सोनेपर बढ़ना और बैठनेपर घटना, दृष्टिके सामने हरा दिखाई देना, पेशाबके साथ बहुत अधिक श्वेतसार निकलना ।

कैल्मिया ३० ।—हृत्पिण्डकी बीमारीसे उत्पन्न उपसर्ग, सर्दी लगकर रोगका आक्रमण, इसके साथ वात । पेशाब थोड़ा, पेशाबमें श्वेतसार, श्वासकष्ट ।

लैकेसिस ३०, २०० ।—बहुत अधिक शराब पीनेका अभ्यास । डिफ्थीरियाके बादकी बीमारी । पेशाब गाढ़ा, गदला काले रङ्गका । मुँहमें पानी भर आना या फीका उजला भाव । बहुत अधिक श्वेतसार निकलना, हृत्पिण्डकी बीमारीकी वजहसे वक्षमें दोष और हृद्वेस्टमें जल-सञ्चय ।

फास्फोरस ३, ३० ।—हृत्पिण्डकी क्रिया बिगड़कर दूषित रक्तके दौरानमें व्याघात होकर मूत्रपिण्डमें नाना प्रकारके यान्त्रिक विकार हो जाते हैं । पेशाबमें बहुत श्वेतसार आदि दिखाई देता है ।

प्लम्बम ३० ।—मसाना या मूत्रपिण्डमें दाना-दाना र्थ सञ्चय, बदबूदार पेशाब, पेशाबका आपेक्षिक गुरुत्व घट

जाता है और ख्वेतसार निकलता है। रक्तके कण, पीव आदि निकलना। प्रायः शोथ हो जाता है।

सार्सापैरिला ३०, २००।—उपदंशकी वजहसे बीमारी, पेशाबमें ईंटके चूरकी तरह तली, पेशाब हो जाने बाद जलन, थोड़ा पेशाब, मुँहमें छाले, बार-बार पेशाबका वेग।

आनुसङ्गिक चिकित्सा।—दोनों गुर्दोंको सेंकनेसे तकलीफ़ घटती है। गरम वस्त्रसे हमेशा शरीर ढँके रहना चाहिये। सहन हो तो बीच-बीचमें गरम पानीसे नहाना उपयोगी है। दूध (कुछ गर्म या ठण्डा) और तरकारीका शोरबा सुपथ्य है। मांस, मछली और नमक न खाना ही अच्छा है।

मूत्र-पथरी अध्यायमें—"मूत्र-शूल" और उसकी चिकित्सा देखिये।

साण्डलाल-मूत्र

(Albuminuria)

पहले कहे हुए मूत्र-ग्रन्थि-प्रदाहकी पुरानी एक विशेष अवस्थामें पेशाबके साथ रक्तका जलीय अंश (अण्डलाल—albumen)* निकलता है, इसीको "अण्डलालयुक्त मूत्र"

---

* खूनके सफेद अंशको अण्डलाल कहते हैं। यह अण्डलाल देखनेमें अण्डेके सफेद भाग जैसा होता है। यह जीव-देहका एक प्रधान उपादान है।

कहते हैं। बोखार, प्यास, मिचली, बार-बार पेशाब करनेकी इच्छा, पेशाबमें ज्यादा परिमाणमें अण्डलाल रहना, हाथ-पैर और चेहरा फूल जाना वगैरह इस बीमारीके प्रथम लक्षण हैं। इसके बाद खट्टी डकार आना, खूनकी कमी, शोथ, मस्तिष्क या हृत्पिण्डपर रोगका आक्रमण होना वगैरह उपसर्ग पैदा होते हैं और रोगी मर जाता है। बोखार, प्रदाह, श्वेत-प्रदर या आँतोंका रोग भोगना, अजीर्ण, ज्यादा अण्डलाल-मिला भोजन (जैसे—अण्डे), ज्यादा देरतक ठण्डे पानीसे नहाना वगैरह इस रोगकी उत्पत्तिके कारण हैं।

चिकित्सा।—ऐकोन ३x (रोगके आरम्भमें); एसिड-फास २x—३ या हेलोनियस ३x (स्नायविक उत्तेजना रहने-पर); लाइको ६ या टेरिब ३ (मूत्र-मार्गके रोगमें); ऐपो-साइनम θ (शोथ आदि उपसर्गमें); आर्स ३x—३० (सुस्ती, बेचैनी, घबड़ाहट, प्यास, बदन ठण्डा, परन्तु भीतर जलन मालूम होना) और ऊपर कहे हुए "मूत्र-ग्रन्थि-प्रदाहकी" सब दवाएँ तथा एपिस, आर्ज-नाई, आरम, कैन्थ, लैके, सल्फ वगैरह दवाएँ भी कभी-कभी काममें आती हैं। यह रोग कड़ा है। इसलिये इलाजका भार किसी उपयुक्त होमियोपैथिक डाक्टरको देना चाहिये।

आनुसङ्गिक चिकित्सा।—Dr. Schmidt सिर्फ दूध देनेको कहते हैं। बहुत बार जब सब तरहके इलाजसे कोई फायदा नहीं होता, तो सिर्फ दूध पिलानेसे फायदा

दिखाई देता है। नमक कम खाना अच्छा है। मछली, मांस या उत्तेजक खान-पान मना है। ऊनी या गर्म कपड़े पहनना चाहिये। नहाते समय गमछे या तौलियेसे बदन खूब घसना और खुली हवामें घूमना फायदेमन्द है।

मूत्रमार्ग-प्रदाह
(Urethritis)

पेशाब निकालनेवाली सलाई (मूत्रशलाका—Catheter) घुसाने या पथरी निकालने वगैरह कारणोंसे पेशाबकी नलीमें (urethra) चोट लगनेपर, मूत्र-मार्गमें दर्दके साथ जखम और पेशाबके समय तेज़ जलनके साथ खून पीव आदि निकला करता है। इसी प्रदाहका नाम **मूत्र-मार्ग-प्रदाह** है।

चिकित्सा।—आर्निका ३x सेवन और आर्निकाकी (दसगुने पानीके साथ) जलपट्टी। बोखारके साथ जलन मालूम होनेपर, ऐकोनाइट। बोखारके साथ टपककी तरह दर्दमें, बेलेडोना ३x, ६। पेशाबके समय तेज़ दर्द वगैरह लक्षणोंमें कैन्थरिस ३—६। जेलस ३x को भी कभी-कभी जरूरत पड़ती है।

यह बीमारी सहजमें ही आराम हो जाती है; परन्तु सूजाकका विष फैलनेके कारण जो मूत्र-मार्ग-प्रदाह होता है,

वह कठिन है। प्रमेह-रोग-अध्यायमें "प्रदाह" अवस्था देखिये।

मूत्र-शूल
(Nephralgia)

मूत्र-ग्रन्थि या गुर्देमें जोरोंका दर्द होनेको "मूत्र-शूल" कहते हैं। गुर्देमें पैदा हुई पथरी जब पेशाबकी नलीकी राहसे मूत्राशयमें आने लगती है, उस समय यह तेज़ दर्द पैदा होता है। कैन्थरिस २x—६ और कैनाबिस-सैटाइवा १x सेवन करानेसे और गर्म पानी बोतलमें भरकर पेटपर सेंक देनेसे फायदा दिखाई देता है। बहुतसे लक्षण और इलाजके लिये इस ग्रन्थके "मूत्र-पथरी" अनुच्छेदमें "मूत्रपिण्डकी पथरी" और "मूत्राशयकी पथरी" उपसर्ग देखिये।

मूत्रनलीका संकोचन
(Stricture)

पहले थोड़ा-थोड़ा पेशाब निकलना और पीछे बिलकुल ही पेशाब न होनेको "मूत्रनाली (urethra) का संकोचन" कहते हैं। यह सङ्कोचन दो तरहका है :—आक्षेपिक (spasmodic) और यान्त्रिक (organic) सङ्कोचन।

मूत्रनालीकी पेशियाँ (muscles) आप-से-आप सिकुड़ने लगें तो उसका नाम "आक्षेपिक सङ्कोचन" हैं और यान्त्रिक सङ्कोचनमें श्लैष्मिक-झिल्लियाँतक (mucous membranes) इतनी पतली, कड़ी और सूतकी तरह संकरी हो जाती हैं, कि उनसे पेशाब निकल नहीं सकता।

चिकित्सा

आक्षेपिक सङ्कोचन।—पहले स्पिरिट कैम्फर θ दो बून्दके हिसाबसे पाँच-सात मिनटके अन्तरसे सेवन करना चाहिये। बोखारके साथ आक्षेपमें ऐकोन ३x—३। रोग पुराना हो जानेपर नक्स-वोम ३x—६।

गर्म पानीमें नहाना फायदेमन्द है और यदि पेशाब करानेके लिये कैथिटरके प्रयोगकी जरूरत हो, तो कैथिटर देनेके आध घण्टा पहले ऐकोन ३x एक मात्रा सेवन कराना और कैथिटर देनेके बाद आर्निका ३x—३ सेवन कराना और मूलाधारमें (perinaeum अर्थात् मलद्वार और जननेन्द्रियके बीचके स्थानमें) गर्म पानीका सेंक देना फायदेमन्द है।

यान्त्रिक सङ्कोचन।—रोगके आरम्भमें, क्लिमेटिज θ—३, इसके बाद फास्फो ३, डाल्के ६, कैन्थ ३x, साइलिसिया ६, थियोसिनामिस ३x, प्रूनस-स्पाई ३, एपिस ३, ऐकोन ३x, स्पिरिट कैम्फर, बेल ६, टेरिबि, एसिड-फास, आयोड, आर्स, चिमाफिला वगैरह दवाओंकी जरूरत पड़ सकती है।

मूत्रकृच्छ्रता और प्रकृत प्रमेह रोगमें "मूत्रनालीका सङ्कोचन" देखना चाहिये।

खूनका पेशाब
(Haematuria)

गिर जाना, चोट लगना, सर्दी लगना, प्रमेह, पथरी या किसी दूसरी कड़ी बीमारीमें **खूनका पेशाब** होता है।

चिकित्सा।—टेरिबिन्थिना ३ खून-मिले पेशाबकी बहुत अच्छी दवा है। गिर जाने या चोट लगनेके कारण खूनका पेशाब होनेपर, आर्निका ३x—३। मूत्रग्रन्थिमें दर्दके साथ खूनका पेशाब होनेपर, हैमामेलिस २x। सर्दी लगकर खून-मिला पेशाब होनेपर, ऐकोनाइट १x—३x। खूनके पेशाबके साथ अगर लाल रङ्गकी कोई चीज़ नीचे जम जाती हो, तो ओसिमम्कैनम् ३—३०; अगर खून पेशाब होनेका ठीक-ठीक कारण समझमें न आये या किसी दवासे खूनका पेशाब बन्द न हो तो कैन्थरिस θ या थ्लैस्पि-बार्सा θ या सिनेसिओ θ या मिल्लिफोलियम १x या आर्सेनिकम-हाइड्रोजेनिसेटम ३ देना चाहिये। बेलेडोना खूनके पेशाबकी एक बढ़िया दवा है। कितनी ही बार सार्सा ६—३० से भी फायदा होता देखा गया है।

आनुसङ्गिक चिकित्सा।—रोगीका चलना-फिरना एकदम बन्द कर देना चाहिये। उत्तेजक खान-पान मना है। कुछ गर्म पानीसे बदन पोंछ डालना चाहिये। दूध वगैरह हलकी चीजें खानेको देनी चाहिये।

मूत्र-रोध और मूत्र-नाश

(Retention and Suppression of Urine)

मूत्राशय (मसाना—bladder) में पेशाब जमा होकर किसी रुकावटकी वजहसे निकल नहीं सकता,—इसीको **"मूत्र-स्तम्भ या मूत्र-रोध** (retention of urine)" कहते हैं और मूत्रपिण्ड (गुर्दा—kidneys) में अगर पेशाब पैदा ही नहीं होता, तो उसे **"मूत्राभाव या मूत्र-नाश** (Suppression of urine)" कहते हैं। मूत्र-स्तम्भमें तलपेट फूल उठता है और मूत्र-नाशमें तलपेट नहीं फूलता। पेशाबके विषैले उपादान खूनके साथ मिलनेपर "मूत्र-नाश" रोग पैदा होता है। इस बीमारीमें सुस्ती, तन्द्रा, मोह, बेहोशी वगैरह कितने ही लक्षण प्रकाशित होते हैं; ज्वर-विकार, हैज़ा वगैरह कई भयानक रोगोंके साथ अकसर मूत्र-नाश उपसर्ग दिखाई देता है। सूजाकमें अगर एकाएक पीब बहना बन्द हो जाता है और मूत्र-ग्रन्थिका प्रदाह या मूत्र-

स्थलीका पक्षाघात या किसी तरहकी चोटकी वजहसे "मूत्र-नाश" रोग होता है।

मूत्र-नाश रोगकी चिकित्सा। – मूत्राशयमें प्रदाह मौजूद रहनेपर (रोगकी पहली अवस्थामें), ऐकोनाइट १x—३ या टेरिबिन्थिना ३। सर्दी लगकर पेशाब रुकनेपर, ऐकोनाइट ३x। मोह और आँखें ऊपर उलटी रहनेके साथ पेशाब रुकनेपर, ओपियम ६—३०। हिस्टीरियासे पैदा हुए मूत्र-रोगमें, इग्नेशिया ३ या ओपियम ६। हैजेकी बीमारीमें पेशाब रुकनेपर, टेरिबिन्थिना ३ या कैन्थरिस ३ या कैलि-बाइक्रोम ६।

मत्र-रोध रोगकी चिकित्सा।—जलन और तकलीफ़के साथ एकाएक पेशाब रुक जानेपर, स्पिरिट-कैम्फर θ। तुरतके जनमे बच्चेको मूत्र-स्तम्भ होनेपर, १०-१५ मिनटका अन्तर देकर स्पिरिट-कैम्फरकी शीशी उसकी नाकके पास रखनी चाहिये। मूत्रस्थलीमें पक्षाघातके कारण अनजानमें बून्द-बून्द पेशाब होता हो, तो नक्स-वोमिका ३ या कास्टिकम ६। हिस्टीरिया या गुल्मवायु-ग्रस्ता रोगिनीका पेशाब रुकनेपर नक्स-मस्केटा २x या इग्नेशिया ३ या जेलसिमियम ३। मूत्राशयकी मुखशायी-ग्रन्थिके बढ़नेकी वजहसे मूत्र-स्तम्भ पैदा होनेपर, पल्सेटिला ३ या बैराइटा-कार्ब ६। रोगकी पहली अवस्थामें, कोई-कोई (पर्यायक्रमसे) ऐकोनाइट १x—३ और जेलसिमियम ३x (अथवा ऐकोन ३x और कैन्थरिस ६) देकर फायदा होता बताते हैं।

आनुसङ्गिक चिकित्सा।—एक भाग दूधमें चार भाग पानी मिलाकर या आरारूट पानीमें खूब पतला बनाकर, उसमें कागज़ी नींबूके रसके साथ नमक या मिसरी देकर, खिलानेसे बहुत बार सहजमें ही पेशाब हो जाता है। कच्चे नारियलका पानी भी फायदेका है। गर्म जलके टबमें रोगीको कमरतक डुबाकर बैठाना फायदेमन्द है। पानीमें कलमी शोरा घोलकर एक कपड़ेकी पट्टी उसमें भिगोकर पेटके ऊपर लगानेसे कभी-कभी पेशाब हो जाता है। आमरूल शाकको पीसकर और जरा गर्मकर, नाभीके चारों ओर लेप चढ़ा देनेसे थोड़ी ही देरमें पेशाब हो जाता है।

मूत्र-रोध-विकार

(Uraemia)

मूत्र-ग्रन्थिके द्वारा जो सब दूषित पदार्थ अच्छी अवस्थामें शरीरसे अलग होकर निकला करते हैं, वे बाहर न निकलकर खूनमें ही रह जाते हैं तो "मूत्र-रोध" और उसके साथ ही "रक्त-दोष" के बहुतसे उपसर्ग हो जाते हैं इसीका नाम **"मूत्र-रोध-विकार"** या "युरीमिया" (Uræmia) है। ये उपसर्ग धीरे-धीरे या एकाएक पैदा हो जाते हैं :—जैसे, पेशाबकी कमी, शोथ, कै और मिचली, सरमें जीरोंका दर्द,

सरमें चक्कर, कभी-कभी प्रबल आक्षेप (spasm); किसी-किसीको प्रलापके साथ आच्छन्नभाव (stupor) और बेहोशी-जैसी नींद (coma) रहती है। रोगीके शरीर और बिछावनसे एक तरहकी पेशाबकी बदबू आती है। पेशाब या तो खूब थोड़ा होता है या एकदम बन्द हो जाता है। चेहरा मलिन या मोमकी तरह दिखाई देता है; नाड़ीकी चाल तेज़; शरीरकी गरमी पहले बढ़ जाती है; परन्तु शीघ्र ही स्वाभाविक गर्मी (९८'४°) से भी कम हो जाती है। "मूत्र-रोध और मूत्र-नाश" अनुच्छेद देखिये।

चिकित्सा

आयोडिन θ।—मूत्र-रोग विकारसे पैदा हुए वमनमें आयोडिन θ फी मात्रा आधा बून्द सेवन करना चाहिये। (Dr: Laidlaw)।

टेरिबिन्थिना २x।—मूत्र-रोधकी प्रधान दवा है (एक रोगीको चार दिनोंतक पेशाब नहीं हुआ था, पर Dr. Yeldham ने टेरिबिन्थिना १ की व्यवस्था की और पेशाब हुआ), अगर टेरिबिन्थिनासे फायदा न हो तो मर्क-कोर, आर्सेनिक, कैन्थेरिस या कैलि-बाईकी परीक्षा करनी चाहिये।

क्युप्रम-ऐसेटिकम् २।—बेहोशी जैसी नींद (coma) की एक उत्कृष्ट दवा है। फी पन्द्रह मिनटके अन्तरसे सेवन कराने बाद यदि तीन-चार घण्टोंतक रोगीको

कोई फायदा न हो तो **ओपियम ३x** पन्द्रह मिनटके अन्तरसे देना चाहिये। ओपियमसे लाभ न हो तो, **आर्टिका युरेन्स** θ (फी मात्रा पाँच बून्द) चार घण्टेके अन्तरसे सेवन कराना चाहिये।

ऐमोन-कार्ब (नीचा क्रम), हाइड्रोसियानिक-एसिड ३, क्रियोजोट ३, प्लम्बम ६ वगैरह दवाओंकी कभी-कभी जरूरत पड़ती है।

आनुसङ्गिक चिकित्सा ।—भाफ़से नहाना (vapour bath) या बफारा लेना फायदेमन्द है। रोगके आक्रमणके बाद कुछ दिनोंतक सिर्फ पतले पदार्थ (खासकर दूध) पीना चाहिये।

अधिक विवरण और चिकित्साके लिये, हमारा प्रकाशित **"हैजा-चिकित्सा"** ग्रन्थका "मूत्र-विकार" अध्याय देखिये।

मूत्राशय-प्रदाह

(Cystitis)

मूत्राशय प्रदेशमें महान दर्द, अकड़न या भार मालूम होना, सब अङ्गमें सर्दी मालूम होना या कँपकँपी, मूत्राशयमें पेशाब इकट्ठा होनेके साथ ही बहुत काँखनेपर बहुत कष्टसे पेशाब निकलना, पेशाबमें श्लेष्मा या रक्त मिला रहना—इस रोगके

प्रधान लक्षण हैं। रोग पुराना पड़ जानेपर दर्द कम हो जाता है। पेशाबका परिमाण और उसके साथ श्लेष्माका परिमाण और उसका गाढ़ापन बढ़ जाता है। इस रोगमें, दर्द ऊपरकी ओर कमरतक फैल जाता है और मूत्रग्रन्थि-प्रदाहमें दर्द नीचेकी ओर कमरसे मूत्राशयतक फैल जाता है।

सर्दी लगना, तरी, चोट लगना, मूत्रनलीका सिकुड़ना, सूज़ाक या पथरी अथवा मुखशायी-ग्रन्थिकी बीमारी, पेशाब उतारनेकी सलाई (catheter) आदि यन्त्रोंका मूत्राशयमें डालना वगैरह कारणोंसे मूत्राशयमें प्रदाह पैदा हो जाता है।

चिकित्सा

नयी और पुरानी दोनों अवस्थाओंमें ही कैन्थरिस ३x इसकी एक उत्कृष्ट दवा है। सूखी ठण्डी हवा लगकर प्रदाह होने-पर, ऐकोनाइट १x—३x। सर्दीके कारण होनेपर, डाल्का-मारा ३। स्नायविक उत्तेजनाकी अधिकतामें, बेल ३x—६। पथरी या मूत्रग्रन्थिमें रोग होनेके कारण बहुत श्लेष्मा निकलने-पर पेरेरा-ब्रेवा θ (फी मात्रा १५—२० बून्द) देना चाहिये।

रोगकी पुरानी अवस्थामें, चिमाफिला θ (फी मात्रा ५-६ बून्द)। कैन्थरिस ३ इस अवस्थाकी भी एक उत्कृष्ट दवा है। पेशाबका वेग धारण करनेमें असमर्थ होनेके कारण रातमें बिछावनमें ही पेशाब हो जानेपर, पल्सेटिला ३x—३, क्रियोजोट १२ अथवा कास्टिकम २००। पेशाबमें घोड़ेके मूत्र-

जैसी बदबू रहनेपर, बेञ्जोयिक-एसिड ३x या नाइट्रिक एसिड ६। बेलेडोना ३, कैनाबिस-सैटाइवा १x, कैलि-आयोड θ—३०, एपिस ३, सैबाल-सेरूलेटा θ प्रभृति दवाएँ भी कभी-कभी आवश्यक होती हैं।

आनुसङ्गिक चिकित्सा।—गरम पानीमें नहाना या गरम पानीमें फ्लानेल भिगोकर तलपेटपर सेंक देना अच्छा है। रोगीको चित्त होकर सोना चाहिये। कमरतक गर्म पानीमें डुबो रखनेसे फायदा होता है। थोड़ेसे सुसुम पानीमें बोरिक-एसिड (१०—१५ ग्रेन) मिलाकर धीरे-धीरे धो डालना भी फ़ायदा करता है। मछली, मांस, शराब आदि मना है। चीनी या मिसरीका शर्बत पीनेसे पेशाब साफ़ होता है। हलकी चीजें खानेको देनी चाहिये।

मूत्राधिक्य या मूत्रमेह

(Polyuria or Diuresis or Diabetes Insipidus)

अगर पेशाब परिमाणमें ज्यादा आने लगे तो उसे "मूत्राधिक्य" या "मूत्रमेह" कहते हैं। "मधुमेह" रोगमें मूत्राधिक्यके साथ पेशाबमें चीनी मौजूद रहती है। यहाँ मूत्रमेहका इलाज लिखा जाता है।

ज्यादा पतली चीजें खाना, बरसात, बुढ़ापा, कमजोरी, क्रिमि-दोष, गुल्म-वायु, पाकाशयकी गड़बड़ी वगैरह कारणोंसे पेशाबमें पानीका भाग बढ़ जाता है और बार-बार पेशाब होता है।

चिकित्सा

स्कुइला २x ।—दिन-रातमें बहुत ज्यादा परिमाणमें बिना शक्करका पानीकी तरह पेशाब होना। बार-बार पानीकी तरह पेशाब होना। ("मूत्राधिक्य" रोगकी यह प्रधान दवा है)।

कैलि-कार्ब ६ ।—रातमें बार-बार पेशाब करनेके लिये उठना। पेशाब जोरसे लगता है, परन्तु बहुत देरतक पेशाब करनेके लिये बैठे रहनेपर पेशाब होता है।

कार्लसबाड ६ ।—पानी पीनेके बाद ही पेशाब।

इग्नेशिया ३ ।—काफी पीनेके बाद ही पेशाब लग आना। हिस्टीरिया या गुल्मवायु-ग्रस्ता स्त्रियोंको पानीकी तरह बहुत पेशाब होना।

कास्टिकम ६ ।—बूढ़ोंको ज्यादा पेशाब होने और बार-बार पेशाब लगनेपर (खासकर रातके समय)।

एसिड-फास २x, ३ ।—बार-बार बहुत ज्यादा मात्रामें पानीकी तरह पेशाब; रातमें बार-बार पेशाब करना पड़ता है।

ऐसेटिक-एसिड ३, नक्स-वोम ३, साइना ३x, युपेट-पर्फ २x वगैरह दवाएँ और "मधुमेह" रोगकी दवाएँ कभी-कभी आवश्यक होती हैं।

आनुसङ्गिक चिकित्सा।—ज्यादा पतली या कफ पैदा करनेवाली चीजें या ज्यादा भात खाना मना है। साधारण स्वास्थ्यके नियम पालन करने चाहियें।

आप-ही-आप पेशाब निकल जाना

(Enuresis)

मूत्रस्थलीके पक्षाघातकी वजहसे पेशाब रोकनेकी ताकत एकदम या आंशिक रूपमें कम हो जाती है। पेशाब लगनेपर फिर वह किसी तरह रोका नहीं जा सकता। इसके बाद बून्द-बून्द पेशाब हुआ करता है; मूत्राशयमें पेशाब जमा रहता है; परन्तु होता है बून्द-ही-बून्द। इसीका नाम "आप-ही-आप पेशाब होना" है। चोट, प्रसवकी तकलीफ़, पथरी, प्रमेह या क्रिमिकी वजहसे यह बीमारी पैदा होती है। बच्चे सोते-सोते बिछावनपर अनजानमें ही पेशाब कर देते हैं।

चिकित्सा।—पेशाबका वेग एकदम न रोक सकनेपर फेरम-फास १२x। संकोचक पेशीकी कमजोरीसे पैदा हुआ,

इच्छा न रहनेपर भी पेशाब हो जाना, बेल ६ (डाक्टर सैण्डस मिल्सके मतसे इस रोगमें यही बराबर व्यवहार किया जाता है), नींदके पहले भागमें ही बिछावनपर पेशाब होनेपर, कास्टिकम ६। बूढ़ोंकी बीमारीमें, कोनायम ३। बदबूदार पेशाब होनेपर, सिपिया १२। बच्चे और बूढ़ोंकी बीमारीमें, कैन्थरिस ६। मूत्राशयकी मुखशायी-ग्रन्थिके बढ़ने अथवा मूत्राशयमें पथरी होनेकी वजहसे बालक और बूढ़ोंको आप-से-आप पेशाब निकल जाना, जेलसिमियम ६x। जिन औरतोंको गुल्म-वायु होता है, उन्हें बदहवासीके समय आप-ही-आप पेशाब निकल जानेपर, इग्नेशिया ६। क्रिमिकी वजहसे यह बीमारी होनेपर (खासकर बच्चोंको), साइना ३x या स्पाइजिलिया ६ या रस-ऐरोमेटिका θ की मात्रा पाँच बून्द)। शुक्रक्षय रोगकी वजहसे आप-ही-आप पेशाब हो जाता हो, तो ऐसिड-फास ३—३०। इरिजिरन ३, बेलेडोना ६, नक्स-वोमिका ३, मर्क-सोल ६ भी कभी-कभी काम देते हैं।

आनुसङ्गिक चिकित्सा।—रोगीका भोजन पुष्टिकर होना चाहिये; पतले पदार्थ खूब ज्यादा या खूब कम खाना हानिकर है। सोनेके कम-से-कम तीन घण्टे पहले पानी न पीना चाहिये। इस बातपर नज़र रखनी चाहिये, कि मूत्र-यन्त्रमें उत्तेजना न हो। खट्टी और नमकीन चीजें खाना मना है। रातमें बीच-बीचमें उठकर पेशाब करना अच्छा है। दिनमें जबतक पेशाब रोका जा सके, तबतक नहीं करना

चाहिये। गद्दीपर सोना या बहुत ज्यादा कपड़ा पहनना उचित नहीं है। इस रोगमें चित्त होकर सोना अच्छा नहीं है। ठण्डे पानीसे नहलाना फायदा करता है।

मूत्रकृच्छ्रता

(Strangury)

यह रोग बहुत ही तकलीफ़ देनेवाला है। बार-बार पेशाब लगता है; परन्तु बड़े कष्टसे बून्द-बून्द पेशाब होता है अथवा एकदम ही पेशाब नहीं होता और पेशाबके समय, मूत्राशय-प्रदेशमें बहुत जलनकी तकलीफ़ इसके लक्षण हैं। पहले पथरी; जरायुका अपने स्थानसे हटना, मूत्रग्रन्थि-प्रदाह, मूत्राशय-प्रदाह, गठिया वात, हिस्टीरिया, क्रिमि वगैरहके साथ "मूत्रकृच्छ्रता" पैदा होती है। नयी बीमारीमें पेशाब स्वाभाविक या अस्वाभाविक हो सकता है; पर बीमारी पुरानी होनेपर पेशाबके साथ पीव या श्लेष्मा निकला करता है। बच्चोंके क्रिमिके कारण भी कभी-कभी मूत्राशयमें उपदाह होता है।

चिकित्सा।—जलन और तकलीफ़के साथ एकाएक मूत्रकृच्छ्रता होनेपर, २-४ बूंद स्पिरिट कैम्फर चीनी या बताशेके साथ १०-१५ मिनटके अन्तरसे देना चाहिये। ज्यादा "कैन्थरिस"

दवा सेवन करनेके कारण पेशाबमें कष्ट होनेपर स्पिरिट-कैम्फर। तकलीफसे पेशाब होनेपर बेलेडोना २x (बच्चे या वायु-ग्रस्ता स्त्रियोंके रोगमें) बार-बार पेशाब करनेकी इच्छा, कतरनेकी तरह असह्य दर्द, पेशाब करते वक्त जलन और तलपेटमें दर्द—कैन्थरिस ३—६। स्त्रियोंको पेशाबकी तकलीफ़में—कोपेवा ३। कटि-वातकी तरह दर्दके साथ मूत्र-कृच्छ्रतामें, टेरिबिन्थिना ३। आक्षेपयुक्त मूत्रकृच्छ्रतामें नक्स-वोम २x—६। दिनमें रोग बढ़नेपर, फेरम ६। गुर्देमें, जननेन्द्रियमें अथवा हाथ-पैरोंमें सूजन होनेपर और उसके साथ ही पेशाब होते समय बहुत जलन होनेपर, एपिस-मेल ६। ओस या ठण्डी सूखी हवा लगकर मूत्रकृच्छ्रता होनेपर, ऐकोनाइट ३x। तर जगहमें रहनेके कारण या बरसातमें मूत्रकृच्छ्रता होनेपर, डाल्कामारा ३x—३०।

प्रादाहिक मूत्रकृच्छ्रतामें।—कैन्थरिस ३ (मर्दोंके लिये), कोपिवा और इयुपेट-पर्फ २x (स्त्रियोंके लिये)।

स्नायविक मूत्रकृच्छ्रतामें।—बेल १x, एपिस ३, कैप्सिकम ६, पेट्रोसेलिनम १। गर्म पानीसे सेंक देना और सम परिमाणमें दूधके साथ पानी मिलाकर पिलाना फायदा करता है।

———

मूत्र-पथरी

(Urinary Calculus)

शरीरकी स्वस्थ दशामें हमारे शरीरसे वैसे पदार्थ बाहर निकला करते हैं, जिनकी शरीरके पोषणके लिये जरूरत नहीं रहती; परन्तु परिपाक या परिपोषण कार्यमें जब गड़बड़ी पैदा हो जाती है, तब उसका उलटा हुआ करता है। उस समय एक साफ़ शीशीमें थोड़ी देरतक पेशाब रखनेपर यदि ईंटके चूर या बालूके कणकी तरह, उसके नीचे कुछ जम जाये तो समझना चाहिये, कि "मूत्र-पथरी" रोग हो गया है। इस समय बहुत ही छोटे बालूके कण (sand) के समान या सरसोंके दानेकी तरह, पत्थरके कण (gravel) की तरह या सेमके बीज-जैसे पत्थरके टुकड़े (stone) की तरह छोटी, बड़ी, मझोली; बहुत तरहकी पथरी मूत्रपिण्ड (गुर्दा—kidneys) या मूत्राशय (bladder) में दिखाई देती है। औरतोंकी अपेक्षा मर्दोंमें और बङ्गालकी बनिस्बत पश्चिम देशोंके मनुष्योंमें यह बीमारी ज्यादा दिखाई देती है।

(१) **मूत्र-पिण्डकी पथरी** (Stone in kidneys or Renal Calculus) और **मूत्र-शूल**।—मूत्र-पिण्ड-कोष (pelvis of the kidneys) में पथरी पैदा होकर वहाँ बहुत दिनोंतक रुकी रह सकती है। ऐसी दशामें

रोगीको अकसर कोई तकलीफ़ नहीं मालूम होती, शायद कभी कमरमें धीमा दर्द (dull pain) या पेशाबके साथ कभी-कभी पीव खून दिखाई देता है; परन्तु यही पथरी मूत्र-पिण्डसे जब मूत्रनाली (ureter) में आ जाती है, तब कमरसे अण्डकोषतक एक प्रकारका असह्य दर्द पैदा होकर रोगीको घबड़ा देता है। इसी दर्दको "मूत्र-शूल (दर्द-गुर्दा—renal colic)" कहते हैं। कभी-कभी यह दर्द नीचेकी ओर (पैरकी एँड़ीतक) और ऊपर (पीठ या छाती) तक फैल जाता है और इसके साथ कँपकँपी, कै, पसीना, हिमाङ्ग (collapse), अण्डकोष फूला, सिकुड़ा या ऊपरकी ओर उठा हुआ हो जाता है; पेशाबमें तकलीफ़, बून्द-बून्द गिरता है या एकदम बन्द हो जाता है अथवा मूत्र-विकार, आक्षेप वगैरह उपसर्ग मौजूद रह सकते हैं। (इस ग्रन्थका मूत्र-शूल अध्याय देखिये)। आप-से-आप या अस्त्रके सहारे पथरी निकल जानेपर, रोगीको आराम मालूम होने लगता है। इस दर्दका विशेष लक्षण यह है, कि **एकाएक ही दर्द पैदा होता है और एकाएक बन्द हो जाता है।** यह रोग होनेपर एपेण्डिक्स-प्रदाह और पित्त-शूल वेदनाके साथ इस दर्दका भ्रम पैदा हो जाता है; परन्तु स्मरण रखना चाहिये, कि एपेण्डिक्स-प्रदाहमें ज्वर दिखाई देता है, पित्त-शूलमें कामला मौजूद रहता है; पर मूत्र-शूलमें बोखार या पाण्डु-रोग नहीं रहता है।

(२) **मूत्राशयमें पथरी** (Cystic Calculus or Calculii vesical or Stone in the bladder)।—मूत्राशय (bladder) में पथरी आप-से-आप पैदा होती है, कभी-कभी मूत्रपिण्डमें पथरी पैदा होकर मूत्राशयमें चली जाती है। मूत्राशयमें भार मालूम होना; मूत्राशय-ग्रीवामें, मूत्र-मार्ग (urethra), गुह्यद्वार, लिङ्गेन्द्रिय, योनि-देश वगैरहमें दर्द; पेशाब बन्द या कष्टसे पेशाब और पेशाबमें खून आना, चित्त होकर सोने और चूतड़ ऊँची कर रखनेसे, पथरी इधर-उधर हटती है—ऐसा मालूम होना और उसके साथ पेशाब होना वगैरह इस रोगके लक्षण हैं।

(क) **मूत्र-शूल-वेदनाकी** (या पथरी, निकलते समय) **चिकित्सा**।—कमर और तलपेटपर गर्म जलका सेंक (hot fomentation और गर्म पानी पीना और **बार्बेरिस** θ (फी मात्रा पाँच बून्द) पन्द्रह मिनटका अन्तर देकर सेवन करनेसे अकसर सब तकलीफ दूर हो जाती है। अगर आठ-दस बार दवा खा लेनेपर भी कोई फायदा न हो, तो उसी दवाकी छठीं शक्ति काममें लानी चाहिये। **कैल्केरिया-कार्बोनिका** ३० फी पन्द्रह मिनटका अन्तर देकर सेवन करानेसे आश्चर्यजनक लाभ होता है (Vide Dr. Sands Mill's Essay in the Paris Congress Transaction 1900); इसलिये ऊँचे क्रमका **कैल्केरिया-कार्ब**, "पित्त-शूल" और "मूत्र-शूल" दोनों ही शूल-वेदनाकी उत्तम

दवा है। बेहद तकलीफ़से रोगी पेंच (स्क्रू) की तरह घूमता है या दोनों हाथ मलता हुआ कातर-स्वरसे चिल्लाता और गों-गों करता है, पेशाबका रङ्ग लाल रहता है और उसे कुछ देरतक रख छोड़नेसे, ईंटके चूर-जैसा उसके नीचे जम जाता है—**ओसिमम कैनम ३x—२००।** (न मिले तो तुलसीके पत्तेका रस) फी पन्द्रह मिनटके अन्तरसे देना चाहिये। **स्टिगमाटा-मेड्डिस** θ फी मात्रा २० बून्द, छोटी पथरी निकलनेके समय सेवन करानेसे डाक्टर हैन्सैन वगैरहको बहुत फायदा दिखाई दिया है। मैग्नेशिया-फास ३x विचूर्ण खूब गर्म पानीके साथ सेवन और वाह्य प्रयोग करनेसे ज्यादा फायदा होता है। पेशाबके बाद ही दर्द बढ़ जानेपर **सार्सा ३०** फी पन्द्रह मिनटका अन्तर देकर सेवन कराना चाहिये। ऐंठनकी भाँति दर्दसे शरीर ऐंठनेपर, बहुत तकलीफ़से चणभर भी स्थिर न रह सकने और छटपटानेके लक्षणमें—**डायस्कोरिया** θ फी पन्द्रह मिनटके अन्तरसे सेवन कराना चाहिये। यदि इन दवाओंसे फायदा न हो, तो फी खोराक २० बून्द **पेरेरा-ब्रेवा** θ दो आउन्स गर्म चुआये हुए पानीके साथ फी आध घण्टेके अन्तरसे देना चाहिये। नीचे लिखे उपसर्गोंमें पेरेरा-ब्रेवा ज्यादा फायदेमन्द है :—पेशाबका वेग रहनेपर भी बड़े कष्टसे पेशाब निकलना, रोगीको ऐसा मालूम हो, कि मानो मूत्रस्थली भरी हुई है; मूत्र-स्थलीमें और कभी पीठमें तेज़ दर्द; तकलीफ़से रोगीका

चिल्लाकर रोने लगना ; मूत्रकृच्छ्रता, पेशाबमें बालूके कण या ईंटके चूरकी तरह बालू दिखाई देना। **थ्लैस्पिबर्सा-पैस्टोरिस** θ, दस-पन्द्रह बूंद फी मात्रा कई बार सेवन करनेसे ज्यादा लाभ होता है। इससे भी यदि दर्द कम न हो और अच्छे इलाजके अभावसे रोगीकी अवस्था धीरे-धीरे खराब होती जाती हो, तो क्लोरोफार्म सुँघाना या मार्फिया (एक मात्रा, घण्टे-घण्टेपर चौथाई ग्रेन) सेवन कराना चाहिये।

(ख) **मूत्रपिण्डकी पथरीकी चिकित्सा।**—यह सन्देह होनेपर कि मूत्र-पथरी हुई है (या मूत्र-शूलका दर्द कम हो जानेके बाद ही) नीचे लिखी दवाओंके सेवनसे खूब फायदा होता है।

लाइको (६—२००), पेशाबमें अगर लाल बालूके कणकी तरह तलछट पड़े। इससे फायदा न हो, तो **आर्टिकायुरेन्स** θ फी मात्रा ५ बूंद या **कक्कस-कैक्टाई** θ फी मात्रा ५ बूंद देना चाहिये। **एसिड-फास २x**, यदि पेशाबमें सफेद रङ्गका तलछट जमता हो (फास्फेट-मिला)। **ग्रैफाइटिस** (६—३०), पेशाब कुछ देरतक रख छोड़नेके बाद यदि सफेद और खट्टी गन्ध-भरी कोई चीज़ नीचे बैठ जाये। **क्विनिनम-सल्फ ३x**, यदि ईंटके चूरकी तरह लाल या भूरे रङ्गकी तरह पीले दानेकी भाँति नीचे

तलछट जमे। **बार्बेरिस-वलगेरिस** θ मूत्रनालीमें दर्द और पेशाबमें पहले सफेद और पीछे लाल मांड़की तरह तलछट जमनेपर। **सिपिया** (६—३०), पेशाबका तलछट लसदार सफेद रङ्गका या कुछ लाल जैसा जमता हो। **सार्सापेरिला** (६—३०), पेशाब करते ही वह गदले पानीकी तरह मैला हो जाये। **नाइट्रो-म्यूर-ऐसिड** २x या **आक्जेलिक-एसिड** (३-१२), पेशाबके तलछटमें कैलसियम आक्जैलेट इकट्ठा होनेपर (Oxalate of lime deposit)।

ऊपर कही हुई दवाएँ रोज़ कम-से-कम चार बार सेवन करानी चाहिये। बेलेडोना (३x—३०), ओपियम (३—३०), नक्स-वोम (१x—३०), साइलिसिया (६x—३०) को भी कभी-कभी आवश्यकता होती है।

(ग) **मूत्राशयकी पथरीकी चिकित्सा।**—**लिथियम-कार्बोनिकम** (३x चूर्ण ३०) रोज़ चार बार सेवन करनेसे छोटी पथरी गल जाती है। "(क)" और "(ख)" पैरके अन्तर्गत दवाएँ लक्षणके अनुसार व्यवहार करनेसे बहुत बार फायदा होता है; परन्तु लिथोट्राइट (lithotrite) वगैरह यन्त्रकी सहायतासे अच्छे डाक्टरोंके द्वारा बड़ी पथरी निकलवा डालना ही अच्छा है। स्पटजेन-

आलोक (X-Ray) की सहायतासे शरीरमें पथरी दिखाई दे सकती है।*

(घ) मूत्ररेणुकी (Gravel) कई प्रधान दवाएँ :—एपिजिया-रिपेन्स (Epigea Repens), (दस बून्दकर दिनमें ६ बार सेवन कराना चाहिये), ह्यवा-उर्सी (Uva-Ursi), लाइको, फास, रूटा, सार्सा, चायना, जिङ्क।

(ङ) मूत्र-पथरीकी (Stones) कई उत्कृष्ट दवाएँ :—ऐपोसाइनम, ऐरुड्रा, ह्यवा-उर्सी, सिपिया, आर्निका, किनि-सल्फ, आइपोमिया, ला ।

---

* गत जगद्व्यापी युद्धके समय एक बङ्गाली युवक मेसोपोटेमियामें रहते थे। एक बार उनके कमरमें तेज़ दर्द हुआ। वहांके डाक्टर साहब (Civil surgeon) ने कहा, कि प्लुरिसी हो गई है। इसके बाद पेशाबमें (Oxalate crystal) पाया गया। वे काम छोड़कर कलकत्ते चले आये और एक प्रसिद्ध ऐलोपैथिक डाक्टरके चिकित्साधीन रहे; लेकिन कई महीने चिकित्साके बाद डाक्टर साहबने कहा "अस्त्र चिकित्साके सिवाय और कोई उपाय नहीं है।" अन्तमें वे होमियोपैथिक चिकित्साके लिये बाध्य हुए। हमलोगोंने उनके रोगका विवरण सुनकर "मूत्र-पथरी हो गई है"—यह निर्देश कर निम्नलिखित दवाओंकी (अवस्थानुसार) व्यवस्था की थी।

एसिड नाइट्रो म्यूरियेटिकम २x (दो बून्दकर तीन बार रोज़) और शूलके दर्दके समय बार्बेरिस वलगेरिस θ—६ (१०-१५ बूंद दर्दकी अवस्थाके अनुसार १०—१५ मिनटके अन्तरसे) सेवन और बहुत ज्यादा परिमाणमें साफ़ चुआया हुआ पानी पीनेके लिये। इस अवस्थाके अनुसार तीन महीनेतक सेवनके बाद—कल्के-कार्ब २०० (रोज़ दो बार) और एसिड

(च) **मूत्राशयकी पथरीकी प्रधान दवाएँ :—** सिपिया, सार्सा, कैल्के।

(छ) **नश्तर लगवानेकी बाद।**—(बोखार और दर्द बन्द होनेके लिये) आर्निका, कैलेण्डुला, लोरी, वेल, नक्स-वोम, कैमो, चायना, क्यूप्रम और विरे।

नीचे लिखी दवाएँ अवस्थाके अनुसार बराबर इस रोगमें व्यवहार की जाती हैं :—ऐकोन, एसिड, आक्जैलिक, एसिड फास, बार्बेरिस, नक्स-वोम, लाइको, कैनाबिस, कैन्थ, नेंड्र-कार्ब, पोडो, मर्क और ओसिमम।

(ज) **रोकनेवाली चिकित्सा।**—मूत्रपिण्डमें पथरी न पैदा होने देनेके लिये या पैदा हुई पथरी गला देनेके लिये नीचे लिखे उपाय काममें लाने चाहियें—कभी-कभी लाइकोपोडियम २०० सेवन करनेसे बहुत जगह फायदा होता है। पेशाबके साथ पत्थरके कण (gravel) निकलनेपर और पीठ तथा कमरमें दर्द रहनेपर, बार्बेरिस-वलगेरिस १x

---

नाइट्रो म्यूरियेटिकम २x (१०-१५ बूंद खानेके पहले) सेवनके लिये दी गई। ऊपर लिखी दवाओंका २-३ महीनोंतक सेवन करनेके बाद पेरेरा ब्रेबा θ (पेशाबका वेग रहते हुए भी बहुत तकलीफ़से बून्द-बून्द पेशाब होनेके लक्षणमें) प्रति मात्रामें पाँच बून्दकर प्रत्येक बार पेशाबके बाद ही—सेवनके कुछ दिन बाद बेरकी गुठलीकी तरह पथरी निकली। पथरी निकलनेके बाद ही कुछ दिनोंतक कैल्के-कार्बका सेवन कराया गया। वे आज पाँच वर्षसे एकदम स्वस्थ्य हैं और ऊपर लिखी उपायोंके अवलम्बनसे उन्होंने दत्तपुर निवासी एक रोगीको आरोग्य किया है।

रोज़ चार बार सेवन करना चाहिये; परन्तु जिन्हें गठिया-वात (gout) हो या जिनके तन्तुओंमें यूरिक-एसिड ज्यादा जमा होता हो, उनके लिये आर्टिका-युरेन्स θ (आठ घण्टेके अन्तरसे फी मात्रा ५ बून्द) देना चाहिये। चुआया हुआ पानी पीना बहुत फायदेमन्द है।

"चूना" और "पत्थर" एक ही चीज़ है। इसलिये पानके साथ चूना खाना मना है। युक्त-प्रदेशमें बहुतसे स्थानोंमें चावल वगैरहके साथ बहुतसे पत्थरके कण रहते हैं। ये रोगीके लिये हानिकर है; इसलिये उसे भी त्याग देना चाहिये। कुएँका पानी, जिस कुएँमें चूनेका (lime) भाग अधिक रहता है, उसे छोड़ देना चाहिये। मछली, मांस खाना या नशीली चीजें सेवन करना नुकसान करता है। सोडा (bicarbonate of soda) रोज़ व्यवहार करना भी मना है। कोई-कोई ताज़ा गायका दूध सेवन करनेकी सलाह देते हैं। यदि परिस्नुत पानी (distilled water) न मिल सकता हो, तो साफ़ ठण्डा पानी ज्यादा मिकदारमें उसके बदले पीना चाहिये। **खाली पेट रहना अच्छा नहीं है।** जिसमें पेटमें वायु इकट्ठी न हो, इस बातपर ध्यान रखना चाहिये। **"पित्त-पथरी"** रोगका पथ्य आदि देखिये।

---

१३ । जननेन्द्रियके रोग❋

वीर्यपात और रेतस्खलन

(Emissions)

खूब कमजोरी या ज्यादा वीर्यवान रहनेपर जो लोग संयमसे रहनेवाले हैं, उन्हें भी कभी-कभी रेतस्खलन हो जाता है।

चिकित्सा।—कमजोरीके कारण रेतस्खलन होनेपर एसिड-फास १—६, चायना ३ या कैलि-फास ६x चूर्ण सेवन कराना चाहिये। वीर्यकी अधिकताके कारण वीर्यपात होनेपर कैलि-ब्रोम ६x, पिक्रिक-एसिड ३x चूर्ण या कोनायम ६ देना चाहिये। थियेटर जाना, बुरी सङ्गत, नाटक, नावेल पढ़ना और उत्तेजक खान-पान मना है।

शुक्र-क्षरण, स्वप्नदोष या धातु-दौर्बल्य

(Spermatorrhoea)

इच्छा न होनेपर भी वीर्यपात हो जानेको "धातु-दौर्बल्य" कहते हैं। सपनेमें (या कामकी उत्तेजना हुए बिना ही)

❋ जननेन्द्रियके रोगोंका पूरा हाल जाननेके लिये हमारी प्रकाशित "जननेन्द्रियके रोग" पुस्तक देखिये।

धातु निकल जानेपर समझना चाहिये, कि धातु-दौर्बल्य हो गया है। साधारणतः हस्तमैथुन, ज्यादा स्त्री-सहवास या सूज़ाक वगैरहसे यह रोग पैदा होता है। क्रिमि, अर्श, बराबर घुड़सवारी करना, इन कारणोंसे भी यह बीमारी पैदा हो सकती है। स्मरण-शक्तिकी कमी, शरीर और मनकी सुस्ती ; सलज्ज भाव, अग्निमान्द्य, कलेजेमें धड़कन, सरमें दर्द, सरमें चक्कर, खूनकी कमी वगैरह इस रोगके प्रधान लक्षण हैं। इसीसे ध्वजभङ्ग आदि बीमारियाँ भी पैदा होती हैं।

चिकित्सा

ऐग्नस-कैक्टस ६।—शरीर और मनकी सुस्ती, अनमना भाव, कमज़ोरी, जननेन्द्रियकी कमज़ोरी और कामकी प्रवृत्ति प्रबल।

बेलिस-पेरेनिस θ।—(पाँच बूँद मात्राकर रोज़ दो बार सेव्य) खासकर हस्तमैथुनसे पैदा हुए उपसर्गकी यह बहुत बढ़िया दवा है।

बैराइटा-कार्ब ६।—रातके समय होनेवाले स्वप्न-दोषकी सबसे बढ़िया दवा है।

थूजा।—(फी मात्रा ५ बूँद) ज्यादा शुक्र-क्षय होनेकी सबसे बढ़िया दवा है।

एसिड-फास्फोरिक ३x, ३०।—ज्यादा स्त्री-सहवास या हस्तमैथुनके कारण याददाश्तका कम हो जाना।

चायना ६, ३० ।—अकसर जननेन्द्रियमें अस्वाभाविक उत्तेजना, कानमें भों-भों आवाज़, चेहरा लाल, सरमें चक्कर ।

फास्फोरस ६, ३० ।—सङ्गमके समय बहुत जल्दी वीर्यपात और कमजोरी ; रति-शक्तिकी कमी ; कलेजा धड़कना ; ज्यादा शुक्र-क्षय होना और हस्तमैथुनकी वजहसे लिङ्गमें कड़ापन एकदम ही न आना ।

कैन्थरिस ।—सूजाककी वजहसे शुक्र-स्राव ; पेशाबके साथ बून्द-बून्द धातु जाना और जलन होना ; सङ्गमकी प्रबल इच्छा होना ।

कैल्केरिया-कार्ब ६ ।—मैथुन करनेकी बहुत इच्छा, पर लिङ्गमें कड़ापन हुए बिना ही जल्दी-जल्दी वीर्य निकल जाना ; समूचे शरीरमें दर्द ; कमजोरी ।

लाइकोपोडियम २०० ।—बहुत ही कमजोर करनेवाला स्वप्नदोष ; बहुत ज्यादा वीर्यस्राव ; जननेन्द्रिय छोटी, शिथिल और ठण्डी । ध्वजभङ्ग, कब्ज, अजीर्ण पेट फूलना, कलेजा धड़कना ।

हस्तमैथुनसे पैदा हुए शुक्र-क्षयमें—**कैन्थरिस** ६ (मर्दोंके लिये) और **प्लाटिना** ६ (स्त्रियोंके लिये) । **क्रिमिसे पैदा हुए शुक्र-क्षयमें, साइना** ३x, २०० ।

प्लाटिना ६, नक्स-वो ६—३०, आरम-मेट ३x विचूर्ण २००, ग्रैफाइटिस ३०, सलफर ३०—२००, स्टैफिसाइग्रिया ६, जेल्स ३०, बैराइटा-कार्ब ६, इग्नेशिया ६, आर्जेण्टम ६, व्यूफो २००, सेलिनियम ३०, कैलेडियम ३०, पिक्रिक-एसिड ३०, कैल्के-फास १२x चूर्ण, लैकेसिस २००, लाइको २००, कोनायम ३०, नेट्रम ३० को कभी-कभी जरूरत पड़ती है। जननेन्द्रियकी दूसरी बीमारियोंकी दवाएँ देखिये।

नियम ।— सिर्फ दवा खानेसे यह बीमारी दूर नहीं होती। अच्छा साथ, उत्तम दवाका सेवन, सवेरे और तीसरे पहर घूमना, उत्तेजना न देनेवाली चीजें खाना-पीना, अच्छी बातें करना, हमेशा धर्म-ग्रन्थ पढ़ना, पेशाब करने बाद जननेन्द्रियको धो डालना चाहिये और रोज़ अवगाहन स्नान करना चाहिये। उत्तेजक चीजोंका खान-पान, खराब सङ्गीत, अकेले रहना, थियेटर जाना, नाटक, नावेल पढ़ना, हस्तमैथुन वगैरह हमेशा त्यागी रहना चाहिये। समयपर विवाह कर लेनेसे भी बहुतसे मौक़ोंपर फायदा होता है।

———

एकशिरा या कोष-वृद्धि

(Hydrocele)

अण्डकोषमें सूजन होना या पानी (तीन पावसे डेढ़ सेरतक) जमा होनेको "एकशिरा" या आबमज़ूल कहते हैं। चोट लगना, अण्डकोषका झूल पड़ना, अण्डकोषकी नसोंका सूजना, स्वास्थ्य खराब होना या शोथ आदिकी वजहसे "कोष-वृद्धि" होती है। कभी दर्द होना, कभी बिलकुल ही दर्द न होना ; खासकर एकादशीसे पूर्णिमातक यह रोग बढ़ता है। एकशिरा खूब बढ़ जानेपर गोल तरबूजकी तरह दिखाई देता है एकशिराके साथ कभी-कभी "कोरन्द"* रोग भी मौजूद रहता है।

चिकित्सा

स्पञ्जिया ३x, ६।—अण्डकोष फूला, रङ्ग लाल और टपककी तरह दर्द।

रोडोडेण्ड्रन ३x, ६।—नयी बीमारीमें फायदा करता है (खासकर दाहिना अण्डकोष आक्रान्त हो और उसमें दर्द हो या अन्धड़-पानीके पहले उसमें दर्द

* अण्डकोषका बढ़ना और उसके नीचेके हिस्सेके तन्तुका मोटापन "कोरन्द" कहलाता है।

बढ़ता हो)। इससे फायदा न हो, तो **रस-टक्स ६, ३०** (खासकर सर्दी लगकर रोग बढ़नेपर)।

पल्सेटिला ३, ३० ।—बायाँ अण्डकोष आक्रान्त होनेपर (खासकर जब दर्द रहे और धीरे-धीरे कोष बढ़ता जाता हो)।

ग्रैफाइटिस ६, ३० ।—मुष्क-त्वचा और जननेन्द्रियका शोथ ; बायीं ओर जल-सञ्चय ; मुष्क-त्वचापर फुन्सियाँ, कितनी ही बार इसके साथ ही स्वप्न-दोष भी होता है।

साइलिसिया ६ (यदि पूर्णिमा और अमावस्याको हमेशा रोग बढ़ता हो), हैमामेलिस १x (अण्डकोषके साथ शुक्र-रज्जुकी शिराएँ बढ़नेपर), आर्निका ३ (चोटसे पैदा हुई बीमारीमें), कैल्के-कार्ब ६ (बच्चोंका एकशिरा), ब्रायोनिया ३ (खासकर जन्मके एकशिरेमें)। एपिस ६, आयोड ६, रस-टक्स ६ और सलफर ३० की बीच-बीचमें जरूरत होती है। सुई या बेलके कांटे द्वारा अण्डकोषको दो-तीन जगह छेदकर पानी बाहर निकाल देनेसे और लँगोटा पहननेसे फायदा होता है। जरूरत पड़नेपर नश्तर लगवाना चाहिये।

———

मूत्राशय-मुखशायी-ग्रन्थिका बढ़ना

(Enlargement of the Prostate Gland)

बुढ़ापेमें मुखशायी-ग्रन्थि बढ़कर पुराना आकार धारण करती है, उस समय बहुत कष्ट होता है। बहुतोंका कहना है, कि इसकी दवा ही नहीं है; परन्तु नयी बीमारीमें फेरम-पिक्रिकम २x—३x व्यवहार करनेसे, बढ़ना रुक जाता है। पुरानी बीमारीमें, सोलिडेगो ३x या आर्ज-नाई ३x फायदा करता है। अस्त्र-चिकित्सककी भी कभी-कभी सहायता लेनेकी जरूरत पड़ती है। अगले अध्यायमें बताया हुआ— "मुखशायी-ग्रन्थि-प्रदाह" रोगमें सैबाल-सेरूलेटा दवा देखना चाहिये।

मुखशायी-ग्रन्थि-प्रदाह

(Prostatitis)

पुरुषके मूत्राशयके मुँहके चारों ओर (या मूत्राशय-ग्रीवामें) जो एक कड़ी गांठ है, उसीका नाम "मुखशायी-ग्रन्थि या प्रास्टेट (prostate)" है। प्रमेह रोगकी वजहसे इस ग्रन्थिमें प्रदाह पैदा हो जाता है, तो उसे "मूत्राशयका

मुखशायी-ग्रन्थि-प्रदाह" * कहते हैं। मूलाधारमें (perinæum), मूत्र-मार्गमें और इन्द्रियकी जड़में बहुत दर्द मालूम होना या पाखाना-पेशाब बन्द हो जाना, कभी-कभी पीव पैदा हो जाना, इस रोगका प्रधान लक्षण है।

चिकित्सा

प्रदाहकी नयी हालतमें, पल्सेटिला ३ और मर्क्यूरियस-सोल्यूबिलिस ६ फायदेमन्द हैं। पुराने प्रदाहमें, कैलि-आयोड A. एक ग्रेन मात्रामें कुछ समयतक सेवन करना चाहिये। रोग बहुत पुराना होनेपर, पल्स ६, नाइट्रिक-एसिड ३०, थूजा ६—३०. या **सेबाल-सेरूलेटा** θ (सलाई डाले बिना जिसे पेशाब हो नहीं होता, उनके लिये) की मात्रा ५ बून्द देना चाहिये। चिमाफिला अम्बेलाटा ३x—२०० इसकी बहुत बढ़िया दवा है।

पीव पैदा हो जानेपर—(तरुण अवस्थामें) मर्क-सोल ६ या सलफर θ और (पुरानी अवस्थामें)—सलफर ३० या नाइट्रिक-एसिड ३०।

आर्निका ३x (चोटसे पैदा हुए प्रदाहमें), टैरेण्टुला ६

---

* मलान्त्रमें अंगुली डालनेपर यदि मुखशायी-ग्रन्थि कड़ी, गर्म और दर्द-भरी मालूम हो, तो समझना चाहिये, कि "प्रदाह" हुआ है।

(हस्तमैथुन-जनित प्रदाहमें), एसिड-फास ३x (सङ्गमके बादके प्रदाहमें)।

गर्म सेंक देना और रोगीको सुलाये रखना उचित है।

मुष्कत्वक-प्रदाह

(Scrotitis)

जिस चमड़ेकी थैलीसे पुरुषके दोनों अण्ड ढँके हैं, उसीका नाम "मुष्कत्वक (scrotum)" है। प्रदाह होनेपर यह मुष्कत्वक फूला, काला और बाहरसे जखम-भरा दिखाई देता है। कभी-कभी रोगीको जाड़ा लगकर जोरका बोखार होता है; जीभ सूखी और काली आभा लिये, प्रलाप, सड़न (Mortification) वगैरह उपसर्ग दिखाई देते हैं।

चिकित्सा

मुष्कत्वक फूला, अकड़ा और डङ्क मारनेकी तरह दर्दमें या गरमी सहन न होनेपर एपिस-मेल ३x—६। सड़नेकी तैयारी या सड़नेकी अवस्थामें, आर्स-एल्ब ३x (एक महीनेके लगभग) सेवन करना चाहिये। कितनी ही बार साइलिसियाका प्रयोग कर भी फायदा होते देखा गया है।

अण्डकोषका प्रदाह और वृद्धि

(Orchitis)

प्रमेह, गर्मी रोग (उपदंश) आदिके कारण अण्डकोष और उसे ढँकनेवाली झिल्लीमें प्रदाह हो जाता है। प्रदाहके समय जल (या लसीकी तरह पदार्थ) निकलता है। धीरे-धीरे अण्डकोष सूज जाता है और खूब बड़ा और कड़ा हो जाता है। कभी-कभी ऐसा भी होता है, कि किसी तरहकी तकलीफ़ नहीं मालूम होती और अण्डकोष पक जाता है (अर्थात उसमें पीव और रक्त पैदा हो जाता है)।

चिकित्सा

नये प्रदाहमें—पल्स ३x, ऐकोन ६ (बोखार रहनेपर); बेल ६ (सूजन या लाल होना, गर्म मालूम होना); हैमामेलिस २x (हलका बोखार, बहुत अकड़न और विमर्ष-भाव) सेवन करना और हैमामेलिस θ (पन्द्रह गुने पानीके साथ) का धावन (lotion) बनाकर लगाना चाहिये।

पुराने प्रदाहमें—स्पञ्जिया २x (सूजन और सुई बेधनेकी तरह दर्द); क्लिमेटिस ३—६ (प्रमेहसे पैदा हुआ प्रदाह); मर्क-बिन २x (उपदंशसे पैदा हुआ प्रदाह); कोनायम ३ (पुरुषत्व-हीनता); आरम-मेट ४x विचूर्ण—२०० (स्नायु-शूलकी तरह दर्द। आर्निका ६, सिपिया ३०, सलफर ३०,

सिलिका ६, हिपर ३०, मर्क्यूरियस ३ की भी कभी-कभी जरूरत पड़ती है।

इसका बन्दोवस्त रखना चाहिये, कि अण्डकोष न झूल पड़े। इसलिये, लँगोटेका व्यवहार करना चाहिये। अण्ड-कोषको ऊपर उठाये रखनेसे प्रदाह कम हो जा सकता है।

ध्वजभङ्ग
(Impotence)

पुरुषोंकी रति-शक्ति आंशिक रूपसे घटना या एकदम न रहनेको "ध्वजभङ्ग" कहते हैं। इस रोगमें सन्तान पैदा करनेकी ताक़त भी नहीं रहती। हस्तमैथुन, बहुत ज्यादा स्त्री-सङ्गम वगैरह कारणोंसे यह बीमारी पैदा होती है।

चिकित्सा

सैब्राल सेरुलेटा θ।—(फी मात्रा पाँचसे दस बून्द-तक) कमजोरीके कारण सङ्गम करनेकी ताक़त न रहनेपर। हस्तमैथुन, बहुत ज्यादा सङ्गम प्रभृति कारणोंसे ध्वजभङ्ग इसका निर्देशक लक्षण है।

टॅरेना-सेटाइवा θ।—बहुत ज्यादा मानसिक परिश्रम, अस्वाभाविक मैथुन, अनियमित इन्द्रिय-परिचालन

प्रभृति कारणोंसे ध्वजभङ्ग हो जानेकी एक बढ़िया दवा है। ५ बून्दकी मात्रामें दिनमें दो बार सेवन करना चाहिये।

नये रोगमें ऐग्नस-कैक्टस २x—३। रोग पुराना होनेपर, लाइको ३०—२००, ऐसिड-फास २x (बहुत ज्यादा स्त्री-सङ्गम होनेके कारण); ऐनाकार्डियम ६ (हस्तमैथुन या वेश्या-सहवासकी वजहसे स्वास्थ्य-भङ्ग होनेके कारण "ध्वजभङ्ग" रोग पैदा हुआ है, ऐसी भ्रान्त धारणा हो जानेपर)।

ऐग्नस-कैक्टस २x, ३।—रोग हलका होनेपर (खासकर रोगकी पहली अवस्थामें)।

फास्फोरिक-एसिड १, ३।—बहुत ज्यादा स्त्री-सङ्गम करनेके कारण बीमारी पैदा होनेपर।

लाइकोपोडियम ३०, २००।—रोग पुराना होनेपर।

ऐनाकार्डियम ६, २००।—जो सब युवक हस्त-मैथुन या वेश्या-सहवासके कारण स्वास्थ्य-भङ्ग हुआ समझकर यह मान लेते हैं, कि उन्हें ध्वजभङ्ग हुआ है, इस शङ्कासे वे विवाह नहीं करना चाहते, उनके लिये यह बहुत बढ़िया दवा है।

स्टैफिसैग्रिया ३, ३०।—अवैध या अनियमित इन्द्रिय परिचालन, हमेशा उसी विषयकी सोचते रहना, शरीर दुबला, लज्जासे झुकी दृष्टि, पीठमें दर्द, सारे शरीरमें कमजोरी मालूम होना प्रभृति लक्षणोंकी स्टैफिसैग्रिया बढ़िया दवा है।

आर्निका ३ या हाइपेरिकम १x (चोट वगैरह लगनेसे बीमारी होनेपर); नक्स-वोम ३०, कोनायम ३, कूप्रम-एसेटिकम ६x चूर्ण, एसिड-नाइट्रिक ६—३०, सेलिनियम ६, जेल्स १x—३०, कैल्के-कार्ब ३०, फास्फो २००, सलफर ६—२०० वगैरह दवाएँ कभी-कभी आवश्यक होती हैं। यदि सभी दवाएँ बेकार साबित हों तो ब्यू फो ३० की परीक्षा करनी चाहिये।

जननेन्द्रियके दूसरे रोग और (स्त्री-रोग अध्यायमें) "बन्ध्यत्व" देखिये।

नियम।—सात्विक भावसे रहना, दूध, घी, मक्खन, मटर वगैरह पुष्ट भोजन खाना चाहिये। कामोद्दीपक दवाएँ (aphrodisiacs) खाना बहुत नुकसान करता है। समाचार पत्रोंके विज्ञापनके फेरमें पड़कर बहुतसे लोग अपना स्वास्थ्य हमेशाके लिये खो बैठते हैं।

जननेन्द्रियकी कई दूसरी बीमारियाँ

कुकड़ा (Phimosis) या लिङ्ग-मुण्ड (सुपारी) को ढँकनेवाला चमड़ा न खोल सकना। मर्क-कोर (कुकड़ा फट जानेपर Fissures होनेपर); रस-टक्स ६ (त्वचा खुजलाने या प्रदाहित होनेपर); कैनाबिस ३x (सूजन, लाल

रङ्गकी और गर्म होनेपर)। प्रकृत प्रमेह-रोगमें "छुछड़ा" देखिये।

उलटा छुछड़ा (Paraphimosis) या लिङ्ग-मुण्डको छिपानेवाले चमड़ेसे लिङ्ग-मुण्डको छिपा न सकना।—कोलोसिन्थ ६। प्रकृत-प्रमेह रोगमें "उलटा छुछड़ा" देखिये।

मन्थौष (Balanitis) या सुपारी (लिङ्गमुण्ड) की श्लैष्मिक-झिल्लीका प्रदाह और पीव निकलना।—नाइट्रिक-एसिड ६। लिङ्गका चमड़ा खुजलानेपर, जलन होनेपर या उसपर फुन्सियाँ होनेपर या पपड़ी पड़ जानेपर); पल्सेटिला ६ (चमड़ेके नीचे पीले रङ्गका रस या पीव निकलनेपर); थूजा ३० (मसा या श्लेष्माकी फुन्सियाँ होनेपर)। गर्म पानी और साबुनसे प्रदाहित स्थानको हमेशा धोकर साफ़ रखना चाहिये। प्रकृत-प्रमेह रोगमें "मन्थौष" देखिये।

हस्तमैथुन (Masturbation) अर्थात् हाथसे (या किसी दूसरे अस्वाभाविक उपायसे) रति-क्रिया पूरी करना। कैन्थरिस १x—६ (पुरुषोंके लिये); प्लाटिना ६ औरतोंके लिये)। **आरिगेनम मेजोरेना** ३ भोजनके कुछ ही पहले सेवन करनेसे यह बुरी आदत छूट जाती है। बालक-बालिकाएँ यह पाप-कार्य न करें, इसपर उनके अभिभावकोंको हमेशा नज़र रखनी चाहिये। साफ़-सुथरे रहना, मन और शरीरको शुद्ध रखना, बराबर परिश्रम करना, ठण्डे कमरेमें खाटपर सोना, शुद्ध कड़ी हवाका सेवन करना वगैरह स्वास्थ्यके

नियम पालन करने चाहियें। हस्तमैथुनका अभ्यास छोड़नेके बाद स्वप्न-दोष हो सकता है।

हस्तमैथुनसे पैदा हुए रोगमें—फास्फोरस ६—२००, सलफर १२, एसिड-फास १—३० दवाएँ फायदेमन्द हैं।

अपूर्णाङ्ग मैथुन (Conjugal Onanism)।—सन्तान होना रोकनेकी इच्छासे, रमणके समय सङ्गम-इन्द्रियपर आवरण (protector) पहनना या रमणके समय वीर्य-स्खलनके कुछ पहले हट जाना वगैरहको "अपूर्णाङ्ग-सङ्गम" कहते हैं। इससे स्वास्थ्य और मनकी प्रसन्नता एकदम नष्ट हो जाती है। एक चिकित्सकका कहना है, कि इसका परिणाम हस्तमैथुनसे भी बुरा होता है। फास्फोरस ३—३०, उपयुक्त आहार, आब-हवा बदलना और बहुत समय, कम-से-कम एक हफ़्ताका समय देकर अच्छी तरह रति-क्रिया सम्पन्न करना उचित है।

ज्यादा हाल और चिकित्साके लिये हमारी प्रकाशित "जननेन्द्रियके रोग" चतुर्थ संस्करणका हस्तमैथुन अध्याय देखिये।

अधिक सङ्गमेच्छा या कामोन्माद।—प्लाटिना ६—२०० (औरतोंके लिये) और पिकरिक-एसिड ६ (पुरुषोंके लिये)।

जननेन्द्रियकी कमजोरी और सङ्गमसे वितृष्णा।—एसिड-फास १—६ और जेल्स १x—३

(लिङ्गेन्द्रियकी दुर्बलतामें) और ऐमोन-कार्ब ३x या ग्रैफाइटिस ६ (औरतोंको सङ्गमकी इच्छा न होनेपर)। स्वाभाविक दुर्बलता या ज्यादा इन्द्रिय परिचालनकी वजहसे पुरुषोंकी सङ्गम-इन्द्रिय एकदम कमजोर या बेकार हो जानेपर, सैबाल-सेरूलेटा θ (फी मात्रा ५ से ७ बून्दतक) रोज़ दो बार सेवन करनेसे, अकसर बहुत फायदा होता है।

आंशिक असमर्थतामें—कैल्के-कार्ब ६। एकदम असमर्थ होनेपर—जेल्स θ (खासकर सङ्गमेन्द्रिय शिथिल या उत्तेजना-हीन होनेपर)। दूसरी दवाओंके लिये हमारा प्रकाशित "जननेन्द्रियके रोग" देखना चाहिये। ज्यादा सङ्गमकी वजहसे असमर्थ होनेपर—लाइको ३० या एसिड-नाइट्रिक ६—३० देना चाहिये (लाइकोसे फायदा न होनेपर ऐग्नस-कैक्टस १)। "ध्वजभङ्ग" देखिये।

गर्मी, सूजाक वगैरह रोगोंका हाल और इलाजके लिये आगे लिखा **"रतिज-रोग"** अध्याय देखिये।

———

रतिज-रोग

(Venereal Diseases)

सूचना

"गर्मी" और "सूजाक" इन्द्रिय-दोषसे पैदा हुई बीमारियाँ हैं, इसीसे इन्हें **रतिज-रोग** कहते हैं। रतिज-रोग भी संक्रामक है। रतिज-रोगके सम्बन्धमें सर्व-साधारणके जानने योग्य बातें और इलाज नीचे लिखा जाता है। ज्यादा विवरणके लिये **परिशिष्ट** (ख)—धातु-दोष और उसका निराकरण देखिये।

१। उपदंश (गर्मी)

(Syphilis)

गर्मीकी बीमारी जिसे हो, उसके साथ सहवास करने बाद अच्छे-चंगे मनुष्योंकी जननेन्द्रियमें **घाव** (chancre शैंकर या घाव) पैदा हो जाता है—यही बीमारीका प्रधान लक्षण है। जखम यदि **बढ़ा हुआ** दिखाई दे, तो उसे **"कठिन-क्षत** (hard chancre) उपदंश" कहते हैं। जखम **कोमल** होनेपर "कोमल-क्षत (soft chancre) उपदंश" कहा जाता है। कठिन क्षतवाले गर्मी-रोगमें रक्त-दोष हो जाता है (अर्थात्

समूचा शरीर दूषित हो जाता) और "कोमल-क्षत-उपदंश" रोगमें शरीर दूषित नहीं होता। पहले डाक्टर लोग समझते थे कि "कोमल" और "कठिन क्षत" एक ही बीमारीके दो रूप हैं; परन्तु अब निःसंशय रूपसे प्रमाणित हो गया है, कि यह दूसरा ही रोग है; पर दोनों ही भिन्न-भिन्न प्रकारके संक्रामक विष (virus) या जीवाणु (bacillus) से पैदा होते हैं। पहले उपदंश रोग इस देशमें न था। शायद यूरोपियनोंने यह बीमारी इस देशमें फैलायी है। इसीसे इसका दूसरा नाम "फिरङ्ग" रोग है। *

(क) कठिन-क्षत उपदंश

ट्रेपोनेमा-पैलाइडम या स्पाइरोकिटा-पैलाइडा (Treponema Pallidum or Spirocnæta pallida) नामक

---

* यह गर्मी रोग कहलाता है। लगभग तीन सौ बरस पहले मद्र देशके रहनेवाले भावमिश्रने अपने विख्यात ग्रन्थ "भाव-प्रकाशम्" में फिरङ्ग रोगके सम्बन्धमें लिखा है :—

"फिरङ्ग संज्ञके देशे बाहुल्ये नव यद्भवेत्।
तस्मात् फिरङ्ग इत्युक्तो व्याधिर्व्याधि विशारदैः॥"

अर्थात् फिरङ्ग देशमें यह बीमारी बहुतायतसे हुआ करती है, इसीलिये चिकित्सकोंने इसे "फिरङ्ग-व्याधि" कहा है।

और सर डाक्टर प्रफुल्लचन्द्र राय महाशयने (History of the Hindu Chemistry) नामक पुस्तकमें भी "फिरङ्ग रोगका" उल्लेख किया है।

जीवाणु "कठिन-क्षत-उपदंश" रोगका मुख्य कारण है। यह "जीवाणु" या "संक्रामक विष", किसी तरह अच्छे शरीरमें प्रवेश कर जानेपर यह रोग पैदा होता है। कठिन-क्षत उपदंश जिसे हुआ हो, उसके साथ सङ्गम, दूषित जखमका छू जाना या रस लगना; रोगीके कपड़े, गमछा, कागज, गिलास, हुक्का, छुरा वगैरह चीजें काममें लाना, असावधानतासे रोगीकी सेवा-सुश्रूषा या इलाज आदि करना वगैरह कितने ही उपायोंसे, यह विष अच्छे-भले शरीरके किसी पतले या कटे हुए चमड़ेसे या श्लैष्मिक-झिल्लीकी राहसे शरीरमें चला जाता है। सहवासके पहले यदि पिता-मातामें यह रोग हो, तो लड़कोंमें भी आ सकता है। अच्छे चमड़ेके किसी पतले या कटे हुए अंश या श्लैष्मिक-झिल्लीमें यह ज़हर लगकर, जब खूनमें मिल जाता है, तब वहाँ जखम या घाव हो जाता है। यह घाव हमेशासे पहले जननेन्द्रियमें ही होता है; पर कभी-कभी ओंठ, हाथकी अंगुली वगैरह दूसरे अङ्गोंमें भी यह जखम पहले दिखाई देता है। साधारणतः औरत, मर्द दोमेंसे किसी एकको भी जखम या सैङ्कर रहनेपर सहवासके बाद (लगभग तीन हफ़्तोंमें) यह विष मर्दसे औरत और औरतसे मर्दकी सङ्गमेन्द्रियमें आता है। पहले एक लाल, कड़ी, दर्द-हीन फुन्सी पैदा होती है। इसके बाद सङ्गमेन्द्रियसे वह शरीरके दूसरे-दूसरे अंशोंमें (जैसे—ओंठ, जीभ, स्तनका बोंटा, अंगुली, नाभी, उरु, मलद्वार वगैरहमें) फैल जा सकता है। यह भयानक रोग इस तरह

सब अङ्गको दूषित कर डालता है, इसीसे इसे "सर्वाङ्गीन उपदंश" भी कहा जाता है। इसीका दूसरा नाम गर्मी, फिरङ्ग रोग, प्रक्षत उपदंश या सिफिलिस है। प्रक्षत उपदंश रोगमें सबसे पहले विष लगी स्थानमें, फिर खूनमें और अन्तमें शरीरके तन्तुओंमें बीमारी पैदा हो जाती है। प्रक्षत उपदंशका ज़हर फैल जानेपर, बहुत दिनोंतक या सारी ज़िन्दगी उसका बुरा फल भोगना पड़ता है। अतएव, इसका इलाज अत्यन्त सावधानीसे करना चाहिये।

उपदंशका ज़हर शरीरमें लगनेसे लेकर जबतक जखम न दिखाई दे, तबतक उसे उपदंश रोगको "अप्रकाश अवस्था (incubation stage)" कहते हैं। इस अवस्थाका स्थिति-काल १० से ९० दिन (हमेशा २१ दिन) है। इस अवस्थामें रोगीके शरीरपर कोई उपसर्ग नहीं दिखाई देता। अप्रकाश अवस्थाके अन्तमें, इस बीमारीकी एकके बाद दूसरी इस तरह तीन अवस्थाएँ दिखाई देती हैं:—

(१) प्राथमिक अवस्था (Primary Stage)— विष फैलनेके प्रायः तीन हफ़्तेके बाद, ज़हर लगी हुई जगह खुजलाने लगती है; फट जानेकी तरह (कभी-कभी कुछ कड़ी) दिखाई देने लगती है। इसके बाद वहाँ मटर-जैसा कड़ा, बिना पीबका एक गोल जखम हो जाता है; इस जखमके चारों ओरकी धार ऊँची और कड़ी, बिचला भाग गहरा होता है और जखमके पासके पुट्ठेकी गांठें धीरे-धीरे

बढ़ने और कड़ी होने लगती हैं (अर्थात् बाघी पैदा हो जाती है)। महीने, डेढ़ महीनेके बाद घाव धीरे-धीरे आराम होने लगता है, बाघी भी कुछ-कुछ बैठ जाती है; परन्तु कुछ बढ़नेका भाव मौजूद रहता है। ठीकसे इलाज न होनेकी वजहसे अगर सङ्गमेन्द्रिय कुछ गलकर गिर जाये, तो समझना चाहिये, कि अवस्था बिगड़ी हुई है। जबतक पहलेका घाव और बाघी मौजूद रहे, तबतक रोगको "प्राथमिक अवस्था" है। इस प्राथमिक अवस्थाका स्थिति-काल दो हफ़्तोंसे छः महीनेतक है।

(२) द्वितीय या गौण अवस्था (Secondary Stage)—ऊपर कही हुई पहली, घाव पैदा होनेवाली अवस्थामें, घाव पैदा होनेके तीन-चार महीने बाद, रोगीको बोखारका भाव, कमजोरी, सर-दर्द, रक्त-स्वल्पता, गलेमें घाव, श्लैष्मिक-झिल्लीमें घाव, चर्म-रोग, उपतारा प्रदाह, केश उड़ जाना, सन्धि और हड्डियोंमें दर्द वगैरह उपसर्ग उपस्थित हो सकते हैं। दूसरी अवस्थामें रोगीके सम्पूर्ण शरीरका खून दूषित और ज़हरीला हो जाता है। दूसरी अवस्थाका स्थितिकाल १ से ५० वर्षतक है।

(३) तीसरी अवस्था (Tertiary Stage)—दो-तीन वर्षके भीतर दूसरी अवस्थाके उपसर्ग अच्छी तरह अच्छे न हो जानेपर अथवा रोगी कुछ दिन अच्छा रहने बाद, धीरे-धीरे तीसरी अवस्थामें आ पहुँचता है। इस अवस्थामें

शरीरके तन्तु—रस-रक्त, हाड़-मांस, भीतरी यन्त्रोंके उपादान सब—आक्रान्त होकर, नष्ट होने लगते हैं। मुख-गह्वर, गल-कोष, चमड़े आदिमें जखमका फैल जाना और पीव जमा होना, पेशी, हड्डियाँ, हृत्पिण्ड आदिका विशेष रूपसे आक्रान्त होना और अस्थि-वेष्ट, अण्डकोष, मस्तिष्क, यकृत आदिमें अर्बुद (gummata) उत्पन्न होना, इस "तीसरी" अवस्थाके प्रधान लक्षण हैं। इस अवस्थाका स्थितिकाल—अनिर्दिष्ट है।

दूसरी और तीसरी अवस्थामें कितने ही उपसर्ग, कितने ही ढङ्गसे दिखाई देते हैं। उनका इस छोटे-से ग्रन्थमें पूरा-पूरा वर्णन करना सम्भव है। पूरे विवरण और चिकित्साके लिये, हमारी प्रकाशित "**जननेन्द्रियकी रोग**" [सचित्र हिन्दी चतुर्थ संस्करणका ग्रन्थ देखिये]। उपदंश रोगीको **तकलीफ शाम (सूर्यास्त) से सूर्योदयतकके बीच (अर्थात् रातकी समय) बढ़ जाती है।**

चिकित्सा।—यदि यह कहा जाये, कि जरूरतके मुताबिक पारा या मर्करी ही इस रोगकी एकमात्र दवा है, तो असङ्गत न होगा। हलके उपदंश रोगकी **पहली और दूसरी** अवस्थामें एकमात्र **मर्क-सोल** ६ नियमके अनुसार सेवन करनेसे रोग कम होने लगता है; पहले उपदंशके घावमें और गौण अवस्थाके गले हुए घाव और पीव-भरे फोड़ोंमें यह ज्यादा फायदा करता है। जखम दिखाई देते ही मर्क-

सोलका सेवन आरम्भ कर देनेसे बाघी अकसर नहीं पकती। यदि उपदंश कठिन रूपका हो, तो मर्क-सोलके बदले रोगीको (पहली और दूसरी अवस्थामें) मर्क-प्रोटो-आयोड २x सेवन कराना चाहिये। रोगकी तीसरी अवस्थामें कैलि-आयोड मूल विचूर्ण—३० (मात्रा ५ ग्रेन) प्रधान दवा है। कम से-कम दो वर्षतक इलाज होनेपर रोग आराम हो जाता है। रोगकी पहली, दूसरी और तीसरी सभी अवस्थाओंमें बीच-बीचमें (अर्थात दो-तीन महीने बाद) सिफिलिनम ३० एक-एक मात्राभर सेवन करना अच्छा है। सिफिलिनम सेवनके दो दिन पहले और दो दिन बाद, कोई दूसरी दवा न खानी चाहिये।

ऊपर लिखी दवाओंको सहायता पहुँचानेके लिये नीचे लिखी दवाएँ (मौके-मौकेपर आवश्यक होनेपर) सेवन कराई जाती हैं :—बाघी बढ़ती रहनेपर, फाइटोलैक्का ३। पीव-भरी फुन्सियाँ या चकत्तोंमें, ग्रैफाइटिस ६। तांबेके रङ्गके चकत्ते, सलफर ६। बहुत पीव जमा हो जानेपर, सिलिका ६। जख्म पैदा करनेवाला स्राव या जलन करनेवाले दर्दमें, आर्सेनिक ६। गांठें आक्रान्त होने या नाकमें जख्म होनेपर या नाकका गलना आरम्भ हो जानेपर, ओरम-मेट ६। रोगकी पुरानी अवस्थामें, चय करनेवाला घाव या बहुत ज्यादा पारेका अपव्यवहार करनेपर, नाइट्रिक-एसिड ६। मसे और फूल-कोबीकी तरह बतौड़ी होनेपर थूजा ६। बहुत

ज्यादा मात्रामें मर्क्करी (पारा) सेवन और गर्मीका ज़हर, इन दोनोंके ही मिल जानेके कारण पैदा हुए रोगीके शरीरके उपसर्गमें (जैसे—हड्डियाँ, मसूढ़ा आदि आक्रान्त होनेपर), हिपर-सलफर ६, ३०। रातमें हाड़ोंमें ज्यादा दर्द होता हो, तो मेजेरियम ६। आँखोंकी बीमारीमें सिनाबेरिस ३x विचूर्ण, वात-रोगमें कैलि-आयोड θ—३०।

आनुसङ्गिक चिकित्सा।—नीमके पत्तेको उबाल-कर, गर्म पानीसे घाव धोना और उसपर गेंदेके पत्तेका रस या कैलेण्डूला θ का प्रयोग करना चाहिये। यदि बाघी पक जाये, तो तीन-चार घण्टेका अन्तर देकर उसपर तीसीकी पोल्टीस लगानी चाहिये। मछली, मांस, दही या मिठाई खाना या शराब पीना अथवा कोई दूसरा नशा करना, तम्बाकू खाना, रातमें जागरण वगैरह मना है। भोजन पुष्ट, पर हलका होना चाहिये। बोखार न रहे, तो रोज़ बदन पोछकर गर्म पानीसे नहा डालना चाहिये। रोगीको अपने दाँत हमेशा साफ़ रखना चाहिये।

प्रतिषेधक।—Dr. Sir William Osler (Regius professor of Medicine in the University of Oxford) कहते हैं, कि उपदंशवाले रोगीके साथ सङ्गमके पहले चङ्गा मनुष्य यदि कैलोमेल (Calomel) खा ले, तो उसके शरीरमें गर्मीका ज़हर नहीं फैल सकता।

(The London Times dated 4th January 1919 देखिये)।

मनुष्यको जीवनमें कभी किसी दशामें एकसे अधिक बार "प्रकृत उपदंश" रोग नहीं होता। परिशिष्ट "ख" देखिये।

जन्मगत उपदंश

नये पैदा हुए उपदंशकी अपेक्षा बाप, माँसे पाया हुआ उपदंश ज्यादा खतरनाक होता है। लड़का पैदा होनेके महीना, डेढ़ महीना बाद या इसके बीचमें ही, शिशुके चूतड़, सेवट, तलहत्थी और पैरोंमें (उपदंश रोगकी दूसरी अवस्थामें) खचर्म-रोग दिखाई देता है। नाक बैठ जाती है और शरीर धीरे-धीरे कमजोर होने लगता है।

चिकित्सा

गर्भावस्थामें माताके लिये, मर्क-सोल ६ और पैदा होते ही बच्चेके लिये भी मर्क-सोल ६ फायदेमन्द है। जखम रोज़ गरम पानीसे धो डालना चाहिये और उसे कपड़ेसे ढँके रखना चाहिये।

प्रकृत उपदंश और जन्मगत उपदंशके सम्बन्धकी जानने योग्य बातें और चिकित्साके लिये "परिशिष्ट (ख) धातु-दोष और उसका निराकरण" देखिये।

(ख) कोमल-क्षत उपदंश
(Chancroid)

डुक्रे-जीवाणु (Ducrey's Bacillus) "कोमल-क्षत उपदंश" रोगका मुख्य कारण है। कोमल घाववाली गर्मी रोगवाले मनुष्यके सङ्गम या छूनेकी वजहसे यह रोग निरोग मनुष्यके शरीरमें घुस जाता है और उसे "कोमल-क्षत उपदंश" रोग हो जाता है। इस रोगका विष शरीरमें फैल नहीं जाता, सिर्फ लिङ्गकी पीठपर कोमल क्षत पैदा करता है, सब अङ्ग दूषित नहीं बना देता है। इसलिये, "कठिन-क्षत-उपदंश" की भाँति यह भयानक नहीं है और जल्दी ही अच्छा हो जाता है।

इसमें हमेशा सङ्गमके बाद, तीन दिनके भीतर ही सङ्गम-इन्द्रियपर जखम दिखाई देता है। घाव एकसे ज्यादा भी हो जाता है, देखनेमें साधारण घाव-जैसा रहता है—कोमल, दर्द-भरा और उससे पीव भी बहता है। कभी-कभी सड़ने भी लगता है। घावका किनारा ऊँचा रहता है। बीचका भाग छिछला और नीचेका भाग स्पञ्जकी तरह छेददार। यह कोमल-क्षत होनेके लगभग तीन सप्ताह बाद बाघी होती है। यह बाघी एक बड़े आकारकी और इसमें पीव पैदा होता है; परन्तु कठिन-क्षतवाले उपदंशमें बाघीकी कई गांठें होती हैं, छोटी होती हैं और उनमें पीव नहीं पैदा होता। साधारणतः

कोमल-क्षतवाली गर्मी दो महीनेमें ही अच्छी हो जाती है; परन्तु अच्छी तरह इलाज न होनेपर यदि सङ्गम-इन्द्रिय सड़ने लगे और गलकर गिर जाये, तो रोगी मर जा सकता है। इसलिये बड़ी होशियारीसे इलाज करना चाहिये।

चिकित्सा।—मर्क-सौल २x विचूर्ण—६ के सेवनसे इस रोगका जखम और बाघी अच्छी हो जाती है। यदि मर्क-सोलसे फायदा न हो तो **नाइट्रिक-एसिड ३-६** देना चाहिये। घाव अगर सड़ने लगे, तो **आर्सेनिक ३।**

आनुसङ्गिक चिकित्सा।—"कठिन-क्षत उपदंश" रोगकी आनुसङ्गिक चिकित्सा और "परिशिष्ट (ख)" देखिये। इस रोगके तीन तरहके घाव, मसे सिकुड़े हुए, घावका चिन्ह वगैरहका विवरण और इलाजके लिये, हमारी प्रकाशित "जननेन्द्रियके रोग" (सचित्र) पुस्तकका हिन्दी संस्करण देखिये।

२। प्रमेह (सूज़ाक)

(Gonorrhoea)

सूज़ाकवाले रोगीके साथ सङ्गम करनेके बाद; स्वस्थ आदमीके मूत्र-मार्ग या पेशाबमें जलन होना और वहाँसे पीबके जैसा मवाद जाना, सूज़ाकका प्रधान लक्षण है। कई हफ़्ते

बाद अगर रोगीको मसे, रक्त-स्वल्पता वगैरह समूचा शरीर दूषित कर देनेवाले उपसर्ग दिखाई दें, तो उसे "सर्वाङ्गीन-प्रमेह" या "प्रकृत-प्रमेह" कहते हैं और यदि मसे, रक्त-स्वल्पता वगैरह सब अङ्गको दूषित करनेवाले उपसर्ग न पैदा हों, तो उसे "एकाङ्गीन-प्रमेह" कहते हैं। दोनों प्रकारके ही प्रमेह संक्रामक हैं और दोनों ही अलग-अलग तरहके विषसे उत्पन्न होते हैं। प्रमेह रोगको "मेह" या "सूजाक" भी कहते हैं।

(क) प्रकृत-प्रमेह या सर्वाङ्गीन-प्रमेह

गोनोकोक्कस (gonococcus) नामक जीवाणु "प्रकृत-प्रमेह" का मुख्य कारण है। यह जीवाणु या संक्रामक विष (virus) किसी तरह निरोग मनुष्यके शरीरमें फैल जानेपर उसे यह बीमारी हो जाती है। "प्रकृत-प्रमेह" रोगवाले मनुष्यके साथ सङ्गम, दूषित स्रावका संस्पर्श या रस लगना, रोगीकी सेवा-सुश्रूषा, चिकित्सा आदि करना वगैरह कितने ही कारणोंसे यह विष अच्छे शरीरमें जा सकता है। गर्भके पहले पिता या माताको यह रोग होनेपर, उनके बच्चोंमें भी यह ज़हर फैल सकता है। हमेशा प्रमेह-विषसे दूषित मनुष्योंका सङ्ग करनेपर यह ज़हर अच्छे-भले मनुष्यके मूत्र-मार्गसे भीतर जाता है और पहले वहाँकी श्लैष्मिक-झिल्ली प्रदाहित होती है, इसके बाद वहाँसे मवाद निकलने लगता है। जैसे—

प्रमेह रोगवाली स्त्रीके साथ सङ्गम करते समय बीमारी मर्दकी मूत्रनलीपर हमला करती है। इसके बाद वह मूत्रनलीसे सरलान्त्र, मुख-गह्वर, आँखें वगैरह दूसरे अङ्गोंपर भी फैल जाती है और जिस मर्दको प्रमेह हो, उसके साथ संसर्गके समय, औरतके पेशाबकी नली और जननेन्द्रियपर भी बीमारीका हमला हो सकता है। पुरुषोंके मूत्र-मार्गकी बनिस्बत, स्त्रीका मूत्र-मार्ग छोटा होता है। इसलिये, स्त्री-प्रमेह उतनी तकलीफ़ देनेवाला नहीं होता।

प्रमेहका ज़हर मर्दों'के स्वस्थ शरीरमें प्रवेश करनेके दो-एक दिन बाद मूत्र-मार्गका बाहरी मुँह (meatus urinarius) खुजलाया करता है, लाल हो जाता है और वहाँसे सफेद पतला स्राव निकला करता है और भी दो-तीन दिन बाद सङ्गमेन्द्रिय फूल जाती है, पेशाबके वक्त तेज़ जलन और दर्द पैदा होता है और बहुत-सा पीला या हरा या दूधकी तरह या खून-भरा गाढ़ा स्राव या पीव निकला करता है। पुट्ठे, उरु, अण्डकोष आदि अकड़ने लगते हैं या दर्द होता है और लिङ्गेन्द्रिय कुछ कड़ी हो जाती है और दूसरे-दूसरे अङ्ग भी आक्रान्त हो सकते हैं तथा अन्तमें (अर्थात् दो-तीन हफ़्ते बाद) मवाद क्रमसे पतला, श्लेष्मा और पीव-मिला या पतला हरी आभा लिये हुआ करता है और जलन कम हो जाती है। जबतक सफेद आभा लिये पतला स्राव मौजूद रहता है, तबतक प्रमेह रोगकी प्रथम या आक्रमण

अवस्था (स्थितिकाल हमेशा दो-तीन दिन) ; जबतक गाढ़ा पीव निकलता हो, तबतक रोगकी दूसरी या तरुण प्रदाह अवस्था (स्थितिकाल लगभग दो-तीन सप्ताह) और जबतक स्राव पतला श्लेष्मा पीव-भरा रहता है, तबतक रोगकी तीसरी या ह्रास अवस्था (स्थितिकाल कुछ ठीक नहीं, हमेशासे तीन-चार सप्ताह) है। तीसरी अवस्थाका दूसरा नाम लालामेह (gleet—ग्लीट) अवस्था है।

निरोग स्त्रीकी देहमें प्रमेहका ज़हर फैलनेपर, योनि-देश फूला, लाल और दर्दसे भरा रहता है और उससे स्राव बहता है, पेशाबमें जलन होती है और फिर समूची जननेन्द्रियपर हमला होता है। इसके बाद जलन और तकलीफ़ कम हो जाती है और बीमारी आराम होनेकी ओर पलटती है। उचित होमियोपैथिक दवा सेवन करनेके सिवा प्रकृत प्रमेहका ज़हर शरीरसे पूरी तरह नहीं निकल पाता ; यदि चिकित्सा उलटी-पलटी न हो, तो स्राव हमेशा सात-आठ हफ़्तोंमें बन्द हो जाता है और मालूम होने लगता है, कि बीमारी आराम हो रही है ; परन्तु थोड़ी ही गड़बड़ी होनेसे प्रमेह रोगके परिणाम-स्वरूप बहुतसे उपसर्ग दिखाई देने लगते हैं। जैसे— लिङ्गेन्द्रियका कड़ा होना, टेढ़ा होना, मन्यौष, चमड़ी, उलटी चमड़ी रोग, अण्डकोष-प्रदाह, योनि-प्रदाह, खूनका पेशाब, बदनपर मसे, आँखोंका प्रदाह, बाघी, वात, बहुत दिनतक ठहरनेवाला लाला-मेह और उससे पैदा हुआ मूत्रनलीका

सिकुड़ना, मूत्र-रोध वगैरह लक्षण प्रकट होते हैं। प्रमेह रोगको और उसके बादके उपसर्गोंको चिकित्साके योग्य उपयोगी दवाएँ क्रमसे नीचे लिखी जाती हैं। अधिक विवरण और चिकित्साके लिये, हमारा प्रकाशित "जननेन्द्रियके रोग" (सचित्र) हिन्दी संस्करण देखिये।

प्रमेहके रोगीकी तकलीफ सूर्योदयसे सूर्यास्त अर्थात् दिनमें बढ़ती है।

चिकित्सा

आक्रमण अवस्थामें—सिपिया ३०। **प्रदाह अवस्थामें**—एकोनाइट ३x (प्रदाहकी पहली अवस्थामें बोखारका लक्षण रहनेपर) और कैनाबिस सैटाइवा θ (एकोनाइट खानेसे प्रदाह कम होता जाता हो, बार-बार पेशाब, मवाद जाना, खूनका पेशाब, तेज़ जलन वगैरह लक्षणमें)। **ह्रास अवस्थामें**—पहले थूजा ६—३०, इसके बाद नाइट्रिक एसिड ३—३० (खासकर अगर पहले ज्यादा मर्करी या पारा सेवन कराया जाये)। **श्लैष्मिक सूजाकमें**—कोपेबा ३x और सिपिया ३० उपयोगी है।

Dr. E. Jones कहते हैं, कि शरीरसे प्रमेहका ज़हर पूरी तरह निकाल देनेके लिये, बहुत दिनोंतक थूजा सेवन करना बहुत जरूरी है। वे कहते हैं, कि बीमारीकी हालतके

मुताबिक चाहे कोई भी दवा क्यों न खायी जाये, लेकिन रोज़ रातमें सोनेके पहले थूजा ३०, दस बून्द व्यवहार करना चाहिये (Hom. Rocorder Feb. 1923 देखिये)। इस तरहकी व्यवस्थासे प्रमेहका ज़हर शरीरसे एकदम निकल जाता है।

ऊपर कही हुई दवाओंकी सहायतासे हमेशा बीमारी आराम होने लगती है। बादके उपसर्गों के लिये, दूसरी-दूसरी दवाओंकी जरूरत पड़ सकती है। जैसे—

मन्योष।—उपसर्ग (अर्थात् लिङ्गमुण्डपर बीमारी होकर, उसकी श्लैष्मिक-झिल्लीमें प्रदाह पैदा होनेपर और ज्यादा पीव निकलनेपर)—मर्क-सोल ६ सेवन और लिङ्गमुण्डको साफकर, कैलेण्डुला θ (दस बून्द एक आउन्स पानीमें) धावनसे सुपारीको भिंजाये रखना चाहिये।

चमड़ी रोग—होने अर्थात् लिङ्गके अगले भागकी चमड़ी (छुच्छड़ी) न खुल सकनेपर * मर्क-सोल ६ या गुएकम २x का सेवन और हैमामेलिस θ (दो बून्द × एक आउन्स पानी) के धावन द्वारा लिङ्गका मुँह भिंजाये रखना आवश्यक है।

---

* लिङ्गके अगले भागकी चमड़ी बहुत फूलने और प्रदाहित होनेके कारण, उसका मुँह बन्द हो जाता है, इसीसे पीव अच्छी तरह नहीं निकल पाता और चमड़ी अच्छी तरह खोली या बन्द भी नहीं की जा सकती। दवासे फायदा न हो तो नश्तर लगानेवाले डाक्टरकी सलाह लेनी चाहिये।

उल्टी चमड़ी—होनेपर (अर्थात् लिङ्गके अगले भागकी चमड़ी सुपारीको न ढँक सकनेपर)—मर्क-सोल ६ सेवन और हाइपेरिकम θ दो बून्द × एक आउन्स पानीके धावन द्वारा सुपारीको भिजाये रखना चाहिये।

मुखशायी-ग्रन्थि-प्रदाह—देखिये।

अण्डकोष-प्रदाहमें—फाइटोलैक्का ३, क्लिमेटिज ३।

योनिकी-प्रदाहमें – कार्बो-वेज ६, पल्स ६।

खूनकी पेशाबमें—कैन्थरिस ३x (इस ग्रन्थकी मूत्र-यन्त्रकी बीमारीवाला अध्याय "खूनका पेशाब" देखिये)।

वात—थूजा ३० और फाइटोलेक्का ३ (प्रमेहसे पैदा हुए वातकी उत्तम दवा है), पल्सेटिला ६ (स्राव रुक जानेके कारण पैदा हुए वातमें), ब्रायोनिया ३, अर्जेण्टम-नाइट्रिकम ६, नाइट्रिक-एसिड ६—३०।

लालामेह—(अर्थात् तीसरी अवस्थाका स्राव) बहुत दिनोंतक स्थायी रहनेपर, थूजा ३० और नाइट्रिक-एसिड ६। हाइड्रैस्टिस θ दस गुने पानीमें मिलाकर उससे पिचकारी लेनेपर फायदा होता है। स्रावकी दूसरी-दूसरी दवाएँ; आगे लिखे "एकाङ्गीन प्रमेह" में देखिये।

मूत्रनालीकी सङ्कोचनमें—(अर्थात् मूत्रनालीकी संकुचित अवस्थामें पेशाब होते वक्त पहले तो पेशाब खुलासा नहीं होता और इसके बाद बिलकुल ही नहीं होता) कैन्थरिस

३x—३ सेवन और गर्म पानीसे नहाना। जरूरत होनेपर मूत्र-शलाका (catheter) से पेशाब कराना पड़ता है। इसके बाद आर्निका ३ सेवन कराना चाहिये। "मूत्रनालीका सङ्कोचन" देखिये।

आनुसङ्गिक चिकित्सा।—रोगीको आधी लेटी (उठङ्गी) हुई अवस्थामें साफ़-सुथरा रखना चाहिये। मांस, मछली, खट्टा और उत्तेजक पदार्थ भोजन, धूम्रपान, सोडावाटर पीना, घोड़े या साइकिलकी सवारी अथवा ज्यादा परिश्रम करना मना है। इच्छापूर्ण पानी पीना, दूध और मिसरीका शर्बत और नींबूका रस फायदा करता है। जरूरत पड़नेपर कौपीन (suspensary bandage) व्यवहार करना चाहिये।

"प्रकृत-प्रमेह विष" या "प्रकृत-उपदंश विष" एक बार शरीरमें फैल जानेपर (होमियोपैथिक मतसे निर्वाचित सच्ची दवाके सेवन किये बिना) वह सहजमें नहीं निकलता। इसलिये जीवनमें कभी किसीको दूसरी बार गर्मी या सूजाक नहीं होता।

प्रकृत-प्रमेह रोगके सम्बन्धमें कुछ ज्यादा जानना हो और उसका विवरण और चिकित्सा जाननी हो तो इस ग्रन्थका "परिशिष्ट (ख)—धातु-दोष और उसका निराकरण" देखिये।

———

(ख) एकाङ्गीन प्रमेह
या
स्थानिक प्रमेह

एक तरहका फैलनेवाला ज़हर (संक्रामक-विष—virus) इस बीमारीका खास कारण है। यह ज़हर अच्छे शरीरमें घुस जानेपर वह शरीरकी एक जगह (अर्थात् मूत्र-यन्त्र) पर आक्रमण करता है, सारे शरीरको दूषित या विषैला नहीं कर पाता। इसीसे उसे एकांगीन प्रमेह या स्थानिक-प्रमेह कहते हैं। प्रकृत और स्थानिक दोनों ही तरहके प्रमेह रोगमें संक्रमण, आक्रमणावस्था, प्रदाह और श्लेष्मा-भरा पीव-स्राव* एक ही तरहका होता है। इसलिये, पहले दोनों रोगोंका अलगाव या प्रभेद स्थिर करना सहज नहीं है; परन्तु कई हफ़्ते हो जानेपर, यदि सङ्गम-इन्द्रियकी चारों ओर फूलकोबीके फूलकी तरह बतौड़ी या मसा हो जाये और खूनकी कमीसे सर्वाङ्ग दूषित होनेका कोई उपसर्ग न

---

* दोनों तरहके प्रमेह रोगमें और मूत्र-मार्ग-प्रदाहमें एक ही तरहका श्लेष्मा-पीवका स्राव दिखाई देता है। इसके अलावा क्रिमि, हस्तमैथुन, ज्यादा सङ्गम वगैरहके कारणसे भी यह स्राव हुआ करता है। इस तरह एक तरहका स्राव देखते ही, यह न समझ लेना चाहिये, कि "प्रमेह रोग" हुआ है।

दिखाई दे, तो समझना चाहिये, कि रोगीको "एकाङ्गीन प्रमेह" या "स्थानिक प्रमेह" हो गया है। अच्छी तरह इलाज होनेपर, कई महीनोंमें ही एकाङ्गीन प्रमेहका ज़हर शरीरसे निकल जाता है।* इस देशमें सूजाकके जो रोगी दिखाई देते हैं, उनमें ज्यादातर इस "एकाङ्गीन प्रमेह" रोग-वाले ही होते हैं।

चिकित्सा

पेट्रोसेलिनम θ रोज़ (पाँच-छः बून्दकी मात्रामें) कई दिनोंतक सेवन करनेपर बीमारी एकदम अच्छी हो जाती है। यदि इससे अच्छी न हो, तो स्रावकी प्रकृतिकी ओर ध्यान रखकर इलाज करना चाहिये। जैसे—खून-भरे स्रावमें—कैन्थरिस ३x; दूधकी तरह स्रावमें—कोपैवा ३x; पानीकी तरह लसदार स्रावमें—कैनाबिस सैटाइवा १x; श्लेष्मामय स्रावमें—कैप्सिकम ३; पीब-भरे स्रावमें—नेट्रम-म्यूर ३०; पीली आभा लिये स्रावमें—हिपर-सल्फर ३०; हरे रङ्गके

* इस ग्रन्थके "तरुण और चिर-रोगके" लक्षणके अनुसार पाठक समझ सकते हैं, कि "एकाङ्गीन प्रमेह" एक "नया रोग" है; क्योंकि इसमें "प्रारम्भ" "वर्धन" और "ह्रास" ये तीन अवस्थाएं एकके बाद दूसरी हुआ करती हैं और "प्रकृत-प्रमेह" एक "चिर-रोग" इसलिये है, कि इसमें पहले कही हुई, दो अवस्थाएं मौजूद रहती हैं, ह्रासावस्था नहीं होती [परिशिष्ट (ख) "धातुदोष और उसका निराकरण" देखिये]।

स्रावमें—थूजा ३० ; खूनके सफेद कण या गुलाबी रङ्गके स्रावमें—पेट्रोसेलिनम ३x ; बदबूदार स्रावमें—कार्बो-वेज ६ ।

ऐलोपैथिक दवाओंके अपव्यवहारसे स्वास्थ्य खराब हो जानेपर "जायुज-व्याधि" की दवाओंमेंसे चुनकर रोगीको दवा देनी चाहिये ।

आनुसङ्गिक चिकित्सा ।—"प्रकृत प्रमेह" रोगकी आनुसङ्गिक चिकित्सा देखिये ।

बाघी

(Bubo)

सूजाक या गर्मी रोगसे पैदा हुई पुट्ठेकी गांठ (या गांठें) प्रदाहित (अर्थात् सूजी, दर्द-भरी, लाल रङ्गकी, गर्म और कड़ी) होनेको बाघी कहते हैं । इसके बाद, बाघीमें पीव जमा होकर वह पक जाती है । इस समय प्रायः ठण्ड लग करके बोखार होता है ।

चिकित्सा ।—हलके ढङ्गकी बाघी या सूजाकके ज़हर या गर्मीके ज़हरसे पैदा हुई बाघीके लिये, मर्क-सोल ३—६ बहुत उत्कृष्ट दवा है (पर रोगी यदि बहुत दिनोंतक मर्करी

या पारा व्यवहार कर चुका हो, तो नाइट्रिक-एसिड ६ देना चाहिये)। ऐसी चिकित्सासे यदि ६० घण्टोंमें कोई फायदा न दिखाई दे, तो कार्बो ऐनिमेलिस ६ या बैडियेगा ६ सेवन करानेपर अकसर पीव नहीं पैदा होता या पोल्टीस नहीं लगानी पड़ती ; परन्तु पीव पैदा हो जानेपर, बाघीको बैठानेकी कोशिश न कर उसमें पोल्टीस देकर पका डालना और चिरवा देना चाहिये। पीव भरना आरम्भ हो जानेपर भी कार्बो-ऐनिमैलिस ६ या बैडियेगा ६ सेवन करना चाहिये और कैलेण्डुला θ (एक भाग + पानी आठ भाग) का बाहरी प्रयोग करना (लगाना) चाहिये। उपदंशके साथ सूजाकसे पैदा हुई बाघीमें मर्क-सोल २ देना चाहिये। बाघीमें यदि गलनेवाला घाव हो जाये, तो **कैलि-आयोड** θ (फी मात्रा ५ ग्रेन, रोज़ तीन बार) सेवन और जखम गर्म पानीसे अच्छी तरह साफ़कर, उसपर कैलेण्डुलाका मरहम लगाना चाहिये। नीचे लिखी दो दवाओंके सेवनकी अकसर जरूरत पड़ती है।

हिपर-सलफर ६, २००।—बाघीका पक जाना या उसमें खूब पीव भरना (जिन्होंने ज्यादा पारा सेवन किया है, उनके लिये यह ज्यादा फायदेमन्द है)।

सिलिका ३X, ३।—नाली घाव या नासूर होनेका लक्षण होनेपर यहाँतक कि नासूर होनेपर भी यह बहुत फायदा करता है।

अलग-अलग प्रकारको "बाघी" और ज्यादा विवरण तथा चिकित्साके लिये हमारा प्रकाशित "जननेन्द्रियके रोग" (सचित्र) हिन्दी संस्करण देखिये।

आनुसङ्गिक चिकित्सा।—जबतक बाघीका घाव न सूख जाये, तबतक खाटसे न उठना चाहिये। घाव रहते हुए घूमनेसे नासूर हो जा सकता है। नासूर जल्दी अच्छा नहीं होता और बहुत तकलीफ़ देता है। बाघीको सेंकना या उसपर पोल्टीस देना अच्छा है। बाघी पकनेपर नश्तर लगवाना चाहिये। शोरबा, दूध सुपथ्य है; भात या मछली न खाना ही अच्छा है।

रतिज रोगके कई दूसरे उपसर्ग

उपदंश रोगके **जखम आदि** (खासकर आँखें और गलेका मध्य भाग आक्रान्त होना) उपसर्ग बढ़े हुए होनेपर **जैकराण्डा गुयालैण्डाई** θ रोज़ दो बार, पाँच-पाँच बून्दके हिसाबसे सेवन करना चाहिये।

मूत्र-शलाका (Catheter) को काममें लाये बिना **जिन्हें पेशाब नहीं होता।** (खासकर मूत्रपिण्डका दर्द, तकलीफ़से थोड़ा-थोड़ा पेशाब होना; पेशाबमें काले रङ्गकी कोई चीज़ नीचे जम जाना वगैरह लक्षणोंमें) उनके लिये

सौलिडेगो-वर्गा θ—३x (फी मात्रा ३—५ बून्द) रोज़ तीन-चार बार सेवन करना चाहिये।

मुत्रशायी-ग्रन्थिका बढ़ना।—(Enlarged prostate) के कारण जिन पुरुषोंको (खासकर वृद्धोंको) मूत्रशलाका (Catheter) डाले बिना **पेशाब नहीं उतरता** उन्हें **सैबाल-सिरुलेटा** θ (फी मात्रा ५ से १० बून्द) दो बार सेवन करना चाहिये।

प्रमेह रोगसे पैदा हुए **सन्धिवात या ग्रन्थिवात** (खासकर औरतोंके) उपसर्गमें, **विस्कम एलबम** θ, ३x देना चाहिये।

नींद न आना।—जेलसिमियम θ फी मात्रा २ बूंद (बहुत ज्यादा सुस्ती या निस्तेज भाव); काफिया ६ (नींद न आनेकी एक बढ़िया दवा है); सिमिसिफ्यूगा ३x—३० (अकड़न या दर्दके कारण नींद न आना); पल्स ६ (रातके पहले भागमें नींद न आना); नक्स-वोम ६ (रातके अन्तिम भागमें नींद न आना)।

———

वहिर्वाहिनी नालीशून्य ग्रन्थियोंके रोग

(Diseases of the Ductless Glands)

शरीरके जो पुर्जे (यन्त्र) किसी चीज़को निकाल या सिकोड़ सकते हैं, उन्हें "निःस्राव-निःसरणशील ग्रन्थि" कहते हैं। शरीरमें सभी जगह ग्रन्थियाँ मौजूद हैं, जैसे—पसीना निकालनेवाली नलियाँ यकृत आदि (हमारा प्रकाशित "नरदेह परिचय" और इस ग्रन्थका "मानव-शरीरकी रचना" अध्याय देखिये)। इन सब ग्रन्थियोंके अलावा शरीरके भीतर और भी कितनी ही ऐसी ग्रन्थियाँ मौजूद हैं, जिनका स्राव या रस उन स्राव निकालनेवाली नलियों, शिराओं या धमनीके साथ न मिलकर, एकदम खूनके सोतेसे मिल गया है ; इसलिये इन्हें भीतरी (आभ्यन्तरिक—internal) स्राव-वाही-ग्रन्थि कहा जा सकता है। जैसे—गलग्रन्थि (thyroid)। मूत्राशयके ऊपरवाली ग्रन्थि (Adrenal), श्लेष्मास्रावी (Pituitary) वगैरह ग्रन्थियोंकी इनमें गणना की जा सकती है और यकृत, क्लोम, दोनों डिम्बकोष और मुष्क-ग्रन्थियाँ भीतरी और बाहरी दोनों काम करनेवाली हैं (अर्थात् आभ्यन्तरिक और वाह्यिक स्रावको वहन करती हैं)।

मनुष्यके जीवनपर इन ऊपर कही हुई ग्रन्थियोंके भीतरी रस या स्रावका बड़ा भारी प्रभाव है। अकसर सभी बीमारियाँ

एक या अधिक ग्रन्थियोंको क्रियाको अधिकता या क्रियाको गड़बड़ीसे पैदा होती हैं। आगे क्रमसे इनका विवरण लिखा जाता है :—



गलगण्ड (घेघा)

(Goitre)

गलेकी गांठ बहुत दिनोंसे बढ़ी हो, पुराना रोग हो जाये तो उसे "गलगण्ड" रोग कहते हैं। इसमें बोखार या प्रदाह—कोई भी उपसर्ग नहीं दिखाई देता। गांठ ज्यादा बढ़ जानेपर निगलनेमें या साँस लेने तथा छोड़नेमें तकलीफ़ होती है। यह रोग मर्दोंको बनिस्बत औरतोंको (खासकर जवानी आनेके समय ज्यादा हुआ करता है, इसका कारणतत्व आजतक अन्धेरेमें ही छिपा हुआ है ; पर इतना कहा जा सकता है, कि पीनेके पदार्थमें किसी खनिज पदार्थकी कमी या कोई बहुत ही छोटे सूक्ष्म जीवाणुका रहना या चूनेका हिस्सा ज्यादा रहना—इन वजहोंसे यह बीमारी पैदा होती है। अगले अध्यायमें कहा हुआ—"बाहर निकला हुआ आँखका गोला मिला गलगण्ड" रोगकी भाँति इसमें गलेकी ग्रन्थिकी क्रियाकी ज्यादती नहीं दिखाई देती। गलेकी गांठ (गलग्रन्थि) का बढ़ना और उससे निकलनेवाले स्रावकी कमी, खाँसी, श्वास-कष्ट, फुन्सियाँ वगैरह इस बीमारीके प्रधान लक्षण हैं।

चिकित्सा

बहुत बार बिना किसी दवाके खाये ही यह बीमारी आराम हो जाती है। नये और कोमल गलगण्डमें, आयोडियम ३x—६x*, आर्स-आयोड ३०—२००, कैल्के-आयोड ३०, बैराइटा-आयोड ३० का सेवन और आयोडिन लगानेसे फायदा होता है। लेपिस-ऐलबम, कैलि-आयोड, स्पञ्जिया ३ (खासकर बहुत पुराने गलगण्डमें), लाइको १२—२०० वगैरह दवाएँ लाभ करती हैं। यदि खानेवाली दवाओंसे फायदा न हो तो X-Ray का प्रयोग और बड़े-बड़े अर्बुद होनेपर, नश्तर लगानेवाले डाक्टरकी सहायता लेनी पड़ती है।

बहिरागत चक्षु-गोलक संयुक्त गलगण्ड

(Exophthalmic Goitre)

इस बीमारीमें गलेकी गांठकी क्रियाकी अधिकता दिखाई देती है। परिवारके किसी भी मनुष्यके शरीरमें इस नये रोगके बीज फैल जानेपर, उसमें चिड़चिड़ापन, शरीरयन्त्रकी गड़बड़ी स्नायुमण्डलकी गड़बड़ी वगैरह उपसर्ग होकर वह वंशगत भी हो जा सकता है। इसका आरम्भ सहजमें निर्णय नहीं

* डाक्टर संण्डस् मिल्स, आयोडियम ६x को इस बीमारीकी अचूक दवा समझते हैं।

किया जा सकता, धीरे-धीरे नीचे लिखे लक्षण प्रकट होने लगते हैं। जैसे—नाड़ीकी चाल १२०—१६०, कलेजा कड़कना, चेहरेकी लाल आभा, अरुणिमा (Erythema), गलेकी गांठका बढ़ना (सूजन कड़ी और स्थिति-स्थापक रहती है), आँखोंका गोला मानो बाहर निकल पड़ता है और आँखोंकी पलकें मानो भीतरकी ओर खिंचती जाती हैं, हाथ आदिका काँपना, दुबलापन, रक्तस्वल्पता, मिचली, कभी-कभी बोखार या पतले दस्त और कभी श्लेष्मावत्-शोथ हो जाता है। (अगला अध्याय देखिये)।

चिकित्सा

कई महीनेतक जब रोगी यह बीमारी भोग लेता है, तब बिना किसी दवाके भी यह कभी-कभी दूर हो जाती है। नयी बीमारीमें—बेल, ग्लोनोइन, विरे-विर, लाइकोपस-वार्जि और पुरानी बीमारीमें—स्पञ्जिया, स्पाइजिलिया (कलेजेमें दर्द और कलेजा धड़कनेके लक्षणमें), नेट्रम-म्यूर ३—२००, सल्फर ३०, सिपिया ३० वगैरह दवाओंका सेवन करना फायदेमन्द है। यदि कोई दवा फायदा न करे, तो गांठका थोड़ा भाग हटा देना या X-Ray का प्रयोग उचित है। उत्तेजक खान-पान मना है। लघुपाक पदार्थका भोजन, शान्त—बिना किसी झंझटके जिन्दगी बिताना आदि शरीर-रक्षाके नियम पालन करने चाहियें।

(क) गलगण्डके साथ जड़बुद्धि और शरीर-विकृति (Cretenism) और (ख) श्लेष्मावत् शोथ (Myxedema)

आजतक इस बातका कोई कारण नहीं मालूम हुआ, कि कभी-कभी गल-ग्रन्थि अपना काम ठीक-ठीक क्यों नहीं कर सकती। थोड़ी उमरमें अगर गल-ग्रन्थिकी क्रिया रुक जाये, तो हमलोग उसे "गलगण्डके साथ जड़बुद्धि और शरीर-विकृति" कहते हैं और बड़ी उमरमें उसकी क्रिया रुक जानेको "श्लेष्मावत् शोथ" कहा जाता है।

(क) गलगण्डके साथ जड़बुद्धि और शरीर-विकृति।—अगर यह बीमारी जन्मकी हो, तो या तो वह ग्रन्थि बिलकुल रहती ही नहीं या होती भी है, तो बोखार वगैरह बीमारियोंकी वजहसे क्षय हो जाती है। किसी देशमें अगर गलगण्ड रोग फैल जाता है, तो वहाँके रहनेवाले इस रोगमें मुब्तिला हो जाते हैं—ऐसी जगह केवल गांठ बढ़ जाती है; परन्तु उसकी क्रिया बिलकुल ही नहीं होती। यदि बीमारी जन्मकी हुई तो बच्चेकी मानसिक वृत्तियाँ अच्छी तरह विकसित नहीं होतीं; उसके तन्तु क्षीण रहते हैं, बदनका चमड़ा सूखा, चेहरा बदरङ्ग, पलकें फूलीं, सारे बदनमें

सूजन, ब्रह्म-रंध्र खुला हुआ, पेशियाँ पतली, मानसिक जड़भाव वगैरह लक्षण दिखाई देते हैं। बोखार या गलगण्डके बाद यह रोग पैदा होनेपर हृष्ट-पुष्ट बच्चेका भी शरीर और मन धीरे-धीरे बहुत कमजोर, फ़ुर्तीरहित और जड़बुद्धि-जैसा हो जाता है।

(ख) श्लेष्मावत् शोथ।—पहले ही कहा गया है, कि बड़ी उमरमें ही यह बीमारी हुआ करती है। पुरुषोंकी बनिस्बत औरतोंको ही यह बीमारी ज्यादा होती है; लेकिन याद रखना चाहिये, कि औरतोंकी ऋतु या गर्भावस्थाकी किसी बीमारीके साथ इस बीमारीका कोई सम्बन्ध नहीं है। हमेशा गलगण्ड रोगकी अन्तिम अवस्थामें यह बीमारी पैदा होती है। सारा शरीर फूल जाना (परन्तु अंगुलीसे दबानेसे फूली हुई जगह बैठ न जाये), बदनका चमड़ा सूखा और पसीनेका न रहना, केश झड़ जाना, स्थिरता, शरीरकी गर्मी स्वाभाविक (९८·४°) से भी कम होना, बहुत सर्दी मालूम होना; याददाश्तका कम हो जाना, बुद्धि बिगड़ जाना, भ्रान्त-विश्वास वगैरह दिमागकी वृत्तियाँ कमजोर पड़ जाती हैं; यक्ष्मा-रोग-प्रवणता, गल-ग्रन्थिशीलता वगैरह क्षय करनेवाले रोगोंके उपसर्ग धीरे-धीरे पैदा होते रहते हैं और अच्छी तरह इलाज नहीं होता, तो बहुत दिनोंतक भोगनेके बाद रोगी मौतके मुँहमें चला जाता है। पहले अनुच्छेदमें लिखा हुआ "गलगण्डके साथ बाहर निकला चक्षु-गोलक" रोगकी अन्तिम अवस्थामें यह बीमारी होती है।

चिकित्सा

गलेकी ग्रन्थिसे जो स्राव या रस निकलता है, उसका रुकना ही इन दोनों बीमारियोंका कारण है, इसलिये स्रावको जारी रखनेके लिये, थाइरायडिन ३x (फी मात्रा ५ ग्रेन, रोज़ तीन बार) सेवन कराना बहुत जरूरी है। दोनों बीमारियोंको इस प्रधान दवाके साथ आर्सेनिक (बहुत जाड़ा लगना, बेचैनी, बदनका चमड़ा खुश्कीभरा होनेके लक्षणमें), कैल्के-कार्ब, टियुबरकुलिनम (यक्ष्मा रोगका लक्षण प्रकट होनेपर) वगैरह दवाएँ कभी-कभी आवश्यक हो सकती हैं। बदन मलना और गर्म कपड़े पहनना रोगीके लिये फायदेमन्द है।

चेहरे और दोनों शाखाओंके तन्तुओंकी अनैसर्गिक विवृद्धि

(Acromegaly)

खोपड़ीमें ("नरदेह परिचय" देखिये) माथेके निचले भागमें "श्लेष्मास्रावी-ग्रन्थि (pituitary gland)" है। यह गांठ दो भागोंमें बँटी हुई है :—भीतरी और बाहरी भाग। भीतरी भागसे जो स्राव निकलता है, वह शरीर-गठन-कार्य और विकासमें सहायता पहुँचाता है। इसीलिये, जीवन-

धारणके लिये यह बहुत जरूरी है और पिछली ग्रन्थिका स्राव मनुष्य-शरीरमें मक्खन-जातीय और शर्करा-जातीय* उपादान जुटाते हैं। इस ग्रन्थिका निर्यास सेवनसे शरीरके खूनका दबाव बहुत तेजीसे बढ़ता है।

इस ग्रन्थिका स्राव बहुत ज्यादा परिमाणमें बढ़ जाता है, तो पूरी उमरवाले मनुष्योंकी बड़ी हड्डियोंमें अस्वाभाविक बाढ़ आ जाती है। इसीको यह रोग होना कहते हैं। चेहरा तथा हाथ-पैरोंके हाड़ बहुत बड़े दिखाई देते हैं, सरमें दर्द (खासकर सामने कपालमें), चर्बीका बढ़ना, शरीरका ताप स्वाभाविक (९८.४°) से भी कम, नाड़ी मृदु, मानसिक उपसर्गोंकी ज्यादती, मिठाई खानेकी इच्छा (कभी-कभी) गलगण्ड वगैरह रोग इस बीमारीके प्रधान लक्षण हैं।

[याद रखना चाहिये, कि गांठके पिछले हिस्सेका स्राव **मस्तिष्क-मज्जाका तरल उपादान** (Cerebro-spinal fluid) के साथ मिला करता है, इसलिये किसी कारणसे इसका स्राव निकलनेमें गड़बड़ी होनेपर श्लेष्मा-स्रावी उपसर्ग पैदा हो जाते हैं।

---

* मक्खन, घी, चर्बी, तेल वगैरह "मक्खन-जातीय" खाद्य हैं; चीनी, चावल, मैदा, बार्ली, आलू, साग-सब्जी वगैरह भोजनके पदार्थ शर्करा-जातीय हैं। इन दोनों तरहके खाद्योंसे हमारे शरीरमें वास्तविक बल और शक्ति आया करती है (ज्यादा विवरणके लिये हमारा प्रकाशित "नरदेह परिचय" देखिये)।

चिकित्सा

इस गांठका सत इस रोगमें व्यवहारकर कोई फायदा नहीं होता। इसलिये थाइरायडिन सेवन करना आवश्यक है। हेका लावा (निम्न-क्रममें), फास्फोरस ३—२०० वगैरह दवाएँ लाभदायक हो सकती हैं।

मौलिक प्लीहा विवृद्धि

(Primary Spleno-Megaly)

यह प्लीहा रोग आप-ही-आप पैदा होकर पुराना हो जाता है—मैलेरिया वगैरह किसी दूसरी बीमारीके बादका उपसर्ग नहीं है। पहले प्लीहा बढ़ जाती है, इसके बाद खूनका घटना, खूनका स्राव या खूनकी कै वगैरह लक्षण दिखाई देते हैं और अन्तमें यकृतकी वृद्धि, पाण्डु, उदर शोथ होकर रोगी बहुत दिनोंतक बीमार पड़ा रहता है।

इसका कोई कारण अबतक मालूम नहीं हुआ; परन्तु मैलेरिया या गर्मी रोगवाले मनुष्योंको सहजमें ही यह बीमारी हो जाती है। इसमें न तो कोई गांठ सूजती है और न किसी तरहका दर्द ही होता है।

चिकित्सा।—कार्डुयस-मेरियानस ० और सियोनेथस २x का सेवन इसकी प्रधान दवाएँ हैं।

फास्फोरस ३, क्रोटेलस ३, रक्त-स्राव आदि लक्षणोंमें फायदा करता है। यदि खानेकी दवासे कोई फायदा न दिखाई दे, तो इङ्गलैण्डके विद्वान डाक्टर व्हीलर और डाक्टर मैक्गावेनकी राय है, कि अनुभवी अस्त्र-चिकित्सकसे प्लीहा कटवा डालनी चाहिये।

उर्द्ध-वृक्कक-कोष व्याधि

(Addison's Disease)

हरएक मूत्र-ग्रन्थिके ऊपरी अंशमें एक-एक ग्रन्थि मौजूद है। इनका विध्वंस हो जाये या गुटिका रोगका हमला हो जाये, तब यह बीमारी होती है, यह रोग बहुत कम होता है। ये बहुत कमजोरी, हृत्पिण्डकी क्रिया क्षीण ; कै, चमड़ा काला अथवा ताम्बेके रङ्गका दिखाई देता है, भूख न लगना, पतले दस्त आना वगैरह प्रधान लक्षण हैं।

चिकित्सा।—एड्रिनेलिन २x—३ और नेट्रम-म्यूर ३० पहले सेवन करना चाहिये, इससे फायदा न हो, तो आर्सेनिक ३०, आर्ज-नाई ३०, साइलिसिया ३० वगैरह दवाओंकी परीक्षा करनी चाहिये। यक्ष्मा रोगका लक्षण प्रकट होनेपर, बैसिलिनम २०० या टियुबर्क्युलिनम बोविन २०० देना चाहिये।

बुक्कास्थि सन्निहित ग्रन्थि-रोग

(Diseases of the Thymus Gland)

बुक्कास्थिके पासकी गांठको अङ्गरेजीमें "Thymus gland" कहते हैं। यह लड़कपनमें मौजूद रहती है, पर जवानी आ जानेपर गायब हो जाती है। इसकी क्रियाका पूरा-पूरा हाल जाना नहीं गया है; परन्तु जननेन्द्रियकी ग्रन्थियोंके विकासके साथ इसका सम्बन्ध है। इस रोगसे एकाएक मौत हो जाती है। यह बचपनकी बीमारी है।

यह बीमारी होनेपर बच्चे पहले मोटे हुआ करते हैं और उनके तालुमें बगलकी ओर गलकोषकी गांठें बढ़ जाती हैं। इसके बाद चमड़ा कोमल पड़ जाता है, बालकगण, बालिका-भावसे भर जाते हैं, केश और जननेन्द्रियकी गांठें जैसी चाहियें, वैसी नहीं विकसित होतीं।

चिकित्सा।—कैल्के-कार्ब, फास्फोरस और टियुबर-क्युलिनम-बोविन (बच्चोंके लिये) इस रोगकी बढ़िया दवा है। इन दवाओंसे फायदा न हो, तो X-Ray परीक्षा करनी चाहिये। ताज़ी साग-सब्जी और फल सुपथ्य हैं। चीनी वगैरह मीठे पदार्थ और आलू, मैदा, सूजी वगैरह श्वेतसार जातिके पदार्थका खाना त्याग देना चाहिये।

दोनों शाखाओंका आक्षेप या टङ्कार

(Tetany)

गलेकी गांठके अलावा छोटी गांठोंके दो जोड़े और भी हैं, इन्हें "अति गल-ग्रन्थि" (parathyroids) कहा जा सकता है। ये शरीरके चूनेके भागको समता रखाकर शरीरकी क्रिया नियन्त्रण करती हैं। इन गांठोंके जोड़ोंकी यह क्रिया घट जानेपर या लोप होनेपर स्नायु-पेशीमण्डल (nerve-muscular-system) बहुत अधिक मात्रामें उत्तेजित होकर दोनों शाखाओंमें (हाथ-पैरोंमें) अकड़न और टङ्कार पैदा हो जाता है।

रोगका बीज शरीरमें फैलनेकी वजहसे यह रोग व्यापक-रूपसे भी प्रकट होता है। जवान आदमियोंको यह बीमारी होनेपर पाकाशय और आँतोंमें गड़बड़ी मच जाती है; बच्चे जब इस बीमारीसे आक्रान्त होते हैं, तब उनको "बालास्थि-विकृति" रोग होता है (बाल-रोगकी "बालास्थि-विकृति" देखिये) या अच्छी तरहसे पोषण न होनेके उपसर्ग (स्वरयन्त्र-प्रदाह, घुण्डी वगैरह रोगोंका अध्याय देखिये) के साथ यह बीमारी जुड़ी हुई रहती है।

लक्षण।—अङ्गोंका अकड़ना, छातीपर बाँहें टेढ़ी कर रखी रहती हैं, अंगूठा तलहत्थीमें लगा रहता है और हाथकी दूसरी अंगुलियाँ, अंगुलियोंकी सन्धिकी ओर झुक

जाती हैं और ऊपरकी सन्धियाँ तथा दोनों पैर फैल जाते हैं। तलहत्थी, तलवे और पैरोंकी अंगुलियाँ टेढ़ीं, मुखमण्डल, स्वरयन्त्र आदि पेशियोंकी सिकुड़नकी अवस्थाके साथ दर्दका न रहना प्रभृति उपसर्ग दिखाई देते हैं। ये उपसर्ग २-५ दिनोंसे लेकर कई हफ़्ते तक दिखाई देते रहते हैं। इस रोगमें बहुत दिनोंतक मुबतिला रहनेपर आँखोंमें मोतियाबिन्द हो जा सकता है। बच्चोंको यह बीमारी होनेपर, वे अकसर अच्छे हो जाया करते हैं।

चिकित्सा।—रोगके आक्रमणके समय ठण्डा पानी ढालना अथवा ठण्डे या बहुत गर्म पानीसे स्पञ्ज (Sponge) द्वारा बदन पोंछना और वेगके समय बेल या नक्स-वोम सेवन करना चाहिये। अकड़न कुछ कम हो जानेपर (या दुबारा हमला होनेके अन्तरवाले समयमें) कैल्के-कार्ब ६—२०० सेवन करना चाहिये।

———

१५ । चर्म-रोग

(Skin-Diseases)

सूचना

साधारणतः मनुष्योंको (यहाँतक कि इलाज करनेवालोंको भी) यह धारणा है, कि "त्वक्" या "चर्म" शरीरका आवरण-भर है ; परन्तु यह अनुमान भ्रम-भरा है ; क्योंकि "त्वक्" शरीरका या शारीरिक-यन्त्रोंका आवरण (ढकना) भर नहीं है। हृत्पिण्ड और पाकाशय आदिकी तरह यह भी प्राणियोंके शरीरका एक अलग जीवन्त यन्त्र है। इसीलिये चमड़ेकी कोई बीमारी होनेपर, उसे मरहम वगैरह बाहरी प्रयोगसे अच्छा करनेकी कोशिश न करनी चाहिये। वास्तवमें ये चर्म-रोग किसी भीतरी यन्त्रकी बीमारीको बताते हैं। इसलिये इन्हें आराम करनेके लिये **भीतरी दवा खाना** ही उत्तम उपाय है। हाँ, चमड़ेकी २-१ ऐसी बीमारियाँ हैं, जो शरीरपर मैल वगैरह जमनेके कारण पैदा होती हैं, उन्हें साबुन वगैरह लगाकर हटा देना अच्छा है ; परन्तु हमेशा जिङ्क-आयण्टमेण्ट, सलफर-सोप, गुलार्डज़्-साल्यूशन, कैलेण्डुला-सिरेट, वैसेलिन वगैरहके साथ तैयार की हुई दवाएँ लगानेपर यद्यपि चमड़ेका ऊपरी भाग आराम हुआ-सा दिखाई देता है ; परन्तु वास्तवमें बीमारी अच्छी नहीं होती—

बाहरी बीमारी एकदम शरीरमें घुस जाती है। इस तरह बाहरी बीमारी शरीरके भीतर प्रवेश कर जानेपर, वह हृत्पिण्डपर हमला कर सकती है। बाहरी प्रयोगसे चर्म-रोग इस तरह शरीरमें प्रवेश करा देनेपर, बहुत जगह बहुत ही हानि हो गई है; कभी-कभी मौततक हो जाती है।

खास-खास मौकेका इलाज

थूजा ३० ।—टीका लगवाने बाद अगर कोई चर्म-रोग दिखाई दे, तो यह बहुत उत्तम दवा है।

बैसिलिनम २०० ।—यक्ष्मा या गण्डमाला धातुवाले लोगोंके चर्म-रोगमें।

बेलिस पेरेनिस ३x ।—पानी-भरी हवा लगने या एकाएक गर्मीके बाद सर्दी लगनेके कारण चर्म-रोग होनेपर।

डाल्कामारा ६ ।—सर्द जगहमें रहनेके कारण (या बरसातमें) चर्म-रोग होनेपर।

आर्निका ३, ३० ।—चोट लगनेकी वजहसे (या गिर जाने बाद) चर्म-रोगमें।

हाइपेरिकम θ, ३० ।—स्नायु-तन्तुपर चोट लगनेके बाद चर्म-रोग होनेपर।

डलिकस ६ ।—सारा शरीर खुजलाता हो, परन्तु शरीरपर कोई फोड़ा-फुन्सी न दिखाई दे।

कार्बोलिक-एसिड ६।—सारे शरीरपर जल-भरी फुन्सियाँ; बहुत खुजली (शरीर घसनेपर खुजली तो कम हो जाये, पर जलन मौजूद रहे)।

मेज़ेरियम ३० (रोज़ एक मात्रा)।—एकज़िमा (eczema) वगैरह चर्म-रोगमें जो सिर्फ शीत-ऋतुमें मौजूद रहते हैं; परन्तु गर्मीके मौसममें गायब हो जाते हैं।

स्पञ्जिया θ।—Dr. Percy कहते हैं, कि रोज़ (दो बून्द मात्रा) तीन बार सेवन करनेपर चाहे जो चर्म-रोग हो, अवश्य ही अच्छा हो जाता है।

किसी-किसी चिकित्सकका कथन है, कि प्याज खानेपर पीला और अस्वस्थ चमड़ा हट जाता है। ऊबड़-खाबड़ या रुखड़े चमड़ेपर विनिगर घसनेसे, चमड़ा मुलायम होता है। अच्छी तरह हाथ धोकर ताजे नींबूका रस मलनेसे हाथ कोमल और सफेद हो जाता है और नख खूबसूरत मालूम होते हैं। Dr. Lutze कहते हैं कि कार्नस θ (cornus alternifolia) पाँच बून्दकर रोज़ सेवन करनेसे फटा चमड़ा (उससे रस निकलना) अच्छा हो जाता है। टामस-कास्युनिस θ सेवन और इसीको लगानेपर शरीरका चमड़ा फटनेकी बीमारीमें बहुत लाभ होता है।

"रोग-लक्षण" अध्यायमें—"तरुण और चिर-रोग" अनुच्छेद देखिये।

व्रण, स्फोटक और क्षत

"फोड़ा-स्फोटक (abscess)" त्वक या चमड़ेके निचले उपादानमें और "व्रण (boils)" या "क्षत (ulcer)" त्वकके ऊपर पैदा होते हैं। "व्रण" छोटी आकृतिका और "स्फोटक" बड़ी आकृतिका होता है।

स्फोटक या फोड़ा
(Abscess)

किसी खास जगह, घिरावके भीतर, चमड़ेके नीचे, किसी उपादानमें पीव पैदा होनेका नाम "स्फोटक" या "फोड़ा" है। हड्डीके ऊपर, मांस-पेशीके भीतर और स्तन, यकृत आदि शारीरिक यन्त्रोंमें यह हमेशा दिखाई देता है। सर्दी लगने या चोट वगैरहकी वजहसे यह पैदा होता है; अस्थि-प्रदाहके बाद भी कभी-कभी स्फोटक (पुराने आकारमें) दिखाई पड़ता है। पहले बीमारीकी जगहपर प्रदाह (अर्थात दर्द, फूलना, लाल होना और गर्म होना) और बोखार; पीछे इस प्रदाहित स्थानमें पीव होता है। ऐसा भी होता है, कि पीव नहीं होता (अर्थात वह सोख लिया जाता है) या वह कष्ट-साध्य नासूरमें बदल जाता है।

संक्षिप्त चिकित्सा

(१) पीव पैदा होनेके पहले—ऐकोन, बेल, मर्क।

(२) पीव पैदा होनेके समय—हिपर-सलफर, साइ-लिसिया, आर्स।

(३) पीव पैदा होनेके बाद—सल्फ, कैल्के-कार्ब, चायना, एसिड-फास।

(४) स्तनमें फोड़ा होनेपर—स्त्री-रोग अध्यायमें "स्तनका फोड़ा" देखिये।

कई दवाओंके खास लक्षण

(पीव पैदा होनेके पहले) :—बहुत दर्द, साधारण सूजन, लाल और गर्म होना, लक्षणमें—बेल २x ; परन्तु बेशी फूल जानेपर और डङ्क मारनेकी तरह दर्द होनेपर, एपिस ३। परन्तु बेल या एपिस किसीसे भी प्रदाह कम न होनेपर, मर्क-सोल ६ देना चाहिये। पोल्टीसके बदले खूब गर्म कैलेण्डुला θ (दस गुने गर्म जलके साथ) धावनका बाहरी प्रयोग करना चाहिये।

(पीव पैदा होने बाद) :—हिपर-सलफर ६ ; परन्तु पतला और पानीकी तरह पीव हमेशा बहता रहता हो तथा घाव जल्दी न अच्छा हो तो साइलिसिया ६—३०। ऊपर कहे हुए ढङ्गसे कैलेण्डुला θ गरम पानीके साथ लगानेपर फोड़ा अकसर पक जाता है और फूट जाता है। फोड़ा फट जानेपर या

नश्तर लगवानेके बाद कैल्के-सल्फ ६x विचूर्ण फी मात्रा ५ ग्रेन सेवन करना चाहिये और कैलेण्डुलाका मरहम लगाना चाहिये। पुराने फोड़ेसे बहुत दिनोंतक पीव निकला करता हो तो, सिलिका ३०—२००। नासूर होनेपर फ्लोरिक-एसिड ६। दाँतकी जड़में फोड़ा होनेपर, मर्क-वाइ ३० और मलद्वारमें होनेपर, साइलिसिया ३०। खून खराब होनेके लक्षणमें, पाइरोजिन ३०। आर्सेनिक, आर्निका और चायनाकी भी कभी-कभी जरूरत पड़ सकती है।

आनुसङ्गिक चिकित्सा।—पहले हल्का पथ्य, इसके बाद पुष्टिकर, परन्तु सहजमें पचने योग्य भोजन देना चाहिये। पीव पैदा होनेके पहले और बाद गर्म कैलेण्डुलाके धावनसे धोनेकी बात ऊपर ही कही जा चुकी है। फोड़ा धुल जाने बाद, महीन पतला कपड़ा उस धावनमें भिगोकर फोड़ेके छेदमें जितना जा सके, उतना डाल देना चाहिये। इसके बाद धावनमें कपड़ेका दूसरा टुकड़ा भिगोकर बैण्डेजकी तरह बाँध देना चाहिये। कैलेण्डुला न मिले तो तुखमारी (तुत्मलङ्गा) या नीमकी पोल्टीस काममें लायी जा सकती है। कभी-कभी नश्तर लगवानेकी भी जरूरत पड़ती है।

व्रण या विद्रधि

(Boils)

त्वक या चमड़ेपर सूजन (swelling) के साथ अगर वहाँ दर्द और गर्मी मालूम हो, तो उसे "व्रण" कहते हैं। इसमें हमेशा नोक निकला करती है। फोड़ेकी तरह इसमें पहले प्रदाह पैदा होता है, फिर पीव पैदा होता है। उसमें मुँह* हो जाता है। व्रणके भीतरी अंशको जो बीचमें रहता है, उसे "खील (core)" कहते हैं। खील पीवके साथ निकल जानेपर जलन और तकलीफ़ कम हो जाती है।

खून खराब हो जाने या देह दुबली हो जानेपर, छोटे या बड़े फोड़े होते हैं। कोई-कोई व्रण बिना पके ही बैठ जाता है। जो व्रण पैदा होते ही टपक पैदा कर देता है और कड़ा हो जाता है, वह अकसर पक जाता है।

चिकित्सा

पीव पैदा होनेके पहले, रोगवाली जगह सूजती है, लाल होती है और उसमें टपककी तरह दर्द होता है और गर्मी तथा जलन मालूम होती है, बेल १x। फोड़ेमें पीव पैदा होनेके समय, मर्क्यूरियस-सोल ६। फोड़ा सड़नेकी तैयारी होनेपर, आक्रान्त स्थानमें जलन हो, साथ ही कमजोरी मालूम

* किसी-किसी व्रणमें मुह बिलकुल नहीं होता।

होती हो, आर्सेनिक ३x—३०। व्रण या फोड़ा बैठा देनेकी जरूरत होनेपर हिपर-सलफर ६—२००; मगर पकाना हो, तो हिपर-सलफर २x विचूर्ण (शरीरमें पारेका दोष रहनेपर यह ज्यादा फायदा करता है), पीव ज्यादा निकलता हो या फोड़ा पुराना हो जाये, तो साइलिसिया ३०। छोटे-छोटे फोड़े होते रहनेपर, आर्निका ३। बार-बार फोड़ा हो, तो सलफर ३०। बराबर तकलीफ़ देनेवाला फोड़ा होता हो और कोई दवा फायदा न करती हो, तो एकिनेशिया θ पाँच बून्द (दिनभरमें दो या एक मात्रा), फोड़ा सड़कर उससे बदबू निकलती हो, तो दस भाग गर्म पानीके साथ एक भाग कैलेण्डुला θ मिलाकर, जखमवाली जगह धो डालनी चाहिये।

किसी तरहका ज़हरीला या और कोई फोड़ा होनेपर पहले हाइपेरिकम २०० सेवन करना चाहिये और गर्म-गर्म सेंक देना चाहिये। इससे अकसर सब तरहके फोड़े बहुत जल्द अच्छे हो जाते हैं। गत युरोपीय महायुद्धके समय लड़ाईके मैदानमें जहाँ कमान गार्डनका खीमा था, वहाँ १९१८ ईस्वीके अगस्त महीनेमें सिपाहियोंको फोड़ा होना आरम्भ हो गया था। वहाँ पहले ऐलोपैथिक मतसे इलाज किया गया, इसके बाद हाइपेरिकम २०० सेवन करा और फोड़ेपर गर्म सेंक देकर इलाज किया गया। सभी अच्छे हो गये। कभी-कभी किसी रोगीके फोड़े अच्छे हो जानेपर एक फोड़ा पैदा हो जाता, परन्तु वह आप ही अच्छा हो जाता था, किसी

दवाके खिलानेकी जरूरत नहीं पड़ती थी। परीक्षा करनी चाहिये। (ज्यादा हालके लिये, The Homœopathic world for January 1919 देखिये)।

यदि ऊपर बताई हुई दवाओंसे फायदा न हो, तो ज़हरीला फोड़ा या सड़े बोखारकी दवाओंमेंसे दवा चुन लेनी चाहिये।

आनुसङ्गिक चिकित्सा।—पहले कहे हुए "स्फोटक" की आनुसङ्गिक चिकित्सा देखिये।

———

क्षत (घाव)

(Ulcer)

उजड़े हुए चमड़े या कोमल चमड़ेके ऊपर पीव पैदा होना या वहाँसे पीव निकलनेका नाम "जखम" या "घाव है। चोट लगना, कुचल जाना, जल जाना वगैरह बाहरी कारणोंसे चमड़ा फट जानेपर या उपदंश वगैरह धातु-दोष होनेकी वजहसे (परिशिष्ट "ख" देखिये) या ज्यादा मात्रामें पारा वगैरह खानेसे, शरीरका रस और खून बिगड़ जाता है और जखम पैदा हो जाता है। इस जखमसे कभी पानीकी तरह, कभी गाढ़ा बदबूदार पीव निकलता है; कभी-कभी घाव सूखा और बिना दर्दका होता है। कभी-कभी जखममें नासूर हो

जाता है या चारों ओर फैलकर बड़ी ही तकलीफ़ देता है और दुरारोग्य हो जाता है; कभी-कभी जखमसे खून निकलता है और उसका मांस निकल जाता है।

चिकित्सा

जखमसे खून गिरना, आगमें जलनेकी तरह जलन, जखमके अगल-बगलकी जगह कड़ी हो जाना, गर्म होना और थोड़ा-थोड़ा खून मिला पीव या काले रङ्गका पीव निकलना आदि लक्षणोंमें—**आर्सेनिक ६, ३०**। पाकस्थलीको श्लैष्मिक-झिल्लीमें जखम होनेपर, शुद्ध जायतूनका तेल फी मात्रा ४ ड्राम दिनमें तीन बार सेवन करना चाहिये। गण्डमालासे पैदा हुए जखममें, सलफर ३० या कैल्केरिया-कार्ब ३०। जलन होनेवाले लाल रङ्गके जखममें, बेलेडोना ३x। सामान्य जखममें धीरे-धीरे पीव पैदा होते रहनेपर, साइलिसिया ३०। पीव बन्द करनेके लिये, **हिपर-सलफर ३०**। (पारेका दोष रहनेपर यह और भी ज्यादा फायदा करता है)। गर्मी-रोगसे पैदा हुए जखममें, मर्क्युरियस ६ या एसिड-नाइट्रिक ६। स्राव होनेवाले जखममें—**मर्क-सॉल ६**। पुराने जखममें, किसी दूसरी दवाके प्रयोगसे फायदा न होनेपर—**सलफर ३०**। ("पुराना जखम" देखिये)। अगर जखम सड़ना शुरू हो गया हो, तो कैलेण्डुला θ—१ आउन्स आधा सेर पानी मिलाकर, उस पानीमें एक साफ़ कपड़ा भिगोकर जखमके ऊपर पट्टी देनेसे सड़ना बन्द हो जाता है।

पुराना जखम (या नासूर) की चिकित्सा

पहले सलफर ३० प्रयोग करने बाद पुराने नासूरका इलाज शुरू करना चाहिये। जखमसे सहजमें खून गिरना; आगमें जलनेकी तरह जलन, बहुत दर्द और जखमकी चारों ओरका चमड़ा कड़ा पड़ जानेके लक्षणमें, आर्सेनिक ३०। बदबूदार गाढ़ा पीव बहना, जखममें खुजली या डङ्क मारनेकी तरह दर्द, मांस बढ़नेवाले सूजे घावमें, ग्रैफाइटिस ६। शरीरमें कई जगह सड़ा घाव और उसके चारों ओर छोटी-छोटी फुन्सियाँ और जखमसे बदबूदार पीव बहनेके लक्षणमें— लैकेसिस ६। जखम अकड़नसे भरा और सहजमें ही खून फेंकनेवाला, रातमें तकलीफ बढ़ना; पीव जमकर पपड़ी पड़ जाती है और उसके नीचे बहुत-सा पीव इकट्ठा हो जाता है; इस लक्षणमें, मेज़ेरियम ३, ३०। पेशियोंकी कमजोरीकी वजहसे पैदा हुए पैरके जखममें हाइड्रैस्टिस २x। खुजली, चबानेकी तरह, टपक या काटनेकी तरह दर्द, जखमकी चारों ओर हाथ लगानेसे सहजमें ही खून जाने लगना और उस खूनसे खट्टी बदबू आना, लक्षणमें—एसिड-सल्फ्यूरिक ६ (यहाँतक कि सड़नेवाला घाव यदि हड्डीतक पहुँच गया हो, उसमें भी यह फायदा करता है)। पारेके अपव्यवहारकी वजहसे पुराने नासूरवाले घावमें, लाइकोपोडियम १२ या एसिड-नाइट्रिक ६। गहरा घाव, उसका किनारा ऊँचा; रङ्ग लाल; जरा छू देनेसे ही दर्दका बढ़ जाना और अकसर

घावसे खूनका गिरना, लक्षणमें—मर्क-सोल ६। फास्फो ३०, कैलि-बाई, पियोनिया ३, हैमा ३, कैलि-आयोड θ, कार्बो-वेज ३०, क्रोटेलस ३०, कैल्के-फ्लोर १२x विचूर्ण, साइलिसिया ३० और हिपर-सल्फ ३० की भी कभी-कभी जरूरत पड़ती है।

आनुसङ्गिक चिकित्सा।—मछली, मांस, खटाई, मीठे पदार्थ, खाना मना है। सूजीकी रोटी, दूध, हलवा, दाल, शोरबा वगैरह फायदेमन्द है। जखमको हमेशा ढँके रखना चाहिये। जखमपरकी पट्टी जरा गर्म पानीसे भिगोकर उठाना और सूखे कपड़ेसे पोंछ देना चाहिये।* जखम धो डालने बाद दस बून्द कैलेण्डुला छः ड्राम या दो तोले पानीमें मिलाकर, उस पानीमें कपड़ा भिंगो, रोगवाली जगहपर पट्टी लगानेसे फायदा होता है।

घनबटी या फुन्सी

(Pimple)

कड़ा, नोकदार, अलग-अलग, लाल और बहुत ऊँचा न हो, ऐसे उद्भेदको "फुन्सी" कहते हैं; परन्तु यह रक्त-स्रावी-ग्रन्थि और केशोंके भीतरी भागका पुराना प्रदाह है।

नयी बीमारीमें—कार्बो-वेज ६। पुरानी बीमारीमें—रेडियम-ब्रोम ३० (हफ्तेमें एक बार एक मात्रा) या कैलि-

* हाइड्रैस्टिस (θ) घावनसे जखम धोनेसे जल्दी अच्छा होता है।

ब्रोम ३x या सलफर ३०। फुन्सी चमकीली लाल रङ्गकी दिखाई दे, तो कार्बो-ऐनिमेलिस ६ या हाइड्रोकोटाइल ३x (औरतोंके जरायुकी गड़बड़ीसे उत्पन्न), रसटक्स ३ या रेडियम-ब्रोम ३० (हफ़्तेमें एक मात्रा) अथवा आर्स-आयोड ३x (दुरारोग्य बीमारीमें भोजनके बाद सेव्य)। फुन्सीवाली जगहपर सलफर θ (एक भाग+पानी आठ भाग) धावन बनाकर लगाना फायदेमन्द है।

पीली फुन्सियाँ

(Impetigo)

आधे चन्द्रमाकी तरह (कुछ पीली पीव-भरी फुन्सियाँ, पहले अलग-अलग निकलते हैं और पीछे जुड़ जाती हैं) नाक, कान, माथा, चेहरा या दूसरे-दूसरे अङ्गोंमें निकलती हैं, इन्हें "पीली फुन्सियाँ" कहते हैं। गाढ़ा, पीला, बदबूदार पीव निकलना और पपड़ी जम जाना, फुन्सीवाली जगहके नीचेका चमड़ा कोमल और लाल होना वगैरह इस रोगके प्रधान उपसर्ग हैं। यह एक लरछुत बीमारी है। जैसा चाहिये, वैसा भोजन न मिलने और चमड़ेका उपदाह, इस रोगका गौण कारण है।

चिकित्सा।—नयी बीमारीमें—वायोला-ट्राइ ३ सेवन और परिस्रुत पानीसे धोना फायदेमन्द है। पुरानी बीमारीमें,

ऐण्टिम-टार्ट ३ सेवन और काडलिवर आयल तथा पुष्ट करनेवाला आहार फायदा पहुँचाता है। साइक्यूटा ३ (बहुत जलन); क्रोटोन-टिग ६ (डङ्क मारनेकी तरह खुजली); कैल्के-म्यूर १x (माथेमें पपड़ीदार फुन्सियाँ); आर्स ३०; ऐण्टिम-क्रूड ३०; कैलि-बाई ३०; मेजेरियम ३० वगैरह दवाएँ सेवन और कार्बोलिक-एसिडका मरहम लगाना फायदा करता है। ("अकौता" रोग देखिये)

कीड़े काटनेकी वजहसे उपदाह

(Irritation)

शरीरमें बिछुआ लगने या चींटी, मच्छड़, च्यूंटे, खटमल, मधुमक्खी वगैरहके काटनेसे उपदाह पैदा होता है। लिडम θ दस-बीस बून्द थोड़े पानीमें मिलाकर लगाना लाभदायक है। हैमामेलिस θ या स्पिरिट-कैम्फर या एपिस ३x लगानेसे भी फायदा होता है। यदि दवा न मिल सके, तो चूनेका पानी या प्याज पीसकर उस जगह घसनेसे जलन कम हो सकती है। सोनेके पहले हाथमें साबुन लगाकर सोनेसे मच्छड़ोंके उपद्रवसे नुकसान नहीं होता।

गांठें-भरी पेशी-बन्धनी

(Ganglion)

इस रोगमें एक या ज्यादा पेशियोंको बाँधनेवाली नसोंकी हलकी सूजनके साथ कमजोरी मालूम होती है; परन्तु कोई दर्द नहीं रहता। रूटा २x या बेञ्जोयिक-एसिड θ (पन्द्रह ग्रेन+रेक्टिफायड-स्पिरिट ३ ड्राम+परिस्रुत पानी आठ आउन्स) का धावन सवेरे, शाम रोगवाली जगहपर लगाना चाहिये।

ज़हरीला घाव

(Anthrax or Malignant Pustule)

यह नयी और लरछुत बीमारी है। एक तरहके कीटाणु (Bacillus Anthracis) या विष इस रोगके मुख्य कारण हैं। कई हजार बरस पहलेसे इस रोगका प्रादुर्भाव हुआ है। बकरी, गाय, भैंस वगैरह जानवरोंके शरीरमें यह बीमारी पहले-पहल होती है। जब यह ज़हर मनुष्यके शरीरमें घुस जाता है, तब बदन खुजलाने लगता है और पचीस घण्टेके भीतर वह ज़हरीली जगह, कीड़े काटनेकी तरह लाल हो जाती है और फूल जाती है। इसके बाद यह बड़ी पानी-भरी

फुन्सियोंकी तरह दिखाई देती है। जब यह फुन्सी गल जाती है, तब जखम पैदा हो जाता है। रोग यदि कड़ा हुआ, तो बोखार, पतले दस्त, कै, पसीना वगैरह लक्षण प्रकट होते हैं। रोग भीषण हो जानेपर, हिमाङ्ग होकर रोगी मर जाता है।

चिकित्सा

सिकैलि ३।—रोगवाले स्थानका सड़ना (gangrene) शुरू होनेपर। सर्द प्रयोगसे घटना और गर्मी से बढ़ना लक्षणमें।

हाइपेरिकम २००।—इस दवाके सेवन और फोड़ेपर गर्म सेंक देनेसे, जखम अकसर आराम होने लगता है। पहले यही दवा खाना अच्छा है। दो-एक दिन खानेपर भी अगर फ़ायदा न मालूम हो, तो लक्षणके मुताबिक दूसरी दवा देनी चाहिये।

एन्थ्रैसिन ३०।—खून खराब होकर बदनमें बहुत जलन मालूम होनेपर।

लैकेसिस ६।—फुन्सियाँ नीली या काली आभा लिये होनेपर।

टैरेण्टुला ३०, २००।—बैंगनी रङ्गका दूषित जखम, भयानक जलन, डङ्क मारनेकी तरह यन्त्रणा, बहुत कमजोरी।

मैलाग्रिड्नम ३० ।—पतले दस्त, काली आभा लिये पतले दस्त। फुन्सियाँ देखनेमें चेचककी गोटियाँ-जैसी।

बेलेडोना ३, आर्सेनिक ३ (सान्निपातिक—Typhoid ज्वरके लक्षणमें), एपिस ३x, कार्बो-वेज ६, हिपर-सलफर ६ वगैरह दवाओंकी बीच-बीचमें जरूरत पड़ सकती है (सड़े बोखारकी दवाएँ देखिये)।

जापान वगैरह विदेशोंसे आया हुआ, केश झाड़ने, दाँत माँजने वगैरहके ब्रशोंको पहले गर्म पानीके साथ साबुन या कपड़े धोनेवाला सोडा या फर्मालिन २ औन्स+आधा पाइण्ट पानी) से धोना चाहिये। आजकल कलकत्ता और भारत-वर्षके बहुतसे स्थानोंमें जापानी ब्रशोंका व्यवहारकर, बहुतसे मूर्ख नाई, इस रोगको फैलाकर, बहुतोंके प्राण ले चुके हैं। (भारत सरकारके "Director of Information" प्रचारित विज्ञापन, अगस्त सन् १९२० ईस्वी देखिये)।

मुँहासा (Puberty Boils)

जवानीके उठानके समय स्वास्थ्य खराब होने और ऋतुकी गड़बड़ी होनेकी वजहसे, युवक-युवतियोंके शरीरकी गाँठें फूलकर, ज्यादातर चेहरा, कपाल, नाक और गलेमें फुन्सियाँ या छोटे-छोटे खोलदार फोड़े पैदा हो जाते हैं। इनका नाम ही "मुँहासा" है। बोरैक्स ३x विचूर्ण खाना और सोहागेका

लावा* चूरकर जायतूनके तेलमें मिलाकर फोड़ेपर लगाना चाहिये ; नाक या दोनों ओठोंके फोड़ेमें यह ज्यादा फायदा करता है। कैल्क-कार्ब ६, एसिड-नाई ६ (खासकर औरतोंके लिये), ग्रैफाइटिस ६, सल्फ्यूरिक-एसिड ३ वगैरह दवाएँ रोगकी हालतके मुताबिक फायदा दिखाती हैं। "व्रण" "जखम" और "फोड़ा" वगैरहकी दवाएँ देखिये।

पृष्ठ-व्रण

(Carbuncle)

यह एक तरहका बड़ा, चिपटा, गोल, ज़हरीला फोड़ा होता है। इसका रङ्ग कुछ कालिमा लिये लाल होता है। एक तरहके जीवाणु इस रोगके मुख्य कारण हैं। यह व्रण खासकर गर्दन और पीठमें हुआ करता है। पीठपर होनेपर "पृष्ठ-व्रण" या "पृष्ठाघात" कहलाता है। अगर अण्डलाल मिला पेशाब या बहुमूत्रवाले रोगीको यह फोड़ा हो जाता है तो जीनेकी उम्मीद बहुत ही कम रहती है। गर्दनके पिछले हिस्सेके नीचे या कमरपर भी यह फोड़ा हुआ करता है। इसमें साधारण फोड़े या व्रणकी तरह बीचमें एक मुँह न होकर चलनीकी तरह कितने ही छोटे-छोटे छेद हो

---

* थोड़ी-सी आगपर सोहागाका टुकड़ा रखनेसे ही सोहागाका लावा तैयार होता है।

जाया करते हैं और इन सब छेदोंसे पतले फेनकी तरह मवाद निकला करता है। पहले यह थोड़ी जगह घेरता है, परन्तु धीरे-धीरे यह फैलता जाता है। यह व्रण पहले लाल, इसके बाद काली आभा लिये मालूम होता है, हमेशा दो-तीन हफ़्ते बाद जहाँ व्रण होता है, वह और उसके नीचे गहरे अंशतक सड़ने लगता है। बोखार, सरमें दर्द, जलन, अरुचि, कमजोरी, नींद न आना वगैरह लक्षण दिखाई देते हैं। साधारणतः चालीस या इससे ज्यादा उमरवालोंको ही यह बीमारी हुआ करता है।

प्रतिषेधक।—प्रदाहवाली अवस्थामें (अर्थात् पीव होनेके पहले) बेलेडोना १x या साइलिसिया ३x विचूर्ण खाना (या पहले स्पिरिट-कैम्फर और इसके बाद जायतूनका तेल लगा रखनेसे) व्रण जोर नहीं पकड़ पाता है।

चिकित्सा।—रोगके शुरूसे ही **ऐन्थ्रासिनम ३०**, तीन घण्टेका अन्तर देकर खिलानेसे रोग बढ़ नहीं सकता और दूसरी दवा देनेकी जरूरत नहीं पड़ती। अगर इससे फायदा न हो, तो आगे लिखी दवाएँ लक्षणके अनुसार देनी चाहियें। फोड़ेवाली जगह फूली हुई, चौड़ी, लाल और जलन या डङ्क मारनेकी तरह दर्दके लक्षणमें, **एपिस-मेल ३**। व्रण अगर बढ़ने और सड़ने लगे, तो **आर्सेनिक ३x-३०**। फोड़ेवाली जगह चमकीली लाल, खोंचा मारनेकी तरह दर्द, ऐंठने या चिलक मारनेकी तरह दर्द, अच्छी तरह नींद न

आना, लक्षणमें—बेलेडोना ३x (पीव पैदा होनेके पहले प्रदाहवाली अवस्थामें, बार-बार बेलेडोना देना अच्छा है)। जलनवाले दर्दके साथ खून बहता हो या बदबूदार पीव निकलता हो, कमजोरी बढ़ती जाती हो, तो कार्बो-वेज ६—३०। तेज़ दर्द और जलनके साथ बदबूदार पीव बहना और निचले विधान-तन्तुका सड़ने लगना लक्षणमें, साइलिसिया ३० या लैकेसिस ६। टैरेण्टुला-क्युबेनसिस ३०, तकलीफ़ हटानेको एक बहुत बढ़िया दवा है।

आनुसङ्गिक चिकित्सा।—गर्म पानीमें फ्लानेल भिंगोकर सेंक देनेसे बहुत फायदा होता है। मैंदे या तीसीकी पोल्टीस देनेसे फोड़ेका टटाना कम पड़ जाता है। कैलेण्डुलाके मरहम या बोरासिक-एसिडके मरहमसे (एक ड्राम बोरासिक-एसिड चूर्ण और एक आउन्स ओलिव आयल या लार्डके साथ) फोड़ा बाँध रखना और नीमकी पोल्टीस इस बीमारीमें ज्यादा फायदा करती है। पीव निकालना हो, तो छोटे हंसपगीके कच्चे पत्तेकी पोल्टीस देना अच्छा है। हाइड्रोजेन पैरोक्साइड (Hydrogen-Peroxide) से रोज़ दो-तीन बार धोना और पोंछ डालना और छोटे हंसपगीके पत्तेकी पोल्टीस देना फायदेमन्द है। पोल्टीसपर थोड़ी कोयलेकी बुकनी छिड़क देनेसे सड़ना और बदबूका आना बन्द हो जाता है। काण्डिज-लोशनसे घाव धोनेसे सड़न और बदबू बन्द होती है। रोगीका बिछावन और कपड़े-लत्ते साफ़-सुथरे रखना उचित

है। सागू, दूध, बार्ली, मांसका शोरवा, काडलिवर आयल वगैरह हलका, पर पुष्ट पथ्य देना चाहिये।

अरुणिमा

(Erythema)

इसमें बदनका चमड़ा लालभर होता है; फोड़े या पीव वगैरह नहीं पैदा होते, बदनमें खुजली नहीं होती।

बेलेडोना ३—६ इसकी बढ़िया दवा है। बूढ़ोंकी बीमारीमें, मेजेरियम २x फायदा करता है। भोजनके बाद चेहरा लाल हो जानेपर नक्स-वोमिका ३x—३० सेवन करना चाहिये। अगर वात रोगके साथ अरुणिमा हो, तो एपिस ३x—३०, रस-टक्स ६ या कैलि-बाई ६ फायदा करता है।

खुली हवामें घूमना, हलका पथ्य, भोजनके समय किसी तरहकी चिन्ता न करना, इच्छा-पूर्ण पानी पीना और नहाते वक्त बदन मलना वगैरह फायदेमन्द हैं।

खाल उधड़ जाना

(Intertrigo)

बदनका चमड़ा आपसमें रगड़ खाकर, छिलकर लाल रङ्गका हो जाता है—पुट्ठे, बगल, मलद्वार वगैरह इस तरह हो जानेको खाल उधड़ना कहते हैं।

चिकित्सा

बच्चोंकी बीमारीकी कैमोमिला ६ बढ़िया दवा है। बार-बार बीमारीका हमला होनेपर लाइको ६ देना चाहिये। तकलीफ़वाली जगहमें दर्द होनेपर, मर्क-सोल ६। ज्यादा घूमनेकी वजहसे जांघें छिल जानेपर, इथ्यूजा २।

आनुसङ्गिक चिकित्सा।—कुछ गर्म पानीसे आक्रान्त अङ्गको रोज़ दो-तीन बार धो डालना और अच्छी तरह पोंछकर, सज्जी मिट्टीकी बुकनी उसपर छिड़क देनी चाहिये। हाइड्रैस्टिस θ एक भाग+दस भाग ग्लिसरिनके साथ मिलाकर, बीमारीवाली जगहपर लगा देनेसे फायदा होता है।

आमवात (जुलपित्ती)

(Urticaria)

बरहंटा छू जाने या बर्रें काटनेसे बदनमें जिस तरह लाल-लाल और सादे चकत्ते हो जाते हैं या शरीर खुजलाने लगता है ; आमवातमें भी ठीक उसी तरह दाग पड़ता है। इसीको जुलपित्ती निकलना भी कहते हैं। यह बीमारी एकाएक पैदा होकर कई घण्टोंमें ही या कई दिन ही रहकर अच्छी हो जाती है। रोग पुराना होनेपर रोगी तकलीफ़ पाता है।

शरीरकी कितनी ही जगहें फूल उठती हैं और खुजलाने लगती हैं, फूली जगह गर्म रहती है, यही आमवातके खास लक्षण हैं। चिङ्ङ्ड़ी (चिङ्गट) मछली; केंकड़ा या भारी चीजें खाना, कब्जियत या सर्दी लगनेकी वजहसे यह बीमारी हो सकती है।

संक्षिप्त चिकित्सा

(१) नये आमवातमें—एपिस, आर्टिका-युरेन्स, क्लोरेलम् २x विचूर्ण।

(२) पुरानी बीमारीमें—किनिनम-सल्फ (बार-बार बीमारी होनेपर), आर्स, एपिस, सल्फ, क्लोरेलम २x विचूर्ण।

(३) पाकाशयकी गड़बड़ीसे पैदा हुई बीमारीमें—ऐण्टिम-क्रूड, नक्स-वो, पल्स।

(४) सर्दी लगनेके कारण पैदा हुई बीमारीमें—ऐकोन (सर्दीके दिनोंकी हवा या सूखी सर्दी लगनेकी वजहसे); डाल्का (गीली या बरसाती हवा लगनेके कारण)।

(५) दूसरे-दूसरे उपसर्गोंके साथ—ऐकोन (बोखारके लक्षणमें); क्लोरेलम २x विचूर्ण (बिछावनकी गर्मीसे होनेपर); ब्रायोनिया (एकाएक आमवात दब जानेपर); इग्नेशिया या ऐनाका (मानसिक अवसन्नतासे पैदा हुई बीमारीमें); काफिया (नींद न आनेके साथकी बीमारीमें); ब्रायो या रसटक्स अथवा सिमिसिफ्यूगा (वात रोगियोंके लिये); कोलचि (गठिया

वात रोगवाले रोगियोंके लिये); इपिकाक या आर्स (दमावाले रोगियोंके लिये); पल्स या हाइड्रेस्टिस (जरायुकी गड़बड़ीसे पैदा हुई बीमारीमें)।

कई दवाओंके विशेष लक्षण

दाह, बोखार, प्यास और लाल रङ्गके दाने होनेपर, ऐकोनाइट ३x। फुन्सियोंका निचला हिस्सा लाल और बीचका हिस्सा सफेद, जलन या डङ्क मारनेकी तरह दर्द या बहुत कुटकुटाना या सुरसुराना, फूल उठना वगैरह लक्षणोंमें, आर्टिका युरेन्स ३x या एपिस ३x। आर्टिका-युरेन्स और एपिसमें फर्क यह है, कि—चकत्ते एकाएक बैठ जानेपर कै, अतिसार और प्रलापका लक्षण हो, तो आर्टिका और फुन्सियाँ बहुत फूलीं और डङ्क मारनेकी तरह तेज़ दर्द रहनेपर, एपिस-मेल; अगर आर्टिका या एपिसके प्रयोगसे फायदा न हो तो क्लोरैल-हाइड्रेट ३x। पाकाशय-यन्त्रकी गड़बड़ीकी वजहसे बीमारी पैदा होनेपर—ऐण्टिम-क्रूड, नक्स-वोमिका या पल्सेटिला। केंकड़ा, चिङ्गड़ी मछली खानेकी वजहसे या पानीमें भींगनेके कारण यह बीमारी होनेपर रस-टक्स ३—३०। यकृतके दोषके साथ आमवातमें, ऐस्टेकस-फ्लूवियेटिलिस ३; सर्दी लगकर (खासकर बरसातमें) होनेपर, डाल्कामारा ६। बीमारीकी पुरानी हालतमें—एपिस, आर्सनिक, सलफर कुप्रम-आर्स, ऐस्टेकस-फ्लूव ३—३० या नेट्रम-म्यूर

देना चाहिये ; इन सभी दवाओंके ६ ठें क्रमसे काम हो जाता है। अगर ये सभी दवाएँ बेफायदा साबित हो जायें, तो स्कूकम-चक ३x विचूर्ण सेवन करना चाहिये।

आनुसङ्गिक चिकित्सा।—पानीमें भींजना, ओस या सर्दी या सर्द हवा लगना, चिङ्गड़ी मछली या केंकड़ा खाना अथवा पेटकी बीमारी पैदा हो जाये, ऐसी भारी चीजें न खानी चाहिये। सुसुम पानीमें नहाना, हल्की चीजें खाना फायदेमन्द है। नींबू काटकर उससे उस जगहको घसना चाहिये, जहाँ चकत्ते हुए हों, इससे फायदा होता है।

कण्डुयन (खुजली)

(Prurigo)

यह चमड़ेकी एक पुरानी बीमारी है। इसमें बदन खुजलाता है और चमड़ेका रङ्ग बदलकर एक तरहकी फुन्सियाँ पैदा हो जाती हैं। सारा शरीर (खासकर मलद्वार और जननेन्द्रिय) में बहुत खुजलाहट, यहाँतक कि खुजलाते-खुजलाते खून निकलने लगता है। नींद न आना वगैरह इस बीमारीके विशेष लक्षण हैं। बुढ़ापा, पुरानी बीमारी भोगना, जीवनी-शक्तिकी कमी, साफ़-सुथरा न रहना या भारी चीजें खाना, बहुत गर्मी या सर्दी लगना वगैरह कारणोंसे यह बीमारी हो सकती है।

चिकित्सा

रेडियम-ब्रोमिटम ३० (हफ़्तेमें सिर्फ १ मात्रा) इसकी बहुत बढ़िया दवा है।

नयी बीमारीमें—ऐकोन ३x (बोखारके साथ खुजली) और सलफर ३० (बहुत खुजली, चमड़ा सूखा, शामके वक्त और खाटपर सोनेपर बीमारीका बढ़ना)।

पुरानी बीमारीमें—आर्स ३x—३० (जलन पैदा करनेवाला स्राव, कमजोरी और पानीकी तरह रस निकलना)। इग्नेशिया ३ (शरीर खुजलानेके बाद मच्छड़ काटनेकी तरह शरीरका चमड़ा फूल उठना)। डलिकस, फेगोपाइरम, कास्टि, लाइको, (मलद्वार खुजलाना), मर्क, रसटक्स, मेजेरि, ऐपीसाई, कार्बो-वेज वगैरह दवाएँ कभी-कभी आवश्यक होती हैं।

आनुसङ्गिक चिकित्सा।—रोज़ ठण्डे या कुछ गर्म जलमें नहाना या बदन धोना, स्वास्थ्यकर भोजन खाना-पीना, खुली हवामें घूमना, पीठी या अँचार वगैरह खाना और मरहम वगैरह न लगाना अच्छा है। जरूरत पड़नेपर मेजेरियम (एक भाग+पानी दस भाग) का धावन लगाया जा सकता है। शरीर जितना ही कम खुजलाया जाये, उतना ही अच्छा है।

लाल या सफेद दाने

(Strophulus)

बच्चोंके सारे बदनमें (खासकर चेहरे और मसूढ़े, गर्दन तथा दोनों बाँहोंमें), आल्पीनकी नोककी तरह लाल या सफेद फुन्सियाँ होती हैं। ये देखनेमें आमवात-जैसी ही होती हैं।

कैमोमिला ६ इसकी बढ़िया दवा है। एपिस ३x, ऐण्टिम-क्रूड ६ (अजीर्णके साथ जीभपर सफेद लेप-चढ़ी); कैल्के-कार्ब (पुराने अम्ल-रोगके साथ); सलफर ३०, रस-टक्स ३ वगैरह दवाओंकी कभी-कभी जरूरत पड़ती है। उपयुक्त भोजन करना और कपड़े पहनना; रोज़ ठण्डे या थोड़े गर्म पानीसे नहाना, खुली हवामें घूमना और फुन्सियोंपर सज्जी मिट्टीकी बुकनी भुरभुरा देना फायदा करता है।

खाज और खुजली

(Scabies and Itching of the Skin)

जीवाणुसे एक तरहकी खुजली होती है। कलाई, अंगुली वगैरह जगहोंमें, पतले और कोमल चमड़ेके नीचे, ये सब जीवाणु रहते हैं, इसीलिये पहले अंगुलियोंके गावेमें तर खुजली हुआ करता है। गन्दे रहना ही इस बीमारीका गौण कारण है।

चिकित्सा ।—खुजलीको नीमके पत्तेके गरम पानीसे अच्छी तरह धोकर उसपर नीमका तेल* या लवेण्डर-आयल लगानेसे फायदा होता है और ३० क्रमका सलफर कभी-कभी खा लेनेसे फुन्सियाँ जल्दी अच्छी हो जाती हैं। शरीर, पहननेके कपड़े और बिछावन साफ़ रखना चाहिये।

फैगोपाइरम २, ३ ।—सारे शरीरमें इतनी खुजली होती है, कि रोगी पागल हो उठता है।

मेजेरियम ३ या ३० ।—शरीरकी किसी खास जगहमें ज्यादा खुजली होनेकी वजहसे उस स्थानको खुजलाता-खुजलाता रोगी खून निकाल डालता है। ऐसी अवस्थामें इस दवाके सेवनसे रोगीको अकसर विफल मनोरथ नहीं होना पड़ता।

डलिकस ३ ।—शरीरका कोई हिस्सा (खासकर पीठ) दीवार या कोई दूसरी कड़ी चीज़में जोरसे घसनेसे रोगीको आराम मालूम होनेपर इसका प्रयोग होता है।

सिपिया, कैल्केरिया-कार्ब, आर्सेनिक, हिपर-सलफर, नक्स-वोमिका, मर्क्यूरियस-कोर, सोरिनम, लाइकोपोडियम, क्रोटेन-टिग्लियम, कास्टिकम, स्टैफिसेग्रिया वगैरह दवाएँ (३० शक्तिकी) खुजलीमें फायदा करती हैं।

---

* कच्चे दूधके साथ नीमके पत्ते नीमके छाल, और कच्ची हल्दी पीसकर, शुद्ध सरसोंका तेल, नारियलका तेल या जायतूनका तेल (olive oil) डालकर उबालनेसे नीमका तेल तयार होता है।

कोई-कोई गन्धकका मरहम (Sulphur-ointment) लगाया करते हैं। हमलोग इसे अच्छा नहीं समझते। लक्षणके अनुसार सलफर व्यवहार करनेपर रोग एकदम अच्छा हो जा सकता है। गर्म पानीमें थोड़ा बढ़िया गन्धक डालकर उसी पानीसे नहाना और पहननेका कपड़ा और बिछावनकी चादर उससे धो डालनेसे, खसड़ा जल्दी अच्छा हो जाता है। कभी-कभी बीमारी अच्छी होने लगनेके बाद ही शरीरमें छोटी-छोटी फुन्सियाँ खसड़ेकी तरह निकल आती हैं—इससे डरनेकी कोई बात नहीं है; क्योंकि वह खसड़ा नहीं है। आप-ही-आप अच्छा हो जाता है।

जमड़ा

यह अकसर पैरमें ही होता है। यह भी एक तरहकी खुजली या एकज़िमा ही है। रसटक्स ६, सिलिका ३०, सिपिया ३०, ऐन्थ्रासिनम ३०, पलसेटिला ६, नेट्रम-म्यूर ३०, मर्क्यूरियस ३, लैकेसिस ६, ग्रैफाइटिस ३० वगैरह इस रोगकी खास दवाएँ हैं। कदमके पत्तेसे जखमवाली जगहको बाँध रखना अच्छा है।

"खसड़ा" "अकौता" बालरोगाध्यायमें "अकौता" वगैरह देखिये।

अकौता

(Eczema)

चमड़ेके प्रदाहके साथ मवाद या रस निकलता हो तो उसे अकौता रोग कहते हैं। पहले जलन पैदा करनेवाली लाल-लाल फुन्सियाँ दिखाई देती हैं, इसके बाद ये सभी फुन्सियाँ खुजलाते-खुजलाते "घाव" में परिणत हो जाती हैं। जखमसे साफ़ पानीकी तरह या पीले पीवकी तरह रस निकलता है। ज्यादा खुजलानेपर कभी-कभी खून निकलने लगता है। यह रोग शरीरकी सब जगहोंमें हो सकता है; पर अधिकतर यह कानमें,* बगलमें और सरमें ही हुआ करता है। "सोरा" (Psora) ग्रस्त मनुष्य या जिनके शरीरका खून दूषित हो गया है, उन्हें ही अकसर यह बीमारी हुआ करती है। सोडा, साबुन, चूना वगैरह हमेशा काममें लाना, पहननेके कपड़ेसे बदनको घसना, अनुचित खान-पान या माँके दूधमें खराबी आ जाना, स्वास्थ्यके नियमोंका पालन नहीं कर सकना, ज्यादा परिश्रम करना वगैरह कारणोंसे यह बीमारी हो सकती है। इसलिये रोगीकी धातुको अच्छी तरह समझे बिना, बाहरी दवाएँ लगाकर; बीमारी अच्छी करनेसे बहुत कुछ नुकसान हो सकता है।

---

* "परिशिष्ट" (ख) "धातुदोष और उसका निराकरण" अध्याय देखिये।

चिकित्सा

हलकी और नयी या एक जगहके या समूचे बदनके अकौता रोगमें, रस-वेन ३ (न मिले तो रस-टक्स ३) देना चाहिये। रस देनेपर कभी-कभी बीमारी बढ़ जाती है, ऐसी जगह दूसरी दवा न देकर रसटक्स ३०—२०० या रस-वेन ६—३० देना चाहिये। चेहरे या जननेन्द्रियमें खुजलीसे भरे अकौतामें, क्रोटोन ३। माथेकी खोलमें तर और पपड़ी-भरा अकौता होनेपर, ओलियेण्डर ६ या कैलि-म्यूर ६। अण्डकोषके अकौतामें, हिपर-सलफर ६। पुरुषोंकी दाढ़ीमें होनेपर, साइ-कुटा विरोजा ३। तलहत्थोमें, कानके पीछे, हाथकी अंगुलियोंमें अथवा सन्धियोंमें अथवा कोहनी, घुटने वगैरहमें अकौता होनेपर, ग्रैफाइटिस ६। हाथके पिछले भागमें होनेपर बोविष्टा ६। चेहरा, जननेन्द्रिय या गुह्यद्वारमें बराबर खुजली या दर्द-भरा अकौता होनेपर, एण्टिम-क्रूड ६। सूखे गर्म या लाल रङ्गके अकौतामें ऐल्यूमिना ६ या आर्सेनिक ६। जलनभरे, डङ्क मारनेकी तरह दर्दभरे और खुजलाहटभरे अकौतामें, आर्टिका-युरेंस २x। पीले रङ्गकी पपड़ी जमनेवाले अकौतामें, सलफर ३०। खड़ियाकी तरह पपड़ी जमनेवाले अकौतामें, कैल्के-कार्ब ३०।

पुराने अकौता रोगमें—सूखे, गर्म और लाल रङ्गके गठिया वात मिले अकौता रोगमें, ऐल्यूमिना ३०। मवाद बहनेवाले अकौतामें, मर्क-कोर ३। फटे लाल रङ्गके अकौतामें, थोड़ा-

थोड़ा मवाद जानेके लक्षणमें, पेट्रोलियम ६। लसदार मवाद-वाले अकौतामें, ग्रैफाइटिस ६—३०। जो अकौता रोग किसी तरह अच्छा नहीं होना चाहता, उसमें हिपर-सलफर ३० या स्कूकम-चक ३x सेवन करना चाहिये। कार्बो-वेज ६, सिपिया ६, वायोला-ट्राइ १; विङ्का माइनर १; लाइको ३०; रेडियम-ब्रोम ३०; क्रिसोफेनिक-एसिड २ को कभी-कभी जरूरत पड़ सकती है।

हमलोगोंने **टियुबर्क्युलिनम १०००** देकर एक ज्यादा उमरवाले मनुष्यका सूखा अकौता आरोग्य होते देखा है। ये भद्र महोदय ऐलोपैथी, आयुर्वेदिक, अवधौतिक प्रभृति नाना प्रकारकी चिकित्साएँ कर हताश हो पड़े थे और अन्तमें होमियोपैथिक मतसे चिकित्सा करानेको वाध्य हुए थे। उनके पैरकी गांठके पासका चमड़ा मोटा, कड़ा और काला हो गया था।

एक बच्चेको हर बरस, जाड़ेमें घुटनेसे नीचे पैरकी गांठतक रस बहनेवाला अकौता होता था। उसका घाव देखकर ऐसा मालूम हुआ मानो सड़ गया है। पहले खूब खुजली होती थी, खुजलानेपर पानी और रस बहता था। बच्चा कष्टसे अधीर हो पड़ता था। उसके उपसर्ग शामके वक्त बढ़ते थे। लक्षणके अनुसार किसी भी दवासे फायदा न हुआ, तब **सोरिनम १०००** दिया गया। भगवानकी कृपासे बच्चा आरोग्य हो गया।

आनुसङ्गिक चिकित्सा।—ज्यादा खुजलाना बुरा है। इसलिये जखमवाली जगह हमेशा कपड़ेसे बाँध रखनी चाहिये। दूध और ताजी सागकी तरकारी खाना चाहिये। मिठाई, मछली, मांस और जल्दी न पचनेवाली चीजें खाना मना है। जखमवाली जगह हमेशा साफ़-सुथरी रखना चाहिये। जखमवाली जगहपर विशुद्ध "ओलिव-आयल" लगाना अच्छा है। बाल-रोगाध्यायमें "अकौता" देखिये।

कर्कट या कर्कटिका रोग

(Cancer)

वर्त्तमान शताब्दीमें कर्कट रोग बहुत बढ़ा हुआ दिखाई देता है। गुवाक खानेकी वजहसे भारतवर्ष और सिंहल-द्वीपकी औरतोंके मुँहमें यह कर्कटिका रोग हो जाया करता है। डा० सर ए० पी० गुडका कथन है, कि आजकल सैकड़े दस आदमियोंको इस रोगसे मरना पड़ता है।

अर्बुद रोगवाले अध्यायमें "हलका" (benign) और "भीषण (malignant)" इन दो किस्मोंका अर्बुद बताया गया है। इस आखिरी तरहके अर्बुदका नाम ही "कर्कट" या "कैन्सर" रोग है—अर्थात् बहुतेरे प्रादाहिक परिवर्त्तन (chronic inflammatory changes) की वजहसे

शरीरके किसी भी तन्तुमें यह बीमारी हो सकती है। कर्कट रोग या भीषण प्रकृतिका अर्बुद कभी-कभी धीरे-धीरे अथवा कभी-कभी एकाएक तेज़ीसे प्रकट हो जाता है। इस बीमारीमें कभी न सहन होनेवाला दर्द मालूम होता है और कभी-कभी दर्द बिलकुल ही नहीं होता।

कर्कट रोग दो तरहका होता है :—यथा (१) **उपत्वक** (अर्थात् ओंठ, स्तनका बोंटा और श्लैष्मिक और स्नैहिक-झिल्लीके ऊपरवाले पतले चमड़ेमें) **कर्कटिका** रोग या "कार्सिनोमा" और (२) **संयोजक तन्तु कर्कटिका** या "सर्कोमा" (अर्थात् मांसार्बुद) होता है। जल जाना या हाड़ टूटना वगैरह चोटोंकी वजहसे कर्कटिका होनेपर उसे मांसार्बुद (sarcoma) कहा जाता है। यह मांसार्बुद देखनेमें भ्रूणावस्था-संयोजक-तन्तुकी तरह (A tumor made up of a substance like the embryonic connective tissue) होता है। मांसार्बुद अकसर सांघातिक हो जाता है।

मानसिक उत्तेजना (जैसे—शोक, काम-काजमें नुकसान, चिन्ता वगैरह) या **शारीरिक उत्तेजना** (जैसे—तम्बाकू पीनेके लिये मिट्टीका नल (चिलम) व्यवहार करना, दाँतका अगला भाग जीभमें बराबर लगकर वहाँ जखम पैदा होना, X-Ray या रैडियमकी किरण या किरासिन तेल वगैरहका बराबर शरीरपर व्यवहार करना, स्त्रियोंका स्तन

बहुत देरतक कागकी तरह रहना, रज बन्द रहनेके वक्त या उसके बाद, एकाएक किसी भीतरी यन्त्रसे खून जाना वगैरह कारणोंसे शरीरके उन सब अङ्गोंमें कर्कट रोग होता है। आमाशयमें पुराना घाव, अन्नकी नलीमें या बड़ी आँतमें रोग पैदा करनेवाले जीवाणुका मौजूद रहना, गहरी चोटके कारण शरीरका खराब हो जाना, सरका पुराना दर्द, स्नायुशूल, चर्म-रोग या वातरोग बहुत दिनोंतक भोगते रहना वगैरह कारणोंसे खूनमें दोष पैदा होकर, कर्कट रोग हुआ करता है। कभी-कभी तो यह बीमारी पुश्त-दर-पुश्त चला करती है; इसीलिये, इस रोगका अच्छी तरह इलाज न होनेपर—नश्तर लगवाने बाद या रोग बैठ जानेपर, रुका हुआ दूषित अर्बुद बीमार अङ्ग या शरीरके किसी दूसरी जगहपर दुबारा हमला करता है।

बिना दवा खाये आप-ही-आप (अर्थात् शरीरकी रक्षा करनेवाली ताक़तके गुणसे) कभी-कभी कर्कट रोग एकदम अच्छा हो जाता है। जो हो, यह सन्देह होते ही कि कर्कट रोग हुआ है, तुरन्त उसको रोकनेका उपाय करना चाहिये। समयपर होमियोपैथिक दवा खानेसे फायदा हो सकता है, दवासे फायदा न होनेपर X-Ray या रेडियमकी किरणका प्रयोग करना या नश्तर लगवा देना चाहिये।

चिकित्सा

आर्स (निम्न क्रम) खासकर जलनवाले कर्कटमें; **हाइड्रैस्टिस** θ—३x (बाहरी प्रयोग और सेवन) गांठ या

जरायुमें कर्कट होनेपर ; **कार्बो-ऐनि** १X, ३ विचूर्ण, कर्कटसे स्राव होनेपर ; **अरम-मेट** ३X विचूर्ण ६ हड्डोके कर्कटमें ; **ऐकोन-रैडिक्स** θ (फी मात्रा आधे बून्दसे तीन बून्दतक सेवन करना, जबतक बीमारको नींद न आ जाये), कर्कटसे पैदा हुई बेहद तकलीफ़को यह एक अचूक दवा है। **लेपिस ऐल्बम** २X—बहुत जलनके साथ ज्यादा स्राव (खासकर जरायुके कर्कटमें) ; **कार्सिनोसिन** ३०-२०० (हफ़्तेमें सिर्फ एक बार खाना चाहिये) ; **एक्स-रे*** ३०-२०० (कठिन तकलीफमें, सप्ताहमें एक बार सेवन)। **रेडियम-ब्रोम** ३०—२०० (हफ़्तेमें सिर्फ एक बार सेवन) और **सेलिनियम** ३०-२०० (सप्ताहमें सिर्फ एक बार सेवन) और **हाइड्रेस्टिनम** २x ये सब कर्कट रोगकी बहुत बढ़िया दवाएँ हैं।

नीचे लिखी दवाओंकी भी समय-समयपर जरूरत पड़ सकती हैं—बेल, फास्फो, कार्डियुरेङ्गो १x, एसिड-कार्ब, रूटा θ, फाइटो २x, आयोड ६x, कैलि-ब्रोम ३०, गेलियम ऐपाराइन

---

* X-Ray ३० की व्यवस्थासे कई कर्कट रोग आराम होने लगे हैं (कम-से-कम बहुत तकलीफ एकदम बन्द हो गयी है)। Dr. J. Case ने Convention of the American Rontgen Ray Society में हालमें ही जो कुछ लिखा है, उससे हमारी इस बातका बहुत कुछ समर्थन होता है।

θ (दूधके साथ ३०—६० बून्द रोज़ तीन बार सेवन); सिकेलि ३०, क्रियोजोट ३०, हाइड्रोकोटाइल-ऐसेट ३x, सलफर ३०, सैंगुइनेरिया १x, आर्स-आयोड ३x (पानीके साथ न खाया जाये), आरम-आयोड ३x, कैल्के-आयोड ३, सिम्फाइटम θ, युफोर्बियम ६, एकिनेशिया θ (मात्रा ५—२० बून्द), लैकेसिस ६ ❋ (गहरा लाल या नीला या खाकी रङ्गका कर्कट), कोनायम ६—३० (आघातके कारण पैदा हुए कर्कट रोगमें या छातीमें कर्कट रोग होनेपर), कैलि-सायनेटस ३ (जीभके कर्कटमें), हेक्ला-लावा, हेलोनियस, प्लैटिना, सिफिलिनम। स्क्रोफुलिया θ, आनियोगैलम θ भी कभी-कभी खूब लाभ करता है।

कर्कट रोगके इलाजमें सिद्धहस्त डा० एलवुड Ellwood ने नीचे लिखे अङ्गोंके ११ कैन्सर रोगोंको एकदम अच्छा किया है :—

(१) उपजिह्वाका कर्कट—फेरम-पिक्रि ३x, हाइड्रैस्टिस θ।

(२) जरायु-ग्रीवाका कर्कट—आर्स-आयोड ३x पल्स ३x (स्त्री-रोग अध्यायमें "जरायुका अर्बुद" "जरायुका कर्कट" देखिये)।

❋ आजकल भारत और विदेशोंमें भी, पृथ्वीमें प्रायः सर्वत्र लकेसिस, कोब्रा, क्रोटेलस प्रभृति सर्प-विषके द्वारा कर्कट, कुष्ठ, स्नायु-शूल, रक्त-स्राव, गैंग्रीन प्रभृति रोगोंका इलाज हो रहा है। होमियोपैथिक मतसे सैकड़ों बरस पहलेसे सर्प-विषसे इसकी चिकित्सा हो रही है और रोगी नव-जीवन प्राप्त कर रहे हैं।

(३) गलकोष और गलनालीका कर्कट—फेरम-पिक्रिक ३x, थूजा १x।

(४) बड़ी आँतके आखिरी अंशका (Rectum) कर्कट—हाइड्रैस्टिस १x, सैल्विया θ हफ्तेके अन्तमें सेवन।

(५) स्थूलान्त्र (Colon) का कर्कट—हाइड्रैस्टिस ६x, क्रोकस θ सप्ताहके आखिरमें एक बार खाना चाहिये और नासूरके लिये सिलिका ५।

(६) दाहिने स्तनका कार्सिनोमा—आर्स-आयोड ३x और हाइड्रैस्टिस ३x (पर्यायक्रमसे)।

(७) यकृतमें कर्कटके साथ उदरी—आर्स-आयोड ३x और हाइड्रैस्टिस θ।

(८) ऊरूके हाड़में सर्कोमा—साइलिसिया २००।

(९) बायें ऊरूकी हड्डीके सर्कोमामें—सिलिका ६।

(१०) नाकके सर्कोमामें—नेट्रम-म्यूर २०० समयपर सेवन।

(११) बगलकी बढ़ी हुई ग्रन्थिके कर्कटमें—चार बार नश्तर लगवानेके बाद रोगी हताश होकर होमियो-चिकित्सा कराने आया, उस समय साइलिसिया २०० सेवनकर वह एकदम आरोग्य हो गया।

आनुसङ्गिक चिकित्सा।—जखमवाले कर्कटमें बदबू कम करनेके लिये, कार्बोलिक-एसिडकी बुकनी या आयोडोफार्मकी बुकनी लगाना या कोयलेकी पोल्टीस व्यवहार

करना चाहिये। डा० कूपर रूटाका मरहम व्यवहार करनेको सलाह देते हैं। दूध, नमक, मिर्चा, चाय, काफी, शराब, मांस, मछली, अण्डा, उड़द, सेम, मसूरकी दाल वगैरह खाना मना है। मांसके बदले पनीर खाया जा सकता है। ज्यादा परिमाणमें ताजे फल खाये जा सकते हैं। खुली हवामें थोड़ा घूमना अच्छा है। स्तनमें कर्कट होनेपर हाथको ज्यादा हिलाना-डुलाना नहीं चाहिये। इस बातपर ख़याल रखना चाहिये, कि रोगीको अजीर्ण न हो जाये। भोजनके पहले और बाद थोड़ा विश्राम करना चाहिये। ज्यादा हालके लिये Burford's Cancer, Clarke's Tumours, Cooper's Cancer, Royal's Practice (पृष्ठ ४५८, ४८५, ५०५, ५३३), Gatchell's Practice (पृष्ठ १०८), Ruddock's Vade Mecum Edition १८२३ (पृष्ठ २४१—२४८) Burnett's Curability of Tumours प्रभृति ग्रन्थ देखना चाहिये।

— —

शैवालिका

(Lichen)

किसी चर्म-प्रदाहका घनी फुन्सियोंकी तरह प्रकाशित होनेका नाम "शैवालिका" है। घमौरीकी तरह लाल-लाल फुन्सियाँ सारे शरीरमें (हाथ, पैर, मुँह और गर्दनमें) निकलना,

खुजलाना, चमड़ेका सूखा और मोटा होना और अन्तमें फुन्सियाँ सूखकर पतला चमड़ा सफेद हो जाना, इस रोगका प्रधान लक्षण है। चूरन, बर्फ, पावरोटी बेचनेवाले, राज-मज़दूर या जो सोडा और साबुनका काम हमेशा करते हैं या जो हमेशा ठीक समयपर खाना-पीना नहीं करते या जो उष्ण-प्रधान देशमें रहते हैं या गर्मीके दिनोंमें भी जो ज्यादा मिहनत करते हैं, हमेशा उन्हें ही यह बीमारी हुआ करती है।

चिकित्सा।—सलफर ३० (नयी बीमारीमें); ऐण्टिम क्रूड (पाकाशयकी गड़बड़ीके साथ रोगमें); एपिस ३ या लिडम ६ (घमौरीकी फुन्सियोंमें काँटा चुभने-जैसा दर्द); आर्स ३x—३० (पुरानी बीमारीमें); मेजेरि, रस, फाइटो, ग्रैफ, नेट्रम-म्यूर, सल्फ। रोज़ सुसुम या ठण्डे पानीमें नहाना और बदन पोंछ डालना चाहिये, उत्तेजक खान-पान मना है। स्वास्थ्यके साधारण नियम पालन करने चाहियें।

अंगुलबेढ़ा
(Whitlow)

नख खूब छोटा कटवाने, चोट लगने या जल जाने अथवा कोई विषैली चीज़ खूनमें जानेसे, अंगुलीके आगे जलन और सूजन होती है और फिर वह पक जाता है। इसीका नाम

"अंगुलवेढ़ा" या अंगुलीका घाव है। रोग बढ़ जानेपर मौततक हो सकती है।

चिकित्सा ।—अंगुलवेढ़ा होनेका लक्षण दिखाई देते ही नमक-मिले गर्म पानीमें बार-बार अंगुली डुबा रखनी चाहिये और साइलिसिया ३x का सेवन करना चाहिये। रोगकी पहली अवस्थामें या जब दर्द हड्डीतक फैल जाये, तब साइलिसिया ३x—३० सेवन और गर्म पानीका सेंक देना चाहिये। बोखार रहनेपर साइलिसियाके साथ बेलेडोना ६ (पर्यायक्रमसे) कोई-कोई दिया करते हैं। अंगुलीका अगला हिस्सा बहुत फूलकर कुछ काला हो जाये और जलन तथा दर्द रहे, तो आर्सेनिक ६; परन्तु नीला होनेपर लैकेसिस ६। (बीमारीकी पहली अवस्थामें) तेज़ दर्द पैदा हो जानेपर मर्क-सोल ६, हिपर-सलफर ६, स्ट्रैमोनियम ६, ऐमोन-कार्ब ५०० या बोरिक-एसिड ६ सेवन करना चाहिये। ऐन्थ्रासिन ३०, एपिस ३, ग्रैफाइटिस ६, सैंगुइनेरिया १x, ब्रायोनिया ६, कास्टिकम ६, लिडम ३ वगैरह दवाओंकी भी कभी-कभी जरूरत पड़ सकती है। नाइट्रिक-एसिड θ, डायस्कोरिया θ या फास्फोरस θ, रोगवाले स्थानपर लगा देनेपर दर्द कम पड़ जाता है। छोटे बैंगनमें या कागज़ी नीबूमें छेदकर अंगुलीपर टोपीकी तरह पहना देनेसे भी तकलीफ़ कम हो सकती है। इससे भी आराम न हो, तो नीमकी गर्म पोल्टीस देनी चाहिये। हाथ इस तरह बाँध रखना उचित है, कि जिससे

हिलाने-डोलानेपर नीचेकी ओर न झुक जाये। पीव पैदा हो जानेपर अस्त्र-चिकित्सककी सहायता लेनी चाहिये और जबतक घाव अच्छा न हो, तबतक कैलेण्डुलाके धावनसे धोना चाहिये।

कुष्ठ रोग
(Leprosy)

यह एक पुरानी लरछुत बीमारी है। खासकर (Bacillus Lepræ) नामका एक तरहका जीवाणु चमड़ा उतरे हुए स्थानसे या श्लैष्मिक-झिल्लीकी राहसे जब आदमीके शरीरमें घुस जाता है, तब या तो वहाँ गांठ पैदा करता है या स्नायुओंमें उलट-फेर कर देता है। शरीरकी अवस्थामें जब इस तरह गड़बड़ी हो, तब समझ लेना चाहिये, कि उस स्थानपर अब कोढ़ पैदा हो गया है। रोगीके खुले हुए घावमें, गलदेशमें और नाकके पासमें ये जीवाणु रहते हैं तथा खटमल और रोगी द्वारा व्यवहृत दूषित कपड़ों द्वारा (कभी-कभी धोबियों द्वारा) ये जीवाणु एक जगहसे दूसरी जगह जा पहुँचते हैं। १८७१ ईस्वीमें डाक्टर हैन्सेनने इस जीवाणुका पता लगाया था। बहुत-सी प्राचीन जातिके मनुष्योंको यह बीमारी हो जाया करती थी। माँ-बापको यह बीमारी रहनेपर उनके बाल-बच्चोंमें भी यह बीमारी फैल जाती है या नहीं, यह आजतक निश्चित नहीं हो सका है।

आजकलके निदान करनेवाले, कोढ़ दो तरहका बताते हैं :—

(१) गुटिल कुष्ठ-व्याधि ; (२) स्पर्शहर कुष्ठ-व्याधि।

(१) **गुटिल कुष्ठ-व्याधि** (Tubercular Leprosy) इस जातिके कुष्ठ रोगमें पहले बदनमें जगह-जगह लाल रङ्गकी ज़ुलपित्ती, जिसमें बहुत दर्द रहता है या लाल रङ्गकी फुन्सियाँ दिखाई देती हैं। इसके बाद उन गांठोंका मुँह खुल जाता है और वहाँ गहरा ज़खम हो जाता है। पलकें, भौंवें वगैरहके केश और हाथ-पैर आदिकी अंगुलियाँ, नाककी श्लैष्मिक-झिल्ली वगैरह अङ्ग सड़कर गिरने लगते हैं और कभी-कभी फेफड़ेमें जलन और प्रदाह होकर रोगी मर जाता है।

(२) **स्पर्शहर कुष्ठ-व्याधि** (Anasthetic Leprosy)—इस रोगमें सब स्नायुओंपर हमला होता है और शरीरमें जगह-जगह अधिक संवेदना होती है। इसके बाद वहाँका चमड़ा मुर्दा हो जाता है, अनुभवकी ताक़त चली जाती है, बड़े-बड़े फफोले पैदा हो जाते हैं और पेशियाँ पतली पड़कर पक्षाघात हो जाता है। कुंष्ठ रोगका भावी-फल खराब होता है। यह आठसे पन्द्रह वर्षतक स्थायी रहता है।

चिकित्सा

कुष्ठ-रोगज-जायुके (आटो-वैक्सिन) व्यवहारकी बहुत-सी आशा-भरी बातें सुनी जाती हैं (Rost)। हाइड्रोकोटाइल θ

पाँच बून्द—६ (चमड़ा मोटा, छाती, तलहत्थी और तलवेमें बेहद खुजली); आर्स-आयोड २x विचूर्ण (गांठें फूलीं, हाथ-पैरकी अंगुलियोंका गल-गलकर गिरना, टेढ़ी गुटिकाएँ, कांटा गड़नेकी तरह दर्द मालूम होना); बेलेडोना ३x (नये बोखारके साथ लाल रङ्गका चमड़ा); सिपिया ६ (चमड़ा भूरा या पीले रङ्गका); आर्स-ऐल्ब ३x (जखम, दर्द हो या दर्द न हो); लैकेसिस ६—३० (गहरे घावके लक्षणमें); सलफर ३०—२०० (बहुत दिनोंका अन्तर देकर एक मात्रा सेवन); कोमोक्लेडिया २x (चमड़ा सफेद रङ्गका होनेपर)।

क्रोटेलस ३* बहुत दिनोंतक सेवन करनेसे फायदा मालूम हो सकता है। आस्टिलेगो θ, १x खिलाकर भी फायदा मिलता है। पिरारा (Pyrara) ६—३० सेवन कराकर Dr. Oleivera ने एक रोगीको एकदम अच्छा कर दिया है।

आनुसङ्गिक चिकित्सा।—रोगीको हमेशा साफ़-सुथरा और अलग रखना चाहिये। मांस-मछली खाना एकदम मना है। पौष्टिक भोजन देना जरूरी है। जखमवाली जगहपर गर्जन तेलकी मालिश करनेसे फायदा हो सकता है। चालमुगराके तेलके साथ† बराबरकी मात्रामें कपूरका तेल

---

* कुष्ठ-व्याधिकी सर्प-विषसे चिकित्साके सम्बन्धमें कर्कट-रोग चिकित्साकी पादटीका देखिये।

† सम्प्रति (मार्च १९२३) डाक्टर Sir Loanard Rogers महोदयने इङ्गलैण्डकी Royal Society of Arts नामक सभामें कुष्ठ रोगकी

और पन्द्रह ग्रेन रिसर्सिन Resorcin मिलाकर गर्म पानीमें कुछ देर खौलाकर छान लेना चाहिये, इसके बाद एक पिचकारीसे शरीरमें कई महोनेतक प्रवेश कराना चाहिये। फिलिपाइन टापूके कुष्ठ अस्पतालके अध्यक्ष डा० मर्केडो (Mercado) ने इसी तरहकी व्यवस्थासे कई रोगियोंको बिलकुल चङ्गा कर दिया है। (vide the Public Health Reports, Oct. 16, 1914)।

अपरस

(Psoriasis)

इस रोगमें बदनके किसी-किसी जगहका चमड़ा लाल होकर फूल उठता है और सादी सूखी और कड़ी छाल निकल जाती है। रेडियम-ब्रोम ३० (हफ्तेमें एक बार सेवन करना चाहिये)। सलफर ३० या आर्सेनिक ३० इसकी प्रधान दवा है। बीमारी पुरानी होनेपर, टियुबर्क्यूलिनम २०० सेवन करना चाहिये। फास्फोरस ६, कैल्केरिया ६, सिपिया ३०, नाइट्रिक-एसिड ६, साइक्यूटा ३, ग्रैफाइटिस ६, थूजा ३, क्राइसोफैनिक-एसिड और "रूसो" रोगकी दवा वगैरह भी लक्षणके अनुसार व्यवहार की जा सकती हैं।

चिकित्सामें Chalmoogra, Codliver, Royalin प्रभृति तेलोंकी उपकारिता स्वीकार की है।

फील-पाँव

(Elephantiasis)

हाइड्रोकोटाइल १x—६ और ऐनाकार्डियम ओरिएण्टे-लिस १x—६ इसकी प्रधान दवाएँ हैं। ("श्लीपद" देखिये)।

मरा मांस या खुश्की (रूसी)

(Pityriasis)

माथे या शरीरके चमड़ेकी पतली भूसी-जैसी छालको "मरा मांस" या रूसी कहते हैं। चमड़ेके ऊपरसे यह मरा-मांस सादी भूसीकी तरह निकल जाता है। यह रूसी निकल जानेके समय बीमारीवाली जगह खुजलाती है। कभी-कभी लाल या गर्म हो जाती है।

आर्स ३x—३० का सेवन इसकी सबसे बढ़िया दवा है। अगर आर्ससे फायदा न हो, तो ग्रैफाइटिस ६ या लाइको १२ या सिपिया ३० अथवा रेडियम-ब्रोम (हफ्ते में एक मात्रा सेवन) फायदा करता है। बैसिलिनम २०० (हफ्ते में एक मात्रा सेवन); क्राइसोफैनिक-एसिड ३x—३, टेल्युरियम ३०, फ्लोरिक-एसिड ३, मेजेरियम ३ की भी कभी-कभी जरूरत पड़ सकती है।

आनुसङ्गिक चिकित्सा।—बीमारीवाली जगह बेसन या खली लगाकर गर्म पानीसे रोज़ धो डालना चाहिये अथवा क्राइसोफेनिक-एसिड ४x अर्क (या सोहागेका लावा ग्लिसरिनके साथ मिलाकर) लगाना चाहिये। रोज़ नहाना फायदा करता है।

घट्ठा

(Corns)

कड़े जूतेका दबाव (या धातु-दोषकी वजहसे) पैरकी अंगुलीमें घट्ठा पड़ जाता है। नये और तकलीफ़ देनेवाले घट्ठेमें फेरम पिक्रिक ३; जलन या जखम-भरे घट्ठेमें नाइट्रिक एसिड ३x सेवन करना चाहिये। हाइड्रैस्टिस तेल (हाइड्रैस्टिस θ, १ भाग, ओलिव आयल आठ भागके साथ मिलाकर) सोनेके पहले तीन-चार दिन रातमें घट्ठेमें लगा देना चाहिये। इससे फायदा होता है। धातुगत दोषमें, बार-बार घट्ठा पड़नेपर सलफर ३०, कैल्के-कार्ब ३, लाइको १२, सिपिया ६, ऐण्टिम-क्रूड ६, फास्फोरस ३ या साइलिसिया ६ सेवन करना चाहिये। चौड़े मुँहका जूता पहनना और कैलेण्डुला सक्स रूईमें लगाकर घट्ठेमें लगा रखना अच्छा है। विरि-वि θ घट्ठेमें लगानेसे फायदा होता है।

कोई-कोई डाक्टर सलाह देते हैं, कि घट्ठे होते ही उसे गर्म पानीमें भिंगो रखने बाद कुछ कोमल हो जानेपर आर्निका (θ दस बून्द + एक आउन्स ग्लिसरिन + एक आउन्स पानी) का धावन तैयारकर रातमें उससे तर कर रखना लाभदायक होता है।

सरमें दाद

यह भी एक छुतहर बीमारी है। आक्रान्त माथेके चारों ओरके केश मुड़वाकर साबुन लगा गर्म पानीसे धो डालना चाहिये। इसके बाद तारपीनका तेल लगाकर धो डालना चाहिये। दाद सूखी होने बाद उसमें रोज़ सवेरे आयोडिन θ लेपकर सन्ध्याके समय उसे धो डालना पड़ेगा। इस तरह इलाज करनेपर अगर जलन बढ़ जाये, तो इस इलाजको कुछ दिनोंके लिये बन्द कर रखना चाहिये। सलफर ३०, कैल्के-कार्ब ६ या १२ का सेवन करना भी फायदेमन्द है।

गात्र-दाह

बदनमें जलन या दाह साधारणतः बोखार वगैरह रोगोंका लक्षणभर है। किसी बीमारीमें गात्र-दाह मौजूद रहनेपर इस पुस्तकमें कही हुई उन बीमारियोंकी दवाएँ देखनी चाहियें।

बाहरी दाह या शरीरमें ऊपरकी जलन रहनेपर।—आर्सेनिक, ब्रायोनिया, कार्बो-वेज, कास्टिकम, नक्स-वोमिका, फास्फोरस, फास्फोरिक-एसिड, रसटक्स, स्टैनम, सलफर।

भीतरकी दाह या शरीरके भीतरकी जलन रहनेपर।—ऐकोनाइट, आर्सेनिक, बेलेडोना, ब्रायोनिया, कैन्थरिस, मर्क्युरियस, नक्स-वोमिका, फास्फोरस, सैबाडिला, सेनेगा, सिपिया, सलफर।

ऊपर लिखी हुई दवाएँ ३ से ३० शक्तितक व्यवहार की जा सकती है।

जलन बन्द करनेवाली कुछ प्रधान दवाओंके लक्षण नीचे लिखे जाते हैं :—

सलफर ३०, २००।—सारे शरीरमें (हाथ, पैर, माथा, मुँह, नाक, जीभ, आँख वगैरहमें) मानो आग जल रही है और दग्ध हो रहा है। कोई भी बीमारी पुरानी अवस्थामें होनेपर और ऐसी जलन, मालूम होनेपर यह खूब लाभ करता है।

आर्सेनिक ३x, ३०।—किसी भी नयी बीमारीमें सारे शरीरमें जलन होनेकी यह प्रधान दवा है। इस जलनका एक प्रधान लक्षण यह भी है, कि शरीरमें चाहे कैसी भी जलन हो, पर रोगी कपड़े नहीं उतारना चाहता है या आगके सामने अथवा धूपमें बैठना चाहता है। जखम, फोड़ा या बोखार

वगैरहमें जब रोगी एकदम सुस्त हो जाता है, तब उसे इसी ढङ्गकी जलन मालूम होती है।

सिकेलि ३x, ३०।—आगकी चिनगारीसे मानो सारा बदन जला जाता है। रोगीको ऐसा ही मालूम होता है (परन्तु दूसरे आदमी जब उसके शरीरपर हाथ रखते हैं, तब ठण्डा मालूम होता है; इतनेपर भी रोगी शरीरसे कपड़े नहीं उतारना चाहता) और वह हमेशा पंखा झलनेके लिये कहता है। हैज़ा और सड़नेवाली बीमारीमें यह लक्षण हमेशा दिखाई देता है।

फास्फोरस ६।—सलफरके लक्षणकी तरह शरीरमें जलन (खासकर यक्ष्मा रोगमें) मालूम होना।

ऐकोनाइट १x, ६।—नये प्रादाहिक ज्वर वगैरहकी पहली अवस्थामें जब बेचैनीके साथ जलन मालूम हो।

एपिस-मेल ३x, २००।—डङ्क मारनेकी तरह दर्दके साथ किसी अङ्ग या प्रत्यङ्गमें जलन और उसके साथ ही लाली और सूजन मौजूद रहनेपर।

ऐगरिकस ३, ३०।—शरीरके विभिन्न अंशोंमें खुजली और लालीके साथ जलन।

बेलेडोना १x, ३०।—शरीरमें दाहके साथ किसी अङ्गमें प्रदाह (सूजन, लाली), प्रदाहवाली जगह छूनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो आग निकल रही है।

कैन्थरिस ३x, ६ ।—गला, पेट, गुह्यद्वार और मूत्र-यन्त्रमें जलन (खासकर पेशाबके समय)।

कैप्सिकम ३, ६ ।—शरीरमें तेज़ जलन, मानो किसीने समूची देहमें मिर्च पीसकर लगा दी हो।

ब्रायोनिया ३, ३० ।—पित्त-प्रधान मनुष्योंके हाथ-पैर वगैरहमें जलन मालूम होना।

कई दूसरे चर्म-रोगोंकी संक्षिप्त चिकित्सा

घमौरी ।—ऐण्टिम-क्रूड, सल्फ, आर्स, एपिस, लिडम, ऐकोनाइट, रस-टक्स। कुछ गर्म पानीमें सोडा घोलकर या चन्दन शरीरपर लेप देनेसे तकलीफ दूर हो जाती है ("शैवालिका" देखिये)।

शरीर फटना ।—सर्दीके दिनोंमें देह फटनेपर, ऐगरिकस ६—३० बढ़िया दवा है। टैमास θ बराबर मात्रामें ग्लिसरिनके साथ मिलाकर फटी जगहपर लगाना चाहिये। पल्सेटिला, रस-टक्स, सलफर वगैरह लक्षणके अनुसार काममें लाये जा सकते हैं।

मूछोंकी दाद ।—लाइकोपोडियम, मर्क-आयोड, ग्रैफाइटिस, ऐण्टिम-क्रूड, सलफर।

मसे ।—थूजा १x—३०, ऐण्टिम-क्रूड ६, डल्कामारा ६, कास्टिकम ६ फायदा करता है। थूजा θ का लगाना भी फायदेमन्द है। चूना लगानेपर भी कभी-कभी खूब फायदा होता है।

सेंहुआ ।—कैलि-कार्ब, एसिड-नाइट्रिक, नेट्रम-म्यूर, कैन्थरिस, ग्रैफाइटिस, सलफर, सोरिनम।

कु-नख (अर्थात् नाखूनका आखिरी भाग बढ़कर मांसमें घुस जाना या घाव हो जाना)—मर्क, आर्सेनिक ३x—३०, ऐण्टिम-क्रूड, साइलिसिया या सलफरका सेवन करना चाहिये तथा गर्म जलका सेंक या फेरि-क्लोराइडका धावन या विचूर्ण लगाना चाहिये। नारियलका तेल, कच्चे नारियलका पानी और सफेद चूना एक साथ मिलाकर, उसे अच्छी तरह फेंटकर घावपर लेपनेसे फायदा होता है।

खाल उधड़ना (Excoriation)।—कैमो ६ सब तरहके पानी लगने या खाल उधड़नेकी अच्छी दवा है। अगर बार-बार पानी लगता हो, तो लाइको ६—२००। बीमारीवाली जगहपर अगर तेज़ दर्द हो तो, मर्क-सोल ६—३०। ज्यादा चलनेकी वजहसे अगर जांघका चमड़ा छिल गया हो, तो इथ्यूजा ३x—६। बच्चोंकी जांघ छिल जानेपर कैमो ६—३०।

उपमांस या गूमड़ (Excrescences)—जखममें बालू होनेपर, साइलिसिया ६-२०० सेवन करना और तूतियेका चूर उपमांसपर छिड़क देना चाहिये। ("मसे" देखिये)।

मुख-व्रण (मुँहासा)।—ऐण्टिम-क्रूड, ऐण्टिम-टार्ट, कार्बो एनिमेलिस, आर्सेनिक, पल्स, कैलि-बाइक्रोम, पेट्रोल, एसिड-फास, सलफर ("मुँहासा" देखिये)।

परकी अंगुलीमें घट्ठे ।—फेरम-पिकरिक ३ (नये घट्ठे में), जलन या पीव होनेपर, नाइट्रिक-एसिड १ ; हाइड्रै-स्टिस θ एक ड्राम जैतूनका तेल १ आउन्समें मिलाकर रातमें सोनेके समय लगानेसे फायदा होता है।

दाद ।—हफ़्तेमें एक बार बैसिलिनम ३०—२०० सेवन। माथेकी खोलकी दाद या घने केशोंसे ढँके दूसरे अङ्गोंकी दादके ऊपर, क्राइसोफैनिक-एसिड ४ ग्रेन (१ आउन्स जैतूनके तेलके साथ मिलाकर) लगानेसे फिर कोई दूसरी दवाकी जरूरत नहीं पड़ती। टेल्यूरियम ६ का सेवन भी इसकी बहुत बढ़िया दवा है। इससे भी फायदा न हो, तो **नेट्रम-सल्फ** २००—५०० महीनेमें एक बार सेवन करना चाहिये। हिपर-सलफर, फास्फोरस, एसिड-नाइट्रिक, रस-टक्स, सिपिया, ग्रैफाइटिस, सलफर, मर्क-कोर, कैलेडियम-सैंगुइनम (खासकर औरतोंके लिये) वगैरह दवाएँ भी फायदा करती हैं। ऊपर लिखी दवाएँ ६ से ३० क्रमतक प्रयोग करनी चाहिये। "भूसी निकलना" देखिये।

———

चर्म या त्वक इन्द्रियके उपसर्ग और दवाएँ

तेज़ खुजली—धीरे-धीरे खुजलानेसे खुजली बन्द हो, जोरसे रगड़नेसे खुजली बढ़ती हो ; दूध पिलानेवालीके स्तनकी घुंडीमें जखम—**क्रोटन** ।

बहुत खुज़लाहट-भरी फुन्सियाँ—**ऐनाकार्डियम** ।

न पके हुएपर जलन करनेवाले उद्भेद ; आमवात ; अकौता—**नेट्रम-म्यूर** ।

न उभरे हुए लाल रङ्गके उद्भेद—**ऐरम-ट्राई** ।

अस्वस्थ चमड़ा, जलभरी फुन्सियाँ, फोड़े, स्पर्शातिशय्य—**हिपर** ।

गर्मी खुजली और ऐंठनके साथ आमवात—**कोपैवा** ।

ऊपरी अङ्गोंमें जगह-जगह असंयुक्त या अलग-अलग रसभरी फुन्सियाँ ; खुजलाती हैं, खुजलानेसे जलन होती है—**सिपिया** ।

कानके पीछे तर फुन्सियाँ, सारे शरीरमें घनी फुन्सियाँ, रसभरी फुन्सियाँ या सींगकी तरह नोकदार फुन्सियाँ ; कड़ी पपड़ी जमना और छूनेसे खून निकलना—**ऐण्टिम-क्रूड** ।

तलहत्थी फटी और मोटी हरी पपड़ी जमी फुन्सियाँ ; जिस चर्म-रोगकी फुन्सियाँ आगकी तरह लाल और अलग-अलग

निकलती हैं ; न पकनेवाला तर अकौता, शीत ऋतुमें बढ़ना (सोरिनम)। जरा खुजलानेसे ही पक जाता है (हीपर) पेट्रोलियम ।

पीप-भरा निस्तेज ज़हरीला जखम ; पीठका घाव—कार्बो-वेज ।

बैंगनी रङ्गके काले दाग-भरे उद्भेद—आइलैन्थस ।

सिकुड़ा हुआ फुन्सी-भरा चमड़ा पुराना, फैलनेवाला और बदबूदार घाव—चेलिडोनियम ।

अंगुलीकी सन्धियाँ कुटकुटातीं और खुजलाती हैं ; थोड़ी भी चोट या छिल जानेपर पक जाता है—हीपर ।

केश रूखे (कंघीसे झाड़नेसे मुलायम न होते हों) एकके साथ एक जुड़े हों या अलग रहें, कटवानेपर जटाकी तरह निकलते हैं—बोरैक्स ।

गहरा चर्म-प्रदाह, खुजली ; पीव पैदा होना—रस-टक्स ।

चमड़ा अस्वस्थ, सहजमें ही पीव पैदा हो जाता है ; ब्रह्मतालु सरेसकी तरह लसदार—ग्रैफाइटिस ।

केश झाड़नेपर दर्द होता है। जलन करनेवाला उद्भेद ; चमड़ा खुजलाता है और वहाँ पीव पैदा हो जाता है, वहाँसे खून निकलने लगता है ; सन्ध्याके समय खुजलीसे बेचैन हो पड़ता है—क्रियोजोट ।

चमड़ा रूखा, मलिन ; रोगी शरीर धोना नहीं चाहता ; लोम-कूप काले-काले, काले मस्तकके साथ कोई चर्म-रोग—**सलफर ६** ।

चमड़ा काला, सिकुड़ा, चित्र-विचित्र, छूनेसे ठण्डा ; बैंगनी रङ्गकी छोटी-छोटी फुन्सियाँ ; छोटे-छोटे तकलीफ देनेवाले फोड़े ; उसमें धीरे-धीरे पीब पैदा होता है ; जखमवाली जगह खुली रखनेकी वजहसे चमड़ेमें जलन होती है—**सिकेलि** ।

चमड़ा काला, चित्र-विचित्र, पुराने, तकलीफ़ देनेवाले, जखम फटकर खून निकलता है—**लैकेसिस** ।

चमड़ा चर्बी-भरा, मक्खनकी तरह—**नेट्रम-म्यूर** ।

चमड़ा चितकबरा, नीले रङ्गका या नीली आभा लिये—**क्यूप्रम** ।

चमड़ा खुजलाता है, जलन होती है ; छोटी फुन्सियाँ और दाने निकलते हैं, खुजलानेसे बढ़ता है—**बार्बेरिस** ।

चमड़ासे किसी कारणसे भी ज्यादा पीब बहता हो, तो—**साइलिसिया ३०** ।

चमड़ा लाल रङ्गका ; खुजलाता है—**ऐगरिकस ३** ।

चमड़ा ठण्डा, पीला या पाण्डुवर्ण, फोड़ा और पीठका घाव, कुछ बैंगनी रङ्ग इधर-उधर दाग-भरा चमड़ा—**क्रोटेलस ६** ।

चमड़ा सूखा, रूसी-भरा (रूसी—भूँसीकी तरह)—आर्सेनिक ३ ।

चमड़ा सूखा, उत्तप्त और उसके साथ बोखार—ऐकोन ३x ।

चमड़ा सूखा, गर्म, खुजलाता है, जलन होती है और खाल उधड़ जाती है। साधारण चोटसे भी जलभरी फुन्सियाँ निकलती हैं; हाथकी अंगुलीकी नसोंकी जड़का चमड़ा फूल जानेसे प्रदाह होता है, स्तनोंमें जलन होती है और फटे-फटे दिखाई देते हैं—सल्फ ।

चमड़ा सफेद और स्वच्छकी तरह होनेपर—एपिस ।

चमड़ा मसे-भरा—थूजा ३० ।

„ आमवात-भरा, जल-बसन्तकी तरह उद्भेद, वेधनेकी तरह जलन मालूम होना—आर्टिका-युरेन्स १x ।

„ बराबर एक-पर-एक मसे हुआ करते हैं—फेरम-पिक्रि ३x ।

„ भूरे रङ्गका दाग-भरा, तर रस-भरी फुन्सियाँ, नाकपर चकत्ते-चकत्ते पीले रङ्गका दाग—सिपिया ३ ।

„ कांटा वेधनेकी तरह दर्द होनेपर—ब्रायोनिया ।

„ लसदार स्रावभरी फुन्सियाँ, अकौता, दर्दभरा जखमका दाग—ग्रैफाइ ।

चमड़ेपर जलन पैदा करनेवाली, खुजली मिली लाल फुन्सियाँ और आँखोंके नीचे चकत्ते-चकत्ते सूजन—**एपिस ३** ।

„ जलन और खुजली-भरे उद्भेद या रसबटी या अकौता—**रस-टक्स** ।

चमड़ेपर फुन्सियाँ या साथ-साथ सटी घमौरियाँ—**बार्बेरिस-वल्गेरिस** ।

„ मांस फैला, जखम, कांटी या सींक घुसनेकी तरह दर्द—**नाइट्रिक-एसिड ६** ।

„ लाल उद्भेद, बहुत खुजली—**मेजेरियम ३** ।

„ चमड़ेके निचले भागमें सुरसुरी होनेपर—**सिकैलि** ।

„ खुजली-भरी फुन्सियाँ और बैंगनी रङ्गके दाने—**ऐसिड-म्यूर** ।

खुजलानेवाली और जलन पैदा करनेवाली छोटी-छोटी फुन्सियाँ और फोड़े, शरीरपर काली और नीली फुन्सियाँ—**आर्निका** ।

जलन करनेवाले दर्दके साथ फोड़ा और पृष्ठव्रण—**फाइटोलैका** ।

जलनकी तरह दर्दके साथ चेचककी गोटियोंकी तरह पीव-भरे दाने; गहरा घाव और किनारा छेद-भरा—**कैलिबाई** ।

बदबूदार उद्भेदके साथ गहरी कड़ी पीव-भरी पपड़ी जमना ; अकौता, तर, बहुत खुजलाते हैं ; मोटी पीले रङ्गकी पपड़ी जमा जखम ; धोनेके समय उसमेंसे खून निकलता है—मेजेरियम ।

पतला स्राव बहनेवाला हड्डीके पासका जखम और उसके साथ पतला पीव निकलना—ऐसाफिटिडा ।

बड़ी ककड़ीकी दरारकी तरह सहजमें रक्त निकलनेवाला मसा, मलद्वार, पुट्ठे, बगल वगैरह जगहोंकी खाल उधड़ जाना—कास्टिकम ।

बड़े जखमकी चारों ओर छोटे-छोटे जखम होनेपर—फास्फोरस ।

व्रण, फोड़ा, अंगुलवेढ़ा या और किसी तरहकी सूजनके साथ तन्तु नीले हों या जलन और दर्द हो—टैरेण्टुला-क्यूबेन्सिस ।

मार खाने बाद काले दाग मिटानेके लिये—लीडम ।

चेहरेपर फुन्सियाँ, पीव-भरे दाने, छूनेसे सुई बेधनेकी तरह दर्द, तर, पूरे नहीं निकले हुए उद्भेद ; खुजलानेसे बढ़ना, जल-भरी फुन्सियाँ ; मोटी भूरे रङ्गकी और पीले रङ्गकी पपड़ी जमती है ; खुजलानेसे खून निकल जाता है—डल्कामारा ।

रस-भरी फुन्सियोंसे भरा चमड़ा, नीली, काली या खून-भरी फुन्सियाँ, बहुत जलन और खुजली—रैनानक्यूलस ।

नेंबूके रङ्गवाली, कड़ी, सफेदी लिये, तर, बाहरी आवरण-वाला अकौता; ऊपरी ओंठ और हनुवटीमें रूसी—साइक्यूटा ।

शरीर नीला और बरफकी तरह ठण्डा—कार्बो-वेज ।

शिरके चमड़ेमें खुजली; माथेके पिछले भागमें और हाथमें अकौता—क्रिमे ।

शीतल लसदार पसीना, पीव-भरी फुन्सियोंमें धीरे-धीरे पीव भरना; नीली आभा लिये लाल—ऐण्टिम-टार्ट ।

सूखी गर्म और लाल त्वचा—बेल ।

सूखी फुन्सी, बेहद खुजली, यहाँतक कि खुजलाते-खुजलाते खून निकल आता है—ऐल्यूमिना ।

सब बदन खुजलाता हो, रातमें बिछावनकी गरमीसे रोगका बढ़ना—मर्क ।

सब देहमें तेज़ खुजली, पाण्डु-रोग; सफेद पाखाना होता है—डलिकस ।

सब शरीरपर भूरे रङ्गके दाने; सींक या कांटी गड़नेकी तरह दर्दके साथ जखम और मसा; जरा छूनेसे ही जखमसे खून निकलने लगना; चमड़ा सूखा और गन्दा; छोटी-छोटी फुन्सियाँ; खुली हवामें खुजलाती है; शरीर फटा-

फटा ; दूषित जखम ; पारद-दोषका जखम या उद्भेद—**एसिड-नाई** ।

सारे शरीरमें काले दाग—**बैप्टीशिया** ।

सब बदनमें घनी लाल फुन्सियाँ—**एमोन-कार्ब** ।

स्पष्ट सूखा चमड़ा—**कोलचिकम** ।

हाथ और जननेन्द्रियमें मसेकी तरह बतौड़ियाँ ; रतिज-रोगकी वजहसे मसे ; छत्तेकी तरह बतौड़ियाँ या उद्भेद ; जरा छूनेसे ही खून बहने लगना—**थूजा** ।

डङ्क मारनेकी तरह दर्दके साथ फोड़ा या सूजन, प्यास-रहित शोथ—**एपिस** ।

नखकी बीमारियाँ

(Diseases of the Nails)

नख कटवानेके समय एकाएक टूट जाने या मुड़ जानेपर—साइलिसिया ६ । नख क्षय होता जाये या उसका रङ्ग बदरङ्ग होता जाये, तो थूजा ६ या ऐल्यूमिना ३ । नख फट जाते हों, तो आर्स ६ । नख मोटा होता जाये, तो ग्रैफाइ ६ या ऐण्टिम-क्रूड ६ । नखके चारों ओर घाव होनेपर फास्फो ३ । नख-कोष-प्रदाहमें साइलिसिया ६ सेवन और कैलेण्डुला θ

बारह बून्द, साठ बून्द पानीमें मिलाकर लगाना चाहिये। झटका खा जाने या गिर जानेकी वजहसे नखमें तकलीफ़ हो जानेपर आर्निका ३ सेवन और आर्निका θ दस गुने पानीमें मिलाकर लगाना चाहिये। जूता पहननेकी वजहसे, पैरके नख अंगुलीके कोनेमें घुस जायें और नखकी बगलका कोमल अंश फूल उठे या दर्द हो या उसमें पीव पैदा हो जाये, तो नाइट्रिक-एसिड ६ या मैग्नेटिस-आस्ट्रेलिस २०० (Magnetis Australis 200) सेवन और हाइड्रैस्टिस θ (एक भाग, आठ भाग जैतूनके तेलमें मिलाकर बीमारीवाली जगहपर लगाना) या विरे-विर θ लेप करना चाहिये। इससे भी अगर फायदा न हो, तो नश्तर लगवानेका बन्दोवस्त करना चाहिये।

नख-कोष-प्रदाह

(Onychia)

इसमें नखके भीतरी भागवाले पदार्थमें प्रदाह पैदा हो जाता है। सिलिका ६ सेवन और कैलेण्डुला θ (या बोरिक-ऐसिड) थोड़े पानीमें मिलाकर लगाना चाहिये।

अन्तर्वृद्धि नख

(Ingrowing of Nail)

इस बीमारीमें नखकी जड़के पास मांसमें घुसकर या फैलकर प्रदाह और तकलीफ़ पैदा कर देती है। नाइट्रिक-एसिड ६ सेवन और हाइड्रैस्टिस θ (एक भाग+वैसेलिन आठ गुना)—मरहमका बाहरी प्रयोग करना चाहिये। नश्तर लगवानेकी जरूरत पड़नेपर, नखमें दो-तीन दिनोंतक ग्लिसरिन लगा रखना चाहिये।

१६। मेद्-वृद्धि रोग

(Obesity or Corpulence)

त्वचाके नीचे और समूचे शरीरमें ज्यादा परिमाणमें चर्बी बढ़ जानेको "मेद-वृद्धि" रोग या स्थूलकाय कहते हैं। साँसमें तकलीफ़, थोड़ी मेहनतमें ही हाँफ उठना, रक्तका ठीक-ठीक सञ्चालन न होना वगैरह उपसर्गोंकी वजहसे रोगीका शरीर और मन हमेशा ही खराब रहता है।

जवानी और प्रौढ़ावस्थामें ही हमेशा यह मेद रोग दिखाई देता है। मर्दोंकी बनिस्वत औरतोंको यह बीमारी ज्यादा हुआ करती है। बाप-माँको यह बीमारी रहनेपर उनकी औलादको भी हो जाती है। ज्यादा परिमाणमें मक्खन जातीय

पदार्थ खाना, बहुत ज्यादा खाना-पीना, बिना किसी चिन्ताके गृहस्थीका चलना, कोई शारीरिक या मानसिक परिश्रम न करना वगैरह कारणोंसे यह बीमारी हो सकती है।

चिकित्सा

ग्रैफाइटिस ३x, दो सप्ताहसे भी कुछ ज्यादा दिनोंतक खानेसे बहुत कुछ फायदा दिखाई देता है। औरतोंकी बीमारीमें यह ज्यादा फायदा करता है।

फाइटोलैक्का फल (Phytolacca Berry) एक ग्रेनकी टिकिया (या एक बून्दकी टिकिया) एक महीनेतक रोज़ दो बार सेवन कराकर बहुतसे डाक्टरोंको फायदा होता दिखाई दिया है। फ्यूकस वेसिक्युलोसस θ, ५—६ बून्द नित्य दो बार भोजनके पहले सेवन करना लाभदायक होता है। इससे फायदा न हो तो डाक्टर क्लार्क क्रमसे (क) ऐमोन-ब्रोम ३x, (ख) कैल्केरिया-कार्ब ३—६, (ग) कैल्के-आर्स, फी मात्रामें २ ग्रेन, ८ घण्टेका अन्तर देकर खिलानेकी सलाह देते हैं।

डा० काउपरथायेटको किसी दवासे फायदा न मालूम हुआ, तब उन्होंने लक्षणके अनुसार नीचे लिखी दवाएँ देनेकी सलाह दी है :—ऐगरिकस ३x, ऐण्टिम-क्रूड ६x, आर्सेनिक ३x, बैराइटा-कार्ब ६x, ग्रैफाइटिस ६x, लाइकोपोडियम ६x, मर्क-सोल ३x और सलफर ६x।

आनुसङ्गिक चिकित्सा।—श्वेतसार (starch) और शर्करा जातीय खाद्य, जैसे—गोल आलू, शकरकन्द, मक्खन, चीनी, मलाई, घी और मधुर रस मिला भोजन, बियर पोर्ट वगैरह शराब, उड़द, रोटी वगैरह चर्बी बढ़ानेवाले पदार्थोंका खाना छोड़ देना चाहिये। मक्खन निकाला हुआ दूध, आगमें सेंकी गेहूँकी रोटी, कड़ा बिस्कुट ; मछली (तेलमें तली नहीं) मांस (चर्बी न हो), ताजे फल (शर्करा-विहीन), अण्डे, नेबूका रस, चाय, काफी, सेव, केला, कमला नेबू वगैरह चीजें खायी जा सकती हैं। भोजन करनेके कम-से-कम दो घण्टे बाद पानी पीना चाहिये।* थोड़ी मेहनत, घूमना, साइकिलपर चढ़ना, सीढ़ीसे चढ़ना-उतरना, पहाड़पर चढ़ना वगैरह थोड़ी मेहनतवाली कसरतें करनी चाहिये। यह फायदा करती है।

बुढ़ापा और उसके पहलेकी दोनों अवस्थाएँ

मनुष्यकी जिन्दगी तीन हिस्सोंमें बाँटी जा सकती है :—
(१) विकास अवस्था (२) मध्य जीवन और (३) क्षयावस्था।

---

* पुराना बंशलोचन, कुलथी (dolichos), मूंग, मसूर, मठा, बैंगनकी पकौड़ी ; इलायची, गर्म-पानीके साथ शहद, लावा, सरसों या तिलका तेल, तीखी या रूखी चीजें, विज्झड़ो मछली शरीरमें अगुरु लगाना वगैरह दवाएँ आयुर्वेदके मतसे हितकारी हैं।

(१) जन्मसे २५ वर्षकी उमरतकको "विकासावस्था" कहते हैं। इसी समय खासकर शरीरके सब यन्त्रोंकी और ज़िन्दगीकी दूसरी प्रवृत्तियोंकी वृद्धि होती रहती है। बेल, जेल्स, कैल्के-कार्ब, सिलिका, कैमो, सलफर, कैल्के-फास, एण्टिम-क्रूड, नेट्रम-फास, स्क्विलिया, ओपियम, मर्क वगैरह दवाएँ इस अवस्थाकी प्रधान औषधियाँ हैं।

(२) २५ से ४५ वर्षतक जीवनकी "बिचली या मध्य अवस्था" है। इस अवस्थामें साधारणतः बिचली श्रेणीके और गरीब आदमी अपने और अपने परिवारके भरण-पोषणके लिये बहुत मेहनत किया करते हैं। धनी और आलसी मनुष्य विलास और रङ्ग-रस आदिमें अपनी ज़िन्दगी बिताते हैं और औरतें सन्तान-प्रसव करना और घर-गृहस्थीके काम-धन्धे किया करती है। नक्स-वोम, पल्स, सिपिया, फास्फो, मेडोरि, लैके, हायोसायमस, सिकेलि, रसटक्स, इग्नेशिया नाइट्रिक-एसिड, ग्रैफाइटिस, एसिड-फास, सिफिलिनम, प्लम्बम वगैरह इस अवस्थाकी दवाएँ हैं और ये लाभ करती हैं।

(३) कुछ कमोबेश ४५ वर्षकी उमरसे ही शारीरिक क्षयके लक्षण दिखाई देते हैं। जैसे—दृष्टि-शक्ति और सुननेकी शक्तिका कम होना, हड्डियोंमें गड़बड़ी, पेशियोंका झुकना, शिथिलता और कमजोरी, हृत्पिण्डकी कमजोरीकी वजहसे शारीरिक तापका कम होते जाना और हाथ-पैर वगैरह ठण्डे मालूम होना, नाड़ियोंमें चूनेका भाग अधिक परिमाणमें जमा

होना वगैरह कारणोंसे खूनके दौरानमें और पाचन—क्रियामें गड़बड़ी, रीढ़की हड्डियोंका टेढ़ा होना, मानसिक विचारोंका निस्तेज होना वगैरह उपसर्ग दिखाई देते हैं।* प्रत्नतत्व और पुरावृत्तकी आलोचना करनेपर अच्छी तरह मालूम होता है, कि सफेद दाढ़ी-मोछवाले प्राचीनोंको पहले कहे हुए "क्षय"— बतानेवाले लक्षण अच्छे न मालूम होनेकी वजहसे उनके वंशधरगण उन्हें जल्दी परलोक पठानेका उपाय करते थे— यहाँतक कि बहुत-सी जातियाँ उन्हें उदरस्थ करनेके लिये अपने-अपने आत्मीय-स्वजनको निमन्त्रण देकर यह निधन कार्य बड़े समारोहसे सम्पन्न करती थीं। जो हो, धीरे-धीरे यह प्रथा उठ गयी है। लाइको (खासकर औरतोंके लिये), आर्ज-नाई, कार्बो-वेज, नेट्रम-मूरर, आरम, ऐमोन-कार्ब, बोरिक-एसिड, नक्स-मस्केटा, (अजीर्ण रोगमें), कोनायम, फ्लोरिक-एसिड, ओपियम, सार्सापेरिला (बच्चोंकी तरह चेहरा), साइक्यूटा, नाइट्रिक-एसिड, सलफ्यूरिक-एसिड (खासकर औरतोंके लिये), गैम्बोज (बहुत ज्यादा पानीकी तरह दस्त होनेपर), सलफर, ऐलो, सिकेलि (बुढ़ापेसे एकदम कमजोर),

* हमारे पाठक-पाठिकाओंको सुनकर आश्चर्य होगा कि वियेना और अमेरिकाके कई नगरोंमें "फिरसे जवान होनेका स्वास्थ्य-निवास" १९२३ ई० में खुला है। वहाँ फिरसे जवान होनेके लिये बहुतसे धनवान प्रौढ़ और वृद्धा नर-नारी इकट्ठे होते हैं। रंजन-रश्मि और परिष्कृत सूर्य किरणमें रोगीको रखनेपर और उन्हें एक ग्रन्थिका सारांश खिलानेपर वे फिर जवान हो जाते हैं।

मर्क-आयोड, कैल्क-कार्ब, सैबाडिला वगैरह दवाएँ इस अवस्थामें बहुत फायदा करती हैं। (उन्माद रोगवाले अध्यायमें "बुद्धि-वैकल्य" देखिये)।

वार्द्धक्यकी आनुसङ्गिक चिकित्सा

भोजन :—बुढ़ापेमें दाँत गिर जानेपर चबाकर खाया नहीं जा सकता। इसलिये पके फल या दूध आदि सहजमें पचनेवाली चीजें खानी चाहियें।

विश्राम :—बुढ़ापेमें आराम लेना बहुत जरूरी है। कसरत या ज्यादा मेहनत करनेसे हड्डी टूट जा सकती है।

ताप :—जाड़ेके दिनोंमें शरीरको गर्मी बनाये रखनेके लिये, भरपूर कपड़े पहनना उचित है। (जरूरत पड़नेपर) कमरेके एक कोनेमें थोड़ी आग रखना उचित है। जाड़ा ज्यादा हो तो धूप निकलनेके घण्टे भर बाद बिछावनसे उठना चाहिये।

———

१८। अन्तिम-काल

दो तरहसे मृत्यु होती है :—

(क) हृत्पिण्डकी क्रिया बन्द होकर (synocope)।

(ख) श्वासयन्त्रकी क्रिया रुककर (asphyxia)।

(क) एकाएक रक्तस्राव, बेकायदे खाना-पीना या उचित रूपसे शरीरका पोषण न होना वग़ैरह कारणोंसे हृत्पिण्डकी क्रिया रुक जाती है। लक्षण—धुँधला देखना, आँखोंकी पुतलीका फैल जाना, सरमें चक्कर, बेचैनी, कमजोर नाड़ी, चेहरा और दोनों ओठ नीले, हाथ-पैर ठण्डे, ठण्डा पसीना, साँसमें तकलीफ़, खींचन-भरी या बिना खींचनवाली बेहोशीकी हालत। जहर खाने या हृत्पिण्डकी किसी बीमारीकी वजहसे हृत्पिण्डकी क्रिया रुक जा सकती है। तेज़ और कमजोर नाड़ी, हाथ-पैर ठण्डे, सब शरीरमें लसदार पसीना, परन्तु ज्ञान रहना, इसका प्रधान लक्षण है।

(ख) तेज़, तकलीफ़ देनेवाला श्वास-कष्ट, आँखका सफेद अंश मानो बाहर निकल पड़ता है। चेहरा फूला और नीला होना, गर्दनके पीछेकी नसें फूलीं और अकसर अकड़नके साथ बेहोशी आ जाना या अचेतन नींद (coma—अर्थात् साँसकी तकलीफ़ पैदा होनेके पहले ही बेहोश हो जाना); या समवरोधन वग़ैरह श्वास-यन्त्रोंका काम बन्द हो जाना इसका प्रधान लक्षण है।

प्राण निकला है या नहीं, यह जाननेका तरीका।—मुँहके छेदके पास आइना रखनेसे अगर उस आइनेमें तरी (या आभा) मालूम हो तो समझना चाहिये, कि अभी मृत्यु नहीं हुई है। मांसमें आलपीन या सुई भोंक देनेपर यदि सूराखवाली जगह भर जाये तो समझना चाहिये, कि जीवित है; परन्तु अगर वह बन्द न हो, तो अवश्य ही मौत हो गयी है।

यह तो कहना ही वृथा है, कि कोई दवा मौतको नहीं रोक सकती; परन्तु अन्तिम अवस्थामें इन दोनों दवाओंके सेवनसे फायदा हो सकता है :—

पल्स ३०।—मृत्युके समयकी "घरघराहट" रोकनेके लिये पल्सेटिला ३० बहुत फायदा करता है।

हेलोडर्मा ३०।—मुर्देके जैसा सब शरीर ठण्डा होता जाता हो या हाथ-पैर बहुत ठण्डे, कलेजा सिर्फ थोड़ा गर्म मालूम होता हो तो हेलोडर्मा होराइडस ३० ज्यादा फायदा करता है। हेलोडर्माके लक्षणोंमें "अन्तिमकालकी सब शरीरकी शीतलता" उपसर्ग प्रायः दिखाई देता है—यह हिमाङ्ग अवस्था सर्दीसे पैदा हुई शीतलता नहीं है; परन्तु अन्तकालकी ठण्डक है। (ठण्डक शरीरके ऊपरसे नीचे उतरती हो या नीचेसे ऊपर जाती हो—बात एक ही है Aushutz's Therapeutic By-ways देखिये।)

———

१८ । मानसिक रोग

(Mental Diseases)

सूचना

हमारे सभी पाठक-पाठिकाएँ जानती हैं, कि शरीर और मनका एकदम घना सम्बन्ध है। शरीरमें कोई बीमारी होनेपर मन भी एकदम खराब हो जाता है। जैसे—बोखारकी तेज़ीमें रोगीको प्रलाप हो जाता है, हँसना, रोना और बेहोशी वग़ैरह लक्षण पैदा हो जाते हैं ; गिरनेकी वजहसे माथेमें चोट लगनेपर लड़कोंकी बुद्धि खराब हो जाती है या जड़ता पैदा हो जाती है। इसके विपरीत, मन खराब होनेपर शरीर भी खराब हो जाता है। जैसे—जिस माताका लड़का मर जाता है, वह पागल और व्यापारमें यथासर्वस्व खोया हुआ व्यापारी मौतकी सेजपर सोया मालूम होता है। किसी इच्छित पदार्थके न मिलने या प्रेममें निराशा होनेपर चित्त चञ्चल हो जाता है और हमेशाके लिये शरीर खराब हो जाता है।

हैनिमैन मेडिकल कालेजके निदानशास्त्रके अध्यापक डाक्टर Raue का कथन है, कि मानसिक वृत्तियोंकी अधिकता (exaggeration) या निस्तेज-भाव (depression) अथवा विकृति (या भ्रष्ट perverted अवस्था) की वजहसे ही मानसिक रोग हुआ करते हैं।

सन् १९२३ ईस्वीके अन्तमें Eugence Del Mar साहबने कहा है, कि हरएक शारीरिक बीमारीमें उसीके जैसी

मानसिक गड़बड़ी भी हुआ करती है। जैसे—हिंसा परायण या स्वार्थी मनुष्योंको ही स्नायुशूल रोग हुआ करता है, उद्वेग या कलह-प्रिय मनुष्योंको अजीर्ण रोग होता है, ईर्षालु या प्रेममें निराश मर्द-औरतोंको कर्कट रोग हुआ करता है, दूसरोंका दोष देखनेवालोंको गठिया रोग होता है, क्रोधियोंको संन्यास रोग होता है; दूसरोंको भर्त्सना करनेवालोंको दमा होता है; दूसरोंको तङ्ग करनेवालोंको सर्दी हुआ करती है अथवा जो दूसरोंकी बातें नहीं सुनना चाहते हैं, वे बहरे हो जाया करते हैं।

स्नायुमण्डलके रोगोंका मानसिक रोगोंसे एकदम घना सम्बन्ध है। "स्नायुमण्डलके" रोग देखिये।

उन्माद रोग

(Insanity)

दिमागमें चोट या जख्म वगैरह होनेकी वजहसे मनकी स्वाभाविक अवस्थामें गड़बड़ी हो जाती है। इसीका नाम "उन्माद रोग" या "पागलपन" है। नींद न आना, माथेमें दर्द, बिना इच्छाके हाथ-पैरोंका चलाना या बोलना या कुछ बोलना ही नहीं, चेहरा तथा आँखोंकी भावभङ्गी बदली हुई, गलत देखना, गलत सुनना या अण्ट-सण्ट बकना या बड़-

बढ़ाना, याददाश्तकी कमी, बुद्धिका बिगड़ना, किसी काममें जी न लगना, क्रोध, भय, प्रसन्नता, शोक, रोना वगैरह मानसिक भावोंकी ज्यादती, अपनी इच्छा-शक्तिको काबूमें न रख सकना, आत्महत्या करनेकी इच्छा, प्रियजनोंका अनादर वगैरह इस बीमारीके प्रधान लक्षण हैं।

उन्माद रोगीके कार्यकलापमें और विचार-शक्तिमें प्रधानतः तीन प्रकारकी भ्रान्तियाँ दिखाई देती हैं। जैसे—(१) भ्रान्त देखना* (illusion), (२) अवास्तव देखना†

---

* भ्रान्त देखना अथवा प्रकृत या बाहरी चीजोंके सम्बन्धमें भ्रम धारणा (an illusion i. e. a mistaken perception of external objects) जैसे—डोरीमें साँपका भ्रम होना, परछाईं देखकर भूत समझ लेना, रेगिस्तानमें पानी मालूम होना, रेलके शब्दको बादलकी गरज समझना। नक्स-मस्केटा, रोडियम (rhodium) २००, मार्फिनम ३ विचूर्ण, धतूरा आरवेरियम (daṭura arbarium), हाइड्रोफोबिनम, वैलेरियाना वगैरह भ्रान्त देखनेकी प्रधान दवाएँ हैं।

† अवास्तव देखना अर्थात् जो चीज़ या विषय नहीं है, वही मालूम होना (an hallucination i. e. the perception of objects which have no reality or of sensation which have no corresponding external cause), जैसे—नृसिंहकी मूर्त्ति देखना, मरे मनुष्योंको देखना या बातें कहना, देवताओंकी बातें सुनना। आर्जे-नाई, कनाबिस इण्डिका, काक्युलस, हायोस, इग्ने, लैंके, पेट्रो, एने हेलो-नियम, क्युप्रम, ऐसेट, एगरिकस, ऐनाकार्डियम, बेलेडोना, ओपियम, स्ट्रैमो, कैलि-ब्रोम, ऐब्सिन्थ, सलफर, जिङ्क-म्यूर, ऐन्थ्रस, विरेट्रम, नक्स, पल्स, एसिड-फास, वैलेरियाना वगैरह दवाएं इस बीमारीमें फायदा करती हैं।

(hallucination), (३) बद्धमूल भ्रान्त-विश्वास* (delusion)।

बहुत ज्यादा परिश्रम या उद्वेग, ज्यादा खाना-पीना या इन्द्रिय-परिचालन, ज्यादा शराब या गाँजा पीना, स्वास्थ्यभङ्ग, निराशा, मृगी वगैरह इस बीमारीके खास कारण हैं। पूर्व-पुरुषोंको उन्माद रोग रहना, गर्मी रोग, दिमाग या मेरुदण्डकी यान्त्रिक बीमारियाँ, शरीरमें गहरी चोट लगना, अनुचित शिक्षा, हमेशा भयानक घटनाओंवाले उपन्यास आदि पढ़ना इस रोगके गौण कारण हैं। यौवनसे लेकर प्रौढ़ावस्था (उमर २५ से ४०) तक यह बीमारी ज्यादा होती है।

---

* बद्धमूल भ्रान्त विश्वास—अर्थात् बहुत दिनोंतक भ्रम देखना या अवास्तव देखना आदिका मनपर अधिकार हो जानेपर चित्तपर उसकी जड़ जम जाती है। (a delusion i. e. when an illusion or hallucination getting a strong possession of the mind tends to a persistent belief in the corresponding object, it is called "delusion" (A. C. Mitra's Psychology page 374 देखिये)। जैसे—गलेसे डोरी डाले हुआ भूत रोगीके मनमें मौजूद रहकर उसे आत्महत्या करनेको उसकाया करता है, क्षितिज (horizon) जमीन और आस्मानका मिला हुआ स्थान मालूम होना। कैनाबिस इण्डिका (कोई चीज़ वास्तविक आकारसे बड़ी मालूम होना, एक मिनटका समय कई वर्ष मालूम होता हो, एक हाथ दूरकी चीज़ बहुत दूर मालूम होती हो) प्लाटिना (कोई चीज जितनी बड़ी है, उससे छोटी मालूम होना), इग्नेशिया, कैल्के-कार्ब, स्टैफिसेग्रिया, आरम, आर्सेनिकम, रसटक्स, सिकेलि, सिलिका और ऊपर कहे हुए भ्रान्त देखनेकी और अवास्तव देखनेकी दवाएँ भी इस बीमारीमें दी जा सकती हैं।

बीमारीका एकाएक हमला, जवानीकी उमर और सबल शरीर, जमे हुए भ्रान्त विश्वासका बदलते रहना, खाने-पीनेमें रुचि, आँखोंकी पुतली चञ्चल, साफ-सुथरे रहना, सदा हँसी-खुशी, शरीरमें फोड़े-फुन्सियाँ होना, अकड़न या पक्षाघात न रहना, मेदके बढ़नेके साथ मनमें फुर्त्ती रहना प्रभृति अच्छे लक्षण हैं।

रोगका धीरे-धीरे हमला, ५० या इससे ज्यादा उमरमें यह बीमारी होना, एक ही विषयमें भ्रान्त विश्वास (रोगीको खासकर ऐसा मालूम हो, मानो कोई सदा ही उसे तङ्ग कर रहा है)। भोजनमें अरुचि (रोगीको जबर्दस्ती खिलाना पड़ता है), आँखोंकी पुतली सिकुड़ी हुई या निश्चल रहना (या हिला न सकना), गन्दगी, सदा हस्तमैथुन क्रिया करना, कोमल स्वभाव, मेद बढ़नेके साथ-ही-साथ हमेशा खिन्न रहना, अपने केश नोचना या शरीरपर चोट करना, अकड़न या लकवा रहना वगैरह अशुभ लक्षण हैं।

पहलेके डाक्टर उन्माद रोगका इलाज करते समय रोगीको बहुत तङ्ग करते और उससे कठोर व्यवहार करते थे। महामति हैनिमैनने ही सबसे पहले उनसे दया-पूर्ण व्यवहार और रोगियोंके साथ निष्ठुरता करनेका प्रतिवाद किया था। वास्तवमें महाप्राण हैनिमैन, फरासी डाक्टर पाइनेल (Pinel) और ट्यूक (Tuke) और कोनोली (Conolly) इन तीनों अङ्गरेज डाक्टरोंने बकवादी उन्माद रोगके इलाजमें प्राणपणसे

सुधारकी चेष्टा की है। उन्माद रोगकी चिकित्सामें होमियो-पैथिक ढङ्ग दूसरे मतोंसे कहीं अच्छा है। D. Selden Talcott लिखित "Mental diseases and their treatment" देखिये।

उन्माद रोग चार प्रकारके हैं :—(क) प्रचण्ड उन्माद रोग या पागलपन (mania), (ख) विषाद-वायु (melan-cholia), (ग) बुद्धि-वैकल्य या मानसिक शक्तिका घटना (dementia), (घ) बकवादके साथ पक्षाघात (paresis)।

(क) प्रचण्ड उन्माद रोग या पागलपन

(Mania)

जिस उन्माद रोगमें मानसिक वृत्तियोंकी ज्यादती और शारीरिक उत्तेजना पूरी तरह दिखाई दे, उसे प्रचण्ड उन्माद रोग कहते हैं। यह एकाएक न होकर धीरे-धीरे होता है। बदन कड़मड़ाना, भूख न लगना, मुँहसे बदबू, जीभ लेप-चढ़ी ; अग्निमान्द्य, कब्जियत, सर भारी, मेहनत करनेसे जी चुराना, किसी काममें जी न लगना वगैरह लक्षण पहले तीन महीनोंतक दिखाई देते हैं। इसके बाद मानसिक भावोंमें उलट-फेर हो जाता है ; कभी हँसी, कभी रुलाई, जरा-सी बातपर रञ्ज हो जाना, अपनेको बड़ा समझना, प्रलाप, स्त्री-सङ्गकी बहुत इच्छा, कपड़े या केश नोचना वगैरह

उपसर्ग पैदा होकर रोगी धीरे-धीरे एकदम पागल हो जाता है। अच्छी तरह समझानेके लिये प्रचण्ड उन्माद रोगकी अलग-अलग अवस्थाओंके उपसर्ग नीचे लिखे जाते हैं :—

(१) तरुण (acute) उन्माद रोगमें—मानसिक और शारीरिक बेचैनी और चञ्चलता रहती है ; भ्रान्त विश्वास और काल्पनिक वस्तुओंका अनुभव ; सच्ची बाहरी चीजोंके सम्बन्धमें भ्रम-पूर्ण धारणा। बुरी या अश्लील बातोंका कहना और आचरण करना, प्रचण्ड भाव, काटने या मारने जाना ; नींद न आना वगैरह तरुण (नये) उन्माद रोगके प्रधान लक्षण हैं। इस श्रेणीके रोगी अकसर अच्छे हो जाते हैं।

(२) तरुण प्रलाप-प्रधान (acute delirious) उन्माद—बहुत ज्यादा शारीरिक और मानसिक बेचैनी ; भ्रान्त विश्वास या काल्पनिक वस्तुका अनुभव करना ; हमेशा बदलती रहनेवाली कल्पना ; जोरसे बोलना या चिल्लाना ; प्रचण्ड भाव ; परिवारवालोंपर ममता न रहना ; नींद न आना ; चेहरा लाल, बोखार ; नाड़ी तेज़ ; सूखी जीभ ; सान्निपातिक विकारकी तरह लक्षण वगैरह इस रोगमें दिखाई देते हैं। यह बीमारी होनेपर बहुतसे रोगी मर जाते हैं।

(३) इच्छा-वृत्तिका बिगड़ना और जिद्द (Paranoia) के साथ उन्माद रोग :—रोगी हमेशा जो भाव या आशा अपने मनमें पालता रहता है, उसीको बार-बार कहता है या कुछ बढ़ाकर कहता है, अपनेको बहुत बड़ा समझता है (यहाँतक कि अपनेको देवता समझने लगता है) ; रोगी कभी चुप या

कभी क्रोधमें भर जाता है; एक ही विषयमें भ्रान्त-विश्वास (खासकर रोगीको मानो हमेशा कोई तकलीफ़ देता रहता है, ऐसा ख़याल करना, हमेशा ऐसा देखते-देखते रोगी नर-हत्यातक कर डालता है)। दूसरेकी इच्छापर सन्देह (जैसे—स्त्री-पुरुष एक दूसरेके चरित्रपर सन्देह करते हों) वगैरह इस जातिके उन्माद रोगके खास लक्षण हैं। यह एक स्वतन्त्र बीमारी है; परन्तु कभी-कभी नये पागलपनके आक्रमणके बाद भी दिखाई देती है।

(४) पुराना (chronic) पागलपन रोग।—यह कोई स्वतन्त्र बीमारी नहीं है। ऊपर कही हुई नये उन्माद रोगकी गौण दशा है। किसी तरहका भ्रम-विश्वास (जैसे—अपनेको राजा समझना) या रोगीके मनमें ऐसी धारणा बैठ जाती है, कि वही अपनी जिन्दगीके सब काम चला रहा है। इसका परिणाम बुरा है।

इन चार तरहके पागलपनके अलावा प्रसव करनेके बाद एक उन्माद रोग ("सौरी-बाई" देखिये) या जरायुज-मूर्च्छा या हिस्टीरिया, गुल्म-रोग, रजः बन्द होनेके समय बकना वगैरह उन्माद रोग हो सकते हैं। "स्त्री-रोग" अध्यायमें ऊपर कहे गये रोग देखिये।

चिकित्सा

बेल, हायोस, स्ट्रैमो, फास्फो, कैन्थरिस, विरे-ऐल्ब, कैनाबिस-इण्डिका और सलफर ये आठ दवाएँ प्रचण्ड उन्माद

रोग (mania) में फायदा करती हैं। मानसिक बीमारियोंके इलाजमें सिद्धहस्त डाक्टर टैलकटकी चुनी हुई दवाएँ लक्षणके अनुसार कम-से-कम तीन या छः महीनेतक नियमसे सेवन करनी चाहियें; परन्तु पुराने उन्माद रोगमें डा० हिउजेज़ और डा० लसनकी चुनी हुई दवाएँ रोगीको देनी चाहियें। शरीरमें जायु विचारणकी तरह लक्षण प्रकट हों, इस तरह एक बार पूरी मात्रामें (जैसे—हायोसेमिन १ ग्रेन) देनेकी व्यवस्था करते हैं।

स्ट्रैमो ३X।—बहुत ही क्रोधका भाव या डर-भरे डरानेवाले उन्माद रोगके लक्षणमें फायदा करता है। डराने-वाली अवास्तव चीजें देखना (जैसे—साँप या चूहे देखना, भूतकी बातें सुनना); काल्पनिक विपत्तिसे बचनेके लिये इधर-उधर दौड़-धूप करना; बहुत ज्यादा क्रोध; रोशनी और साथी पानेकी लालसा ("बेलेडोना" के लक्षणके विपरीत) आत्मगरिमापूर्ण भाव।

बेलेडोना १X, ३०।—तेज़ प्रलापवाले लक्षण-मिली बीमारीमें इसका प्रयोग करना चाहिये। आँखकी पुतली फैली, निश्चल और भयावनी दृष्टि, बीच-बीचमें क्रोध प्रकट करना। (नये उन्माद रोगमें :—जैसे, तेज़ प्रलाप, बेचैनी, हिंसा, मानसिक अवस्थाओंका जल्दी-जल्दी बदलना, पासके आदमियोंको मारना या काटनेको दौड़ना; गाना, सीटी बजाना, उछलकर चलना, नाचना; चेहरा लाल, नाड़ी

पूर्ण और उछलती हुई)। डाक्टर टैलकाट कहते हैं, कि माथा भारी और सरमें धीरे-धीरे दर्द मालूम होनेपर, बेल १x या २x देना चाहिये और धातु-दोषकी वजहसे उत्तेजनामें बेल ३—३० देना होगा।*

हायोस १, २००।—(बेलेडोनाके प्रलापकी बनिस्बत हलके प्रलापके लक्षणमें यह फायदा करता है, खासकर नयी बीमारीमें)—हलके ढङ्गका उन्माद रोग, हँसने या गानेकी तेज़ इच्छा, हँसी-खेलके साथ थोड़ा प्रलाप, बोलनेकी बहुत इच्छा, कभी-कभी मौन-भाव, निर्लज्जता, नङ्गे हो जाना या लिङ्ग दिखाना, कामोन्माद; पेशियोंकी सिकुड़नके साथ बेचैनी; ईर्षा; देवताओंकी भक्ति-भावसे प्रार्थना करना, गाना इत्यादि धर्मोन्मत्तता (दूसरी दवाओंकी अपेक्षा नये उन्माद रोगमें यह ज्यादा फायदा करती है) एक ही विषयमें पागलपन (monomania) उसी विषयको बराबर कहना; कोई दूसरी बात नहीं। †

---

* ऊपर कहे विषयोंमें बेलेडोनासे फायदा न हो, तो "डियुबोइसिया" २ की परीक्षा करनी चाहिये।

† अगर हायोसके प्रयोगसे लिङ्ग दिखाना वगरह निर्लज्जता दूर नहीं हो या कामोन्मादका उपसर्ग मौजूद रहे या संध्या—गोधूलिके समय अवास्तव मूर्त्तियाँ दिखाई दें, तो पहले ऊँची शक्तिमें फास्फोरस देना चाहिये और फास्फोरससे फायदा न हो तो कन्थरिस ३x का प्रयोग करना चाहिये। तेज़ प्रलापके साथ ऋतु बन्द होनेके लक्षणमें, क्यप्रम ३०; उन्माद रोगके साथ

कैनाबिस इण्डिका १X ।—भ्रमपूर्ण विश्वास और अवास्तव या काल्पनिक चीजें देखना—यह दोनों ख़याल बराबरकी प्रकृतिके होनेपर भी हमेशा बदला करते हों, सब कामोंमें ज्यादती, देश, काल (time and space) का ज्यादा मालूम होना (जैसे—१ मिनटका समय १ बरस मालूम होता हो या पासकी चीज़ दूर रखी हुई मालूम होती हो), शान्त प्रकृतिवाले आदमियोंके उन्माद रोगमें।

सलफर ३० ।—यह पुराने उन्माद रोगमें फायदा करता है। माथा गर्म, पैर ठण्डे, कलह-प्रियता, एक ही विषयमें भ्रान्त विश्वास (पुराना फटा कपड़ा रेशम मालूम हो); धर्मोन्मत्तता, अहङ्कार, सब पदार्थोंमें बदबू आना, गन्दा रहना।

रोगिनीके कामोन्माद लक्षणमें, प्लैटिना ३०। बहुत मानसिक यातनाके साथ शारीरिक अवसन्नता होनेपर, विरे-ऐल्ब ६। प्रचण्ड उन्माद रोगके साथ बेचैनी, तेज प्रलाप, कोई उसे ज़हर खिलाकर मार डालेगा ऐसा समझना, लक्षण मौजूद रहनेपर, विरे-विर १x फायदा करता है। चौर उन्माद रोगमें (अर्थात् छिपाकर दूसरोंको चीज ले लेने या चुरा लेनेकी प्रबल इच्छा kleptomania में—टेरण्टुला ६ या ऐबिसिन्थियम ३x फायदा करता है। ऐसा उन्माद सभ्य युरोपियन स्त्रियोंको ही हुआ करता है) योनि रोगके कारण उन्माद रोग होनेपर और उसके साथ ईर्षा मौजूद रहनेपर एपिस ३। एक ही विषयमें उन्माद (अर्थात् एक ही काममें पागलपन—monomania) की—ऐबिसिन्थियम, हायोस, साइक्यूटा, प्लाटिना, टेरण्टला बड़ी अच्छी दवाएँ हैं।

पहलेके ऐलोपैथ ब्रोमाइड आव पोटैसियम, क्लोरैल हाइड्रेट, अफीम या मार्फिया वगैरह दवाएँ इस रोगमें व्यवहार करते हैं। इससे रोगीका प्रचण्ड भाव तुरन्त बन्द हो जाता है और वह जड़ पदार्थोंकी तरह बेहोश पड़ा रहता है; परन्तु इन दवाओंके व्यवहारका नतीज़ा बुरा होता है।

(ख) विषाद्-वायु रोग

(Melancholia)

मानसिक अवसन्नता और दुःख, इस रोगके विशेष लक्षण हैं। इसके साथ हमेशा यकृत-दोष या डिम्ब-कोषकी बीमारी अथवा oxaluria (अर्थात् पेशाबमें आक्ज़ैलिक एसिड या calcium oxalate मौजूद रहता है) वगैरह उपसर्ग दिखाई देते हैं।

(१) **सहज-साध्य** (Simple) विषाद-वायु रोग।—जिस विषाद-वायु रोगमें मानसिक अवसन्नताके साथ जमा हुआ भ्रान्त विश्वास (delusion) या शारीरिक उपद्रव नहीं रहता, उसे सहज-साध्य (simple) विषाद-वायु रोग कहते हैं। इसमें मानसिक दुःखके अलावा कोई दूसरा उपसर्ग नहीं मालूम होता। इसका परिणाम अच्छा है।

(२) **नया** (Acute) विषाद-वायु रोग।—बहुत दिनोंतक ठहरनेवाली मानसिक अवसन्नता; भ्रान्त-विश्वास

(जैसे—रोगी समझता है, कि उसका अपराध बहुत बड़ा है); अवास्तव चीज़ोंकी कल्पना; चित्त-विभ्रम; रोना; नींद न आना; बेचैनी, भय, उत्कण्ठा, आत्महत्या करनेकी प्रबल इच्छा, आँखोंका तारा सिकुड़ा हुआ; भूख न लगना और कब्जियत इसके प्रधान लक्षण हैं। इसका भी भावीफल अच्छा है।

(३) पुराना (Chronic) विषाद-वायु रोग।—(नये रोगके बादवाली अवस्था)।—हमेशा मानसिक अवसन्नताका मौजूद रहना, भ्रान्त विश्वास पक्का और जमा हुआ; अपनेको हेय समझना; अग्निमान्द्य; कब्जियत; कोई तकलीफ़ न मालूम होना; आत्महत्या करनेकी तेज़ इच्छा इसके प्रधान लक्षण हैं। इसका भावी परिणाम बुरा है।

(४) विषाद-वायुके साथ अचेतन अवस्था (Stupor)—गहरी मानसिक अवसन्नताके साथ सब विषयोंमें उदासीनता; तङ्ग न किया जाय तो रोगी अपनी जगहसे हिलना नहीं चाहता, अपने शरीरका कोई यत्न न करना; हमेशा गन्दे रहना; मुँहसे लार टपकना, नाकसे श्लेष्मा बहना, आत्महत्या करनेकी इच्छा; खूनका दौरान कम, शरीरकी गर्मी जितनी चाहिये उससे कम होना, इसके प्रधान लक्षण हैं। ये सभी उपसर्ग आशङ्काजनक हैं।

चिकित्सा

विषाद-वायुके साथ यकृत-दोषमें—नक्स-वोम, पल्स, मर्क, कार्डुयस मेरियानस फायदा करता है।

विषाद-वायुके साथ जरायु-डिम्बकोषको बीमारीमें—ऐक्टिया-रेसिमोसा (या सिमिसिफ्यूगा), लिलयम-टिग, प्लाटिना, लैकेसिस फायदा करते हैं।

विषाद-वायुके साथ oxaluria उपसर्गमें—आक्जैलिक-एसिड, नाइट्रो-म्यूरियेटिक-एसिड फायदा करता है।

नये विषाद-वायु रोगमें—इग्नेशिया, नेट्रम-म्यूर फायदेमन्द हैं।

आत्महत्या करनेकी इच्छामें—आरम और आत्मनिग्रहकी चेष्टामें आर्सेनिकके व्यवहारसे फायदा होता है।

विषाद-वायुके साथ बेहोशीमें—हेलिबोरस, ओपियम, विरेट्रम, बैप्टीशिया देना चाहिये।

इग्नेशिया ३, ३०।—(डर जाना, दुःख अथवा निराशासे पैदा हुआ) नये विषाद-वायु रोगकी यह सबसे बढ़िया दवा है। रोनेकी सामर्थ्य नहीं है, पर दुःखसे कलेजा फटा जाता है। रजःस्राव बन्द होनेके समयका विषाद-वायु रोग, गहरी सुस्ती, अकेले रहनेकी इच्छा करना, रोगीका सहज ही में क्रोधित होना ; मनके दुःखको दूर करनेके लिये रोगिनी आत्महत्या करना चाहती है।*

* परन्तु अगर रोगिनी बहुत रोती हो या उसका शरीर एकदम दुबला-पतला अथवा रक्त-शून्य हो गया हो, भोजनके बाद अथवा रातमें सोनेके समय उसका कलेजा धड़कता हो तो इग्नेशियाके बदले नेट्रम-म्यूर ३० देना चाहिये। स्नायविक दुर्बलता ; बेचैनी ; नींद न आना ; गहरी चिन्तामें

आरम ६, २०० ।—आत्महत्या करनेका भारी झोंक या इच्छा (खासकर पुरुषोंकी विषाद-वायुके साथ यकृत दोष या अण्डकोषकी बीमारी मौजूद रहनेपर), मुँहसे लार चूना, सूर्यास्तसे सूर्योदयतक (अर्थात् रातमें) रोगका बढ़ना।

भरा खिन्न भाव ; सन्देह ; ब्रह्मतालुमें दर्द या भार मालूम होना ; जरायुकी गड़बड़ीके साथ उन्माद रोगके लक्षणमें—सिमिसिफ्यूगा २x । शरीर और मनकी उदासीनता ; मानसिक यन्त्रणा ; जीवनी-शक्तिका घटना ; शरीर (खासकर हाथ-पैर) ठण्डे ; कपालमें ठण्डा पसीना ; निराशाके साथ जोर-जोरसे रोना, लक्षणमें—विरे-ऐल्ब ३ फायदा करता है। तेज बोखारके साथ अचेतन भाव ; विषाद-वायु रोगमें, बैप्टीशिया १x । औंघाई और कब्जियतके साथ ; विषाद-वायु रोगमें—ओपियम ६—३० फायदा करता है ; परन्तु अगर ज्यादा कब्जियत हो तो ओपियमकी जगह प्लम्बम-ऐसेटिकम ६ फायदा करता है। सङ्गमेन्द्रियकी बीमारी (जैसे—वाध्य होकर बहुत दिन बाद मैथुन करना) से पैदा हुए खिन्न भाव ; मौनभाव, किसीके पास न बैठनेकी इच्छा लक्षणमें, कोनायम ३० । तेज़ बोखार होने बाद या जवानीके आरम्भमें विषाद रोग होनेपर, हेलिबोरस ३ । विषन्नताके साथ चिड़चिड़ा मिज़ाज लक्षणमें, मर्क-सोल ६ । मानसिक अवसन्नता रहनेपर भी शरीरमें बेचैनी, एक अङ्ग या सब शरीरमें कँपकँपी या अकड़नके लक्षणमें टेरेण्टुला ६-३० । अग्निमान्द्य, अवसन्नता रोगीका जरा-सी बातमें रो पड़ना, धर्मोन्माद ; देवताकी प्रार्थना करता रहे या रोता रहे और मनमें समझता रहे कि उसने जो पाप किया है वह क्षमा योग्य नहीं है ; भविष्य सोचकर व्याकुल रहना ; डरपोकपन ; खट्टी डकार वगैरह उपसर्ग विषन्नताके साथ रहे, तो पल्सेटिला ६-३० । चिड़चिड़ा मिजाज ; विषाद-वायु रोग-वाले मनुष्यको वास्तवमें कोई बीमारी न रहना ; इतनेपर भी उसका अपनेको बीमार ही समझना और चंगे होनेकी दिन-रात चिन्ता करना, कोई

आर्सेनिक ३x, ३०।—देह दुबली-पतली, यदि भूख बिलकुल ही नहीं—यह भी कहा जाये तो अत्युक्ति नहीं; बेचैनी, जीभ सूखी, लाल और काँपती हुई; अपनी अंगुली चबाना, पलकोंका नोंचना, चेहरे और सरकी खोपड़ीका चमड़ा हाथ और नखोंसे नोच डालना और वहाँ जखम बना डालना वगैरह उपायोंसे अपनेको नुकसान पहुँचाना; रोगी समझता हो, कि उसकी बीमारी अच्छी न होगी; घबड़ाहट, रोगी समझता हो, कि उसने कोई ऐसा बहुत ही बुरा काम किया है, जिससे सभी उसकी निन्दा कर रहे हैं।

प्लैटिना ६।—(औरतोंके विषाद-वायुकी बीमारीमें यह ज्यादा फायदा करता है)। आत्महत्या करनेकी इच्छा, उद्दण्डता, आत्मगरिमा, सभी चीजें या मनुष्य छोटे मालूम होना; कामोन्माद; प्रसवके बाद विमर्ष-भाव (स्त्री-रोग अध्यायमें "विषाद-वायु" रोगकी दवाएँ देखिये)।

———

चीज़ ज्यादा मालूम होना (जैसे—थोड़ी भी रोशनी या शब्द रोगीको सहन न होना); यदि रोगीसे कोई बोलना चाहता है तो वह रंज या दुःखित होता है; अजीर्णके लक्षणमें, नक्स-वोमिका ६-३०। बहुत उदासीके उपसर्गमें एसिड-फास २x-२०० और सिपिया ३० फायदा करता है। रोगी समझता हो कि उसका सब तरहका इन्द्रिय-ज्ञान तुरन्त लुप्त हो जायगा, कैल्के-कार्ब ३०। दुबला-पतला, पर राक्षसी भूख, निरुत्साह, मनकी सुस्ती, याददाश्तकी कमी, लोगोंसे अलग रहनेकी इच्छा, आयोड ६।

(ग) बुद्धि-वैकल्य
(Dementia)

जिस उन्माद रोगमें बुद्धिका काम कुछ कम हो जाये या एकदम नष्ट हो जाये, उसे बुद्धि-वैकल्य कहते हैं। यह छः प्रकारका है—(१) नया, (२) शराबसे पैदा हुआ, (३) हस्तमैथुनकी वजहसे, (४) बुढ़ापाके कारण, (५) यान्त्रिक और (६) गौण।

(१) **बुद्धि-वैकल्यकी नयी** या पहली अवस्था (Acute)।—[विषाद-वायु रोगकी "अचेतन अवस्था (stupor)" और बुद्धि-वैकल्यकी "नयी" अवस्थाका प्रभेद निर्णय करना बहुत ही कठिन है ; १५ से ३० वर्षकी उमरतक इसका हमला ज्यादातर होता देखा जाता है। पुरुषोंकी अपेक्षा यह बीमारी औरतोंको ज्यादा होती है। एकाएक हमला ; मूर्खपन ; गन्दे रहना ; मौन रहना ; भूल सुनना ; कलके पुतलेकी तरह चाल-ढाल ; चेहरा फूला और उतरा हुआ वगैरह इस बीमारीके लक्षण हैं। मानसिक शक्ति एकदम कमजोर हो जाने या मानसिक चिन्ता अथवा भावका सोता एक ही तरह (monotonous) का होनेपर यह बीमारी पैदा होती है। जैसे—बहुत दिनोंतक कल-कारखानेमें या जहाज़के मल्लाह बनकर, जो एक ही ढङ्गके काममें अपनी समूची ज़िन्दगी बिताते हैं, उन्हें ही खासकर यह बीमारी

होती है। फास्फोरिक एसिड और ऐनाकार्डियम इसकी खास दवाएँ हैं।

(२) **शराब पीनेसे पैदा हुआ** (Alcoholic) बुद्धि-वैकल्य (अर्थात् बहुत दिनोंतक जो बेअन्दाज शराब पिया करते हैं, उन्हें ही यह बीमारी हुआ करती है):— यादृदाश्तका तेज़ीसे कम हो जाना (यहाँतक कि अपना नामतक भूल जाना); इच्छा-शक्तिमें कमजोरी; रोगीका अपने शरीर या वेश-भूषापर बिलकुल ही ख़याल न रखना; क्रोध करना; शरीरकी गर्मी स्वाभाविक (९८.४°) से भी कम, पाकाशयका प्रदाह वगैरह इस रोगके विशेष लक्षण हैं।

(३) **हस्त-मैथुनसे पैदा हुआ** (Masturbatic) बुद्धि-वैकल्य (नौजवान मर्द औरतोंको ही यह बीमारी ज्यादा होती है)। यादृदाश्त बिलकुल न रहना; मानसिक दुर्बलता, हदद्जेंकी उदासीनता; टकटकी बाँधकर देखना; सर झुकाकर बैठना; हाथ-पैर ठण्डे और तर; चरित्र-दोष वगैरह इस रोगके लक्षण हैं। फास्फोरिक-एसिड, ऐनाकार्डियम और कोनायम वगैरह दवाएँ इस बीमारीमें फायदा करती हैं।

(४) **बुढ़ापेसे पैदा हुआ** (Senile) बुद्धि-वैकल्य—(साधारणतः ६० वर्षकी उमरके बाद यह बीमारी होती है):—धीरे-धीरे रोगका हमला; यादृदाश्तका नष्ट होना (खासकर हालकी घटनाएँ); क्रोधी स्वभाव, बेचैनी, अव्यवस्थित मति, बहुत ज्यादा आत्मगरिमा; भ्रान्त-विश्वास

(delusion); अवास्तव मूर्त्ति या वस्तुकी अनुभूति या कल्पना (hallucination); ऐसी चाल-चलन, जिससे मालूम हो, कि बुद्धि खराब हो गयी है—यही उपसर्ग इस रोगमें दिखाई देते हैं। इसका भावी-फल अच्छा नहीं है। बैराइटा-कार्ब, कोनायम, क्रोटेलस, एसिड-फास, कैल्के-कार्ब और ऐनाकार्डियम इसकी खास दवाएँ हैं।

(५) **यान्त्रिक** (Organic) बुद्धि-वैकल्य (संन्यास रोग और मस्तिष्कके अर्बुद रोगके बाद यह बीमारी घट जाती है)—डरा हुआ भाव या सन्देही चित्त, याददाश्त गायब, देखने और सुननेमें भ्रम होना, अर्द्धाङ्गकी अकड़न या लकवा, खींचन (Convulsion) इसके प्रधान लक्षण हैं।

(६) **गौण** (Syecondar) बुद्धि-वैकल्य (किसी भी उन्माद रोगकी यह बादवाली अवस्था है):—मानसिक दुर्बलता थोड़ी या बहुत, इच्छा-शक्तिकी और स्मृति-शक्तिकी कमी या कमजोरी या बुद्धि-वृत्ति और मानसिक वृत्तियोंका एकाएक नाश हो जाना, इस रोगके प्रधान उपसर्ग हैं। हेलिबोरस और जिङ्कम इसकी उत्कृष्ट दवाएँ हैं।

चिकित्सा

एसिड-फास २x, ६।—रोगीको आस-पासकी चीजें या मनुष्य वगैरहके सम्बन्धमें उदासीनता, याददाश्तकी कमजोरी; तुरन्त रो देना; कमजोरी और दुबलापन; हस्त-

मैथुनसे पैदा हुए बुद्धि-वैकल्यमें बहुत ज्यादा पेशाब होना ; मानसिक चिन्ता और भाव एक ढङ्गके ।

ऐनाकार्डियम ६ ।—याददाश्तकी कमी ; हमेशा कसम खाना ; दृढ़ भ्रान्त-विश्वासके साथ बुद्धि-वैकल्य ।

कोनायम ६ ।—विषाद रोगके साथ हस्तमैथुन ; याददाश्तकी कमजोरी ; परिवार या कामके सम्बन्धमें उदासीनता ; लेटनेपर सरमें चक्कर आना ।

हेलिबोरस ३x ।—उन्माद या विषाद-वायु रोगके बाद हो बुद्धि बिगड़ जानेकी सूचना (हेलिबोरससे फायदा न हो, तो जिङ्कम ६ देना चाहिये) ।

क्रोटेलस ३ ।—रोनी शकल ; इन्द्रिय-ज्ञान और याददाश्त बहुत कम, सहनेकी शक्ति नदारद, भागनेकी कोशिश, बकवाद और खिन्न रहना ।

लिलियम-टिग ६ ।—गहरी मानसिक सुस्ती ; बराबर रोनेकी इच्छा, समझाने-बुझानेसे बीमारीका बढ़ना ; शाप देने, मारने और अश्लील बातोंको सोचनेकी तेज़ इच्छा, लज्ज-हीनता ; सब कामोंमें जल्दबाजी ; सोचता रहे, कि उसकी मुक्ति नहीं है ; रोगी समझता हो, कि उसे कोई यान्त्रिक बीमारी हो गयी है, जो अच्छी न होगी ।

कैल्के-कार्ब ६, २०० ।—बुद्धि-वैकल्य इतना ज्यादा हो, कि उसकी किसी विषयमें धारणा ही न जमे ; सोच न सके, सहजमें ही रो दे, सरमें चक्कर और सर भारी ।

कैल्के-फास ६x विचूर्ण ।—चिड़चिड़ा मिज़ाज, वर्त्तमानकी घटनाएँ भी याद न रहें, आस-पासके मनुष्यको पहचान न सके या घटनाएँ न समझ सके ; घरमें हो, पर कहे, कि घर जायँगे। थोड़ी उमरके आदमी या दुबले-पतले शिशुके लिये यह दवा बहुत फायदेमन्द है।

एगरिकस ६ ।—साधारण या छिपा हुआ बुद्धि-वैकल्य ।

(घ) उन्माद रोगीका पक्षाघात

(General Paralysis of the Insane)

यह पागलपनके रोगीके मस्तिष्क और मस्तिष्कको ढँकने-वाली झिल्लीका पुराना रोग है। इससे मानसिक वृत्तियाँ धीरे-धीरे कम होती हैं और धीरे-धीरे पक्षाघात (लकवा) होता जाता है। स्त्रियोंकी बनिस्बत पुरुषोंको यह बीमारी ज्यादा होती है। ३०—५० वर्षकी उमरमें ही यह बीमारी हमेशासे होती देखी जाती है। गिरना या चोट आदि लगना, बहुत थकन, सर्दी-गर्मी वगैरह इस रोगके पहलेके कारण हैं। पक्षाघातके लक्षण पीछे दिखाई देते हैं।

पहली अवस्थाके लक्षण ।—जीभकी पेशियोंका काँपना या बोली न निकलना ; अपना काम-काज या परिवार-

वालोंके प्रति उदासीनता ; अपने किये हुए काम या भविष्यकी आशाके सफल होनेके सम्बन्धमें या असम्भव काम करनेका गर्व करना ; भ्रान्त-विश्वास (खासकर बहुत ज्यादा धन-दौलत मिलनेके सम्बन्धमें) ; मानसिक वृत्तियोंकी (जैसे—अनुभव, कल्पना-शक्ति, भाव आदि) ज्यादती ; चाल बिगड़ी ; गन्दे रहना ; आँखोंकी पुतली निश्चल या अनियमित, हिलती रहना ।

दूसरी अवस्थाके लक्षण ।—पक्षाघातके साथ मानसिक कमजोरी ; मृगी रोगकी तरह लक्षण दिखाई देना या सामयिक पक्षाघात ; ओष्ठवर्ण (प, फ, ब, भ) उच्चारण करनेमें या अनुप्रास (जैसे—"नमो नित्य निरामय निखिल पावन") बोलनेमें असमर्थ रहना ; कभी-कभी बोली न निकलना ।

तीसरी या शेष अवस्थाके लक्षण ।—चलनेकी ताक़त न रहना ; बुदबुदाना या साफ़ न बोलना, मानसिक शक्तिका नाश, शरीरके एक बगल या कई पेशियोंका सुन्न हो जाना, पर बेहोश न होना ; देखनेमें भ्रम होना और मैले कपड़े आदि पहनना ।

किसी-किसी रोगीकी जबान बन्द और पक्षाघात (एक अङ्गका या आधे अङ्गका) हुआ करता है, इसके अलावा किसी-किसीको सरमें चक्कर अथवा मृगी या संन्यास रोग हो जाया करता है ।

चिकित्सा।—डाक्टर ह्यूज़ पहली अवस्थामें बहुत दिनोंतक बेलेडोना सेवनकी सलाह देते हैं। रोग कुछ आगे बढ़ जानेपर जब मानसिक वृत्तियोंकी ज्यादती दिखाई दे, तब वे कैनाबिस इण्डिका सेवनकी सलाह देते हैं। डा० टैलकट इस बीमारीके इलाजमें एक तरहसे हताश हो गये हैं। Dr. Prince, प्लम्बम २४ और जिङ्कम ३० सेवन करा एक रोगीको आराम कर सके हैं। डा० मिल्ज उपदंश रोगकी दवा—जैसे—सेलवर्सन (salvarsan) एक तरहका पीला चूर्ण, पारा या मर्करी द्वारा (mercurial) बने हुए मरहमकी मालिस और पोटास-आयोड ३ सेवन करनेकी सलाह देते हैं। Minnæsota विश्वविद्यालयके होमियोपैथिक कालेजके मानसिक रोगोंके अध्यापक A. P. Williamson M. D. साहबने नीचे लिखी दवाएँ खिलाकर फायदा देख चुके हैं :—

ऐगरिकस ३x, ३०।—बहुत बोलना; गाना; ज़बानी पद्य रचना करना; भ्रान्त विश्वासमें इतना गर्क हो जाना कि कोई बात पूछनेपर जवाब देनेतककी फुर्सत न रहना, सब विषयोंमें उदासीनता; पेशियाँ (खासकर चेहरेकी पेशी) सिकुड़ना; नींद न आना।

आर्निका ३x।—जड़बुद्धि; अनमना भाव; भ्रान्त विश्वासमें इस कदर लग जाना कि कही हुई बात खतम नहीं की जाती; सन्देही और डरपोक; कमजोरीसे कँपकँपी।

सिमिसिफ्यूगा θ।—खिन्न रहना; अकेले रहनेकी इच्छा; हटानेकी इच्छासे सवालका जवाब जल्दी देना; आँखें और मुँहकी पेशियोंका काँपना।

कैनाबिस इण्डिका ३x।—अण्ट-सण्ट बातें कहना, तेज़ मानसिक ज्यादती, बकवाद, अवास्तव देखनेके सम्बन्धमें रोगी हमेशा कहता रहे, रोगीका स्वभाव अच्छा हो, देश-कालके सम्बन्धमें ज्यादा बातें करता हो; आवाज़ या रोशनी बिलकुल सहन न कर सकता हो।

विरेट्रम-विर १x।—खिन्न और सन्देही; चकचौंधी लगना या हतबुद्धि हो जाना, कई तरहकी अवास्तव चीजें देखना; रोगी समझता है, कि कोई उसे विष खिलाकर मार डालेगा; माथेमें बहुत ज्यादा खून इकट्ठा होना; कभी-कभी पक्षाघातका आक्रमण।

सब तरहके उन्माद रोगकी आनुसंगिक चिकित्सा:—रोगीको जहाँतक बन पड़े अच्छी अवस्थामें रखना चाहिये। काम-काज बन्द रखना; शारीरिक और मानसिक विश्राम, नहाना, शरीर मलना, बिजली लगवाना वगैरह फायदा करते हैं। रोगी यदि कर्कश बोलता हो तो सेवा करनेवालोंको उसे सहन करना चाहिये और रोगीसे सदा दयापूर्ण व्यवहार करना चाहिये। साधारण स्वास्थ्यके नियम पालन करने चाहियें। हलका जल्द पचनेवाला भोजन, दूध,-

(उसमें कुछ नमक मिलाकर) शोरवा, कच्चा अण्डा वगैरह सुपथ्य है। थोड़ी मेहनत करनी चाहिये।

कुक्षि-रोग या व्याधिकल्पना

(Hypochondriasis)

सचमुच कोई शारीरिक बीमारीके मौजूद न रहनेपर भी ऐसी धारणा हो जाना कि हमें कोई भयानक बीमारी हुई है और इसी चिन्तामें बराबर उद्विग्न रहनेका नाम "व्याधि-कल्पना" है। वास्तवमें यह एक मानसिक रोग है, शारीरिक रोग नहीं है। रोगी अपने स्वास्थ्यके सम्बन्धमें हमेशा चिन्तित रहता है। इस चिन्ता और खिन्नताके साथ अजीर्ण रोग या पेटकी बीमारी लगी रहती है। पहलेके चिकित्सक इसे "कोंखसे पैदा हुआ रोग (hypochondriasis)" कहा करते थे। बहुत दिनोंतक इस व्याधिकल्पना रोगको भोगनेके बाद कोई-कोई पूर्व वर्णित "व्याधि-कल्पना रोग" के भीतर आया हुआ समझते हैं। पिता-माताके वंशमें यह रोग रहना, रति-क्रियासे अलग रहना या रति-क्रियाकी ज्यादतीके कारण ध्वजभङ्ग या धातु-दौर्बल्य होना, विलासिता, आलसीकी तरह दिन काटना, कल्पना-शक्तिको बहुत चलाना वगैरह कारणोंसे यह बीमारी हुआ करती है (Jousset)। चढ़ती जवानी या रजःस्राव और सोनेके समय या काम-काज छोड़ देने या विधवा होनेके

बाद साधारणतः धीरे-धीरे यह बीमारी पैदा हो जाती है और इसके उपसर्ग आदि कुछ दिन बन्द रहने बाद एकाएक शुरू होकर फिर बन्द हो जाते हैं। हृद्‌रोग न रहनेपर भी कलेजा धड़कना, बेहोश हो जाना, विमर्षता, पेटकी गड़बड़ी, अपने शरीरके सम्बन्धमें बहुत चिन्ता, आत्महत्या या नर हत्या करनेकी इच्छा, सरमें दर्द, सरमें चक्कर, नींद न आना, जमा हुआ भ्रान्त विश्वास, पेट फूलना, भूख न लगना, डकार आना, कब्जियत, शीर्णता, खूनकी कमी वगैरह लक्षण दिखाई देते हैं। इसके बाद शोथ, रक्त-स्राव, उदरामय वगैरह लक्षण पैदा होकर मृत्यु हो जाती है।

ऊपर लिखे उपसर्ग किसीको धीरे-धीरे प्रकट होकर ज़िन्दगीभर रोगीके शरीरमें मौजूद रहते हैं। किसीको यह लक्षण धीरे-धीरे आरम्भ होते हैं और बन्द हो जाते हैं, फिर पैदा होते हैं (Dr. Tessier)।

चिकित्सा।—डा० ह्यूज, हार्टमैन और बैर निम्नलिखित नौ दवाओंको इस रोगके लिये लाभदायक समझते हैं—नक्स-वोमिका, सलफर, स्टैफिसाइग्रिया, नेट्रम-म्यूर, कोनायम, स्टैनम, आर्सेनिक, इग्नेशिया और मर्क। नक्स और सलफर अजीर्ण उपसर्गमें; स्टैफिसाइग्रिया—बहुत दिनोंतक हृदयमें विषन्न भाव पोषण करना; नेट्रम-म्यूर—धातु-विकृति और कब्जियत होनेपर; कोनायम—बहुत दिनोंतक स्त्री-सङ्ग न करनेके कारण यह रोग होनेपर; स्टैनम—पेटमें बहुत दर्द

(हिलने-डोलनेसे पेटके दर्दका बढ़ना); इग्नेशिया—मानसिक कष्टकी प्रकोपवाली अवस्थामें थोड़ा प्रलाप रहनेके लक्षणमें ; आर्सेनिक और मर्क—बहुत जलनके लक्षणमें देना चाहिये।

नक्स-वोमिका ३x, ६।—कब्जियतके साथ पाकाशयकी गड़बड़ी ; काम करनेकी इच्छा न होना ; कभी-कभी मानसिक अवस्थामें विमर्ष, कभी-कभी तेज़ ; नींद न आना ; सरमें चक्कर ; श्वास-कष्ट ; शारीरिक दुर्बलता (पक्षाघातकी तरह)।

आरम-म्यूर २x विचूर्ण ३०।—विषन्न-भाव, सब कामोंमें जल्दबाजी, निराशा, विलाप, चिल्लाना, आत्महत्या करनेकी इच्छा ; सर-दर्दमें, रोगी बेहोश हो जाता है। नींद न आना (उपदंशवाले रोगीके व्याधि-कल्पना रोगमें यह ज्यादा फायदा करता है)।

सिमिसिफ्यूगा १x।—धातु-दौर्बल्यसे पैदा हुई बीमारीमें।

हायोसायमस ३।—व्याधि-कल्पनासे पैदा हुए एक ही विषयका उन्माद (जैसे—रोगीको वास्तविक उपदंशकी बीमारी न रहनेपर भी वह मनमें समझता है, कि वह यह बीमारी भोग रहा है और इसके लिये दिन-रात चिन्तित रहता है)।

कैल्कि-कार्ब ३०, २००।—(सवेरे १ मात्रा और शामको १ मात्रा सेवन करना चाहिये) रोगी मनमें

समझता है, कि उसका इन्द्रिय ज्ञान लोप हो गया ; डरते रहना ; मानसिक शान्तिकी कमी ; थकावट मालूम होना ; बेहोश कर देनेवाला सर-दर्द ; खट्टा पानी कै करना ; कलेजेमें वास्तवमें दर्द न रहनेपर भी रोगी समझता हो, कि उसके कलेजेमें दर्द है।

स्टैनम ६ ।—सर-दर्दके साथ माथा गर्म, पर नीचेके अङ्ग ठण्डे ; हमेशा कै ; पेटमें दर्द और खींचन ; असह्य अस्वच्छन्दता ; चलनेसे पेटका दर्द कम होना, पर थोड़ी देर चलनेसे ही रोगी थक जाता है और विश्राम करना चाहता है, पर बैठते ही फिर दर्द होने लगता है।

स्टैफिसैग्रिया ६ ।—(डा० जूँसे कहते हैं, कि इस बीमारीके सभी लक्षण इस दवामें मिलते हैं और इसीसे अच्छे हो सकते हैं) सब विषयोंमें उदासीनता, धातु निकलना, ध्वजभङ्ग ।

सलफर ।—बहुत मानसिक उत्कण्ठा ; अपने काम-काज, स्वास्थ्य या मुक्तिके सम्बन्धमें हमेशा चिन्ता ; अनमना भाव ; संकल्पहीन ; अपनेको हमेशा बीमार ही समझता रहे ।

ऐनाकार्डियम और वैलेरियाना ।—उत्तेजना और स्नायविक दुर्बलतामें ।

नेट्रम-फास, चायना, ऐनाकार्डियम, ग्रै टियोला, लैकेसिस, मस्कस, सिपि, फास्फोरस, प्लै टिना, टैरेण्टुला, पल्स, आर्ज-नाई, मर्कको भी बीच-बीचमें जरूरत पड़ सकती है।

आनुसङ्गिक चिकित्सा।—घूमना, देशभ्रमण, (जरूरत पड़नेपर) रोगीको अकेलेमें या अलग रखना, नहाना, नहानेके पहले थोड़ा परिश्रम, कसरत (खासकर छोटी उमरवाले मनुष्योंके लिये); रोगीको बीच-बीचमें समझाते रहना चाहिये कि उसकी बीमारी असली नहीं बल्कि कल्पित है। हिप्नाटिज्म (नकली उपायोंसे रोगीको सुलानेकी चेष्टा करना) वगैरह सहायक उपाय काममें लाने चाहियें। स्नायु-मण्डल रोगवाले अध्यायमें "व्याधि-कल्पना रोग" देखिये।

प्रलाप-कम्पन उन्माद

(Delirium Tremens)

जिस मानसिक रोगमें बहुत दिनोंतक शराब पीनेकी वजहसे, प्रलाप, नींद न आना और भ्रान्तविश्वास खासकर दिखाई दे, उसीका नाम "प्रलाप-कम्पन" है। खासकर दिमागमें शराबका ज़हर फैल जानेसे ही यह बीमारी पैदा होती है। शराबीकी शराब एकाएक रोक देना; शरीरका ठीक-ठीक पुष्टि-साधन न होना, मानसिक आवेग बढ़ा हुआ, शरीरमें कोई तेज़ बीमारी (जैसे—फेफड़ेका प्रदाह, पतले दस्त, पीव होना, खूनका क्षय होना); रातमें घूमना; चोट (जैसे—हाड़ टूटना) वगैरह इसके उत्तेजक कारण हैं।

इस बीमारीके लक्षण धीरे-धीरे प्रकाशित होते हैं :— पाकाशयकी गड़बड़ी (कै, मिचली, भूखकी कमी), अनिद्रा (नींद न आना), भ्रम देखना, औंघाईके साथ उत्कण्ठा-भरे स्वप्न देखना, नींदसे चौंक उठना, पेशाब बन्द होना, सोचनेकी ताक़तका कमजोर पड़ जाना या विशृङ्खलता, सुस्ती, सूखी जीभ, मोह या अकड़न ; प्रलाप, सब शरीरका काँपना या खींचन ; कभी-कभी हृत्पिण्डकी क्रिया रुककर भी मौत हो जाती है ।

चिकित्सा ।—डा० ह्यूजका कथन है, कि इस रोगमें इलाज करनेके समय, डाक्टरलोग बीमारी आराम करनेके बदले अधिकांश रोगियोंका प्राण ले लेते हैं । पहले प्रदाहको घटानेवाली दवाएँ, फिर अफीम वगैरह नींद लानेवाले औषध और इसके बाद पौष्टिक भोजन वगैरह देकर, ऐलोपैथिक चिकित्सक इस बीमारीका इलाज किया करते हैं, इसलिये होमियोपैथिकवालोंको बहुत समझ-बूझकर इसका इलाज करना चाहिये—(१) मस्तिष्ककी गड़बड़ी, (२) पाकाशयकी गड़बड़ी—इन दोनों ही विषयोंकी ओर ध्यान रखकर हमें दवा देनी पड़ेगी । हायोस १x (मृदु प्रलाप), बेल (हायोसकी बनिस्बत तेज़ प्रलाप) और स्ट्रैमो (बहुत तेज़ प्रलाप)—ये तीनों दवाएँ पहले कहे हुए उपसर्गको दबानेके लिये व्यवहार की जाती हैं । ऐण्टिम-टार्ट (बहुत ठण्डा पसीना, फेफड़ेका प्रदाह, श्लैष्मिक और पाकाशयिक गड़बड़ी) और आर्सेनिक (पाकाशयका प्रदाह, अवसन्नता, कम्पन) यह दो दवाएँ

ऊपर कहे हुए उपसर्गको दबानेके लिये फायदेमन्द हैं। पहली श्रेणीको चुनी हुई दवाएँ रातमें और दूसरी श्रेणीको दिनमें खानेसे ज्यादा फायदा होता है।

अमेरिकन डाक्टर विलियम्सन और स्पेनिश डाक्टर ओलिवे कहते हैं, कि हायोस, बेल, स्ट्रैमोको अपेक्षा कैनाबिस-इण्डिका ज्यादातर फायदेमन्द है। रोगके शुरूमें पाकाशयकी गड़बड़ीवाले लक्षणमें, नक्स-वोमिका १x और उसके बाद जिङ्कम तथा फास्फोरस फायदा करता है।

हायोसिन हाइड्रोब्रोमेट ३X, ४X विचूर्ण।—(फी चार घण्टेके अन्तरसे) बिलकुल ही नींद न आना।

स्ट्रिकनिन नाइट्रेट २X।—हृत्पिण्डकी क्रिया कमजोर; स्पन्दन-शक्ति बहुत क्षीण।

हाइड्रैस्टिस θ फी मात्रा २ बून्द।—पाकाशयके प्रदाहकी पुरानी अवस्था।

कैलि-आयोड θ, ३०।—गर्मी रोगका ज़हर बीमारके बदनमें मौजूद रहनेपर।

ओपियम ३X, ६।—(पुराने शराबियोंकी बीमारीकी बढ़िया दवा है) प्रदाहके साथ आँखें खुलीं और डरी हुई दृष्टि अथवा जड़वत् बेहोश अवस्था, नाकसे गहरी आवाज़के साथ साँस निकलना, मृगी रोगकी तरह लक्षण।

सल्फ्यूरिक एसिड θ।—पाकाशयकी गड़बड़ी और यकृतकी बीमारीकी पुरानी अवस्था, पाकस्थली ठण्डी और कमजोर होना ; शराब पीनेकी प्रबल इच्छा ; रोज़ ही अम्ल रोगका लगी रहना ; खट्टी साँस ; खट्टी कै ; दुबलापन और सर्दी (नक्स-वोमिका सेवनके बहुत दिन बाद यह फायदा करता है)।

आर्सेनिक ३x।—खिन्न रहना, पाकाशयकी गड़बड़ी ; पेशाबका बन्द होना।

हायोसायमस θ।—हलका प्रलाप ; बकवादीपन ; बिना मतलबके बड़बड़ाते रहना।

पक्षाघातके लिये, हृत्पिण्ड, साण्डलाल मूत्रकी वजहसे मूत्रग्रन्थि और फेफड़ेके प्रदाहके लिये बीच-बीचमें फेफड़ेकी परीक्षा करवा लेना चाहिये।

आनुसङ्गिक चिकित्सा।—मार्फिया, क्लोरैल-ब्रोमाइड, कभी रोगीको न सेवन कराया जाये। यदि उत्तेजक दवाकी बहुत ही जरूरत हो, तो या तो लाइकर-ऐमोन २०-३० बून्द थोड़े मीठे पानीके साथ या एक प्याला तेज़ काली काफी पिलायी जा सकती है। शराब पीना एकदम रोक देना चाहिये। रोगीको ऐसे कमरेमें रखना चाहिये, जहाँ आवाज़ ही न पहुँचती हो। पुष्ट चीजें (लाल या काली मिर्च-मिला) जैसे—दूध, अण्डा तीन-चार घण्टेका अन्तर देकर खिलाना चाहिये। नहलाना उचित है। पाकाशयके उपदाहकी

लिये खूब गर्म पानी या सोडा-वाटरके साथ बर्फके टुकड़े देकर पिलाना चाहिये। पेशाब बन्द होनेपर, कमरमें खूब गर्म पानीका सेंक देना चाहिये।

कुछ मानसिक उपसर्ग और दवाएँ

अङ्गावसाद और उदासीनता—जेल्स।

बहुत उद्विग्नता और मृत्यु-भय—सिकेलि।

बहुत कराहना—बेल, साइक्लूटा।

ज्यादा अनुभूति—बोरैक्स, काफिया, इग्नेशिया।

अन्यमनस्क भाव—कैनाबिस-इण्डिका।

अवसाद या क्लान्ति मालूम होना या निस्पन्द वायु-रोग—(अर्थात् शारीरिक और मानसिक क्रियाओंका कुछ देरतक बन्द रहना)—ऐनाकार्डियम, ओपियम, एसिड-पिक्रिक, कैल्के-फास।

अव्यवस्थित चित्त—आरम, बैराइटा-कार्ब।

अभव्य और अनाड़ी—नेट्रम-म्यूर।

अभव्य—प्लैटिनम, कैमोमिला।

आत्महत्या करनेकी इच्छामें—आरम-मेट, आरम-म्यूरर, आर्ज-नाई, कैल्क, नक्स-वोम।

शृङ्गार-रसके विषयकी बहुत समयतक चर्चा करनेके बादके उपसर्गमें—स्टै फिसाइग्रिया।

ईर्षा—हायोस, लैके, एपिस।

उत्कण्ठा—ऐकोन, आरम, फास्फो, सलफर।

उदासीन भाव—लिलियम, एसिड-फास, सिपिया, कार्बो-वेज।

उन्मत्तता—आर्स, बेल, हायोस, स्ट्रैमो, लाइको, विरे, जिङ्कम।

" (एकाएक उन्माद रोग होनेपर), विरे-ऐल्ब, कैनाबिस इण्डिका, हायोस।

सौरी-बाई—बेल, कैनाबिस-इण्डिका, सिमिसिफ्यूगा, हायोस, स्ट्रैमो।

एक ही विषयमें उन्माद—कैनाबिस-इण्डिका, हायोस, साइक्यूटा।

कामोन्मत्तता—कैन्थरिस, प्लैटिना, हायोस, एसिड-पिकरिक, फास्फो।

धर्मोन्मत्तता—हायोस, सलफर, विरे-ऐल्ब, पल्स, लैके, आर्सेनिक।

उन्माद रोग होनेका डर रहनेपर—ऐकोन, सिमिसिफ्यूगा, लिलियम।

औद्धत्य—प्लैटिना, सलफर, लाइको, विरे-ऐल्ब।

बात न करना—मौन रहना, एसिड-फास, सल्फर, पल्स, विरे-ऐल्ब।

क्रोधसे पैदा हुई बीमारीमें—(यहाँतक कि पाण्डु या कामला होनेपर) कैमोमिला।

खामखयाली मिजाज—कैमोमिला, स्टैफि।

चिड़चिड़ा मिजाज—आरम, साइना, सलफर, ऐल्यूमिना, स्टैफि।

बदला लेनेकी प्रवृत्ति—आर्ज-नाइ, नक्स, मर्क, हायोस, लैके।

झगड़ालू या अश्लील व्यवहारमें—हायोस।।

झगड़ालू स्वभाव—सल्फर, नक्स-वोम, इग्नेशिया।

दुःखके साथ आँसूभरी आँखें—पल्स, लिलियम, सिपिया, थूजा (सङ्गीत या बाजेसे), इग्निगो (रातभर रोनेपर)।

धारणा-शक्तिकी कमी—ऐनाकार्डि, हेलिबोरस, एसिड-फास।

अपनी जिन्दगीको धिक्कारना—आरम, ऐण्टिम-क्रूड, चायना, फास, थूजा।

निराशा—आर्ज-नाई, आरम, सोरिनम।

„ **रोग आराम होनेके सम्बन्धमें**—रस, सोरिनम, कैल्के।

प्रलाप—बेलेडोना (तेज़ प्रलाप, जैसे—काटने दौड़ना, बदनपर थूक देना, गरज उठना), हायोस (हलके ढङ्गका या शृङ्गार-सम्बन्धी या बकवाद-भरा); लैकेसिस (बड़बड़ाना या प्रलाप बकना); स्ट्रैमो (बहुत तेज़ या गुस्सा-भरा प्रलाप); विरे-ऐल्ब बैप्टीशिया जिङ्कम।

जल्दबाज, जल्दी-जल्दी काम करना, तितिक्षा-हीनता—एसिड-सल्फ़।

बकवादीपन—बेल, स्ट्रैमो, लैके।

विद्वेषी—क्यूप्रम।

विमर्षता—ऐकोन, आर्ज, विरे, रस, सलफर, लैके, लिलियम, लाइको, नेट्रम-म्यूर, प्लैटिना, आरम, कैल्के।

विषन्नता, समझनेकी ज्यादती, मति आवेग-भरी, पागल या उन्मत्त-जैसे लक्षण—इग्नेशिया।

यादादाश्तकी कमी—बैराइटा-कार्ब, एसिड-फास।

भय—ऐकोन, आर्ज-नाई, आर्स, इग्ने, सोरिनम।

" अन्धेरेमें जानेमें डर—स्ट्रैमो, विरे-ऐल्ब।

" उन्माद रोग होनेका डर होनेपर—ऐकोन, सिमिसि, लिलियम-टिग।

" अकेले जानेमें डर—आर्ज, लाइको, फास्फो।

" मृत्यु-भय—ऐकोन, आर्स, प्लैटिनम।

" भीड़में जानेमें डर लगना—ऐकोन, प्लैटिना।

" आँखें गिरनेके पहले डर लगना—इलैप्स।

" सहजमें डरना, भीरु स्वभाव—आर्ज-नाई, बोरैक्स।

भयकी वजहसे कोई बीमारी होनेपर—ऐकोन ओपि; पर यदि डरकी वजहसे कोई स्नायु रोग हो तो (जैसे—मृगी या नर्त्तन रोग) इग्नेशिया देना चाहिये।

भ्रान्त-विश्वास :—

" असम्भव या हँसने योग्य—कैनाबिस-इण्डिका।

" कोई चीज मानो छोटी होती जा रही है—ऐकोन, कार्बो-वेज, टैरेण्टुला।

भ्रान्त-विश्वास :—

,, चूहे, पतङ्ग वगैरहकी सम्बन्धमें—थूथ्यूजा, सिमिसिफ्यूगा, मेडोरिनम।

,, कुत्तेकी सम्बन्धमें—कैल्क, स्ट्रैमो, बेलेडोना, (काला कुत्ता)।

,, पतङ्गादिकी विषयमें—आर्ज, बेल, हायोस।

,, तेज प्रकृतिका—स्ट्रैमो, बेल, हायोस।

,, प्राणीकी सम्बन्धमें—बेल, हायोस, स्ट्रैमो, ओपियम, थूजा।

,, वस्त्र आदिकी सम्बन्धमें—(जैसे—कोई कपड़ेका टुकड़ा सुन्दर दिखाई दे) सल्फर।

,, बिछावनपर मानो रोगीकी साथ कोई सोया है—बैप्टीशिया, पल्स।

,, काली बिल्लीकी सम्बन्धमें—कैल्क, पल्स।

,, काम-काजकी जल्दबाजीकी सम्बन्धमें—फास्फो।

,, भूत-प्रेतकी सम्बन्धमें—बेल, स्ट्रैमो, आर्स, ओपि, कार्बो-वेज।

भ्रान्त-विश्वास :—

" मानो पागल हो जायगा—लिलियम-टिग और सिमिसिफ्यूगा।

" मानो सब तरहकी बीमारियाँ हो गयी हैं आरम-म्यूर।

" मानो रोग अब अच्छा न होगा—आर्ज-नाई।

" रोगीका शरीर मानो टुकड़े-टुकड़े हो गया है—बैप्टीशिया, पल्स।

" रोगी मानो आँखें बन्द रखनेपर भी चेहरा देख रहा है—कैल्क।

" रोगीका कोई दूसरा अपमान कर रहा है—आर्ज-नाई।

" रोगीको कोई कष्ट दे रहा है—चायना।

" रोगी मानों मर गया है—स्ट्रैमो।

" रोगीका शरीर मानों काँचका बना है—थूजा।

शराब पीनेसे पैदा हुए मानसिक उपसर्ग—नक्स, स्ट्रैमो, बेल (प्रलापके साथ बिछावन नोचना)।

मन छटपटाना।—ऐकोन, आर्ज, मर्क, स्ट्रैनम।

मर्माहत होना—ऐकोन, इग्ने, एसिड-फास।

मानसिक बेचैनी।—ऐकोन, आर्ज, कैमो, काफिया, हायोस, सिमिसि, इग्ने, फास्फो, स्ट्रैमो।

मोह या मोह निद्रा।— आइलैन्थस, एपिस, हेलि-बोरस, हायोस, ओपि, एसिड-फास, जिङ्क-सूफर, रस।

ऐसा मालूम होना कि उन्मत्त हो रहा है—लिलियम, प्लैटिना, कैन्थरिस (प्रचण्ड या काम विषयक उन्मत्तता)।

रोगीमें मानो दो इच्छाएँ हैं।—(जैसे—सुमति और कुमति दोनों उसपर अधिकार जमाये हैं, एक कहती है, "यह काम करो", दूसरी कहती है "न करो"—इस लक्षणमें) ऐनाकार्डियम।

लोगोंका साथ करनेकी इच्छा—लाइको।

लोगोंका साथ छोड़नेकी इच्छा—नेट्रम-म्यूर।

शोक-जनित।—(खासकर मानसिक दुःख दबा रखने बाद)। **कोई मानसिक रोग होनेपर।**—इग्नेशिया; परन्तु बहुत दिनोंतक शोकादिमें मग्न रहनेपर और इसी वजहसे शरीर रोगी होनेपर, एसिड-फास।

बेहोश होनेपर ।—कैनाबिस-इण्डिका, हायोस, जिङ्क-मूरर, हेलिबोरस ।

मानसिक भाव हमेशा बदलते रहनेपर ।—(ऐसा मालूम होना कि कोई जीव हमेशा पेटमें घूम रहा है)—क्रोकस, डिजिटेलिस (दुःखित और डरसे व्याकुल होनेपर) ।

सन्देही ।—सलफर, स्ट्रैमो, सिकेलि, कैनाबिस-इण्डिका, हायोस, लैकेसिस ।

सलज्ज भाव ।—बैराइटा, इग्ने, स्टैफिसेग्रिया ।

थोड़े में ही चौंक उठना ।—ऐकोन, बेल, कैमो, बोरैक्स, इग्नेशिया, नक्स, स्ट्रैमो, फास्फो ।

एकाएक ईर्षासे पैदा हुए उपसर्गमें ।—काफिया, ओपियम ।

एकाएक जोरसे चिल्ला उठना ।—(जागते रहनेपर या नींदमें) एपिस ।

याददाश्तकी कमी ।—ऐनाकार्डियम, हायोस, एसिड-फास, इथ्यूजा ।

हतबुद्धि ।—(भौंचक हो जाना)—ऐनाकार्डियम, कैनाबिस-इण्डिका, आर्ज-नाई, नक्स-वो ।

---

१६ । जायुज व्याधि

(Drug-Diseases)

सूचना

पारा, क्विनाइन, आर्सेनिक आदि तेज़ दवाएँ ज्यादा मात्रामें, बहुत दिनोंतक सेवन करनेपर, जिन रोगोंका लक्षण प्रकट होता है, उन्हें जायुज-व्याधि (Drug-Diseases) (प्रधान लक्षणादि "हैनिमैनके बतलाये हुए पुराने और नये रोग" के अनुच्छेदमें देखिये) कहते हैं। कुछ प्रधान दवाएँ ऐलोपैथिक मात्रामें (और कोई-कोई ज़हरकी मात्रामें) सेवनसे पैदा हुआ कुफल और उसका इलाज नीचे लिखा जाता है।

१ । पारा (Mercury)

ज्यादा परिमाणमें रस-कपूर या पारा (Mercury) खा लेने बाद ही अगर ज़हरके लक्षण पैदा हो जायें, तो अण्डेका सफेद भाग, चीनीका शरबत और दूधमें पानी मिलाकर सेवन करनेसे बहुत फायदा होता है।

पाराके अपव्यवहारकी **गौण क्रियाका** नतीजा :— रातमें सरमें दर्द, केशोंका झड़ जाना, माथेमें दर्द-भरे फोड़े,

प्रदाहके कारण लाल-लाल आँखें, नाकको छूनेपर स्पर्श अधिक अनुभव होना, मुँहके चारों ओर सूखापन, मसूढ़ेमें जखम और मुँह हमेशा थूकसे भरा रहना; तालुमूल या गलेकी गांठका सूजना, पुट्ठे या बगलकी गांठमें जखम हो जाना, कूथनेके साथ पतले दस्त आना, बदनपर जखम या प्रदाह, दाँतकी जड़ अलग हो जाना, शरीरपर सहजमें ही फोड़ा पैदा होना, इन सब लक्षणोंमें पहले हिपर-सलफर ६ देना चाहिये। हिपरके बाद बेलेडोना ६ या नाइट्रिक-एसिड ६ देना उचित है। इससे भी अगर कोई फायदा न हो, तो दो-एक सप्ताहके लिये एक मात्रा सलफर ३० देना चाहिये। सलफरके बाद कैल्केरिया-कार्ब ६ ज्यादा फायदा करता है।

यदि सलफर और मर्करी दोनोंका अपव्यवहार हुआ हो, तो बेलेडोना ६, पलसेटिला ६, यहाँतक कि कभी-कभी ऊँचे क्रममें मर्क्यूरियस भी दिया जा सकता है।

पारा सेवनसे **रक्त-दोष** होकर सब शरीर अगर बिगड़ गया हो, तो ऐसाफिटिडा, आरम-मेट, चायना, चियोनैन्थस, हिपर, आयोड, कैलि-आयोड या मेजेरियम दिया जाता है।

मुँहका भीतरी हिस्सा या **दाँतके मसूढ़ोंपर** रोगका हमला हुआ हो या बहुत ज्यादा लार गिरती हो, तो कार्बो-वेज, डाल्कामारा, हिपर-सलफर, नाइट्रिक-एसिड, स्टैफिसेग्रिया, सलफर, चयना, आयोड, नेट्रम-म्यूर प्रभृति देना चाहिये।

पारा सेवनके कारणसे गलेमें घाव हो, तो—बेलेडोना, कार्बो-वेज, हिपर-सलफर, लैकेसिस, स्टैफिसेग्रिया, सलफर, आर्ज-मेट, लाइकोपोडियम, नाइट्रिक-एसिड और थूजा।

स्नायविक उत्तेजनामें—कार्बो-वेज, कैमोमिला, हिपर, नाइट्रिक-एसिड, पलसेटिला।

स्नायविक दुर्बलतामें—चायना, हिपर-सलफर, लैकेसिस, कार्बो-वेज, नाइट्रिक-एसिड।

ठण्डा लगकर या ऋतु-परिवर्त्तन आदिमें ऊपर लिखे लक्षण मालूम होनेपर—कार्बो-वेज, चायना।

पारा सेवनकी वजहसे वात-रोग होनेपर—कार्बो-वेज, चायना, डाल्कामारा, गुयेकम, हिपर-सलफर, लैकेसिस, फास्फोरिक-एसिड, पलसेटिला, सार्सा, सलफर, आर्निका, बेलेडोना, कैमोमिला, कैल्केरिया, लाइकोपोडियम।

पारा सेवनकी वजहसे हाड़के भीतर दर्द या हड्डीमें घाव वगैरह लक्षणोंमें—आरम, फास्फोरिक एसिड, ऐसाफिटिडा, कैल्केरिया, डाल्कामारा, लैकेसिस, लाइकोपोडियम, नाइट्रिक-एसिड, सिलिका, सलफर।

शारीरिक ग्रन्थि या पुट्ठे (वंक्षण) के उपसर्ग होनेपर—आरम-मेट, कार्बो-वेज, डाल्कामारा, ग्रैफाइटिस, नाइट्रिक-एसिड, साइलिसिया।

पारा सेवनसे पैदा हुए जखममें—आरम, बेलेडोना, कार्बो-वेज, ग्रैफाइटिस, हिपर-सलफर, लैकेसिस, नाइट्रिक-एसिड, सार्सा, सिलिका, सलफर, थजा।

पारा सेवनसे पैदा हुए **शोथादि** लक्षणमें—चायना, डाल्कामारा, हेलिबोरस, सलफर।

यह सभी दवाएँ ६—३० शक्तिकी देनी चाहिये।

२। क्विनाइन

जिस तरह पारा खानेसे शरीरसे उसका विष जल्दी नहीं निकल जाता, वही दशा क्विनाइनके अपव्यवहारसे भी हुआ करती है।

आर्निका, आर्सेनिक, बेलेडोना, कैल्केरिया, फेरम, इपिकाक, लैकेसिस, मर्क्युरियस, पलसेटिला, विरेट्रम, कैप्सिकम, कार्बो-वेज, सिना, नेट्रम-म्यूर, सिपिया, सलफर वगैरहके सेवनसे शरीरसे क्विनाइनका विष निकल सकता है।

इपिकाक।—क्विनाइनका खराब परिणाम दूर करनेकी यह प्रधान दवा है। इसके बाद पल्सेटिला खाना चाहिये (खासकर नीचे लिखे लक्षणोंमें)। क्विनाइनसे बोखार या मैलेरिया बोखार दब जानेके बाद कान या दाँतमें दर्द, सर भारी और अङ्ग-प्रत्यङ्गमें दर्द हो।

आर्निका। वात, हाथ-पैरमें भार मालूम होना और दर्द, हिलने-डोलने, बात करने या कानमें आवाज़ जानेपर दर्दका बढ़ना।

आर्सेनिक।—हाथ-पैरोंमें जखम, पैरमें सूजन, सूखी खाँसी और साँसमें तकलीफ़।

बेलेडोना।—माथेमें अस्वाभाविक ढङ्गसे खून जमा होना और चेहरा गर्म; माथा, चेहरा और दाँतमें दर्द। मर्क्युरीके खिलानेपर यदि कामला न अच्छा हो, तो बेलेडोना देनेसे फायदा होता है।

कैल्केरिया।—सरमें दर्द, कानमें दर्द, दाँतमें दर्द। सब शरीरमें दर्द, बोखार दब जाने या पल्सेटिलासे फायदा न होनेपर।

सिङ्कन।—क्विनाइन या चायनाके अपव्यवहारके कारण कानमें भों-भों शब्द होना।

इयुकेलिप्टस।—क्विनाइनके अपव्यवहारसे सरमें दर्द, कानमें भों-भों शब्द होना और इन्फ्लुएञ्जा या सर्दी होनेके पहले, शरीर जैसा खराब रहता है, वैसा ही रहना।

फेरम।—पैरमें सूजन।

पल्सेटिला।—कानमें दर्द; दाँतमें दर्द; सरमें दर्द; क्विनाइनसे बोखार बन्द होने बाद अङ्ग-प्रत्यङ्गमें दर्द होनेपर।

लेकेसिस।—क्विनाइनसे बोखार दबा देने बाद और पल्सेटिलासे फायदा न होनेपर।

मर्क्युरियस।—यकृत (खासकर कामला) या प्लीहा रोगमें।

नेट्रम-म्यूर ।—क्विनाइनके अपव्यवहारकी वजहसे बराबर हिचकी आती हो, क्विनाइनसे बोखार या मैलेरिया दबा देनेपर।

विरेट्रम ।—शरीरमें पसीना होता हो और ठण्डा हो, कब्जियत या अतिसार।

क्विनाइनसे बोखार एकदम दब जानेपर :—आर्निका, आर्सेनिक, बेलेडोना, कैल्केरिया, कार्बो-वेज, साइना, फेरम, इपिकाक, लैकेसिस, मर्क्यूरियस, पल्सेटिला, सलफर। जब क्विनाइन देनेके बाद भी बोखार रहे तो पहले इपिकाक; पीछे आर्सेनिक, कार्बो-वेज, लैकेसिस, पलसेटिला, आर्निका, सिना, या विरेट्रम और अन्तमें—कैल्केरिया, मर्क्यूरियस, बेलेडोना और सलफर देना चाहिये।

ये सब दवाएँ ६—३० शक्तिकी प्रयोग करनी चाहियें।

३। संखिया (Arsenic)

संखिया सेवनसे ज़हर फैलनेपर पहले Stomach pump द्वारा या सरसों पीसकर या थोड़ा रेड़ीका तेल या कोई दूसरी कै करानेवाली दवा खिलाकर पाकाशयको खाली कर देना चाहिये। इसके बाद अण्डेका सफेद हिस्सा या ब्राण्डी अथवा कोई दूसरी उत्तेजक दवा खिलानी चाहिये। भयदायक लक्षण दब जानेपर इपिकाक ३, इसके बाद चायना ३x या नक्स-वोमिका १x देना चाहिये ("ज़हर खाना" देखिये)।

आर्सेनिकके अपव्यवहारसे पैदा हुई बीमारीमें—इपिकाक ३, चायना ३, नक्स-वोमिका १x—३, विरेट्रम ६ देना चाहिये।

४। अफीम (OPIUM) या मार्फिया
(Lodanum)

ज्यादा मात्रामें अफीम खानेपर अगर उसका ज़हर फैल जाये तो स्टामक पम्प (stomach pump) द्वारा या सरसोंकी बुकनी खिलाकर कै करा देनी चाहिये। इसके बाद बेहोशी दूर होनेपर, इपिकाक १x जल्दी-जल्दी देना चाहिये। यदि इपिकाक खिलानेपर भी कुछ उपकार न हो, तो नक्स-वोमिका १x—३, मर्क्यूरियस ३ या बेलेडोना ३ या ऐसेटिक एसिड ३ देना चाहिये। **आपोमार्फिया** नामक दवा कभी न खिलाई जाये। आकस्मिक दुर्घटना अध्यायमें "ज़हरकी मात्रामें अफीम" देखिये।

रोज़ अफीम खानेवाले अगर अफीम छोड़ दें और इस वजहसे शरीरमें सुस्ती मालूम हो तो ऐवेना सैटाइवा θ पाँच बून्द दिनमें तीन बारके हिसाबसे सेवन करना चाहिये। यदि इससे भी फायदा न हो तो कैमोमिला ६, काफिया ६—३० या कैनाबिस इण्डिका १x—३० देना चाहिये।

अफीम या मार्फिया खानेकी अगर आदत हो तो, उसे छोड़नेके लिये भी ऐवेना बढ़िया दवा है। रोज़ अफीम खाने-

वालेको आधा छटाक गर्म पानीमें दस बून्द ऐवेना दिनमें दो बार खिलाने और अफीमकी मात्रा धीरे-धीरे घटाते रहनेपर तकलीफ़ नहीं होती। अफीम छोड़ने बाद भी कुछ दिनोंतक ऐवेना खिलाते रहना चाहिये। खूब गर्म या ठण्डे पानीसे नहाना फायदेमन्द है।

५। कोकेन (Cocainism)

यह दक्षिण अमेरिकाके कोको नामक पेड़के पत्तेसे बना हुआ एक तरहका क्षार है। आजकल इस देशमें कोकेन खूब चल रही है। शराबकी तरह यह भी उत्तेजक है। इससे शरीरकी थकन तो मिटती है; परन्तु धीरे-धीरे मात्रा न बढ़ाते रहनेपर कोकेन खानेवालोंकी तृप्ति नहीं होती। बहुत दिनोंतक इसे खानेपर भूख न लगना; चेहरा पीला; आँखें गड्ढेमें धँसी, नींद न आना, याददाश्तकी कमी, ऐसा मालूम होना कि शरीरपर कीड़ा रेंग रहा है, मानसिक शक्तिका घटना, नीतिहीन, भ्रान्त या अवास्तव चीजें देखना, बराबर कोकेन खाना, पागलपन और अन्तमें मृत्युतक हो जाती है।

चिकित्सा।—एकदम (धीरे-धीरे नहीं) कोकेन खाना छोड़ देना पड़ेगा। कोकेन छोड़नेके बाद सुस्तीको दूर करनेके लिये काफी, अलकोहल, एमोनिया, आक्सिजन वगैरह उत्तेजक दवाएँ लाभ करती हैं। यदि खींचन हो, तो क्लोरो-

फार्म देना चाहिये। स्ट्रिकनिया या डिजिटेलिसकी भी कभी-कभी जरूरत पड़ सकती है। डा० बोरिकका कहना है, कि जेलसिमियम इसका ज़हर दूर करनेकी उत्तम दवा है। जेलसिमियम १x—३० कुछ दिनोंतक सेवन करनेसे इसकी बुराई दूर हो सकती है। Pelley का कथन है, कि दस्तावर (purgative) दवा खानेसे इसका ज़हर शरीरसे निकल जाता है। पुष्ट और जल्दी पचनेवाली चीजें खानेको देनी चाहियें।

६। शराब (Alcohol)

रोज़ शराब पीनेवालोंको शराब छोड़ देनेके बाद अगर शराब पीनेकी बहुत इच्छा हो तो उसे दबानेके लिये, चायना θ या ऐवेना θ या स्ट्रोफैन्थस θ दिनोंमें तीन बारके हिसाबसे फी मात्रा पाँच बून्द या काली काफी पिलाना चाहिये, इसके बाद नक्स-वोमिका १x—३ अथवा सलफर देना चाहिये।

ब्राण्डी पीनेकी प्रबल इच्छा होती हो तो—सलफ्युरिक-एसिड ३x। कोएरकस ग्लैण्ड ३x कुछ अधिक दिनोंतक व्यवहार करनेपर शराब पीनेकी इच्छा बन्द हो जाती है।

किशमिश, मुनक्का, संतरे वगैरह खाना फायदेमन्द है। बहुत दिनोंतक शराब पीनेके कारण अगर उन्माद रोग हो जाये तो "प्रलाप-कम्पन उन्माद-रोग" देखिये।

७। मधु

शहद ज्यादा खानेमें आया हो तो पहले स्पिरिट कैम्फर या कपूरकी गन्ध लेनी चाहिये। पीछे गर्म चाय या काली काफी पिलाना चाहिये।

८। तम्बाकू
(Tobacco)

ज्यादा तम्बाकू खानेसे आँखें, स्नायु, पाकाशय या गलेका बिचला भाग यदि आक्रान्त हुआ हो, तो तम्बाकू छोड़ देनी चाहिये और रोज़ नक्स-वोमिका १x—२ या स्पिरिट कैम्फर सेवन करना चाहिये।

तम्बाकू खानेसे यदि अच्छी तरह दिखाई न दे (या रातमें रोशनी धुँधली मालूम हो), तो इस लक्षणमें फास्फोरस ३। तम्बाकू खानेके कारण अजीर्ण रोग होनेपर, नक्स-वोमिका ३x। तम्बाकू खानेके कारण कलेजा धड़कता हो, तो स्पाइजिलिया ३। धूम्रपानके कारण गलेमें घाव होनेपर, कैल्केरिया-फास विचूर्ण ३। धूम्रपानकी इच्छा बन्द करनेके लिये, चायना ३ का प्रयोग करना चाहिये।

६। काफी (COFFEE)

काफी पीनेकी वजहसे पुरानी बीमारी अगर हो जाये, तो कैमोमिला ६, नक्स-वोमिका ३, इग्नेशिया ३, मर्क्यूरियस ३ या सलफर ६ देना चाहिये।

१०। चाय (TEA)*

बहुत अधिक मात्रामें चाय पीना या बहुत दिनोंतक चाय पीते रहनेपर साधारणत: नीचे लिखे उपसर्ग दिखाई देते हैं— बहुत बेचैनी, स्नायविक दौर्बल्य, मानसिक अवसन्नता, नींद न आना, कभी-कभी अजीर्ण, हाथ काँपना, सरमें दर्द, सरमें चक्कर, कलेजा धड़कना वगैरह। चायके अपव्यवहारसे पैदा हुए उपसर्गोंकी फेरम ६ एक बढ़िया दवा है। पुराने चाय पीनेवालोंको अगर अनिद्रा, हृद्-रोग, कलेजा धड़कना, अजीर्ण वगैरह हो जाये, तो थिया ३x। पेटमें ऐंठन; थोड़ा भोजन भी सहन न होना, लक्षणमें चायना ३। ज्यादा परिमाणमें चाय पीनेकी वजहसे पेट फूलता हो और स्नायविक दुर्बलता हो तो थूजा ६। ज्यादा मात्रामें चाय पीनेकी वजहसे

* पाश्चात्य रसायनिकोंने आजकल परीक्षाकर स्थिर किया है कि चाय और काफीमें एक अम्ल पदार्थ है, शरीरमें जिसके जानेपर वात होनेका बहुत डर रहता है।

पैदा हुए उपसर्गोंको दूर करनेके लिये थूजा ३०—२०० हफ़्तेमें सिर्फ एक बार सेवन करना चाहिये। दूसरी दवाएँ—सेलिनी ६, काफिया ६, लैकेसिस ६, विरेट्रम ६ की भी कभी-कभी जरूरत हो सकती है।

११। बरफ, कुलफी या आइस-क्रीम

इनके अपव्यवहारसे पचनेकी क्रियामें बाधा पड़ती है और पेट फूलता है तथा कै होती है। बरफ या बरफका पानी पीनेके बादवाली बीमारीमें कार्बो-वेज ६। आइस-क्रीम खानेके बादवाली बीमारीमें आर्स ६। धूपमें घूमने, आगके सामने रहने (या किसी दूसरे कारणसे) शरीर खूब गर्म मालूम होनेपर, बहुत लोग बरफ या बरफका पानी पिया करते हैं। उससे शरीरपर (खासकर चेहरेपर) दाने (eruptions) निकल आते हैं। वेलिस पेरेनिस ३x इसकी बढ़िया दवा है।

कुछ दूसरी दवाओंका अपव्यवहार

(क) ब्रोमाइड आव पोटासके अपव्यवहारमें—हेलोनियस θ सेवन।

(ख) कैम्फरके अपव्यवहारमें—कैन्थरिस ६, काफिया ३, ओपियम ३।

(ग) क्लोरेलके अपव्यवहारमें—कैनाबिस θ ।

(घ) क्लोरेट आव पोटासके अपव्यवहारमें—हाइड्रै-स्टिस θ ।

(ङ) काड-लिवर आयलके अपव्यवहारमें—हिपर ६ ।

(च) अँचार, चटनीके अपव्यवहारमें—नक्स-वोमिका १x—३ ।

(छ) डिजिटेलिसके अपव्यवहारमें—नाइट्रिक-एसिड ६।

(ज) "सभी गर्म" दवाओंके अपव्यवहारमें—नक्स-वोम १x—३ ।

(झ) आर्गटके अपव्यवहारमें—चायना १, नक्स-वोम १, सोलेनमनाई ३ ।

(ञ) आयोडाइडके अपव्यवहारमें—हिपर ६, हाइड्रै-स्टिस θ, फास ३ ।

(ट) लोहेसे बनी दवाके अपव्यवहारमें—हिपर ६, पल्स ३ ।

(ठ) सीसा (प्लम्बम) के अपव्यवहारमें—ओपियम १x, ऐल्यूमिन ६, कैलि-आयोड θ, एसिड-सल्फ ३x, लेमोनेड ("शीस-शूल" रोग देखिये) ।

(ड) आर्जेण्टम-मेटके अपव्यवहारमें—नेट्रम-म्यूर ३० ।

(ढ) आर्जेण्टम-नाइट्रेटके अपव्यवहारमें—नेट्रम-म्यूर ३०, आर्स ३, आयोड ६, मर्क ६, दूध, नमक ।

(ण) फास्फोरसके अपव्यवहारमें—लैकेसिस ६।

(त) नमकके अपव्यवहारमें—नाइट्रि स्पिरिट-डल-सिस θ, आर्स ३।

(थ) स्ट्रैमोनियम (धतूरा) के अपव्यवहारमें—टैबेकम ३।

(द) स्ट्रिकनाइनके अपव्यवहारमें—युकैलिप्टस θ, कैलि-ब्रोम θ।

(ध) चीनीके अपव्यवहारमें—नेट्रम-फास ६x चूर्ण।

(न) छोटी उमरमें धूम्रपानके उपसर्गमें—आर्ज-नाई ३, आर्स ६, विरेट्रम-ऐल्ब ६। ("तम्बाकू देखिये")

(प) तारपीनके अपव्यवहारमें—नक्स-मस्कोटा २x।

(फ) उद्भिद औषध (Vegetable drugs) मात्रके अपव्यवहारमें—कैम्फर θ, नक्स-वोमिका १x—३।

(ब) विरेट्रमके अपव्यवहारमें—कैम्फर θ, काफिया ३।

(भ) कैलि-आयोड (Iodide of potash) के अप-व्यवहारमें—हिपर-सलफर ६—२००।

(म) चैतन्य-नाशक (anæsthetic) धुआँ साँसके साथ शरीरमें जानेपर—ऐसेटिक एसिड ३, हिपर ६, फास्फो ३ सेवन और एमिल-नाई θ सूंघना चाहिये।

(य) गैस, काठका कोयला वगैरह धुएँकी खराबीमें—ऐमोन-कार्ब ३, आर्निका ३x, बोविस्टा ३।

(र) जो नशीली (narcotic) दवा सेवनसे नींद आकर दर्द कम होता हो—ऐसेटिक-एसिड ३; ऐपो-मार्फिया ३, कैनाबिस इण्डिका θ, कैमोमिला ३।

(ल) तांबे या पीतलके बर्त्तनमें भोजन बनाकर खाने बाद बदन गर्म मालूम हो या ज़हरीला हो जाय—हिपर ३०।

(व) रसाञ्जन (antimony) के अपव्यवहारमें—हीपर ३०, मर्क २००, कैल्क-कार्ब ३०।

(श) क्लोरोफार्म (chloroform) के अपव्यवहारसे पैदा हुए उपसर्गमें—ऐमिल-नाइट्रेट सूंघना।

(ष) ईथरके अपव्यवहारसे पैदा हुए उपसर्गमें—रोगीको सुलाये रखना और ऐमिल-नाइट्रेट सुंघाना, क्विनाइन, बेल, स्ट्रिकनिन।

विशेष विवरणके लिये परिशिष्ट "ख" देखिये।

---

२० । आकस्मिक दुर्घटना

(ACCIDENTS)

आगमें जलना ।—आगमें जलनेपर छाले पड़ जाते हैं, जखम हो जाता है, इससे मौततक हो सकती है।

पहननेके कपड़ेमें आग लगते ही, जमीनपर लेटनेसे और तुरन्त जलते हुए कपड़ेपर शतरञ्जी, तकिया, गद्दी, गलीचा वगैरहसे दबा देनेसे आग बुझ जाती है। दौड़ने या पानीसे बुझानेकी कोशिश करनेपर भारी विपत्तिका डर है, क्योंकि हवा लगकर आग और भी बढ़ जाती है।



आग बुझाना—शतरञ्जी, गद्दी वगैरहसे दबाना।

जले हुए स्थानका चमड़ा उजाड़ना न चाहिये। जले हुए स्थानपर हवा न लगने पाये, इसलिये जलते ही (और इलाज

करनेवालेके न आनेतक), थोड़ा तेल* और चूना मिलाकर जले हुए स्थानपर लगाना चाहिये। यदि तेल या चूना न मिले, तो सिर्फ मैदा (या आँटा) या आरारूट जली हुई जगहपर छिड़क देना चाहिये।

थोड़ा या बहुत स्थान जलनेपर या छाले हो जानेपर, जली हुई जगह सोडासे ढँक रखने और उसपर गीला कपड़ा भिंगोकर रखनेसे बहुतसे चिकित्सकोंने बहुत-कुछ फायदा होते देखा है; परन्तु डाक्टर डन (G. W. Dunn) के मतसे कैन्थरिस १x—६x लगाना और १२x—३० सेवन करना, सोडासे भी अच्छी दवा है। उनका कहना है, कि इसी अर्कसे जला हुआ स्थान हमेशा तर रखनेसे फफोला या जखम कुछ भी नहीं होता (The Hom. Recorder Dec. 1912 देखिये)।

चिकित्सा

थोड़ा-सा जलकर फफोला होनेपर, कैन्थरिस (या आर्टिका युरेन्स) θ मूल अरिष्ट एक ड्राम, एक आउन्स पानी मिलाकर, उसमें कपड़ेका एक टुकड़ा भिंगोकर जले हुए स्थानपर पट्टी लगानी चाहिये। दवाकी सुविधा अगर न हो तो जले हुए

* सरसोंका तेल, गरीका तेल, तिलका तेल या कोई दूसरा तेल जो उस समय मिल जाये।

डाक्टर बम्बार्जरका कथन है, कि कपड़ा धोनेवाले सोडाका पानी जली हुई जगहपर लगानेसे तकलीफ तुरन्त दूर हो जाती है। परन्तु यदि

स्थानपर सरसों या नारियलके तेलसे भिंगोकर उसपर मैदा या आँटा या आरारोट छिड़ककर अथवा नारियलके तेलमें चूनेका पानी मिलाकर जले हुए स्थानपर लगानेसे फायदा होता है। आलू या पोईकी सागका पत्ता पीसकर या पका केला छील और मलकर या नारियलका तेल और चूनेमें फेन पैदाकर अथवा गुड़, शहद या ताजा गोबर जले हुए स्थानपर लगा देनेसे, जलन बन्द हो जाती है और फोला भी नहीं पड़ता। जली हुई जगह गर्म, फूली, बोखार, प्यास, बदनका चमड़ा सूखा, भय और मनमें उद्वेग वगैरह लक्षणोंमें, ऐकोनाइट ३x सेवन कराना चाहिये। आगमें जलकर काले रङ्गका छाला; जली हुई जगहपर जलन; बोखार; तेज प्यास; बहुत कमजोरी; मृत्युका भय वगैरह लक्षणोंमें आर्सेनिक ६। जखमवाली जगहमें पीव हो जानेपर, हिपर ६ सेवन और एक भाग कैलेण्डुला θ दस भाग जैतूनका तेल (olive oil) के साथ मिलाकर लगाना चाहिये। जखम रोज हुक्केके पानीसे धोना चाहिये। जखममें सड़ना आरम्भ होनेपर, साइलिसिया ३०। जली हुई जगह ढँक रखना चाहिये, जिससे उसमें हवा न लगने पाये। जबतक रूई खूब गन्दी न हो जाये, तबतक उसे बदलना न चाहिये। (क्योंकि बार-बार रूई बदलनेसे

जखम गहरा हो गया हो या शरीरका बहुत-सा स्थान जल गया हो, तो सोडेकी जल-पट्टी (नौ भाग पानी और एक भाग सोडा) जले हुए स्थानपर लगाना चाहिये (The Indian Medical record, January 1915 pages 17 देखिये)।

जली हुई जगहपर नया चमड़ा जल्दी पैदा नहीं होता। हलका भोजन देना चाहिये, उत्तेजक चीजें मना है।

मांस-पेशीका अवसाद।—कसरत, उछल-कूद, फुटबाल वगैरह खेलनेकी वजहसे मांस-पेशियाँ सुस्त पड़ जायें, शरीरमें दर्द और छाले हों, तो आर्निका ३x बढ़िया दवा है। जरूरत पड़नेपर थोड़े गर्म पानीसे बदन पोंछ डालना चाहिये।

कटी जगहसे खून गिरना।—हाथ, पैर, अंगुलियाँ वगैरह कटकर वहाँसे खून निकलनेपर, एक साफ़ कपड़ेको (या वस्त्र-खण्ड) गर्म पानीमें भिंगोकर उस कटी जगहपरकी धूल साफ़ करना चाहिये। इसके बाद एक टुकड़ा कपड़ेको गद्दी जैसा बनाकर उसे तरकर उस स्थानपर रख देनेसे खून गिरना बन्द हो जाता है। अन्तमें १५ बून्द कैलेण्डुला θ आधा छटाक पानीमें मिलाकर उस कटी हुई जगहके जखमपर पट्टी लगा देनी चाहिये। सावधान, कटी जगहपर धूल, बालू वगैरह न गिरने पाये।

शिरा या धमनी कटकर खून गिरना।—एकाएक कोई शिरा या धमनी कट जानेपर उस कटी शिरा या धमनीसे शरीरका सब खून निकल जा सकता है। इस अवस्थामें अवश्य मौत हो जाती है। इसलिये, तुरन्त इसे बन्द करनेकी चेष्टा होनी चाहिये।

यह खून बहना बन्द करनेके पहले, यह स्थिर करना चाहिये, कि "यह खून धमनीसे निकल रहा है या शिरासे।"

"हृत्पिण्ड और रक्तवहा नाड़ी" शीर्षक प्रबन्धमें बताया गया है, कि (१) धमनीका खून हृत्पिण्डसे शरीरको सब जगहोंमें जा पहुँचता है और धमनी कट जानेपर लाल खून झोंकसे वहाँसे निकलता है और (२) शिराका खून सब जगहोंसे हृत्पिण्डको ओर दौड़ता है और शिराके कट जानेसे काला या बैंगनी खून धीरे-धीरे समान भावसे निकलता है।

इसलिये एकदम लाल खून बन्द करनेके लिये धमनीका जो कटा मुँह हृत्पिण्डको ओर है (अर्थात् ऊपरकी ओरका कटा मुँह), उसे दबाकर पकड़ रखना चाहिये या बाँध देना चाहिये और धुमैला खून बन्द करनेके लिये कटी नसका नीचेका मुँह दबाकर पकड़ रखना चाहिये या बांध देना चाहिये। हाथ या हाथकी अंगुलीसे कटी शिरा जोरसे तबतक पकड़ रखनी होगी, जबतक खून बहना बन्द न हो जाये या चिकित्सक आकर बैण्डेज न बाँध जाये।

जहाँ डाक्टर न मिल सकता हो, वहाँ नीचे लिखी सहज तरकीबसे बैण्डेज बाँध देना चाहिये।

(१) अगर कटी धमनी या शिरा त्वकके खूब पास हो, तो मोटे डोरे, फीता या डोरी या रूमालसे धमनीके ऊपरकी तरफ या शिराके नीचे कसकर बाँध देना चाहिये। इसी बन्धनका नाम "बैण्डेज" है।

(२) परन्तु अगर कटा गहरा हो, तो नीचे लिखो तरकीबसे खूब कसकर बैण्डेज बाँधना चाहिये :—एक लम्बा चीथड़ा डोरीकी तरह बटकर कटी जगहको बाँधना चाहिये ; इसके बाद उस बँधी हुई रस्सीकी तरह कपड़ेकी और शरीरके नीचे (अथवा बैण्डेजमें गाँठ लगानेके छिद्रमें) एक पेन्सिल, क़लम या कैंची घुसाकर, जबतक खून गिरना बन्द न हो जाये, वह कैंची, पेन्सिल या क़लम चारों ओर घुमाना या ऐंठना चाहिये, खून निकलना बन्द होनेपर कुछ देरतक वह कटे हुए अङ्गपर बँधी रहे।

कटी धमनीसे खून निकलना बन्द होनेपर, आर्निका ३x सेवन और कैलेण्डुला θ (अठगुने पानीके साथ मिलाकर) पट्टी लगाना या धोना चाहिये। कटी शिराका खून गिरना बन्द होनेपर, हैमामेलिस ३x सेवन और हैमामेलिस θ (अठगुने पानीमें मिलाकर) पट्टी लगाना, धोना चाहिये। सावधान, कटे जखमपर आर्निकाका बाहरी प्रयोग कभी न करना चाहिये। यह सेलुलाइटिस पैदाकर बहुत खराबी ला सकता है। जिन सब कुचल जानेकी चोटमें खून नहीं निकलता, उनमें आर्निकाका बाहरी प्रयोग हो सकता है।

नाकसे खून गिरना।—इस ग्रन्थकी नाककी बीमारी अध्यायमें "नाकसे खून गिरना" देखिये।

दाँतकी जड़से खून निकलना।—दाँत उखाड़ने वगैरह कारणोंसे कभी-कभी खून निकलता है और इससे रोगी कमजोर भी हो जाता है।

चिकित्सा।—लाल खून निकलनेपर, आर्निका θ एक भाग (दसगुने पानीमें मिलाकर) उसमें थोड़ा कपड़ा भिंगो, उसकी तही बना, दाँतके मसूढ़ेके घावकी जगह जोरसे दबा रखनी चाहिये। इसके बाद, उतना ही बड़ा एक काग (cork) उसके ऊपर रखकर मसूढ़ेपर दबानेसे खून बहना बन्द हो जाता है। यदि खून सब लाल निकलता हो, तो आर्निका θ के बदले हैमामेलिस θ देना चाहिये।

आघात।—कटा, बिंधा, चिरा, कुचला हुआ या मोच खाना—वगैरह कितनी ही तरहसे आघात प्राप्त होता है। चोटकी वजहसे चमड़ा छिलकर घाव या जखम होता है।

चिकित्सा

चोटवाली जगहसे खून निकलना बन्द करना उचित है। जखमका मुँह ऊपरकी ओर रखकर ठण्डे पानीकी (या बरफकी) जलपट्टी देनेसे फायदा होता है। कटी जगहपर दूब चबाकर या पीसकर लगा देने या ताजा गोबर या चीनी देकर* बाँध देनेसे खून गिरना बन्द हो सकता है। अगर

---

* जखमपर चीनी लगाना,—जर्मनीमें डाक्टरोंने गत युरोपीय महा-युद्धमें घायल सिपाहियोंके जखममें चीनी देकर उसे अच्छा किया था। इससे आश्चर्यजनक फल होता है। लगानेका ढङ्ग भी बहुत सहज है। दानेदार चीनीसे जखमको ढूंसकर बांध दिया जाता है। चीनी किसी फैलनेवाली बीमारीको नहीं रोक सकती और जबतक खून निकलना बन्द न हो जाये, तबतक चीनी लगानी भी न चाहिये। साफ किये हुए जखमपर चीनीका प्रयोग करनेसे जखम बहुत जल्द अच्छा हो जाता है, फिर ड्रेस करनेके

चोटकी वजहसे जखम हो जाये (अथवा गिर जाने या मार वगैरह वजहोंसे सांटा पड़ जाये (काला दाग हो जाये), तो आर्निका (θ एक ड्राम एक आउन्स पानीके साथ मिलाकर, उस पानीमें कपड़ा भिंगोकर) चोटवाली जगहपर पट्टी लगा देनी चाहिये। (भोथरी चीज़से घाव होनेपर आर्निका ज्यादा फायदा करता है)। आघातके कारण (कांटी, आलपीन घुस जाने या चूहा काटनेकी वजहसे) स्नायु (nerves) कटकर दर्द होनेपर, हाइपेरिकम θ अठगुने पानीके साथ पट्टी लगानेसे और हाइपेरिकम ३ सेवनसे फायदा होता है। नुकीले अस्त्र या कांटी गड़ने अथवा चूहा काटनेपर यदि आहत स्थान ठण्डा अनुभव हो, तो लेडम लगाना और लेडम ३x सेवन करनेसे बहुत फायदा होता है। चोटकी वजहसे दूषित (ज़हरीला) जखम हो जानेपर हाइपेरिकम २०० सेवन और फोड़ेपर गरम सेंक देना चाहिये। तेज़ धारवाले अस्त्रसे कटनेके कारण चमड़ा छिल (lacerated) जानेपर स्टैफिसाइग्रिया θ (दसगुने पानीके साथ) पट्टी लगाना और स्टैफिसाइग्रिया ३—३० सेवन करना फायदा करता है। तेज़ धारवाले अस्त्रसे कटकर घाव हो जानेपर या बारूदसे जलकर

समय जखमको धोना नहीं पड़ता; दो या तीन दिनका अन्तर देकर चीनी देना भी अच्छा है। जिस जखममें मांस जोड़नेकी जरूरत नहीं रहती, उसमें भी चीनीसे फायदा होता है। (सम्मिलिनी)—डाक्टर श्रीकार्त्तिक-चन्द्र बसु, एम० बी० महाशय द्वारा सम्पादित "स्वास्थ्य-समाचार" जेठ १३२३ फसली।

घाव होनेपर कैलेण्डुला θ मूल अर्क ३० बून्द दो तोले पानीमें मिलाकर बताये हुए ढङ्गसे लगाना चाहिये। बारूद लगकर जखम या छाले होनेपर, यदि वह किसी तरह अच्छा न होता हो, खून बिगड़ गया हो वगैरह उपसर्गमें बारूद ३x (gun-powder ३x) आठ ग्रेनके हिसाबसे दिनमें तीन बार सेवन करना चाहिये (*The Hom. World.* Jan. 1915 and Feb. 1915 देखिये)। चोट लगनेकी वजहसे अगर हड्डी टूट जाये, तो अच्छे अस्त्र-चिकित्सकसे हाड़ ठीक जगहपर बैठाकर, सिम्फाइटम १x सेवन करना चाहिये। अगर जखम होकर दूसरे-दूसरे लक्षण मालूम होने लगें, तो नीचे लिखी दवाएँ सेवन करानी चाहिये :—बोखार, ठण्ड, प्यास, मनमें उद्वेग और मृत्युका डर और माथा गरमके लक्षणमें ऐकोनाइट ३x। चोट एक ही जगह हो, पर समूचे शरीरमें दर्द होता हो, तो आर्निका ३x—६। चोट लगकर बहुत ज्यादा खून निकलनेकी वजहसे कमजोर हो जानेपर, चायना ६ या आर्सेनिक ३। चीनी या गन्धककी बुकनी चोटवाली जगहपर बाँध देनेसे खून बन्द होता है और कटनेका जखम भर जाता है। हलकी चीजें खानेको देनी चाहिये।

बन्दूक या पिस्तौलकी गोली वगैरह लड़ाईकी अस्त्र द्वारा घायल होनेपर।—प्रदाहकी हालतमें फेरम-फास १x या ऐकोनाइट ३x सेवन करना चाहिये ; खून खराब होकर सड़ना आरम्भ होनेतक लैकेसिस ६ या एकिनेसिया θ

सेवन कराना और कैलेण्डुलाकी जलपट्टी देनेसे पीव पैदा नहीं होता। बारूद ३x विचूर्ण (gunpowder ३x) सेवन करनेके विषयमें पहले ही कहा जा चुका है ("आघात" देखिये)। चमड़ा छिलकर बहुत कष्ट, धनुष्टङ्कार, निगल न सकना, लक्षणमें—हाइपेरिकम ३०—१००० बहुत फायदा करता है।

सरमें चोट।—यदि चमड़ा न छिला हो, तो ऊपर कही हुई रीतिसे आर्निकाकी पट्टी लगा देनी चाहिये; परन्तु अगर चमड़ा कटा हो तो कैलेण्डुला θ (६० बून्द) एक छटाँक पानीमें मिलाकर पट्टी बाँधनी चाहिये। बोखार और समूचे शरीरमें दर्द रहनेपर आर्निका ६ और ऐकोनाइट ६ (पर्यायक्रमसे) खिलानेकी भी कोई-कोई राय देते हैं।

अगर सरमें गहरी चोट आनेकी वजहसे रोगी बेहोश हो जाये, तो आर्निका २ जीभमें लगा देना चाहिये। जबतक रोगी होशमें न आ जाये, तबतक उसे पुकारकर होशमें लाना उचित नहीं है। होशमें आने बाद अगर रोगीको दर्द हो तो आर्निका २; बोखार होनेपर ऐकोनाइट २ देना चाहिये।

मस्तिष्कका विकम्पन।—(Concussion of the brain)—सरमें ज्यादा चोट लगने, गिर जाने वगैरह कारणोंसे दिमागके काममें गड़बड़ी हो या बन्द हो जाये तो उसे "मस्तिष्कका विकम्पन" कहते हैं। एकदम या थोड़ी बेहोशी, चेहरा मलिन, द्रुत, अनियमित, क्षुद्र या लुप्तप्राय नाड़ी;

कमजोर और अनियमित साँस ; हाथ-पैर ठण्डे, पुकारनेपर जागता या जवाब देता हो, पर तुरत ही बेहोश हो जाता हो वगैरह इस रोगकी पहली अवस्था है। इसके बाद प्रतिक्रिया आरम्भ होती है—अर्थात् रोगी होशमें आता है, शरीरकी गर्मी बढ़ती है (१०१°-१०२°), बेचैनी, वमन आदि लक्षण उत्पन्न होते हैं।

चिकित्सा

पहले आर्निका ३x सेवन कराना चाहिये। बोखार होनेपर ऐकोनाइट ३x। सरमें दर्द, चेहरा तमतमाया, फूला वगैरह लक्षणोंमें बेलेडोना ३। साँसमें घरघराहट होनेपर ओपियम ३।

रोगीको गर्म बिछावनपर सुलाया जाये और उसकी बगलमें और हाथ-पैरोंमें सेंक दिया जाये। पहले सर नीचा रखकर सुलाना पड़ता है, इसके बाद (अर्थात् प्रतिक्रिया आरम्भ होनेपर) सर और कन्धेको कुछ ऊँचा कर दिया जाता है। रोगीको किसी हालतमें कुछ खिलाया या पिलाया न जाये।

काला दाग पड़ना।—कभी-कभी चोटवाली जगहसे खून नहीं निकलता और वह जगह नीली पड़ जाती है। इसीका नाम "काला दाग पड़ना" है। ऐसी अवस्थामें यद्यपि खून बाहर नहीं निकलता ; पर रक्तवहा नाड़ियाँ (blood vessels) कटकर खून निकलता है और वह खून भीतर ही रह जाता है, इसी वजहसे इस तरहका काला दाग

पड़ जाता है। चोट लगते ही आर्निकाकी जलपट्टी देनेपर अकसर यह काला दाग नहीं पड़ता। यदि आर्निकाके प्रयोग करनेपर काला दाग न अच्छा हो, तो हैमामेलिसकी जलपट्टी देनी चाहिये। अगर कोई दवा न मिले तो ऐसे काले दाग-वाली जगहको ठण्डे पानीसे धोकर सेंकनेसे दर्द और सूजन कम हो जाती है।

मोच खाना।—रबर जैसी रस्सीसे पैरकी एँड़ी, कलाई वगैरहमें गांठ पड़ी रहती है। चोट लगनेपर वह रस्सी टूट जाती है या अपनी जगहसे हट जाती है। इसीको मोच खा जाना कहते हैं। चोटवाली जगहमें दर्द होता है और वह फूल जाती है। खास-खास हालतमें आर्निका, सिम्फाइटम (हड्डी टूटनेपर), हाइपेरिकम, रूटा वगैरह दवाएँ खिलायी और लगायी जा सकती हैं (θ—६)। एक हिस्सा मदर टिंचर, दसगुने पानीके साथ मिलाकर आर्निका आदि दवाओंका बाहरी प्रयोग किया जा सकता है।

मोच खाये हुए अङ्गको जहाँतक बने, हिलाया-डुलाया न जाये। दवा न मिल सके तो हल्दी और चूना (अर्थात् पीसी हल्दीमें थोड़ा चूना और नमक या सोरा मिलाकर, गर्मकर लगाना चाहिये) मोच खायी हुई जगहपर गर्म-गर्म लगाकर बैण्डेज बाँध देना चाहिये। इस तरह दो-तीन बार गर्म-गर्म हल्दी चूना बाँधनेसे सूजन और दर्द कम हो जाता है।

कुचल जाना।—शरीरका कोई हिस्सा; कड़ी चीज़की सामान्य या गहरी चोटसे कट न जाये तो (उससे खून न निकले) उसे "कुचल जाना" कहते हैं। इस दशामें चोटवाली जगहके भीतरकी खून बहानेवाली छोटी-छोटी नाड़ियाँ कटकर खून जम जाता है, इसी वजहसे वह नीली या काली मालूम होने लगती है। भीतर गहरे अंशमें चोट होनेपर उसमें पीव पैदा हो जा सकता है।

चिकित्सा

एक भाग आर्निका θ दस भाग पानीके साथ मिलाकर चोटवाली जगहपर पट्टी लगानेसे फायदा होता है। पट्टीके ऊपर केलेका पत्ता और कपड़ा बाँधना चाहिये। बोखार या शरीरके दूसरे-दूसरे हिस्सोंमें दर्द मालूम होनेपर, आर्निका ३x सेवन करना उचित है। चोटवाली जगहके चारों ओर छोटी-छोटी फुन्सियाँ निकल आयें और वह जगह काली पड़ जाये तो, हैमामेलिस θ एक भाग, छः भाग पानीमें मिलाकर, आर्निकाकी तरह पट्टी लगानी चाहिये। हड्डीमें चोट लगनेपर रूटा १x। स्तन या कोई गांठमें चोट होनेपर कोनायम ३x। पीव होनेकी सम्भावना होनेपर—हिपर-सलफर ३०। सड़ना आरम्भ होनेपर आर्सेनिक ३० या सिलिका ३० देना पड़ता है।

प्रबल उपघात (Shock)।—तेज़ आघात या मानसिक उत्तेजनासे जीवनी-शक्तिके सुस्त पड़ जानेका नाम "प्रबल

उपघात" है। शिकागो अस्त्र चिकित्सक Dr. Howard Crutcher कहते हैं, कि प्रबल उपघातकी तीन प्रधान दवाएँ हैं—कैम्फर, कार्बो-वेजिटेबिलिस और और विरेट्रम-एल्बम। बदन ठण्डा होनेपर—कैम्फर; शरीर नीला होनेपर—कार्बो-वेज और कपालपर ठण्डा पसीना होनेपर—वेरेट्रम-एल्बम फायदा करता है। मिचेल साहबका कथन है, कि हृत्पिण्ड अगर अवसन्न हो जाये, तो वेरेट्रम-एल्ब ३x का प्रयोग करनेसे बहुत फायदा होता है। डाक्टर ह्यूजेज़ कहते हैं, कि उपघातमें अगर स्नायविक उपदाहकी अस्वाभाविक उत्तेजना मालूम हो, तो ऐसी अवस्थामें वेरेट्रम-एल्बकी जगह आर्सेनिक ज्यादा फायदा करता है।

सवारीपर घूमनेके समय कै।—गाड़ी, पालकी, रेल, स्टीमर, नाव वगैरह सवारियोंपर चढ़नेसे किसी-किसीको वेतरह कै होने लगती है। काकुलस ३—२०० इसकी बढ़िया दवा है।

पागल कुत्ता और साँप काटना।—कटी हुई जगहका ऊपरी भाग रस्सीसे बाँध देना चाहिये। इसके बाद जिसके दाँतमें कोई बीमारी न हो, उसे यह स्थान चूस लेना चाहिये और उसी समय कास्टिक या गर्म लोहेसे उस स्थानको जला देना चाहिये या तेज़ छुरीसे उसके अगल-बगलकी जगह काट देनी चाहिये। (ज्यादा इलाजके लिये इसी अध्यायमें बताया "सर्पाघात" देखिये)।

पागल कुत्ता काटनेपर सात दिनोंके भीतर पासवाले डिस्ट्रिक्ट या सबडिविजनल गवर्नमेण्ट डिस्पेन्सरीमें जाकर दो सप्ताहतक रोजाना दो इञ्जेक्सनके हिसाबसे २८ इञ्जेक्सन लेनेपर फिर मृत्यु-भय नहीं रहता। पागल कुत्ता, सियार, बन्दर आदि काट लेनेपर सातसे दस दिनोंके भीतर यदि मृत्यु न हो जाये, तो समझ लेना चाहिये, कि वह जानवर पागल नहीं था।

कीड़े काटना।—भौंरा, बर्रें, बिच्छू, कनखजूरा वगैरह काटनेपर, कटी हुई जगहसे पहले उसका डङ्क छुरीसे निकाल देना चाहिये। इसके बाद स्पिरिट कैम्फर, सरसोंका तेल या केरोसिन तेल या तम्बाकू या हुक्केका पानी या सुंघनी या नमक मिला हुआ पानी या टिञ्चर आयोडिन या एक पियाज पीसकर लगा देना चाहिये।* ज्यादा फूलनेपर एपिस ६ सेवन कराना चाहिये। बिच्छू काटनेपर सूरनका चूर या अरुईके पेड़की बुकनी लगानी चाहिये। मच्छड़, खटमल या कोई विषैला कीड़ा काटनेपर या बहेंरुटी लग जानेपर अगर कोई अङ्ग ज्यादा फूल जाये और वहाँ दर्द रहे, तो उस जगहपर पहले स्पिरिट कैम्फर या नेबूका रस लगाकर घसना चाहिये, इसके बाद चूना गर्मकर लगाना चाहिये और एपिस ६ सेवन कराना चाहिये। मछलीका काँटा गड़कर दर्द

* कैलेण्डुला और लेडमके प्रयोगसे भी लाभ होता है [डाक्टर Anshutz in Hom. Recorder for Aug. 1916 देखिये]।

होनेपर गर्म पानीमें सोरा या नमक मिलाकर चोटवाले स्थानको उसमें डुबो रखनेसे फायदा होता है। मधुमक्खी काटनेकी वजहसे यदि खराबी हो तो कार्बोलिक एसिड ३x—६ सेवन करनेसे तुरन्त फायदा होता है। शरीरके किसी जगह शुयापोका* लगनेपर वहाँ "कान-छिड़ा"† या "मधु" वृक्षके पत्तेका रस‡ निचोड़कर लगा देनेसे फिर कोई खराबी होनेका डर नहीं रहता। यदि यह सब न मिले तो गूलर या अरुईका पत्ता या छुरीसे घसकर वहाँ चूना लगा देना चाहिये। मकड़ा अगर काट ले तो घीमें नमक मिलाकर लगानेसे फायदा होता है। चूहा काट ले तो लेडम ६ अच्छी दवा है। साधारण कुत्तेके काटते ही काटी हुई जगह गर्म पानीसे अच्छी तरह धोकर उस जगहको कास्टिकसे जलाना या पर्माङ्गनेट आव पोटासकी बुकनी छिड़क देनी चाहिये। कुत्ता, सियार वगैरहके काटनेपर लोहेकी किसी चीज़को

---

* शुयापोका लगना बहुत खराब है। इसके लगनेपर कभी-कभी वह अङ्ग फूलकर सड़ने लगता है।

† "कानछिड़ा" वृक्षका दूसरा नाम "ढोला" या "कर्णस्फोटा" है।

‡ मधुका पेड़ बहुत छोटा होता है, दीवारोंपर पैदा होता है। इसका फूल भी बहुत छोटा होता है, पीला रङ्ग देखनेमें कनेरके फूल-जैसा होता है। लड़के इस फूलको चूसकर इसका रस पीते हैं। एक गोरैया शुयापोका खाने बाद ही मधु वृक्षका पत्ता खाती थी। यह देखकर हमारे एक परिचित मनुष्यने उसके पत्तोंका रस काँटेपर ढाल दिया, ढालनेके साथ ही उसके काँटे झड़ गये।

आगमें लालकर दागना और स्ट्रैमोनिया ३x कई बार सेवन करना चाहिये और एक हफ़्ते तक थोड़ा भेलो गुड़ दिनमें तीन बार खिलाना चाहिये। पागल कुत्ता या सियार काटनेपर "जलातङ्क" देखिये।

कँकड़ा या बिच्छू काटनेपर।—यदि कहीं बिच्छूने काटा हो, तो उसके विपरित अङ्गके कानके छेदमें (अर्थात् किसीको दाहिने अङ्गमें काटा हो तो बाएँ कानके छेदमें, बाएँमें काटा हो तो दाहिने कानके छेदमें) थोड़े गर्म पानीमें, कुछ नमक मिलाकर, उसे ४।५ बार डाल देनेसे फायदा होता है। यदि ४।५ बार इस तरह नमकका पानी डालनेपर भी कोई फायदा न होता हो, तो थोड़े गर्म पानीमें साबुनका फेन पैदा कर, उसमें थोड़ी चीनी मिला ४।५ बार उसे कानमें डाल देनेपर सब जलन और तकलीफ़ तुरन्त दूर हो जाती है।

नाक, आँख या कानमें कीड़ा घुसना।—आँखमें राख या धूल पड़नेपर मुलायम कागजकी बत्ती-जैसी बनाकर, उसे गर्म पानीमें डुबो, उससे धूल या राख निकाल लेनी चाहिये। दूसरी आँख रगड़ते रहें। कंकड़, कीड़ा या केश आँखमें गिरनेपर पलकको उलटकर, साफ कपड़ेकी नोकसे उसे बाहर निकाल लेना चाहिये। आँखोंको भूलकर भी रगड़ना न चाहिये। आँखोंमें चूना, कोयला या तम्बाकूकी राख गिरनेपर तुरन्त आँखोंमें दही या २० बून्द विनिगर आध आउन्स गर्म पानीमें मिलाकर आँखें धो डालनी चाहिये।

चूना घुल जानेपर, कैलेण्डुला १० बूंद (न हो तो नेबूका रस) एक छटाँक पानीमें मिलाकर, आँखोंपर पट्टी देनी चाहिये। (खाली पानीसे आँखें न धोयी जायें, आँखें खराब हो सकती हैं), बालू या किसी धातुके कण आँखोंमें गिरनेपर अण्डेका सफेद अंश लगाना पड़ता है। कानमें लकड़ी या चूर जानेपर, थोड़े गर्म पानीकी पिचकारी देनेसे वह निकल जाता है।

कानमें कीड़ा जानेपर, गर्म तेल कानमें डालनेसे कीड़ा मर जाता है। बीया या कोई दूसरी छोटी चीज़ नाक या कानमें जानेपर, बड़ी सावधानतासे चिमटीसे उसे बाहर निकाल लेना चाहिये। ("नाकके छेदमें कीड़ा आदिका घुसना" अनुच्छेद देखिये)। नाक, कान या आँखसे केश वगैरह निकलने बाद यदि आँखें ऐंठती हों तो आर्निका ३ सेवन करना चाहिये।

श्वासरोध।—पानीमें डूबने, फाँसी लगाने या जहरीली भाफ शरीरमें घुसनेपर और पासकी जगहपर बज्रपात होनेसे, एकाएक साँस रुक जाती है।

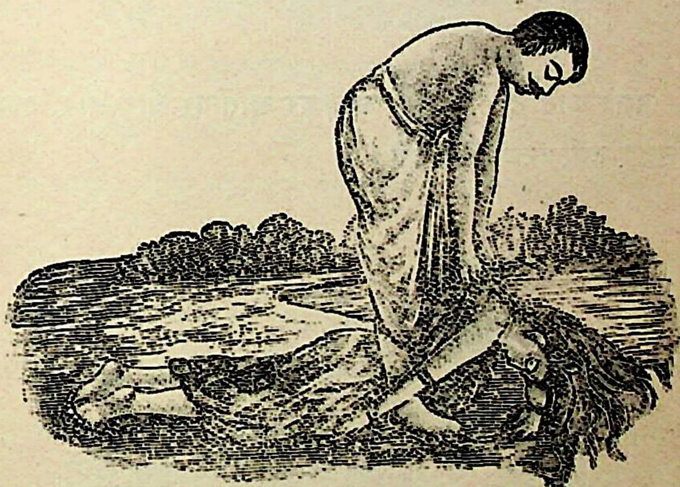
चिकित्सा

(क) पानीमें डूबने या फाँसी लगानेकी वजहसे साँस रुकनेपर :—

मुँह फाड़कर जीभ खींचकर बाहर निकाल देना अत्यन्त आवश्यक है; इसके बाद मुँहके भीतर और नाकके छेदसे लार, श्लेष्मा प्रभृति निकालना होगा।

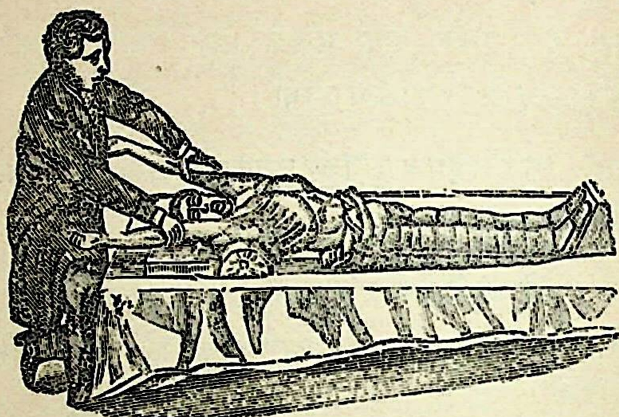
(१) पहने हुए कपड़ोंको उतारकर हाथ-पैरोंमें गर्म-गर्म सेंक देना चाहिये।

(२) फेफड़ेसे पानी निकालनेके लिये, रोगीको पट सुला कर शरीरका बिचला भाग इस तरह ऊँचा कर रखना चाहिये,

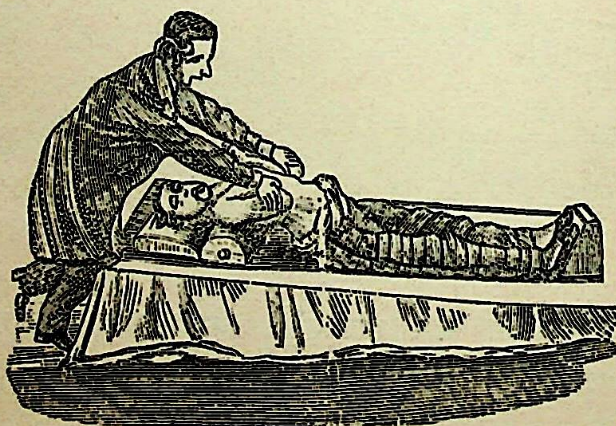


कि सब नीचेकी ओर झूल पड़े। पेट और छातीको हाथसे दबाना चाहिये। इसके बाद—

रोगीको चित्त सुलाकर, दोनों हाथोंसे उसकी दोनों केहुनी ऊपरकी ओर अच्छी तरह पकड़कर, एक बार ऊपर झोंका देकर उठाना चाहिये।



इसके बाद दोनों केहुनी मोड़कर छातीपर धीरे-धीरे, परन्तु कसकर दबा रखनी चाहिये।



कुछ देरतक यह प्रक्रिया करनेपर वह श्वास-क्रिया फिरसे जारी हो सकती है।

३। जीभ खींचकर बाहर निकालने बाद, रोगीके दोनों नाकोंका छेद बन्दकर, उसके मुँहमें कई बार जोरसे फूँकना चाहिये। प्रति मिनट १५-२० बार इस तरह करनेसे साँसकी क्रिया शुरू हो सकती है। ऐसी अवस्थामें ओपियम ३० देना चाहिये (अगर ओपियमसे फायदा न हो, तो ऐण्टिम-टार्ट ३० या लैकेसिस ३० देना चाहिये)।

राय :—सुश्रूषा करनेवालोंको किसी तरह हताश न होना चाहिये। देखा गया है, कि कई घण्टेतक धीरताके साथ रोगीको इस तरह सेवा करनेपर उसकी साँस चलने लगी है।

४। साँस चलने लगे तो रोगीको गर्म बिछावनपर सुलाकर गर्म पानीके साथ दो-एक बून्द शराब पिलाना चाहिये।

(ख) **वज्रपतनसे साँस रुक जानेपर**—हवादार जगहमें बेहोश आदमीको अध-सोयी हालतमें अड़कन लगाकर बैठाना चाहिये और चेहरा, छाती और कन्धोंपर ठण्डे पानीका छींटा देना चाहिये। इसके बाद सूर्यकी ओर उसका मुँह रखकर नयी मिट्टी खोदकर, उस मिट्टीसे (अर्धशायी हालतमें ठेस देकर) सर और चेहरेको छोड़कर समूचा शरीर ढँक देना चाहिये। इस तरह कुछ देर रखनेपर वह होशमें आ सकता है; परन्तु इतना करनेकी भी यदि सुविधा न हो तो बदनपर ठण्डे पानीका छींटा देनेसे ही काम चल सकता है; परन्तु सावधान! लोगोंकी भीड़से हवा बन्द होकर उसके साँस लेने या छोड़नेमें बाधा न पड़ जाये। रोगीमें निगलनेकी ताक़त

जब आ जाये तो उसे नक्स-वोमिका ३० सेवन कराना चाहिये। यदि बिजलीकी चमकसे देखनेकी ताक़त जाती रहे तो, फास्फोरस ३० देना चाहिये।

(ग) सड़ा पाखाना, मोरी वगैरहकी **विषैली भाफ़की** वजहसे साँस बन्द होनेपर, रोगीको तुरन्त खुली हवामें लाकर **पानीमें डूबे हुए मनुष्यकी श्वासरोधवाली रीति** काममें लानी चाहिये। इस प्रक्रियासे यदि फायदा न हो, तो "वज्रपतन श्वासरोध चिकित्सा-प्रणाली" अवलम्बन करनी चाहिये। होशमें आ जानेपर, गाढ़ी काफी पिलाना और माथे तथा छातीपर सिर्का (vinegar) देना चाहिये।

सर्दी-गर्मी—रोगीके कपड़े-लत्ते, ढीलेकर रोगीको छायामें रखना चाहिये। इसके बाद बरफ मिला ठण्डा पानी उसके सरपर डालना चाहिये (ज्यादा चिकित्साके लिये "सर्दी-गर्मी" देखिये)।

बेहोश या मुर्दे जैसा पड़ जाना।—इच्छा-शक्तिकी और मांस-पेशियोंकी सामर्थ्यकी कमीके साथ एकदम या थोड़ी बहुत बेहोशी हो जानेका नाम मूर्च्छा है। शरीरके रस-रक्त आदिका क्षय या स्नायविक दुर्बलताकी वजहसे, मानसिक वृत्तियोंकी (जैसे—हर्ष, शोक, भय आदि) ज्यादती, हिस्टीरिया वगैरह कारणोंसे, "मूर्च्छा" हुआ करती है। ऐसे भी डरपोक मनुष्य हैं, जो खून गिरने या किसीको गहरी चोट लगते या नश्तर लगते देखते ही बेहोश हो जाते हैं।

संक्षिप्त चिकित्सा

(१) बेहोशीके समय—रुबिनीका स्पिरिट कैम्फर (न हो तो खाली कपूर) या मस्कस २x कस्तूरी) सुँघाना और ऐकोनाइट १x सेवन कराना; (२) कमजोरीकी वजहसे होनेपर—चायना ३x—६, आर्स २x, आयोड ६, विरे-विर २x; (३) हृत्पिण्डकी बीमारीकी वजहसे बेहोशीमें—मस्कस ३, डिजि ३, विरे-विर २x (रक्त-सञ्चालन यन्त्रकी बीमारीके अध्यायमें "मूर्च्छा" देखिये); (४) हिस्टीरियाकी वजहसे बेहोशीमें "हिस्टीरिया रोगकी" दवाएँ देखिये।

बेहोश होते ही; पासवाले मनुष्य भी घबड़ाकर नयी आफ़त पैदा कर देते हैं। यदि बेहोशीका कारण न मालूम हो, तो रोगीके बेहोश होते ही उसके गले, छाती और पेटका कपड़ा ढीला कर देना चाहिये और उसी समय उसे इस ढङ्गसे सुला रखना चाहिये कि जिसमें उसका माथा उसके सब बदनसे नीचे झुका रहे (अथवा उसे चित्त सुलाकर) उसके मुँह, माथे, गर्दनसे पीछे और पेटके ऊपर ठण्डा पानीका छींटा देना और हवा करना चाहिये। यदि बेहोशीकी वजह मालूम हो जाये, तो नीचे लिखी दवाएँ लक्षणके अनुसार देना चाहिये।

गहरे मनःकष्टकी वजहसे अगर बेहोशी हो, तो कैमोमिला ६। दुःखको दबा रखनेकी वजहसे बेहोशी होनेपर इग्नेशिया

६। ज्यादा क्रोधको वजहसे बेहोश होनेपर, एकोनाइट ३। भयकी वजहसे बेहोश होनेपर, एकोनाइट ३ या ओपियम ३०। रक्त-क्षयकी वजहसे बेहोश होनेपर, चायना ६। प्रेममें निराशाकी वजहसे मनके आवेगमें मुर्दा जैसा पड़ा रहना, लैकेसिस ६। नींद न आनेकी वजहसे बेहोशी होनेपर, काकुलस ६। दर्दकी वजहसे बेहोशी होनेपर ऐकोनाइट ६, कैमोमिला ६, काफिया ६ या विरेट्रम-ऐल्ब ६, शराब पीने या उग्र दवाएँ सेवन करनेकी वजहसे बेहोशी होनेपर, नक्स-वोमिया १x, ३x। बहुत पारा (mercury) सेवनकी वजहसे बेहोश होनेपर, कार्बो-वेज ३०। बदनमें कुछ दर्द होकर बेहोशी होनेपर इपिकाक ३। सरमें चक्कर आकर बेहोशी होनेपर, कैमोमिला ६ या हिपर ६। गिरनेकी वजहसे बेहोशी होनेपर, आर्निका ३; पर गिरनेके बाद रक्त-स्रावकी वजहसे बेहोशी होनेपर, चायना ६। न खानेकी वजहसे बेहोशी होनेपर, पहले बून्द-बून्द गरम दूध, इसके बाद होशमें आनेपर शोरवा वगैरह दिया जा सकता है। सर्दी या बरफ लगनेकी वजहसे शरीर जकड़ गया हो तो रोगीको खुली ठण्डी जगहमें लाकर खूब ठण्डा पानी या बरफ देकर घसना चाहिये (सावधान, आगसे सेंका न जाये, गर्म करनेसे मृत्यु हो जा सकती है)। बदनके सब अङ्ग-प्रत्यङ्ग नर्म और लाल होनेपर उसे सूखी शय्यापर सुलाकर, ठण्डे फ़्लैनेल या पुराने साफ़ कपड़ोंसे बराबर घसना चाहिये और दस-पन्द्रह मिनट बाद दो-एक बून्द स्पिरिट कैम्फर सेवन कराना चाहिये। होशमें

आनेपर, कार्बो-वेज ३०, आर्स ३० या ऐकोन ३x सेवन कराना चाहिये। मनकी किसी तेज वृत्तिके आवेगकी वजहसे एकाएक बेहोशी हो जानेपर, यदि चेहरा पीला दिखाई दे, तो एपिस ६, या ग्लोनोयन ६ सेवन कराना होगा। बच्चोंकी क्रिमिकी वजहसे पैदा हुई बेहोशीमें, साइना २x-२०० वगैरह दवा देनी चाहिये।

सावधान, अगर बेहोशी दूर होने बाद कै आरम्भ हो, तो उसे रोकनेके लिये कोई दवा न दी जाये या रोगीको नींद आ जानेपर उसे जगाया न जाये। "स्नायुमण्डलके रोग" और "मूर्च्छा" (fainting) देखिये।

जहर खाना।—यह मालूम होते ही, कि ज़हर खाया है, तुरन्त डाक्टरको दिखाना चाहिये। इस बीचमें, रोगीको कै कराकर पेटसे ज़हर निकाल देनेकी कोशिश करनी चाहिये। नीचे लिखी पाँच दवाओंमेंसे कोई भी एक खिलाकर कै करायी जा सकती है।

(१) गलेमें अंगुली या पर द्वारा।

(२) पावभर गर्म पानीमें दो चम्मच नमक (या एक चम्मच सरसोंका चूर) मिलाकर उसे पिलाना।

(३) चोयटे धोये पानीको पिलाना।

(४) अण्डेका सफेद अंश गर्म दूधके साथ पिलाना।

(५) पाँच-सात ग्रेन तूतिया (या तीस ग्रेन चूर्ण इपिकाक या तीस ग्रेन सल्फेट आफ जिङ्क) गुनगुने पानीमें घोलकर पिलाना चाहिये।

कैके साथ ज़हर निकल जानेपर उस विषका प्रतिविष (उल्टा ज़हर) कुछ दिनोंतक सेवन कराना चाहिये। प्रचलित बारह तरहके विषका प्रतिविष नीचे लिखा जाता है।

विष	प्रतिविष
एसिड (नाइट्रिक वगैरह)	चूर्ण चायखड़ी गर्म पानीके साथ
सुरा (अलकोहल)	दूध, काली काफी
सङ्खिया (आर्सेनिक)	इपिकाक, वेरेट्रम
तूतिया वगैरह ताँबा मिली दवा, सेंदुर, रस कपूर पारा वगैरहसे बनी दवा	दूध, चीनीका शरबत, अण्डेका सफेद अंश
तारपीनका तेल (turpentine) जमालगोटेका तेल (croton oil)	बार्ली, आरारोट वगैरह पतली चीजें।

सीसा (lead)—ओपियम, दूध, अण्डेका सफेद अंश या सावुनका फेन।

अफीम……बेल θ, गाढ़ी काफी या पानी मिला सिरका।

धतूरा……काफी, सिरका या लेमनेड।

तम्बाकू……इपिकाक या सिरका।

कपूर……काली काफी या ओपियम ३x।

जहरकी मात्रामें अफीम।—आजकल इस देशमें अफीम आत्महत्याके काममें आती है, इसलिये, यह विषय अलग लिखना पड़ा है। पहले "ज़हर खाना" प्रकरणमें लिखी हुई रीतिसे कै कराकर पेटसे ज़हर निकाल देना

चाहिये। ज़हर निकल जानेपर दस बून्द बेलेडोना θ आध घण्टेका अन्तर देकर सेवन कराना चाहिये। इसके बाद गाढ़ी काफी या पानीके साथ सिरका (vinegar) पिलाना उचित है। इतनी देरतक रोगीको कभी सोने न देना चाहिये। पीठपर मारकर उसे घर भर दौड़ाना चाहिये। जरूरत पड़नेपर "पानीमें डूबकर श्वास रोध" वाला इलाज करनेका ढङ्ग काममें लाना चाहिये।

गलेमें मछलीका काँटा वगैरह अटकना।—मछलीका धारदार काँटा या लकड़ीकी सींक गलेमें अड़ जानेपर रोटी, भात, केला वगैरह कड़ी चीज निगलनेके साथ वह भी नीचे उतर जा सकती है। मांसका टुकड़ा या कोई दूसरी बड़ी, पर नर्म चीज़ गलेमें अटकनेपर गलेमें उङ्गली डालकर ठेल देनेसे, वह पेटमें उतर जाती है, खुरखुरी या कड़ी चीज़ गलेमें अटकनेपर, गलेमें उङ्गली डालकर कै करनेसे वह मुँहकी राहसे बाहर निकल जाती है। छोटी चिमटीसे भी निकाली जा सकती है। ज़रूरत पड़नेपर नश्तर लगानेवालेकी सहायता लेनी चाहिये।

मछलीका जहर (Fish Poison)।—किसी-किसी मछलीको खानेपर, शरीरमें ज़हरकी हरकत मालूम होती है। थोड़े हलके ज़हरके लक्षणमें—लकड़ीका कोयला पीसकर भेली गुड़के साथ खाना या चीनीका गाढ़ा शरबत पीना या काली काफी अथवा बराबरके मिकदारमें पानीके साथ

विनिगर पीना फायदा करता है। परन्तु शरीर लाल, चेहरा और दोनों हाथ फूले, गलेमें जखम वगैरह तेज़ लक्षणोंमें बेल २x या कैप्सिकम ३x देना चाहिये।

बीमारी लानेवाली मक्खी या मच्छड़का उपद्रव बन्द करना।—टटका ताज़ा पाइरेथ्रम चूर्ण (Pyrethrum powder) कमरेमें रख* देनेपर या जिस दूधमें सैंकड़े पन्द्रह भाग फार्मालिन (formalin) है, उसके साथ क्रेसोल (Cressol) मिलाकर घरमें धुआँ देनेपर, घरमें मच्छड़ और मक्खी नहीं रहती। [The address of Genl. Vaillard, President of the Health Board of the French Army, to the Royal society of Medicine in London, summarised in the Indian Daily News Dated Feb. 1. 1915 देखिये]।

झींगुर या तेलचट्टा वगैरहका उपद्रव रोकना

Dr. Paul (Australian Qurantine officer) ने अभी हालमें घोषणा की है, कि पेटारा, संदूक, दराज प्रभृति ढँकने-दार चीजोंमें एप्सम साल्ट (Epsom Salts) का पानी सींचने अर्थात् छिड़कनेपर झींगुर प्रभृति तथा अन्यान्य अनिष्ट करनेवाले कीड़ोंका उपद्रव दूर हो जाता है। जिस कोठरीमें

---

* अमेरिकन लोग पाइरेथ्रम चूर्णको कमरेमें सुलगा देते हैं। इससे अधिक धुआँ निकलनेपर मच्छड़ और मक्खी नष्ट हो जाते हैं। दस वर्ग-फुटके कमरेके लिये एक पाव पाउडरकी जरूरत पड़ती है।

तेलचट्टे या झींगुरोंका उपद्रव अधिक हो, वहाँ सोहागाकी बुकनी छिड़क देनेपर, दो-तीन दिनोंमें वह कोठरी तेलचट्टेसे रहित हो जाती है।

दीमक प्रभृति कीड़ोंका उपद्रव रोकना।—विनिगर १ पाइण्ट, क्रियोजोट ८ आउन्स, एक साथ मिलाकर उसमें ४ गैलन पानी मिलाकर जिसमें लगा दिया जाता है, वहाँ दीमक कीड़े वगैरह पास नहीं फटकते।

सर्पाघात।—साँप काटते ही काटी हुई जगहके कुछ ऊपर तुरन्त खूब कसकर एकके ऊपर एक तीन जगह बाँध देना चाहिये। बन्धन इतना कसा होना चाहिये, कि खूनका दौरान बन्द हो जाये। (अर्थात् बन्धनके नीचे नाड़ीकी चाल मालूम न हो, इसके बाद छुरी या किसी तेज़ शस्त्रसे जहाँ-जहाँ दाँतका दाग पड़ा हो, वहाँ दो इञ्च लम्बा और आध इञ्च गहरा नश्तर लगाकर अंगुलीसे उसे चीरकर फाँक कर देना चाहिये। अगर वहाँ ज़हर होगा तो लाल पानीकी तरह एक पतली चीज़ निकलेगी। ज्यादा खून निकलनेपर दोनों ओर धीरे-धीरे दबानेसे खून बन्द हो जायेगा)। इसके बाद १ ग्रेन पर्माङ्गनेट आव पोटास थोड़े पानी या थूकमें घोलकर उस काटी हुई जगहपर अच्छी तरह घसना चाहिये। इस तरह कुछ देर घसनेसे वह जगह काली हो जायगी। इसके बाद काटी हुई जगहपर अच्छी तरह कपड़ेकी तही रखकर बाँध देना चाहिये और ऊपरके तीनों बन्धन खोल देने

चाहियें। रोगीको इस तरह ठेस देकर बैठाना चाहिये, कि वह सो न जाये। साँप काटनेके बाद इस ढङ्गसे काम करनेपर जान बच जा सकती है। थोड़ा पर्माङ्गनेट आव पोटास घर-घरमें रखना चाहिये।

नीचे लिखी चार तरकीबोंकी परीक्षा भी करनी चाहिये :—

१। जखमवाली जगहके ऊपर नमककी पोटलीसे सेंकना या गरम पानीसे सींचनेसे खून निकलता रहेगा। जबतक साफ़ लाल खून न निकले, तबतक यह क्रिया बन्द न करनी चाहिये।

२। जैतूनका तेल खिलाने और लगानेसे भी फायदा हो सकता है।

३। मेदनीपुर जिलेके भीतर हिजली कांथी महकमेके बङ्गोपसागरके पासकी बलुही जमीनमें एक तरहका बादाम पैदा होता है। इसके पके फलके बीजका सार अंश सर्वसाधारणके काममें आता है और उसके छिलकेका रस रेड़ीके तेलकी तरह जलानेके काममें आता है। इसके अलावा यह फल साँप काटनेकी एक बढ़िया दवा मानी जाती है। इस फलका सार आध पावके अन्दाज किसी साँप काटे हुए आदमीको खिला देनेसे वह तुरन्त अच्छा हो जा सकता है।

४। केलेके पेड़ या तुलसीके पत्तेका रस पिलाना।

५। **माल वैद्यकी मतसे चिकित्सा।**—शरीरमें ज़हर घुस जानेपर, एक तरहकी लार पैदा होती है और मुँहसे

फ़ेन आने लगता है। जब इस लार या फ़ेनसे साँस बन्द होती है, तभी मौत होती है। लार पैदा होते ही चीथड़ा या हाथ डालकर उसे निकाल देना चाहिये। थोड़ा-थोड़ा गर्म पानी पिलाने या गलेमें गरम पानीका सेंक देने या मुँहसे गरम पानीकी भाफ़ खींचते रहनेसे गलेकी नली साफ रहती है। इससे भी यदि लार रह जाये, तो इमली, तूतिया या चोयटेका पानी पिलाकर कै करना चाहिये। माल वैद्योंका कहना है, कि इमली, अमलतास या नेबू वगैरह सेवन करानेपर, विषकी मारनेवाली ताक़त कम हो जाती है।

रोगीके जीनेकी उम्मीद न रहनेपर "जलसार" से फ़ायदा हो सकता है। पानी थोड़ा गर्मकर रोगीको बैठाकर चार-पाँच हाथ ऊँचाईसे ४०-५० घड़ा पानी शरीरपर (जबतक कँपकँपी न पैदा हो जाये लगातार ढालते रहनेका नाम जलसार है) जबतक रोगीका शरीर एकदम निर्दोष न हो जाये, तबतक पानी ढालना बन्द न करना चाहिये।

रोगी सोने न पाये, इसपर खूब सावधानतासे नज़र रखनी चाहिये।

६। किसी घोड़ेको विषैले साँपसे कटवाकर उसका खून किसी साँपके काटे हुए मनुष्यके (काटने बाद एक घण्टेके समयके भीतर) शरीरमें खूनके साथ मिला देनेपर साँपका ज़हर नष्ट हो जाता है। आजकलके नये चिकित्सकोंके मतसे साँप काटनेकी यही अचूक दवा है। (The Indian and

Eastern Druggists for Dec. 1922 पृष्ठ २९९ देखिये।)

भङ्ग या स्थानच्युति

(Fractures and Dislocations)

कुछ आवश्यक जानने योग्य बातें।—चोट आदिकी वजहसे रोगी कुछ देरतक बेहोश मुर्देकी तरह अवस्थामें पड़ा रह सकता है। इस अवस्थामें यदि उसकी उपयुक्त सेवा-सुश्रूषा होती है, तो ज्ञान लौट आता है। इसीलिये ऐसी आकस्मिक विपत्तिके अवसरपर यह जाननेके लिये समय नष्ट करना, कि जिसे चोट लगी है, वह मृत है या जीवित—यह बिलकुल ही वृथा है। ऐसा करना कदापि उचित नहीं है; क्योंकि बहुत बार निपुण चिकित्सकोंको भी रोगी जीता है या मर गया, यह निर्णय करना कठिन हो जाता है।

एकाएक चोट लगनेपर खून निकलनेकी ही अधिक सम्भावना रहती है। बहुत ज्यादा खून निकल जानेके कारण सहजमें ही मृत्यु हो जाती है, इसलिये सबसे पहले रक्त-स्राव रोकनेकी ही चेष्टा करनी चाहिये, इसके बाद अन्य कार्यों पर ध्यान देना चाहिये। जिस स्थानपर जखम हो गया हो, सबसे पहले उस जगहको साफ़ कपड़ा या बोरिक काटन या पट्टीसे

ढँक देना चाहिये, जिससे उसमें दूषित जीवाणु प्रवेश न कर जायें।

इसके बाद पासके किसी निपुण चिकित्सककी सहायताके लिये बुला भेजना चाहिये। यदि चिकित्सककी सहायता मिलनेमें विलम्ब हो, तो स्वयं ही रोगीकी सेवा करनी चाहिये।

यदि रोगी बेहोश न हो जाये, तो उसे यथेष्ट उत्साहित करते रहना चाहिये और तुरन्त ही पासके किसी सुविधाजनक तथा आराम मिलनेवाले स्थानमें ले जाना चाहिये। यदि एक हाथ टूट गया हो, तो सहायता करनेवालेको उसके स्वस्थ हाथकी ओर खड़े होकर उसके अच्छे हाथको अपने कन्धे पर रख और दूसरे हाथसे रोगीकी कमर पकड़कर रोगीको लकड़ीपर भार देकर चलनेका उपदेश दिया जा सकता है।

पैरमें चोट लगनेपर रोगीको चलने देना उचित नहीं है, इससे नुकसान पहुँच सकता है। ऐसी अवस्थामें दो आदमियोंको आमने-सामने खड़े होकर एकका दाहिना हाथ दूसरेके बायें हाथमें देकर—कसकर पकड़, इसी स्थानपर रोगीको बैठाना चाहिये और रोगीके दोनों हाथ दोनों सहायता करनेवालोंके कन्धे पर रख, अनायास ही उसको उठाकर दूसरे स्थानमें ले जाया जा सकता है। घुटना या उरुके नीचेकी जगहपर चोट लगनेपर, एक सहायक रोगीके दोनों उरुके बीचमें हाथ दे, रोगीके पीछे खड़ा हो जाये और दूसरा सहायक रोगीकी पीठ अपनी छातीपर रखकर एक स्थानसे दूसरे स्थानमें ले जा सकता है।

बेहोश रोगीको या जिन रोगियोंके कमर और उसके ऊपरी प्रदेश और माथेमें चोट आ गई हो, उसे यदि एक स्थानसे दूसरी जगह हटाना हो, तो ४-५ हाथ लम्बे कड़े बाँस या तख़्तेमें १ से २ हाथतक चौड़े कई बाँस बाँध, एक सीढ़ीकी तरह बनाकर या पासके किसी मकानसे एक सीढ़ी मांग, उसपर एक तोशक बिछाकर, उसपर रोगीको लम्बे-लम्ब सुला देना चाहिये। इस तरह उसे बिना तकलीफ़के इच्छित स्थानपर ले जाया जा सकता है। यदि गद्दी न मिले, तो केवल सीढ़ीपर या यदि सीढ़ी न मिले, तो एक तख्तपर सुलाकर उसे ले जाया जा सकता है। यदि यह सब कोई प्रबन्ध न हो सके और न सम्भव हो तथा रोगीका कोई अनिष्ट होता न दिखाई दे या सुश्रूषा करनेवाला अकेला हो, तो रोगीको अपनी पीठपर लाद, उसके दोनों हाथ कन्धेके ऊपरसे सामनेकी ओर ला, जरा ऊँचा होकर, चलता हुआ, रोगीको दूसरी जगहपर ले जा सकता है। यदि सेवा करनेवाले दो हों, तो एक-एक दोनों बगलमें बैठ, दोनोंको बायाँ हाथ रोगीकी कमरके नीचे लगाकर, दोनों हाथसे मुट्ठी बाँधकर पकड़ लेना होगा और एकका दाहिना हाथ रोगीके पैरकी ओर तथा दूसरेका दाहिना हाथ माथेकी ओर रखकर रोगीको स्थानान्तरित किया जा सकता है।

यदि रोगीके सारे शरीरमें बहुत अधिक चोट लग गयी हो तथा सीढ़ी, झूला या चौकी न मिले, तो पासकी किसी जगहसे दो ६ हाथ लम्बे बाँस या काठ, यह भी मिलना सम्भव न हो, तो एक ही बाँस या लकड़ी संग्रहकर, रोगीको इस बाँस या

लकड़ीसे वस्त्र द्वारा बाँधकर हटाया जा सकता है। वस्त्रकी कमी हो, तो शुश्रूषाकारीकी धोती या कपड़ा फाड़कर भी यह काम हो सकता है।

आकस्मिक चोट आदिके समय शुश्रूषाकारीका प्रधान कर्त्तव्य है, तेज़ीसे काम करना और घबड़ा न उठना। यदि शुश्रूषा करनेवाला स्वयं ही घबड़ा उठेगा, तो कोई भी काम न हो सकेगा। अण्ट-सण्ट काम या हो-हल्ला करनेसे रोगीको नुकसानके सिवा लाभ न होगा। इससे रोगीका बहुत अनिष्ट होता है।

यदि रोगी बेहोश न हो जाये, तो उसे धीरे-धीरे एक प्याला गर्म चाय या गर्म दूध या थोड़ा सुरासार पानीमें मिलाकर सेवन करा देना चाहिये। इससे रोगीको तकलीफ़ घट जाती है और प्रतिरोध करनेकी शक्ति बढ़ती है।

अज्ञान हो जानेपर आँख, मुँहपर पानीका छींटा, सरपर पंखेकी हवा और सम्भव हो, तो स्मेलिङ्ग साल्ट या ऐमोनिया सुँघाकर होशमें लानेकी चेष्टा करनी चाहिये। अज्ञान या सज्ञान किसी भी अवस्थामें रोगीके चारों ओर निरर्थक भीड़ न लगने देनी चाहिये। भीड़ हो जानेपर आदमियोंसे सहायता तो मिलती नहीं, बल्कि उसके बदले नाना प्रकारकी राय देकर लोग रोगी और शुश्रूषा करनेवालेको नाना प्रकारका उपदेश देते और घबड़ा देते हैं।

अङ्ग-भङ्ग

(Fractures)

यदि चोट लगनेकी वजहसे हाथ-पैरकी अंगुलियाँ टूट जायें अथवा उस स्थानका चमड़ा कटकर खून निकलने लगे, तो पहले थोड़ा गर्म पानी, वह न मिलनेपर ठण्डे पानीके साथ कैलेण्डुलाका अर्क मिलाकर, एक टुकड़ा साफ़ कपड़ा या रूई रखकर वह स्थान धीरे-धीरे धो डालना चाहिये। इसके बाद उस व्यक्तिके अनुरूप अङ्गके साथ या दूसरे व्यक्तिके अनुरूप अङ्गके साथ तुलनाकर देखना होगा, कि इस स्थानकी हड्डी टूटी है या नहीं अथवा दूसरे अङ्गके साथ असामञ्जस्य, उत्ताप, हिलाने-डोलानेमें दर्द इत्यादिके द्वारा अस्थि-भङ्गका अनुमान लगाना पड़ता है। बरफ या ठण्डे पानीकी पट्टी देनेपर रक्त-स्राव होना शीघ्र ही बन्द हो जाता है और प्रदाह भी बन्द हो जाता है। घावको साफ़कर, छोटी अंगुली होनेपर, उसपर थोड़ी रूई लगाकर आध इञ्चसे १ इञ्चतक चौड़ा साफ़ कपड़ा लपेटकर बैण्डेज बाँध देना चाहिये। यदि अंगुली बड़ी हो, तो जरूरतके मुताबिक २ इञ्चसे ४ इञ्चतक लम्बा और आधा इञ्च चौड़ा दो बाँस या काठके चिपटे टुकड़े अंगुलीके ऊपर और नीचे देकर, थोड़ी रूई लगाकर १ से ३ इञ्च चौड़े कपड़ेसे बाँध देना चाहिये। इस काठ या बाँसको कुछ रूई रखकर बाँधना चाहिये। यदि बाँस या काठका टुकड़ा न मिले, तो जरूरतके अनुसार क़लमका हैण्डल काटकर भी लगाया जा सकता है।

इसी तरह हाथ या पैरकी लम्बी हड्डी टूट जानेपर ऊपर लिखे नियमसे धोकर उसी तरह काठ या बाँसका उसी मापका टुकड़ा ऊपर-नीचे या दोनों बगलमें कुछ रूई रख, उसपर काठकी पट्टी रखकर २ से ४ इञ्चतक चौड़े और ८-१० हाथ लम्बे कपड़ेसे लपेटकर बाँध देना चाहिये। रूई देनेका यही उद्देश्य है, कि उसके दबावसे रोगी अङ्गमें कष्ट न पहुँचे।

यदि चोटवाली जगहसे बहुत अधिक खून बहता हो, तो उस स्थानके ऊपरी भागमें तुरन्त एक डोरी या जूतेका फीता या धोती अथवा साड़ीका किनारा लेकर कसकर बाँध देना चाहिये। यदि डोरी वगैरह मिलनेमें देर हो, तो उस स्थानसे कुछ ऊपर दोनों हाथोंसे जोरसे कसकर दबा रखना चाहिये। इससे धमनीमें दबाव पड़कर रक्त-स्राव बन्द हो जाता है।

यदि हड्डी टूटकर बाहर निकल पड़े, तो जरा बुद्धि लगाकर, टूटे स्थानको दोनों ओरसे खींचकर, इन दोनों टटे स्थानोंको मिला देनेकी चेष्टा करनी चाहिये। यदि इस कामके सम्बन्धमें जानकारी न रहे, तो वृथा खींच-तानकर रोगीको तकलीफ़ न देनी चाहिये। हड्डियोंको खासकर टूटी हड्डियोंको मिलाते समय इस बातपर ख़याल रखना चाहिये, कि उनके बीचमें मांसका अंश न रह जाये, नहीं तो जोड़ न मिलेगा। इस तरह दोनों हड्डियोंको मिला देने बाद काठकी पट्टी रखकर ऊपरसे बाँध देना चाहिये। बाँधनेका नियम ऊपर बताया जा चुका है।

यदि मेरुदण्डमें चोट लगे और वह टूट जाये, तो इसी तरह काठको पट्टी रखकर बाँध देना चाहिये। पंजरे या पसलीकी हड्डी टूटनेपर इस तरह काठकी पट्टी रखकर बाँधा नहीं जाता है, बल्कि प्लैस्टर आफ पेरिस (Plaster of Paris—फीतेमें एक ओर गोंद लगा हुआ) लगाकर बाँधा जाता है। यह प्लैस्टर आफ पेरिस दवाखानोंमें मिलता है।

माथेमें चोट लगनेपर मस्तककी हड्डी यदि टूट जाये, तो तुरन्त माथेमें बरफ रखकर रक्त आना रोक देना चाहिये। यदि बरफ न मिले, तो कपड़ेकी तही बना उसको कैलेण्डुला लोशनसे तर कर, टूटी जगहपर रख, उसपर रूई दे लम्बी पट्टीसे बाँध देना चाहिये।

इस तरहकी चोटमें रोगीको हानि हो सकती है। शिक्षित चिकित्सकोंको भी अभ्यास न रहनेपर इस कार्यमें बहुत सोच-विचारकर काम करना पड़ता है। इसलिये रोगीकी चिकित्साका भार ग्रहणकर रोगीके जीवनको अधिकतर खतरेमें डालना उचित नहीं है; परन्तु यदि सुचिकित्सक न मिले तो बाध्य होकर करना ही पड़ता है, पर जहाँतक सम्भव हो, तुरन्त निकटवर्ती सुचिकित्सककी सहायता लेनी चाहिये और जबतक रोगीको सुचिकित्सककी सहायता न मिले, तबतक ऊपर बतलाये ढङ्गसे रोगीकी सहायता करनी चाहिये।

हाथ-पैर टूटकर यदि रक्त-स्राव हो, तो इस रक्त-स्रावको रोकनेका एक उपाय है—भग्न स्थानपर एक रूमाल ढीलाकर बाँध देना और उसके भीतर एक पतली लकड़ी या बाँसका

टुकड़ा घुसाकर घुमाना। इससे रूमालका घेरा छोटा होता जायगा और उस टूटे अंशपर दबाव पड़ेगा। इस तरह वहाँकी धमनीपर दबाव पड़कर रक्त-स्राव बन्द हो जाता है।

हड्डी खिसकना

(Dislocation)

वयो-वृद्धोंकी अपेक्षा बालक और शिशुओंकी हड्डी ही विशेषकर अपने स्थानसे खिसकती है। इसके अलावा निम्नाङ्ग की अपेक्षा उर्द्धाङ्गकी हड्डी ही विशेष हटती है। जवानोंकी तथा निम्नाङ्गकी हड्डी जल्द अपनी जगह नहीं छोड़ती; पर यदि ऐसा हो जाता है अर्थात् जवानोंकी और निम्नाङ्गकी हड्डोकी स्थान च्युति हो जाती है, तो विशेष तकलीफ़ होती है। शिशु और उर्द्धाङ्गकी हड्डी जल्दी बैठ जाती है। अस्थि-च्युति या हड्डी खिसक जानेपर वह अङ्ग टेढ़ा हो जाता है और हिलानेपर असुविधा होती है।

जबड़े अटकना।—जोरसे गाते, चबाते-चबाते, उछल-कूदके समय या जोरसे चिल्लानेपर ऐसा हो जाता है, कि जबड़े अटक जाते हैं, टेढ़े हो जाते हैं, रोगी मुँह फाड़े रह जाता है। हाथमें तौलिया या कपड़ा लपेटकर (नहीं तो दाँत लग जानेका भय रहता है), मुँहमें हाथ घुसा, निचला

जबड़ा नीचेकी ओर और पीछेकी ओर ठेल देनेपर यह ठीक हो जाता है।

गलेकी हड्डी खिसकना।—एक हाथसे हड्डीके ऊपर हलका दबाव देने और दूसरे हाथसे, उस पार्श्ववाले हड्डीपरके हाथको पीछेकी ओर ठेलनेसे गलेकी हड्डी बैठ जाती है। उछलना, एकाएक हाथ ऊँचे उठाना इत्यादि कारणोंसे ऐसा होता है।

भुजाकी हड्डी (Humerus) यदि स्कन्ध सन्धिसे हट जाय तो हसली या कन्धास्थि एक हाथसे अपनी जगहपर दबा रखकर बाहु माथेसे उठानेसे यह हाड़ स्कन्ध-सन्धिमें बैठ जाता है। दूसरी ओरकी हड्डीसे तुलना करनेपर ही मालूम हो जायगा कि ठीक-ठीक बैठा या नहीं।

कोहनीकी हड्डी खिसक जाना।—ऐसा अकसर ही हुआ करता है। युवकोंको अधिक होता है और बाहुकी हड्डी कोहनीके पीछेकी ओरसे बाहर निकलना चाहती है। अन्य हड्डियोंसे तुलना करनेपर इसका सहजमें ही निर्वाचन हो सकता है। रोगीको एक कुरसीपर बैठाकर सुश्रूषाकारी या चिकित्सकको रोगीकी कुर्सीपर पैर रखकर खड़े रहना पड़ता है। चिकित्सकका घुटना रोगीको जांघपर रखकर बाहुको पकड़कर खींचनेसे वह खिसकी हड्डी अपनी जगहपर बैठ जाती है।

यदि अंगुलीकी हड्डी खिसक जाये तो कलाईको एक हाथसे पकड़कर दूसरे हाथसे अंगुलीको पकड़कर खींचना

पड़ता है। इस तरह करनेपर हड्डी अपनी जगहपर आ बैठती है। इसके बाद जब अंगुली अपनी जगहपर बैठ जाये, तब एक लकड़ीकी पट्टी-सी देकर बाँध देना चाहिये।

ऊरुकी अस्थि (Femer) यदि अपनी जगहसे हट जाय तो रोगी अपना पैर जमीनपर नहीं रख सकता। टेढ़ा बना रहता है और वह पैर कुछ छोटा हो जाता है। इस अवस्थामें रोगीको जमीन या बिछावनपर सुलाये रखना पड़ता है। यदि हड्डी खिसककर सामनेकी ओर आ जाये तो पैरको पहले बाहरकी ओर घूमाकर पीछे खींचना चाहिये। इसके बाद भीतरकी ओर घुमाकार पैर सीधा करना पड़ता है। हड्डी खिसककर पीछेकी ओर हट जानेपर पहले पैर भीतरकी ओर घुमाना और खींचना पड़ता है, इसके बाद बाहरको ओर घुमाकर सीधा करना पड़ता है।

घुटना हट जाना।—रोगीको सुलाकर एक आदमीको उसे कसकर पकड़ रखना चाहिये। इसके बाद दूसरा आदमी उस विक्षत अङ्गको पकड़कर खींचे, इससे हड्डी अपनी जगहपर बैठ जायगी।

तृतीय अध्याय

स्त्री-रोग

भूमिका

औरतोंकी बीमारीका इलाज करनेके पहले पाठकोंको औरतोंकी जननेन्द्रियके सम्बन्धमें नीचे लिखी बातें याद रखनी चाहियें :—

(१) औरतोंके तलपेटमें मूत्राधार और मल-भाण्डके बीचकी जगहको "जरायु" (uterus) कहते हैं। जरायुका दूसरा नाम नाड़ी है। इसे गर्भाशय भी कहते हैं। यह एक खाली थैली-जैसी चीज़ है। शकल अमरूद या नाशपातीकी तरह समझनी चाहिये। इसी जरायुके गह्वरमें भ्रूण नौ महीनेतक रहता है। यह रबरकी तरह बढ़ और सिकुड़ सकता है। इसलिये गर्भावस्थामें इसके भीतर लड़का जब बढ़ता है, तब यह बड़ा होता जाता है और लड़का पैदा हो जानेपर सिकुड़कर यह पहले-जैसी शकलमें ही हो जाता है। इसके ऊपरी भागको "जरायु-मूल" (fundus) कहते हैं। निचला भाग बहुत कुछ पतला होता है, इसे "जरायु-ग्रीवा"

(cervix) कहते हैं। जरायु-ग्रीवामें एक छेद है, उसका नाम "जरायु-मुख" (os) है। लगभग तीन इञ्च लम्बी एक टेढ़ी सुरङ्ग जरायु-ग्रीवाकी चारों ओर जुड़ी हुई है, इसे "योनि-पथ" (vagina) कहते हैं। (आरम्भिक भाग— "मानव-शरीरकी रचना" देखिये)।

(२) जरायुके दोनों बगलमें एक इञ्च लम्बे बादामकी शकलके दो यन्त्र हैं, उन्हें "डिम्बकोष"* (ovaries) कहते हैं। हरएक डिम्बकोषमें सरसोंकी तरहके बहुत छोटे-छोटे दस-बीस "डिम्ब (ovum)" रहते हैं।

(३) जरायुकी जड़में दोनों ओर दो नल (तीन इञ्च लम्बे) लगे हैं, जो फैलकर जरायुके साथ डिम्बकोषको मिला देते हैं, इसको "कालल-नल (Fallopian Tubes)" या "स्त्री-वीर्य-वाही-नल" अथवा "डिम्ब-प्रणाली" कहते हैं। (ज्यादा हालके लिये हमारा प्रकाशित "नरदेह परिचय" देखिये)।

ऋतु ।—औरतोंकी जवानीमें जब सब इन्द्रियाँ पुष्ट हो जाया करती हैं, उस समय डिम्बकोषसे डिम्ब निकला करता है। उस समय डिम्बकोष, कालल-नल और जरायुमें ज्यादा खून पैदा होकर उससे रज निकलता है। इसीको "ऋतु" कहते हैं। इसका नाम "स्त्री-धर्म" या "मासिक ऋतु-स्राव" है। चौदह वर्षसे पैंतालिस वर्षकी उम्रतक औरतोंको चान्द्र मासके अन्तमें (अर्थात् २८ दिनका अन्तर देकर) ऋतु

* इसका दूसरा नाम "डिम्बाशय" या डिम्बाधार" है।

हुआ करता है। हमारे मुँहमें जिस तरह लाल कोमल चमड़ा है, ठीक उसी तरहका लाल रङ्गका चमड़ा जरायुके भीतर भी मौजूद रहता है। लगभग २८ दिनोंमें जरायुके इस चमड़ेकी खाल बदल जाया करती है। हर बार यह खाल बदलनेके बाद साधारणतः चार दिनोंतक जरायुसे आर्त्तव या खून निकला करता है। इसे ही "ऋतु" (menstruation) या "महीना होना" कहते हैं। ऋतुकालमें (या ऋतु-मती होनेके कुछ पहले) होमियोपैथिक दवाका सेवन करना मना है। ऋतु-कालमें नहाना और स्वामी-सङ्ग भी मना है।

गर्भ-सञ्चार।—आजकलके नये पाश्चात्य शरीर-विधानके जानकार कहते हैं, कि खूनका सार-भाग ही "वीर्य" की शकलमें बदल जाया करता है।* स्त्री-वीर्य (डिम्ब) जब डिम्बकोषमें रहता है, पुरुष-वीर्य "(रेतः—semen)" उसी तरह मुष्क (testes) में रहता है।

* आयुर्वेदके मतसे खाया हुआ पदार्थ अच्छी तरह पच जानेपर उसीसे जो सार पदार्थ पैदा होता है, उसका नाम "रस" है। इस रससे खून, खूनसे मांस, मांससे मेद, मेदसे अस्थि, अस्थिसे मज्जा और मज्जासे "शुक्र" पैदा होता है। स्थूल भाग "रस" एक महीनेमें पुरुष-वीर्य या शुक्रके रूपमें और स्त्रियोंका "रज" और स्त्री-वीर्य या शुक्रके रूपमें बदला करता है। (आयुर्वेद-संग्रह पृष्ठ ५०—५६ देखिये) यह वीर्य (या शुक्र) रोकने (न निकलने देने) का नाम ब्रह्मचर्य है।

पुरुषोंके वीर्यमें खूब पतला और लम्बा, एक तरहका कीड़ा रहता है, उसे "शुक्र-कीट" (spermatozoa) कहते हैं। औरतोंका "पका हुआ डिम्ब" और पुरुषोंका "सतेज़ शुक्र-कीट" इन दोनोंके संयोगसे ही गर्भ रहता है; परन्तु कभी-कभी ऋतुके दस-पन्द्रह दिन बाद भी गर्भ रह जाया करता है। स्त्री और पुरुषके सङ्गमकी अन्तिम अवस्थामें पुरुषके मुष्कसे पुरुष-इन्द्रियकी राह द्वारा जो वीर्य निकलता है, उस वीर्यका कीड़ा औरतोंके योनि-पथसे जरायुके भीतर घुसकर धीरे-धीरे काल-नलमें जाकर अगर डिम्बकोषके पके हुए डिम्बसे मिल गया, तो उसी समय औरत गर्भवती हो जाती है।

इस संयोगसे किस तरह नये जीवकी उत्पत्ति होती है, बून्दभरसे किस तरह भ्रूणमें प्राण पैदा हो जाता है—यह शुक्र-कीट और डिम्ब दोनों मिलकर, "प्रकृति" की ओटमें छिपे रह, किस महीयसी शक्तिके प्रभावसे अर्जुन और नैपोलियन, शङ्कराचार्य और प्लेटो, आर्यभट्ट और न्यूटन, कपिल और डार्विन अथवा अहिल्या बाई और कुमारी नाईटिङ्गलकी रचना कर सके—क्या तेज़-से-तेज़ बुद्धिवाले मनुष्य भी कभी इस जटिल प्रश्नको हल करनेमें समर्थ हो सकेंगे? जयकी खुशीसे फूला हुआ इस बीसवीं सदीका विज्ञान और मानव-प्रतिभा—यह तथ्य खोज निकालने या रासायनिक परीक्षासे जीव उत्पन्न करनेकी खोजमें लगा रहे, पर हम उस निखिल ब्रह्माण्डको पैदा करनेवाली युग-युगान्तरमें फैली हुई

आद्या-शक्तिको दूरसे ही भीति, विस्मय और आनन्द-भरे प्रेम-कम्पित हृदयसे कोटि-कोटि प्रणामकर प्रस्तुत विषयपर आते हैं अर्थात् औरतोंकी बीमारी और आराम करनेका उपाय लिखते हैं।*

औरतोंके रोग नीचे लिखी नौ श्रेणियोंमें बाँटकर हरएकका लक्षण और इलाज नीचे लिखा जाता है :—

(१) आर्त्तव व्याधि।
(२) जरायु व्याधि।
(३) डिम्बकोषके रोग।
(४) योनिकी बीमारी।
(५) बन्ध्यत्व।
(६) स्तनकी बीमारी।
(७) मेरुदण्डकी बीमारी
(८) पिक-चञ्चु-अस्थि वेदना।
(९) गर्भिणी रोग।

———

(१) आर्त्तव व्याधि।

(Disorders of Menstruation)

ऋतु-सम्बन्धी रोगमें नीचे लिखे प्रधान रोगोंका हाल क्रमसे लिखा जायगा :—(क) प्रथम रजःस्रावमें विलम्ब, (ख) ऋतुरोध, (ग) अनियमित ऋतु, (घ) अनुकल्प रजः, (ङ) स्वल्प रजः, (च) अतिरजः, (छ) बाधक वेदना, (ज) श्वेत-प्रदर, (झ) रजोनिवृत्ति, (ञ) हरित् रोग।

* परिशिष्ट (ग)—"जीवाणु-तत्व और जीवागम-रहस्य" देखिये।

ऋतु सम्बन्धी बीमारीमें ऋतुके तुरन्त बाद ही होमियोपैथिक दवा सेवन करनेका मुख्य काल है। खास मौकेपर परवर्त्ती ऋतुके बाद भी दवा खानेकी जरूरत पड़ सकती है।

यहाँ यह कह देना बेजा नहीं होगा, कि सब तरहके आर्त्तव व्याधिकी दवा "पल्स" और "सिपिया" है। पल्स साधारणतः शान्त प्रकृतिकी, कोमल स्वभाववाली और सहजमें ही रो देनेवाली स्त्रियोंके लिये उपयोगी है और सिपिया सब विषयोंमें, यहाँतक कि अपने प्रिय परिवारवालोंके प्रति भी उदासीन रहनेवाली रमणियोंके लिये लाभदायक होता है। रजःस्रावकी गड़बड़ीसे पैदा हुए उपसर्गमें ऋतुके समय दवा खाना मना है। ऋतु हो जानेके बाद ही दवा खानेका खास वक्त है। जरूरत पड़नेपर दूसरी बार जबतक महीना न हो, तबतक दवा देनी चाहिये।

(क) पहली बारके रजःस्रावमें विलम्ब

(Delayed Menstruation)

इस देशकी नीरोग औरतोंको १२—१३ वर्षकी उम्रमें रज-स्राव आरम्भ होकर ४०-४५ वर्षकी उम्रतक हर महीने नियमित रूपसे हुआ करता है। किसी-किसी लड़कीमें जवान हो जानेपर भी ऋतु होनेमें देर होती है या सिर्फ एक

बार होकर वह फिर बन्द हो जाता है। स्नायविक दुर्बलता, बहुत दिनोंतक कोई बीमारी भोगनेकी वजहसे शरीरका कमजोर पड़ जाना और खूनकी कमीकी वजहसे अथवा योनिके मुँहपरकी आवरक झिल्ली न फटनेकी वजहसे पहले रजोदर्शनमें देर होती है।

लक्षण।—सर भारी और दर्द, नाकसे (कभी-कभी मलद्वारसे) खून गिरना, छाती धड़कना, साँस लेने या छोड़नेमें कष्ट मालूम होना, कमर और उरुमें भार मालूम होना और तलपेटमें दर्द प्रभृति लक्षण रहते हैं।

चिकित्सा

पल्स और सलफर इसकी प्रधान दवाएँ हैं।

सिनिसियो θ।—पहली बारके रजःस्रावमें देर या एक-दो बार ऋतु होकर बन्द हो जाना; तकलीफ़ देनेवाला थोड़ा या अनियमित ऋतु।

पल्सेटिला ३x, ३०।—पेट और पोठमें दर्द, सरमें दर्द, अरुचि, हमेशा जाड़ा मालूम होना, आलस्य, मिचली, छाती धड़कना, खूनकी कमी। ऊपर लिखे लक्षणोंके साथ अगर श्वेत-प्रदर हो तो सिपिया ६ देना चाहिये।

ऐकोनाइट ३x।—एक बार रजः-स्राव होकर एकाएक सर्दी लगकर या डरसे ऋतु बन्द हो जानेपर इसका प्रयोग होता है।

ब्रायोनिया ३, ३० ।—रजःस्रावके बदले नाक या मुँहसे खून निकलना; सूखी खाँसी; सीनेमें सुई गड़नेकी तरह दर्द, कब्जियत।

वेरेट्रम-एल्ब ।—स्नायविक सर-दर्द, कमजोरीके साथ बेहोशी या हिस्टीरिया, कै या मिचली; पतले दस्त; चेहरा बदरङ्ग; हाथ, पैर और नाक ठण्डी होनेके लक्षणमें।

नेट्रम-म्यूर १२x चूर्ण ।—दुबली-पतली, नींद न आती हो, ऐसी औरतोंके लिये, जाड़ा लगना, पैर ठण्डे, कब्जियत।

सलफर ३० ।—कमरमें दर्द, सरमें टनक या सरमें चक्कर, अजीर्ण, बवासीरके साथ कब्जियत; चिड़चिड़ा स्वभाव या मौन भाव।

सिमिसिफ्यूगा ६x ।—[torn] कोषकी स्नायु-शक्तिकी [torn] दर्द, खूनकी क्षीणताके कारण रजःस्राव न होना। सरमें साथ [torn] कमी, बाएँ अङ्गमें (खासकर बाएँ स्तनमें) दर्द।

धातु-दोषकी वजहसे रजोरोधमें—साइक्लामेन ६, सलफर ३०, कैल्के-फास ६, फेरम ६, लाइको १२, सिपिया ३०। यक्ष्मा वगैरह क्षयरोगकी वजहसे—वैसिलिनम २००, कैल्के-फास १२x चूर्ण, आयोड ६। कमजोरी या खूनकी कमीकी वजहसे—नेट्रम-म्यूर ३०, चायना ६, फेरम ६। अजीर्णकी वजहसे—सलफर ३०, नक्स ६, पल्स ६, लाइको १२।

"रजोरोध" "अनियमित ऋतु" "अनुकल्प-रजः" "स्वल्प-रजः" वगैरह देखिये। हलका भोजन देना चाहिये।

आनुसङ्गिक चिकित्सा।—सर्दी लगना या ठण्डे पानीमें नहाना, ज्यादा पढ़ना-लिखना और आलस्य मना है। गर्म मसाला या उत्तेजक खाना-पीना त्याग देना चाहिये। गर्म पानीके टबमें कमरतक डुबो रखना, पेटमें फ्लानेल या गर्म कपड़ा बाँध रखना और साधारण स्वास्थ्यके नियम पालन करना उचित है।

(ख) रजोरोध

(Amenorrhoea)

रजः-स्राव आ... होकर भी कभी-कभी बन्द हो जाया करता है। आलस्य, खूनकी कमी, सङ्गम-दोष, ऋतुके समय बरफ ज्यादा खाना, सर्दी लगना, पानीमें भींजना, ज्यादा घूमना, एकाएक शोक, क्रोध, दुःख या भय वगैरह कारणोंसे रजोरोध हो जाता है।

चिकित्सा।—किसी-किसी चिकित्सकका मत है, कि पल्सेटिलाके साथ फेरम पर्यायक्रमसे देना रजोरोध या देरसे ऋतु होनेकी बढ़िया दवा है। जवानीके आरम्भमें, जवान औरतोंको (खासकर गोरी स्त्रियोंको) अगर रजः-स्राव न होता हो, तो पल्स ३—६ (एक महीना अर्थात् जबतक

स्राव न आरम्भ हो) देना चाहिये। सरमें खूनकी अधिकताकी वजहसे सरमें चक्कर, आँखोंके आगे अन्धेरा छा जाना, आँखोंके गड्ढेमें दर्द, गर्भाशय और डिम्बाशयमें तेज़ दर्द, प्रलापके लक्षणमें, बेलेडोना ३। नाकसे खून गिरना, सरमें चक्कर, छाती और पंजरेमें सुई बेधने-जैसा दर्द, सूखी खाँसी और पाकस्थलीके दर्दमें, ब्रायोनिया ६। तलपेटमें तेज़ दर्द (मेहनतसे बढ़ना), विमर्ष चित्त, अकेलेमें रहनेकी इच्छा लक्षणमें, सिपिया ६। सर्दी लगकर रजोरोध होनेपर ऐकोनाइट ६। फायदा न हो, तो पल्सेटिला ३। नियमित समय (अर्थात् २८ दिनोंपर) अगर ऋतु न दिखाई दे, तो सलफर ३०। मानसिक कष्टसे पैदा हुई बीमारीमें इग्नेशिया ६। पानी घांटने या शरीरमें खूनकी कमीकी वजहसे रजोरोध होनेपर कैल्क-कार्ब ३० या नेट्रम-मूर। रक्त-स्वल्पता और पतले दस्तोंके साथ रजोरोध रहनेपर, फेरम ६। ऋतु बन्द होकर यदि रोगिनी पेटके दर्दसे छटपटाती हो, तो जेलसिमियम ६, कैमोमिला ३, मैग्ने-शिया-फास २x—१२x विचूर्ण (गर्म पानीके साथ सेवन), सिमिसिफ्यूगा ३x, साइक्लामेन ६, आर्स ६, नेट्रम-मूर ३०, हेलोनियस १x, बेल ३ वगैरह दवाओंकी समय-समयप जरूरत पड़ सकती है। "रक्त-स्वल्पता" या यक्ष्मा-कासवे वजहसे रज बन्द होनेपर उन बीमारियोंको देखकर दव चुनकर देनी चाहिये। यदि बीमारी आराम न होती हो, त मैङ्गानिज डाइआक्साइड θ की मात्रा एक ग्रेनके हिसाबसे रोज़ चार बार सेवनसे खूब फायदा हो सकता है। बैठा स्नान

(अर्थात् गर्म पानीमें कमरतक डुबाकर अर्द्ध-स्नान), दूधमें पानी मिलाकर पीना, गर्म पानीमें फ्लैनेल भिगोकर कमरपर सेंक देना—इन सबसे भी फायदा होता है। "प्रथम रजः-स्रावमें विलम्ब" देखिये।

(ग) अनियमित ऋतु

(Irregular Menstruation)

ऋतुका भी एक बँधा समय है। औरतोंको हर २८ दिनोंमें जरायुकी राहसे कुछ काली आभा लिये लाल रङ्गका पतला स्राव होता है। साधारणतः तीनसे लेकर पाँच दिनोंतक स्राव होता है। स्रावका परिमाण एक पावसे डेढ़ पावतक रहता है। इस नियममें गड़बड़ी होनेपर इलाज कराना चाहिये। अनियमित रजः-स्रावका लक्षण :—दो-तीन महीने रजः-स्राव होकर एकाएक बन्द हो जाना, कभी-कभी दो-तीन महीनेतक बन्द रहकर एकाएक ज्यादा परिमाणमें स्राव होना ; किसी-किसीको १०—१५ दिनोंतक थोड़ा-थोड़ा स्राव जारी रहना।

चिकित्सा

कोनायम १—३० इस रोगकी बढ़िया दवा है। बन्द होनेपर सिनिसियो θ दो बून्द रोज़ तीन बारके हिसाबसे सेवन करनेपर ऋतुका अनियमित होना बन्द होकर नियमित रूपसे

ऋतु होता है। पलसेटिला ६ या चायना ६ पर्यायक्रमसे खिलाकर किसी-किसीको खासा फायदा हुआ है। जल्दी-जल्दी ऋतु होनेपर, इग्नेशिया (पन्द्रह ही दिनोंमें हो जानेपर), बेल, कैल्के-कार्ब, नेट्रम-म्यूर, इपिकाक। बहुत देरसे ऋतु-स्राव होनेपर—कैलि-कार्ब, लैके, पल्स, सल्फ। यदि ऋतु कई दिनोंतक जारी रहे, तो ऐकोन, इग्ने, नक्स-वोम, प्लाटिना, सल्फ। "रजः-रोध" और "अतिरजः रोगकी दवाएँ" लक्षणके अनुसार इस रोगमें भी सेवन की जा सकती हैं।

(घ) अनुकल्प रजः

(Vicarious Menstruation)

रजोलोप (या थोड़ा रज निकलना) के कारण नाक या मलद्वार वगैरहसे खून निकलता है। श्लेष्माके साथ खून निकलनेपर वह फेफड़ेसे और सिर्फ खून निकलनेपर उसे पाकस्थलीसे निकलता समझना चाहिये।

चिकित्सा।—नाक, मलद्वार या शरीरके किसी दूसरे दरवाजेसे खून निकलना, खूनकी कै करना, पेट टटाना, सीनेमें दर्द, खाँसी (श्वेत-प्रदर रहे या न रहे) लक्षणमें, हैमामेलिस १। नाकसे खून निकलनेपर, फेरम-फास ६x या ब्रायोनिया ६। चमकीले लाल रङ्गका खून निकलनेपर, इपिकाक ३x— ६। खाँसते-खाँसते रक्त-स्राव, कमजोरी, चेहरेमें खूनकी कमी

दिखाई देना, इसके साथ-ही-साथ यक्ष्मा रोगके और-और लक्षण प्रकट होनेपर, सिनिसियो ३x। नाक और कानसे खून बहना, स्तनमें दर्द, बदनका गर्म मालूम होना, लक्षणमें, पल्सेटिला ६। बहुत कमजोरी और खूनकी कमीके साथ खून जानेके लक्षणमें, फेरम ६। मलद्वारसे रक्त-स्राव होनेपर, कालिन्सोनिया ६। ऋतु-स्रावके बदले श्वेत-प्रदर दिखाई देनेपर—कैल्के-कार्ब, फेरम, चायना, बोरैक्स, मैग्ने-सल्फ, फास।

(ङ) स्वल्प-रजः

(Scanty Menstruation)

कितने ही रोग भोगनेके बाद रक्त-स्वल्पताकी वजहसे थोड़ा रजःस्राव होने लगे तो वास्तविक रोगकी चिकित्सा होनी चाहिये। जैसे—धातु-दोषकी वजहसे रजःस्राव थोड़ा होनेपर—कैल्के-फास, साइक्ला, कोनायम, आयोड, नेट्रम-म्यूर, मर्क, फास, पल्सेटिला, सिनिसियो, सिपिया, सल्फ। खूनकी कमीकी वजहसे थोड़ा रजःस्राव होनेपर—आर्जेण्टम-नाई, हेलिबोरस, फेरम, नेट्रम-म्यूर। कब्जियत या चर्म-रोगके साथ स्वल्परजः होनेपर—कालिन्सो, ग्रैफाइट, नक्स-वोम और जरायु-दोषके कारण स्वल्प रजः-स्राव होनेपर नीचे लिखी हुई दवाएँ दी जा सकती हैं :—

चिकित्सा

थकावट, शारीरिक और मानसिक अवसाद, पीला चमड़ा, ठण्डी हवा असह्य, वमन, सरमें दर्द और खूनकी कमीमें सिपिया ३०। (दुबली-पतली, वायु-प्रधाना स्त्रियोंके लिये यह ज्यादा फायदेमन्द है)। थोड़ा-सा पानीकी तरह स्राव, सब शरीर पीला, जाड़ा मालूम होना, रजः-स्रावके पहले और उसी समय कमरके दर्दमें, पलसेटिला ६। भोजन और वायु सेवनकी कमीकी वजहसे अथवा किसी तरहका क्षय रोग हो जानेके कारण थोड़ा रजःस्राव होनेपर फेरम ६। समयपर ऋतुका न होना, कब्जियत, सब शरीरमें खुजली, हलका ताप (या रह-रहकर बदन गर्म हो जाना) लक्षणमें, सलफर ३०। बहुत देरसे ऋतु होना और ऋतुके पहले योनिके खुजलानेपर, ग्रैफाइटिस ६। कब्जियतके साथ थोड़ा रक्त-स्राव और रोगिनीके शरीरका रङ्ग मटमैला हो जानेपर, नेट्रम-म्यूर १२x चूर्ण। ज्यादा देरसे, बहुत थोड़ा काले रङ्गका ऋतु, मैग्ने-कार्ब ६। कब्जियत और उसके साथ ही शरीरमें पसीना होनेपर, फास्फोरस ६। प्लाटिना ६, कार्बो-वेज ६ या सलफर ६—३० का भी कभी-कभी प्रयोग किया जा सकता है। "पहले रजः-स्रावमें विलम्ब" रोग देखिये। लघु बलकारक पथ्य देना चाहिये।

———

(च) अतिरजः

(Menorrhagia)

(१) मासिक ऋतुके समय बहुत-सा खून निकल जाये या (२) ऋतु-स्राव बँधे हुए कई दिनोंकी बनिस्वत ज्यादा दिनोंतक स्थायी रहे अथवा (३) चार हफ़्तोंमें दो या उससे भी ज्यादा बार ऋतु-स्राव हो, तो उसे "अतिरज:" कहते हैं। इसलिये यह नियमित समयके कुछ पहले या बाद भी हो सकता है और थोड़े या ज्यादा दिनोंतक मौजूद रह सकता है। रजोनिवृत्तिके समय किसी-किसी रमणीको अतिरजः हुआ करता है। कितने ही कारणोंसे ज्यादा रज आता है। उनमें जरायु-ग्रीवामें या डिम्बकोषमें रक्त-सञ्चय वगैरह कारणोंसे यह बीमारी हो सकती है। ज्यादा सङ्गम, ज्यादा मात्रामें पुष्टिकर खाद्य खाना, ज्यादा मानसिक चिन्ता या बार-बार गर्भ धारण करना भी इसके कारणोंमें माना जा सकता है। आलसी भाव, शरीर टूटना, जम्हाई आना, शरीरमें दर्द होना, सर भारी और सरमें दर्द, पीठ और कमरमें दर्द, अरुचि, पैरके तलवे ठण्डे और जाड़ा मालूम होना वगैरह लक्षण इस रोगमें दिखाई देते हैं। बहुत ज्यादा खून निकल जानेकी वजहसे चेहरा पीला, आँखें गड्हेमें धँसी, हाथ-पैर ठण्डे, कान बन्द, दृष्टि और नाड़ी क्षीण तथा मूर्च्छा वगैरह लक्षण दिखाई देते हैं।

चिकित्सा

हाइड्रैस्टिस १x और हाइड्रैस्टिनाइन θ—३x सम्भवतः ज्यादा रजः-स्रावकी सबसे बढ़िया दवा है। डाक्टर वाफोड हाइड्रैस्टिनाइन १x ज्यादा रजःस्रावके समय और ३x रजोनिवृत्तिके समय खिलाकर बहुत ज्यादा फायदा उठा चुके हैं। हैमामेलिसके साथ चायना पर्यायक्रमसे सेवन करनेपर भी शायद "अतिरजः" जल्दी अच्छा हो जाता है। जल्दी-जल्दी ऋतु होना, ज्यादा परिमाणमें स्राव और उसके साथ पेटमें दर्द और मिचलीमें, बोरैक्स ६। रातमें अपर्याप्त स्राव, मैग्नेशिया-कार्ब ६। ज्वाला पैदा करनेवाले प्रदरके साथ पुरानी बीमारीमें आर्स ३—२००। शारीरिक दुर्बलता और गर्भाशयकी क्रियाके विकारकी वजहसे बहुत ज्यादा दिनोंतक ठहरनेवाला ज्यादा रक्त-स्राव होनेपर, आर्सेनिक ६। रजोनिवृत्तिके समय, गर्भावस्थामें या प्रसवके अन्तमें—पीठ और तलपेटमें दर्द हो तो, ग्लसेटिला ६। मूत्रयन्त्रका प्रदाह, क्षीण दृष्टि, डिम्बाशयमें दर्द, लाल रङ्गका अधिक रजःस्राव, सैबाइना ६। (मोटी-ताजी स्त्रियोंके लिये सैबाइना ज्यादा फायदा करता है) हमेशा ज्यादा परिमाणमें बिना दर्दका पतला रजःस्राव; कभी-कभी काले रङ्गका, कभी थक्का-थक्का, कभी बदबूदार रक्त-स्राव; थोड़े हिलने-डोलनेसे ही स्रावका बढ़ जाना; सब शरीर ठण्डा, परन्तु भीतर गर्म मालूम होना, जरायुके मुँहपर चूंटी चलने-जैसी सुरसुराहट; उदरमें दर्द और योनिकी ओर दबावके साथ

काला-काला थक्के-भरा अलकतरेकी तरह स्राव होनेपर, क्रोकस-सैटाइवा ३ (स्राव बन्द रहनेके समय चायना ६ और बीमारीवाली अवस्थामें क्रोकसका प्रयोग करनेपर ज्यादा लाभ होता है)। गाढ़े अलकतरेकी तरह ज्यादा परिमाणमें स्राव (थक्का नहीं), पुट्ठे और योनिमें दर्द, ऐसा मालूम होता हो, मानो सभी नस-नाड़ियाँ योनिकी राहसे बाहर निकल जायँगी, सङ्गमकी इच्छा अधिक, जरायुमें प्रदाह और नशा तन्द्राविश लक्षणमें, प्लैटिना ६। किसी-किसीका कहना है, कि इसके साथ क्रोकस पर्यायक्रमसे प्रयोग करनेपर फायदा होता है, खासकर पुरानी अवस्थामें ये दोनों दवाएँ फायदा करती हैं। ऋतुके पहले प्रसव-वेदनाकी तरह तेज़ दर्दके साथ दाने-भरा, रक्त-स्राव और रह-रहकर दर्द होनेके लक्षणमें कैमोमिला १२; बिना दर्दके ज्यादा परिमाणमें पतला या कभी गाढ़ा काले रङ्गका रज:स्राव, रज:-स्रावकी वजहसे कमजोरी; कानमें भों-भों आवाज़, जरायुके मुँहपर जलन; हर तीसरे दिन रोग बढ़नेके लक्षणमें, चायना ६। नाभि-प्रदेशमें दर्द और उस दर्दका जरायुतक फैल जाना; अविरत वमनेच्छा; सरमें चक्कर, सरमें दर्द; चेहरा उजला और ठण्डा; चमकीला लाल रङ्गका रक्त-स्राव होनेपर, इपिकाक ३x—६। ऊपर लिखे लक्षणोंमें प्रसवके बादवाले आकस्मिक रज:स्रावमें भी यह ज्यादा फायदा करता है। मूत्रनालीमें और गुह्यद्वारमें प्रदाह; रह-रहकर ज्यादा परिमाणमें चमकीला लाल रङ्गका रक्त-स्राव (खासकर गर्भ-स्रावके बाद) होनेपर, इरिजिरन ३x। चोट लग जानेके

कारण जरायुसे ज्यादा परिमाणमें रजःस्राव होनेपर आर्निका २x या हैमामेलिस २x फायदा करता है। बँधे समयके बहुत पहले योनि-द्वारमें खुजली और जलनके साथ श्वेत-प्रदरकी बीमारीवाली रोगिनियोंको ज्यादा स्राव होनेपर और वक्षस्थलमें दर्द रहनेपर, कैल्केरिया-कार्ब ६ (खासकर स्थूलाङ्गियोंके लिये)। धमनीसे गहरा लाल रक्त-स्राव होनेपर और जांघोंमें दर्द रहनेपर (खासकर रक्त-स्रावी प्रकृतिवाली रोगिनियोंके लिये) ट्रिलियम ६। विषम रक्त-स्रावमें (जब किसी तरह रोग दबना न चाहे), तो दालचीनीका तेल (oil of cinnamon) पाँच बून्द एक ड्राम दूधके साथ फी मात्रा सेवन करना चाहिये। कैल्के-कार्ब ६, ऐलो ३x, फेरम ६, थ्रैस्पी θ (फी मात्रा ५ बून्द), सिकेलि ६, बेल ३, नाइट्रिक-एसिड १—६, ऐम्ब्रा ३, हेलोनियस १, आस्टिलेगो ३, हाइड्रेस्टिस θ और पीपलके पत्तेका रस (ficus religiosa १x) वगैरह दवाएँ बीच-बीचमें आवश्यक हो सकती हैं।

अशोक θ।—बहुत ज्यादा रजः-स्राव, पेशाबमें कष्ट, प्रदर। यह दवा नियमित रूपसे सेवन करनेपर धातु-सम्बन्धी समस्त गड़बड़ियाँ दूर हो जाती हैं।

विरामकालकी चिकित्सा।—ज्यादा रजः-स्रावकी वजहसे रोगिनीके बहुत कमजोर हो जानेपर—पलसेटिला, फेरम, चायना या आर्सेनिक। खूनके दौरानमें गड़बड़ी और बोखार रहनेपर, ऐकोनाइट। वात होनेपर, सिमिसिफ्यूगा।

पतले दस्त, स्वरभङ्ग और खाँसी या यक्ष्माका पूर्व लक्षण दिखाई देनेपर, कैल्केरिया-कार्ब। मानसिक उत्तेजना और मैथुन प्रवृत्तिकी अधिकतामें, फास्फोरस। बीच-बीचमें ज्यादा रज निकलना, पर दुर्बलताके सिवा रोगिनीके शरीरमें कोई दूसरी गड़बड़ी न दिखाई देनेपर, टिलियम। ये सभी दवाएँ ६ शक्तिकी प्रयोग करनी चाहियें।

साधारण नियम।—बहुत ज्यादा शारीरिक और मानसिक परिश्रम मना है। यदि कोई कमजोर करनेवाली बीमारी या कोई धातुगत दोष हो और रोगिनी सबल रहे तो रोगिनीको गर्म पानीके टबमें कमरतक डुबोकर १०-१५ मिनट रखने बाद, सूखे कपड़ेसे बदन पोंछ देनेपर फायदा होता है। हैमामेलिस θ, दसगुने साफ़ पानीमें मिलाकर उसमें पतले कपड़ेके टुकड़ेको या स्पञ्ज भिंगोकर योनिमें डाल रखनेसे भी फायदा होता है।

"जरायुसे रजः-स्राव" देखिये।

(छ) वाधक-वेदना या ऋतु-शूल

(Dysmenorrhoea)

रजःस्रावकी गड़बड़ीके कारण तलपेटमें और कमरमें एक तरहका तकलीफ़ देनेवाला दर्द पैदा होता है, इसे "वाधक-वेदना" (कष्टरजः, रजःकृच्छ्रता या ऋतु-शूल) कहते हैं।

बायें डिम्बाशयमें तेज़ दर्दके साथ थोड़ा रजः-स्राव ; (ऋतु-कालमें) तलपेटमें, मेरुदण्डमें, कमरमें या सब शरीरमें तेज़ दर्द, कमजोरी, सरमें दर्द, सरमें चक्कर, आलस्य, अग्निमान्द्य, मिचली या कै वगैरह लक्षण, वाधक-वेदनामें मौजूद रहते हैं। अति मैथुन, जरायुकी स्थान-च्युति, रक्त-सञ्चयकी वजहसे जरायु-प्रदाह और श्वेत-प्रदर वगैरह कारणोंसे यह रोग पैदा होता है। जिन औरतोंको वात या हिस्टीरिया या स्नायु-शूल रहता है, उनको अकसर ऋतुमें तकलीफ़ होती है। जैन्थक-ज़ाइलम और वाइवर्नम ओप्युलस वाधक-वेदनाकी उत्कृष्ट दवाएँ हैं।

संक्षिप्त चिकित्सा

(१) प्रादाहिक या रक्त-सञ्चय-जनित स्नायु-शूलमें—ऐकोन, आर्स, आर्नि, बेल, ब्रायो, कोनायम, हिपर-सलफर, लाइको, मर्क-कोर, मर्क-सोल, पल्स, सैबा, सिपिया।

(२) स्नायविक ऋतु-शूलमें—कोलो, कैमो, सिमिसि, काफिया, जेल्स, हैमा, सिकेलि, जैन्थक्स।

(३) आक्षेपिक स्नायु-शूलमें—वाइवर्नम-ओप्यु, आर्निका, आर्स, कैमो, कैल्के, इग्ने, नक्स-वो, फास, पल्स।

(४) प्रतिरोधक या जन्मगत ऋतु-शूलमें—बोरैक्स, कैल्के-कार्ब, कोनायम, हैमा, थजा।

कई दवाओंके लक्षण

सिमिसिफ्यूगा ३, ६ ।—ऋतुके पहले सरमें दर्द, (ऋतुकालमें) प्रसव-वेदनाकी तरह उदरमें दर्द, तलपेट और पुट्ठेमें दर्द, पीठमें दर्द और पाकस्थलीके ऊपर तेज़ दर्द, मैले रङ्गका थोड़ा रजःस्राव या थक्का-थक्का अधिक परिमाणमें रजः-स्राव होनेके लक्षणमें।

पल्सेटिला ३, ३० ।—कमर, तलपेट और पीठमें काटनेकी तरह या तोड़नेकी तरह दर्द, अग्निमान्द्य, अरुचि, सरमें चक्कर, जाड़ा लगना, अनियमित स्राव, ऋतु-कालमें पतले दस्त, देरसे ऋतु होना; थोड़ा रजः-स्राव और कभी-कभी थोड़े परिमाणमें थक्का-थक्का काले या लाल रङ्गका स्राव वगैरह लक्षण रहनेपर, शान्त स्वभावकी औरतोंके वाधक-वेदनाकी यह बढ़िया दवा है।

बेलेडोना ६, ३० ।—जरायुमें और डिम्बाशयमें रक्त-सञ्चयकी वजहसे पैदा हुए वाधकके दर्दमें वस्ति-गह्वरमें ज्यादा दर्द, दर्दके समय ऐसा मालूम हो, मानो पीछेसे पेटकी नस-नाड़ियाँ जोरसे धक्का देकर बाहर निकलना चाहती हैं। रजः-स्रावके एक दिन पहलेसे ही दर्द पैदा हो जाना; ऋतुके समय पाखाना होनेके समय बहुत तकलीफ़; उदरमें काटनेकी तरह दर्द, मस्तिष्कमें बहुत रक्त-सञ्चयके साथ ऋतु-शूल; आँखें और मुँह लाल, कनपटीमें टपक वगैरह लक्षण रहनेपर रक्त-प्रधान औरतोंके लिये यह बहुत ज्यादा फायदेमन्द है।

जेलसिमियम ३x ।—जरायुमें रक्त-सञ्चयकी वजहसे खींचन, योनिद्वार और उरूमें अकड़नकी तरह दर्द, पहले पेटसे दर्द शुरू होकर धीरे-धीरे वह कमर और पीठके ऊपरी अंशतक फैल जाता है और गर्दनके पीछे ऐंठनकी तरह दर्द होता है; कभी-कभी दर्द बन्द हो जाता है, इस समय रोगिनीको तन्द्रा और आलस्य होता है। बोखार रहनेपर यह और भी ज्यादा फायदा करता है। किसी-किसीके मतसे इसके साथ कालोफाइलम १x, पर्यायक्रमसे देनेपर और भी ज्यादा फायदा होता है।

कैमोमिला ६, १२ ।—मैला या काले रङ्गका थक्का-थक्का खूनका स्राव; प्रसवके दर्दकी तरह दर्द; बार-बार पेशाब करनेकी इच्छा; उदरमें दर्द; कमरसे सामनेकी ओर ठेलनेकी तरह दर्द। वायु और पित्त-प्रधाना उग्र-प्रकृतिकी औरतोंकी ऋतु-शूलकी यह उत्तम दवा है।

काकुलस ६ ।—पेटमें ऐंठनकी तरह दर्द मालूम होना; सोनेमें भार और साँसमें तकलीफ; जरायुका आक्षेप; बहुत कम मात्रामें काला खून निकलना या श्वेत-प्रदर। सरमें तेज़ दर्द और सरमें चक्कर; पेट फूलना; कभी-कभी बेहोशी और मिचली।

जेन्थक्जाइलम १, ३x ।—काकुलस वगैरह दवाओंसे थोड़ा फायदा होने या बिलकुल ही फायदा न होनेपर, खासकर तलपेटसे लेकर पुट्ठे तक तेज़ दर्द और उसके

साथ ज्यादा स्राव और बोखार मौजूद रहनेपर, बाधक-वेदनाकी यह एक बहुत बढ़िया दवा है। सैंकड़े अस्सी रोगिनियोंको इससे फायदा होता है।

कालोफाइलम १x।—सुई गड़नेकी तरह दर्द; तलपेटका दर्द शरीरके दूसरे-दूसरे अङ्गतक फैल जाता है; आक्षेप-मिला बाधक, उदरके निचले भागमें प्रसवकी तरह दर्द; हिस्टोरियावाली औरतोंको स्राव और प्रदर; ज्यादा परिमाणमें स्राव होनेके लक्षणमें इसका प्रयोग होता है।

विरेट्रम-एल्बम ३, ६।—पेटमें शूल-वेदनाके साथ मिचली और सरमें दर्द, हाथ, पैर, नाक आदि ठण्डे और कपालमें ठण्डा पसीना, गहरी सुस्ती, बेहोशी।

कैक्टस।—तेज़ दर्दसे रोगिनी जोर-जोरसे रोने लगती है; गहरी सुस्ती।

बोरैक्स २x विचूर्ण।—पेटमें दाहिनी ओरकी अपेक्षा बायीं ओर ज्यादा दर्द; यह दर्द कन्धे तक उठकर डिम्बाशयतक उतर जाता है; जरायुसे झिल्ली निकलना।

सिपिया ६, ३०।—आँखोंके चारों ओर काले चकत्तेकी तरह दाग पड़ना; बदन पीला; सवेरे रोगका बढ़ना; पित्त-प्रधाना औरतोंको बाधक-वेदनामें यह ज्यादा फायदा करता है।

कालिन्सोनिया १x, ३।—स्रावके साथ टुकड़े-टुकड़े झिल्लीकी तरह कोई चीज़ निकलना और उसके साथ जोरका दर्द और कब्जियत।

हेलोनियस ३x।—जरायुमें बहुत दर्द; जांघ और पीठमें लगातार दर्द; काले सूतकी तरह स्राव।

नक्स-वोमिका ६, ३०।—असमयमें थोड़ा-सा रक्त-स्राव; जाड़ा मालूम होना; अग्निमान्द्य; सवेरेके वक्त के या मिचली।

सिकेलि-कोर ६।—(नियमित समयके बहुत पहले) दाने-दाने, मैला और बदबूदार स्राव; तलपेटमें बहुत दर्द (ऐसा मालूम होता है, मानो पेटकी सब चीजें योनिकी राहसे बाहर निकल पड़ेंगी); सब शरीरमें (खासकर हाथ-पैरमें) ठण्ढा पसीना; नाड़ी क्षीण; मूत्राशय और मलाशयमें काटनेकी तरह दर्द; स्राव न निकलना; तेज़ दर्द और कमजोरी मालूम होनेके लक्षणमें।

मैग्नेशिया-फास ३x, ६x चूर्ण।—(गर्म पानीके साथ दस मिनटका अन्तर देकर सेवन करना चाहिये)। पाकस्थली और जरायुमें ऐंठन पैदा करनेवाला दर्द; स्नायु-शूलकी तरह दर्द; गर्म प्रयोगसे घटता है (दर्द दूर करनेकी यह बढ़िया दवा है)। झिल्ली निकलनेवाला वाधक।

एपिस ६।—डिम्बकोषमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द होनेके कारण रोगिनी छटपटाती हो, प्रसवके दर्दकी तरह दर्द।

वाइबर्नम-ओप्युलस θ, ३X ।—ऋतु-कालमें दर्द एकाएक पैदा होकर आठ-दस घण्टोंतक रहता है, जरायुमें तेज दर्द ; इसके बाद समूचे पेटमें दर्दका फैल जाना। आक्षेपयुक्त बाधक (यह भी बाधकके दर्दकी बहुत अच्छी दवा है)।

नीचे लिखी (छठी शक्तिमें) दवाओंकी भी कभी-कभी जरूरत पड़ती है :—क्रोकस, मस्कस, लिलियम, प्लाटिना, ब्रायोनिया, कूप्रम, कोनायम, हैमामेलिस २x, नाइट्रिक-एसिड, फास्फोरस, फाइटोलैक्का, सैबाइना, सिकेलि, सिनिसियो १x, सलफर ३०, ग्रैफाइटिस, फेरम, ऐकोनाइट ३०।

नियम ।—थोड़ा रजः-स्राव होनेकी वजहसे दर्द होनेपर गर्म पानीका सेंक देने या गर्म पोटलीसे सेंकनेसे भी फायदा हो सकता है। बिजली (Electricity) के प्रयोगसे भी दर्द तुरन्त बन्द हो सकता है।

स्त्री-धर्मके कई उपसर्ग और दवाएँ

बहुत ज्यादा अनियमित स्राव, शीतल या तर पैर, रक्तहीनता, अस्वाभाविक चीजें खानेकी रुचि, दूधकी तरह श्वेत-पदर, खाँसी—कैल्क-कार्ब ३०।

बहुत ज्यादा रजः-स्राव, कमजोरी, काला ढेला-ढेला स्राव—चायना १।

अनियमित, काले रङ्गका स्राव, प्रसवके दर्दकी तरह दर्द, पाखाना लगना—नक्स-वोमिका।

अनियमित, बहुत ज्यादा मात्रामें स्राव; प्रसवके दर्दके समान दर्द (खासकर सवेरे)—नेट्रम-म्यूर।

लगातार चमकीला खूनका स्राव, सहजमें जम जाता है, उसके साथ ही बहुत मिचली—इपिकाक।

चमकीले लाल खूनका ऋतुस्राव, टपककी तरह दर्द, साधारण आघातसे भी दर्द—बेल ३।

ऋतुके कुछ पहले और ऋतुकालमें कब्जियत, दोनों पैर ठण्डे—सिलिका।

ऋतु आरम्भके समय हैजाकी तरह लक्षण दिखाई देनेपर—ऐमोन-कार्ब।

ऋतु आरम्भ होते ही रोगिनीकी दूसरी तकलीफें घट जाती हैं, परन्तु ऋतु बन्द होते ही वे तकलीफें फिर मौजूद हो जाती हैं—ज़िङ्कम।

ऋतुकालमें अपनेको बहुत स्वस्थ समझती है—ज़िङ्कम।

ऋतु खूब ज्यादा, जल्दी-जल्दी होता , काला थक्का-थक्का; सुस्ती; सर्दी लगना—ऐमोन-कार्ब।

ऋतु खूब जल्दी-जल्दी होता है, स्राव ज्यादा और गर्म—बेल।

ऋतुकी वजहसे रोगिनी इतनी कमजोर हो जाती है, कि उसमें बोलनेकी ताक़त नहीं रहती—कार्बो-ऐनिमेलिस।

ऋतुका रङ्ग और प्रकृति :—अण्डलालकी तरह लसदार श्लेष्मा भरा—ऐलम, ऐम्ब्रा, बोरैक्स, कैल्के-कार्ब, पल्स, थूजा, कैलि-सल्फ।

„ „ ऋतुके साथ जननेन्द्रिय खुजलाती है—ऐम्ब्रा, कैल्क, आयोड, कैल्क-कार्ब, चायना, क्रियोजोट, मर्क, सिपिया।

„ „ भूरा रङ्ग—लिलयम-टिग, सिपिया, क्रियोजोट, नाइट्रिक-एसिड।

„ „ काली आभा लिये—चायना, थ्लैस्पि।

„ „ गाढ़ा—थूजा, सिपि, पल्स, आयोड, नाइट्रिक-एसिड, हाइड्रैस्टिस।

„ „ पानीकी तरह पतला—सिफिलिनम, सिपिया, सलफर, नाइट्रिक-एसिड, मर्क-कोर, ग्रैफाइटिस, ऐमोन-कार्ब, आर्सेनिक।

„ „ तीखा जखम और जलन करनेवाला—ऐलम, कैल्क-कार्ब, बोरैक्स, कैमोमिला, कोनायम, क्रियोजोट, लिलियम-टिग, मर्क, नेट्रम-मूर,

आयोड, नाइट्रिक-एसिड सिपिया, सिलिका, सलफर।

ऋतुका रङ्ग और प्रकृति :—ढेला-ढेला—बेलेडोना, एंटिम-क्रूड, सोरिनम, हाइड्रेस्टिस।

" " दूधकी तरह सफेद—कैल्के-कार्ब, बोरैक्स, पल्स, सिपिया, कैलि-मूर, कैल्के-आयोड, ग्रैफाइटिस, कोनायम, सलफर।

" " बदबू—सिपिया, सिकेलि, सोरिनम, मर्क, हिपर, क्रियोजोट, हेलो-नियस, थूस्नि।

" " बहुत ज्यादा—एलटेलम, थूजा, सिपिया, पल्स, स्टैनम, नेट्रम-मूर, मर्क, लैके, हाइड्रैस्टिस, ग्रैफाइटिस, कैल्के-कार्ब, आर्सेनिक, आर्ज-नाई।

" " पीव-भरा—कपड़ेमें पीला दाग लगता हो—स्टैनम, सिपिया, पल्स, मर्क, क्रियोजोट, कैलि-बाई, हाइड्रैस्टिस, कैलि-सल्फ, चायना, कैनाबिस सैटाइवा, ऐग्नस, बोविष्टा, आर्सेनिक।

ऋतुका रङ्ग और प्रकृति :—जोरसे निकलना—सिपिया, ग्रैफाइटिस ("बहुत" देखिये)।

" " मांसके धोवनकी तरह, परन्तु बदबू नदारद—नाइट्रिक-एसिड ।

" " यन्त्रणादायक—सिलिका, सलफर ।

" " यन्त्रणाहीन—ऐमोन-म्यूर, पल्स ।

" " रक्तास्त—चायना, क्रियोजोट, मर्क-कोर, मर्क-वाइवस, सिपिया, थ्लैस्पि, नाइट्रिक-एसिड, कैल्के-कार्ब, कार्बो-[illegible]

" " डोरीकी तरह कड़ा, लसदार—कैलि-म्यूर, कैलि-बाई, हाइड्रैस्टिस, ऐलम, इस्क्युलस, एसिड, नाइट्रिक, ग्रैफाइटिस ।

" " हरी आभा लिये—बोविष्टा, मर्क, पल्स, सिपिया, थूजा, कार्बो-वेज, फास्फोरस ।

" " सविराम (अर्थात् ठहर-ठहरकर ऋतु हो) सलफर, कोनायम ।

" " स्निग्ध या अनुत्तेजक—फ्रैक्सिनेस-अमेरिकाना, कैल्के-फास, बोरैक्स, पल्स, स्टैनम ।

ऋतु देरसे होने या बन्द रहनेपर, थोड़ा स्राव, तीखा—कैलि-कार्ब ।

ऋतु जितना जल्द होनेकी आशा की जाती है, उससे भी जल्दी होनेपर—कैल्के-कार्ब ।

" रुका, हिस्टीरिया, स्नायु-दौर्बल्य—सिनिसियो-और १x ।

" रुका रहनेकी वजहसे नाकसे खून गिरना—ब्रायोनिया ।

" जल्दी-जल्दी होता है और रजः-स्राव बहुत दिनोंतक जारी रहनेपर भी पेटमें ऐंठन—नक्स-वोमिका ३x ।

" जल्दी-जल्दी हो, बहुत ज्यादा मात्रामें, ऋतुके पहले शरीरके निचले भागमें भार मालूम होना—मस्कस ।

ऋतु-स्राव, सिर्फ दिनके समय—कास्टिकम, हैमामेलिस ।

" केवल सवेरे हो—सिपिया ।

" सिर्फ रातमें हो—बोविष्टा ।

" सवेरे और सन्ध्याके समय—फैलाण्ड्रियम ।

" सवेरे बहुत झोंकसे ज्यादा हो—बोविष्टा ।

" तीसरे पहर बन्द हो जाये—मैग्ने-कार्ब ।

" लेटनेपर रुक जाता है—कैक्टस, कास्टिकम, लिलियम-टिग ।

" खूब ज्यादा और जल्दी-जल्दी हो, काला, थक्का-थक्का, पैरमें दर्द, रातमें बढ़ना—ऐमोन-म्यूर ।

ऋतु होनेके कुछ ही पहले दोनों स्तनोंमें दर्द और सूजन—कोनायम ।

ऋतुके पहले और बाद बहुत ज्यादा रक्त-स्राव (इस स्रावका रङ्ग ऋतु-स्रावकी तरह नहीं रहता)—आष्टिलेगो।

कष्टरजः ; तलपेटका टटाना ; प्रसव-वेदनाकी तरह तकलीफ़ ; पेटमें शूलका दर्द—कैमोमिला।

कष्टरजः, शान्त और डरपोक स्वभाववाली औरतोंका स्राव, काले रङ्गका और थक्का-थक्का—पल्स २।

जखम, भार, पेटमें दर्द, योनि-प्रदाह—हेलोनियस θ (पानीके साथ फी मात्रा ५ बून्द सेवन करना चाहिये)। जरायुमें ताक़त लानेवाली दवाओंमें यह सबसे अच्छी है।

काला रङ्ग, खब जल्दी-जल्दी होता है, झिल्ली-जैसा, उसके साथ डिम्बाशयका दर्द—मैग्नेशिया-फास।

काला, थक्का-थक्का, उसके साथ ही कामोन्माद—प्लाटिनम।

काला रक्त-स्राव, डोरीकी तरह, मानो उदरमें कोई जीवित पदार्थ घूम रहा है—क्रोकस।

काला, परिमाणमें बहुत थोड़ा और बदबू ; सिर्फ़ हिलने-डोलनेसे ही ऋतु-स्राव होता है—लिलियम।

सिर्फ़ रातमें (या सवेरे ही) ऋतु-स्राव होनेपर—बोविष्टा।

शरीरमें फुन्सियाँ होने बाद ही ऋतु होना—डल्कामारा।

शरीरका रङ्ग पीला, नाककी ठोरपर पीला दाग (देखनेमें घोड़ेकी ज़ीनकी तरह), आँखोंके पास काले चकत्तेकी तरह दाग ; पेटमें शूल-वेदनाकी तरह दर्द, रजः-स्राव थोड़ा या ज्यादा ; श्वेत-प्रदर ; प्रसव-वेदनाकी तरह निचले

उदरमें दर्द ; काली या साँवले रङ्गकी औरतोंकी इस बीमारीमें—सिपिया ६ ।

चमड़ा मैला और चर्बी लगा रहनेकी तरह—नेट्रम-म्यूर ।

योनिकी बीमारीकी वजहसे स्नायुओंमें सुस्ती—जिङ्कम, बेल ६ ।

जरायुका बढ़ना—फ्रैक्सिनस-अमेरिकाना θ (पाँच बून्दके हिसाबसे रोज़ तीन बार) प्रयोगसे बहुत जगह नश्तर लगवानेकी जरूरत मिट गई है । Burnett's "Organ Diseases of Women" पृष्ठ ४२, ४८, ४९ देखिये ।

जरायु-भ्रंश, योनि-प्रदाह और जखममें—निम्फिया-ओडोरेटा बत्तीके (Nymphæa odorata-suppository) रूपमें काममें लानेपर बहुत फायदा होता है ।

सर्दी लगकर रजः-स्राव रुक जानेपर—पल्स ३ ।

सिर्फ दिनमें ऋतु हो, पर सोनेपर रुक जाये—कास्टिकम, लिलियम, कैक्टस ।

दिनमें ऋतु होता रहता है, पर रातमें नहीं होता, लेकिन रातमें प्रदरका स्राव होता है और दिनमें नहीं होता—कास्टि ।

ऋतु दो-तीन दिन बन्द रहकर फिर हो ; खून मैला पानीकी तरह या थक्का-थक्का—फेरम ।

दो सप्ताहके अन्तरसे ऋतु ; स्राव ज्यादा ; रजः-स्राव एक सप्ताह या ज्यादा दिनोंतक स्थायी हो—टिलियम ।

हिलने-डोलनेसे ऋतु-स्राव हो अथवा चलनेपर ऋतु बन्द हो जाये—लिलियम-टिग ।

ज्यादा, तीखा—रसटक्स ।

ज्यादा परिमाणमें काला थक्का-थक्का रक्त-स्राव और इसके साथ दृष्टि-क्षीणता या बेहोशी—साइक्लामेन।

बहुत ज्यादा स्राव, श्वेत-प्रदर, कपड़ा भींज जाता है और पैरतक टपक पड़ता है—सिफिलिनम।

बहुत ज्यादा स्राव, काला, तीखा, कुछ देर बन्द रहता है, फिर होता है—क्रियोजोट।

ज्यादा स्राव, काला, थक्का-थक्का, प्रसव-वेदनाकी तरह दर्द—कैमो।

ज्यादा स्राव, काला, मानसिक विषन्नता, पीठमें दर्द, दोनों स्तनोंमें काँटा बेधनेकी तरह दर्द—सिमिसिफ्यूगा।

हर बार ऋतुकालमें पेटसे खून गिरनेपर—ऐमोन-कार्ब।

हर बार पाखानेके साथ जरायुसे रक्त-स्राव, इसके साथ ही तलपेटमें, कमरमें और पीठमें दर्द—आयोड।

प्रदर, सड़ा, दुर्गन्ध-भरा, तीखा, जखम और कमजोर करने-वाला—क्रियोजोट।

प्रसव-वेदनाकी तरह दर्द और काले रङ्गके श्लेष्माके साथ थोड़ा रजःस्राव होनेपर—एपिस।

वातके साथ ऋतुमें गड़बड़ी रहनेपर—सिमिसिफ्यूगा ३।

देरसे ऋतु होना, पर स्राव थोड़ा, एकाएक बन्द हो जाता है, कुटकुटाता है, तकलीफ़ होती है—सलफर।

दस्त, कै और ठण्डे पसीनेके साथ ऋतु-शूल हिमाङ्ग—विरेट्रम-ऐल्बम।

समयपर ऋतु होता है; पर स्राव थोड़ी देर रहता है और धीमा रहता है—लैकेसिस ।

रज बन्द होनेके समय शरीरमें ताप (या रह-रहकर बदन गर्म हो जाये)—लैकेसिस ।

रक्त ज्यादा हो, चमकीला लाल रङ्गका स्राव—इपिकाक ३ ।

रातके समय या सोये रहनेपर ऋतु-स्राव हो, पर चलनेपर स्राव बन्द हो जाये—मैग्नेशिया-कार्ब ।

जल्दी-जल्दी ऋतु होता है, ऋतुका परिमाण ज्यादा; बहुत समयतक होता रहता है; औंघाई और हाथ-पैर ठण्डे—कैल्के-कार्ब ।

सोनेपर ऋतु-स्राव हो, बैठने या चलनेपर रुक जाये—क्रियोजोट ।

रुक-रुककर बहुत ज्यादा स्राव, मैला पानीकी तरह या काला थक्का-थक्का—फेरम ।

हमेशा खुली और ठण्डी हवामें आराम मालूम हो—पल्स ३ ।

सरलान्त्र और उदरतक ऐंठनकी तरह दर्द; ऋतु-शूल, कालोफाइलम १x ।

थोड़ा, देरसे हो, रजोरोध; ऋतुमें पसीना वगैरह शरीरका सब रस स्निग्ध या अनुत्तेजक—पल्सेटिला ।

थोड़ा रजःस्राव, श्वेत-प्रदर, खासकर गोरी औरतोंका हरित रोग; खुली और ठण्डी हवामें उपशम—पल्स ३ ।

पानी घांटने या नहानेकी वजहसे ऋतु बन्द होनेपर—ऐण्टिम-क्रूड ।

स्राव अलकतरेकी तरह काला; सोनेके समय नहीं होता।

संरुद्ध-भाव (constriction) या डिम्बाशय और जरायुमें दबाव मालूम हो। टपककी तरह दर्द—कैक्टस।

स्राव रुकने या देरसे होनेपर (खासकर सर्दी लगकर होनेपर) पलसेटिला ३।

हृत्पिण्डके चारों ओर शूलके साथ बाधकका दर्द—कोनायम।

(ज) प्रदर और श्वेत-प्रदर

(Leucorrhoea)

जरायुकी आवरक-झिल्लीसे, जरायुके भीतरसे और जरायुके मुँहसे, कई रङ्गोंका (जैसे—सफेद, पीला, नीला, दूधकी तरह, मांसके धोवनकी तरह या काला अलकतरेकी तरह) स्राव होता है, इसीको "प्रदर" कहते हैं। स्राव साधारणतः सफेद ही हुआ करता है, इसलिये इसका साधारण नाम "श्वेत-प्रदर" हो गया है। गण्डमाला धातु-ग्रस्ता थोड़ी उम्रकी बालिकाओंको भी कभी-कभी यह बीमारी हुआ करती है। समयपर इलाज न होनेसे धीरे-धीरे जरायुसे ज्यादा परिमाणमें पीवकी तरह स्राव होने लगता है और इसी कारणसे योनिके भीतर और मुँहपर जखम हो जाता है। कब्जियत, सरमें दर्द, पेट फूलना, पचनेकी क्रियामें गड़बड़ी और चेहरेपर रक्तकी कमी वगैरह लक्षण इस रोगमें मौजूद रहते हैं।

सर्दी लगना, क्रिमि, गन्दे रहना, उत्तेजक पदार्थ खाना-पीना, स्वास्थ्य बिगड़ना, ज्यादा सङ्गम, बीच-बीचमें ज्यादा रक्त-स्राव, जरायुमें कोई उत्तेजक पदार्थ रहना, कर्कटिका होकर योनिमें प्रदाह, बार-बार गर्भपात वगैरह कारणोंसे श्वेत-प्रदर होता है। श्लेष्मा-प्रधाना और गण्डमाला-धातुग्रस्ता औरतोंको ही यह बीमारी ज्यादा हुआ करती है।

चिकित्सा

कैल्केरिया-कार्ब ३०, २००।—(दूधकी तरह सफेद प्रदर) जरायुमें जलन, खुजली, दर्द। **लड़कियों** और गण्डमाला-धातु-ग्रस्ता औरतोंके प्रदरमें यह ज्यादा फायदा करता है।

पल्सेटिला ६।—सब तरहके प्रदरोंमें यह फायदा करता है। सफेद रङ्गका गाढ़ा स्राव, ऋतुके बाद यह स्राव बढ़ जाता है (इसमें दर्द कभी रहता है और कभी नहीं भी रहता)।

सिपिया ६, २००।—प्रसव-वेदनाकी तरह दर्द। कब्जियत; थोड़ा पीले या हरे रङ्गका बदबूदार स्राव या बदबूदार पानीकी तरह स्राव। क्षीणाङ्गी और वायु-प्रधाना स्त्रियोंके लिये यह ज्यादा फायदेमन्द है।

एसिड-नाइट्रिक ६।—कितने ही रोग भोगने या गर्मी रोगके बाद (या बहुत ज्यादा पारा खानेके बाद)

श्वेत-प्रदर होनेपर यह दवा बहुत फायदा करती है। पहले धुमैला या गाढ़ा स्राव होकर पाँच-छ: दिन बाद, पतले पानीकी तरह या मांसके धोवनकी तरह बदबूदार स्राव होता है।

क्रियोजोट ६।—दो ऋतुओंके बीचके समयमें या ऋतुके चार-पाँच दिन बाद पीले रङ्गका कच्चे धानकी तरह गन्ध-भरा पीले रङ्गका स्राव; स्राव कपड़ेमें लगनेपर पीला दाग पड़ता है और सूखनेपर कड़कड़ करता है, स्रावमें बदबू; जरायुके बाहर सूजन; डङ्क मारनेकी तरह जलन और खुजली; ऊरुमें स्राव लगकर खाल उधड़ जाती है और पीठमें दर्द होता है।

बोविष्टा १२।—अण्डेके सफेद अंशके रङ्गका पुराना श्वेत-प्रदर और उसके साथ ही रोगिनी अपना माथा बढ़ा हुआ समझती है। ऋतुके दो-एक दिन पहले और बाद स्राव; स्राव पीला या हरा, जलन या जखम बना देनेवाला। स्राव लगनेपर कपड़ेमें पीला दाग पड़ता है। गाढ़ा लसदार स्राव; कामेच्छा प्रबल; चलनेके समय स्राव।

बोरैक्स ६।—अण्डलालकी तरह प्रदर, अस्वाभाविक उत्तप्त प्रदर। ऐसा मालूम होता है, मानो ऊरुदेश होकर गर्म पानी गिर रहा है; प्रदरके साथ बन्ध्यत्व। दो ऋतुओंके बीचमें प्रदरका स्राव।

ग्रैफाइटिस ३०, २००।—सफेद, पतला, सवेरे बिछावनसे उठनेपर बहुत ज्यादा श्वेत-प्रदर, पेशाबमें

जलन, पीठमें बहुत कमजोरी मालूम होना। बैठे रहने या चलनेपर पीठमें कमजोरी अनुभव होना ; ऋतुके पहले या बाद दिन या रातमें प्रबल स्राव।

ऐल्यूमिना ३० ।—जलन और जखम कर देनेवाला स्राव, बहुत जलन करनेवाला स्राव, ठण्डे पानीसे धोनेपर कुछ आराम मिलता है। दिनमें स्वच्छ, पर प्रचुर स्राव। किसी भी दवासे जब फायदा न हो, तो इसे देना चाहिये।

सलफर ३० ।—पुराना श्वेत-प्रदर। बहुत दिनोंतक भोगनेपर दो-एक मात्रा सलफर देना चाहिये।

सफेद या हरे रङ्गका स्राव होनेपर—मर्क-सोल, सिपिया, कैल्के-कार्ब, चायना और नेट्रम-म्यूर। क्रिमिकी वजहसे पैदा हुए प्रदरमें—साइना २x—२००। पानीकी तरह पतले स्रावमें—सैबाइना, फेरम और पल्स। तेज़ और जलन पैदा करनेवाले स्रावमें—एसिड-नाइट्रिक, पल्सेटिला, क्रियोजोट और आर्सेनिक। गरम स्रावमें—ग्रैफाइटिस ३x या हाइड्रै-स्टिस ३x। दूधकी तरह स्रावमें—सिलिका, कैल्केरिया-कार्ब, पल्सेटिला, लाइकोपोडियम और फेरम। खून-मिले स्रावमें, क्रियोजोट लाइकोपोडियम और चायना। हरे रङ्गके स्रावमें—कार्बो-वेज, सलफर ३०, मर्क, क्रियो। पीले रङ्गके स्रावमें—कैलि-बाइ। स्रावमें, बदबू—कार्बो-वेज, कैल्क-कार्ब, सिपिया, पल्स। गाढ़े स्रावमें—सिपिया, मेजेरियम, जिङ्कम। सिर्फ रातके समय स्राव होनेपर—ऐम्ब्राग्रिसिया ३ या कास्टिकम

३०। केवल दिनके समय स्राव होनेपर—ऐल्यूमिना। सवेरे बिछौनेसे उठते ही स्राव होनेपर कार्बो-वेज। ये सभी दवाएँ छः शक्तिकी देनी चाहियें। बीच-बीचमें दवा बन्द कर देनी चाहिये।

मशहूर नश्तर लगानेवाले और प्रदरके इलाजमें सिद्धहस्त डा० एच० आई० आस्ट्रम एम. डी. साहबने प्रदरके सम्बन्धमें जो कुछ कहा है, उसका सारांश नीचे लिखा जाता है :—श्लेष्मा-मिला पीव-स्राव साधारणतः पीली आभा लिये होता है और उसमें पीवका हिस्सा ज्यादा रहता है, इस वजहसे वह गाढ़ी मलाई जैसा मालूम होता है; जरायु-ग्रीवा-नाली-पथ (cervical canal) आक्रान्त होनेपर साफ़-सुथरा श्लेष्मा गदले पदार्थ (कभी-कभी थोड़ा खून) के साथ मिलकर सूतकी तरह या डोरीकी शकलमें निकलता है। पल्स, सिपिया, ऐनेंड्रिस, हाइड्रैस्टिस, कैलि-बाई, कैलि-क्लोर, आयोडिन, क्रियोजोट प्रभृति दवाएँ इसमें फायदा करती हैं। आगे लिखी बायोकेमिक दवाएँ भी लाभदायक हैं :—कैल्क-फास (बहुत सन्तानवाली औरतको फायदा करता है), कैल्के-सल्फ (प्रदर-जनित स्नायविक उपसर्ग मौजूद रहनेपर। पीव-भरे स्रावकी अगर प्रधानता हो तो)—कैलि-फास भोजनके पहले गर्म पानीके साथ सेवन। (Ostrom's Leucorrhœa और Cushing's Leucorrhoea देखिये)।

नियम—रोज़ नहाना, जननेन्द्रियको दिनमें तीन-चार बार धोना और खुली हवाका सेवन उचित है। पिचकारी

(female syringe) से ठण्डे पानीसे धो डालनेसे योनिमें बदबू नहीं पैदा हो सकती, परन्तु गर्भावस्थामें पिचकारीका व्यवहार न करना चाहिये। नाटक, नावेल पढ़ना, थियेटर वगैरहमें जाना और स्वामी-सहवास त्याग देना चाहिये। हलकी और पुष्ट चीजें खानी चाहियें।

प्रदरकी प्रकृतिवाले कई उपसर्ग और दवाएँ

प्रदर तेज़ गन्धभरा, दुर्बलताके साथ खुजली, किसी अङ्गमें लगनेसे खाल उधड़ जाती—क्रियोजोट ६।

„ अनुत्तेजक या स्निग्ध, गाढ़ा ; देखनेमें दूध या मलाईकी तरह—पल्सेटिला।

„ अनुत्तेजक या स्निग्ध, गहरा भूरा रङ्ग, गाढ़ा, काला, जखम पैदा करनेवाला, श्वेत-सारकी तरह ; कपड़ेमें पीला दाग पड़ता है ; कच्चे सरसोंकी तरह गन्ध—क्रियोजोट।

„ जखम-भरा चमड़ा और कपड़ेमें दाग पड़ता है—आयोड।

„ काला और बदबूदार—सिकेलि।

„ ऋतु होनेके पहले गहरी हरी आभा—कार्बो-वेज।

„ गहरा और गाढ़ा—पल्स।

प्रदर लसदार—कैलि-बाई, हाइड्रैस्टिस, ऐलूम, कैलि-म्यूर।
„ खुजली भरा—कैल्के-कार्ब।
„ पानीकी तरह—ऐमोन-कार्ब, ग्रैफाइटिस, मर्क-कोर, सिपिया, सिफिलिनम।
„ पानीकी तरह, जलन, तीव्र—ऐमोन-कार्ब।
„ तेज़ गन्धभरा, पानीकी तरह, कुटकुटाता हो—नैट्रम-म्यूर।
„ तेज़ गन्ध, पतला पानी जैसा, पीला, किसी अङ्गमें लगनेपर वहाँकी खाल उधड़ जाती है। लिलियम-टिग, ऐल्यूमिना, फेरम, फास्फो, मर्क-सोल।
„ अण्डेके सफेद भागकी तरह, नाभीकी चारों ओर शूल-वेदना, पेशाबके बाद योनि-मार्गसे भूरा चिकना स्राव निकलना—ऐमोन-म्यूर।
„ अण्डेके सफेद भागकी तरह—मानो गर्म पानी निकल रहा है, रोगिनी ऐसा समझती है—बोरैक्स।
„ दूधकी तरह, तेज़-गन्ध, पेशाब करनेके समय प्रदर-स्राव होता है—सिलिका, पल्स, कैल्के-कार्ब।
„ दूधकी तरह, खुजली (या खुजलाता हो) छोटी बालिकाओंके (खासकर कौलिक गण्डमाला ग्रस्ता रोगिनीके लिये) श्वेत-प्रदरमें—कैल्क-कार्ब।
„ निष्कासित। ताजे मांसकी तरह, हरी आभा, बहुत बदबू—नाइट्रिक-एसिड।

प्रदर ज्यादा, तेज, कपड़ेमें लगनेपर कड़ा और हरा हो जाता है—लैकेसिस।

„ वज्रमूल (अर्थात् कोई दवा खानेसे फायदा न हो)—ऐल्यूमिना ३०—२००।

„ बदरङ्ग, प्रदरका स्राव, किसी अङ्गमें लगनेसे खाल उधड़ जाती है, स्तनोंमें अकड़न, सङ्गमसे घृणा—ग्रैफाइटिस।

„ लाल रङ्ग—कार्ब्युलस, चायना।

„ रक्त-सञ्चय—नयी बीमारीमें—बेल ३।

„ खूनकी तरह लाल (रह-रहकर पैदा हो), पारी बाँध-कर होता है, काटनेकी तरह दर्द, दाहिनी ओरसे लेकर बायीं ओरतक फैल जाता है—लाइको।

„ श्वेत-सारकी तरह सफेद, स्निग्ध, यन्त्रणाहीन—बोरैक्स ३।

„ श्लेष्मामय—बोरैक्स, मैग्ने-कार्ब।

„ मलाईकी तरह, तेज़ गन्ध, काली औरतोंके लिये—सिपिया ३।

प्रदरके साथ जरायु निकलना, कमजोरी—हेलोनियस θ की मात्रा ५ बून्द (प्रदरकी एक बढ़िया दवा है)।

प्रदरके साथ पीठ और कमरमें विकलता, चलना कठिन और कष्टकर—इस्क्यूलस।

प्रदरके साथ बहुत कमजोरी और हमेशा थकन मालूम होना—एलिट्रिस-फैरिनोसा १।

———

(झ) रजोनिवृत्ति

(Menopause)

पहले ही कहा जा चुका है, कि औरतोंको ऋतु ३०-३२ वर्षतक होता रहता है (जैसे—अगर चौदहवें वर्षमें किसी औरतको ऋतुका होना शुरू हुआ तो प्रायः चौवालिस वर्षकी उम्रतक उसको ऋतु होता रहेगा)। साधारणतः चालीस वर्षकी उम्रमें स्त्री-जननेन्द्रियमें खून कम इकट्ठा होने लगता है और ४५-५० वर्षकी उम्रमें ताकतवर औरतोंका भी ऋतु एकदम बन्द हो जाता है। इस अवस्थामें जरायुका आकार छोटा हो जाता है, योनि सिकुड़ जाती है और कमजोरीके लक्षण दिखाई देने लगते हैं। इस तरह आप-ही-आप ऋतु बन्द हो जानेपर फिर कोई दवा देनेकी जरूरत नहीं रहती।

परन्तु यदि सहजमें यह हालत न पैदा होकर स्नायुकी उग्रता (जैसे—शरीरमें तापकी झलक या बार-बार गर्म मालूम होना; सरमें दर्द, कलेजा धड़कना; हिस्टीरिया), मिचली, कब्जियत, पेटमें वायु जमा होना, ज्यादा पसीना होना, बहुत पेशाब होना वगैरह लक्षण दिखाई दें, तो दवा देनी चाहिये। रज बन्द होनेके कुछ पहले कोई-कोई स्त्री खूब स्वस्थ और बलवान हो जाती है।

चिकित्सा

लैकेसिस ६ ।—(इस रोगकी प्रधान दवा है) रह-रहकर तापकी झलक ; बार-बार गर्मी मालूम होना, पसीना, सरमें जलन, नींदके बाद रोगके उपसर्गों का बढ़ना।

सैंगुइनेरिया ३x या ऐमिल-नाइट्रेट ३ ।—(स्नायविक लक्षणमें) यदि लैकेसिससे फायदा न हो।

ज्यादा पसीना या लार निकलनेपर **जैबोरैण्डी २x** ; ज्यादा सर-दर्दमें **ग्लोनोइन ३** ; माथेमें ज्यादा जलन मालूम हो, **चायना ६ या फेरम ६** ; पाकस्थलीमें खाली-पन मालूम हो, **हाइड्रोसियानिक एसिड ६** ; (रोगिनी अगर बलवान हो तो डाक्टर लेडम, हाइड्रो-एसिडके बदले **ऐकोनाइट ३** देनेकी राय देते हैं)। कैलि-कार्ब ६ (पित्त अधिक हो ; भूखकी कमीके साथ तापकी झलक हो), सलफर ३० ; इग्नेशिया ३, सिमिसिफ्यूगा ३, वैलेरियाना ३ (विषाद, अनिद्रा, गलेमें गोला उठता हो, ऐसा मालूम होना) ; सिपिया ३० कैल्केरिया ३० वगैरह दवाओंको भी बहुधा जरूरत पड़ती है।

रजोनिवृत्तिके समय किसी-किसी औरतको उन्माद रोग हो जाता है। साइक्लामेन ३ (खासकर अवसन्नता, रोना और अकेली रहनेकी इच्छाके लक्षणमें), हिप्पोमेनिस ६-३० (विषन्नता

बेचैनी, रोगिनीको हमेशा जगह बदले बिना चैन न पड़ती हो), इस रोगकी बढ़िया दवाएँ हैं। "उन्माद" रोग देखिये।

नियम—थोड़े गर्म पानीसे नहाना, जल्दी पचनेवाली चीजें खाना, समयपर सोना, थोड़ा परिश्रम, खुली हवाका सेवन उचित है। रोग घटानेके लिये बहुत-सी स्त्रियाँ उत्तेजक या नींद लानेवाली दवाएँ खाती हैं। ये बहुत नुकसान करती हैं।

(ञ) हरित् रोग
(Chlorosis)

इस बीमारीमें खूनके लाल-कणका भाग कम पड़ जाता है ; इसी वजहसे शरीरका चमड़ा खड़ियाकी तरह सूखा, पीला या हलका गन्धकी रङ्गका हो जाता है। नियमित समयपर अकसर ऋतु नहीं होता, शरीरकी गर्मी कम हो जाती है, हमेशा जाड़ा मालूम होता है, सरमें दर्द, पलकें फूली, आँखोंके चारों ओर काला दाग, कलेजा धड़कना, नाड़ी क्षीण, ओठोंमें खूनका चिन्ह न रहना, अजीर्ण, कब्जियत, चिड़चिड़ा स्वभाव, अरुचि वगैरह लक्षण पैदा हो जाते हैं। रक्त-स्राव, हस्तमैथुन, ऋतुकी गड़बड़ी, नियमित शारीरिक परिश्रम न करना, दुश्चिन्ता वगैरह कारणोंसे यह रोग होता है।

चिकित्सा

फेरम-रेडैक्टम २x विचूर्ण ।—यह इस रोगकी प्रधान दवा है। एक ग्रेनके हिसाबसे दो बार सेवन करना चाहिये। ह्यूज, वेयर, जूसों, ब्लैकी वगैरह सभी सुचिकित्सक इस दवाके पक्षपाती हैं।

डाक्टर गैचेल कहते हैं, कि "फेरम-रेडैक्टम २x इस रोगकी सबसे अच्छी दवा है और इसके सेवनसे कितनी ही बार रोग आराम हो जाता है। शरीरका चमड़ा पीला, अजीर्ण, हमेशा जाड़ा लगना (कभी-कभी गर्मी मालूम होना या एकाएक मानो शरीरसे तापकी झलक निकलती है, ऐसा मालूम होना); सरमें दर्द, बहुत रजः-स्राव या रजोरोध, इस दवाके प्रयोगके प्रधान लक्षण हैं।"

ग्रैफाइटिस ३x ।—स्वल्प-रजः, सूखा या रुखड़ा चमड़ा, कब्जियत, गर्म स्राव, शरीर मोटा हो जाना।

कैल्के-कार्ब ३, ३० ।—बालिकावस्थामें रोग आरम्भ; १२—१६ वर्षकी बालिकाओंको यह बीमारी होनेपर, स्नायु-शूल, सरमें चारों ओर पसीना पैर ठण्डे, अस्थि-गुल्म (nodes) बढ़ जाना प्रभृति लक्षणोंमें। पुरानी सर्दी या अतिसार; पीठकी रीढ़ कमजोर या टेढ़े हो जानेकी तैयारी; रोगिनी यदि धीरे-धीरे मोटी होती जाती हो, तो इस लक्षणमें विशेष फायदा करता है।

फूप्रम ६ ।—लोहेसे बनी (या फेरम) दवाओंका अपव्यवहार ; गर्म पानीसे रोगका बढ़ना ।

फेरम-मेट ।—बहुत कमजोरी ; मुँह और ओंठ पीले या खाकी रङ्गके अथवा हरी आभा लिये ; सरमें चक्कर ; कान भों-भों करना ; कलेजा धड़कना ; श्वास-कष्ट, बहुत जाड़ा मालूम होना ; रजारोध ।

सिपिया १२ ।—तेज़ सर-दर्द ; जरायु-प्रदेशमें दर्द ; हमेशा पेट खूब चिपका रहना ; स्वल्प-रजः या रजोरोध या बहुत दिनोंके बाद ऋतु होना ; पोला या हरे रङ्गका प्रदर ; कब्जियत ; बकरीकी मींगीकी तरह मल ; जोर लगानेपर भी पाखाना न होना, सिर्फ वायु निकल जाना या श्लेष्मा निकलना, अधकपारीका सर-दर्द ।

वेलेरियाना θ ।—स्नायविक उपसर्ग या हिस्टीरियाके साथ हरित्-रोग ।

आर्जेण्टम-नाइट्रिक ६ ।—वमन ; पेटमें दर्द ; कलेजा धड़कना ; मूर्च्छा ।

हेलोनियस २x या पिक्रिक-एसिड ६ ।—पेशाबमें फास्फेट (phosphates) की अधिकता ।

आर्सेनिक ३० ।—ज्यादा परिमाणमें रक्त-स्राव या शोथ होनेपर अथवा लोहेसे बनी दवाओंके अपव्यवहारसे पैदा हुआ रोग या रोगी कमजोर हो जानेपर इसका प्रयोग होता है ।

पल्सेटिला ३x, ६ ।—ऋतु एकदम बन्द या परिमाणमें बहुत कम होना । सर्दी लगनेके कारण ऋतु बन्द होकर रोगिनी अगर धीरे-धीरे कमजोर हो पड़े । हमेशा सर्दी मालूम होना ; हाथ-पैर ठण्डे, कलेजा धड़कना, प्रदर देखनेमें दूध जैसा । रोना, गर्म घरमें रोगिनी एकदम न रह सकती हो, खुली हवामें रहनेकी इच्छा (डा० Jahr इस रोगमें सबसे पहले पल्स देते थे) ।

सलफर ३० ।—ब्रह्मतालु तथा हाथ-पैरकी तलहथीमें गर्मी मालूम होना ; कब्जियत ; रातमें बेचैनी ; प्रदर ; बहुत दिनोंतक रोग भोगनेपर ।

नेट्रम-म्यूर १२x विचूर्ण, ३० ।— उरु-देशकी सन्धिमें सर्दी मालूम होना ; तलपेटमें भार, शोथ, कब्जियत, ऋतु बन्द, परन्तु बीच-बीचमें कपड़ेमें दाग पड़ना ; उत्कण्ठा वगैरह लक्षणमें । पुराने दुर्दमनीय रोगमें यह फायदा करता है । प्लाटिना ६, फास्फोरिक-एसिड ६, प्लम्बम ६, पेट्रोलियम ३०, कैल्के-फास ६x—३० और "रक्त-स्वल्पता" "यक्ष्मा-कास" रोगकी दवाएँ बीच-बीचमें आवश्यक हो सकती हैं ।

नियम ।—ठण्डे पानीमें (खासकर समुद्रका पानी) नहाना, साफ़-हवाका सेवन, दूध पीना, दलिया (bran) या जाँतेके पीसे आँटेकी हाथसे बनाई रोटी खाना या सूर्यकी रोशनीमें इधर-उधर घूमना चाहिये । रोगिनीको कभी आलसिनकी तरह वक्त न बिताना चाहिये । कच्चा अण्डा या

अण्डेका पीला अंश, छोटी मछली, तरकारी, ताजे पके फल, दूध, दही, मठा और ज्यादा परिमाणमें पानी पीना और कपड़े उतारकर समूचे शरीरमें धूप लगने देना अच्छा है। "रक्त-स्वल्पता" अनुच्छेदमें "हरित् पीड़ा" देखिये।

२। जरायुकी बीमारियाँ

(Diseases of the Uterus)

जरायुकी बीमारियोंमें नीचे लिखी कई प्रधान बीमारियोंका विषय क्रमसे लिखा जाता है। (क) जरायुकी उग्रता, (ख) जरायुज मूर्च्छा, (ग) जरायु-प्रदाह, (घ) जरायुसे रक्त-स्राव, (ङ) जरायुमें वायु या पानी इकट्ठा होना, (च) जरायुका अर्बुद, (छ) जरायुकी स्थान-च्युति, (ज) जरायुकी दूसरी कई बीमारियाँ।

(क) जरायुकी उग्रता

(Hysteralgia)

जरायुमें दर्द मालूम होना, समूचे वस्ति-देशमें टपककी तरह दर्द (यह दर्द स्नायविक, ऋतुके समय और हिलानेसे बढ़ता हो)। भूख न लगना, बेचैनी, मिचली, नींद न आना, पाकाशयकी गड़बड़ी, इस रोगके प्रधान लक्षण हैं।

चिकित्सा

सिमिसिफ्यूगा ३x, ३०।—इस बीमारीकी प्रधान दवा है।

आर्निका ६।—ऋतुकी हालतमें ज्यादा परिश्रम या प्रसवके बाद ही चलने-फिरनेके कारण यह बीमारी होनेपर।

इस बीमारीमें आमाशयकी गड़बड़ी और पाकस्थलीमें दर्द रहनेपर—कैमोमिला ६, नक्स-वोमिका ३०, मर्क्यूरियस ६ या पल्सेटिला ६ देना चाहिये।

(ख) जरायुज-मूर्च्छा या हिस्टीरिया
(Hysteria)

स्नायु सब (खासकर जरायुके स्नायु-समूह) की उग्रताकी वजहसे यह मूर्च्छा-रोग पैदा होता है।

चिकित्सा—"गुल्म" रोगकी चिकित्सा देखिये।

मूर्च्छाकी हालतमें रोगिनीका मुँह और नाकका छेद बहुत थोड़ी देरतक अच्छी तरह बन्द रखने, कुछ ऊँची जगहसे उसके मुँहपर पानीकी धार इस तरहसे देनेसे कि उसका श्वास कुछ देरके लिये बन्द हो जाये, इस वजहसे

वह एक बार जोरसे लम्बी साँस लेनेके लिये वाध्य होगी और तुरन्त ही बेहोशी दूर हो जायगी।

(ग) जरायु-प्रदाह
(Metritis)

यह दो प्रकारका है:—नया और पुराना।

नये जरायु-प्रदाहमें।—प्रसव या गर्भ-स्रावका खून दूषित हो जानेपर हमेशा यह तरुण प्रदाह हुआ करता है। इस बीमारीमें हमेशा जरायुकी गर्दनपर हमला होता है। बहुत जाड़ा लगना, तेज़ बोखार, तलपेटमें दर्द, इसके प्रधान लक्षण हैं। ये सब लक्षण दिखाई देते ही **विरेट्रम-विरिडि ३x** देना चाहिये। इसके बाद **नक्स-वोमिका ३०** की जरूरत पड़ सकती है। **माइरोजन ३०**, बेलेडोना ६, कोलोसिन्थ ६, रसटक्स ६, लैकेसिस ६ भी बीच-बीचमें लाभ करते हैं। यह रोग कड़ा है, इसलिये उपयुक्त चिकित्सकपर निर्भर करना उचित है। खून दूषित न होनेपर, डरकी कोई बात नहीं है। सर्दी लगनेकी वजहसे होनेपर दो-तीन मात्रा ऐकोनाइट २ देनेसे ही बीमारी आराम हो सकती है।

पुराना जरायु-प्रदाह।—प्रसवके बाद जरायु संकुचित न हो, नकली उपायोंसे गर्भ होना रोका जाये या

बहुत दिनोंतक हरित् रोग भोगनेके कारण जरायु क्रमशः दर्द-भरा, कड़ा और बड़ा हो जाता है। इसे ही "पुराना जरायु-प्रदाह" कहते हैं। पेट भारी मालूम होना वाधकका दर्द, स्तन और कमरमें दर्द, ऋतुमें गड़बड़ी, स्वामी-सहवासमें दर्द और मलद्वारमें वेग, हिस्टीरिया वगैरह इस बीमारीके प्रधान लक्षण हैं।

चिकित्सा

सैबाइना ३x।—साफ़, लाल, थक्का-थक्का या ज्यादा पतला वेशी मात्रामें खून निकलना।

बेलेडोना ३x।—प्रकृत जरायु-प्रदाहमें डाक्टर मैथसिन सिर्फ बेलेडोनापर भरोसा करनेकी सलाह देते हैं। "जरायु-प्रदेशमें जलन और दबाव मालूम हो, मानो उदरके भीतरवाले यन्त्र आदि सब बाहर निकल पड़ेंगे।" ऐसे लक्षणमें बेलेडोना ज्यादा फायदा करता है।

सिपिया १२।—प्रसवके दर्दकी तरह दर्द; खून बहुत थोड़ा निकलना; प्रसव-द्वारमें खुजली।

हाइड्रैस्टिस ३x, ३०।—जरायु-ग्रीवा या जरायुके मुँहपर और लड़का होनेकी राहमें जखम; गाढ़ा और पीले रङ्गका प्रदर जाना।

आरम-मेटालिकम ३०, आरम-म्यूर-नैट ३ विचूर्ण, पलसे-टिला ६, म्यूरेक्स ६, लैकेसिस ६, सिमिसिफ्यूगा ६, सलफर

३० को भी लक्षणके अनुसार कभी-कभी जरूरत पड़ सकती है।

नियम।—योनिको रोज़ दो-तीन बार अच्छी तरह धोना चाहिये। जरायुके मुँहपर जखम रहनेपर, दस भाग पानीके साथ एक भाग हाइड्रैस्टिस θ मिलाकर धो डालना अच्छा है। जबतक बीमारी अच्छी न हो जाये, तबतक सहवास करना या खूब कमर कसकर कपड़े पहनना उचित नहीं है। रोज़ समयपर नहाना, पुष्ट चीजें खाना और नियमित परिश्रम करना उचित है।

(घ) जरायुसे रजःस्राव

(Metrorrhagia)

ऋतुके समयके अलावा दूसरे समय अगर थोड़ा या अधिक खून जाता हो तो उसे "जरायुका रजःस्राव" कहते हैं। ऋतुके खून जानेके साथ इसका कोई सम्बन्ध नहीं है; इसीलिये ऋतुके साथ या उसके पहले या बाद भी यह रजःस्राव होता रह सकता है। इसमें अतिरजःकी तरह ज्यादा या थोड़ा खून भी जा सकता है। जरायुमें अर्बुद, प्रसवके बाद फूलका न निकलना, चोट लगना वगैरह कितने ही कारणोंसे ऐसा होता है। सुस्ती, भूख न लगना, बैठ जानेपर उठ न सकना वगैरह इसके प्रधान लक्षण हैं।

निकला हुआ खून गहरा लाल या काला भी हो सकता है। लाल रङ्गका होनेपर **धमनीका रक्त-स्राव** (arterial or active hæmorrhage) और काला या बैंगनी होनेपर उसे **शिराका रक्त-स्राव** (venous or passive hæmorrhage) समझना चाहिये।

चिकित्सा। - ठहर-ठहरकर दर्दके साथ चमकीले रक्त-स्रावमें, सैबाइना ३x। बिना दर्दके काले रक्त-स्रावमें, हैमामिलिस ३x। चोटकी वजहसे बीमारी होनेपर, आर्निका ३x। गर्भ-स्राव या प्रसवके बाद, सिकेलि ३। अतिरजः, चमकीला लाल खून, तलपेटमें प्रसवके दर्दकी तरह दर्द, फिकस-रिलिजियोसा १x। काला-काला, ढेला-ढेला खून गिरनेके साथ प्रचण्ड दर्द होनेपर—कैमो। रजोनिवृत्ति होनेके बाद भी बहुत दिनोंतक ज्यादा खून जाते रहनेपर—विङ्का-माइनर ३। बीमारी दुःसाध्य होनेपर जब किसी दवासे फायदा न हो—थ्लैस्पि-बार्सा-पैष्टोरिस θ—३x। पुरानी बीमारीमें सलफर ३० या सिपिया ३०। आर्ज नाइट्रिक ६, हायोसायमस ३, लैकेसिस ६ और "अतिरजः" "बाधक" वगैरह बीमारियोंकी दवाएँ लक्षणके अनुसार इस रोगमें भी दी जाती हैं।

———

(ङ) जरायुमें वायु या पानी जमा होना अथवा रक्त-सञ्चय

प्रदाह वगैरह कारणोंसे जरायुमें वायु पैदा होता है और जरायुपर दबाव पड़नेसे वही हवा फसफस शब्दके साथ बाहर निकल जाती है; इसे ही "जरायुमें वायु-सञ्चय (Physo-metra)" कहते हैं। ब्रोमाइन ३-६ बेलेडोना ३x, एसिड-फास ३ या लाइकोपोडियम १२ इस रोगकी दवाएँ हैं।

प्रदाह या जखम सूखकर किसी-किसी स्त्रीके जरायुका मुँह बन्द हो जाता है, किसी-किसीके जरायुका मुँह जन्मसे ही बन्द रहता है। जरायुका मुँह बन्द हो जानेपर, जरायु धीरे-धीरे बड़ा होता है। उसको ढँकनेवाली झिल्लीसे जल या खून निकला करता है। इसी वजहसे जरायुमें "जल-सञ्चय (Hydrometra)" या "रक्त-सञ्चय (Hemato-metra)" हुआ करता है। सिपिया ६—३० "जल-सञ्चयको" और कैल्केरिया-कार्ब ६, कार्बो-वेजिटेबिलिस ३० "रक्त-सञ्चयको" उत्कृष्ट दवाएँ हैं।

———

(च) जरायुका अर्बुद

(Uterine Tumours)

कभी-कभी जरायु-गात्रपर या जरायु-गह्वरमें कितने ही तरहकी फुन्सियाँ होती हैं। इनका आकार मटर या उड़दसे लेकर आध मनतक हो सकता है और ये गिनतीमें एकसे लेकर पचासतक हो सकती हैं। किसी फुन्सीसे खून और पीव निकलता है, किसीसे खून नहीं भी निकलता। कभी-कभी श्वेत-प्रदर भी मौजूद रहता है। इस बीमारीकी वजहसे खूनकी कमी होकर बाँझपन तक हो जा सकता है।

चिकित्सा

कैल्केरिया-आयोड ३x विचूर्ण।—(एक ग्रेन मात्रामें दिनमें चार बार सेवन करना चाहिये।) सब तरहके अर्बुदकी यह बढ़िया दवा है। इससे फायदा न होनेपर—लैकेसिस ३०, कार्सिनोसिन २००, सिलिका ६x चूर्ण, सिकेलि २x, थ्लैस्पि २x, हाइड्रैस्टिनिनम २x विचूर्ण वगैरह दवाएँ समय-समयपर आवश्यक होती हैं।

———

जरायुका दूषित अर्बुद* या कर्कट
(Uterine Cancer)

यह सन्देह होनेपर कि जरायुमें अर्बुद हुआ है, थूजा ३-६ देना चाहिये ; पर निश्चय हो जानेपर, हाइड्रैस्टिस θ सेवन और हाइड्रैस्टिस-धावनका बाहरी प्रयोग करना चाहिये और आरम-मूरिएट ३x सप्ताह या पक्षमें एक बार, कार्सिनोसिनम ३०—२०० सेवन करना चाहिये। बहुत ज्यादा रक्त-स्राव होता हो, तो हैमामेलिसका बाहरी प्रयोग करना चाहिये।

आर्सेनिक-आयोड ६ ।—जरायुमें दूषित अर्बुद रोग (Cancer) की पहली अवस्थामें।

थूजा ३० ।—यदि दूषित अर्बुदकी अंकुरवाली अवस्था बीत गयी हो और आर्सेनिक-आयोडसे फायदा न होता हो, उपदंशसे पैदा हुए अर्बुदमें भी यह फायदा करता है।

रूटा θ दूधकी चीनीके साथ एक मात्रा सिर्फ एक पक्षके अन्तमें सेवन करना चाहिये। एपिफिस्टेरिनम ३० (ज्यादा रक्त-स्रावमें) वगरह दवाओंकी समय-समयपर जरूरत हो सकती है। "कर्कट रोग" देखिये।

———

* इसको "कर्कट या "घुरघुरिया क्षत" कहते हैं।

(छ) जरायुकी स्थान-च्युति

(Displacement of the Uterus)

बहुत ज्यादा मेहनत, भारी चीजें उठाना, बहुत देरतक उकड़ू होकर बैठना, पाखाना होते समय काँखना, प्रसवके बाद जल्दी-जल्दी उठ बैठना, कब्जियत, हमेशा जुलाब लेना, बहुत सङ्गम, बवासीर, कै, कसकर कपड़े पहनना, उछल-कूद करना और चोट वगैरह कारणोंसे जरायु कभी-कभी अपनी जगहसे हट जाता है। इसे ही "नल्ला हटना" या "नाभी हटना" कहते हैं। यह साधारणतः दो तरहका होता है :—(१) अपनी जगहसे हटकर वस्ति-गह्वरमें ही रहना ; (२) योनिके बाहर निकलना। इन दोनों तरहके नल्ला हटनेकी बीमारीमें, जरायु या तो सामनेकी ओर झूल पड़ता है (या झुक जाता है) अथवा पीछेकी ओर हट जाता है (या उतर जाता है)। तलपेटमें दर्द (जरायुकी जगहमें) पाखाना, पेशाबमें तकलीफ़, श्वेत-प्रदर, रक्त-स्राव या रक्त-स्वल्पता, वाधक, बन्ध्यत्व वगैरह इस बीमारीके प्रधान लक्षण हैं।

चिकित्सा

सिपिया १२।—इस बीमारीकी बहुत बढ़िया दवा है।

आरम-म्यूर-नैट ३x विचूर्ण, कैल्केरिया-फास १२x विचूर्ण, बेलेडोना ३x, सिमिसिफ्यूगा १x, फेरम-आयोड ३x विचूर्ण,

सिकेलि ६, कास्टिकम ३०, स्टैनम ६, फ्रैकुसिनम θ लक्षणके अनुसार समय-समयपर आवश्यक होते हैं।

बहुत उतरना-चढ़ना, घूमना मना है। ऐसा उपाय करना चाहिये, जिसमें कब्जियत दूर होकर, सहजमें ही पाखाना हो जाये। जिन कारणोंसे यह बीमारी होती है, उन्हें त्याग देना चाहिये। होमियोपैथिक दवासे ही बीमारी आराम हो जाती है। कोई-कोई होमियोपैथिक दवाके साथ नीचे लिखे कौशलसे बीमारी आराम कर देते हैं :—

रोगिनीको अर्द्ध-शायित अवस्थामें लेटाकर उसका उरु छातीकी ओर उठा चिकित्सक अपनी अंगुलीसे थोड़ा दबाकर तलहत्थीसे रोकते हुए जरायुको धीरे-धीरे ऊपर उठा देते हैं। अपने स्थानपर जब जरायु पहुँच जाता है, तब कुछ दिनोंतक "पेशारी"* (pessary) पहनना उचित है।

———

* पेशारी एक तरहका यन्त्र है ; पहननेसे जरायु फिर अपनी जगहसे न हटकर जहाँ-का-तहाँ रहता है, "Hodgels Pessary या "Ring Pessary" उमदा होती है।

(ज) जरायुके कई दूसरे उपसर्ग

१। **जरायुमें दर्द।**—सिमिसिफ्यूगा ३x और मैग्ने-शिया-म्यूरियेटिका ६।

२। **जरायुका फूल उठना।**—बहुतसे बच्चोंवाली (खासकर बूढ़ी) औरतोंका जरायु फूल उठता है; आरम-म्यूर ६X विचूर्ण या सिपिया ६।

३। **जरायुमें प्रबल रक्त-सञ्चय।**—बेलेडोना ३, सैबाइना ३x, विरेट्रम-विर २x, लिलियम-टिग ६—३०।

४। **जरायु निकलना।**—सिपिया (थोड़ा रजः-स्रावके साथ); म्यूरेक्स-पर्फ्यूरिया ६ (ज्यादा रज); कैल्के-कार्ब ६—३० (पुरानी बीमारीमें ज्यादा स्राव); आरम-मेट [पुराने रोगमें जरायु कड़ा (indurated) पड़ जानेपर]; हेलोनियस ६ (कमजोरीके साथ बन्ध्यत्व और प्रदर); मर्क-सोल ६, आयोड ६, हाइड्रोकोटाइल १x।

५। **जरायुका सड़ना (gangrene)।**—आर्स ६, कार्बो-वेज ६—३०, सिकेलि ३—३० या क्रियोजोट ६।

६। **जरायुसे रक्त-स्राव।**—"जरायुका रजः-स्राव" देखिये।

३। डिम्बकोषकी बीमारियाँ

(Diseases of the Ovaries)

डिम्बकोषकी बीमारियोंमें नीचे लिखी चार प्रधान बीमारियोंका विवरण क्रमसे लिखा जाता है :—(क) डिम्बकोष-प्रदाह ; (ख) डिम्बकोषकी सूजन ; (ग) डिम्बकोषका स्नायु-शूल ; (घ) डिम्बकोषका अर्बुद ; (ङ) डिम्बकोषके कई दूसरे उपसर्ग।

(क) डिम्बकोष-प्रदाह

(Ovaritis)

यह रोग दो प्रकारका होता है—नया और पुराना। चोट लगना, तेज़ मिचली, ऋतुके समय सर्दी लगना या सङ्गमके कारण रज बन्द हो जाना* वगैरह कारणोंसे "डिम्बकोषका नया प्रदाह" पैदा होता है। बीमारी सहजमें अच्छी न होनेपर "डिम्बकोषका पुराना प्रदाह" पैदा हो जाता है। उरु-सन्धिके कुछ ऊपर (पेटके खूब भीतर) दर्द और कनकनाहट, दबाने या हिलाने-डोलानेसे दर्द बढ़ना, बोखार, कै, सङ्गमेच्छा वगैरह इस रोगके प्रधान लक्षण हैं।

---

* इसीलिये इस देशमें रजस्वला अवस्थाके तीन दिनमें नहाना और स्वामी-सहवास मना है।

नये प्रदाहकी चिकित्सा

ऐकोनाइट ३x ।—सर्दी लगनेके कारण ऋतु बन्द होकर प्रदाह, पेशाबमें तकलीफ़ ।

ऐपिस ६ । – दाहिने डिम्बकोषका प्रदाह, डङ्क मारनेकी तरह दर्द, थोड़ा पेशाब, प्यास न रहनेके लक्षणमें ।

लैकेसिस ६ ।—बायीं ओरके डिम्बकोषका प्रदाह; पीव; जरायुके स्थानपर दबाव सहन न हो—यहाँतक कि कपड़ा लगनेसे भी तकलीफ़ होती हो ।

दूसरी-दूसरी दवाएँ ।—बेलेडोना ३x (खासकर सुई गड़नेकी तरह दर्द होनेपर), मर्क-कोर ६, पलसेटिला ६, हैमामेलिस ६, कॉलोसिन्थ ६, फेरम-फास १२x विचूर्ण लक्षणके अनुसार बीच-बीचमें प्रयोग करना चाहिये ।

पुराने प्रदाहकी चिकित्सा

कोनायम ६ । – डिम्बकोष कड़ा (अर्थात् पीव न पैदा होनेतक); थोड़ा रज निकलना और बन्ध्यत्व; डिम्ब-कोषका कड़ापन यदि कोनायमसे अच्छा न हो, प्लाटिना ६, ग्रैफाइटिस ३०, थूजा ६ (खासकर बायीं ओरका डिम्बकोष कड़ा रहनेपर); आरम-म्यूर-नैट ३ विचूर्ण, लिलियम ६, कैल्केरिया-फास ६x या सिमिसिफ्यूगा ३० देना चाहिये ।

लैकेसिस ६ ।—डिम्बकोषकी पोव-भरी अवस्था। पीव-भरे स्फोटकमें डाक्टर हेरिङ्ग एकमात्र लैकेसिसपर ही भरोसा करनेकी राय देते हैं; परन्तु ह्यूजका कहना है, कि पीव पैदा होनेकी आशङ्का होनेपर, मर्क-कोर; पीव पैदा होनेपर हिपर और सिलिका और पीव निकलनेके कारण रोगिनी बहुत क्षीण हो गयी हो तो चायना या फास्फोरिक-एसिड देना अच्छा है। ये दवाएँ ६ठी शक्तिकी व्यवहार की जा सकती हैं।

प्रमेहके साथ डिम्बकोष-प्रदाह ।—नाइट्रिक-एसिड ६-३०, आरम-मेट ३-२००, पल्स ३-३०, मर्क ६ (यदि पहले पारा काममें न लाया गया हो), थूजा ३०-२०० ।

नियम ।—विश्राम और हलका पथ्य देना उचित है। स्वामी-सहवास मना है। सूखा सेंक (dry fomentation) देनेसे दर्दकी तकलीफ़ घट सकती है।

(ख) डिम्बकोषका शोथ

(Ovarian Dropsy)

पानीकी तरह पीव-भरा शोथ कभी-कभी डिम्बकोषमें पैदा हो जाता है। इसे ही "डिम्बकोषका शोथ" कहते हैं। रोगिनीके अङ्गमें भार मालूम होना, पेटमें सूजन (ठीक मानो गर्भ है), पाखाना, पेशाब और साँसमें तकलीफ़, स्तनोंमें दूध

जमा होना वगैरह गर्भके लक्षणोंकी तरह बहुतसे लक्षण दिखाई देते हैं ।

चिकित्सा ।—एपिस ३ और आयोड ६ इस बीमारीकी प्रधान दवाएँ हैं ।

एपिस ३ ।—डिम्बकोषमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द, उरु देशतक अनुभव होता है—दाहिनी ओर ज्यादा होता है । दाहिना कोष बड़ा हो जाता है ; उदरमें सूजन (ठीक मानो गर्भ है) ; पाखाना, पेशाब और श्वासमें कष्ट ; वमन, स्तनमें दूध, फोड़ा होना प्रभृति गर्भ लक्षणके सदृश लक्षण दिखाई देते हैं ।

आयोडियम ३ ।—दाहिने डिम्बकोषसे जरायुतक गोदनेकी तरह दर्द, ऐसा मालूम होता है, मानो योनिकी राहसे सब बाहर निकल जायगा ; जखम पैदा करनेवाला प्रदर ; डिम्बकोष और दोनों स्तन सूखे ।

आरम-म्यूर-नेट्रोनेटम ३X, प्लाटिना ३०, कैलि-ब्रोम १x विचूर्ण, आर्स ६, ग्रैफाइटिस ६, लैके ६, सिकेलि ३, लाइको ६—३०, जिङ्कम ६ की कभी-कभी जरूरत पड़ सकती है ।

(ग) डिम्बकोषका स्नायुशूल
(Ovaralgia)

यह स्नायविक दर्द है, इसका कारण डिम्बकोषका प्रदाह वगैरह नहीं है। दर्द एकाएक पैदा होकर चारों ओर फैल जाता है। कै; पेट फूलना; ललेजा धड़कना; पेशाब कम आना, इस रोगके विशेष लक्षण हैं।

चिकित्सा

नैजा ६।—इस बीमारीकी उत्कृष्ट दवा है। सिर्फ इसीपर भरोसाकर कितनी ही रोगिनियाँ अच्छी हो गयी हैं।

शूल-वेदनाकी आक्रमणवाली अवस्थामें **ऐट्रोपिया ३x** विचूर्ण और विराम अवस्थामें **जिङ्कम-वैलेरियाना ३x** विचूर्ण देकर डाक्टर लडलामने बहुत-सी रोगिनियोंको फायदा होते देखा है। **स्टैफिसाइग्रिया ६**, मानसिक उत्तेजनासे पैदा हुई बीमारीमें बहुत फायदा करता है। कोलोफाइलम, सिमिसि, कोनायम, लैकेसिस, मैग-फास, आर्स्टिलैगो प्रभृति लक्षणके अनुसार व्यवहृत होते हैं।

यदि ठीक-ठीक न मालूम हो कि दर्द स्नायविक है या प्रदाहसे पैदा हुआ है, तो **हैमामेलिस २x**, **कौलोसिन्थ**

६ या मैग्नेशिया-फास ३x, १२x विचूर्ण (गर्म पानीके साथ) सेवन करना चाहिये।

स्वामी-सहवास और मानसिक उत्तेजना मना है।

(घ) डिम्बकोषका अर्बुद
(Ovarian Tumours)

डिम्बकोषमें कभी-कभी अर्बुद होता है। इसमें डिम्बाशयमें बेहद तकलीफ़, प्रदर, बोखार वगैरह लक्षण मौजूद रहते हैं। पेट बड़ा हो जाता है। कभी-कभी उदरी और जरायुका स्थानसे हटना भी हो जाता है; रोग धीरे-धीरे बढ़ता है। यथा समय इलाज न होनेपर रोगिनी मर जाती है।

बेलेडोना ३, आयोड १, एपिस ३, कैलि-ब्रोम १x, सिकेलि १, कोलोसिन्थ ३, लैकेसिस ३०, आरम-म्यूर-नैट ३x, वगैरह लक्षणके अनुसार देना चाहिये।

(ङ) डिम्बकोषके कई दूसरे उपसर्ग

(१) **डिम्बकोषकी स्थानच्युति।**—ब्यूफो ६, कोनायम ६।

(२) **डिम्बकोषमें कर्कट** (Cancer)—आर्सेनिक ३x—६, क्रियोजोट ६, लैकेसिस ३०।

(३) **डिम्बकोषका कड़ापन** (पुरानी अवस्थामें)—आरम-म्यूर-नैट ३x विचूर्ण, प्लैटिनम ६—३० ग्रैफाइ-टिस ६—३० (स्वल्परजःके साथ डिम्बकोषका कड़ा रहना)।

(४) **डिम्बकोषका स्थूलकोष** (Hydatid)—मर्क ३, कैन्थरिस ६।

(५) **डिम्बकोषमें दर्द।**—सिमिसिफ्यूगा ३, (जवानी आरम्भ होनेपर डिम्बकोषमें दर्द); नैजा ३ (खोंचा मारनेकी तरह तेज़ दर्द); हैमामेलिस ३x (डिम्बाशयमें दर्द, सूजन, अकड़न, ऋतुकालमें बढ़ना ; अतिरजः ; गर्भावस्था या प्रमेह); कैन्थ ३ (ज्वालाकार वेदना); लिलियम-टिग ३० (खासकर बाएँ डिम्बकोषमें दर्द, जरायु-देशमें प्रसवकी पीड़ाकी तरह दर्द, जननेन्द्रियकी उत्तेजना); पल्स ३ (स्वल्परजःके साथ डिम्बकोषमें दर्द और प्रदाह); पैलेडियम ६ (दाहिने

डिम्बकोषमें दर्द, दबानेसे कम होना); लैकेसिस ६ (डिम्ब-कोषमें दर्द, जरायुमें प्रसवके दर्दकी तरह दर्द, जरायुका मुँह खुला मालूम होना); एपिस ३ (डङ्क मारनेकी तरह दर्द); कोलोसिन्थ ३—६ (डिम्बाशयकी शूल-वेदना); हिपर ६ (डिम्बाशयमें दर्द और स्पर्श सहन न होना)।

(६) दाहिने डिम्बकोषके रोगमें।—बेलेडोना ३, कैल्के ६, सिपिया ६, लाइको १२, एपिस ३, आयोड ३०।

(७) बाएँ डिम्बकोषकी बीमारीमें।—लैकेसिस ६, लिलियम-टिग ३०, कैलि-कार्ब ६, स्ट्रैमोनियम ६, नैजा ६x।

(८) डिम्बकोषकी पुरानी बीमारीमें।—कोनायम ३—६ (स्वल्परज: या विलम्बसे गर्भ धारण करनेपर), प्लैटिनम ६—३० (पुराने रोगमें उपदाहिका या उत्तेजनाके साथ अतिरज: वर्त्तमान रहनेपर); आरम-म्यूर-नैट्रो ३x (पुराने रोगमें डिम्बकोष कड़ा रहनेपर)।

———

४। योनिकी बीमारियाँ

(Diseases of the Vagina)

योनि-देशकी बीमारीमें नीचे लिखी बीमारियोंका उल्लेख किया जायगा :—(क) योनिका प्रदाह ; (ख) योनिका आक्षेप ; (ग) अवरुद्ध योनि ; (घ) योनि-भ्रंश ; (ङ) योनिमें खाज ; (च) योनिके दूसरे कई रोग।

(क) योनि-प्रदाह

(Vaginitis)

योनिका रङ्ग लाल, गर्म, सूजन और दर्द होकर पीव निकलता हो और उसके साथ ही यदि पेशाब होनेके वक्त तकलीफ़ रहती हो और योनिमें खुजली हो, तो "योनिका प्रदाह" हुआ है, यह समझना चाहिये। प्रमेह रोगका पीव लगना, ज्यादा सङ्गम, बलात्कार, प्रसव-कालमें चोट, खून दूषित होना, योनिमें क्रिमिका घुसना, सर्दी लगना वगैरह कारणोंसे योनिका प्रदाह होता है। इस रोगमें अकसर रजोरोध नहीं होता। यह रोग दो प्रकारका होता है :—नया योनि-प्रदाह और पुराना योनि-प्रदाह।

नया योनि-प्रदाह।—जाड़ेके साथ बोखार ; कमर, उरु और चूतड़में भार मालूम होना और दर्द ; योनिसे श्लेष्मा

(सर्दी) निकलना ; मूत्रकृच्छ्रता वगैरह "तरुण-प्रदाह" के लक्षण हैं।

चिकित्सा

सर्दी लगकर प्रदाह होनेपर पहले ऐकोनाइट ३x, इसके बाद मर्क्यूरियस ३ फायदा करता है। प्रमेहके कारण होनेपर, सिपिया १२ और चोटसे पैदा होनेपर आर्निका ३ सेवन करना चाहिये। पेशाबकी तकलीफ़ अगर ज्यादा हो, तो कैन्थरिस ३x—६ देना चाहिये।

रोगिनीको किसी भी हालतमें चार-पाँच दिनोंतक शय्यासे न उठना चाहिये।

पुराना योनि-प्रदाह।—योनिके भीतरकी श्लेष्मा निकालनेवाली झिल्लीमें नीली आभा लिये लाल रङ्गकी खुजलीके दाने पैदा होते हैं। योनिका शिथिल पड़ जाना और योनिसे सफ़ेद, पीला वगैरह कई रङ्गोंका पीव ज्यादा मात्रामें निकलना "पुराने प्रदाह" के लक्षण हैं।

चिकित्सा

मर्क्यूरियस ३ और सिपिया २x विचूर्ण।—डा० जुसोके मतसे पुराने प्रदाहकी ये दोनों प्रधान दवाएँ हैं।

बोरैक्स २x विचूर्ण।—बहुत ज्यादा पीव निकलना।

नाइट्रिक-एसिड ६ ।—पीव, जलन और जखम होनेपर या फुन्सियाँ रहनेपर या पारेका दोष रहनेपर।

कैल्केरिया ६, पल्सेटिला ६, क्रियोजोट ६, इग्नेशिया २x (प्रदाहके साथ हिस्टीरिया) और सलफर ३० बीच-बीचमें आवश्यक होता है।

(ख) योनिका आक्षेप

(Vaginismus)

किसी-किसी युवती स्त्रीका योनिद्वार तङ्ग रहनेकी वजहसे और उसको ढँकनेवाली (hymen) झिल्लीमें अनुभव-शक्तिकी ज्यादती (hyperæsthesia) होनेपर योनिके चारों ओरकी पेशियाँ एकाएक सिकुड़ जाती हैं, इसे ही "योनिका आक्षेप" कहते हैं। सङ्गमके समय पुरुषकी लिङ्गेन्द्रिय योनिमें घुस नहीं सकती और पेशियोंमें "आक्षेप" पैदा होकर बहुत दर्द होता है। यहाँतक कि रोगिनी बहुत बार बेहोशतक हो जाती हैं।

विवाहके बाद कितनी ही बहुएँ इसीलिये ससुराल नहीं जाना चाहतीं। उनके अभिभावकोंको इसके कारणका पता लगाना चाहिये।

चिकित्सा

सिलिका ६, नक्स-वोमिका ६, बेलेडोना ६ और इग्नेशिया ६, इसकी प्रधान दवाएँ हैं। अगर शरीरमें किसी तरह सीसाका ज़हर (Lead poison) घुस गया हो, तो प्लम्बम ६ देना चाहिये।

एक बड़े टबमें गर्म पानी भरकर रोगिनीको कमरतक कुछ देरतक डुबा रखनेसे फायदा होता है। रोग जबतक एकदम अच्छा न हो जाये, तबतक स्वामी-सहवास मना है।

(ग) अवरुद्ध योनि

(Imperforate Hymen)

योनिका मुँह बन्द रहना या कुमारी झिल्ली (hymen) कड़ी रहना या उसमें छेद न रहनेका नाम "अवरुद्ध योनि" है।

(१) योनिके मुँहका भीतरी भाग बन्द रहनेपर या कुमारी झिल्ली कड़ी रहनेपर भी; रज निकलनेमें किसी तरहकी बाधा नहीं पैदा होती, सिर्फ योनिमें पुरुष लिङ्गेन्द्रिय प्रवेश नहीं कर पाती, इसलिये जबतक पुरुषका साथ नहीं होता, तबतक औरतोंको इस बीमारीका हाल कुछ भी मालूम नहीं होता। न उन्हें किसी तरहकी तलकीफ़ ही मालूम पड़ती है।

चिकित्सा ।—अंगुली या पुरुष जननेन्द्रियके दबावसे यह झिल्ली सहजमें ही फट जाती है, यदि सहजमें न फटे तो नश्तर लगवानेकी जरूरत पड़ सकती है ।

(२) अगर कुमारी झिल्लीमें छेद न रहे, तो रज निकलनेमें रुकावट होती है। समयपर इलाज करना उचित है।

चिकित्सा

(Probe) सलाईसे छेद कर देनेपर रज निकलने लगता है; पर सङ्गमकी जरूरत होनेपर ऊपर कहा हुआ उपाय काममें लाना चाहिये।

(घ) योनि-भ्रंश

(Prolapsus Vaginae)

जरायुकी स्थान-च्युतिके साथ कभी-कभी योनि भी निकल पड़ती है, इसे ही "योनि-भ्रंश" कहते हैं। मलभाण्डमें कड़ा मल जमा होना या मूलाधारका सूज जाना या तकलीफ़ देनेवाले प्रदरके दर्दके बाद, योनि बाहर निकल पड़ती है। तलपेटमें भार मालूम होना इस बीमारीका प्रधान लक्षण है।

चिकित्सा

स्टैनम ६ और क्रियोजोट ६ इस बीमारीकी प्रधान दवाएँ हैं। सिपिया ३० (मलद्वारमें भार मालूम होना और ऐसा

मालूम होना, कि पेटकी सब चीजें बाहर निकल पड़ेंगी); आर्निका ३x (आघात या सङ्गमकी वजहसे रोग); मर्क ६, बेल ३, लैकेसिस ६, सलफर ३० और एपिस ६ की भी कभी-कभी जरूरत पड़ती है।

कुछ देर ठेस लगाकर सोना चाहिये। दस-पन्द्रह मिनट बाद, थोड़ी देरतक पानीमें बैठनेपर योनि सहजमें ही भीतर घुस जाती है।

(ङ) योनिकी खुजली

(Pruritus Vulvae)

शरीर कमजोर पड़ जानेपर, योनिके बाहरी भागमें कितनी ही तरहकी फुन्सियाँ पैदा होकर बहुत तकलीफ़ देनेवाली खुजली पैदा होती है; इसे ही "योनिकी खुजली" कहते हैं।

चिकित्सा

सलफर ३०।—जलन पैदा करनेवाली असह्य खुजली और फुन्सियाँ, गर्म मालूम होना, बवासीर।

डलिकस ६ ।—असह्य सूजन, खुजली, फुन्सी नहीं रहती, पर रातमें बढ़ जाती है। कामला; सफेद दस्त; कब्ज; बवासीर।

आर्सेनिक ३० ।—जलभरी फुन्सियाँ, सड़ना आरम्भ होनेपर।

कैलेडियम ६, मर्क्यूरियस ६, नाइट्रिक-एसिड ३०, लाइको १२, कार्बो-वेज ३०, नेट्रम-म्यूर ३०, नक्स-वोमिका ६, सिपिया १२, पेट्रोलियम ६, बोरैक्सकी भी कभी-कभी जरूरत पड़ सकती है।

सहकारी उपाय ।—रोगवाली जगह हमेशा साफ़ रखनी चाहिये। कैलेण्डुला θ एक भाग, दस भाग पानीमें मिलाकर रोज़ दो-तीन बार योनिको धो डालना चाहिये। इसके बाद कैलेण्डुला θ घीके साथ मिलाकर साफ रूईमें भिंगोकर योनिमें रख देना अच्छा है। योनिमें काँटेकी तरह केश होनेपर उन्हें पहले निकालकर तब दवा देनी चाहिये।

(च) योनिके कई दूसरे रोग

(१) योनिका अर्बुद ।—कार्बो-ऐनि ३-३०, कार्बो-वेज ६-३०, आर्सेनिक ६, क्रियोजोट ६।

(२) योनिसे वायु निकलना ।—ब्रोमियम ३-३०, लाइकोपोडियम ३०-२००, एसिड-फास ६-३०, बेल, नक्स।

(३) योनिमें कोषाच्छादित अर्बुद होनेपर—बैराइटा-कार्ब ६, साइलिसिया ३०, सिपिया ६, सलफर ३० या कैल्के-कार्ब ६ या कैल्के-फ्लोर १२x, आरम-आयोड, कैल्क-आयोड, लैक, हाइड्रोकोट।

(४) योनिके अर्बुदसे खून जानेपर।—काक्कस कैक्टाई ३x (असह्य दर्द); आर्निका ३ (चोट या सङ्गमकी वजहसे स्राव); पल्स ३ (स्राव हमेशा बदलता रहनेवाला); फास्फो ६, लैकेसिस ६, क्रियोजोट ६।

(५) योनिका सड़ना।—आर्स ६, बेल ३, लैकेसिस ६।

(६) योनिका कड़ा होना।—बेल ३, कोनायम ६।

(७) योनिका नासूर।—सलफर ३०, कैल्क-कार्ब ६, लाइको ३०, सिलिका ६, हिपर ६, आरम ६, थूजा ३०, सिपिया ३०, लैकेसिस ६।

(८) योनि-देशमें भार या दबाव मालूम होना और उसके साथ बहुत दर्द और टटाना।—साइलिसिया ६—३०।

(९) सङ्गमके समय योनि-देशमें बहुत कष्ट।—स्टैफिसाइग्रिया ३—३०।

(१०) योनिमें स्पर्शातिशय्य ।—ऐल्यूमेन ३०—२०० (योनि देशमें बहुत अकड़न और बहुत तरहकी सूजनकी वजहसे उसका सिकुड़ा रहना) सेवन और हैमामेलिस θ (एक ड्राम एक आउन्स पानीके साथ) धावन बनाकर मुलायम कपड़ेके टुकड़ोंको भिंगोकर, रातमें सोनेके समय योनिमें रख देना, सवेरे निकालकर फेंक देना उचित है। सिपिया इसकी बढ़िया दवा है। प्रदर, जरायु प्रभृतिका अपनी जगहसे हटना इत्यादिके कारण यह रोग होनेपर सिपियाके प्रयोगसे आशातीत लाभ होता है। ऐकोन, बेल, कोलो, सिमिसि, इग्ने, थूजा प्रभृति दवाओंकी समयपर आवश्यकता हो सकती है।

५। बन्ध्यत्व

(Sterility)

औरतोंमें लड़का पैदा करनेकी ताकतका न रहना ही "बन्ध्यत्व या बाँझपन" कहलाता है। औरतोंकी जननेन्द्रियमें (अर्थात् जरायु, डिम्बकोष या योनिमें) ऊपर लिखी हुई कोई बीमारी रहनेपर लड़का नहीं पैदा होता। यदि अच्छी तरह इलाज किया जाय तो यह बीमारी अच्छी होनेपर लड़का हो सकता है। कभी-कभी पुरुषके दोषसे या औरतकी

जननेन्द्रिय खूब पुष्ट न रहनेकी वजहसे वे बन्ध्या हो जाती हैं। ऐसे स्थलोंपर औरतोंको दवा खिलानेसे कोई फायदा नहीं होता।

परन्तु ये ऊपर लिखे कारण न होनेपर भी अगर किसी औरतको लड़का न होता हो, तो नीचे लिखी दवाएँ सेवन करानी चाहियें।

कोनायम ३।—बाँझपन दूर करनेकी एक बढ़िया दवा है (खासकर डिम्बकोषकी कमजोरी या क्षीणताकी वजहसे बन्ध्यत्व रहनेपर); थोड़ा रज निकलना और दोनों स्तनोंमें दर्द।

बोरैक्स ६।—तेज़ श्वेत-प्रदर मिले बन्ध्यत्वमें।

आयोडिन ६ (स्तन संकुचित रहनेपर); सिपिया ३०; फास्फोरस ३०, आरम ३०, नेट्रम-म्यूर ३० की भी कभी-कभी जरूरत पड़ती है।

नियम।—बहुत दिनोंका अन्तर देकर संगम करना चाहिये। यदि पुरुषके दोषसे लड़का न हो, तो पुरुषको भी कोनायम ३ या आयोडियम ६ सेवन करना चाहिये। "ध्वजभङ्ग" रोग देखिये।

६। स्तनोंकी बीमारी

(Diseases of the Breast)

(क) स्तन-वेदना

(Pain)

गर्भावस्था या प्रदरके अलावा भी बहुत बार दोनों स्तनोंमें दर्द पैदा हो जाता है। यह दर्द वातसे या स्नायुओंके दोषसे पैदा होता है।

कोनायम ३।—ऋतुके पहले दोनों स्तनोंमें दर्द ; स्वल्परजः।

सैंगुनेरिया ३x।—दाहिने स्तनमें इतना दर्द कि हाथ न उठाया जाये, न साँस ली जाये।

अविवाहिता बालिकाओंके स्तनोंमें (खासकर बाएँ स्तनमें) बहुत दर्द होनेपर, सिमिसिफ्यूगा ३x। ऋतु होनेके एक हफ्ता पहलेसे ही स्तनोंमें दर्द और ज्यादा रज होनेपर, कैल्के-कार्ब ६—२०० ; स्तनमें दर्दके साथ स्वल्परजःके लक्षणमें, पल्स ३ ; स्तनोंमें दर्दके साथ प्रदरमें, सियानोथस १x—२x ; स्तनमें जखम होनेकी तैयारी होनेपर, आर्निका ३x ; जखम होनेपर, सलफर ३०, वातसे पैदा हुई बीमारीमें, रैनानक्युलस २x।

प्रसवके बाद स्तनोंकी बीमारी।—"स्तनमें तकलीफ़" देखिये।

———

(ख) स्तनमें फोड़ा

(Abscess)

बेलेडोना ३x ।—(फोड़ा होनेके लक्षणमें) स्तन कड़े, लाल, फूले और दर्द-भरे ।

ब्रायोनिया ३x ।—बेलेडोनाके लक्षणकी अपेक्षा स्तन ज्यादा कड़े ; स्तनमें बहुत तकलीफ़ ।

फाइटोलैक्का ।—यदि दो दिनोंतक ब्रायोनिया सेवनसे फायदा न दिखाई दे । फाइटोलैक्का θ (दसगुने गर्म पानीके साथ) धावनका बाहरी प्रयोग करना चाहिये ।

हिपर-सलफर ६x ।—पीव पैदा होनेपर । तीसीकी पोल्टीस या गर्म कैलेण्डुला θ (दस बून्द एक आउन्स गर्म पानीके साथ) धावनका बाहरी प्रयोग करना चाहिये ।

साइलिसिया ३० ।—फोड़ेके बाद नासूर (sinus) कितनी ही बार साइलिसियाका असम्पूर्ण कार्य कैल्केरिया-सल्फ पूरा कर देता है ।

"स्तन-प्रदाह" और "स्तनके बोंटेमें जखम" रोग देखिये ।

(ग) स्तनमें अर्बुद
(Tumour)

फाइटोलैक्का ३x ।—पुराने अर्बुदकी उत्कृष्ट दवा है।

वाह्य-प्रयोग ।—फाइटोलैक्का θ एक भाग ; दस भाग पानीके साथ मिलाकर, स्तनपर जलपट्टी देनी चाहिये ।

लक्षणके अनुसार ब्रायोनिया, कार्बो-एनि, कोनायम, सिमिसिफूगा, थूजा वगैरहका प्रयोग होता है।

(घ) स्तनमें कर्कट
(Cancer)

हाइड्रैस्टिस १x ।—यह दूषित अर्बुदकी एक बढ़िया दवा है। दर्द बहुत ज्यादा रहे, तो हाइड्रैस्टिस बहुत फायदा करता है। हाइड्रैस्टिस θ (एक ड्राम चार आउन्स पानीमें मिलाकर) धावनका बाहरी प्रयोग करना चाहिये।

आर्सेनिक ३ ।—असह्य जलन, बहुत बेचैनी और सुस्ती।

आर्सेनिक-आयोड ३x ।—स्तनके अर्बुदमें अगर जखम हो जाये, तो आर्स-आयोड ज्यादा फायदा करता है।

कोनायम ३ ।—अर्बुद कड़ा और दर्द-भरा, स्पर्श सहन नहीं होता।

सिमिसिफ्यूगा ३० ।—साधारणतः बायें स्तनको बीमारीमें यह ज्यादा उपयोगी है। स्तन फूला और लाल, गर्म तथा दर्द-भरा। स्तनके भीतर गोल, चिपटा, कड़ा अर्बुद। जिन स्त्रियोंके जरायु या डिम्बकोषमें गड़बड़ी रहती है, उनके रोगमें ज्यादा उपयोगी है।

"स्तन-प्रदाह" "अर्बुद" और "कर्कट रोग" देखिये।

७। मेरुदण्डका उपदाह

(Spinal Irritation)

शरीर बहुत क्षीण होकर मेरुदण्डके स्थान-विशेषमें रुका हुआ दर्द पैदा होता है। इसीका नाम "मेरुदण्डका उपदाह" है। इस रोगका प्रधान लक्षण यह है, कि दर्दवाली जगहको दबानेसे दर्द और भी बढ़ जाता है।

आर्निका ३ ।—चोटकी वजहसे उपदाह।

सिमिसिफ्यूगा ६ ।—जरायुकी किसी बीमारीके साथ उपदाह।

रस-टक्स ६ ।—आम-वातके साथ उपदाह।

आर्सेनिक ६ ।—स्नायु-शूलके साथ उपदाह ।

टेल्यूरियम ६, सिकेलि ६, पिकरिक ऐसिड २००, ऐग रिकस ६, आर्ज-नाई ६, थूजा ३०, सलफर ३०, साइलिसिया ३० वगैरह दवाएँ भी कभी-कभी जरूरी हो सकती हैं ।

नियम ।—थोड़े गर्म पानीसे पीठ धो डालना और खुली हवा सेवन करना फायदा करता है । "मेरुमज्जाकी उत्तेजना" देखिये ।

---

८ । पिक-चंचु-अस्थि-प्रदेशमें दर्द

(Coccygodynia)

पिक-चंचु-अस्थिकी* पेशी और विधान-तन्तुओंमें कभी-कभी स्नायु-शूल (neuralgia) की तरह तेज़ दर्द होता है । इसीको "पिक-चंचु अस्थि-वेदना" कहते हैं । उठने, बैठने और पाखाना जानेमें दर्द होना, इस रोगका खास लक्षण है । चोट वगैरह कारणोंसे यह रोग पैदा होता है ।

चिकित्सा

आघातकी वजहसे, **आर्निका ३x—६** या **रूटा ३x** फायदा करता है ।

---

* मेरुदण्डका निचला भाग देखनेपर "कोयलकी चोंच" जैसा दिखाई देता है । इसीका नाम "पिक-चंचु-अस्थि" (coccyx) है ।

यदि चोटकी वजहसे दर्द न हो, तो फास्फोरस ६ या लैकेसिस ६ प्रयोग करना चाहिये। बैठे रहनेके बाद खड़े होनेपर अगर दर्द पैदा हो, तो लैकेसिस ६-३० ज्यादा फायदा करता है।

"मेरुमज्जाकी बीमारी" रोग अध्यायमें "पिक-चंचु-अस्थि-प्रदाह" देखना चाहिये।

औरतोंके "गर्मी रोग" "प्रमेह" वगैरह बीमारियोंके लिये, हमारी प्रकाशित "जननेन्द्रियके रोग" पुस्तक देखिये।

गर्भ-धारण और प्रसव
(Pregnancy Labor)

स्त्री-पुरुषके यौन सम्मिलनके कारण स्त्री-गर्भमें सन्तानकी उत्पत्ति होती है। इसके बाद इस सन्तानको नौ महीने, दस दिनोंतक गर्भमें धारणकर माता प्रसव करती है। चिकित्सकके सिवा अन्य जनसाधारण इतना ही जानते हैं, कि इस तरह दस महीने गर्भमें रहकर सन्तान प्रसव हुआ करती है, इससे अधिक वे कुछ नहीं जानते। बहुत-सी सन्तानोंके पिता-माताको पूछनेपर भी यही मालूम होता है, कि यद्यपि उन्होंने इतनी सन्तानोंका जन्म दिया है; पर सर्वनियन्ताके इस जनन-नियन्त्रण कौशलके सम्बन्धमें उन्हें कुछ भी ज्ञान नहीं है; इसमें कोई भी सन्देह नहीं, कि इसका ज्ञान न रहनेपर भी

सन्तान-जननमें कोई गड़बड़ी नहीं होती, परन्तु यह अवश्य होता है, कि इस सम्बन्धमें ज्ञान न रहनेपर भगवानके सृष्टि-कौशलका एक बहुत बड़ा रहस्य उन्हें ज्ञात नहीं होता। इस अपरूप कौशलके सम्बन्धमें ज्ञान होनेपर, उससे सृष्टि-कौशलका गूढ़ रहस्य समझमें आ जाता है और आप-ही-आप उस सर्वशक्तिमानके श्रीचरणोंमें माथा झुक जाता है। "गर्भ-विज्ञान पृष्ठ संख्या १०८ से १२७ तक और पृष्ठ १२०० देखिये।

स्त्री-डिम्ब और पुरुष वीर्य—इन दोनोंके सम्मिलनसे जीवकी उत्पत्ति होती है। इसीलिये यह जीव—जनक-जननी दोनोंकी आकृति, मानसिक गति, रोग, स्वास्थ्य इत्यादिका भी अधिकारी होता है। यह भी ख्याल रखनेकी बात है, कि प्रत्येक सन्तानके जन्मके समय जनक-जननी इन दोनोंमें जिसकी प्रधानता जितनी ही अधिक रहती है, उतना ही दोष, गुणका अधिक भाग सन्तानमें आता दिखाई देता है ; इस स्थानपर इस विषयकी विशेष आलोचना नहीं की जा सकती, अप्रासङ्गिक हो जाती है। अतएव, इस विषयमें जिसे अधिक जानकारी प्राप्त करनी हो, उन्हें विद्वान डार्विनका क्रम-विवर्त्तनवाद (Darwins Evolution theory) पढ़नी चाहिये। उसमें इस विषयपर बहुत विचार किया गया है।

स्त्री-डिम्ब और पुरुष शुक्रकीट ये दोनों हो खुर्दबीनकी सहायता लिये बिंना देखे नहीं जा सकते। इन दोनों अतिसूक्ष्म बीजमें जीवका भविष्य, मानसिक शक्ति, स्वास्थ्य, रोग, दोष, गुण, तथा सूक्ष्म अङ्ग-प्रत्यङ्गका बनना सभी छिपे हुए हैं। ये

दोनों बीज ही जीवके सब कुछ हैं। यदि मनुष्य जरा सोचकर देखे तो उसको मालूम होगा, कि कितनी सूक्ष्म दो चीजोंसे उसकी यह सुरूप तथा शक्तिशाली देह प्रकट हुई है। इन दोनों बीजोंका स्रष्टा कौन है और वे किस तरह, कितने अपरूप कौशलसे इस सम्मिलित दोनों जीवोंकी वृद्धिके लिये अनुरूप क्षेत्र तैयार करते हैं, आदि बातोंपर विचार करनेसे ही उस अनन्त शक्तिशालीके पादपद्मोंमें आप-से-आप ही माथा झुक जाता है। यह पहले बताया जा चुका है, कि कालल-नलमें स्त्री और पुरुष-बीज सम्मिलित होने बाद शुक्रकीटकी पूँछ टूट जाती है और कालल-नलके सूक्ष्म रोओंकी लहरके सहारे वह जरायुमें जा पहुँचता है। इस मिलनके बाद ही यह सम्मिलित बीज एक अदृश्य और अभावनीय शक्तिके बलसे सूक्ष्म-से-सूक्ष्मतर अंशमें विभाजित होता रहता है। इस विभाजनको ही सेङ्गमेण्टेशन कहते हैं। इस विभाजनके द्वारा ही विभिन्न अङ्ग और शरीरके सूक्ष्म-सूक्ष्म अंश समूहोंकी पुष्टि होती है और समय पाकर उसका एक रूप तैयार हो जाता है।

जरायुमें जानेके बाद ही यह सम्मिलित बीज जरायुकी श्लैष्मिक-झिल्लीमें चिपक जाता है। इसी वजहसे उस समय जरायुमें बहुत ही कोमल नवीन आवरक झिल्लियाँ तैयार होती हैं। इन्हीं झिल्लियोंके सहारे पोषण प्राप्तकर और खाद्य संग्रहकर जीव क्रमशः बढ़ता रहता है। इसके बाद क्रमसे उसके चारों ओर एक थैली-जैसा आवरण तैयार हो जाता है।

इस आवरणमें एक तरहका जलीय पदार्थ रहता है और इसी जलीय पदार्थके बीचमें भ्रूण रहा करता है। भ्रूणकी नाभीसे डोरीकी तरह नाभि-रज्जु निकलकर जरायुके भीतरके फूल या प्लैसेण्टा (कमल) में चला जाता है। यह कमल भी जरायुकी आवरक-झिल्लीसे मिला रहता है। यह कमल जरायुसे रक्तके साथ बच्चेके लिये पोषण खाद्य ग्रहणकर नाभि-रज्जु या नालकी राहसे भ्रूणकी देहमें फैला देता है और भ्रूणके शरीरसे अशुद्ध रक्त इसी नालकी राहसे कमलमें और कमलसे माताकी देहमें चला जाता है और माताके शरीरकी राहसे निकल जाता है। इसी वजहसे सन्तानका पोषण करनेके लिये गर्भवती माताको पुष्टिकर खाद्यकी जरूरत पड़ती है। इस देशमें अपूर्ण सन्तान जन्म, शिशु-मृत्यु और प्रसूति-मृत्युकी संख्या बहुत है। इसका कारण है, अपूर्ण पुरुष-वीर्य, अपूर्ण स्त्री-डिम्ब तथा गर्भवतीके लिये पुष्टिकर भोजनका अभाव। जो हो, इस देशकी शिशु मृत्यु-संख्या वास्तवमें हृदय-विदारक है। भ्रूण भ्रूणावरक थैलीके पानी (liquor aminii) में ही पेशाब करता है। साधारणतः भ्रूणको जरायुमें पाखाना नहीं होता; क्योंकि भ्रूण खाद्यका सार रक्त ही माताके कमलसे संग्रह करता है। बाहरी खाद्य ग्रहणकर उसका पोषण नहीं होता, इसीलिये उसे पाखाना नहीं होता।

गर्भके विभिन्न मासोंमें भ्रूणके आकारका तारतम्य।—प्रथम मासके अन्तमें—भ्रूणका आकार एक

कबूतरके अण्डेके बराबर रहता है। दूसरे महीनेमें—मुर्गीके अण्डे या छोटे हंसके अण्डेकी तरह। तीसरे महीनेके अन्तमें—राजहंसके अण्डेकी भाँति और साधारण अङ्ग-प्रत्यङ्ग आदि भी हो जाते हैं। चतुर्थ मासमें—यह ५ इञ्च लम्बा हो जाता है। पाँचवें महीनेमें—८ इञ्च लम्बा। चेहरा बहुत कुछ वृद्धोंकी तरह, आँखोंके चिन्ह हो जाते हैं। इस समय हृद्पिण्डकी क्रिया मालूम होने लगती है। इस समय यदि बच्चा पैदा हो जाये तो तुरन्त मृत्यु हो जाती है या कई घण्टे ही जीवित रह सकता है। छठें मासमें—भ्रूण १२ इञ्च लम्बा होता है और वजनमें तीन पावके लगभग रहता है। माथेमें केश भी आ जाते हैं, भौं और पलकोंका निर्माण भी हो जाता है। पुरुष होनेपर दोनों अण्ड बाहर निकलनेका उपक्रम होता है; इस समय जन्म होनेपर बच्चा १५-२० दिनोंतक जीवित रह सकता है। कोई-कोई ज्यादा दिन भी जी जाता है। सातवें महीनेमें—लम्बाई १४॥ इञ्च, वजन प्रायः सवा सेर। इस समय जन्म होनेपर बहुत यत्न किया जाये तो बच्चे जी सकते हैं। आठवें महीनेमें—लम्बाई प्रायः १६ इञ्च, वजन पौने दो सेर। माथेके केश घने, पुरुष होनेपर बायाँ अण्डकोष निकल आता है, अंगुलियोंमें नख हो जाते हैं। इस महीनेमें पैदा हुआ बच्चा यदि खूब यत्न किया जाये तो जी सकता है। नवें महीनेके अन्तमें—लम्बाई प्रायः १८ इञ्च, वजन पौने तीन सेरके लगभग। दसवें महीनेमें या ४० सप्ताहमें—लम्बाई प्रायः २० इञ्च, वजन ३॥ सेर; नख, चर्म, अस्थि इत्यादि पूर्ण, आँखें

भरपूर खुलीं। इस समय पूर्ण अवयवका होनेके कारण बच्चेके जीवित रहनेकी ही विशेष सम्भावना रहती है।

गर्भ सञ्चारके बादसे मातृ-देहमें परिवर्तन

भगौष्ठ—तीसरे महीनेके बादसे भगोष्ठोंका आयतन और नमनीयता बढ़ जाती है। रक्तकी अधिकता होती है और रक्तस्रावी ग्रन्थियोंकी भी क्रिया बढ़ जाती है। प्रसव कालके कुछ समय पहलेसे ही इस परिवर्त्तनकी मात्रा बढ़ जाती है और इनके द्वारा ही प्रसवमें सहायता प्राप्त होती है।

योनि।—रक्तकी अधिकता, नमनीयता और ग्रन्थियोंसे स्रावकी अधिकता पैदा हो जाती है। प्रसवके समय ही ये परिवर्त्तन अधिक होकर प्रसवमें मदद पहुँचाते हैं।

जरायु-मुख।—इसका कड़ापन धीरे-धीरे घटता जाता है और वह कोमल तथा नमनीय होता है। रक्तकी अधिकता भी हो जाती है। जरायु-मुखकी वृद्धिके साथ-ही-साथ वह बढ़ता जाता है। पहले तीन महीनोंमें जरायु-मुख अपेक्षाकृत नीचे, इसके बाद अपेक्षाकृत ऊपर और प्रसवके १० दिन पहलेसे ही अपेक्षाकृत नीचे उतर आता है। साधारण अवस्थामें तो जरायु-मुखकी राहसे एक सुईका घुसा देना भी कठिन होता है, पर गर्भ रह जाने बाद, यह राह क्रमशः कोमल होती जाती है और गर्भके अन्तिम कई महीनोंमें क्रमशः छोटा-बड़ा हो-होकर प्रसव होनेमें

सहायता करता है। जिन स्त्रियोंके एक बार भी प्रसव नहीं हुआ रहता है, उनका जरायु-मुखका छेद गोल, बहुत छोटा रहता है, पर जिन्हें सन्तान हो चुकी होती है, उनका जरायु-मुख बड़ा, छिद्र चिपटा और किसी-किसीका टूटा-फूटा होनेके चिन्ह सब दिखाई देते हैं।

गर्भके लक्षण

ऋतुका न होना।—सबसे पहला लक्षण है; पर इस लक्षणपर विशेष भरोसा नहीं किया जा सकता; जरायु और डिम्बकोषकी बहुत-सी बीमारियोंमें तथा रक्ताल्पता और अर्बुद वगैरह रोगोंमें भी ऐसा हो जाता है।

मिचली और वमन।—गर्भके प्रथम दो-तीन महीनोंमें यह लक्षण दिखाई देता है। जरायुमें भ्रूणका रहना, जरायुका परिपोषण और परिवर्त्तनके कारण जरायु और वस्ति-गह्वरमें रक्त-सञ्चय अधिक हो जाया करता है। इसी वजहसे जरायुमें और वस्ति-गह्वरमें अधिक रक्त आता है। इन कारणोंसे जरायुकी जो प्रतिक्रिया (Reflex action) होती है, उसीसे वमन और मिचली पैदा हो जाती है। यह मिचली और वमन विशेषकर सवेरे ही होता है; सभी गर्भवतियोंको होता भी नहीं है। किसी किसीको दो-तीन महीनोंतक लगातार हुआ करता है और कितनी ही गर्भवतियोंको समूचे गर्भ-कालमें होता रहता है। यह भी कोई निर्भर योग्य लक्षण नहीं है।

उदर, जरायु और डिम्बकोषका अर्बुद, अन्त्रावर्तन-प्रदाह, अर्बुद प्रभृतिके कारण भी इस तरहकी मिचली और वमन हुआ करता है।

हृत्पिण्ड और श्वासयन्त्र।—अपना शरीर और भ्रूण इन दोनोंके लिये, खूनका दौरान और रक्तका शोधन—करनेके कारण हृत्पिण्डको अपनी क्रिया अधिक करनी पड़ती है। इसीलिये उसमें सामान्य परिवर्त्तन हो जाया करता है; परन्तु यह कोई उल्लेख योग्य लक्षण नहीं है। अन्यान्य जरायु रोगमें भी ऐसे परिवर्त्तन हो सकते हैं।

मानसिक परिवर्त्तन।—कोमल स्वभाववाली गर्भवती होनेपर वह कुछ चिड़चिड़ी और बदमिज़ाज हो जाती है, उसे क्रोध आ जाया करता है।

मूत्र।—पेशाबमें अण्डलालकी अधिकता हो जाती है। पेशाबका परिमाण भी पहलेकी अपेक्षा बढ़ जाता है; पर आपेक्षिक गुरुत्व घट जाता है।

रक्त।—रक्तका परिमाण और रक्तके सफेद कण बढ़ जाते हैं।

त्वचा।—चेहरेके रङ्गमें परिवर्त्तन हो जाता है। स्तनकी घुण्डी क्रमशः अधिक काली होती है, स्तन और तलपेटका चमड़ा फटा-फटा दिखाई देता है। भगोष्ठ काले हो जाते हैं और नाभी ऊपर चढ़ आती है।

जरायु।—गर्भवती होनेके बाद जरायु क्रमशः बढ़ा करता है। यद्यपि यह स्वाभाविक रूपसे ही होता है, पर यह कोई निश्चित लक्षण नहीं है; क्योंकि प्रदाह, अर्बुद इत्यादिके कारण भी जरायुका आकार बढ़ सकता है।

योनि।—योनि और भगोष्ठके रङ्गमें गाढ़ापन और स्रावकी अधिकता दिखाई देती है।

तलपेट।—क्रमशः बढ़ जाता है। साधारणतः चतुर्थ माससे ही यह लक्षण दिखाई पड़ने लगता है। पहले बताया जा चुका है, कि यह निर्भर योग्य लक्षण नहीं है। तल-पेटका रङ्ग क्रमशः गहरा होता जाता है। तलपेटपर फटे-फटे दागसे होते हैं। तलपेटको दोनों पार्श्वकी अपेक्षाकृत ढीली पेशीमें दो हाथ रखकर एक हाथसे दबाव डालनेपर, दूसरे हाथमें एक अपेक्षाकृत कड़ी चीज़ अनुभूति होती है। यह सन्तान भी हो सकती है और ट्यूमर भी हो सकता है।

स्तन।—स्तनका आकार क्रमशः बड़ा होता जाता है, शिराएँ दिखाई देने लगती हैं, स्तनकी घुण्डीके चारों ओर काला दाग, दबानेसे स्तनसे दूधकी तरह पतला पदार्थ निकलना। यह एक विशेष निर्भर योग्य लक्षण है।

भ्रूण।—पाँचवें महीनेके बादसे जरायु या तलपेटमें सन्तानका हिलना-डोलना अनुभव होता है। यह विशेष निर्भर योग्य लक्षण है; पर सभी गर्भिणियोंमें यह लक्षण

स्पष्ट नहीं रहता। गर्भके अन्तिम कई महीनोंमें धात्री या चिकित्सक यदि स्वयं यह भ्रूण-सञ्चालन गर्भिणीके उदरपर हाथ रखकर अनुभव कर सकें या देख सकें (कभी-कभी ध्यानसे देखनेपर भ्रूणका यह सञ्चालन दिखाई दे जाता है), तो गर्भ रहनेका निश्चित मत दिया जा सकता है। पाँचवें महीनेसे भ्रूणके हृत्पिण्डकी आवाज़ सुन पड़ने लगती है। यदि चिकित्सक गर्भिणीके तलपेटपर स्टैथिस्कोप रखकर परीक्षा करें और यह शब्द सुन पड़े, तो कह सकता है, कि गर्भ निश्चित रूपसे रह गया है। एक घंड़ीपर पतला तकिया रखकर उसपर स्टैथिस्कोप लगाकर सुननेसे जिस तरहकी आवाज़ आती है, तलपेटपर स्टैथिस्कोप लगाकर सुननेपर भी वैसी ही आवाज़ आती है। उस समय भ्रूणके हृत्पिण्डकी गतिकी आवाज़ प्रति मिनट १२० से १५० तक सुनी जा सकती है। यदि इस भ्रूणका धुक्-धुक् शब्द प्रति मिनट १२५ से १२५ बार हो, तो पुत्र होगा और यदि १४५ या उससे अधिक हो, तो कन्या होगी। ऐसी आशा की जाती है।

बेल्टमेराट।—गर्भवती होनेके १४ वें सप्ताहसे २२ वें सप्ताहतक यह लक्षण प्राप्त होता है। गर्भिणीको बिछा-वनपर तकियेके सहारे ठेस लगाकर बैठाने बाद योनिमें दो अंगुलियाँ प्रवेशकर, एकाएक ऊपरको ओर ठेल देने बाद जरायुके भीतर पानीमें तैरता हुआ भ्रूण एकाएक ऊपरकी ओर चढ़ जाता है और फिर क्षणभर बाद ही

नीचे उतरकर अंगुलीमें दबाव डालता है। यह चिन्ह एक खास निर्भर योग्य लक्षण है।

गर्भके अन्तिम कई महीनोंमें जरायुपर दबाव पड़नेके कारण बार-बार पेशाबका वेग होता है। जरायुके दबावके कारण मूत्राशयमें अधिक पेशाब सञ्चित नहीं हो सकता, इसी कारणसे ऐसा होता है।

गर्भका स्थितिकाल।—अन्तिम ऋतु-स्रावके बाद २७५ दिनसे २८२ दिनोंके भीतर प्रसव हो सकता है; परन्तु इसका कोई बँधा निश्चित नियम नहीं है। व्यक्तिगत विशेषता, नित्य नैमित्तिक जीवन व्यतीत करनेका तारतम्य, ऋतु-स्रावका तारतम्य इत्यादिके अनुसार इस प्रसवके दिनोंमें भी घटा-बढ़ी हुआ करती है। प्रसव-दिन निर्द्धारण तालिका देखिये।

गर्भावस्थामें पालनीय कितने ही नियम।—यह मालूम होते ही कि गर्भ रह गया है, खासकर ५ वें महीनेके बाद स्वामी-सहवास एकदम मना है। इस बातपर विशेष नज़र रखनी चाहिये, कि दस्त साफ़ आये और किसी तरहका चर्म-रोग न हो जाये। गर्भवतीको अपने पोषणके लिये, भ्रूण-रूपी एक बाधक प्राणीके भरण-पोषणके लिये और प्रसवावस्थामें रक्त-स्राव आदिसे जो क्षय होता है, उससे कमजोरी न आने देनेके लिये सहजमें पचनेवाले और पुष्ट भोजन करने चाहियें। इस

बातपर नज़र रखनी चाहिये, कि कब्जियत न हो और पतले दस्त भी न आने लगें। गर्भवतीको किसी तरह आलसी जीवन न बिताकर थोड़ी मेहनतवाले गृहस्थीके काम-काज करते रहना चाहिये। सवेरे-शाम भ्रमण करना चाहिये, नहीं तो प्रसवके समय बहुत तकलीफ़ भोगनी पड़ती है। जो गर्भके समय गृहस्थीका काम-काज, जिनमें ज्यादा परिश्रम नहीं होता, किया करती हैं, उन्हें प्रसवके समय बहुत थोड़ी तकलीफ होती है। घरवालोंको भी इस बातपर ध्यान रखना चाहिये, कि वे ऐसे कार्य करें, जिससे गर्भवतीका मन हमेशा प्रसन्न रहे। गर्भवतीको अच्छी बातें कहना, सद्-चिन्ता, सदालाप, सद्ग्रन्थ-पाठ, अच्छी स्त्रियोंसे मिलना-जुलना आदि कार्य करने चाहियें। डरावनी चीजें या जीव-जन्तु गर्भावस्थामें देखना उचित नहीं है। हमेशा अच्छी चीजें देखना ही कर्त्तव्य है। ऐसी जगहमें रहना उचित है, जहाँ रोशनी और हवा अच्छी मिलती हो। प्रसवका काम स्वाभाविक तथा ठीक प्रकृतिके नियमानुसार ही हुआ करता है। सैकड़े दोसे अधिक अस्वाभाविक प्रसव नहीं होता। यह ध्यानमें रखकर प्रसवके भयसे भयभीत न हो जाना चाहिये। पेशाबमें अण्डलाल न रहे तथा इस बातपर भी नज़र रखनी चाहिये, कि निम्नाङ्गमें शोथ न हो जाये। ये दोनों ही बहुत बुरे लक्षण हैं। गर्भके अन्तवाले कई महीनोंमें घोड़ा गाड़ी या पालकीपर चढ़ना,

भारी चीज़ उठाना, पानी खींचना आदि उचित नहीं है। इससे गर्भपात हो जानेकी सम्भावना रहती है। यदि गर्भवतीका मन प्रसन्न नहीं रहता, तो सन्तान भी बद-मिजाज़ होती है, दुश्चिन्ता करनेपर सन्तानका स्वभाव बिगड़ जाता है, शरीर रोगी रहनेपर सन्तान अल्पजीवी होती है और जीवनभर रोगी बनी रहती है (हमेशा सुन्दर चीजें दर्शन करनेपर सन्तान सुन्दर और निरोग रहती है और भयावनी कदाकार चीजें देखनेपर सन्तान भी कुरूप और विकलाङ्ग होती है तथा गर्भपात हो जानेकी आशङ्का बनी रहती है। शरीरसे खूब चिपका या सटा हुआ वस्त्र अथवा खूब कसकर साड़ी न पहननी चाहिये। इससे पेटपर दबाव पड़नेके कारण सन्तानको बहुत हानि पहुँचती है। ऊँची जगहपर चढ़ना-उतरना, जोर-जोरसे चलना या एक हाथ ऊँचाकर ऊँचेपरकी चीज़ उतारना आदि कार्य छोड़ देना चाहिये।

प्रसवका कार्य

अब संक्षेपमें प्रसवके सम्बन्धमें बताया जायगा और अन्तमें प्रसवमें सहायता करनेवाली दवाएँ तथा कष्टकर प्रसवको नियन्त्रण करनेवाली दवाएँ बतायी जायँगी। प्रसूति-परिचर्या चिकित्साका एक खास अङ्ग है। अतएव, संक्षेपमें उसका बता देना तो बहुत ही कठिन है; फिर भी यहाँ सुधी पाठकोंको इस विषयपर रुचि पैदा करने और मुफस्सिलमें रहनेवाली गर्भिणी माता तथा भगिनियोंके लाभके लिये, इस आशासे लिख दिया जाता है, कि कुछ-न-कुछ लाभ इससे अवश्य ही पहुँचेगा। इस उपदेशको ठीक-ठीक जानते हुए यदि कार्य किया जायगा, तो प्राकृतिक नियमसे स्वाभाविक प्रसव होनेकी ही सम्भावना रहेगी। यदि दैवात् कहीं कुछ गड़बड़ी हो जाये, तो स्थानीय अभिज्ञ चिकित्सककी सहायता लेनी चाहिये।

स्वाभाविक प्रसव।—पहले ही कहा जा चुका है, कि किसी रमणीके गर्भवती होनेपर भ्रूण माताके उदरमें जरायु नामक नमनीय तन्तुमय आधारमें क्रमशः बढ़ा करता है और गर्भवती होनेके २८० दिन बाद या साधारण गणनाके अनुसार ९ महीने १० दिनके बाद योनि-पथसे बाहर निकलता है। जरायुको नाड़ी भी कहते हैं। जितना ही भ्रूण बढ़ता है, जरायु भी उतना ही बढ़ता जाता है। गर्भमें भ्रूणका

माथा नीचेकी ओर, पैर आसन लगाकर बैठे रहनेकी तरह छाती सिकुड़ी और दोनों हाथ छातीपर रखे हुए—इसी भावसे रहता है। जरायुमें एक स्वच्छ पर्देकी थैलीके बीचमें पानीकी तरह पदार्थके भीतर भ्रूण तैरता हुआ रहता है। इस पर्देकी थैलीको ऐमोनियक सैक (Amoniac Sac) और उसके भीतरके जलीय पदार्थको ऐमोनियक फ्लुइड (Amoniac fluid) कहते हैं। प्रसवके समय जिसे पानी निकलना कहते हैं, वह भ्रूणके माथेके पासवाले पर्देकी थैली फटकर ही निकला करता है। इस जलकी उपयोगिता विचारकर देखनेपर मालूम होता है, कि एक तो यह जरायुके भीतरकी भ्रूण देहके दबावकी समताकी रक्षा करता है। प्रसवके समय यह समता-रक्षा बहुत ही आवश्यक होती है। दूसरे इस जलीय-पदार्थमें चिकनापन रहनेके कारण यह प्रसवके समय प्रसव-द्वारको चिकना और फिसलहन-भरा बना देता है। इस तरह प्रसव होनेमें बहुत कुछ सुविधा हो जाती है।

प्रसवके कुछ दिन पहले गर्भवतीका पेट झूल पड़ता है। इस झूल पड़नेका मतलब है, सामने और नीचेकी ओरके घेरेका बड़ा हो जाना। इसका कारण यह है, कि इस समय भ्रूणका गात्र अस्थिमय वस्ति-गह्वरसे आ लगता है और ऊपरी पेट बहुत कुछ खाली हो जाता है तथा नीचेकी ओर बहुत कुछ अंश फैल जाता है। इससे गर्भवतीको आराम मिलता है और वह बिना प्रयास श्वास-प्रश्वासकी क्रिया सम्पादन कर सकती है।

इस समय जरायु-मुख लगातार फैलता जाता है और इसी कारणसे जरायु-मुखके बहिर्द्वार (योनि) की और अन्तर्द्वार (जरायु-मुख) की दूरी क्रमशः घटती जाती है।

प्रसवके कुछ दिन पहलेसे ही धीमा-धीमा दर्द हुआ करता है। इसे **नकली या अप्रकृत प्रसव-वेदना** (False pain) कहते हैं। इस नकली दर्दके कारण जरायुकी वृद्धि, आँतोंमें दबाव और सामान्य बदहज़मी-सी हो जाती है। यह बदहज़मी हलका जुलाब लेनेसे ही दूर हो जाती है और साथ-ही-साथ दर्द भी दूर हो जाता है। स्थायी और प्रसव-वेदनाके साथ इसका यही प्रभेद है, कि यह नकली प्रसवका दर्द उदरके ऊपरी भागमें होता है, दर्द अस्थायी और अनियमित होता है। असली प्रसवका दर्द प्रायः कमरके पीछेकी ओर चतुर्थ कटि-कशेरुका अस्थिके स्थानपर होता है और दर्द भी नियमित भावसे और स्थायी होता है।

प्रथम अवस्था।—प्रकृत प्रसव-वेदनासे आरम्भकर जरायु-मुखके प्रसारण या फैलनेतक जो कुछ परिवर्त्तन होता है, उसको प्रथम अवस्था कहते हैं। यह कई घण्टोंसे लेकर कई दिनोंतक स्थायी हो सकती है। इसी समय असली प्रसवका दर्द होना आरम्भ होता है। गर्भवती बेचैनीसे टहलती रहती है। साधारणतः आधे घण्टेका अन्तर देकर इस तरहके दर्दकी लहर आती है। कमरकी हड्डीपर दबाव पड़ रहा है—ऐसा ही इस दर्दमें अनुभव होता है।

गर्भवतीको बार-बार पेशाबका वेग होता है। किसीको वमन और कम्प भी होता है। जरायु-मुख क्रमशः फैलकर योनि-पथके साथ मिल जाता है, पानीकी थैली धक्का देकर बाहर निकलना चाहती है और इसके बाद फटकर भ्रूणके माथेके केश दिखाई देते हैं।

इस समय योनि-मुख और योनि-पथके श्लैष्मिक स्रावकी वृद्धि हो जाती है। यह स्राव और थैली फटकर जो जलीय पदार्थ निकलता है, उससे प्रसव-द्वार इतना चिकना हो जाता है, कि शीघ्र ही प्रसव हो जाता है। इस समय फूलका भी कुछ अंश जरायुसे अलग हो जाता है। इसीलिये थोड़ा-सा रक्त भी इस स्रावके साथ दिखाई देता है। यह अच्छा लक्षण है।

भ्रूण-मस्तक अपेक्षाकृत कठिन अस्थिमय वस्तिगह्वर (Bony Pelvis) में अड़ जानेके कारण और थैलीके भीतरके जलमें जरायुको सिकोड़नेके प्राकृतिक नियमके अनुसार भ्रूणके ऊपर कुछ दबाव पड़ता है तथा केवल भ्रूणके माथेपर जरायु-पेशीके संकोचनका दबाव न पड़नेके कारण, दबाव नीचेकी ओर अर्थात् भ्रूणके माथेकी ओर हो जाता है। इससे भी जरायुका मुँह फैलता है और प्रसव-कार्यमें सहायता मिलती है।

द्वितीय अवस्था या निर्गमनावस्था।—जरायु-मुखके सम्पूर्ण फैल जानेके बादसे भ्रूण सम्पूर्ण निकल जाने-

तककी अवस्थाको प्रसवकी दूसरी अवस्था कहते हैं। यह अवस्था कई मिनटोंसे लेकर छः-सात घण्टेतक स्थायी रहती है।

इस समय लगातार तेज़ दर्द हुआ करता है। यह दर्द इस ढङ्गका होता है, मानो कुछ ठेलकर बाहर निकलना चाहता है (Bearing down pain)। गर्भिणी स्वयं भी जोरसे साँसका दवाव डालकर उदरकी पेशियोंकी सहायतासे पेटमें दबाव डालती है या काँखा करती है, कभी-कभी तो पासकी किसी चीज़को पकड़कर जोरसे काँखती है, रोती है या चिल्ला उठती है। काँखने और जरायुकी संकोच्चन क्रियाके दबावसे भ्रूणका माथा धीरे-धीरे बाहर निकलता जाता है। इस दबावसे मलद्वार और योनिपथके बीचका स्थान जिसे मणिपुर या पेरिनियम (Perineum) कहते हैं वह भी धक्का देकर बाहर निकल आता है। भ्रूणके दबावकी वजहसे बार-बार पाखाना, पेशाब होता है। इसके बाद एक बार जोरसे दर्द होकर माथा बाहर निकल आता है और फिर देह बाहर निकलती है।

तृतीय अवस्था।—भ्रूणके बाहर निकलनेके बादसे, फूल या कमल (Placenta) बाहर निकलनेतककी तृतीय अवस्था कहते हैं। इस समय प्रायः एक घण्टेका समय लगता है।

इस समय फिर जरायुका सङ्कोचन हुआ करता है। इस सङ्कोचनका उद्देश्य है, धमनियोंका मुख संकुचितकर रक्त-स्रावको रोकना और फूलको बाहर निकाल देना।

साधारणतः प्रसवके समय सैंकड़े ८६ प्रसवमें भ्रूणका माथा ही पहले निकलता है और मस्तक शिखर (vertex) पहले जरायु मुखपर दिखाई देता है या वस्तिगह्वरमें प्रवेश करता है। किसी-किसीको मुख, भौं, हाथ, पैर वस्ति इत्यादि अङ्ग ही प्रसवके पहले निकलता है। यह अशुभ लक्षण है। अधिकांश स्थानोंमें ही इस समय बच्चेकी मृत्यु हो जाती है, पर सौभाग्यवश ऐसा बहुत कम होता है। ऐसे प्रसवके समय चिकित्सा करना बहुत कठिन होता है, यहाँतक कि सुशिक्षित धात्रियाँ भी सहजमें ऐसा प्रसव कार्य सम्पन्न नहीं कर सकतीं। इसीलिये स्वाभाविक प्रसवके विषयमें ही यहाँ वर्णन किया गया है, यदि कोई जटिल अवस्था आ पहुँचे तो तुरन्त किसी निपुण धात्रीकी सहायता लेनी चाहिये।

प्रसव-कौशल।—इस कार्यके लिये तीन विषय उल्लेख योग्य हैं। जैसे—प्रसव-पथ, भ्रूण, प्रसव-शक्ति।

पहले बताया जा चुका है, कि वस्तिगह्वर आड़ा-आड़ी भावसे (Transversely) कुछ चौड़ा और सामने पीछे (Anterio-posteriorly) कुछ दबा हुआ है। अतएव आड़ा-आड़ी भावका व्यास (Transverse diameter)

सामने पीछेके व्यास (Anterio-posterior diameter) से कुछ बड़ा है और भी जान रखने योग्य एक विषय यह है कि वस्तिगह्वरका कोना-कोनी व्यास (oblique diameter) सबसे बड़ा है। इसलिये, साधारण बुद्धिमें भी यह बात समझमें आ जा सकती है, कि चौड़ी राहसे ही कोई चीज़ बाहर निकलना सहज है। प्राकृतिक नियमके अनुसार होता भी ऐसा ही है।

भ्रूणके माथेका व्यास मापनेपर देखा जाता है, कि उसके सामने पीछेका व्यास जितना बड़ा है, चौड़ाई अर्थात् आड़ा-आड़ीका व्यास उतना नहीं है। इधर गर्भिणीके वस्तिगह्वरका कोना-कोनी व्यास भी सामने पीछेकी ओरसे अधिक प्रशस्त है। इससे यह सहजमें ही समझमें आ सकता है, कि भ्रूणके माथेका दीर्घ व्यास अर्थात् सामनेसे पीछेका व्यास यदि वस्ति-गह्वरमें कोना-कोनी व्यासके साथ संयोजित हो, खासकर यदि भ्रूणका माथा पीछेकी ओर वस्तिगह्वरके सामनेकी ओर रहे, तभी यह राह सुगम हो सकती है। ईश्वरके अनुग्रह और प्रकृतिके नियमके अनुसार ऐसा ही होता है।

भ्रूणका माथा वस्ति-गह्वरमें ठीकसे बैठकर एक बार घूमने बाद माथा पीछेकी ओर गर्भिणीके सामनेकी ओर और मुँह गर्भिणीके पीछेकी ओर आ जाता है। इस अवस्थामें ही क्रमशः मस्तक बाहर निकलता है।

इस समस्याके समाधानके बाद और भी एक समस्या रह जाती है। अधिकांश स्थानोंमें ही भ्रूणके माथेकी परिधि

(Circumference) वस्ति-गह्वरकी परिधिसे कुछ छोटी रहती है, इस समस्याके समाधानके लिये भ्रूणका माथा और गर्भिणीके वस्ति-गह्वरके ऊपरी भागमें परिवर्त्तन हो जाता है। भ्रूणका माथा जरायुके बहिर्मुखी दबावसे वस्ति-गह्वरके स्थानके अनुसार ही ढीला रहता है। इसे ढालना (Moulding) कहते हैं। इसके बाद प्रसवके उपरान्त धीरे-धीरे माथा अपने पूर्वके आकारमें आ जाता है। गर्भिणीके वस्ति-गह्वरकी सामनेवाले भागकी अस्थि (Os pubes) सन्धिमें दरार होकर वस्ति-गह्वरकी परिधि बढ़ जाती है।

इसके बाद जरायुके सङ्कोचनकी वजहसे भ्रूणका माथा क्रमशः बाहर निकल आता है। यहाँ फिर एक नवीन समस्या उत्पन्न हो जाती है। भ्रूणके माथेका दीर्घ-व्यास वस्तिगह्वरके दीर्घ-व्यासके अनुयायी बाहर निकलनेपर भी भ्रूणका कन्धा आकर सम्पूर्ण निकल आनेमें बाधा प्रदान करता है ; क्योंकि कन्धेका व्यास माथेके व्याससे उल्टी ओर रहता है और माथेका वृहत्तर व्याससे कहीं अधिक बड़ा होता है। इसीलिये भ्रूणकी देह इस समय घूमकर कन्धेका वृहत्तर व्यास वस्ति-गह्वरके वृहत्तर व्यासमें लग जाता है। भ्रूणकी देह घूमनेपर उसका मुँह गर्भवतीके दाहिने या बायें ऊरुकी ओर रहता है और माथेके पीछेका भाग दूसरे ऊरुकी तरफ रहता है। इस समय भ्रूणके कन्धेका वृहत्तर व्यास मस्तकके व्यास तथा वस्ति-गह्वरके व्याससे बड़ा होनेके कारण वह टेढ़ा होकर पहले ऊपरकी ओरका अंश बाहर निकलता है, फिर नीचेकी ओरका

अंश निकलता है। कन्धा बाहर निकल जानेपर बड़े सहजमें समूचा अंश बाहर निकल आता है।

प्रसवकी समयकी सावधानता।—पहले तो प्रसवका दर्द आरम्भ होनेके आनुमानिक कालके कुछ पहलेसे ही इस बातपर ख़याल रखना चाहिये, कि गर्भवतीका कोठा साफ़ रहे। हलका जुलाब (Coal tar preparation) (preferably) और फल, दूध, मीठा इत्यादि खिलाकर साफ़ कर देना चाहिये। गर्भिणीको नित्य कुछ गर्म पानीसे स्नान करना चाहिये, इससे त्वचा साफ़ रहती है। गर्भिणीको हमेशा साहस देते रहना चाहिये। घरमें जो कमरा सबसे अच्छा हो, उसे ही प्रसवके लिये ठीक करना चाहिये। यह कमरा हवादार, शुद्ध और रोशनीसे भरा होना चाहिये। सामाजिक रीतिके अनुसार यदि अलग कमरा रखनेका नियम हो, तो वह भी उत्तम और हवा, रोशनीसे भरा होना चाहिये। इस देशमें प्रसव-गृह या सौरी घर सबसे गन्दा चुना जाता है। शिशु-मृत्यु, गर्भिणी-मृत्युका यह भी एक अन्यतम कारण है। संसारके भविष्य वंशधरोंके लिये इस तरह ताच्छिल्य भाव क्यों इस देशमें प्रचलित हो गया है, इसका कोई कारण नहीं मालूम होता। प्रसव-गृहमें बहुत चीज़-वस्तु न रहनी चाहिये। प्रसवके समय बहुत मनुष्योंका रहना या झाँककर देखना, खासकर उस स्थानपर पुरुषका जाना किसी अवस्थामें भी उचित नहीं है; क्योंकि उससे गर्भवतीमें संकोच पैदा हो जाता है। प्रसव-गृह प्रशस्त, खुलासा होना आवश्यक है।

इस घरमें अलग-अलग भावसे साफ कपड़े, साफ तौलिया, दो-तीन गमले पानी, जायतून या तिलका तेल, साबुन, साफ़ बिछावन, आयल क्लाथ, एक शोधित कैंची, शोधित सूता भी रख देना चाहिये। थोड़ा गर्म दूध रह-रहकर गर्भिणीको पिलाते रहना चाहिये। जो धात्री गर्भिणीके प्रसव-द्वारकी परीक्षा करें, वे गर्म पानी या साबुनसे हाथ साफ किये बिना, योनि-मार्गमें कभी हाथ न डालें। धात्रीके हाथका नख भी कटा होना चाहिये। यदि हाथमें किसी तरहका चर्म-रोग रहे, तो उस धात्रीसे काम न लेना चाहिये। दर्द यदि भरपूर तेज़ न हो, तो थोड़ा-थोड़ा गर्म दूध या चाय पिलानी चाहिये। उपयुक्त होमियोपैथिक औषध सेवन करानेपर नियमित स्वाभाविक प्रसव-क्रियामें सहायता मिलती है। माथा निकल जानेके समय मणिपुर या पेरिनियम फट जा सकता है। इसलिये उस स्थानको बाहरसे इस तरह दबा रखना चाहिये, कि वह फट न जाये। माथा प्रसव हो जानेपर एक तौलिया या साफ़ कपड़ा भिंजाकर आँख साफ़ कर देनी चाहिये। यदि किसी बच्चेके गलेमें नाल लिपटा हो, तो उपयुक्त धात्री या चिकित्सककी सहायतासे गलेसे नालका घेरा निकाल देना चाहिये, नहीं तो प्रसवमें निरर्थक विलम्ब होता है और गलेमें फाँस लगकर सन्तानकी मृत्यु भी हो जाती है।

माताके गर्भ और पृथ्वीका ताप अलग-अलग रहता है। इसलिये, बच्चेको जन्म ग्रहण करनेके बाद ही सर्दी लग जा सकती है। इस विषयमें भी बहुत कुछ सावधान रहना

चाहिये। इसी समयसे बच्चेको बोध-शक्ति काम करना आरम्भ कर देती है, इसीलिये, प्रसव होनेके बाद ही बच्चा रोने लगता है। श्वास-प्रश्वासका कार्य भी आरम्भ हो जाता है। माथेमें रक्त-शून्यता न पैदा हो जाय, इसपर भी ख़याल रखना चाहिये। माताके गर्भमें बच्चेको सर नीचेकी ओर रखनेका अभ्यास रहता है, इसलिये बच्चेका माथा जरा ढालवें स्थानकी ओर रखकर शय्यामें करवट सुलाना चाहिये। दाहिनी करवट सुलानेपर उसके खूनके दौरानमें सहायता मिलती है।

यदि बच्चा न रोये या उसकी आवाज़ न मिले, तो उसकी कमरको जोरसे (पर ऐसा नहीं, कि तकलीफ़ हो) थपथपाना चाहिये या आँख-मुँहपर ठण्डे पानीका छींटा देना चाहिये। इससे बच्चेकी ज्ञान-शक्ति क्रिया करने लगती है। जीभपर थोड़ा-सा गोलमिर्चका चूर्ण रखने या शरीरपर धीमे-धीमे चिकोटी काटनेकी प्रथा भी प्रचलित है। यदि इतनेपर भी बच्चा होशमें न आये, तो तुरन्त पासके किसी चिकित्सककी सहायता लेना उचित है।

इसी समय शिशुका श्वास-प्रश्वास आरम्भ होता है। बच्चेका श्वास-प्रश्वास आरम्भ होनेपर भी कुछ देरतक राह देखनी पड़ती है। बच्चेकी नाल (मातृ-गर्भके कमलके साथ मिली रहती है) की परीक्षा कर, नालकी नाड़ीकी गति बन्द होनेपर नाभीसे कम-से-कम १॥ इञ्चकी दूरीपर और फिर वहाँसे तीन इञ्च हटकर दो गाँठें देनी चाहियें। जिस सूतसे यह गांठ दी जाये, उसे खौलते पानीमें अच्छी तरह खौला लेना

चाहिये। इसके बाद बाहरकी ओर अर्थात् माताकी ओरके बन्धनको पकड़कर इन दोनों गांठोंके बीचमें काटना चाहिये। इनके लिये एक नयी छुरी या कैंची पहलेसे ही खौलते पानीमें खौला रखनी चाहिये। हमारे देशमें कहींसे एक छुरी लाकर नाल काटी जाती है। इस मारात्मक कार्यके कारण भी बहुतसी गर्भिणी और नवजात शिशुओंको टिटेनस या धनुष्टङ्कार रोग हो जाया करता है। इसी धनुष्टङ्कारको ही पूतना लगना या भूत लगना कहते हैं और अपने अपराधको भूतके सर डालकर मनको सन्तोष दिया जाता है। नाल काटने बाद नालको फिर घुमाकर बाँधना अच्छा है। जैसा फुटबालका ब्लाडर बाँधा जाता है, उसी तरह; इसके बाद प्रसवके समय गर्भिणीका मणिपुर अर्थात् मलद्वार और योनिद्वारके बीचके स्थानमें जखम हुआ है या फट तो नहीं गया है, इसकी परीक्षा करना उचित है। जखम होने या फट जानेपर उपयुक्त चिकित्सककी सहायतासे इसकी सिलाई कर देना उचित है।

इसके बाद नवजात शिशुकी ओर ध्यान देना चाहिये। बच्चेको कुछ गर्म पानीमें नहलाकर कोमल बिछावनपर सुला देना चाहिये। अंगुली लगाकर थोड़ा शहद चटा देना अच्छा है। नाभी जबतक सूख न जाये, तबतक परिष्कार कपड़ेकी पट्टी बाँधकर उदरके साथ बाँध रखना अच्छा है। पीव न पैदा हो, इस बातपर ध्यान रखना चाहिये। सद्यः प्रसूताका स्तनका दूध कुछ निकाल देने बाद बच्चेको पिलाना चाहिये।

माताका पिलाया स्तनका दूध ही बच्चेका सर्वश्रेष्ठ खाद्य है; परन्तु स्तन पिलानेवाली माता यदि बीमार हो जाये, तो सन्तानको भी बीमारी हो जाती है। मातृ स्तनका दूध न मिलनेपर या दूहा दूध या बाहरका दूध सेवन करनेपर भी सन्तान सदाके लिये रोगिनी तथा स्वल्पजीवी हो जाती है। इसीलिये माताके स्तनमें यथेष्ट दूध ईश्वरकी ओरसे दिया जाता है। अतएव, इस बातपर भी ख़याल रखना चाहिये, कि वह दूध विशुद्ध रहे और माताको किसी प्रकारकी बीमारी न हो। बच्चेका यकृत ठीक न रहनेकी वजहसे यदि माताका दूध सहन न हो, तो सुदक्ष होमियोपैथिक चिकित्सककी सहायतासे चिकित्सा कर उसको निरोग करना होगा और इस समय चिकित्सकके आदेशानुसार कोई एक बिलायती दूधका सेवन कराना होगा।

प्रसवके समयके तीन आवश्यक कर्त्तव्य

१। **संक्रमण** (Sepsis)—प्रसवके समय इसपर नज़र रखनी होगी, कि जीवाणुका संक्रमण न हो जाये। इस समय कितने ही भीतरी यन्त्र खुली अवस्थामें रहते हैं, इसलिये जीवाणुके संक्रमणका भय हमेशा ही बना रहता है। प्रसवके कुछ पहलेसे ही साफ़-सुथरा रहना चाहिये। धात्रीको भी इसी तरह खूब साफ़ रहना उचित है। बिना गर्म पानी और साबुनसे हाथ धोये

किसी भी धात्रीको प्रसूताकी परीक्षा करना उचित नहीं है। इस समय जितना ही साफ़ रहा जाये, उतना ही अच्छा है।

२। रक्त-स्राव (Hemorrhage)—बहुत ज्यादा रक्त-स्राव न हो, इसपर भी लक्ष्य रखना चाहिये। यदि किसी अनिवार्य कारणवश बहुत ज्यादा रक्त-स्राव हो, तो प्रसूताको बलकारक और रक्तवर्द्धक पथ्य, सम्पूर्ण विश्राम इत्यादिकी सहायतासे तुरत ताक़त लानेका प्रबन्ध करना चाहिये।

३। मणिपुर या योनि तथा मलद्वारकी मध्यवर्त्ती स्थानका फटना (Laceration of the Perineum)—धात्रीकी असावधानता, योनिद्वारका छोटापन या भ्रूणकी वृहत् आकृतिके कारण ऐसा हो जाता है। ऐसा होनेपर तुरन्त उपयुक्त चिकित्सककी सहायतासे उस फटी जगहको सिलवा देनी चाहिये।

उदर काटकर प्रसव।—(Cesarean Section)—योनिद्वार; वस्ति-गह्वर प्रभृतिका बहुत छोटा रहना; वस्तिगह्वरकी आकृतिमें गड़बड़ी, भ्रूणके शरीर और माथेका बहुत बड़ा होना इत्यादि कारणोंसे किसी-किसी स्त्रीका पेट काटकर प्रसव कराना पड़ता है और सन्तानको बाहर निकाल लेना पड़ता है। यह बहुत सुशिच्चित धात्री ही कर सकती है। ऊपर लिखे

कारणोंसे उदर काटकर सन्तान आदि निकाल लेनेकी जरूरत आ पड़े, तो ऐसा प्रबन्ध करना चाहिये, कि फिर दुबारा गर्भ न रह जाये।

यन्त्रकी सहायतासे प्रसव (Forceps delivery)।—यदि सन्तान जरायुमें मर जाये, प्रसवकी उपयुक्त व्यवस्था न हो तथा अन्यान्य कितने ही कारणोंसे यन्त्रकी सहायतासे प्रसव कराना पड़ता है। यह भी सुशिक्षित धात्री द्वारा ही होता है।

काटकर या मारकर सन्तानका प्रसव।—यदि सन्तानका माथा बहुत बड़ा हो या योनिद्वार अथवा वस्ति-गह्वर छोटा हो, प्रसूति यदि दुर्बल हो, तो सुशिक्षित धात्री यदि उचित समझे तो प्रसूति और शिशु दोनोंकी ही जान न चली जाये तथा प्रसूतिकी जीवन-रक्षाके लिये, शिशुकी देह काटकर या माथा तोड़कर प्रसव करा सकती है।

संक्षेपमें "प्रसव" अध्यायका वर्णन यहाँ समाप्त होता है। स्थानाभावके कारण इस पुस्तकमें समस्त धात्री विद्याका वर्णन नहीं किया जा सकता। पाठकोंकी साधारण जानकारीके लिये यहाँ संक्षेपमें ही उपयुक्त वर्णन दिया गया है। विशेष जानकारी प्राप्त करनेके लिये धात्री विद्या सम्बन्धी पुस्तकें पढ़नी चाहियें।

———

गर्भमें कन्या या पुत्र उत्पन्न होनेका कारण

गर्भका भ्रूण बालक या बालिकामें किस तरह परिणत हो जाता है, यह रहस्य अबतक अन्धेरेमें ही छिपा है। महर्षि सुश्रुत कहते हैं, कि पुरुषका शुक्र ज्यादा रहनेसे नारीके गर्भाशयमें पुत्र और औरतका आर्त्तव ज्यादा रहनेसे कन्या पैदा होती है। इसी तरह शुक्र और आर्त्तव बराबर हो तो नपुंसक सन्तान पैदा होती है। ऋतुकालमें जोड़े दिनोंमें स्त्री पुरुषका संसर्ग होनेसे पुत्र और फुट दिनोंमें संसर्ग होनेसे लड़की पैदा होती है। इसका तात्पर्य यह है, कि इन जोड़े दिनोंमें औरतोंको आर्त्तव कम रहता है और फुट दिनोंमें ज्यादा रहता है; इससे जोड़े दिनोंमें लड़का और फुट दिनोंमें लड़की पैदा होती है। अतएव लड़का चाहनेवाले मनुष्योंको ऋतुकालमें पवित्र भावसे स्त्रीका संसर्ग करना चाहिये; परन्तु आजकलके बहुतसे जीवतत्वके जानकार, बेंगची, मधुमक्खीका अण्डा, भूंआ या रेशमका कीड़ा वगैरह कई निकृष्ट प्राणियोंको अच्छी तरह पुष्टिकर भोजन खिलाकर उस श्रेणीकी स्त्री-जाति और उन्हें ही अपुष्टिकर भोजन खिलाकर या उपवास कराकर उनसे पुरुष-जातिके बेंग, मधुमक्खी या भँवरा पैदा कर चुके हैं। [Besides the works of Gedde's Evolution of Sex (P. 163) Thompson and of Rolp, consult Young's Evolution of Sex (pp. 41—46)

& Havelock Ellis's Man & Women p. 2] क्या उत्कृष्ट जीवोंके लिये भी यही नियम है, कि पौष्टिक भोजनके तारतम्यके अनुसार ही नरभ्रूण जरायुमें बाल या बाला * बन जाता है? क्या भ्रूणके पोषणकी उपयुक्त भरपूर व्यवस्था कर देनेसे गर्भिणी स्त्री कन्या पैदा करती है और अभावमें ही पुत्र होता है? †

---

* "In actual practice it has been found possible, in the case of certain organisms, to produce either maleness or femaleness by simply varying their nutrition—femaleness being an accompaniment of abundant food, maleness of the reverse,"—Ascent of man, cheap edition (pp. 114—115 देखिये), by H. DRUMMOND.

† और एक जापानी विशेषज्ञके मतसे गर्भवती रमणी अपने मनके बलसे अपने गर्भके भ्रूणको पुत्र या कन्यामें परिणत कर सकती है, जैसे—गर्भ-धारणके दो महीनेके बीचमें कम-से-कम एक पलतक "हमें लड़का होगा, हमें लड़का होगा," यह बात नींद न आनेतक बराबर सोचती रहे, तो वह गर्भिणी, यथा समय अवश्य ही पुत्रको जन्म देगी। इस तरहकी प्रक्रियासे जापानकी २००० औरतोंमें प्रायः साढ़े उन्नीस सौ १९५० के लड़के ही पैदा हुए थे।

प्रसवके समय नीचे लिखी बुराइयोंसे बचना चाहिये

१। अशिक्षिता दाईसे वारम्वार प्रसव-द्वारकी परीक्षा कराना, उचित नहीं है। इससे दाईके अशोधित हाथोंके जीवाणु संक्रमण कर कितनी ही प्राणघातक बीमारियाँ हो जाती हैं। २। प्रसवके समय या बाद मैले कपड़े पहनना बच्चा-जच्चा दोनोंको विपत्तिमें डालता है। इससे जीवाणुका संक्रमण होकर एक या दोनोंको प्राणनाशक बीमारी हो सकती है और प्राण भी जा सकता है। ३। प्रसवकालमें योन-द्वारमें तेल आदि लगाना उचित नहीं है। ४। प्रसव गृहके दरवाजे बन्दकर कोयला या लकड़ी जलाकर बच्चेको सेंकना उचित नहीं है, इससे साँस रुककर मृत्यु या दुरारोग्य रोग हो सकते हैं। ५। साधारणतः प्रसव-गृह, प्रसूता, बच्चा और सौरी-घरके सामान अशुद्ध माने जाते हैं; पर यह भूल है। इन्हें अशुद्ध न समझकर सफाईपर ध्यान रखना चाहिये। ६। साधारणतः इस देशकी स्त्रियाँ सन्तान-प्रसवके १०-१२ दिन बाद ही काम-काज करने लगती हैं, यह जच्चा-बच्चा दोनोंके लिये हानिकर है। पोषणमें बाधा पड़ती है; कम-से-कम २।३ महीने विश्राम करना चाहिये। ७। फेंके जानेके ख़यालसे प्रसूताको साधारणतः अच्छा बिछावन नहीं दिया जाता। यह गहरा अन्याय है। घरका सबसे साफ और अच्छा बिछावन प्रसूताके लिये देना उचित है। ८। कच्ची नाड़ियाँ न सूखेंगी—इस डरसे प्रसूताको भरपूर पानी नहीं पीने दिया जाता—यह अन्याय और भूल है—खूब ज्यादा पानी पिलानेसे हानि नहीं पहुँचती; बल्कि पेशाब भरपूर होकर शरीरके सब दूषित-पदार्थ निकल जाते हैं और प्रसूता सहजमें ही स्वस्थ हो जाती है।

प्रसव दिन-निर्द्धारण

बैशाख	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
माघ	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३
ज्येष्ठ	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
फाल्गुन	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३
आषाढ़	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
चैत्र	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१
श्रावण	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
बैशाख	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१
भाद्र	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
ज्येष्ठ	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
आश्विन	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
आषाढ़	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३
कार्त्तिक	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
श्रावण	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२
अग्रहण	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
भाद्र	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३
पौष	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
आश्विन	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३
माघ	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
कार्त्तिक	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३
फाल्गुन	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
अग्रहण	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३
चैत्र	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
पौष	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२

* हमने १३९१ पृष्ठमें यह उल्लेख किया है, कि गर्भ दिनसे गणना करनेपर स्तम्भके प्रथम पंक्तिमें गर्भ-सञ्चार (या ऋतु बन्द) की मिती और दूसरी पंक्तिमें बैशाखको गर्भ-सञ्चार हुआ, अन्दाजन ८ माघको उसे प्रसव-वेदना प्रारम्भ होगी ;

तालिका (सौर मास)।

१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	वैशाख।
२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	१	२	३	४	५	६	७	फाल्गुन।
१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८				ज्येष्ठ।
२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	१	२	३	४	५				चैत्र।
१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	आषाढ़।
२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	१	२	३	४	५	वैशाख।
१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०		श्रावण।
२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	१	२	३	४		ज्येष्ठ।
१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	भाद्र।
२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	१	२	३	४	५	६	७	आषाढ़।
१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०		आश्विन।
२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	१	२	३	४	५	६		श्रावण।
१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	कार्त्तिक।
२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	१	२	३	४	५	६	७	भाद्र।
१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	अग्रहण।
२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	१	२	३	४	५	६	७	आश्विन।
१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०		पौष।
२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	१	२	३	४	५	६	७		कार्त्तिक।
१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	माघ।
२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	१	२	३	४	५	६	७	अग्रहण।
१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०		फाल्गुन।
२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	१	२	३	४	५	६		पौष।
१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	चैत्र।
२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	१	२	३	४	५	६	७	माघ

न्यूनाधिक ४० सप्ताह या २८० दिनके बाद प्रसव-वेदना प्रारम्भ होती है। प्रत्येक आनुमानिक प्रसव दिन दिया गया है; यथा :—मान लीजिये किसी स्त्रीको १ ला २ कार्त्तिकको गर्भ-सञ्चार होनेसे ९ श्रावणको सम्भवतः प्रसव-वेदना होगी।

प्रसवकी किस अवस्थामें डाक्टर बुलाना चाहिये

हमारे देशमें साधारणतः धाय द्वारा ही प्रसव-कार्य कराया जाता है। कहीं-कहीं जानकार गृहिणियाँ भी सहायता किया करती हैं। अकसर डाक्टर नहीं बुलाया जाता, बुलाया भी जाता है, तो देरसे, जब डाक्टरके हाथमें परिताप करनेके सिवा और कुछ नहीं रह जाता। इसलिये, किस अवस्थामें डाक्टर बुलाना चाहिये। इसका संक्षिप्त आभास नीचे दिया जाता है।

१। गर्भावस्थामें।—अपेक्षाकृत टेढ़ा-मेढ़ा प्रसव-पथ। हाथ-पैर फूले, उपदंश, प्रमेह आदि रोग; गर्भवतीकी अस्वाभाविक खर्वता, रक्त-स्राव, बहुत वमन प्रभृति लक्षणोंमें।

२। प्रसवके समय।—रक्त-स्राव हो; प्रसव-पथ या (मलद्वारका मध्यवर्त्ती स्थान) पेरिनियम फट जाये; यदि प्रसव-पथसे एक हाथ या एक पैर बाहर निकले; दर्द यदि रुक जाता है; बच्चेके गलेमें यदि नाल लिपट जाये; यदि प्रसवके दर्दसे जच्चा सुस्त हो पड़े; पानी निकलनेके एक घण्टा बादतक यदि प्रसव न हो; यदि प्रसव-पथमें भ्रूण ठीक भावसे न आये; प्रसव कार्यमें अस्वाभाविक विलम्ब हो; प्रसूतिको बार-बार मूर्च्छा या अकड़न हो।

३। प्रसवके बाद।—सन्तान होने बाद यदि एक घण्टेके भीतर फूल न निकल पड़े; यदि प्रबल ज्वर; कम्प; दुर्गन्ध-स्राव; पैर फूले; स्तन फूले; बहुत ज्यादा रक्त-स्राव या कोई दूसरी बीमारी हो जाये।

४। तुरन्तका जनमा बच्चा।—श्वास-प्रश्वास बन्द, नीलापन, आँखोंका प्रदाह; मल-द्वार; मूत्र-द्वार; मुख या किसी दूसरे अङ्गकी कोई बीमारी दिखाई दे, तो तुरन्त पासके सुयोग्य चिकित्सककी सहायता लेनी चाहिये।

———

१ । गर्भावस्थाके उपसर्ग

गर्भावस्थामें गर्भिणीको बहुत सावधानतासे रखना चाहिये। गर्भ होनेसे लेकर प्रसवके समयतक साधारणतः कितने ही तरहके रोग पैदा होते हैं, इस कारणसे गर्भिणीको बहुत तकलीफ़ होती है। नीचे प्रधान-प्रधान उपसर्ग और उन्हें दूर करनेके उपाय लिखे जाते हैं।

मूर्च्छा।—बेहोशी होते ही मुँहपर ठण्डे पानीका छींटा देना और मस्कस या स्पिरिट कैम्फर सुँघाना उचित है। बेहोशी दूर होनेपर नीचे लिखी दवाएँ देनी चाहियें।

रस-रक्त आदि निकलनेकी वजहसे बेहोशी होनेपर—चायना ६—३० ; डरकर बेहोश होनेपर—ओपियम ६ ; शोक, दुःख वगैरहसे बेहोश होनेपर—इग्नेशिया ६ ; हृत्पिण्डकी क्रिया क्षीण होनेके कारण बेहोश होनेपर—डिजिटेलिस ६ ; स्नायविक दुर्बलताकी वजहसे बेहोश होनेपर—एसिड-फास ६ ; सोये रहने बाद बेहोश होनेपर—लाइको ६ ; शय्यासे उठने बाद बेहोश होनेपर—ऐकोन ३x ; रक्त-स्रावकी वजहसे बेहोशी होनेपर—चायना ३ ; चोटकी वजहसे बेहोश होनेपर—आर्निका ३x ; हिस्टीरियाकी वजहसे बेहोशीमें—मस्कस ३x।

सरमें दर्द।—रक्त-सञ्चयकी वजहसे सरमें दर्द होनेपर—ऐकोन, बेल, ओपि ; पित्तके साथ खूनकी ज्यादतीसे दर्द होनेपर—मर्क-सोल, पोडो ; वातसे सरमें दर्द होनेपर—

ब्रायो ; अजीर्णको वजहसे सर-दर्द होनेपर—नक्स, पल्स, इपि, सलफर ; सर्दीको वजहसे सरमें दर्द होनेपर—ऐकोन, डाल्का, इग्ने, वैलेरियाना ; सविराम सर-दर्दमें—चायना, क्विनाइन। खूनकी ज्यादतीकी वजहसे सरमें चक्कर और आँखोंके सामने काले-काले दाग पड़ना लक्षणमें—ऐकोनाइट ३। टपककी तरह सर-दर्द और आँखें तथा मुँह लाल और कानमें भों-भों आवाज़के लक्षणमें—बेलेडोना ६। माथेमें चिलक उठनेकी तरह दर्दमें—नक्स-वोमिका ३०। जरूरत होनेपर "सर-दर्द"की चिकित्सासे दवाएँ चुनकर देनी चाहियें।

पीठ और कमरमें दर्द।—ब्रायो ३, रस-टक्स ६ और सिपिया ३०, इसकी प्रधान दवाएँ हैं। तलपेटमें प्रसवके दर्दकी तरह दर्द हो, तो सिकेलि ३। बहुत मेहनत करनेकी वजहसे दर्दमें—आर्निका ३। पीठके दर्दमें—कैल्के-कार्ब और कास्टिकम ६। दर्द दाहिनी या बायीं तरफ होता हो, तो—कैमोमिला ६, पल्स ३, फास्फो ३, ऐकोन ३x। कमरमें फ्लैनेल या कोई गर्म कपड़ा बाँध रखना उचित है।

पेट ऐंठना।—गर्भमें बच्चा बढ़ता रहता है, इस वजहसे शिराएँ और धमनियाँ, स्नायु वगैरह भी बढ़ा करते हैं और इसी वजहसे "पेटमें खोंचा मारता है।" पेटमें खून इकट्ठा हुआ मालूम होनेके साथ बोखारके लक्षणमें—ऐकोन ; पेटमें चबानेकी तरह दर्द होनेपर गर्भवती पीछेकी ओर झुक जाती है—बेल ३x ; पेटमें खोंचा मारना (खानेके बाद बढ़ जाये)

और मिचली, वायु निकलना और कब्जियत रहनेपर—नक्स-वो ३x ; खोंचा मारना या सुई वेधनेकी तरह दर्द और उसके साथ मिचली या खाई हुई चीज़ कै करना लक्षणमें—पल्स ६ ; कभी-कभी विरे-एल्बकी भी जरूरत पड़ती है।

दाँतमें दर्द।—बोखारके साथ दाँतमें दर्द रहनेपर, एकोनाइट ३x। स्नायविक उत्तेजना या अजीर्ण-दोषकी वजहसे दाँतमें दर्द होनेपर—नक्स-वोम, कैल्केरिया-फ्लोरिटा ६, मर्क ६, कैमोमिला १२, एण्टिम-क्रूड ६ या क्रियोजोट १२, लक्षणके अनुसार प्रयोग किये जा सकते हैं। स्पाइजिलिया और स्टैफिसाइग्रियाकी भी बीच-बीचमें जरूरत पड़ती है। "दन्त-शूल" देखिये।

शोथ।—गर्भवाली अवस्थामें खूनके दौरानमें रुकावटके कारण पैर, उरु और योनिमें सूजन हुआ करती है। आर्सेनिक ३०, चायना ६, कैन्थ ३, सलफर ३०, ब्रायोनिया ३, डिजि ३x, एपिस ३ या फेरम ३०, लक्षणके अनुसार देना चाहिये। "शोथ" देखिये।

हिस्टीरिया।—वायु-प्रधान धातुवाली गर्भिणी औरतोंको हमेशा यह बीमारी हुआ करती है। हिस्टीरियाकी वजहसे अकड़न बहुत ज्यादा होनेपर, गर्भपात भी हो जा सकता है। इस अकड़नके पहले ऐसा मालूम होता है, मानो गलेमें कोई चीज़ अटकी हुई है। फूट-फूटकर रोना, वृथा ही निगलनेकी कोशिश करना, दृढ़ मुट्ठीसे कसकर अपना गला

पकड़ रखना, चेहरा मलिन, होश रहनेपर भी बोल न सकना वगैरह लक्षण पहले दिखाई देते हैं; इसके बाद डकार आना या स्वच्छ पेशाब होना और अन्तमें बार-बार चिल्लाना, आँसू बहाना, यह काम होकर रोग हट जाता है। इग्ने, मस्कास, नक्स-वो, प्लैटिना और वैलेरियाना इसकी प्रधान दवाएँ हैं। "हिस्टीरिया" देखिये।

मृगी।—माथेमें दर्द, आलस्य, सरमें चक्कर, मानसिक गड़बड़ी, बेचैन नींद, कलेजा धड़कना, मिचली, कै, चेहरा लाल हो जाना वगैरह इस रोगके पूर्व लक्षण हैं। ऐगरिकस, बेल, काष्टि, साइक्यूटा, क्यूप्रम, हायोस वगैरह इस रोगको प्रधान दवाएँ हैं। "अपस्मार या मृगी" देखिये।

संन्यास रोग।—सरमें तेज़ दर्द, वमनोद्वेग और मूर्च्छाके साथ रोगिनीका जमीनमें गिर जाना, नाकसे गहरी आवाज़, चेहरा लाल और आँखें स्थिर हो जाना वगैरह उपसर्ग इस बीमारीमें मौजूद रहते हैं। ऐकोन, बेल, काकुग्र-लस, लैकेसिस, नक्स-वोम या ओपि वगैरह इस रोगको बढ़िया दवाएँ हैं। "संन्यास" देखिये।

मानसिक अवस्थाकी गड़बड़ी।—गर्भिणीको कभी-कभी क्रोध, जरा-सी बातमें रो पड़ना, भावी प्रसवकी तकलीफ़से व्याकुल रहना वगैरह उपसर्ग दिखाई देते हैं—सिमिसिफ्यूगा ३ और पल्सेटिला ३, इस अवस्थाकी बढ़िया दवाएँ हैं। चिड़चिड़ा मिजाज़के लिये कैमोमिला ६ देना

चाहिये। अगर प्रसवकी तकलीफ़का बहुत डर हो, तो—ऐकोनाइट ३ देना चाहिये।

वमन या वमनेच्छा।—गर्भावस्थामें कै, मिचली और मुँहमें पानी भर आना—ये तीनों उपसर्ग अकसर सवेरे ही बढ़ जाते हैं। थोड़े दिनोंतक रहकर आप-से-आप ये उपसर्ग घट जाते हैं; परन्तु सहजमें ही न घट जानेपर लक्षणके अनुसार नीचे लिखी दवाएँ देनी चाहियें।

सिम्फोरिकार्पस-रेसिमोसा ३x, ३, २००।—इस रोगकी प्रधान दवा है, खासकर निम्नलिखित उपसर्गोंमें—गर्भ रहनेपर बराबर कै या मिचली, परिपाक यन्त्रकी गड़बड़ी, भोजनमें कभी रुचि, कभी अरुचि, मुँहमें तीता पानी भर आना, मुँहका स्वाद भी तीता, कब्जियत, सब तरहके भोजनमें अरुचि, चित होकर सोनेमें आराम मालूम होना।

लगातार वमन, मिचलीके साथ पित्त या श्लेष्माकी कै होना और अतिसार होनेका डर, कब्जियत, डकार आना, मुँहमें पानी भर आना, हिचकी, सवेरे भोजनके समय या भोजनके बाद वमनके लक्षणमें—नक्स-वोमिका ३०, क्रियोजोट ६, सिपिया ३०, ऐलेट्रिस फेरिनोसा θ—३ की भी कभी-कभी जरूरत होती है।

मुँहसे पानी गिरना।—बहुत खानेकी वजहसे मुँहमें पानी भर आता है या खाये हुए पदार्थकी गन्ध आती

है। पारा-मिली चीजें या दवाएँ खानेपर भी मुँहमें लगातार थक भर आता है। मर्क-वाई ६ विचूर्ण इसकी प्रधान दवा है ; परन्तु यदि रोगिनीने मर्करी—पारेसे बनी दवाएँ ज्यादा खायी हों और इस वजहसे मुँहमें पानी भर आता हो, तो मर्क-वाईके बदले नाइट्रिक-एसिड ३—३० देना चाहिये। कार्बो-वेज ६ या होपर ६ भी दिया जाता है। खट्टी डकार ; एकाएक डकार आकर कुछ तीता तरल पदार्थ गलेतक आ जाना, अरुचि, कलेजेमें जलन, कब्जियत, लगातार मुँहमें पानी भर आना, साइलि। कलेजेमें जलन ; कब्ज, लगातार मुँहमें पानी भर आना, नक्स-वोमिका ३०। पेट फूलना या पेट कस आना और पाकस्थलीमें जलन और थोड़ी डकारके साथ ही मुँहमें पानी भर आंना, कार्बो-वेज ३x चूर्ण—३०। लगातार खट्टी डकारके साथ मुँहमें पानी भर आनेपर, कैल्केरिया-कार्ब ३०। पुरानी बीमारीमें, लाइको १२—३०। विरेट्रम-एल्ब ३, ब्रायो ३, एसिड-सल्फ ३ की भी समय-समयपर आवश्यकता होती है।

शिराओंका फूलना।—गर्भावस्थामें जरायु बढ़ता है और उसके दबावसे ऊरु और योनि तथा दूसरे-दूसरे अङ्गोंकी शिराएँ कभी-कभी फूल उठती हैं और गांठ (knotty) पड़ जाती है। हैमामेलिस ३ सेवन, हैमामेलिस θ (अठगुने पानीके साथ) पट्टीका बाहरी प्रयोग करना चाहिये। शिराओंमें दर्द होनेपर, पल्स ३। कमजोरीके लक्षणमें, फार्मिका ३x। पुरानी बीमारीमें, फ्लोरिक-एसिड ६। शिराएँ फटकर

खून निकलनेपर हैमामेलिस θ की गद्दी (pad) बनाकर खून जिस जगहसे निकलता हो, उसे कसकर बाँध देना चाहिये। फेरम-फास २ और प्लम्बम ६ की भी बीच-बीचमें जरूरत पड़ती है। पल्स ३, शिरा फूलनेकी बीमारीको रोक देता है। प्रतिषेधक है। रोग बढ़ जानेपर रोगिनीको खाटसे न उठना चाहिये। पैरकी शिराएँ फूलनेपर स्थिति-स्थापक मोजा (elastic-stocking) पहनना और ठेस या अकड़न देकर सोना फायदेमन्द है। "शिराके रोग" देखिये।

ऐंठन।—गर्भ जब ४-५ महीनेका हो जाता है, तब रोगिनीके उरु, पैर, पीठ और कमरमें ऐंठन या अकड़न-जैसा दर्द हो जाता है। जरूरत पड़नेपर नीचे लिखी दवाएँ ६ शक्तिकी व्यवहार करनी चाहियें। पैरों और उरुमें ऐंठन होनेपर कैमोमिला; अकड़नके साथ सर-दर्द होनेपर और अग्निमान्द्य या मिचली रहनेपर, नक्स-वोमिका, ब्रायोनिया या सिपिया; पतले दस्त आनेपर आइरिस या वेरेट्रम-ऐल्ब। कमर और पेटमें ऐंठन होनेपर—कोलोसिन्थ, कूप्रम, नक्स-वोमिका; उसके साथ पेट फूलनेपर—लाइकोपोडियम।

कामला।—गर्भावस्थामें जरायु बढ़कर, पित्त वहन करनेवाली नाड़ीपर दबाव पड़नेकी वजहसे हमेशा "कामला" हो जाया करता है। कैमो ६, मर्क-सोल ६, चेलिडोनियम ३x इसकी बढ़िया दवाएँ हैं। दिनके समय बायीं करवट दबाकर सोनेसे फायदा होता है।

आप-ही-आप पेशाब निकल जाना।—कैनाबिस-सैट १x, कैन्थरिस ३, साइना ३, बेल ३। गर्म चीजें, नमक और खट्टी चीजें खाना मना है। ठण्डी चीजें और दूध आदि सुपथ्य हैं। "अनजानमें पेशाब" देखिये।

थोड़ा पेशाब या पेशाब रुकना।—गर्भमें बच्चा जितना ही बढ़ेगा, पेशाबके यन्त्रोंपर उतना ही अधिक दबाव पड़ेगा। इसीसे पेशाब कम होता है या बन्द हो जाता है। कच्चा दूध और पानी बराबर-बराबर मिलाकर सवेरे-शाम थोड़ा-थोड़ा पीनेसे पेशाब सहजमें ही हो जा सकता है। पेशाब रुक जानेपर—कैम्फर θ, कैन्थरिस ६, बेल ३ और गर्म पानीसे नहाना फायदेमन्द है। "मूत्ररोध और मूत्रनाश" देखिये।

कब्जियत।—नाड़ी वगैरहपर लड़केका दबाव पड़नेसे कब्जियत होती है। पका पपीता खूब फायदा करता है। कालिन्सोनिया ३x प्रधान दवा है।

दूसरी दवाएँ :—नक्स-वोमिका ३०, ब्रायोनिया ६, सलफर ३०, ओपियम ३०, प्लम्बम ६, ऐल्यूमिना ६, पोडो ६। "कब्जियत" देखिये।

अतिसार।—मर्क्युरियस-सोल ६, चायना ६, एसिड-फास ६, कैमो ६, फास ६, सलफर ३० और पोडोफाइलम ६। "अतिसार" देखिये।

कलेजेमें जलन।—पल्सेटिला ६ या कैप्सिकम ६, तकलीफ़ देनेवाली इस बीमारीकी प्रधान दवाएँ हैं।

अम्ल-रोगकी वजहसे कलेजेमें जलन होनेपर, कैल्केरिया-कार्ब ६, आर्स ३x ; कार्बो-वेज ३x—६, नक्स-वो ३, पल्स ६, फास ३, नाइट्रिक-एसिड ६, आदि दवाएँ समय-समयपर आवश्यक हो जाती हैं। "अजीर्ण-रोग" और "अम्ल-रोग" देखिये।

अनिद्रा।—काफिया ६ प्रधान दवा है। रातके पहले पहर नींद आये, पर रातके अन्तमें नहीं, सलफर ३०। नींद न आनेके साथ बोखार रहे, ऐकोनाइट ३। पैरमें अकड़न या दर्दके साथ नींद न आती हो, कैमोमिला ६ या विरेट्रम ६। सोनेके पहले, कुछ गर्म पानीमें थोड़ा नमक मिलाकर उससे बदन पोंछने बाद तौलियासे पोंछ डाला जाये तो अच्छी नींद आती है। "अनिद्रा" देखिये।

रुचि-विकार।—जली मिट्टी, खड़िया, नमक वगैरह खानेकी इच्छा होनेपर, कार्बो-वेज ६, काकुलस ६, साइक्यूटा ३०। खड़िया खानेका मन चलनेपर, कैल्केरिया-कार्ब ६ या नाइट्रिक-एसिड ३।

लार बहना।—गर्भावस्थामें किसी-किसीको बहुत ज्यादा गाढ़ी लार बहती है। यह प्रायः गर्भकी पहली अवस्थामें ही होता है। बहुत बार दो-एक मात्रा मर्क्युरियस देनेसे ही लार बहना बन्द हो जाता है। न हो, तो आर्स, पल्स, नेट्रम, विरेट्रम प्रभृति दवाएँ आवश्यकतानुसार दी जा सकती हैं।

लार बहनेके साथ खानेकी चीजोंपर रुचि न रहना और मिचली—पल्स ३० ; गहरी सुस्ती ; म्लान मुख-मण्डल, मिचली और खायी हुई चीज़का वमन, पैर फूलना प्रभृति लक्षणोंमें—आर्स ६ ; जीभ, ओंठ और मुँहमें घाव, पतला दबा हुआ चेहरा, बहुत ज्यादा लार बहना—नेट्रम ३० ; लार रक्त मिली, जीभमें जलन, ऐसा मालूम हो कि घाव हो गया है, कब्ज और बवासीर—सलफर ३० ।

श्वास-कष्ट ।—ज्यादा घूमने या खाँसी, अजीर्ण, स्नायविक दुर्बलता वगैरह कारणोंसे गर्भावस्थामें श्वास-कष्ट होता है ; ऐमोन, आर्स, इपि, मस्कस, फास, नक्स, ब्रायो वगैरह इसकी प्रधान दवाएँ हैं ।

कलेजा धड़कना ।—डेजिटेलिस ३ प्रधान दवा है ; अजीर्णकी वजहसे कलेजा धड़कता हो तो नक्स-वोमिका ६ । स्टोफेन्थस १x, मस्कस ३x, ऐकोन ३x, आर्स ३, बेल ३, पल्स ६, सलफर ३० की भी कभी-कभी जरूरत पड़ जाती है ।

बवासीर ।—किसी-किसी गर्भिणीको बवासीरकी बीमारी हो जाती है । नक्स-वोमिक ६ इसकी बढ़िया दवा है । बवासीरके साथ कब्जियत रहनेपर, कालिन्सोनिया ३x । कार्बो-वेज, पोडो, नाइट्रिक-एसिड वगैरह दवाएँ कभी-कभी आवश्यक हो जाती हैं ।

खाँसी ।—कभी-कभी सूखी खाँसीकी वजहसे तकलीफ़ होती है। ऐकोनाइट ३ और नक्स-वोमिका ६ इस बीमारीकी प्रधान दवाएँ हैं। "श्वास-यन्त्रकी बीमारी" देखिये।

पेशाबकी तकलीफ़ ।—स्पिरिट-कैम्फर इसकी प्रधान दवा हैं। ऐकोनाइट ३, बेलेडोना ६, एपिस ६, आर्सेनिक ६ या कैन्थरिस ६ की भी कभी-कभी जरूरत पड़ सकती है। "मूत्र-यन्त्रकी बीमारी" देखिये।

मूत्रनलीका आक्षेप ।—मूत्रनलीमें अकड़न होनेकी वजहसे गर्भिणीको बहुत तकलीफ़ हो जाती है; कभी-कभी दिन-रात लगातार पेशाब टपकता रहता है। कास्टिकम ६ या एसिड-फास ३x सेवन और एक ग्रेन क्लोराइड आव जिङ्क एक आउन्स पानीके साथ मिलाकर उससे योनिको धो डालना चाहिये। स्टाइजि और स्टैफिसाइग्रिया भी लाभदायक है।

रज निकलना ।—गर्भावस्थामें भी कभी-कभी ऋतु दिखाई देता है। काकुलस ६ या फास्फोरस ६ बढ़िया दवाएँ हैं।

दर्द ।—गर्भावस्थामें शरीरकी किसी जगहमें अकड़न होनेपर, वाइबर्नम-ओपि ३ या कोलोसिन्थ ६। हृत्पिण्डमें टपककी तरह दर्द होनेपर—आर्निका ३, सिपिया ६, थूजा ३०, कोनायम ६।

पेटमें झनझनी होना ।—कैमोमिला १२ या नक्स-वोमिका ६ एक मात्रा देनेसे ही फ़ायदा होता है। कैल्क-कार्ब ६ भी अच्छी दवा है। "शूल-वेदना" देखिये।

बोखार ।—गर्भावस्थामें पहले कई महीने अगर थोड़ा-थोड़ा बोखार हो, तो कोई दवा देनेकी जरूरत नहीं है। यदि बोखार किसी तरह अच्छा न होता हो, तो ऐकोनाइट ६।

मरोड़ ।—पैर या पैरके तलवेमें एकाएक खींचन या मरोड़की तरह दर्द होनेपर, कूप्रम ६ और जेलसिमियम ३ फ़ायदा करते हैं।

वाह्य जननेन्द्रियमें खुजली ।—बोरैक्स ३ और ऐम्ब्राग्रिसिया ६, इसकी बढ़िया दवाएँ हैं। पानीमें सोहागा घोलकर उससे दिनमें दो-तीन बार योनिको धो डालना चाहिये।

पेटका झूल पड़ना ।—जिनके पेटका चमड़ा ढीला रहता है, उन्हें गर्भ रहनेपर अकसर पेट झूल पड़ता है और तकलीफ़ होती है। कपड़ेसे पेट कसकर बाँध देनेसे ही यह तकलीफ़ जाती रहती है।

पेट बड़ा हो जानेकी वजहसे तकलीफ ।—पेट बढ़ जानेकी वजहसे यदि पेटका चमड़ा चरचराये और स्तनमें दर्द हो, तो थोड़ा नारियलका तेल पेट और स्तनपर मालिश करना चाहिये। इससे तकलीफ़ घट जाती है। यदि

तकलीफ़ न घटे, तो बेलेडोना ६ या नक्स-वोमिका ६ देना चाहिये।

पेटमें लड़केके हिलने-डोलनेसे कष्ट।—ओपियम ६, आर्निका ३।

धातुकी बीमारी।—दूधकी तरह धातु निकलना, कैल्केरिया ६, पीला या जलकी तरह धातु निकलनेपर, सिपिया १२। धातुकी बीमारीसे एकदम कमजोर हो जानेपर, चायना ६ या एसिड-फास ३x। यदि धातुकी बीमारीके साथ योनिके भीतर सुरसुरी हो और खूब सङ्गमकी इच्छा हो, तो प्लैटिना ६। "श्वेत-प्रदर" देखिये।

स्तनमें दर्द।—स्तन सख्त, लाल, भारी, दर्द-भरे हो जानेपर बेलेडोना ३x। स्तन फूला, भारी, पर लाल न हो, ऐसे लक्षणमें—ब्रायोनिया ३। ठण्डे पानीकी पट्टी स्तनोंपर लगाना फायदेमन्द है; परन्तु आक्षेपवाली तकलीफ़में, गर्म पानीकी पट्टी देनी चाहिये।

स्तनकी घुंडीमें प्रदाह या घाव।—चोट लगकर प्रदाह होनेपर, आर्निका ३ सेवन और आर्निका θ पानीके साथ मिलाकर स्तनोंपर प्रयोग करना चाहिये। घुंडीमें घाव होनेपर या सड़ जानेपर, हाइड्रैस्टिस ३ सेवन और हाइड्रैस्टिस θ (अठगुने पानीमें मिलाकर) पट्टी लगानी चाहिये।

स्तन बड़े होनेकी वजहसे तकलीफ।—शूल-वेदनाकी तरह तकलीफमें, कोनायम ३। प्रदाहकी वजहसे तकलीफ़ होनेपर, बेलेडोना ३x या ब्रायोनिया ३।

मानसिक कष्ट।—गर्भिणी हमेशा विषन्न रहती हो, सिमिसिफ्यूगा ६; शोकसे अधीर होनेपर, इग्नेशिया ६; डरनेपर ऐकोनाइट ३; क्रोधी स्वभाव होनेपर, कैमोमिला १२।

नकली प्रसवका दर्द।—गर्भावस्थाके अन्तमें बराबर प्रसवके दर्दकी तरह मालूम हुआ करता है ("अप्रकृत लक्षण" देखिये); कैमोमिला ६ इसकी बढ़िया दवा है। पल्सेटिला ३०, सिमिसिफ्यूगा ३ या कालोफाइलम ३ की कभी-कभी जरूरत पड़ सकती है।

गर्भावस्थामें रक्त-स्राव।—(१) गर्भिणीके हँसने, रोने, खाँसने या गिर जानेपर, जरायुमें धक्का लगकर फूल (placenta) जरायुसे अलग कुछ दूर जा गिरता है, इसीसे खून गिरता है। आर्निका ३ इसकी बढ़िया दवा है।

(२) ऊपर कहे हुए कारणोंके अलावा अगर फूल जरायुके मुँहपर ढँकनेकी तरह रहे और इसी वजहसे खून गिरता हो, तो रोग कड़ा समझकर, धात्री-विद्या जाननेवाले चिकित्सकको बुलाकर दिखाना चाहिये। यह रोग गर्भावस्थाके अन्तिम भाग या ठीक प्रसवके समय होता है। इस समय रक्त-स्राव ही इसका विशेष लक्षण है (स्वाभाविक प्रसव-वेदना श्लेष्माकी तरह एक पदार्थ-भर निकलता है, कभी

खून नहीं निकलता—"प्रसवकी अवस्थाएँ" देखिये)। ट्रिलियम θ इस रक्त-स्रावको बन्द करनेकी एक अच्छी दवा है।

रक्तहीनता।—मैलेरिया भोगना, क्रिमि या वक्रकीट रहना वगैरह कारणोंसे रक्त-स्वल्पता होनेपर, उन रोगोंका इलाज करना चाहिये।

धातु-दोष (Diathesis)।—माता या पिताको कोई रोग रहनेपर, सन्तानको भी वही रोग होता है। गर्भावस्थामें गर्भवतीको नीचे लिखी दवाएँ महीने-महीने एक बार सेवन करानेपर, भावी-सन्तान अच्छी और बलिष्ठ हो सकती है :—

कैल्केरिया-कार्ब ३०।—पिता या माता गण्ड-माला (Scrofula) धातुग्रस्त रहनेपर।

बैसिलिनम २००।—वंशमें यक्ष्मा और क्षय रोग होनेपर।

सोरिनम ३०।—बाप-माँको बदबूदार चर्म-रोगादि होनेपर।

सिलिका ३०।—पिता या माताको अस्थि-विकृति रोग रहनेपर।

बैराइटा-कार्ब ३०, आयोडियम ३०, थूजा ३०, मर्क्यूरियस ३०, कास्टिकम ३०, सिपिया ३० या सलफर ३० लक्षणके

अनुसार प्रयोग करना पड़ता है। बाल-रोगमें "धातु-दोष या कौलिक रोग" देखिये।

गर्भकालके कुछ उपसर्गोंकी दवाएँ

एसेटिक-एसिड ६, ३० ।—गर्भके समय खट्टी डकार और वमन; दिन-रात मुँहमें पानी भर आना और लार बहना। बहुत ज्यादा पेशाब होना।

एलिट्रिस-फेरिनोसा ३x, १२ ।—गर्भके समय तङ्ग करनेवाली मिचली; मिचली किसी तरह भी बन्द नहीं होती, भोजन पचता नहीं, खाने-पीनेसे अनिच्छा, खाद्य पदार्थ देखते ही पेटमें गड़बड़ी पैदा हो जाना। सरमें चक्कर, मूर्च्छा और तन्द्रा।

ऐनाकार्ड ३० ।—उदर खाली मालूम होना और सवेरेके समयकी मिचली। वमन हो जानेपर मिचलीका घटना, भोजनके पहले और बाद वमन। भोजनके समय और वमन हो जानेपर घटना।

ऐण्टिम-क्रूड ।—वमन और अकड़न; जीभपर मोटी सफेद मैलकी तही (कैलि-मूर)।

आर्सेनिक ३० ।—सारे शरीरमें जलन, प्यास, बेचैनी, कमजोरी और बदहज़मी।

ऐसाराम-इयु ३x, ६ ।—गर्भके पहले कई महीनोंमें गर्भवती जो कुछ खाती है, वही कै कर डालती है ।

बोविष्टा ३ ।—सवेरेके समयकी मिचली ; केवल पानीकी कै होना । कुछ खानेपर घटना ।

कैडमियम-सल्फ ६ ।—पाकाशयमें बेचैनी मालूम होना, वमन और मिचली ।

काक्युलस ६, ३० ।—सवेरे सोकर उठनेके समय वमन और मिचली, नाव या गाड़ीपर चढ़नेके समय या कोई चलती हुई चीज़ देखनेसे ही मिचली और वमन ।

काफिया ६ ।—मिचली, अनिद्रा और दर्द ।

कोलचिकम ६, ३० ।—भोजनके पदार्थको गन्ध सहन नहीं होती, बैठते ही मिचली और वमन और नाभि-स्थानमें दर्द । पेशाबमें अण्डलाल, हाथ-पैर फैलाकर सो नहीं सकना ; ऐसा करते ही वमन होने लगना, हाथ-पैर समेटकर सोनेपर घटना ।

कोनायम ३० ।—केवल सोये रहनेकी अवस्थामें मिचली, स्तनमें अकड़न ।

कानवेलेरिया ६ ।—तकियेसे सर उठाते ही मिचली और वमन ।

क्युप्रम-मेट ६, ३० ।—मिचली, वमन, हाथ-पैरमें ऐंठन ।

साइक्लामेन ६ ।—वमन, मिचली और सरमें चक्कर, ऐसा मालूम हो कि गिर जायगा ।

फेरम-फास ।—वमन, रक्त-वमन । भोजनके समय एका-एक थोड़ा-सा वमन हो जाता है । इसी वजहसे जी भरकर भोजन नहीं कर सकती ।

इग्नेशिया ६, ३० ।—हिचकी, वमन, भोजनके बाद घटना, पेट फलना, विषन्नता ।

इपिकाक ६, ३० ।—पित्त वमन, लगातार मिचली और वमन, इसके साथ ही अतिसार और उदर-शूल ।

आइरिस ६ ।—लगातार मोतीकी तरह लसदार श्लेष्मा-भरा थूक निकलना ।

जैबोरैण्डी ६ ।—दिनके समय लगातार गर्भवती थूका करती है, इसी वजहसे रातमें भी सो नहीं सकती ।

कैलि-कार्ब ३० ।—मिचली, पर कै नहीं होती । चलना आरम्भ करते ही मिचली बढ़ जाती है ।

लैक्टिक-एसिड ३० ।—मुँहमें थूक भर आता है, मिचली, भोजनके बाद घटती है ; खट्टी कै ।

लिलि-टिग ३० ।—यदि भ्रूणकी अवस्थितिमें गड़बड़ी होनेकी वजहसे वमन हो ।

नेट्रम-म्यूर ३० ।—सवेरेके समय मिचली और वमन, सर-दर्द, रातमें चोर-डाकुओंके सपने ।

नाइट्रिक-एसिड ३० ।—मिचली, गला और पाकाशयमें जलन, घूमने-फिरने या सवारीपर चढ़नेसे मिचलीका घटना ।

नक्स-वोमिका ६, ३० ।—सवेरे और भोजनके बाद मिचली और वमन। ऐसा सोचती है, कि वमन हो जाये तो अच्छा हो। कब्जियत। बलकारक दवा सेवनकी अदम्य इच्छा ।

पेट्रोलियम ३० ।—गर्भवतीके पाकाशयकी सब तरहकी गड़बड़ीमें लाभदायक है। गाड़ीमें चढ़नेसे ही मिचली, लगातार वमनोद्वेग और मुँहमें थूक भर आना ।

पल्स ६, ३० ।—तलपेट और जरायुमें ऐंठन, सन्ध्याके समय और रातमें वमन ; पतले दस्त ; एक-एक बार एक-एक तरहका पाखाना होना। वमनके बाद मिचली और वमन ।

सैबाडि ६, ३० ।—भोजन करनेकी इच्छा नहीं रहती, पर कुछ खाना आरम्भ करते ही मजेमें खाने लगती है ।

सिपिया ३० ।—गर्भ-स्राव-प्रवणता ; मिचली ; जरायुका मुँह कड़ा ।

स्टैफिसाइग्रिया ३० ।—पेट भरा रहनेपर भी अदम्य भूख, मुँहमें हमेशा पानी भर आता है ।

सलफर ३०, २०० । मिचली और वमन । इसके साथ ही सारे शरीरमें जलन और शराब पीनेकी इच्छा ।

सिम्फोरि-कार्पस ६ ।—भोजन देखनेपर ही ; खाद्य पदार्थकी गन्धसे यहाँतक कि खानेकी बात सोचते ही बेचैनी मालूम होने लगना ; मिचली और वमन ।

प्रसवके समयकी उपयोगी दवाएँ

एकोन ३०, २०० ।—गर्भिणी बेचैन, समझती है, कि इस बार वह न जियेगी । लगातार कराहती है, थोड़ी-थोड़ी देरपर तेज़ दर्द पैदा हो जाता है । दर्दके कारण साँस नहीं ले सकती । समझती है, कि वह दर्द सहन न कर सकेगी । चेहरेपर भयके लक्षण दिखाई देने लगते हैं, योनि-द्वार और जरायु-द्वार सूखा, कड़ा और दर्द-भरा ।

आर्निका ३०, २०० ।—भ्रूण जरायुमें आड़ा हो जानेके कारण कमरमें असह्य दर्दकी एक अमोघ दवा है । गर्भिणी पल-पल भरपर जगह बदलती है । प्रत्येक बारके दर्दके साथ-साथ ही चेहरा लाल हो उठता है । प्रसवके समय बहुत अधिक कष्ट, यन्त्रकी सहायतासे प्रसव, बहुत अधिक रक्त-स्राव, प्रसवके बादका स्राव

थोड़ा होना प्रभृति कारणसे यदि ज्वर, कमरमें दर्द, मुँहमें घाव प्रभृति रक्त-दोषके लक्षण दिखाई दें तो आर्निका मन्त्र-शक्तिकी तरह कार्य करता है।

आर्स-मेट।—इतना तेज़ दर्द कि गर्भिणी उसे सहन नहीं कर सकती, इसीलिये मृत्युको उत्तम समझकर मृत्यु-कामना करती है और आत्महत्या करना चाहती है।

बेलेडोना ३०, २००।—दर्द एकाएक आता है, ऐसा मालूम होता है, मानो उदरकी सभी चीजें बाहर निकल पड़ेंगी, दर्द बहुत थोड़ी देरतक ठहरता है और एकाएक गायब हो जाता है। जरायु-मुख लाल, गर्म, तर (सूखा—ऐकोन) पतला और कड़ा (भारी और कड़ा—जेल्स) जरायु-मुखका आक्षेपिक सङ्कोचन। अधिक उमरवाली गर्भवतियोंके प्रसव कष्टकी यह एक उत्कृष्ट दवा है। कभी-कभी शरीर गर्म, तेज़, सबल और मोटी नाड़ीका लक्षण भी दिखाई देता है।

कालोफाइलम ६, ३०।—जरायु-मुखका कड़ापन। जरायुके संकोचनकी वजहसे रह-रहकर प्रसवका दर्द होता है, पर जरायु-मुखके कड़ापनकी वजहसे प्रसव देरसे होता है। ऐसे स्थानपर यह लाभ करता है।

कैमोमिला ६, ३०।—असह्य आक्षेपिक दर्द, तोड़नेकी तरह दर्द, यह दर्द कमरसे आरम्भ होकर पैरकी ओर फैल जाता है। प्रत्येक बार दर्दके साथ बहुत सफेद

पेशाब होता है। दर्दसे गर्भवती रोती है, जरायु-द्वार अकड़ा।

क्लोरोफार्म ३०, २००।—समस्त उदरमें दर्द, परन्तु पीठमें दर्द अधिक। गर्भिणी कहती है, कि उसकी कमर टूट जायगी। जरायु-मुख कड़ा, इसलिये दर्दका जोर नहीं घटता।

सिमिसिफ्यूगा।—प्रसवके कुछ देर पहलेसे ही नकली प्रसवका दर्द आरम्भ हो जाता है। जरायु-मुखका आक्षेपिक संकोचन, दर्द आड़ा-आड़ी भावसे घूमता-फिरता है, प्रसवकी प्रथम अवस्थामें स्नायविक शीत मालूम होना, प्रसवका दर्द कुछ देरतक होकर और प्रसव कार्य थोड़ा-सा अग्रसर कर एकदम यदि बन्द हो जाये तो यह बहुत लाभ करता है।

काफिया ६, ३०।—प्रसवका दर्द तो होता है, पर प्रसव कार्य अग्रसर नहीं होता; गर्भिणी प्रसव-वेदनासे बेचैन हो पड़ती है, पर प्रसव नहीं होता।

जेल्स ३०, २००।—नकली प्रसवका दर्द, ऊपर या पीठकी ओर फैल जाता है। जरायु-मुख कड़ा (पतला और खींचन भाव—बेल), दर्द ऊपरकी ओर फैल जाता है, इसीलिये ऐसा मालूम होता है, मानो भ्रूण भी नीचेकी ओर न जाकर ऊपरकी ओर धक्का देता हुआ चढ़ता है। जरायुकी जड़ताकी वजहसे

भरपूर दस्त नहीं होता। गर्भिणीको बीच-बीचमें जाड़ा मालूम होता है—यह स्नायविक शीत है। चेहरा और आँखें तमतमाती हुई मालूम होती हैं, गर्भिणी अज्ञान और तन्द्राभिभूत-जैसी पड़ी रहती है। कम्प होता भी दिखाई देता है। जिस गर्भवतीमें ऊपर लिखे लक्षणोंके साथ यह मालूम हो, कि गर्भवतीकी पेशियोंपर स्नायुकी कोई शक्ति नहीं है, इसी वजहसे प्रसव कार्यमें व्याघात पड़ता है, ऐसे क्षेत्रकी जेल्स एक अव्यर्थ दवा है।

कैलि-कार्ब ३०।—अपर्याप्त प्रसव-वेदना, कमरमें तेज़ दर्द केवल कमर दबा देनेके लिये कहती है। मोटी-ताजी और थुलथुली रमणियोंके लिये अधिक उपयोगी है।

कैलि-फास ६X, २००।—दुर्बलताकी वजहसे प्रसवमें विलम्ब, अपर्याप्त प्रसव-वेदना। किसी-किसीका मत है, कि प्रसवके कई महीने पहलेसे रोज़ एक मात्रा कैलि-फास ६x सेवन करनेपर, गर्भिणी तथा भ्रूण दोनों ही पुष्ट होते हैं और प्रसवमें तकलीफ़ नहीं होती।

लाइको ३०, २००।—प्रसवका दर्द ऊपरकी ओर या दाहिनेसे बायीं ओर फैलता है। गर्भिणी लगातार चलती रहना चाहती है; कभी-कभी किसी चीज़पर पैर रखकर जोरसे काँखती है।

मैग-फास ६X, ३०।—आक्षेपिक प्रसव-वेदना, इसके साथ ही दोनों पैरोंमें अकड़न।

नक्स-मस्केटा ६, ३०।—अपर्याप्त और अप्रकृत प्रसव-वेदना, आक्षेपिक और अनियमित वेदना।

नक्स-वोम ६, २००।—प्रत्येक बारके दर्दके साथ-ही-साथ गर्भवतीका बेहोश हो जाना और अज्ञानावस्थामें ही पाखाना, पेशाब कर देना। कमरमें दर्द।

ओपियम ३०, २००।—डरसे प्रसव-वेदनाको दबा रखती है। चेहरा तमतमाया दिखाई देता है। आँखें चढ़ीं, गर्भवती तन्द्राभिभूत हो पड़ती है। शय्या कड़ी मालूम होती है।

प्लैटिना ३०।—जरायु-मुख और योनि-द्वारके दर्दके कारण प्रसवका दर्द रुक जाता है। बायीं ओर ही दर्द बना रहता है।

पल्स ३०, २००।—जरायुकी जड़ताकी वजहसे या भ्रूणकी अस्वाभाविक स्थितिकी वजहसे प्रसवमें विलम्ब होनेपर पल्सके प्रयोगसे दर्द बढ़ जाता है और भ्रूणकी अस्वाभाविक स्थितिको स्वाभाविक बना देता है। साथ ही प्रसव-कार्य भी शीघ्र हो जाता है। इसके प्रयोगसे अधिकांश स्थानोंमें यन्त्रके व्यवहारकी आवश्यकता घट जाती है। इसीलिये इसे होमियोपैथिक "फार्सेप" कहते हैं।

सिकेलि ६, ३०।—गर्भिणी समझती है, कि उदरकी सभी चीजें बाहर निकल पड़ेंगी, पर प्रसव नहीं होता। बहुत दिन पहलेसे ही अनियमित वेदना आरम्भ होती है। जरायुकी कमजोरीके कारण प्रसवमें विलम्ब।

गर्भपात या गर्भ-स्राव

(Abortion)

गर्भ-सञ्चारके समयसे लेकर ६ महीनेतक गर्भका बालक निकल जानेका नाम "गर्भ-स्राव" या "पेट गिरना" है। इस अवस्थामें सन्तान तो जीवित रहती ही नहीं* अच्छी तरह यदि उपचार न किया जाये, तो जिसका गर्भ गिरता है, उस प्रसूताकी भी बुरी दशा हो जाती है और उसकी जान जानेका भय रहता है। गर्भपातका पहला लक्षण :—कमर और तलपेटमें दर्द, ऐसा मालूम होना, मानो लड़का पेटके नीचे खसका आता है; खून या श्लेष्मा निकलता है। गर्भकी हालतमें कसकर कपड़े पहनना, ज्यादा मेहनत करना, गाड़ी पालकी, नाव, रेलगाड़ी वगैरहपर चढ़ना (खासकर गर्भके

* सात महीनेके बाद और नौ महीनेके पहले सन्तान पैदा होनेपर उसे "अकाल प्रसव" कहते हैं। ऐसी अकाल-प्रसूत सन्तान "अठवांसा" जीवित रह सकती है।

पहले चार महीने), दौड़-धूप करना, गिर जाना, भारी चीज़ उठाना, जोरसे उबटन पीसना, मैदा पीसना या रोटी बेलना उछलकर चलना (अंगुलीपर भार देकर खड़े होना) तस्वीर या मसहरी टांगना, चेचकका बोखार, पतले दस्त वगैरह होना, स्वामी-सहवास, तेज़ दवाओंका सेवन, योनिमें दर्द, ज्यादा डर, चिन्ता, शोक आदि कारणोंसे गर्भ-स्राव होता है। अतएव गर्भावस्थामें इन विषयोंमें खूब सावधान रहना चाहिये। जिसे एक बार गर्भपात हो जाता है, उसे दूसरी बार भी होनेकी सम्भावना रहती है। इसलिये गर्भ रहते ही खूब सावधान रहना चाहिये।

गर्भपात रोकनेकी चिकित्सा

सैबाइना ३x।—गर्भावस्थाके पहले तीन महीनोंमें गर्भ-स्रावकी आशंका रहनेपर (अर्थात् दर्द होना या खून दिखाई देते हो)।

सिकेलि ३।—गर्भावस्थाके चौथे या उसके बादवाले महीनोंमें गर्भपात होनेका डर रहे (अर्थात् दर्द हो और खून दिखाई दे)।

आर्निका ३।—गिर पड़ना; भारी चीजें उठाना; मार खाना; चोट वगैरह वजहोंसे अगर गर्भ गिरनेकी सम्भावना हो।

कैमोमिला ६ ।—क्रोध वगैरह मानसिक उत्तेजनाकी वजहसे गर्भ गिरनेकी सम्भावना हो।

वाइबर्नम-ओपि ३x ।—खोंचा मारने या शूल-वेदनाकी तरह दर्द।

गर्भ-स्राव होनेके बादका इलाज ।—इन ऊपर लिखी बातोंमें सावधान रहनेपर भी अगर गर्भपात हो जाये, तो ऐसा उपाय करना चाहिये, कि गर्भसे भ्रूण या फूल अच्छी तरह निकल जाये। अच्छी धात्रीको बुलाकर इसका प्रबन्ध करना चाहिये, नहीं तो सूतिका वगैरह रोग पैदा होकर प्रसूताके प्राण जानेका डर रहता है। फूल गिरनेमें देर होनेपर पल्सेटिला ३० या सिकेलि ३०—२०० देना चाहियें। कई हफ़्तोंतक खून निकलनेकी वजहसे प्रसूता बहुत कमजोर हो जाये, तो चायना ६—२०० देना चाहिये।

बार-बार गर्भपात निवारण करनेकी चिकित्सा ।—जिस समय पहले गर्भपात हुआ है, उसके कम-से-कम एक महीना पहलेसे ही फी सप्ताह, लक्षणके अनुसार नीचे लिखी दवाएँ सेवन करानी चाहियें। जरायुकी गड़बड़ीकी वजहसे गर्भपात होनेपर—एपिस ६, सैबाइना ६ या सिकेलि ६। फूलके (Placenta) दोषकी वजहसे होनेपर, फास्फोरस ६। भ्रूणके दोषसे या माताके उपदंशकी वजहसे गर्भपात होनेपर, मर्क्युरियस-कोर ६। पिता या माताको यक्ष्मा रोग रहनेपर, बेसिलिनम ३० (महीनेमें एक मात्रा)।

आनुसङ्गिक चिकित्सा ।—गर्भ-कालके समय कमरमें खिंचावकी तरह दर्द और जरायुमें दबावके साथ अगर श्लेष्मा या खून निकलना शुरू हो जाये, तो इस अवस्थामें उस समय प्रसूताके माथेके नीचे तकिया न देकर, चित्त सुला देना चाहिये और खून बन्द करनेके लिये उसके पेटपर और योनिमें बरफके टुकड़े या ठण्डे पानीकी जलपट्टी बराबर देनी चाहिये। ख़याल रखना चाहिये, कि प्रसूताके शरीर और मनपर किसी तरहकी तकलीफ़ न पहुँचे। जिस घरमें वह सोये, वह ठण्डा और साफ़ रहना चाहिये और वहाँ आदमियोंकी भीड़ न हो; बहुत देरतक चित्त सोनेकी वजहसे तकलीफ़ होनेपर, एक बड़ी तकियाका अड़कन लगाकर प्रसूताको बैठाया जा सकता है। भूख लगनेपर, हलका पथ्य देना चाहिये।

———

२। प्रसवकी अवस्थाके उपसर्ग

प्रसवकाल ।—पहले ही कहा जा चुका है, कि गर्भ रहनेके दिनसे लेकर लगभग २८० दिनोंके भीतर (अर्थात् दसवें महीने) सन्तान पैदा होती है। नौ महीनेतक गर्भिणीका तलपेट बढ़ता है; इसके बाद (अर्थात् प्रसव होनेके नौ-दस दिन पहले), तलपेट झूलना शुरू होता है, कमर पतली होती है, बहुत बार पेशाब होता है और कंकालके नीचे दर्द पैदा होता है। ऐसा लक्षण दिखाई देतें ही सौरी-

घरका प्रबन्ध करना चाहिये। प्रसवका दिन निर्द्धारण करनेके लिये "प्रसवका दिन-निर्णयकी सूची" देखना चाहिये।

सूतिकागार।—घरमें जो अच्छा कमरा हो (अर्थात् जो कमरा बड़ा साफ़-सुथरा और बदबूसे हीन हो, जिसमें हवा खूब आती-जाती हो और सर्दी न घुस सके या धुआँ न इकट्ठा रहे, ऐसे कमरेमें) उसे सौरी घर बनाना चाहिये। सौरी घरके दोषसे माँ और सन्तानके प्राण जानेकी तैयारी हो जाती है। बरसात या शीतके समयकी सर्दीसे बचानेके लिये आवश्यकताके अनुसार, सौरी घरमें एक कोनेमें कोयला या थोड़ी आग जला रखनी चाहिये; पर ख्याल रखना चाहिये, कि धुआँ न इकट्ठा हो।

प्रसवका दर्द।—जरायुके भीतर बच्चेके बढ़ते रहनेपर पूरी गर्भावस्थामें, समयपर प्रसवका दर्द उठता है। जरायुकी पेशियोंका सिकुड़ना ही प्रसव क्रियाका उपाय है। इसीसे जीता हुआ बच्चा जिस तरह सहजमें ही बाहर निकलता है, मरा हुआ भी उसी तरह निकलता है। बाहर निकलनेके लिये गर्भके बालकको न तो कोई चेष्टा करनी पड़ती है, न जोर ही लगाना पड़ता है—गर्भकी किसी छिपी हुई शक्तिके द्वारा ही यह प्रसवका काम हो जाता है। जङ्गलसे भरी कोई पतली पगडण्डीसे आनेके लिये; राहकी अवस्था समझकर, हमलोग जिस तरह बचकर चलते हैं, उसी तरह प्रसवके समय वही छिपी हुई शक्ति माताके गर्भमें मरे या जीवित बच्चेको

आगे बढ़ाती है। प्रसवकी राहमें जो जगह जैसी बनी है, माताके गर्भमें उसी छिपी हुई शक्तिकी सहायतासे बच्चा उसी तरह वहाँ रहता है, नहीं तो प्रसवका काम एक तरहसे असम्भव हो जाता। प्रसवकी राहकी खास जगहोंमें, जहाँ कहीं बच्चेका कन्धा रुकता है, उस समय गर्भकी उसी रहस्यमयी शक्तिके हाथोंसे उसके करवट लेनेकी क्रिया (rotation) सम्पन्न होती है और बच्चा सहजमें ही जानेवाली राहसे आगे बढ़ता रहता है, इस छिपी हुई अदृश्य महाशक्तिकी कौशल क्रियाको सोचकर स्तम्भित हो जाना पड़ता है।

जरायुका आकार बदलना, बाहरी जननेन्द्रियका तर रहना, उन पेशियोंकी शिथिलता और मानसिक चिन्ता—ये सभी प्रसव वेदनाके कुछ पहलेके लक्षण हैं। इसके बाद जब बार-बार पाखाना पेशाब त्यागनेकी इच्छा, बदन कुछ दर्द करना और कै आना, बदन काँपना, पानी निकलना (अर्थात् योनिसे फेनकी तरह श्लेष्मा निकलना) और कमरकी ओरसे दर्द शुरू होकर पेटकी ओर आकर ठहर जाना प्रसव वेदनाका लक्षण है। बहुत बार प्रसव वेदना निर्णय करना कठिन हो जाता है। इसीसे "प्रकृत" और "अप्रकृत" प्रसव-वेदनाका भेद नीचे लिखा जाता है।

प्रकृत लक्षण :—	अप्रकृत लक्षण :—
(१) पीठ कमरमें (कभी-कभी उरुतक) दर्द मालूम होना।	(१) सिर्फ पेटमें ही दर्द (खोंचा मारना या कन्-कन् करना) एकल रहना।

(२) हर बार दर्द नियमित रूपसे (जैसे हर पन्द्रह, बीस, तीस मिनटके बाद पर्यायक्रमसे) आता है और छोड़ जाता है।

(३) हर बार दर्दके साथ जरायुका मुँह थोड़ा खुल जाता है और पानी निकलने लगता है।

(२) दर्द होनेका कोई नियम नहीं है, जैसे—कभी दस मिनटके अन्तरसे तो कभी पाँच मिनटके अन्तरसे दर्द होता है; कभी दर्द बराबर होता रहता है।

(३) वेदनामें जरायुका मुँह बिलकुल नहीं खुलता और पानी नहीं निकलता।

प्रसवका दर्द जितना ही जल्दी-जल्दी होगा, प्रसवका समय भी उतना ही पास आया समझना चाहिये और दाईको बुलाना चाहिये।

चिकित्सा।—कालोफाइलम १x-३ अप्रकृत वेदनाकी बढ़िया दवा है। अजीर्णसे पैदा हुए दर्दमें पल्स ३—३०। डर या कष्टसे जो सहजमें ही उत्तेजित हो जाते हैं, उनके लिये ऐक्टिया-रेसि ३ अच्छी दवा है। तेज़, परन्तु क्षणस्थायी दर्दमें बेल ३ देना चाहिये। दूसरी-दूसरी दवाओंके लिये, "प्रसवके समयके उपसर्ग" देखिये।

प्रसवकी तीन अवस्थाएँ।—अगर दर्द पैदा होनेके छः घण्टेके भीतर लड़का पैदा हो जाये और लड़केका सर

आगे निकले तो उसे "स्वाभाविक प्रसव"* कहना चाहिये। स्वाभाविक प्रसवकी तीन अवस्थाएँ (stages) हैं। जैसे :—

पहली अवस्था।—प्रसवका दर्द शुरू होते ही जरायुका मुँह फैलने लगता है और पानी† निकलनेके समय-तक (अर्थात् दर्द शुरू होनेसे लेकर पानी निकलने या थैली फटनेतक)।

दूसरी अवस्था।—जरायुका मुँह खुलनेपर, दरार होकर पानी निकलनेके समयसे लेकर बच्चा निकलनेकी अवस्थातक। इस अवस्थामें जरायुका मुँह और बाहरी जननेन्द्रियमें कोई फर्क नहीं रहता। एक सुरङ्गकी तरह हो जाता है।

तीसरी अवस्था।—सन्तान पैदा हो जानेसे लेकर जरायुका फूल बाहर निकलनेतक।

———

* साधारणतः प्रसव-कार्य स्वाभाविक नियमसे ही होता है; परन्तु आजकल "सभ्यता" की अधिकताकी वजहसे "अस्वाभाविक प्रसव" (जैसे—बच्चेका हाथ-पैर वगैरह बाहर निकलना, पाँच-सात दिनोंतक लगातार प्रसवकी तकलीफ भोगना) भी कम नहीं होता। ऐसी जगह धात्री-विद्याके पारदर्शी होमियोपैथसे इलाज कराना चाहिये।

† स्वाभाविक प्रसव-वेदनामें—श्लेष्माकी तरह कोई चीज़ बाहर निकलती है। कभी एकदम रक्त-स्राव नहीं होता।

स्वाभाविक प्रसवमें अवश्य पालने योग्य कुछ विधियाँ

पहली अवस्था ।—प्रसवकी पहली अवस्थामें प्रसूता जिस तरह रहना या जो काम करना चाहे, उसमें अड़चन या रुकावट डालनेकी जरूरत नहीं है। इस अवस्थामें उसे सौरी घरमें ले जाने या ज्यादा काँखनेको कहनेकी जरूरत नहीं पड़ती। बीच-बीचमें गर्म दूध या गर्म पानी पिलाना चाहिये। इससे कमजोरी हो सकती है। ठण्डी चीज़ खिलाना या पिलाना मना है; ऐसी चीजें खिलानेसे दर्द बन्द हो जा सकता है। पहली अवस्थामें कोई दवा देना उचित नहीं है, परन्तु यदि ऐसा मालूम हो, कि बच्चेका माथा आगे न निकल कर कोई दूसरा अङ्ग निकल रहा है, तो पलसेटिला ३० दो-तीन मात्रा खिलानी पड़ेगी—इस दवाके गुणसे बच्चेका मस्तक घूमकर नीचे चला आ सकता है। "प्रसव-कालके उपसर्ग" आदि देखिये।

दूसरी अवस्था ।—इस समय बहुत सतर्कतासे काम करना चाहिये। "पानी निकलना" शुरू होनेपर प्रसूताको सौरी घरमें ले जाना चाहिये और पहले ही की तरह बीच-बीचमें गर्म दूध पिलाना चाहिये। यदि दर्द रह-रहकर बन्द हो जाये, तो गलेमें अंगुली या पर देकर अथवा नाकमें सींक

दे या कटा हुआ केश खिलाकर या कोई साधारण कौशलसे कै करानेसे दर्द सहजमें ही पैदा हो जाता है। इस समय प्रसूताको एक ही जगहमें स्थिर होकर रहना चाहिये ; ज्यादा छटपटानेसे दर्द जोरसे पैदा नहीं हो सकता। प्रसवके समय जच्चाको बायीं करवट सोकर दोनों हाथ माथेकी ओर फैला रखना चाहिये और दोनों घुटने छातीकी ओर उठाकर पैर फैला देना चाहिये, जिससे दोनों पैरोंके बीचमें एक गोल तकिया दिया जा सके ; इस तरह रहनेसे ही प्रसव हो जाता है। प्रसवके पहले कम-से-कम एक बार पाखाना और पेशाब करा देना चाहिये। रक्त-स्राव होनेपर "गर्भावस्थामें रक्त-स्राव" देखिये।

बच्चेका सर जननेन्द्रियके भीतर आ जानेपर दाईको प्रसव-द्वारकी रक्षा करनी चाहिये ; नहीं तो बच्चेका कन्धा निकलनेके समय गुह्य-देश फटकर प्रसव-द्वार और मल-द्वार एक हो जा सकता है।

बच्चेका सर बाहर निकलते ही उसके चेहरेपरकी लार, श्लेष्मा आदि साफ़ कर देना चाहिये, नहीं तो श्लेष्मा वगैरह मुँहके गड़हे और नाकके छेदमें घुसकर साँस बन्द हो जा सकती है और बच्चेका सर बाहर निकलनेपर अगर यह मालूम हो, कि उसकी नाल मालाकी तरह उसके गलेको बाँधे

हुई है, तो नाड़ीमें अंगुली डालकर उसे इस तरह ढीला कर देना चाहिये, कि उसके बीचसे बच्चेका कन्धा सहजमें ही बाहर निकल जा सके। बच्चेका माथा निकलते ही जोरसे उसका शरीर बाहरकी ओर न खींच लेना चाहिये। इससे माँ और बच्चे दोनोंके प्राण जानेकी सम्भावना है। प्रकृतिपर निर्भर करनेसे बाकी शरीर भी आप-से-आप ही बाहर निकल जाता है।

बच्चेका बाहर निकल आनेपर उसे प्रसूताके खूब पास धीरे-धीरे रखना चाहिये। दूर रखनेसे नाभीको नाड़ी टूटकर रक्त-स्राव हो सकता है। इससे प्रसूता और बच्चा, दोनोंकी ही मौत हो सकती है।

नाल काटना।—बच्चे पैदा होनेके बाद ही रोया करते हैं, उसी समयसे उनकी श्वास-क्रिया आरम्भ हो जाती है, यह समझ लेना चाहिये। स्वाभाविक प्रसवमें बच्चा जमीनपर आते ही जोरसे रो उठता है। यह रोना बढ़िया लक्षण है। जबतक बच्चा न रोये, तबतक नाल न काटनी चाहिये। धात्री अथवा जो नाड़ी काटे, उसके हाथका नख बढ़ा न रहे या हाथमें किसी तरहका घाव न रहे। लम्बे नखके भीतर कितने ही तरहका विष रहता है और घावमें जो सब रोग-बीज रहते हैं, उससे प्रसूताको बोखार आदि बीमारियाँ हो सकती हैं। इसलिये नख कटवाकर प्रसव कराना चाहिये। (नाड़ीके जिस ओर बच्चेकी नाभी लगी हो, उसी ओर) बच्चेकी नालके

ऊपर तीन अंगुल नाल रखकर नर्म रेशमसे* खूब कसकर दो गांठें दे देनी चाहियें और उसके ऊपरकी ओर एक अंगुल नाल छोड़कर और भी दो गांठें देनी चाहियें। इस तरह बच्चा और प्रसूताकी ओर नाड़ी बाँध देनेपर दोनों बन्धनोंके बीचकी नाड़ी धारदार कैंची या छुरीसे काटनी होगी।† बन्धन खूब कड़ा न होनेपर बहुत रक्त निकलनेसे बच्चेकी भी जान चली जा सकती है। सावधान, लड़केके हिलने-डोलनेकी वजहसे काटनेके समय उसके हाथमें छुरी लगकर कट न जाये।

यदि पैदा होनेपर बच्चेका मुँह नीला हो जाये, तो पहले जल्दीसे नाल काटकर थोड़ा-सा खून निकाल देने बाद नाड़ी बाँधनी चाहिये।

---

* खूब पतला या बहुत मोटा हो—"खूब पतला" होनेपर, नाड़ी कट जा सकती है और "खूब मोटा" रहनेपर, अच्छी तरह गांठ नहीं पड़ सकती।

† भोथरी चीज़से नाल काटनेपर बच्चेको उस जगह दर्द होनेकी आशंका है; अतएव भोथरी चीजोंसे नाल काटना, किसी तरह उचित नहीं है। नाल काटनेके बाद बच्चेकी बाकी नाल सादे कपड़ेसे ढँककर छातीकी ओर डाल, फ्लानेलसे पेट कसकर बाँध रखना चाहिये। पाँच-सात दिनोंमें नाड़ी सूखकर आप ही झर जाती है। नाल अच्छी तरह न कटनेकी वजहसे (बच्चेकी धातु-विकृतिकी वजहसे) नाभी पककर तड़का हो सकता है। इस अवस्थाकी नक्स-वोमिका ३० बढ़िया दवा है। "बाल रोगाध्यायमें" "नाल रोग या तड़का" देखिये।

नाल कट जानेपर बच्चेकी नालके ऊपर तेलकी पट्टी बैठाकर बाँध देनी चाहिये। इसके बाद अंगुलीके आगे शहद लगाकर बच्चेके मुँहके भीतरका श्लेष्मा साफ़ कर देना चाहिये। अन्तमें थोड़े गर्म पानीसे उसे नहलाकर साफ़ नर्म कपड़ेसे उसे ढँक देना चाहिये। नहाने बाद ही उसे गर्म कपड़ा न ओढ़ा देनेसे सर्दी खाँसी हो जानेकी सम्भावना है। मातृ-गर्भमें हवासे बन्द जगहमें रहनेकी वजहसे भ्रूण हमेशा गर्म रहता है, इसलिये जन्म होनेके बाद भी उसे उसी तरह गर्म अवस्थामें रखना कर्त्तव्य है और जोरसे बदन पोंछ देने या घसनेसे बच्चेका मुलायम चमड़ा छिल जा सकता है। सर्दी या खूब ठण्डी हवा बहनेपर नहाना बन्दकर शुद्ध सरसोंका तेल गर्मकर, बच्चेके माथे और समूचे शरीरमें मालिशकर खूब पतले कपड़ेसे बदन धीरे-धीरे पोंछ डालना अच्छा है।*

बच्चा पैदा होनेपर न रोये या मुर्देकी तरह पड़ा रहे, तो "मृतवत् भूमिष्ट शिशु" देखिये।

तीसरी अवस्था।—जबतक फूल न गिर जाये, तबतक प्रसूताकी अवस्था निरापद न समझनी चाहिये। स्वाभाविक प्रसवमें आध घण्टेमें फूल आप-से-आप ही गिर जाता है।

* गर्म पानीमें नहलानेसे बच्चेको "ब्रांको-न्युमोनिया" रोग हो सकता है, इसीसे बच्चोंकी चिकित्सामें सिद्धहस्त डाक्टर फियर (नाला काटनेके तीन दिनोंतक) गर्म जलके बदले कुछ गर्म शुद्ध जैतूनका तेल (Pure olive or Sweet oil) व्यवहार करनेकी सलाह देते हैं। (Vide Fishers's *Diseases of Children PP. 34—35*)

खींचा-तानीसे आफ़त आ जानेकी सम्भावना है। "फूलका न गिरना" देखिये।

फूल गिरनेके बाद प्रसूताके कपड़े और बिछावन साफ़कर उसकी जननेन्द्रियके मुँहमें एक पाँच अंगुल लम्बे कपड़ेको कई तही कर डाल देना चाहिये और बीच-बीचमें यह कपड़ा बदल देना चाहिये।

तीन हाथ लम्बा और आधा हाथ चौड़ा एक कपड़ा प्रसूताके पेटपर पट्टीकी भाँति दस दिनोंतक बाँध रखना अच्छा है; परन्तु प्रसवके बाद ही यदि दो घण्टेतक दोनों हाथोंसे प्रसूताका जरायु तलपेट पैरसे दबा रखा जाये, तो फिर पेट बाँधनेवाले बैण्डेजकी जरूरत नहीं पड़ती।

प्रसवके बाद तीन घण्टेतक प्रसूताको चित्त सुलाये रखना चाहिये—कपड़ा उतारना या पाखाना, पेशाब सोये-सोये ही कराना चाहिये। हिलने-डोलनेसे बहुत ज्यादा खून निकल जानेका डर रहता है। तीन घण्टेतक स्थिर भावसे रहनेपर आप-ही-आप नींद आकर प्रसूताको बहुत कुछ आराम मिल सकता है। प्रसवके आठ-दस घण्टा बाद प्रसूताको यदि कुछ आराम मालूम हो, तो बच्चेको दूध पीने देना चाहिये। दूध खींचने देनेसे स्तनमें जल्दी-जल्दी दूध आता है और जरायु सिकुड़कर रक्त बहना बन्द हो सकता है।

यदि प्रसवके बाद कोई ज्यादा उपसर्ग न दिखाई दे, तो आर्निका ३X चार घण्टेका अन्तर देकर तीन दिनोंतक

प्रसूताको सेवन कराना अच्छा है। आर्निका सेवन करानेसे सौरीका बोखार वगैरह प्रसवके बहुतसे रोग नहीं हो सकते हैं।

प्रसवके बाद ज्यादा खून जानेपर "प्रसवके बादके उपसर्ग" देखना चाहिये।

सौरी घरमें प्रसूताकी सुश्रूषा

नीचे लिखे नियमोंपर ज्यादा ध्यान देना चाहिये :—

(१) एक महीना (कम-से-कम एक सप्ताह) प्रसूताको सौरी घरमें ही रहना चाहिये। पहले चार-पाँच दिन स्थिर भावसे सोयी रहे, पाखाना पेशाबके लिये भी उठने न देना चाहिये। हिलने-डोलनेसे खून ज्यादा आकर मृत्यु तक हो सकती है।

(२) प्रसूती कभी बायीं और कभी दाहिनी करवट सो सकती है, क्योंकि लगातार एक करवट सोनेसे तकलीफ़ होती है। सौरी घरमें प्रसूताके सोनेके लिये दो साफ़ बिछावन रखना जरूरी है; क्योंकि बहुत देरतक एक बिछावनपर सोनेसे (खासकर गर्मीके दिनोंमें) बिछावन गरम हो जाता है।

(३) इस बातका प्रबन्ध रखना चाहिये; कि प्रसूता और बच्चेको ठण्डी हवा न लगने पाये। दोपहरमें दरवाजे खिड़कियाँ खोलकर सौरी घरमें हवा जाने-आनेका प्रबन्ध रखना

चाहिये ; परन्तु इस बातका ख़याल रखना चाहिये, कि हवाका झोंक प्रसूता या लड़केको न लगने पाये।

(४) सवेरे या जाड़ेके दिनोंमें ठण्डी हवा बहती है। इसलिये उस समय सौरी घरमें अच्छी तरह आग रखनी चाहिये। दूसरे वक्त थोड़ी आग रखनेसे भी काम चल सकता है, जिसमें प्रसूता और बच्चेको कोई तकलीफ़ न हो। ज्यादा धुआँ होनेसे बच्चेकी आँखें नष्ट हो जाती हैं।

अच्छे-अच्छे चन्दन आदि सुगन्धित पदार्थ आगमें डालकर सौरी घरको खुशबूदार रखना अच्छा है—कमरा ज्यादा गर्म, ठण्डा या धुआँ भरा न हो।

शीतला, इन्फ्लुएञ्जा वगैरह लरछुत रोगियोंके पाससे आकर कोई सौरी घरमें न जाये।

(५) इस बातपर ध्यान रखना चाहिये, कि बच्चा नाकसे साँस ले। बच्चा बहुत बार मुँह फाड़कर सोता है और मुँहसे साँस लेता है। ऐसी अवस्थामें मुँह बन्द कर देनेपर नाकसे यह काम अनायास ही हो जाता है। उस समय इस बातपर ध्यान न रखनेके कारण हमलोग बड़ी अवस्थामें भी बालक-बालिकाओंको मुँहसे साँस लेते देखते हैं। इससे कितने ही तरहके रोगके बीज मुँहकी राहसे शरीरमें घुस जानेकी आशङ्का रहती है। (vide Dr. Mc. Conkey's Lectures on How and When is Tuberculosis Contracted). अतएव, बचपनसे ही इसको रोक देना जरूरी है। कोई-कोई

चिकित्सक कहते हैं, कि मुँहसे साँस लेनेकी क्रिया होनेपर किसी-किसी बच्चेका मुँह टेढ़ा हो जाता है। कानसे कम सुनता है और उसका बोलना कठिन हो जाता है। यदि तालुकी शिराएँ बढ़नेके कारण बच्चा इस तरह साँस लेता हो, तो नश्तर लगवाकर इसे रोक देना चाहिये।

(६) प्रसूताके पेटको सेंकने और कपड़ा आगमें सेंककर योनिकी जड़में रखनेसे और बच्चेको नाभीको सेंक* देनेसे दर्द कम हो जाता है। इस समयके कोई-कोई चिकित्सक इस तरह सेंकनेका विरोध करते हैं।

जिस प्रसूताके सौरी घरमें आग न रक्खी जाये, जो सेंक तापको न सहे या गर्म चीजें न खायें—उसे और उसके बच्चेके लिये गर्म कपड़े और ओढ़ना रखना जरूरी है; परन्तु बहुत ज्यादा खाना-पीना या ज्यादा घी खिलाना मना है।

प्रसवके पहले दो-तीन दिन दूध और बार्ली, इसके बाद दो दिन चूड़ा घीमें तलकर उसमें गोल मिर्चकी बुकनी और खूब थोड़ा घी और पाँचवें दिन दूध भात देना जरूरी है। दाल या कोई गुरुपाक चीज़ या तरकारी पहले सप्ताहमें न देनी चाहिये।

(७) प्रसवके समयसे कम-से-कम नौ महीनेतक **स्वामी-सहवास** मना है। इस नियमपर ध्यान न देनेकी

---

* दीयेकी ज्योतिमें अंगूठा गर्मकर बच्चेकी नाभीको सेंकनेसे नाभी जल्दी सूख जाती है। सेंकनेके समय नाभीपर ज्यादा दबाव न पड़ जाये और जोरसे घसा न जाये।

वजहसे आज इस देशकी प्रसूता और बच्चोंका शरीर खराब हो गया है और शायद बच्चोंको यकृतकी बीमारी और अकाल मृत्यु भी हो रही है।

प्रसवके समयके उपसर्ग

प्रसवके दो महीने पहलेसे "ऐक्टिया-रेसि" ३ रोज़ दो बार सेवन करनेसे अकसर बिना किसी तकलीफ़के प्रसवकी क्रिया सम्पन्न होती है, परन्तु अगर यह भय हो, कि प्रसवमें कष्ट होगा, तो "ऐक्टिया-रेसिमोसा" के बदले "आर्निका ३ या कैल्क-फ्लोर ६x विचूर्ण" दो महीनेतक दिनमें दो बारके हिसाबसे सेवन कराना चाहिये। इसके अलावा प्रसवके आखिरी कई महीनोंमें जिन गर्भवतियोंको कब्जियतकी वजहसे तकलीफ़ हुआ करती हो, उनके लिये "कालिन्सोनिया ३" सेवन करना अच्छा है। कैलि-फास १२x के सेवनसे सुखपूर्वक प्रसव हो जाता है।

अगर लड़का होनेका दर्द आरम्भ होकर पाँच-छः घण्टेके भीतर ही लड़का हो जाये, तो किसी दवाको देनेकी जरूरत नहीं है; परन्तु इससे ज्यादा देर होनेपर इलाज कराना चाहिये। लक्षणके अनुसार नीचे लिखी दवाएँ देनेसे थोड़े ही वक्तके भीतर बिना किसी तकलीफ़के लड़का हो सकता है:—

जरायुका मुँह सिकुड़ा रहनेकी वजहसे प्रसवमें तक़लीफ़ होनेपर, जेलसिमियम ३x। अनियमित हलका या मीठा दर्द हो और पहले पानीकी तरह स्राव होनेके बाद भी अगर दर्द नहीं बढ़े और जी मिचलाता हो, तो पल्सेटिला ३०। ऊपर लिखे उपसर्गोंके बाद उसमें ऐंठन हो (खासकर उस औरतको अगर पहले तीन-चार सन्तानें हो चुकी हों तो), सिकेलि-कोर ३०। सरमें दर्द, बेचैनी, आँखें और मुँह लाल, बहुत ज्यादा बेचैनी, बकना-झकना, हाथ-पैर पटकना लक्षणमें—बेलेडोना ३०। बहुत ज्यादा असह्य दर्द रहनेपर—कैमोमिला ६, काफिया ६ या जेलसिमियम ६। बहुत ज्यादा प्रसवके दर्दके बाद एकाएक दर्द बन्द होकर आँखें और मुँह लाल हो जायें, जल्दी-जल्दी साँस चलने लगे, घरघर शब्द हो, बेहोशी या मूर्च्छा पैदा हो जाये, तो ओपियम ६—३०। बहुत खींचनकी वजहसे गर्भवती व्याकुल होकर चिल्लाकर रोती हो, तो—हायोसायमस ६ और प्रसवके समय जरायुका मुँह फैला रहनेपर बहुत गर्म कैलेण्डुलाके धावनमें (कैलेण्डुला θ दो ड्राम और गर्म पानी डेढ़ पाव) नये स्पञ्जको निचोड़कर जननेन्द्रियके बाहर लगाना चाहिये। प्रसवके बाद भी यह प्रयोग किया जाये तो फायदा होता है। बहुत देरतक दर्द होनेके कारण प्रसूता कमजोर हो पड़े और जरायु-मुख कड़ा हो—कालोफाइलम ३x।

अगर यह ख़याल हो, कि गर्भके लड़केका सर पहले बाहर न निकलेगा, तो पल्सेटिला ३०। जरायुका मुँह कड़ा रहनेपर

और न फैलनेपर, वेलेडोना ३०। बहुत कष्टकर प्रसवके दर्दमें, आर्निका ३। कष्टकर प्रसवका दर्द, हमेशा मिचली बनी रहना और प्रत्येक बारकी प्रसव-वेदनाके साथ नाभीके चारों ओर काटनेकी तरह तेज़ दर्द रहनेपर और यह दर्द जरायुतक फैल जानेपर,* इपिकाक ३x देना चाहिये। प्रसवके समय या बाद बेहोशी और उसके साथ ही सब शरीर बरफकी तरह ठण्डा और नाड़ी क्षीण रहनेपर, कैम्फर θ।

फूल न गिरना।—बच्चा पैदा हो जानेके थोड़ी ही देर बाद जरायुसे फूल निकल पड़ता है, पर प्रसवके बाद अगर एक घण्टेमें फूल बाहर न निकल पड़े, तो पल्सेटिला ३० या

---

* धात्री-विद्या-विशारद स्वर्गीय डाक्टर यदुनाथ मुखोपाध्यायने अपनी "धात्री-शिक्षा" नामक पुस्तक (पाँचवाँ संस्करण पृष्ठ ८५—९५) में लिखा है, कि इपिकाककी बुकनी (pulv. Ipecac) दो ग्रेनकी मात्रामें खिलानेसे :—(१) अगर जरायुका मुँह कड़ा रहता है, तो नर्म हो जाता है; खुला न हो, तो खुल जाता है; (२) दर्दका जोर न हो, तो जोर हो जाता है, पर तकलीफ़ घटती है; (३) सहजमें ही प्रसव हो जाता है, फूल निकल पड़ता है और ज्यादा रक्त-स्राव नहीं होता। (४) प्रसवकी सभी अवस्थाओंमें और गर्भवतीके एकदम कमजोर या काहिल हो जानेपर भी यह दवा खिलाई जा सकती है। दवा खानेके दो घण्टेके भीतर अगर प्रसव न हो, तो दूसरी मात्रा देनी चाहिये। तीसरी मात्राकी कभी-कभी ही जरूरत पड़ती है। कलकत्ता मेडिकल कालेजके भूतपूर्व अध्यापक और स्त्री तथा बाल-रोगकी चिकित्सामें सिद्धहस्त डाक्टर टी० आई० चार्लस भी इपिकाकके बहुत पक्षपाती थे।

सिकेलि ३० पन्द्रह मिनटका अन्तर देकर खिलाना चाहिये। दवा देनेके बाद आधे घण्टेमें अगर कोई फायदा न हो, तो एक हाथसे जरायुको दबाकर दूसरे हाथसे फूलको धीरे-धीरे खींच लेना पड़ेगा। जोरसे खींचनेपर फूल टूटकर उसका कुछ अंश भीतर रह जा सकता है, इससे खून इतना ज्यादा निकलता है, कि प्रसूताके प्राण जानेका डर रहता है।

३। प्रसवके बादके उपसर्ग

फूल गिर जानेके बाद यद्यपि कोई उपसर्ग नहीं रहता, तब भी प्रसूताको आर्निका ३x रोज़ चार बार तीन दिनोंतक सेवन कराना चाहिये। आर्निका खिलानेसे सौरी घरकी कड़ी बीमारियोंसे छुटकारा मिल सकता है।

प्रसवके बाद हमेशा जो उपसर्ग दिखाई देते हैं, आगे उनका वर्णन किया जाता है :—

योनिका मुँह और गुह्य-स्थानका फट जाना—योनिका मुँह प्रसवके समय प्रायः कुछ-न-कुछ फट जाता है। यदि प्रसवके समय प्रसूताके गुह्य-द्वारकी रक्षा न की गई, तो वह भी फट जाता है। कैलेण्डुला θ दस बून्द एक छटाँक पानीमें मिलाकर उसमें कपड़ा भिंगो, फटी हुई जगहपर लगानेसे जल्दी-जल्दी आराम हो जाता है।

प्रसवके बादका दर्द ।—फूल गिर जानेके बाद (जरायुके सिकुड़नेके समय) कई बार दर्द उठता है। इसे "प्रसवके बादका दर्द" कहते हैं। प्रसवके बाद जरायुमें खून वगैरह जो कुछ इकट्ठा रहता है, इस दर्दकी वजहसे वह बाहर निकल आता है। अगर ४८ घण्टोंके भीतर यह दर्द बन्द न हो जाये, तो आर्निका ३x देना चाहिये। जिन औरतोंका तेज़ स्वभाव हो, उन्हें कैमोमिला ६ देना चाहिये। आर्निकासे आराम न हो, तो जेलसिमियम ३x या काफिया ६ या सिकेलि ३० देना चाहिये। बीच-बीचमें पल्स ३० या नक्स-वोमिका ६ या क्यूप्रम ३० की भी जरूरत पड़ सकती है।

प्रसवके बादका स्राव (परिस्रव)

(Lochia)

खून गिरनेके बाद बीस दिनोंतक जरायुसे थोड़ा-थोड़ा खून निकला करता है। पहले दो दिन जो खून निकलता है, वह गहरा लाल, बादको पीली आभा लिये और अन्तमें पानीकी तरह या पतले पीवकी तरह निकला करता है। इसके बाद बन्द हो जाता है। अगर आप-ही-आप इस तरह बन्द होता चले, तो किसी दवाकी जरूरत नहीं पड़ती ; परन्तु नीचे लिखे उपसर्गोंमें दवा देनी चाहिये :—स्राव बहुत दिनोंतक जारी रहे, तो सिकेलि ३। बहुत दिनोंतक गहरा लाल रङ्गका खून

निकलता रहे, तो सैबाइना ३x; एकाएक बन्द हो जाये, तो ऐकोनाइट ३x; बदबू भरा हो, तो क्रियोजोट ३ या कार्बो-वेजिटेबिलिस ६ सेवन कराना चाहिये और कैलेण्डुला θ बोस-गुने पानीमें मिलाकर रोज़ तीन बार योनिको धो डालना चाहिये ।

रक्त-स्राव

(Haemorrhage)

प्रसवके बाद ज्यादा खून निकलनेपर प्रसूताके लिये जीवन संशय पैदा हो जाता है। प्रसवके समय खून कम निकले, इस बातपर हमेशा ध्यान रखना चाहिये। खूब ज्यादा खून या एकदम लाल खून सोतेकी तरह लगातार निकलता रहे, तो नीचे लिखे उपायोंसे उसे तुरन्त बन्द करना पड़ेगा।

प्रसूताको सुलाकर उसका सर नीचे और दोनों उरु ऊपरकी ओर उठाने होंगे। इसके बाद उसी समय उसके पेटपर हाथ रख जरायु इस तरह मुट्ठीमें पकड़ लेना होगा, कि वह सिकुड़ सके और गर्म पानी (१२० डिगरी) उसकी जननेन्द्रियमें डालना पड़ेगा। अगर सुविधा हो तो बरफके टुकड़े प्रसूताके पेटपर और योनिमें रखना और वही उसे चूसने देना अच्छा है। बरफमें खून बन्द करनेकी ताक़त है।

रक्त-स्रावके समय सैबाइना ३x या हैमामेलिस ३x और स्रावकी वजहसे एकदम काहिल हो जानेपर चायना ६ और स्रावकी वजहसे माथेमें दर्द रहनेपर फेरम ६ देना चाहिये।

मूर्च्छा।—प्रसवके समय या प्रसवके बाद कोई-कोई प्रसूता बेहोश होकर अपना जीवन भी खो बैठती है। इसलिये बड़ी सावधानीसे इलाज करना चाहिये। अगर बेहोशीके साथ सब शरीर बरफकी तरह ठण्डा पड़ जाये, तो रुबिनी कैम्फर θ, जरा हिलने-डोलनेसे ही बेहोश हो जाये या बेहोशीके साथ कपालमें ठण्डा पसीना हो, तो विरेट्रम-ऐल्ब ६, रक्त-स्रावकी वजहसे मूर्च्छामें, चायना ६ या कार्बो-वेज ३० ; यदि बार-बार बेहोशी आ जाये या बेहोशी ज्यादा देरतक ठहरती हो, तो **स्ट्रैमोनियम ३X**, चोटकी वजहसे बेहोशीमें, आर्निका ३x—३ ; भयकी वजहसे बेहोशीमें, ऐकोनाइट ३x या काफिया ६ फायदा करता है। यदि दवा निगलनेकी ताक़त न हो, तो चुनी हुई दवा सुंघा देनी चाहिये। पहले गर्म दूध, बार्ली वगैरह हलकी चीजें, इसके बाद पुष्ट भोजन देना चाहिये।

———

खींचन या आक्षेप

(Convulsions)

प्रसवके बाद या पहले (अथवा प्रसवके समय) सब शरीरमें आक्षेप होना, बहुत खराब है। सरमें ज्यादा दर्द; उत्कण्ठा; दृष्टि-शक्तिका कम पड़ जाना; मुँहसे बात न निकलना; हाथ-पैरोंमें अकड़न, तन्द्राका भाव वगैरह उपसर्ग "आक्षेप" के पूर्व लक्षण हैं। इसके बाद आँखोंकी पुतली घूमने लगती है, मुँह कभी इस कन्धे और कभी उस कन्धेकी ओर रहता है; जीभ बाहर निकल आती है, धनुष्टङ्कारकी तरह सब शरीरमें अकड़न होने लगती है और प्रसूता बेहोश हो जाती है। दो-चार मिनट बाद ज्ञान होता है। इसके बाद फिर खींचन पैदा होकर प्रसूता बेहोश हो जाती है। इस तरह बार-बार आक्षेप और बेहोशी होनेपर मृत्युतक हो जाती है। यकृतके ऊपरी भागमें छोटा-छोटा अनगिनती रक्त-स्राव या मस्तिष्कमें खूनकी कमी (anæmia) या पेशाबमें अण्डलाल (albumen) जमा होनेकी वजहसे ही शायद ऐसा आक्षेप होता है।

हमेशा सर भारी, अङ्ग-प्रत्यङ्गका हिलना, पेशाबकी मात्राका घट जाना, बदनमें कुछ दर्द, पैर और मुँह फूले या आँखोंके आगे अन्धेरा वगैरह बुरे लक्षण दिखाई देने लगें तो उसी समय गर्भिणीको सुला देना चाहिये और कड़ी तथा

नमकीन चीजोंका भोजन बन्दकर दूध, पानी और फलोंका रस पिलाना चाहिये। इसके बाद आगे लिखी होमियोपैथिक दवाओंमेंसे चुनकर दवा देनी चाहिये।

आक्षेप होनेके पूर्व लक्षणमें हायोसायमस ३x; आक्षेपके समय, बेलेडोना ६ या हाइड्रोसियानिक-एसिड ३; आक्षेप बन्द होनेके बाद (खासकर दिमाग़में किसी तरहकी गड़बड़ी रहनेपर) ओपियम ३० देना चाहिये। किसी-किसी प्रसूताको आक्षेप होनेके पहले बोखारके साथ तेज़ प्यास रहती है। ऐसी अवस्थामें ऐकोनाइट ३x देना चाहिये और अगर (प्रसवके समय, पहले या बाद) खींचनके साथ लसदार ठण्डा पसीना, नाड़ी पूर्ण और द्रुत और प्रलाप वगैरह लक्षण हों, तो विरेट्रम विरिड ३x देना होगा। ("सूतिका ज्वरकी" दवाएँ देखिये)।

गर्म दूध, बार्ली वगैरह हलकी चीजें पथ्यके रूपमें देनी चाहिये।

पसीना बन्द हो जाना

प्रसवके बाद एकाएक पसीना बन्द होनेपर, डल्कामारा ६ या कैमोमिला ६ देना चाहिये।

सुस्ती मालूम होना

प्रसवके बाद बहुत कमजोरी और सुस्ती आ जाये, तो चायना ६ या फास्फोरिक-एसिड ६ देना चाहिये।

नींद न आना

कोई खास बीमारी नहीं है; लेकिन प्रसवके बाद अगर रातमें नींद न आये, तो काफिया ६ देना चाहिये।

पेशाब बन्द

प्रसवके बाद अकसर छः घण्टोंतक पेशाब नहीं होता। अगर बारह घण्टोंतक पेशाब न हो, तो ऐकोनाइट ३x पन्द्रह-पन्द्रह मिनटपर देना चाहिये। अगर चार बार ऐकोनाइट खिला चुकनेपर भी पेशाब न हो, तो बेलेडोना ६ आध-आध घण्टेका अन्तर देकर देना चाहिये। तीन बार बेलेडोना देनेपर भी पेशाब न हो, तो इक्विसेटम १x देना चाहिये।

कब्जियत

प्रसवके बाद जरायु वगैरह यन्त्रोंको आराम लेनेकी जरूरत रहती है। इसीसे तीन-चार दिनोंतक प्रसूताको पाखाना नहीं होता। इस अवस्थामें दवा खिलानेसे नुकसान होता है, पर पाँच-छः दिनोंतक पाखाना न होनेकी वजहसे अगर पेटमें दर्द हो, तो कालिन्सोनिया ३x या विरेट्रम-ऐल्बम ६ देना चाहिये।

उदरामय—पतले दस्त

प्रसवके बाद पतले दस्त आनेपर, हायोसायमस या पल्सेटिला ६ देना चाहिये।

अर्श (बवासीर)

प्रसवके बाद कभी-कभी बवासीर हो जाता है। पल्सेटिला ६ सेवन और हैमामेलिस θ बीसगुने पानीके साथ मिलाकर धावनका प्रयोग करना चाहिये।

सूतिका ज्वर

(Puerperal Fever)

सूतिका ज्वर (सौरीका बोखार—प्रसूत) भी शोणित-रोगके भीतर ही है ; परन्तु औरतोंको बीमारी रहनेकी वजहसे इस स्थानपर लिखा जाता है। सूतिका ज्वर बहुत ही खराब और भयानक बीमारी है। इस रोगके पैदा होनेका कारण एक तरहके जीवाणु या ज़हर हैं। प्रसवके बाद कई कारणोंसे जरायुका दूषित हो जाना, प्रसवके बाद फूलका कुछ अंश जरायुमें रहकर उसका सड़ जाना, इस बीमारीके पूर्ववर्त्ती कारण हैं। प्रसवके तीन-चार दिन बाद ही सौरीका बोखार होता है। पहले थोड़ा बोखार होकर फिर वह बढ़ जाता है। उस समय जाड़ा, गर्मी या कँपकँपी पैदा हो जाती है। सरमें दर्द, नाड़ीमें वेग, पेटमें दर्द, बदनका ताप १०६° डिग्रीतक होता है। एकाएक प्रसवके बादवाला स्राव, पसीना और अकसर स्तनोंसे दूध निकलना बन्द हो जाता है औरसात-आठ दिनोंमें मृत्यु हो जाती है। जरायुसे पीवकी तरह बदबूदार स्राव निकलना बहुत ही अशुभ लक्षण है। **यह बीमारी कभी पुराना आकार धारण नहीं करती** ("पुराना सूतिका रोग" देखिये)।

चिकित्सा

ऐकोनाइट ३x।—रोगकी पहली अवस्थामें (जब बहुत बोखार) शीत, कँपकँपी, नाड़ी द्रुत और कठिन, गात्र शुष्क, पेट फूला और दर्द-भरा, बहुत प्यास और जरायुमें दर्द हो। डाक्टर लड्नमने इस अवस्थामें विरेट्रम-विरिडि १ का प्रयोगकर बहुतोंको बचाया है।

विरेट्रम-विरिडि १।—बहुत कँपकँपी; खींचन या अकड़नकी वजहसे रोगिनीकी जान जानेकी आशङ्का हो, तो यह दवा चार-पाँच मिनटके अन्तरसे देनी चाहिये (जबतक कँपकँपी या खींचन कुछ कम न हो जाये); इसके बाद जब खींचन या कँपकँपी कम हो जाये, तब पन्द्रह, बीस या तीस मिनटोंका अन्तर देकर यह दवा देनी चाहिये।

बेलेडोना ३०।—उदरमें बहुत दर्द, बेचैनी, स्तनमें दूधकी कमी, सरमें टपककी तरह दर्द, आँखें और चेहरा लाल।

नक्स-वोमिका ३०।—जरायु विशेष रूपसे आक्रान्त होनेपर।

कोलोसिन्थ ६।—पेट ज्यादा फूलनेपर।

कैलि-सायोनेटस ३०।—एकाएक चिलक मारनेकी तरह दर्दकी वजहसे रोगिनी रोती-रोती बेचैन हो जाये। पिछली रातमें रोगका बढ़ना।

मर्क्यूरियस-कोर ६ ।—तलपेटमें काटनेकी तरह दर्द, इसी वजहसे रोगिनी पेटपर हाथ नहीं रखने देती। बहुत ज्यादा प्यास, खून या आम-मिले दस्त।

लैकेसिस ६ ।—पेटमें बहुत दर्द (नींदके बाद दर्द बढ़ जाता है)।

रस-टक्स ६ ।—जरायुमें प्रदाह (खासकर निचले अङ्गमें अवसन्न करनेवाला दर्द); बहुत देरतक ठहरनेवाला. बदबूदार स्राव और सान्निपातिक ज्वर-विकारके लक्षणमें।

कैलि-फास ३x चूर्ण ।—इस रोगकी एक बढ़िया दवा है। हालमें डाक्टर सैण्डसने यह दवा सेवन कराकर एक रोगिनीकी जान बचायी है।

पाइरोजेन ६, २०० ।—पीव होनेकी वजहसे खून खराब होनेपर (pyæmic condition)। बेचैनी; बहुत बदबूदार स्राव।

बोखार जोरसे आकर यदि जीवनी-शक्तिको जल्दी-जल्दी नष्ट कर रहा हो, तो आर्सेनिक ३० (लैकेसिस ६ या हायोसायमस ६ के साथ कोई-कोई पर्यायक्रमसे देनेकी सलाह देते हैं)।

दूसरी दवाएँ ।—ब्रायोनिया ६, पल्सेटिला ६, हैमामेलिस १, चायना ६, ऐपिस ६। पेटका दर्द तेज़ होनेपर खब गर्म फ्लैनेल पेटपर रखना चाहिये।

सूतिका ज्वरके साथ "अन्नावरक-झिल्ली-प्रदाह" होनेपर बैप्टी θ, हायोस ३x, कैमो ३ और अन्नावरक-झिल्ली-प्रदाहको दवाएँ सेवन कराना चाहिये।

आनुसङ्गिक चिकित्सा।—दूषित कपड़े वगैरह दूर फेंक देने चाहियें। खूब गर्म फ्लैनेल पेटपर रखनेसे पेटका दर्द अच्छा हो जाता है। दालचोनीका काढ़ा गर्म पानीमें मिलाकर गर्म अवस्थामें हो रोगिनीके बदनपर छिड़क देना चाहिये। इससे होशमें आ जायगी। ("खींचन या आक्षेप" देखिये)

(पुराना) सूतिका रोग

किसी एक सुप्रसिद्ध चिकित्सा-ग्रन्थमें "सूतिका ज्वर" और (पुराना) "सूतिका रोग"—एक ही रोगके दो रूप बताकर सीखनेवालोंको उपदेश दिया गया है; पर वास्तवमें ऐसी बात नहीं है—ये दोनों ही अलग-अलग बीमारियाँ हैं। सूतिका-ज्वर लरछुत (एक तरहका विष या जीवाणु) है, खूनमें घुस जानेपर यह बीमारी पैदा होती है; पर "पुराना सूतिका-रोग" छूनेसे नहीं फैलता या किसी तरहका दूषित विष (या जीवाणु) इसमें पैदा नहीं होता, इसलिये यह सूतिका-ज्वरकी पुरानी अवस्था या रूप नहीं है। प्रसवके बाद अगर प्रसूताका अच्छी तरह यत्न नहीं होता, तो स्वास्थ्य बिगड़कर शरीर

धीरे-धीरे रक्त-हीन हो जाता है और पुराना बोखार, अतिसार, शोथ वगैरह उपसर्ग पैदा हो जाते हैं। इसीको प्रसूताकी बीमारी या पुराना सूतिका रोग कहते हैं। यह असलमें एक "बढ़ती हुई तेज़ रक्त-स्वल्पता" रोग है।

चिकित्सा।—इस कड़ी बीमारीमें नेट्रम-म्यूर ३०, आर्सेनिक ३०, चायना ६, फेरम-मेट ३०, ऐल्यूमिना ६, सिपिया ३०, ग्रैफाइटिस ३०, पल्सेटिला ३०, नक्स-वोमिका ३० देना चाहिये; परन्तु कैल्के-फास ३ और फेरम-आर्स ३०, इस बीमारीकी उत्कृष्ट दवाएँ हैं। मांगुर मछलीका शोरवा खाना और डाक-पक्षीका तेल लगाना खूब फायदा करता है। इस पुस्तकमें "बढ़ती हुई तेज़ रक्त-स्वल्पता" रोगकी चिकित्सा देखनी चाहिये।

सूतिकावस्थाका उन्माद

(Puerperal Insanity)

प्रसवके बाद या पहले बलक्षय वगैरह कारणोंसे किसी-किसी औरतको पागलपन हो जाता है। यह वायु-रोग दो तरहका होता है:—(१) उन्माद (mania) और दूसरा (२) विषाद-वायु (melancholia)।

(१) उन्माद रोगमें—बुद्धिका भ्रम, निरर्थक बकना, अपने आदमियोंको मारने, काटने दौड़ना वगैरह

"उन्माद रोग" के प्रधान लक्षण पाये जाते हैं। साधारण पागलपन या हँसने-खेलनेके भाववाले लक्षणमें हायोसायमस ३। गहरे पागलपन (जैसे—तेज़ प्रलाप, क्रोध, काटने दौड़ना, अकेली या चुप रहनेकी इच्छा न होना, निर्लज्ज भाव वगैरह लक्षणोंमें) स्ट्रैमोनियम ३ ; उच्च भावपूर्ण प्रलाप (ठीक मानो देवताकी आज्ञा है) या अकेली और अन्धेरेमें रहनेकी इच्छा या रह-रहकर रोगिनीकी शारीरिक मानसिक क्रियाका निस्तब्ध भाव (catalepsy) लक्षणमें कैनाबिस-इण्डिका ६ देना चाहिये।

(२) विषाद-वायु रोग—हमेशा दुःखित या जड़-भाव, हृदयमें शून्यता अनुभव करना या आत्म-हत्याकी इच्छा वगैरह "विषाद-वायु रोग"के प्रधान लक्षण हैं। सिमिसिफ्युगा ३ इसकी बढ़िया दवा है। अगर आत्म-हत्या करनेकी इच्छा ज्यादा होती हो, तो आरम-मेट ६ देना चाहिये। प्लैटिना ६, पल्सेटिला ६ या ऐग्नस-कैक्टस ३ की कभी-कभी जरूरत पड़ सकती है। "विषाद-वायु रोग" देखिये।

आनुसङ्गिक चिकित्सा।—ऐसा प्रबन्ध करना चाहिये, कि वायु-ग्रस्ता औरतोंका मन किसी तरह जरा भी उत्तेजित न होने पाये। दूध वगैरह हलकी पुष्ट चीजें खानेको देनी चाहियें। कोई-कोई सोना बेंगका शोरवा फायदेमन्द बताते हैं।

———

श्वेत-पद

(Phlegmasia Alba Dolens)

प्रसवके बाद किसी-किसी औरतका पैर फूल जाता है और सफेद हो जाता है। तलपेटसे पैरतक दर्द, बोखार, रक्त निकलना (Lochia) और स्तनके दूधका कम हो जाना वगैरह इस तकलीफ़ देनेवाली बीमारीके प्रधान उपसर्ग हैं। पल्सेटिला ६ या हैमामेलिस ३x इसकी उत्कृष्ट दवाएँ हैं। एपिस ६ या रसटक्स ६ की भी कभी-कभी जरूरत पड़ सकती है। रूईसे पैर बाँधना और हलकी, पर पुष्ट चीजें खानेको देनी चाहिये।

प्रसवके समय बार-बार अस्त्र-प्रयोगका दुष्परिणाम

(Repeated Artificial Delivery)

भ्रूणके निकलनेकी राह अगर भ्रूणके शरीरसे छोटी हो, तो नश्तरके सहारे बार-बार प्रसव कराना पड़ता है; परन्तु इससे प्रसूताका शरीर खराब हो जाता है। इस अवस्थामें फेरम-फास २००, कैलि-फास २०० और मैग्नेशिया-फास २०० बीच-बीचमें, पर बहुत दिनोंतक खिलाते रहनेसे रोगिनीका

स्वास्थ्य खराब होनेके कारण पैदा हुई तकलीफ़ दूर हो जाती है और धीरे-धीरे वह एकदम अच्छी हो जाती है।

यदि वह दुबारा गर्भवती हो, तो प्रसवके तीन-चार मास पहलेसे उसे कैल्केरिया फ्लोरेटा १२x विचूर्ण और कैल्के-फास ६x बीच-बीचमें खिलाना चाहिये। इससे बिना चीर-फाड़के सहजमें ही बच्चेका जन्म हो सकेगा।

वस्ति-गह्वरकी कौषिक झिल्लीका प्रदाह

(Pelvic Cellulitis)

नश्तर लगवाने या चोट वगैरहसे यह प्रदाह पैदा हो जाता है। तलपेटमें दर्द, बोखार या जननेन्द्रियका फूल उठना, इस रोगके प्रधान लक्षण हैं। एपिस ३ और रसटक्स ६ इस रोगकी दवाएँ हैं। बोखार तेज़ रहनेपर, विरेट्रम-विरिड १x देना होगा।

वस्ति-गह्वरका पीव-भरा फोड़ा

(Pelvic Abscess)

पगर "वस्ति-गह्वरका कौषिक झिल्ली प्रदाह" ऊपर कही ...के प्रयोगसे अच्छा न होकर, धीरे-धीरे फोड़ा हो जाये ...त्र पैदा होने लगी) तो पकानेके लिये हिपर-सलफर

२x—३x विचूर्ण देना चाहिये और पीव निकलता रहनेपर सिलिका ६ या ३० देना चाहिये।

पेटका झूल पड़ना

प्रसवके बाद किसी-किसीका पेट नीचेकी ओर झूल पड़ता है। यह देखनेमें बुरा मालूम होता है, किन्तु वास्तवमें यह कोई बीमारी नहीं है। कैल्केरिया ३० या सिलिका ३० महीनेमें एक बार देना चाहिये।

सिरके केश उड़ जाना

प्रसवके बाद कमजोरी वगैरह कारणोंसे किसी-किसी औरतके केश झड़ जाते हैं। फास्फोरिक-एसिड ६, चायना ६ या आर्सेनिक ६, इसकी दवाएँ हैं। बाल-रोग अध्यायमें "टाक पड़ना" देखिये।

स्तनका रोग, स्तनके दूधका रोग

"प्रसवके बाद स्तनकी बीमारीवाला" अनुच्छेद देखिये।

प्रसवके बाद स्तनकी बीमारी

(Diseases of the breast following delivery)

स्तनके सम्बन्धमें प्रसूताको नीचे लिखी बातें याद रखनी चाहिये :—

(१) तीन-चार महीनोंका गर्भ होते ही स्तन बढ़ने लगते हैं। इस समयसे ही स्तनके बोटेकी ओर ध्यान रखना चाहिये। आजकलकी सभ्यताकी रक्षाके लिये इतना कसा कपड़ा न पहनना चाहिये, जिससे स्तनके बोटेपर दबाव पड़कर उसके बढ़नेमें रुकावट पैदा हो जाये।

(२) पहले ही कहा जा चुका है, कि प्रसवके आठ-दस घण्टे बाद लड़केको दूध पिलाना चाहिये। इससे नये पैदा हुए बच्चेको सहजमें ही दस्त होता है और प्रसूताको दूधका बोखार आदि नहीं होता।

(३) हर बार लड़केको दूध पिलानेके पहले थोड़ा दूध दूहकर फेंक देना चाहिये। इसके बाद स्तनका बोटा लड़केके मुँहमें देना चाहिये।

(४) प्रसूताके भोजनके दोषसे स्तनका दूध खराब हो जा सकता है। उस दूधको पीनेसे लड़केका पेट ऐंठता है और अजीर्ण वगैरह बीमारियाँ हो जाती हैं। इसलिये खाने-पीनेके विषयमें प्रसूताको खूब सावधान रहना चाहिये।

(५) स्तनके बोटेमें जखम होनेपर या माँके पेटमें बीमारी रहने या बोखार वगैरह होनेपर बच्चेको दूध न पिलाना चाहिये।

(६) कड़ी मेहनत करने बाद या क्रोध वगैरह मानसिक उत्तेजनाके समय या स्वामी-सहवासके बाद ही स्तनका दूध खराब हो जाता है। ऐसी अवस्थामें बच्चेको दूध पिलानेपर उसी समय बच्चेको कोई तेज़ बीमारी (यहाँतक कि मौत भी) हो सकती है।

दुग्ध-ज्वर (Milk fever) प्रसवके कुछ बाद दूध पैदा हो जानेकी वजहसे किसी-किसी प्रसूताके स्तनमें कांटा गड़नेकी तरह दर्द होता है और एक-दो दिनोंमें ही स्तनका दूध जमकर बोखार आ जाता है, इसे ही दूधका बोखार कहते हैं। इसमें कोई दवा देनेकी जरूरत नहीं पड़ती, सिर्फ बोखारकी मौजूदगीमें लड़केको दूध न पिलाना चाहिये और स्तनोंमें सर्दी न लगने पाये।

परन्तु यह दूधका बोखार अगर तेज़ हो और बीस घण्टेसे ज्यादा देरतक रहे, तो ऐकोनाइट ३x देना होगा और बोखार छोड़ जानेपर भी अगर स्तन नरम न हो जाये, तो (स्तन कड़ा रहनेतक) ब्रायोनिया ६ देना चाहिये।

स्तन-प्रदाह (Mastitis)।—प्रसवके बाद (किसी भी समय) स्तनका दाह और उसके साथ ही बोखार हो सकता है। उस समय प्रसूताके स्तनकी घुंडीमें या समूचे

स्तनमें दर्द पैदा हो जाता है और उसे बहुत तकलीफ़ होती है। इसी वजहसे बच्चेको स्तन नहीं पिला सकती और उसे बहुत ही कष्ट होता है।

समूचा स्तन लाल होकर उसमें जलन हो जानेपर, ब्रायोनिया ३। किसी-किसीका कहना है कि बीमारीकी पहली अवस्थामें बेलेडोना और ब्रायोनियाका पर्यायक्रमसे व्यवहार करना चाहिये। इससे दर्द जल्दी-जल्दी घट सकता है और बढ़ नहीं सकता। इसके साथ ही तेज़ बोखार रहनेपर ऐकोनाइट और ब्रायोनिया (पर्यायक्रमसे) देनेकी सलाह देते हैं। जल्दी न घटकर अगर स्तन फूलता हो जाये या पीव पैदा हो जानेका डर रहनेपर, मर्क्युरियस-सोल ६। पीव होनेपर, हिपर-सलफर ३x—३०; फोड़ा जल्द आराम करनेके लिये, फास्फोरस ६। स्तन खूब कड़ा हो जाये, फाइटोलैक्का ३x सेवन (और फाइटोलैक्का θ तीस बून्द आध आउन्स गर्म पानीमें मिलाकर स्तनके ऊपर पट्टी लगानी चाहिये) "स्तन कड़े होना" देखिये।

स्तनकी घुंडीमें जखम (Sore nipples)।—स्तनकी घुंडीमें जखम होनेपर, प्रसूताको बहुत तकलीफ़ होती है। साठ बून्द कैलेण्डुला θ एक छटाँक पानीमें मिलाकर स्तनको धो डालना और पट्टी लगाना उचित है। यदि बोटेपर छोटी-छोटी फुन्सियां होकर, उनसे रस निकलता हो, तो ग्रैफाइटिस ६ सेवन करना होगा।

स्तनमें दर्द (Painful nipples)।—जब बच्चा स्तनसे दूध खींचे तभी उसमें दर्द हो, तो फेलान्ड्रिनम ३x सेवन कराना चाहिये। कभी-कभी घुंडीके आगेसे प्रसूताके कन्धे तक शूल-वेदनाकी तरह दर्द पैदा हो जाता है। ऐसे अवसरपर क्रोटन टिग्लियम ३ देना चाहिये। स्तन खाली मालूम होनेपर और बच्चेके स्तन पीनेके समय बहुत तकलीफ़ होनेपर, बोरैक्स ६—३०।

दूध पिलाते समय सुस्ती मालूम होना।—बच्चेको दूध पिलाने बाद प्रसूताको अगर कमजोरी मालूम हो, तो चायना ६ या एसिड-फास ३ देना चाहिये।

स्तनमें ज्यादा दूध होना।—एकाएक स्तनोंमें दूध ज्यादा बढ़ जाये, तो उसे घटानेके लिये, नेट्रम-सल्फ़ १२x विचूर्ण या पल्सेटिला ३ देना चाहिये। मसूरकी दाल पीसकर स्तनपर लेपकी तरह लगानेसे दूध खूब सूख जाता है।

स्तनमें दूध न होना या कम होना।—प्रसवके बीस घण्टेके भीतर स्तनोंमें दूध न हो, तो ऐग्नस-कैक्टस ३x देना चाहिये। एकाएक दूध घट जाये या एकदम बन्द हो जाये, तो ऐसाफिटिडा ३ देना चाहिये। करेंबू कल्मी साग खानेपर और रेंड़ीका पत्ता पानीमें सिझाकर उससे स्तन धो डालनेपर, दूध खूब बढ़ जाता है।

मानसिक उत्तेजनाकी वजहसे कभी-कभी दूध सूख जाता है। क्रोधकी वजहसे एकाएक दूध सूख जानेपर, कैमोमिला

६ ; डर जानेपर ऐकोनाइट ३ ; ईर्षाकी वजहसे, हायोसायमस ३ और शोककी वजहसे कम हो जानेपर, इग्नेशिया ६ देना चाहिये।

स्तनसे आप-ही-आप दूध निकलना।—बोरैक्स ३ विचूर्ण, कैल्के-कार्ब ३, चायना ६। रोज़ तीन-चार बार ठण्डे पानीसे स्तन धो डालना चाहिये।

स्तन कड़े होना।—कभी-कभी दूध जमकर स्तन कड़े हो जाते हैं और तकलीफ़ हो जाती है। ब्रायोनिया ६ इसकी उत्कृष्ट दवा है। ("स्तन-प्रदाह" देखिये।)

स्तनमें फोड़ा होनेकी तैयारी होनेपर।—फोड़ा होनेकी तैयारी होनेपर अर्थात् स्तन कड़े और दर्द भरे होनेपर, ब्रायोनिया ३ घण्टे-घण्टेपर सेवन कराना चाहिये, इससे अकसर फोड़ा बैठ जाता है। यदि २६ घण्टेमें कोई फ़ायदा न हो, तो फाइटोलैक्का २x नित्य तीन घण्टेका अन्तर देकर सेवन कराना चाहिये और फाइटोलैक्का θ (५ बून्द २ आउन्स खूब गर्म पानीमें मिलाकर) स्तनके ऊपर बीच-बीचमें छिड़क देना चाहिये। चूल्हेकी जली मिट्टी स्तनपर लेप देनेसे फ़ायदा होता है। फाइटोलैक्कासे फ़ायदा न हो, तो (अर्थात् पीव पैदा हो जानेपर) हिपर ६—३० सेवन और तीसीकी गर्म पोल्टीस लगानी चाहिये। शोथ या नासूर होनेपर, सिलिका ६—३० सेवन कराना चाहिये।

चौथा अध्याय

बाल-रोग

मुखबन्ध

शिशु-पालन।—जन्म लेनेके समयसे लेकर दाँत निकलनेके समयतक बच्चेकी जो अवस्था रहती है, उसे "शैशवावस्था" कहते हैं। शिशुकी नाल काटने और नहलानेके कुछ बाद ही बच्चेको थोड़ा गर्म दूध (बराबर हिस्से पानीके साथ कुछ गरमकर) पिला देना चाहिये। इसके बाद बच्चेको पाखाना पेशाब हो जाने बाद और प्रसूताके कुछ स्वस्थ होनेपर, बच्चेको उसकी माँका स्तन पीने देना चाहिये। यदि बारह घण्टेके भीतर बच्चेको पाखाना, पेशाब न हो, तो नक्स-वोमिका ३० देना चाहिये। ("नाल काटना और प्रसवके बाद स्तनकी बीमारी" अध्याय देखना चाहिये)। डा० फियर कहते हैं, कि जन्म लेनेसे इक्कीस दिनोंतक बच्चेको कभी चित्त सुलाकर न रखनी चाहिये। वे तुरन्तके जनमे लड़केको पहले दो-तीन सप्ताह अधिकांश समय बायीं करवटकी अपेक्षा दाहिनी करवट सुलानेकी सलाह देते हैं, नहीं तो उसे धनुष्टङ्कार आदि रोग पैदा हो सकते हैं।

बच्चेको कोमल देहको बढ़ानेके लिये नींदको जरूरत है, इसीलिये जन्म होने बाद कुछ दिनोंतक बच्चा ज्यादा सोता है। इस अवस्थामें उसके बदनको कपड़ेसे ढँककर सुला रखना होगा। शुद्ध सरसोंका तेल मालिशकर धूपमें सुला रखना अच्छा है* पर सावधान रहना चाहिये, कि उसे ठण्डी हवाका झोंका न लगने पाये। पहले-पहल कुछ गर्म पानीमें और इसके बाद (बच्चेके कुछ ताक़तवर हो जानेपर) ठण्डे पानीमें उसे नहलानेका अभ्यास करना पड़ेगा। ऐसा करनेसे सर्दी खाँसी कम हो जानेकी सम्भावना है। नहानेके समय पहले सरपर थोड़ा ठण्डा पानी देने बाद, शरीरको भिंजाना चाहिये। यही इस देशकी पुरानी प्रथा थी। डाक्टर फियर भी इसका अनुमोदन करते हैं।

जबतक बच्चा दूध पीता है, तबतक प्रसूताको रातमें जागना, देरसे खाना, ज्यादा खट्टा या तीता पदार्थ खाना या मनमें ज्यादा क्रोध, शोक आदिका लाना उचित नहीं है; क्योंकि इससे बच्चेको कितनी ही तरहकी बीमारियाँ पैदा हो सकती हैं। बच्चेको कोई बीमारी होनेपर माँको खूब सावधान

* १९१३ ईस्वीमें लण्डन नगरीमें कई देशोंके डाक्टरोंकी महासभा (Congress) हुई। वहाँ एक विख्यात चिकित्सकने कहा, कि रोज़ बच्चेको कुछ देरतक खाली बदन सुला देनेसे, उसके मेरुदण्डकी कमजोरी वगैरह बहुतसे रोग अच्छे हो जाते हैं।

पहले भारतकी स्त्रियाँ बच्चेको तेल लगाकर धूपमें सुला देती थीं, दुर्भाग्यका विषय है, कि यह उत्तम प्रथा धीरे-धीरे बन्द होती जा रही है।

रहना चाहिये, नहीं तो बच्चेकी बीमारी भी बढ़ जायगी। इस अभागे देशमें जितने बच्चे पैदा होते हैं, उनमें एक चतुर्थांश एक बरस भी पूरा होते-न-होते कालके गालमें जा पड़ते हैं। इस बातको भारतीय रमणियोंको अच्छी तरह हृदयङ्गम करने बाद शिशु पालनका भार अपने ऊपर लेना चाहिये।

माताको बीमारी होनेपर या उसके स्तनोंमें यथेष्ट दूध न रहनेपर, घरकी किसी दूसरी औरत, अगर अच्छा दूध होता हो, तो वह बच्चेको पिला सकती है। उसके अभावमें गधी या गायका दूध पिलाना चाहिये। गायका दूध खूब गाढ़ा हो तो उसके साथ बराबर भागमें पानी और थोड़ी दूधकी चीनी (Sugar of milk) मिलाकर, गर्मकर बच्चेको पिलाना चाहिये। ज्यादा दूध पिलाना या ज्यादा रातमें दूध पिलाना या सोयी हुई अवस्थामें अथवा नींदसे जगाकर दूध पिलाना नुकसान करता है। लड़केके रोते ही इस देशकी स्त्रियाँ उसे दूध पिलाकर शान्त करनेकी कोशिश करती हैं, परन्तु ऐसा करना उनकी भूल है। जबतक लड़का शान्त न हो, तबतक किसी तरह भी उसे दूध न पिलाना चाहिये। रोते समय दूध पिलानेसे उसे अजीर्ण रोग हो जानेकी सम्भावना रहती है। भूख लगे बिना बच्चेको कभी कुछ खिलाना न चाहिये। साधारणतः बच्चोंका ऊपरी पेट नर्म रहनेके कारण मालूम होता है, कि उसे भूख लगी है। अगर स्तनका दूध पिलानेवालीको कोई बीमारी न हो, तो एक वर्षतक बच्चेको पिला सकती है।

बच्चा पाँच-सात महीनेके बाद बदनको कुछ ऊँचा उठा सकता है। आठ-दस महीनेमें उलटने लगता है और एक बरसकी उमरमें चलना सीखता है। अगर पन्द्रह महीनेका हो जानेपर भी बच्चा चल न सके, तो उचित भोजन और इलाजका बन्दोबस्त करना चाहिये। दो-तीन वर्षकी उमर होनेतक वे उछलने, कूदने, चीजें फाड़ने, फेंकने या किसी चीज़के ऊपर चढ़ना सीख सकते हैं। तीन-चार वर्षकी उमरमें उनकी स्मृति-शक्तिका विकास हो सकता है। बच्चेके सब दाँत निकल आनेपर, पुराने चावलका खूब मुलायम भात खानेका उसे धीरे-धीरे अभ्यास कराना चाहिये। सावधान! जब बच्चा रोता हो, उस समय कोई चीज़ उसके मुँहमें न डाली जाये; क्योंकि नाकमें चढ़ जानेसे* बहुत तकलीफ़, यहाँतक कि मौततक हो सकती है। दो बरसकी उमर होनेपर भी यदि वह बोल न सकता हो, तो इलाज कराना बहुत जरूरी है।† पाँच बरसके पहले लड़केको पढ़ने-लिखनेके

* निगलनेके समय किसी वजहसे खाये हुए पदार्थका कोई अंश अन्न-नालीमें न जाकर अगर साँसकी नालीमें चला जाये, तो उसे सरक जाना या नाकमें चढ़ना कहते हैं।

† मुँह साफ़ न रखनेपर खानेकी चीजोंके जो दाने मुँहके भीतर रह जाते हैं, वे समय पाकर सड़ने लगते हैं और अम्लरस पैदा करते हैं। यही अम्लरस हमेशा दाँतमें लगनेसे दाँतोंका क्षय होता है। इसीलिये 'दाँतोंमें गड़हा पड़ जाता है और दाँतके भीतरके पतले छेदमें जाकर वह बहुत दर्द करता है। इसीका नाम "दाँतमें कीड़े लगना—Carious teeth" [कीड़े लगे दाँत देखिये] है, परन्तु वास्तवमें दाँतमें कीड़ा कभी नहीं होता।

लिये तङ्ग करना बुरा है; साथ ही सात बरसकी उमर हुए बिना लड़के-लड़कियोंको विद्यालय भेजना बुरा है।

बच्चेके हाथकी अंगुलीके नखके नीचे मैल न जमे और दाँतमें कीड़ा न लगने पाये, इस बातपर अभिभावकोंको ज्यादा ध्यान रखना चाहिये।

बच्चोंको दवा पानीमें न मिलाकर अनुबटिका (globules) में डालकर देनी चाहिये। इससे खानेमें सुविधा होती है।

बच्चोंकी बीमारी और इलाज

सद्योजात (या भूमिष्ठ) मुर्दे-जैसा बच्चा—बच्चा पैदा होते ही अगर मुर्देकी तरह हो, तो तुरन्त उसके मुँह-में-मुँह लगाकर फूँक देनेसे या किसी दूसरी तरकीबसे उसके फेफड़ेमें हवा प्रवेश करा देनेपर, वह जी सकता है। बहुत देरतक प्रसवका दर्द होने बाद या प्रसूताको जरायुकी बीमारी रहनेपर, बच्चा मुर्दे-जैसा पैदा होता है। रक्त-सञ्चालन यन्त्रकी क्रिया रुकनेसे साँसमें रुकावट पहुँचती है और लड़का रोता नहीं। इस अवस्थामें नीचे लिखे उपाय करने चाहियें। बच्चेके गलेमें यदि नाल लिपटी हुई हो, तो उसे तुरन्त अलग कर देना चाहिये। बच्चा पैदा होते ही अगर नाभीकी नाड़ी चलती हो, तो उसे न काटकर, मुँह और गलेमें जो बलगम अटका हो, उसे फुर्तीसे साफ़ कर देना चाहिये; परन्तु अगर नाड़ीमें स्पन्दन न हो, तो तुरन्त नाल बाँध देना

चाहिये। उसके बाद अंगुलीसे बच्चेकी नाक दबाकर उसके मुँहमें इस तरह फूँकना चाहिये, कि उसकी छातीमें हवा घुस जाये और उसका पञ्जरा इस तरह दबाना चाहिये, कि यह हवा फिर बाहर निकल जाये। फी मिनट इस तरह चौदह-पन्द्रह बार हवा डालने और निकालनेपर दस मिनटमें बच्चेकी साँस लेनेकी क्रिया आरम्भ हो सकती है। अगर दस मिनटमें कोई फायदा न हो, तो बच्चेके मुँह और छातीपर एक बार गर्म पानीका और दूसरी बार ठण्डे पानीका छींटा बार-बार मारना चाहिये और सूखे हाथोंसे उसके हाथ, पैर और पीठको मलना चाहिये। ध्यान रहे, कि लड़केके मुँहपर हवा लगनेमें किसी तरहकी रुकावट न पहुँचे। यह काम बड़ी सावधानी और सहिष्णुताके साथ करना होगा। इस उपायसे बहुतसे मुर्देकी तरह पैदा हुए लड़के तीन घण्टे बाद भी साँस ले सके हैं।*

दूध न टानना।—अगर कमजोरीकी वजहसे तुरन्तके जनमे बच्चेमें स्तनसे दूध खींचनेकी ताक़त न हो, तो

* तुरन्तके पैदा हुए मुर्देकी तरह लड़केका माथा गर्म रहनेपर, उसके ब्रह्माण्डपर गर्म मैंदा या नमकका सेंक देनेसे धीरे-धीरे उसकी साँस चलने लगती है—परीक्षा करनी चाहिये।

जीवनका कोई लक्षण न मालूम होनेपर ओपियम ३० या ऐण्टिम-टार्ट ३० जीभके अगले भागमें २-१ मात्रा लगा देना चाहिये और यदि अस्त्रका प्रयोग होनेकी वजहसे पैदा हुआ मुर्दे-जैसा मालूम हो, तो आर्निका ३ या ३० उसकी जीभके अगले हिस्सेमें २-३ मात्रा लगा देना चाहिये।

स्तनका बहुत थोड़ा दूध एक चम्मचमें निचोड़कर, उसे बच्चेको पिलानेसे बच्चा आप-ही-आप दूध खींचने लगेगा। इसके बाद भी अगर मुँहमें स्तन देनेपर बच्चा दूध न खींचे, तो चायना ६ की एक छोटी गोली उसके मुँहमें डाल देनी चाहिये।

बच्चेका कामला।—पैदा होनेके दो-एक दिन बाद कभी-कभी बच्चेका बदन और आँखोंका कोना पीला पड़ जाता है। कैमोमिला ६ इसकी बढ़िया दवा है। यदि कैमोमिलासे फायदा न हो, तो मर्क्यूरियस ६ देना चाहिये। मर्क्यूरियससे भी लाभ न हो, तो चायना ३ देना होगा। कब्जियत रहनेपर नक्स-वोमिका ३० और पतले दस्त आनेपर, पोडोफाइलम ३ देना होगा। पुराने कामलाकी चेलिडोनियम ६ अच्छी दवा है। बड़े बच्चेको कामला होनेपर, इलाजके लिये "पाण्डु" रोग देखिये।

सोनेका साँय-साँय करना।—तुरन्तके जनमे किसी-किसी बच्चेकी छातीमें या श्वासकी नलीमें श्लेष्मा इकट्ठा होकर उसका गला साँय-साँय करता है। कभी-कभी श्लेष्मा निकलता भी है। पहले इपिकाक ३ दो मात्रा देना चाहिये। इससे फायदा न होनेपर मर्क-सोल ६ देना चाहिये।

बच्चेकी नाभीका रोग।—नाल काटनेके बाद पाँच-छः दिनोंमें ही नाभी सूख जाया करती है। यदि वह न सूखे और उससे रस या पीव निकलता हो, तो नाभीको गरम

पानीसे धोकर कैलेण्डुला θ दस बून्द, एक छटाँक सरसोंके तेलमें मिलाकर नाभीके ऊपर पट्टी लगा देनी चाहिये और साइलिसिया ६ खिलाना चाहिये (परन्तु पीव बदबूदार होनेपर साइलिसियाके बदले आर्सेनिक ६ देना चाहिये)। अगर प्रदाह (अर्थात् नाभी लाल हो, फूल जाये और दर्द) हो, तो बेलेडोना ६ देना होगा।

नाभी पककर पीव निकलने लगे, तो आधा जायफल पीसकर (या थोड़े पानीमें तीन-चार बून्द नक्स-मस्केटा २x मिलाकर) उसमें चीथड़ा भिंजा, नाभीके ऊपर बाँध रखना और बच्चेको नक्स-वोमिका ३० सेवन कराना अच्छा है। यदि पाँच-सात दिनोंमें भी पीव गिरना न बन्द हो, तो साइलिसिया ६ सेवन कराना चाहिये।

नाल अच्छी तरह न बाँधनेकी वजहसे भी या नालका बन्धन खुल जानेकी वजहसे अगर खून बहता हो, तो हैमामेलिस θ एक साफ़ कपड़ेमें डालकर उससे खून निकलनेकी जगह जरा दबाकर रखनेसे खून बहना बन्द हो जाता है। ऐसा ही रक्त-स्राव* बार-बार होनेपर, आर्सेनिक ६ सेवन कराना चाहिये।

फूली नाभी।—घाव सूख जाने बाद भी अगर नाभी ऊँची रह जाये, तो उसपर रूईकी मोटी गद्दी (pad) की तरह तही बनाकर रखना और एक कपड़ेका घेरा देकर उसे

* केलेकी डण्टी या केलेके पत्तोंके डण्टल चूरकर आठ-दस बून्द रस नाभीपर ढाल देनेसे उसी वक्त खून बन्द हो जाता है।

पेटके सहारे बाँध देना चाहिये और नक्स-वोमिका ६ सेवन कराना चाहिये।

नील रोग।—बच्चेके ओंठ और गाल सफेद और नाखून तथा समूचे शरीरकी गर्मी कम होती जाती है। हृत्पिण्डके टेढ़े होने या उसकी क्रियामें गड़बड़ीकी वजहसे खासकर यह बीमारी होती है।

डिजिटेलिस ३ इसकी बढ़िया दवा है। समूचा शरीर बरफकी तरह ठण्डा हो जानेपर, आर्सेनिक ६ देना चाहिये। श्वास-कष्टके साथ पैर फूले रहनेपर, फास्फोरस ३ सेवन कराना चाहिये। रसटक्स ३, हाइड्रोसियानिक एसिड ३x, लैकेसिस ६, फास्फोरस ६, सलफर ३० की समय-समयपर जरूरत पड़ती है। अच्छी तरह शरीरको ढँककर बच्चेको दाहिनी करवट सुलाना पड़ता है और इस बातका बन्दोबस्त रखना पड़ता है, कि सौरी घरमें अच्छी तरह हवा जाये-आये और धुआँ न पैदा हो और आहारकी कमीकी वजहसे बच्चा ज्यादा कमजोर न हो जाये।

टीका लगवाना।—"चेचक" रोगवाले अध्यायमें कहा जा चुका है, कि टीका लेना या वैक्सिनिनम ६x चूर्ण (सिर्फ एक मात्रा) सेवन करना चेचक रोकनेका बढ़िया उपाय है। बच्चा पैदा होनेके बाद छः महीनेके भीतर गो-बीजका टीका लगवा देना इस देशका सरकारी कायदा है। जहाँ अच्छा गो-बीज न मिलनेकी वजहसे टीका न लग सके,

वहाँ एक हफ़्ते तक वैक्सिनिनम ६—३० एक मात्रा रोज़ सेवन करना चाहिये। गो-बीजका टीका लेनेपर कभी-कभी नुकसान भी होता है; परन्तु वैक्सिनिनमके सेवनसे नुकसान होनेका डर कभी नहीं रहता। चारों ओर चेचक रोग फैला रहनेपर वैरियोलिनम ६—२०० (जबतक चेचक रोग फैला रहे, तबतक) हर सप्ताह बच्चेको एक बार खिला देना चाहिये। "चेचक" रोगके **प्रतिषेधक और पाद टीका** देखिये।

गो-बीजका टीका देनेके तीन दिन बाद साधारणतः टीका देनेवाली जगह प्रदाहयुक्त (अर्थात् लाल और फूली) हो जाती है और कई दिनोंमें ही गोटी सूख जाती है। यदि उसके सूखनेमें देर हो, तो उसपर कैलेण्डुला तेल (Calendula oil) लगाना होगा। सावधान! बच्चा उस टीकावाली जगहको खुजलाकर वही अंगुली आँखोंमें न लगा दे, इससे आँखें नष्ट हो जा सकती हैं।

गो-बीजका टीका लगवानेकी वजहसे यदि कोई चर्म-रोग पैदा हो जाये तो शरीर खराब होता है; ऐसा होनेपर थूजा ६—२०० सेवन कराना चाहिये।

बच्चेकी काँच बाहर निकलना।—"गुह्य और सरलान्त्र निकलना (या काँच निकलना)" देखिये। ऐलो ३x काँच निकलनेकी अव्यर्थ दवा है। काँच निकलनेके लिये, पोडोफाइलम १२ फायदा करता है; परन्तु बालास्थि विकृतिके साथ बीमारी होनेपर, फास्फोरस ३x—६ फायदा करता है।

पेशाब करनेके समय काँच निकल आये तो एसिड-म्यूर ६ देना चाहिये।

बच्चेकी आँत बढ़ना।—काँखने, ज्यादा हँसने या रोने, पेट ऐंठने वगैरह कारणोंसे नाभीपर ज्यादा दबाव पड़नेके कारण यदि नाभीकी आँत (umbilical hernia) निकल आती है, ऐसी अवस्थामें आर्निका ३ सेवन या सलफ्यूरिक-एसिड ६ का सेवन और रूईकी एक छोटी गद्दीसे नाभीको इस तरह दबा रखना होगा कि आँत बाहर न निकल सके। बच्चोंको आँत उतरने या आँत उतरनेके साथ आबमजूल (hydrocele) रहनेपर कैल्केरिया-कार्ब ६ देना चाहिये। "अन्त्र-वृद्धि" रोगकी दवाएँ देखिये।

बच्चेकी एकशिरा।—अण्डकोषके निचले चमड़ेके भीतर पानी इकट्ठा होनेकी वजहसे वह बढ़ जाये और चमकीला दिखाई दे, तो उसे एकशिरा या आबमजूल कहते हैं। कष्टकर प्रसवमें चोट लगनेकी वजहसे या धातुदोषसे यह बीमारी पैदा हो सकती है। "अन्त्र-वृद्धिके" साथ बहुतसे बच्चोंको एकशिरा मौजूद रहता है। आघातकी वजहसे हो, तो आर्निका ३। जन्मगत रोगमें, ब्रायो ३। आँत उतरनेके साथ एकशिरा हो, तो कैल्के-कार्ब ६। जिस बच्चेको चर्म रोग हो और बच्चेका चमड़ा ढीला पड़ जाये, तो ग्रैफाइटिस ६। गुटिका-मिले धातुवालेको, बैसिलिनम २०० या आर्स-आयोड ६ ; गण्डमाला धातुके लिये, कैल्केरिया-कार्ब ६ या

कैल्के-फ्लुयोर १२x चूर्ण; और सोरा (psora) धातुग्रस्त बच्चेके लिये, सलफर २०० देना चाहिये। ऐब्रोटेनम ६, हेलिबोरस ६, साञ्जिया ६, हैमामेलिस ३ की भी कभी-कभी जरूरत पड़ती है। (बालरोग अध्यायमें "धातुदोष या कौलिक पीड़ा" और "एकशिरा" रोगकी दवाएँ देखिये)

तुरन्तके जनमे बच्चेको पाखाना, पेशाब न होना।—तुरन्तके पैदा हुए बच्चेको पाखाना-पेशाबमें बहुत ज्यादा देर होनेपर, बेलेडोना ६ या ओपियम ६ देना चाहिये और हाथ गर्मकर उसके पेटपर फेरना चाहिये और अगर मल-द्वार या पेशाब निकलनेवाला छेद बन्द रहे, तो अच्छे डाक्टरको बुलाकर तुरन्त इसका उपाय कराना चाहिये।

पैदा होने बाद किसी-किसी बच्चेको पाखाना होता है, पर पेशाब नहीं होता। छत्तीस घण्टोंमें पेशाब न हो तो पहले ऐकोनाइट ३ देना होगा। ऐकोनाइटसे फायदा न होनेपर बेल ६ या कैन्थरिस ६ देना चाहिये।

सर बड़ा होना।—बच्चा जनमने बाद उसका माथा कुछ-न-कुछ बड़ा रहता ही है। ज्यादा दिनोंतक खूब बड़ा रहनेपर, आर्निका ३x—३ सेवन कराना चाहिये। "बच्चेके मस्तिष्कमें जल-सञ्चय" देखिये।

ब्रह्मतालुका न भरना।—पैदा होनेके बाद यदि ब्रह्मतालु जल्दी (अर्थात् ८ महीनेके भीतर) न भर जाये, तो सलफर ३० सिर्फ एक मात्रा सेवन कराना चाहिये। यदि

एक सप्ताहमें कोई फायदा न हो, तो कैल्के-कार्ब ३० देना चाहिये। कैल्के-फास १२x चूर्ण और सिलिका ३० की भी कभी-कभी जरूरत पड़ती है।

बदनपर दाने निकलना।—सौरी घरकी गरमी वगैरह कारणोंसे बच्चेके बदनपर अमौरीकी तरह नोक निकले हुए दाने निकल आते हैं। ब्रायोनिया ३—६ सेवन और (जरूरत होनेपर) नहला देना चाहिये।

बच्चेका स्तन फूल उठना।—नये पैदा हुए बच्चेका स्तन फूल उठे और कड़ा हो जाये, तो बेल ३। पीव होनेपर, हिपर ६ और इसके बाद साइलिसिया ६ देना चाहिये। सावधान, यह समझकर कि बच्चेके स्तनमें दूध पैदा हो गया है, उसे दबाना या निचोड़ना न चाहिये। ऐसा करनेपर उसमें प्रदाह पैदा होकर पीव-भरा फोड़ा हो जा सकता है।

जन्म लेने बाद बच्चेके स्तनसे दूधकी तरह एक पतला पदार्थ निकलता है। इसमें कोई दवा देनेकी जरूरत नहीं है, आप-ही-आप अच्छा हो जाता है; परन्तु अच्छा होनेके लिये धाय या बच्चेकी माँ उसे दबाकर पीव-भरा फोड़ा पैदा कर देती हैं। उस समय प्रदाहित स्थान कुछ लाल हो जाये, तो आर्निका ३; परन्तु बहुत लाल होनेपर, बेलेडोना ३ और पीव पैदा होनेपर, हिपर-सल्फर ६ देना चाहिये।

अण्डकोष फूलना या ग्रन्थि-प्रदाह।—फटने, चोट लगने या सर्दी लगने या प्रमेह वगैरह बीमारियोंकी वजहसे अण्डकोषकी गांठ फूल उठती है या शरीरमें ग्रन्थि-प्रदाह हो जाता है। सर्दी लगनेकी वजहसे गांठ फूलने और बोखार होनेपर, ऐकोनाइट ३x; चोट लगने या गिर जानेकी वजहसे अण्डकोष फूलनेपर, आर्निका ३x; कान या बगलकी गांठ फूलनेपर, मर्क-आयोड ३x—३ विचूर्ण। अण्डकोषकी गुठली फूलनेपर, पल्सेटिला ३; कोखके प्रदाहमें, मर्क-वा ६x विचूर्ण; प्रमेह या उपदंशकी वजहसे गांठ निकलनेपर, कोनायम ३। स्पञ्जिया ३x, बैडियागा ६x, थूजा ६ वगैरहकी भी कभी-कभी जरूरत पड़ती है। ("मुष्कत्वक-प्रदाह" "अण्डकोष-प्रदाह" "प्लेग", "कर्णमूल-प्रदाह" वगैरह देखना चाहिये।)

अर्बुद।—पैदा होने बाद किसी-किसी बच्चेके माथेमें अर्बुद दिखाई देता है। शुद्ध सरसोंका तेल गर्मकर उसपर लगा देने और आर्निका ३ खिलानेसे फायदा होता है। इससे अगर कोई फायदा न हो, तो कैल्केरिया-कार्ब ६ कुछ दिनोंतक खिलाना चाहिये।

मसा।—थूजा १x—३० इसकी बढ़िया दवा है। डाक्टर टङ्क चार-पाँच बून्द थूजा θ एक ढेला चीनीके साथ खिलाकर आदमीके शरीरका ही नहीं, बल्कि घोड़ा, कुत्ता वगैरह पशुओंका भी मसा अच्छा कर चुके हैं।

मसा वगैरह अच्छा करना।—होनेवाले बच्चेके मसा, तिल वगैरह न होने पाये, इसके लिये माताको पहले सलफर ३०, इसके बाद थूजा ३० और अन्तमें मर्क-सोल ३० सेवन करना होगा। हरएक दवा कम-से-कम एक महीना (हफ्तेमें एक बार) खानी चाहिये।

तिल या जडुल।—पैदा होनेके बाद किसी-किसी बच्चेकी शिराएँ कभी-कभी चमड़ेके किसी एक जगहपर इकट्ठा हो जाती हैं, वहाँ एक दाग पड़ता है (कभी-कभी वह मसेकी तरह मालूम होता है), इसीका नाम तिल या जडुल है। थूजा ३० का सेवन और थूजा θ जडुलपर लगानेसे फायदा होता है। रेडियम ब्रोमाइड ३० (हफ्तेमें सिर्फ एक बार), कैल्के-कार्ब ६, फास्फो ६ और लाइको १२ का भी कभी-कभी जरूरत पड़ती है। "अर्बुद, मसा" देखिये।

बच्चेके शरीरपर घाव।—बच्चेको गन्दा रखनेको वजहसे या उसका चमड़ा खराब रहनेके कारण, बच्चेकी बगलमें और कानके पीछे ग्रन्थि वगैरहमें घाव हो जाते हैं। खाज या पीव-भरी फुन्सियाँ होनेपर, सलफर ३०। चमड़ा अस्वस्थ रहनेके कारण घाव होनेपर, कैल्के-कार्ब ६ (खासकर मोटे और मेद-भरे लड़केके लिये); घावसे हमेशा खून बहता रहे, तो लाइको १२। घावसे लसदार गोंदकी तरह रस निकलता हो, तो ग्रैफाइटिस ६ (खासकर कानके पीछेवाले घावमें) देना चाहिये। जलनवाले जखमके लिये कार्बो-वेज ३०।

बदनभर लाल फुन्सियाँ होनेपर, कैमोमिला १२। कुछ गर्म पानीमें कई नीमकी पत्तियाँ (या दो बून्द कैलेण्डुला θ) डालकर उससे रोज़ सवेरे-शाम जखम धो डालने बाद मैदा छिड़क देनेसे घावका रस शरीरकी अच्छी जगहपर लगने नहीं पाता। "मुँहका घाव" देखिये।

खाल उधड़ जाना।—किसी अङ्गकी खाल उधड़ जानेपर, मर्क-सोल ६ या आर्निका ३ सेवन और वहाँ आर्निका (पाँच बून्द) दूधकी मलाई या जैतूनका तेल (olive oil) के साथ लगाना चाहिये। यदि खाल उधड़नेके साथ बच्चेको अम्ल-रोग रहे, तो कैमोमिला १२; दूध पिलानेवालीको हिस्टीरिया या चाय पीनेकी आदत हो, तो इग्नेशिया ६। धातुगत दोषसे खाल उधड़ी हो, तो सलफर ३०, कैल्के-कार्ब ३०, लाइकोपोडियम ३०, सिपिया ३० या रसटक्स ६ वगैरहकी भी जरूरत हो सकती है—साफ़-सुथरा रखनेकी ओर ध्यान रखना चाहिये।

घमौरी।—गर्मी लगनेकी वजहसे या हमेशा कपड़े-लत्ते पहने रहनेकी वजहसे घमौरी होनेपर, कैमोमिला १२। सर्दी लगकर घमौरी होनेपर, डाल्कामारा ६; घमौरी रस-भरी रहनेपर रसटक्स ६; घमौरी बहुत खुजलाने या बैठ जानेपर बच्चेको तकलीफ़ हो, तो सलफर ३०। कैल्के-कार्ब ३०, लाइको ३० या सिपिया ३० को भी कभी-कभी जरूरत पड़ती है। घमौरीपर सफेद चन्दन लगाना चाहिये।

खुजली।—सलफर ३०—२०० इसकी बढ़िया दवा है। बिछावनपर सोते ही सब बदनमें खुजली होनेपर, इग्नेशिया ६। बदनका कपड़ा उतारते ही बदन खुजलाने लगता हो, तो आर्स ६ या नक्स-वोमिका ६। सोनेके बाद शरीर गर्म होते ही खुजलानेपर—पल्स ६ या मर्क ६। खुजलाने बाद जलन होनेपर—रसटक्स ६, एपिस ६, हिपर ३०। खुजलाते-खुजलाते खून निकल आनेपर—मर्क ६ या सलफर ३। सोनेके पहले भैंटेसे बच्चेका बदन घस देनेपर रातमें खुजली कम होती है।

छाले उठना।—बच्चा पैदा होनेके कई दिन बाद कभी-कभी बच्चेकी पीठ, कानके पीछे, गलेके पीछे, हाथ-पैर, बगल वगैरहमें एक तरहके छाले दिखाई देते हैं। इसके भीतरका रस पहले पीला, फिर लाल होकर यह सूख जाता है या फट जाता है। कभी-कभी रसपर पपड़ी भी जम जाती है। रसटक्स ३ इसकी प्रधान दवा है। रोग पुराना होनेपर, आर्सेनिक ३; उपदंशसे पैदा हुए छालोंमें, मर्क-कोर ३। अगले अनुच्छेदमें "नारङ्गा" और "खसड़ा" देखिये।

विसर्प (Erysipelas)।—सर्दी लगना वगैरह कारणोंसे बच्चे के बदनके चमड़ेका कोई-कोई अंश पहले थोड़ा लाल होता है; पीछे सब शरीर लाल हो जाता है, बोखार होता है, प्रदाहवाली जगह सूख जाती है और जखम होकर रस निकलता है; यह एक कड़ी बीमारी है।

बेल ३x, एपिस ३, रसटक्स ६, इसकी बढ़िया दवा है। "विसर्प" देखिये ।

अकौता (Eczema)।—बहुतसे बच्चोंको यह बीमारी हुआ करती है। यह एक तरहकी खुजली ही है। देखनेमें खुजलीकी तरह, सब बिखरी न रहकर कई फुन्सियाँ एक ही जगह रहती हैं। उतना छुतिहर भी नहीं है। "सोरा" (psora) धातु-ग्रस्त बच्चोंको खासकर यह बीमारी हुआ करती है। इससे पीव निकलकर अगर कपड़ेमें लगकर सूख जाये, तो वह कड़ा हो जाता है। जल-भरे छालोंमें मर्क्यूरियस ६ और रस-हीन (अर्थात् सूखे) छालोंमें लाइको १२ फायदा करता है। रस-वेन ३ इसकी बढ़िया दवा है। (कभी-कभी दो-एक दिन इस दवाके सेवनसे बोखारके साथ बीमारी बढ़ जा सकती है। इस समय दवा बन्द-कर देनेसे बीमारी आप-से-आप अच्छी हो जाती है)। जरूरत पड़नेपर रस-बेन २०० एक मात्रा खिला देना चाहिये। ऐल्यूमिना ६, ओलियैण्डर ६, क्रोटन ६, ऐण्टिम-क्रूड ७ की भी बीच-बीचमें जरूरत होती है। बीमारी पुरानी पड़ जानेपर ग्रैफाइटिस ३० देना चाहिये। कभी-कभी पेट्रोलियम ६, मर्क-कोर ६, हिपर-सलफर ६, आर्सेनिक ६ की जरूरत पड़ सकती है। जायतूनका तेल (olive oil) लगाना चाहिये।

बच्चेकी बदनका चमड़ा उधड़कर जखम होना (Intertrigo)—बच्चेका चमड़ा खूब नर्म होता है। इस-

लिये, सामान्य कारणोंसे भी चमड़ा छिलकर जखम हो जाता है। मैल जमना, जोरसे बदन घसना वगैरह कारणोंसे चमड़ा छिल जानेपर बच्चेके कानका पिछला भाग या गर्दनके पीछेका जोड़, बगल, पुट्ठे वगैरहका चमड़ा फूल जाता है, लाल हो जाता है, जलन होती है और उससे रस निकलता है। कैमोमिला ६ इसकी बढ़िया दवा है। तकलीफ़ देनेवाला जखम होनेपर और उससे खून निकलनेपर मर्क्यूरियस-सोल ६ देना चाहिये। बार-बार बीमारीका हमला होनेपर लाइकोपोडियम १२ देना उचित है।

बच्चेके मुँहमें घाव।—बच्चेके मुँहमें छोटी-छोटी सफेद फुन्सियाँ होते अकसर देखा जाता है। पहले गालमें, फिर कपाल और कभी-कभी समूचे शरीरपर ऐसी फुन्सियाँ होती हैं। कुछ दिन बाद ही इन फुन्सियोंका रङ्ग काला पड़ जाता है और ये फट जाती हैं। फट जाने बाद पीली पपड़ी जम जाती है। वायोला-ट्राइकलर ३ इसकी सबसे बढ़िया दवा है। वायोलासे फायदा न होनेपर, रसटक्स ६ देना चाहिये। रसटक्स देनेपर कभी-कभी प्रदाह बढ़ जाता है। ऐसी अवस्थामें रसटक्स बन्द कर देना चाहिये। मुँहके भीतर फुन्सियाँ या घाव होनेपर, बोरैक्स ३ चूर्ण सेवन कराना चाहिये और सुहागेका लावा (सुहागा भूननेसे ही लावा बन जाता है) शहदमें मिलाकर घावमें लगा देना चाहिये। ओंठ और मुँहमें फुन्सियाँ; जीभका पिछला भाग लेपसे ढँका; बीचका भाग

लाल रेखा-भरा ; मुँहमें बदबू ; बहुत बेचैनी ; हरे रङ्गका पतला दस्त, लक्षणमें आर्सेनिक ६ । दाँत निकलनेके समयके मुँहके घावमें, मुँह और माथेपर पसीना ; खाई हुई चीजोंके कण मिला कड़ा पाखाना ; पैरके तलवे ठण्डे, इन लक्षणोंमें— कैल्केरिया-कार्ब ३० । जीभ फूली और प्रदाहित ; दाँतकी जड़में घाव और इसी वजहसे खून निकलना ; मुँहसे सड़ी बदबू । मुँहसे अधिक परिमाणमें लार चूना ; आमाशयकी भाँति श्लेष्मा-भरा पतला दस्त लक्षणमें, मर्क-सोल ६ । समूचे चेहरेपर फुन्सियाँ और सड़ी बदबू, मुँहसे जखम पैदा करने-वाली लार चूना लक्षणमें, एसिड-नाइट्रिक ६ (अगर बाप-माँके खूनमें पाराका दोष रहनेकी वजहसे ऐसी फुन्सियाँ निकलें, तो यह ज्यादा फायदा करता है) ; सफेद लेप चढ़ी जीभ ; चेहरेपर बड़ी-बड़ी फुन्सियाँ ; मुँहसे खून मिली लार चूना ; भींजे गोंदकी तरह लसदार दस्त ; गुह्यद्वारके चारों ओर फुन्सियाँ, पीवमें रुकावट लक्षणमें, सलफर ३० । कब्जियत रहनेपर लाइकोपोडियम ३० । चेहरेका पसीना काला और ठण्डा होकर सड़ना आरम्भ हो जाये, तो सिकेलि २ विचूर्ण सेवन करनेकी डाक्टर हार्टमैन सलाह देते हैं । अच्छा शहद अंगुलीमें लगाकर बच्चेके मुँहके भीतरवाले घावमें लगा देनेसे फायदा होता है ।

बच्चेका फोड़ा ।—कभी-कभी बच्चोंके माथे, गले, कानके पीछे, बगलमें, बाहुओंकी सन्धिमें, पुट्ठे वगैरह स्थानोंमें फोड़ा हुआ करता है । यदि गोलगाल शरीरवाले मोटे-ताजे

बच्चोंको फोड़ा हो, तो कैल्केरिया-कार्ब ३०। अकसर (खासकर गर्मीमें) घाव हो जानेपर, कार्बो-वेज ३०। जखमके चारों ओर छोटी फुन्सियाँ दिखाई दें और उसकी वजहसे बच्चा हमेशा रोता रहे, तो कैमोमिला ६। कानके पिछले भागमें लाल रङ्गका जखम और उस जखमसे लसदार गांठ-गांठ-सा पीव निकलनेपर, ग्रैफाइटिस ६। बदबूदार जखमसे खून निकलनेपर और उसके साथ कब्जियत मौजूद रहनेपर लाइको-पोडियम ३०। पहले सरमें दो-एक फोड़ा होकर उसकी रसी लगनेकी वजहसे और-और हिस्सोंमें भी फोड़ा हो जानेपर, सलफर ३०, हिपर-सलफर ३० या कैल्केरिया-कार्ब ३०। कितने ही मौक़ोंपर आर्निका ३ ज्यादा फायदा करता है।

बच्चेका ओष्ठ-व्रण।—यह एक खास दूषित* फोड़ा है। ओंठपर पहले एक छोटी फुन्सी होकर यह बड़ी और कड़ी हो जाती है और उसमें अङ्गारे-जैसी जलनके साथ ज्वर, बेचैनी, नींद न आना वगैरह उपसर्ग होते हैं। यह फोड़ा अकसर नहीं पकता (अर्थात् पीव कभी ही पैदा होता है) और एक हफ़्तेके अन्तमें ही सड़ने लगता है और अच्छी

---

* फोड़ेकी अपेक्षा "दुष्ट-व्रण" अधिक गहरा और बड़ा (१ से ३ इञ्च-तक) होता है। इस रोगमें ओंठ, पीठ, गर्दन, जाँघ, माथा, मुखमण्डल, कन्धे प्रभृति अङ्ग पहले प्रदाहित होते हैं; फिर धीरे-धीरे प्रदाहित स्थानमें तेज़ जलन और कुछ काला रङ्ग दिखाई देता है। बादको इसका अग्र भाग चिपटा होता है और उसके चारों ओर मुँह होकर पीव निकलने लगता है (चर्म-रोगाध्यायमें "दुष्ट-व्रण" देखिये)।

तरह इलाज न होनेपर रोगी कमजोर होकर तुरन्त मर जाता है। ऐन्थ्रासिनम ३० इसकी एक बढ़िया दवा है (खासकर जलन ज्यादा रहनेपर); एपिस ३० (डङ्क मारनेकी तरह जलनके लक्षणमें); परन्तु ज्यादा पीब निकलनेपर, हिपर-सलफर ६।

आर्सेनिक, लैकेसिस, आर्निका, सिलिका, कार्बो-वेज, बेलेडोना वगैरह दवाएँ कभी-कभी आवश्यक हो सकती हैं ("दुष्ट-व्रण" की दवाएँ देखिये)।

हलकी जल्दी पचनेवाली चीजें खाना आवश्यक है। कभी-कभी नश्तर लगवानेकी जरूरत पड़ती है।

बिवाई फटना।—जाड़ेके दिनोंमें बच्चोंके हाथ-पैर, ओंठ वगैरह शरीरका कोई-कोई अंश फट जाया करता है। आर्स ६, हिपर ६, कैलि-कार्ब ३०, नेट्रम-म्यूर १२x चूर्ण—२००, नाइट्रिक-एसिड ६, सलफर ३० इसकी प्रधान दवाएँ हैं। फटे अङ्गमें मलाई, मक्खन, घी, तिलका तेल या जैतूनका तेल लगाना चाहिये।

सरमें रूसी।—सर साफ़ न रखना, धातुगत कारणोंसे सरके चमड़ेपर मैली, पीली या रङ्गीन मुर्दा-मांसकी तरह फुन्सियाँ होती हैं, इसे ही रूसी कहते हैं। सलफर ३० हफ़्तेमें दो बार सेवन करना चाहिये। रोज़ रातमें जैतूनका तेल (olive oil) सरमें लगाना और सवेरे पानीमें सोडा घोलकर सर धो डालना अच्छा है। बच्चेका सर बीच-बीचमें

बेसनसे अच्छी तरह घसकर साफ़ पानीसे उसे धो डालना चाहिये। इससे बहुत फायदा होता है।

टाक पड़ना या केश झड़ना।—खासकर बचपन और बाल्यावस्थामें ही सरमें टाक पड़ जाता है। सोलह वर्षकी उम्रके बाद यह बीमारी ऐसे ही कभी होती दिखाई देती है। यदि सरके केश झड़ते जाते हों, तो एसिड-फ्लुयोर एक बढ़िया दवा है। (डाक्टर ह्यूज कहते हैं, कि उपदंश-वाले धातुमें यह ज्यादा फायदा करती है)। डाक्टर हएटके मतसे गंज रोगकी आर्सेनिक एक बढ़िया दवा है। यदि गञ्ज रोग होनेपर सर बहुत खुजलाता हो, तो विङ्का-माइनर देना चाहिये। थैलियम भी कभी-कभी बहुत फायदा करता है। केश सूखा या रुखड़ा होकर झड़नेपर, 'कैलि-कार्ब ६। किसी कड़ी बीमारीके बाद अथवा (एक अङ्गकी या सब अङ्गोंकी) कमज़ोरी या दिमागी सुस्तीकी वजहसे केश झड़नेपर ऐसिड-फास २x—३ सेवन करना चाहिये। सिपिया ३—३० सेवन और धोबीका व्यवहार किया हुआ पाट (या ऐना-कार्डियम ओरि θ) शहदमें मिलाकर लेप लगानेसे गंजापन दूर होता है। सलफर ३०, कैल्के-कार्ब ३० या कैन्थ-रिस ३—६ सेवन और पोमेटमके साथ कैन्थरिस θ मिलाकर लगानेसे फायदा होता है। X-Ray का प्रयोग करनेसे भी बहुतोंको फायदा हुआ है। मांस खाना छोड़ देना चाहिये* और बढ़िया ब्रशसे सरके केश झाड़ना चाहिये।

---

* १९२७ ईस्वीमें *Western Medical Times.* नामक पत्रिकामें

कभी-कभी दादकी वजहसे केश पतन (Alopecia Areata) होता है। ऐसे मौकेपर नीचे लिखी दवाएँ—(हरएक तीन महीनेतक) सेवन करनेसे गंजापन एकदम अच्छा हो जा सकता है :—बैसिलिनम २००, थूजा ३०, सल्फ़र ३०, हाइड्रैस्टिस θ और आर्टिका युरेन्स θ।

माथेमें जूँ ।—बच्चेके केशोंमें जूँ पड़ जानेपर, रोज़ केशोंको धो डालना चाहिये और धो डालने बाद सैबाडिला (θ एक भाग बीसगुने पानीके साथ मिलाकर) धावन तैयार कर बच्चेको नहलाना चाहिये। नेट्रम-म्यूर १२x चूर्ण सेवन कराना चाहिये।

कभी-कभी बच्चेको जूँ किसी तरह जाना नहीं चाहती। नहलाने-धुलाने और साफ़-सुथरा रखनेपर भी किसी तरह अच्छा नहीं होता। ऐसे मौकेपर Von Villar का कहना है, कि स्टैफिसेग्रिया ३० सेवन करनेसे कुछ ही दिनोंमें आश्चर्य-जनक फल मिलता है। (Anshutz's Therapeutic By-Ways. पृष्ठ ११४ देखिये)

भूत लगना, हवा लगना या बच्चोंका धनुष्टङ्कार ।—पैदा होने बाद कभी-कभी बच्चेको यह भयङ्कर बीमारी हुआ करती है। पहले बच्चा दूध नहीं खींच सकता है ; गर्दन कड़ी हो जाती है, जबड़े बैठ जाते हैं और इसके

Dr. C. F. Pabst ने लिखा है, कि निरामिष भोजियोंको यह बीमारी बहुत कम होती है।

बाद बेहोशी या अकड़न होनेपर, मुँह और देह लाल, ओंठ नीले, हाथकी मुट्ठी बन्द और कभी-कभी बोखार १०५—१०६ डिगरीतक होता है और हाथ-पैर खिंचकर जबड़ा टेढ़ा हो जाता है, मुँहसे फेन निकलने लगता है और अन्तमें मर जाता है। कोई-कोई इसे भूत बाधा, ऊपरी बाधा कहते हैं; पर चोट लगने, नाल काटनेके दोषसे या नाभीमें घाव होनेकी वजहसे बच्चेकी देहमें धनुष्टङ्कारके बीज घुस जाते हैं और इसी वजहसे यह बीमारी पैदा होती है।

सर्दी लगकर धनुष्टङ्कार होनेपर (बच्चेको बोखार, बराबर रोना और बेचैनी लक्षणोंमें), ऐकोनाइट ३; अकड़न, काँपना और जबड़े इधर-उधर हिलना लक्षणमें, जेलसिमियम ३। बेलेडोना ६ इसकी बढ़िया दवा है (खासकर नाभीके प्रदाहकी वजहसे बीमारी पैदा हुई हो)। नाभीके प्रदाहकी वजहसे धनुष्टङ्कारमें कैलेण्डुला तेलकी पट्टी नाभीपर रख देना जरूरी है। चोटकी वजहसे धनुष्टङ्कारमें, आर्निका ३x चूर्ण या हाइपेरिकम ३x। नक्स-वोमिका ३x—३०, स्ट्रिकनिया ६x चूर्ण, साइकूटा ६, एसिड-हाइड्रो ३ की भी कभी-कभी जरूरत पड़ती है। माताके ज्यादा क्रोध या शोक आदिसे स्तनका दूध बिगड़ जानेपर और उसी दूधको पीनेकी वजहसे बच्चेको बीमारी होनेपर, बच्चा और जच्चा दोनोंको ही इग्नेशिया ६ देना चाहिये। बच्चेके गलेकी रीढ़में सेंक देना फायदा करता है।

बच्चेकी आँख उठना।—पैदा होनेके कई दिन बाद किसी-किसी बच्चेकी आँखें उठ जाती हैं। आँखें फूल

जाती हैं, लाल होती हैं, पीव बहता है, बन्द हो जाती हैं, यहाँतक कि कभी-कभी आँखोंमें घाव हो जाता है। इस तरह ज्यादा दिनोंतक पीव बहनेसे आँखें नष्ट हो जानेका डर रहता है, इसलिये पहलेसे ही इलाज कराना उचित है। तर घरमें रहना या ठण्डी हवा या ओस लगना, आँखोंमें ज्यादा रोशनी, धूप या धुआँ पड़ना अथवा सौरी घरमें आगकी गर्मी ज्यादा लगना अथवा माता-पिताको कोई धातु-गत रोग रहनेपर यह बीमारी हो सकती है।

आर्ज-नाई ३ बच्चोंके चक्षु-प्रदाहकी एक बहुत बढ़िया दवा है। सर्दी, ओस या ज्यादा रोशनी लगकर अगर आँखोंमें प्रदाह पैदा हो गया हो, बोखार, बेचैनी, नींद न आना, आँखोंसे बहुत पानी गिरना, आँखोंकी पुतलियोंका लाल होना वगैरह लक्षणमें ऐकोन ३x। चेचक वगैरहके बाद यह बीमारी होनेपर, एपिस ३। चोटकी वजहसे चक्षु-प्रदाहमें आर्निका ३।

पलकें फूलीं, लाल और कभी-कभी रक्त-स्राव होनेपर बेलेडोना ६। पलकें फलीं और उनके जड़वाले भागमें फुन्सी और ज्यादा पीव इकट्ठा हो जानेके लक्षणमें मर्क-सोल ६। आर्जेण्टम-नाइट्रिक ३, कैल्केरिया-कार्ब ६ की भी कभी-कभी जरूरत पड़ती है। सुसुम पानीमें साफ़ कपड़ेका एक टुकड़ा भिंगोकर अच्छी तरह निचोड़, धीरे-धीरे बहुत साव-धानतासे आँखोंसे कीच वगैरह निकाल डालना चाहिये। पलक सट जानेपर जब वह खींचनेसे न खुलती हो तो उसे

खींचकर न खोलना चाहिये। पलकोंपर थोड़ी देर पानी देनेसे ही वह आप-ही-आप खुल जायगी। पानी खूब साफ हो और उसमें साबुन या दूध न मिलाया जाये। आँख साफ कर लेने बाद एक बून्द आर्जेण्टम-नाइट्रस तरल-क्रम (२x-x३)* (weak Solution) दोनों आँखोंमें डाल देनेसे बहुत बार फायदा हो जाता है। दूसरी दवाएँ और आनुसङ्गिक चिकित्साके लिये इसी ग्रन्थका "चक्षु-प्रदाह" देखना चाहिये।

पिता-मातामें धातु दोष रहनेकी वजहसे "चक्षु-प्रदाह" होनेपर—थूजा ३०, मर्क्यूरियस-सोल ६, सलफर ३०, आरम-मूरर २००, एसिड-नाइट्रिक ६—२०० वगैरह दवाओंकी जरूरत पड़ सकती है। इन सब दवाओंका ज्यादा हाल जाननेके लिये इसी बाल रोग अध्यायकी "कौलिक पीड़ा" और परिशिष्ट "ख" देखना चाहिये।

अञ्जनी (गुहौरी)।—पलकोंके किनारे-किनारे छोटी-छोटी फुन्सियाँ फोड़े होनेपर, उसे अञ्जनी या गुहौरी

---

* आजकल आर्जेण्ट-नाइट्री साल्यूशन व्यवहारके सम्बन्धमें चिकित्सकोंमें आपसमें मतभेद हो रहा है। बहुत कुछ तर्क-वितर्कके बाद डा० वाकरकी जानकारी सभीने सर झुकाकर मान ली है। वे बोरसिक-एसिड दो ग्रेन केलेण्डुलाके साथ मिलाकर तुरन्तके जन्मे हुए बच्चोंको चक्षु-रोगमें व्यवहारकर आर्जेण्ट-नाइट्री साल्यूशनसे बहुत ज्यादा फायदा होता देख चुके हैं। आर्जेण्ट-नाइट्रिस साल्यूशनका व्यवहार करनेपर जो हानि होनेका डर रहता है, वह इसमें नहीं होता (Vide The Home. Recorder for Jan. 1912)

कहते हैं। कभी-कभी इसमें पीव पैदा हो जाता है। पल्स ३, हिपर ३ और स्टैफिसाइग्रिया ३ इसकी बढ़िया दवाएँ हैं। किसी-किसी विशेष धातुवाले बच्चेको गुहौरी किसी तरह अच्छी नहीं होती। उन्हें सलफर ३० या थूजा ३० फ़ायदा करता है। "अञ्जनी" देखिये।

कानमें मैल।—बहुत दिनोंतक कान पका रहनेपर कभी-कभी कानमें मैल पैदा हो जाता है। स्टैफिसाइग्रिया ३, इसकी प्रधान दवा है। कभी-कभी कैल्केरिया-कार्बकी भी जरूरत पड़ती है।

कानमें मैल, कर्णमूल-प्रदाह कानमें खुजली श्रवण-शक्तिकी कमी, बहिरापन वगैरहके इलाजके लिये इस ग्रन्थका "कर्ण-रोगाध्याय" देखना चाहिये।

बच्चेके कानमें दर्द।—ठण्ड लगनेपर, सर्दी या चेचक होनेपर अथवा कानमें पानी जानेपर या दाँत निकलनेके समय कभी-कभी बच्चेके कानमें दर्द होता है। बच्चेके कानपर हाथ लगते ही वह चिल्ला उठता हो, तो समझना चाहिये कि उसके कानमें दर्द हुआ है। सर्दी लगकर दर्द होनेपर, ऐकोन ३। कान फूलकर लाल और गर्म होनेपर, बेल ३। दाँत निकलते समय कानमें दर्द होनेपर, कैमोमिला १२। दर्द असह्य होनेपर, मैग्नेशिया-फास १२x विचूर्ण (खूब गर्म पानीके साथ) सेवन कराना चाहिये। कानपर गर्मागर्म सूखा सेंक देनेसे कानका दर्द घटता है।

कर्णशूल और कर्ण-प्रदाह ।—ओस लगना, बरसाती तर हवा, सर्दीके दिनोंकी ठण्डी हवा लगना ; कानमें चर्मरोगके दाने एकाएक बैठ जाना वगैरह कारणोंसे "कर्णशूल या कर्ण-प्रदाह" हुआ करता है। कानमें जलन, टपककी तरह दर्द, बहुत टटाना, कानके भीतर और बाहर, गर्म, सूजा हुआ और लाल होना, उसके साथ अकसर बोखार मौजूद रहना ; इसका प्रधान लक्षण है। कर्ण-शूलका कारण और लक्षण भी ऐसा ही है। फर्क इतना है, कि कर्ण-प्रदाहमें टपककी तरह दर्द रहता है, पर कर्ण-शूलमें एकदम शूल वेधनेकी तरह तकलीफ़ होती है। पल्सेटिला ३ का सेवन और पल्सेटिला θ कई बून्द कानमें डाल देनेसे दोनों ही बीमारियोंमें फायदा होता है। यदि जाड़ेके दिनोंकी ठण्डी हवा लगनेकी वजहसे बीमारी हो, तो ऐकोनाइट ६x ; चोट लगकर होनेपर आर्निका ३। कानमें भीतर और बाहर प्रदाह होकर कानके भीतर दर्द और बाहर जलन, गाल और दाँततक फट पड़नेकी तरह दर्द फैला रहनेपर मर्क-वा ३x विचूर्ण फायदा करता है। हलका पथ्य देना चाहिये, तकलीफ़ ज्यादा होनेपर गर्म सेंक देना चाहिये। दूसरी दवाएँ और आनुसङ्गिक चिकित्साके लिये इस ग्रन्थका "कर्ण-प्रदाह" और "कर्ण-शूल" रोग देखिये।

कान पकना, पीब होना ।—चेचक, बोखार वगैरह बीमारियोंके बाद या चमड़ेकी कोई बीमारी बैठ जानेपर

(खासकर गण्डमाला-ग्रस्त) बालक-बालिकाओंके कान पककर पीव बहने लगता है। छोटी माता या चेचकके बाद कान पकनेपर (या कानका पीव गिरना बन्द होकर कन्धेकी गांठका सूजना), पहले पल्सेटिला ३ और बादमें सलफर ३० देना चाहिये। कानसे पीव बहनेके साथ सरके दर्दमें, बेलेडोना ३, बेलेडोनाके बाद मर्क ६ (खासकर पीव गाढ़ा और बहुत देरतक मौजूद रहनेवाली बदबू तथा बिछावनकी गर्मीसे तकलीफ़ बढ़ जानेपर), परन्तु पारा या मर्करीका ज्यादा सेवन किया गया हो, तो हिपर सलफर ६ देना चाहिये। सुसुम पानीमें सोहागा मिलाकर उससे धीरे-धीरे कान धो डालना चाहिये। इसके बाद ब्लाटिङ्ग कागजसे कान अच्छी तरह पोंछकर धुनी हुई रूईकी गांठ-सी बनाकर कानका छेद बन्द करना चाहिये।

सावधान, यदि बचपनमें बच्चेके कानसे पीव गिरता हो, तो एकाएक किसी दवाका बाहरी प्रयोगकर स्रावको बन्द कर देना उचित नहीं है। स्राव बन्द हो जानेपर भयानक बीमारी हो जा सकती है। ("कान पकना" देखिये)।

टङ्कार या खींचन।—बचपनमें स्नायुमण्डलकी क्रिया थोड़ेसेमें उत्तेजित हो जाया करती है, इसी वजहसे यह बीमारी पैदा होती है। इस बीमारीके लक्षण मृगी और हिस्टीरियाके समान होते हैं। दाँत निकलनेके वक्त या चेचक अथवा खसड़ा अच्छी तरह ऊपर न आनेपर या कृमि-रोग

रहनेपर अथवा पाकाशयकी गड़बड़ीकी वजहसे यह बीमारी होती है। आँखें तथा चेहरा लाल, आँखोंकी पुतली फैली हुई; माथा गर्म, चौंक उठना या उछल पड़ना लक्षणमें बेलेडोना ६। चेहरा मलिन, गर्म और सूजा हुआ; समूचे शरीरमें कँपकँपी; गों-गों या घर-घर शब्द; ऊपरकी ओर टकटकी बाँधे चुपचाप पड़े रहना और कब्जियतके लक्षणमें—ओपियम ३०। दाँत निकलनेके समय ऐंठन होनेपर, कैमोमिला ६। हाम या चेचक अच्छी तरह न निकलनेकी वजहसे होनेपर, ज़िङ्कम ६ या स्ट्रैमो ६ देना अच्छा है। भारी चीजें खानेकी वजहसे अकड़न होनेपर पहले नक्स-वोमिका ६ देना चाहिये। यदि तीन-चार बार नक्स-वोमिका खिलानेपर कोई फायदा न हो, तो गर्म पानीकी पिचकारीसे पाखाना निकाल देना या कै करानेवाली दवा खिलाकर कै करा देना उचित है। क्रिमिकी वजहसे अकड़नमें, साइना ३x—२००, तेज़ बोखारके साथ शरीर पीछेकी ओर अकड़ जानेपर विरेड्रम-विरिडि ३x; चर्म-रोगके दाने बैठ जानेपर अकड़न हो, तो सलफर ३०, कूप्रम ६, एपिस ६, ऐण्टिम-टार्ट ६, ज़िङ्कम ६ या आर्स ६ की कभी-कभी जरूरत पड़ती है (स्नायुमण्डल रोगवाले अध्यायमें "अकड़न" रोगकी दवाएँ देखिये)।

खूब गर्म पानीमें बच्चेका पैर डुबोकर उसे सूखे कपड़ेसे पोंछ देने और साथ-ही-साथ सरपर ठण्डा पानी देनेसे बहुत बार फायदा हो जाता है। लाजवन्ती लताकी डाल बच्चेके गलेमें बाँध देनेसे अकड़न तुरन्त अच्छी हो जाती है, परीक्षा करनी चाहिये।

बच्चेको सर्दी-गर्मी।— बच्चेके समूचे शरीरमें (खासकर सरमें) धूप लगना, गर्मीके दिनोंमें अधिक देरतक सवारी आदिमें घूमना वगैरह कारणोंसे सर्दी-गर्मी हो सकती है। पहले गर्मी मालूम होती है, प्यास लगती है, इसके बाद जाड़ा लगता है, बदनका चमड़ा शुष्क हो जाता है, सरमें दर्द, आँखें लाल, मिचली या कै, बार-बार पेशाब होता है और इसके बाद शरीरकी गर्मी कम होने लगती है और धीरे-धीरे (एकाएक) बेहोशी पैदा हो सकती है। कभी-कभी इसी तरह रोगी मर भी जाता है।

एकाएक बेहोश हो जाना, समूचा शरीर खासकर सर और चेहरा गर्म और लाल होना, नाड़ी बहुत तेज़ मालूम होना, बच्चेका दम अटक जाना, दस्त, कै वगैरह लक्षणमें ग्लोनोइन ३ (५ मिनटके अन्तरसे) सेवन कराना पड़ता है। कार्बो-वेज ३० वगैरह दवाओंकी कभी-कभी जरूरत पड़ सकती है। "सर्दी-गर्मी" देखिये।

मस्तिष्क-झिल्ली-प्रदाह (Meningitis)।—इस बीमारीमें पहले भूख नहीं रहती, सर भारी रहता है और कै होती है। नाड़ी क्षीण, श्वास-प्रश्वास अनियमित और दृष्टि टेढ़ी हो जाती है। इसके बाद धीरे-धीरे खींचन, तन्द्रानुभाव, तेज़ नाड़ी, शरीरका ताप बढ़ना (१०३ डिगरीतक) वगैरह होकर दो-तीन हफ़्तोंके भीतर ही बच्चा मर जाता है। एपिस ३ इसकी बढ़िया दवा है। खासकर नींदकी हालतमें

अगर बच्चा चिल्ला उठता हो ; किसी चोटकी वजहसे हो, तो आर्निका ३, ज्यादा प्रलाप रहनेपर बेलेडोना ३।

सरके पिछले भागमें और गर्दनके पीछे बहुत दर्द रहनेपर हेलिबोरस ३। बेसिलिनम २०० (सिर्फ एक मात्रा), फास्फोरस ६, जिङ्कम ६, ब्रायोनिया ६, सलफर ३०, जेलसिमियम ३x, स्ट्रैमोनियम ३ की भी कभी-कभी जरूरत पड़ती है। बच्चेकी कौलिक-पीड़ा "गुटिकायुक्त धातु" देखिये।

मस्तिष्कमें जल-सञ्चय (Hydrocephalus)।—पैदा होनेसे लेकर एक वर्षके भीतर मस्तिष्कमें शोथ हो सकता है। यह बीमारी आठ-दस वर्षकी उम्रतक रह सकती है। बच्चा माँका दूध मजेमें पीता है, परन्तु दुबला होता जाता है। धीरे-धीरे सर बड़ा होता है। बच्चा बुड्ढे-जैसा दिखाई देने लगता है और हमेशा पड़ा रहना चाहता है। उसकी इन्द्रियाँ अवश हो जाती हैं और अन्तमें वह मर जाता है।

कैल्केरिया ३०, साइलिसिया ३०, सलफर ३० इसकी उत्कृष्ट दवाएँ हैं। यदि अज्ञान अवस्थामें बच्चेका पेशाब बन्द हो जाये और वह पानीके सिवा और कुछ खाना न चाहे, तो इस अवस्थामें हेलिबोरस ३ अच्छी दवा है।

बच्चेके दिमागमें रक्त-सञ्चय।—बच्चेका ब्रह्म-तालु कुछ फूल जाता है और वह एकदम निस्तेज हो जाता है। सर कुछ गर्म होना, नाड़ीकी गति कभी तेज़ और कभी मन्द हो जाना, कब्जियत, कै, गलत देखना या बकना, गों-गों

करना, टकटकी लगाकर देखना, आँखोंकी पुतलीका बड़ा होना, जीभ और आँखोंका लाल होना, चेहरा और आँखें तमतमायीं, कपाल और गर्दनके पीछेकी शिराओंका फूल उठना, साँस जल्दी-जल्दी और कष्टकर होना, गहरी नींदमें भी एकाएक चिल्ला उठना वगैरह इस बीमारीके प्रधान लक्षण हैं। चोट लगना, दाँत निकलना, हूप खाँसीकी वजहसे सरमें खूनका वेग बढ़ जाना, शिराओंपर ज्यादा दबाव पड़ना और खसड़ा, चेचक या किसी दूसरी चमड़ेकी बीमारीका बैठ जाना वगैरह कारणोंसे यह बीमारी पैदा होती है। एपिस ३ इस बीमारीकी बहुत बढ़िया दवा है। सर भारी, आँखें बन्द किये पड़े रहना, शरीरकी गर्मी १०३° तक होना, लक्षणोंमें जेल्स १x देना चाहिये। चेहरा और आँखें लाल और चमकीली, आँखोंकी पुतली फैली, तन्द्रालु भाव, पर नींद न आना, बीच-बीचमें चौंक उठना, ब्रह्मतालुका फूल उठना वगैरह लक्षणोंमें बेल ३x। अगर ये उपसर्ग बढ़े हुए हों, तो ग्लोनोइन ३ देना चाहिये। हलकी और पुष्ट चीजें खानेको देनी चाहियें। ("मस्तिष्क और मस्तिष्क-आवरक-झिल्ली" तथा "मस्तिष्क-आवरक-झिल्ली-प्रदाह" देखिये)

बच्चेके मस्तिष्कमें खूनकी कमीसे पैदा हुआ विकार (Hydrocephaloid brain)—हैज़ा, अतिसार, न्युमोनिया वगैरह बहुत-सी भयङ्कर बीमारियोंके कारण खून कम पड़ जानेपर बच्चेके पोषण-कार्यमें बाधा पड़ जाती है।

इस अपोषण क्रियाका नाम "मस्तिष्कमें खूनकी कमीके कारण विकार" है। शिशुका ब्रह्मरंध्र बैठ जाना, सर हमेशा इस करवट उस करवट करते रहना और मोह पैदा हो जाना, ये सभी बहुत खराब लक्षण हैं। ध्यान रखना चाहिये, कि ऊपर कहा हुआ **मस्तिष्कमें जल-सञ्चय और विकार** एक ही बीमारी नहीं है। ये दोनों ही अलग-अलग बीमारियाँ हैं। फास्फोरस ६, सलफर ३०, कैल्केरिया-कार्ब ३०, इथ्यूजा ६, कैल्केरिया-फास १२x विचूर्ण, कैडमियम-सल्फ ३, हेडिरा हेलिक्स θ, हेलिबोरस ३x वगैरह इस बीमारीकी बढ़िया दवाएँ हैं। (ज्यादा हाल और इलाज़के लिये हमारी प्रकाशित **"हैजा चिकित्सा"** देखिये)।

बच्चेकी मेरु-मज्जामें जल-सञ्चयसे पैदा हुआ विभाजित मेरु (Spinal Bifida)।—गर्भावस्थामें मेरु-प्रणाली (Spinal canal) में पानी इकट्ठा होनेपर तुरन्तके पैदा हुए बच्चेका यह बीमारीवाला स्थान अर्बुद (tumour) की तरह फूल उठता है और रीढ़की रोगी हड्डी अपूर्णताकी वजहसे "अलग" दिखाई देती है। इसीका नाम "विभाजित मेरु" है। कैल्के-फास ६x विचूर्णके प्रयोगसे हड्डीका दोष हट जाता है और एपिस ३ के सेवन और बाहरी प्रयोगसे अर्बुद अच्छा हो जाता है। बैसिलिनम २००, ब्रायो ३, सलफर ३०, सिलिका ३०, आर्स ६, लाइको ३०, कैल्के-कार्ब ६ की भी

कभी-कभी जरूरत पड़ती है। अगर अर्बुद बढ़ता जाता हो, तो नश्तर लगवा देना चाहिये।

बच्चेका पक्षाघात।—बोखार या अकड़नके साथ यह बीमारी साधारणत: दिखाई दिया करती है। लकवा मारी हुई जगह पन्द्रह-बीस दिनोंमें सूख जाती है और पतली पड़ जाती है; बीमारीवाली जगह फिर बढ़ नहीं सकती। यहाँतक कि हाड़ भी पतला पड़ जाता है। सिकेलि ३, ऐकोनाइट ३, वेलेडोना ३, प्लम्ब ६, थूजा ३०, जेलसिमियम ३०, सलफर ३० वगैरह इस बीमारीकी प्रधान दवाएँ हैं। "पक्षाघात" रोग देखिये।

बच्चेकी रीढ़में पक्षाघात (Infantile spinal paralysis)।—बीमारीवाली जगहकी पेशियाँ पतली पड़ जानेपर बच्चेके "मेरुदण्डमें लक़वा मार गया है"—यह समझना चाहिये। एक तरहका ज़हर शायद इसका मुख्य कारण है। अस्तबलकी मक्खियाँ इस ज़हरको एक जगहसे दूसरी जगह पहुँचाती हैं। सर्दी लगना या एकाएक पसीना बन्द करना इसका गौण कारण है। गर्मीके दिनोंमें हमेशा एक वर्षसे चार वर्षतकके बालक-बालिकाओंको बोखारके साथ इस बीमारीका एकाएक हमला हुआ करता है और देखते-देखते लकवा मारा हुआ अङ्ग तेजीसे बहुत पतला पड़ जाता है। बोखार, बेचैनी, स्नायुमें दर्द वगैरह लक्षणोंमें, ऐकोन ३x (रोग मालूम होनेके समयसे ही कुछ दिनोंतक इसका व्यवहार

करना पड़ेगा)। परन्तु यह मालूम होते ही, कि पक्षाघात आरम्भ हो गया है, तो ऐकोन बन्दकर जेल्स १x देना पड़ेगा (बोखारके साथ उदासीनता रहे, तो जेल्सके प्रयोगसे ज्यादा फायदा होता है)। तेज़ बोखार, चेहरेपर रक्त-सञ्चय, चमड़ा सूखा वगैरह लक्षणोंमें बेल ३ देना चाहिये। थुलथुल, मोटे, (या दुबले) बच्चोंके लिये कैल्के-कार्ब ६। गर्म पानीमें नहाना और बीमारी होनेके छः हफ़्ते बाद बिजली लगवाना और बदनमें मालिश कराना (कम-से-कम एक वर्षतक) फायदा करता है।

बच्चेका मृगी रोग।—(अपस्मार देखिये) बहुतसे बच्चोंको यह बीमारी हुआ करती है। कैल्केरिया-कार्ब ३०, इसकी बढ़िया दवा है। रोग पुराना होनेपर सलफर ३०, कूप्रम ६, बूफो ६, सिलिका ३०, हाइड्रोसियानिक-एसिड ३, कैल्केरिया-फास ६x विचूर्ण, ज़िङ्कम-फास ३x—३, बेलेडोना ६, कैमोमिला ६, साइना ३x—२००, इग्नेशिया ३, नक्स-वोमिका ३० और स्ट्रैमोनियम ६ की कभी-कभी जरूरत पड़ सकती है।

एक ज्वर।—कभी-कभी बच्चोंको बोखार छोड़ना ही नहीं चाहता। फेरम-फास १२x या जेलसिमियम ३x इसकी बढ़िया दवा है। पाकाशयकी गड़बड़ी रहनेपर, पल्सेटिला ३० ; जीभपर सफेद लेप चढ़ा हो, तो ऐण्टिम-क्रूड ३० ; क्रिमिकी वजहसे हो, तो साइना ३x या साइजि-

लिया ६; बदन खूब गर्म, चौंक उठना या अकड़नके लक्षणमें बेलेडोना ३ फायदा करता है। कभी-कभी रोगीका बोखार किसी तरह छूटता ही नहीं। कब्जियत रहती है, नाभीके चारों ओर दर्द (क्रिमि रहे या न रहे), नाकको खूँटते रहना वगैरह लक्षणमें, साइना २x—३०; साइनासे कोई लाभ न होनेपर, स्पाइजिलिया ३x देना चाहिये। विकारके लक्षण दिखाई देते ही पहले कैम्फिकम ६ देना चाहिये। पानीमें पकी बार्ली वगैरह हलकी चीजें खानेको देनी चाहियें। बोखारके समय दूध देना मना है। प्रसूताके नहाने और भोजनपर भी नज़र रखनी चाहिये। "एक ज्वर" "मैलेरियासे पैदा हुआ पारीका बोखार" और "सान्निपातिक विकार" देखिये।

प्लीहा।—बहुत दिनोंतक मैलेरिया ज्वर भोगनेपर पिलही बढ़ जाती है, फूल उठती है, कड़ी हो जाती है, टटाती है और उसमें फोड़ेकी तरह दर्द होता है। कुनाइनके अपव्यवहारकी या आर्सेनिकके अपव्यवहारकी वजहसे भी प्लीहा इस तरह बढ़ती और कड़ी हो जाती है। मर्क-बिन आयोड ३x—६x विचूर्ण बढ़िया दवा है। सियेनोथस θ प्लीहापर लगाने और सियेनोथस १x खानेसे फायदा होता है। आर्सेनिक ३०, नक्स ६, चायना ३०, लाइकोपोडियम ३०, कैल्के-कार्ब ३०, आर्निका ६, सलफर ३०, नेट्रम-म्यूर ३० की भी कभी-कभी जरूरत हो सकती है ("बढ़ी हुई पिलही" "सविराम ज्वर" "मैलेरिया ज्वर" वगैरह देखिये)।

बच्चेको नींद न आना।—माथेमें खूनकी ज्यादती या खून इकट्ठा होनेपर या प्रसूता अथवा बच्चेका अनुचित खान-पान या क्रिमिकी वजहसे नींद नहीं आती है। किस कारणसे नींद नहीं आती, यह निर्णय करनेके बाद इलाज करना चाहिये।

माथा गर्म, बिना कारणके ही बराबर रोना, नींदमें भी एकाएक चिल्लाकर रोना लक्षणमें, बेलेडोना ६। रह-रहकर शरीरका फड़कना, बदन गर्म, चिड़चिड़ा स्वभाव और हमेशा गोदीमें रहनेकी इच्छा होनेपर—कैमोमिला ६। बच्चा हँसता, खेलता हो, पर हमेशा बदन गर्म रहे और बीच-बीचमें काँखनेके लक्षणमें—काफिया ६। बोखार होकर बीच-बीचमें डरकर चिल्ला उठता हो, ऐकोनाइट ३। क्रिमिकी वजहसे नींद न आनेपर साइना ३x। कब्जियतकी वजहसे नींद न आती हो, तो नक्स-वोमिका ६। बहुत खान-पानकी वजहसे नींद न आती हो, पलसेटिला ६।

दूधकी कै करना।—स्नायविक उत्तेजना या पाक-स्थलीके दोष आदिकी वजहसे बच्चा जो दूध पीता है, वह कै कर देता है। बच्चेकी दूध न पीनेकी इच्छा, खट्टी या बदबूदार कै या पित्त मिली हरे रङ्गकी कै, कब्जियत वगैरहके लक्षणमें, नक्स-वोमिका ६। प्रसूताके बहुत भारी जल्दी न पचनेवाली चीजें खानेकी वजहसे बच्चेकी पाचन-क्रियामें बाधा पड़कर जमे हुए दही-जैसी कै होती हो, तो पलसेटिला ६। अम्लकी

वजहसे दूधकी कै करनेपर कैल्के-कार्ब ३०। समुद्रकी एक छोटी सीप बच्चेके गलेमें यन्त्रकी तरह लटका रखनेसे कभी-कभी फायदा होता है। दूध पीते ही तुरन्त आवाज़के साथ जोरसे कै; जमे हुए थक्के दहीकी तरह कै, कै करने बाद बच्चेको सुस्ती आ जाना और कुछ देर बाद उसी तरह दूध पिलानेसे फिर कै, इथ्यूजा ६। ऊपर लिखे लक्षणोंके साथ अगर जीभ सफेद हो, तो ऐण्टिम-क्रूड ६। इसीके साथ बदबूदार दस्त आता हो, तो कैल्केरिया-कार्ब ३०। दूधके साथ पित्त या लारकी तरह श्लेष्माकी कै होनेपर, इपिकाक ६। दूध कै करनेकी बीमारी अगर पुरानी हो, तो क्रियोजोट ६, नक्स-वोमिका ६, पल्सेटिला ६, विरेट्रम-ऐल्ब ६ वगैरह दवाओंकी जरूरत पड़ सकती है।

वमन या मिचली।—कभी-कभी बच्चेको मिचली होती है, जो खाता है, वही कै कर देता है, बार-बार कै करनेकी वजहसे बहुत गर्म होकर खूनतककी कै हो सकती है। बराबर मिचली और ओकाईके लक्षणमें ऐण्टिम-टार्ट ६, मिचली या कै होनेपर इपिकाक ३x; घोर लाल खूनकी कै करनेपर, फास्फोरस ६; काले खूनकी कै होनेपर, हैमामेलिस ३x; चोटकी वजहसे कै होनेपर, आर्निका ३x; क्रिमिकी वजहसे होनेपर साइना ३x—२००।

बच्चेको खूनकी कै या रक्त-पित्त।—पैदा होनेके कुछ दिन बाद किसी-किसी बच्चेको खूनकी कै होती है।

इसके अलावा बच्चेके नाक या मुँहमें घाव रहनेपर या माताके स्तनमें किसी तरहका घाव रहनेपर वह खून पेटमें जाकर कभी-कभी खूनकी कै हो सकती है, कभी-कभी जोरसे कै होनेपर "गर्स" होकर खूनकी कै हो सकती है।

चमकीले लाल रङ्गके खूनकी कै होनेपर, मिलिफोलियम θ—१x ; मिचली या कै के साथ चमकीला लाल खून आता हो और थोड़ी देरतक रहनेवाली तेज़ खाँसी मौजूद रहनेके लक्षणमें, इपिकाक ३x ; बराबर खूनकी कै, मर्क-कोर ६ ; किसी तरहकी चोट लगकर खूनकी कै, होनेपर, आर्निका ३x ; थूकके साथ खून आना और उसके साथ कलेजाका काँपना और बेहोशीके लक्षणमें फेरम ३x ; "रक्तवमन या रक्तपित्त" देखिये।

नाव आदि सवारीमें घूमनेपर कै।—नाव, जहाज़, रेल वगैरहमें घूमनेके समय किसी-किसी बच्चेको कै होती है या मिचली पैदा हो जाती है। काकुलस-इण्डिका ६ इसकी बढ़िया दवा है।

रोगीको सुलाये रखना अच्छा है और जरूरत पड़नेपर बरफका टुकड़ा चूसनेको देना चाहिये।

बच्चेकी हिचकी।—कभी-कभी सर्दी लगनेकी वजहसे बच्चोंको हिचकी आने लगती है। कई बूंद मिसरी मिला पानी या नक्स-वोमिका ३० खिला देनेसे ही फायदा होता है। बच्चेके बदनपर हमेशा गर्म कपड़ा रखना चाहिये।

दाँत निकलना।—बच्चेको छः से लेकर दस महीनेके भीतर ही दाँत निकला करते हैं। पहले निचले मसूढ़ेमें दो, फिर ऊपरवाले मसूढ़ेमें दो, इसी तरह तीन वर्षमें सब दाँत आ जाते हैं। बोखार, कब्जियत, आक्षेप, अनिद्रा वगैरह उपसर्ग दाँत निकलते वक्त दिखाई देते हैं। इन सभी उपसर्गोंको कैमोमिला १२ बढ़िया दवा है। बोखार रहनेपर, ऐकोनाइट ३। ज्यादा पतले दस्त आनेपर, कैमोमिला ६। आम रहनेपर, मर्क-कोर ६। कब्जियत रहनेपर, नक्स-वोमिका ३०। अकड़न रहनेपर, बेलेडोना ६। दाँत निकलनेमें देर होनेपर, कैल्केरिया-कार्ब ३०, इग्नेशिया ६, साइना ३x—२००, इपिकाक ६, सलफर ६ वगैरहको भी कभी-कभी जरूरत पड़ सकती है। मसूढ़ेको छेदकर दाँत बाहर न निकल सकता हो, ऐसे मौकेपर मसूढ़ेको थोड़ा चीर देनेसे ही दाँत बाहर निकल आते हैं।

कीड़े लगे दाँत (Carius teeth)।—सटे हुए दाँत निकलना, खाई हुई चीज़का चूर दाँतमें इधर-उधर लगा रहना, ज्यादा परिमाणमें खट्टी या मीठी चीजें खाना या अजीर्णकी वजहसे दाँतोंका क्षय होता है। इसीका नाम "कीड़े लगी दाँत" है। अतएव, जिनकी यह धारणा है कि दाँतमें बाहरके कीड़े लगकर उसे क्षय कर देते हैं, वे भूल करते हैं (कीड़े पड़े दाँतोंकी पाद टीका देखिये)। क्रियोजोट ६—१२ स्टैफिसाइग्रिया ६, मर्क-सोल ६ या साइलिसिया ६ इसकी

उत्तम दवाएँ हैं। क्रियोजोट θ कई बून्द एक रुईके फाहेमें लगाकर कीड़ा पड़े दाँतकी जड़में लगा देनेसे दाँतका दर्द कम हो जाता है। भोजनके बाद दाँत अच्छी तरह साफ़ कर डालना चाहिये अर्थात् भात, रोटी, तरकारी वगैरहके चूर उसमें अटके न रह जायें, इस तरह साफकर मुँह धोना चाहिये। बच्चोंको चीनी, मिसरी, मिठाई वगैरह मीठी चीजें ज्यादा खिलाना मना है। गत युरोपीय महायुद्धके समय चीनीकी कमीकी वजहसे इङ्गलैण्डके बहुतसे बालक-बालिकाओंके दाँत बहुत ही बढ़िया थे।

बच्चोंको दाँती लगना।—चोट, धूप, ओस या बुरी हवा लगना, दूषित चीजोंका खाना-पीना, रक्त-स्राव वगैरह कारणोंसे बच्चोंको दाँती लग जाती है। इस अवस्थामें ज्यादा देरतक रहना आशङ्काजनक है। इसीलिये, इसको छुड़ानेका उपाय तुरन्त करना चाहिये।

चिकित्सा—चोटकी वजहसे दाँती लगनेपर, आर्निका २x। स्नायुमें चोट आकर या शरीरका कोई स्थान कटकर दाँती लगनेपर, हाइपेरिकम १x—२००। सर्दीके दिनोंकी सूखी ठण्डी हवा लगनेकी वजहसे दाँती लगनेपर, ऐकोनाइट ३। माथा पीछेकी ओर झुक पड़ने या शरीर एक ओर झुक जानेपर, साइकूटा ६। जबड़ेके इधर-उधर हिलते रहनेपर, जेलसिमियम ३। स्नायविक दौर्बल्य या अजीर्णकी वजहसे दाँती लगनेपर, नक्स-वोमिका ३। रक्त-स्रावकी वजहसे दाँती

लगनेपर, हैलामेलिस १x। यदि बच्चा निगल न सकता हो, तो उसे दवा सुँघा देनी चाहिये।

बच्चेकी नाक लाल होना।—भोजनके बाद नाक लाल होनेपर, एपिस ३x; गहरा या काला लाल रङ्ग होनेपर, कार्बो-वेज ६ या बोरैक्स ३ देना चाहिये।

बच्चेकी नाक फूल उठना।—बार-बार सर्दी लगनेकी वजहसे नाक फूल जाती है। गण्डमालाग्रस्त बच्चोंकी नाक अकसर फूला करती है। नाक फूल जानेपर पहले, मर्क-सोल ६ (खासकर पतली सर्दी बहने या नाककी हड्डियोंमें दर्द रहनेपर) देना चाहिये। यदि मर्क-सोलके प्रयोगसे फायदा न हो या रोग कुछ कम पड़ जाये, तो हिपर-सल्फ ६ देना चाहिये।

बच्चेकी नाकमें घाव।—सरमें सर्दी लगनेकी वजहसे ही हमेशा नाकमें घाव हुआ करता है, नाकका घाव बहुत तकलीफ़ देता है, सहजमें अच्छा नहीं होता। ग्रैफाइटिस ६ सेवन और रातमें सोनेके समय नाकमें ओलिव-आयल रखना पड़ता है। नासारंध्रमें घाव या पीव-भरी फुन्सी या सड़ना आरम्भ होनेपर, कैलि-बाई ६ देना पड़ता है। नासारंध्रको चारों ओर छोटे-छोटे घांव होनेपर या पपड़ी जम जानेपर, नाइट्रिक-एसिड ६—३० देना चाहिये।

बच्चेकी नाकपर पीव-भरी फुन्सियाँ।—नाकपर फोड़ा, छोटा फोड़ा या पीव-भरी फुन्सियाँ होनेपर, पेट्रोलियम ३ सेवन कराना चाहिये।

बच्चेका नासिका-प्रदाह ।—नाकका बाहरी भाग प्रदाहित होनेपर (नयी हालतमें), बेल २x देना चाहिये। बीमारी पुरानी होनेपर—औरम-म्यूर ३x। इस ग्रन्थका "नासिका-प्रदाह" देखिये।

बच्चेकी नाककी जड़में दबाव मालूम होना—नाककी जड़में दबाव मालूम होनेपर, कैलि-बाईक्रोम ३; नाककी जड़में दबाव मालूम होनेके साथ-ही-साथ दर्द रहनेपर, कैप्सिकम ३ सेवनसे फायदा होता है।

बच्चेकी नाकके अगले भागकी उपसर्ग ।—नाककी ठोर लाल हो और खुजलानेपर, साइलिसिया ६; नाकके अगले भागमें खिंचाव मालूम होनेके साथ खुजलाहट होनेपर, कार्बो-ऐनिमेलिस ६; नाकके अगले भागमें जलन करनेवाला दर्द पैदा हो जानेपर, एसिड-आक्जैलिक ३। नाककी ठोरपर छोटी-छोटी फुन्सियाँ पैदा होनेपर, ऐमोन-कार्ब ३; पीव-भरी फुन्सियाँ होनेपर, कैलि-ब्रोम ३x; फोड़ा और खिंचाव होनेपर, बोरैक्स ३; नाकका अगला भाग लाल और उसके साथ बोखार मौजूद रहनेपर (खासकर सन्ध्याके समय), कैप्सिकम ३ देना चाहिये।

बच्चेकी नाकसे खून गिरना ।—बच्चेकी नाकसे खून गिरनेपर मिलिफोलियम θ इस रोगकी बढ़ियाँ दवा है। घूंसेकी मार या और किसी तरहकी चोट लगनेकी वजहसे खून निकलनेपर, आर्निका ३; रोगी एकदम कमजोर

हो पड़नेकी वजहसे नाकसे खून गिरनेपर, चायना ६ ; सवेरे खून गिरनेपर, ब्रायोनिया ३ ; रातके समय खून गिरनेपर, मर्क-वाई ६x विचूर्ण ।

किसी कड़ी बीमारीमें (जैसे—सान्निपातिक विकारमें) बीच-बीचमें नाकसे खून गिरता है। इस तरह खून निकलनेसे फायदा होता है। ऐसी अवस्थामें दवा खिलाकर इसे रोकना किसी अवस्थामें भी उचित नहीं है। दवा खिलानेसे बहुत बार नुकसान हो जाता है।

इस ग्रन्थका "नाकसे रक्त-स्राव" परिच्छेद देखिये।

नाक बन्द होना या सट जाना।—सर्दी सूख जानेपर कभी-कभी बच्चेकी नाक बन्द हो जाती है। इससे साँस लेने और छोड़नेमें तकलीफ़ होती है। दूध खींचने और नींदमें रुकावट पैदा हो जाती है। कभी साँय-साँय शब्द होता है और कभी बलगम निकलता है। नाक सूखी मालूम होनेपर, डाल्कामारा ३ या सैम्बुकस ३ या नक्स-वोमिका ६। नाक बन्द होकर कलेजेमें घरघर आवाज़ होनेपर, एण्टिम-टार्ट ६ ; पतली सर्दी निकलनेकी वजहसे नाक बन्द रहनेपर, कैमोमिला १२। सर्दी एकदम सूख जाये, तो नाकके भीतर और ऊपरी भागमें शुद्ध सरसोंका तेल गर्मकर डाल देनेसे श्लेष्मा पतला हो जा सकता है। उस समय अंगुली या कूँचीसे पपड़ी बाहर निकाल लेनेसे ही बच्चेको आराम मिलने लगता है।

सर्दी खाँसी ।—सर्दी लग जाना वगैरह कारणोंसे बच्चेकी नाककी राहसे सर्दी निकला करती है। कभी-कभी खाँसी और बोखार भी हो जाता है। नाक बन्द हो जाती है, लड़का हाँफने लगता है और दूध नहीं खींच सकता है। सीनेमें सर्दीका बैठ जाना डरकी बात है। सर्दी लगनेकी वजहसे सर्दी, खाँसी या उसके साथ बोखार होनेपर कोई दूसरी दवा देनेके पहले, ऐकोनाइट ३x जल्दी-जल्दी सेवन कराना चाहिये। सूखी खाँसी, सीनेमें दर्द, पीला बलगम निकलना वगैरह लक्षणोंमें, ब्रायोनिया ३। खूब कमजोर हो जाना, कै होना या बलगम-भरी, घरघराहट-मिली खाँसीमें, ऐण्टिम-टार्ट ६। अकड़न मिली खाँसीमें और उसके साथ ज्यादा श्लेष्मा निकलना, कै या मिचली वगैरह लक्षणोंमें,—इपिकाक ६; सर्दी निकलती रहनेपर, पल्सेटिला ६ और नाक बन्द होनेकी वजहसे दूध न खींच सकनेपर, नक्स-वोमिका ६। नक्ससे अगर फायदा न हो, तो सैम्बुकस १x—३x देनेसे फायदा होता है। ठण्ड लगकर हुई सर्दी यदि किसी तरह अच्छी न होती हो, तो मर्क्युरियस ६; सर्दी गिरनेकी वजहसे नाक और ओंठमें घाव होनेपर, आर्सेनिक ६। "श्वास-यन्त्रके रोग" और "क्रुप-कास" देखिये।

बच्चेका दमा ।—बहुत दिनोंतक सर्दी खाँसी भोगनेपर दमाके लक्षण दिखाई देने लगते हैं। इपिकाक ३x—६, लोबेलिया ३x, आर्सेनिक ३x—३०, सेनेगा θ इसकी बढ़िया दवा है। "दमा" देखिये।

बच्चेका श्वास-कष्ट ।—कभी-कभी बच्चेको एका-एक दमा या खाँसीकी तरह साँस लेने और छोड़नेमें तकलीफ होती है। सैम्बुकस १x, कूप्रम-मेट ६, लैकेसिस ६ और स्पञ्जिया ३ इसकी बढ़िया दवाएँ हैं। "घुंड़ी खाँसी" "दमा" वगैरहकी दवाएँ देखिये।

बच्चेका ब्राङ्काइटिस ।—बोखार, खाँसी, छातीमें दर्द, गलेका साँय-साँय करना—इस रोगके प्रधान लक्षण हैं। यदि छोटी-छोटी श्वास-नलियोंकी श्लैष्मिक-झिल्ली आक्रान्त हो, तो उसे "कैशिक वायु-नली-प्रदाह" (Capillary Bronchitis) कहते हैं। यह बहुत कड़ी बीमारी है। फेरम १२x चूर्ण और ब्रायोनिया ३ नयी बीमारीमें फायदा करता है। बीमारी पुरानी हो जानेपर— हिपर-सलफर ६, लाइको १२, ऐण्टिम-टार्ट ६ फायदा करता है। "वायु-नली-प्रदाह" की दवाएँ देखिये।

बच्चेका न्युमोनिया ।—फेफड़ेके प्रदाहके साथ कभी-कभी वायु-नली-प्रदाह भी मौजूद रहता है। इस तरह मौकेपर इसे "ब्राङ्को-न्युमोनिया" कहते हैं। नयी बीमारीमें फेरम-फास ६x, फास्फोरस ६ उत्कृष्ट दवाएँ हैं। कुछ दिनोंतक बीमारी भोगने बाद अगर यक्ष्माकास होनेका उपक्रम हो, तो बैसिलिनम ३०—२०० (सप्ताहमें एक बार एक मात्रा) देना चाहिये। "फेफड़ेका प्रदाह" की दवाएँ देखिये।

बच्चे की प्लुरिसी ।—"वक्षावरक-झिल्ली-प्रदाह" देखिये ।

घुंड़ी खाँसी ।—(Croup) स्वर-यन्त्र (अर्थात् लेरिन्क्स या श्वास-यन्त्रका ऊपरी भाग) और श्वास-यन्त्रका (trachea) प्रदाहके साथ साँसमें तकलीफ़, साँस रोकने-वाली खाँसी वगैरह उपसर्ग पैदा हो जाना और कभी-कभी उस प्रदेशमें नकली झिल्ली पैदा हो जानेका नाम "घुंड़ी खाँसी" है। घुंड़ी खाँसी दो तरहकी होती है :—(१) नकली और (२) प्रकृत। नकली घुंड़ी बच्चोंको एकाएक हो जा सकती है। बच्चा सोया हुआ है, एकाएक गलेमें सुरसुराहट पैदा होकर नींद खुल गयी और साँसमें एक तरहका साँय-साँय शब्द होकर, फिर गला घरघराने लगता है। यह घुंड़ी बहुत ही भयानक होती है। प्रकृत घुंड़ीमें पहले सूखी खाँसी और पीछे आक्षेपिक सूखी खाँसी होती है। इस अवस्थामें बार-बार खाँसनेके कारण गला फट जाता है, गलेमें दर्द होता है, बदन एकदम गर्म होकर रोगकी पूरी-पूरी हालत पैदा हो जाती है। इस खाँसीका शब्द कुत्तेके बच्चेकी बोली-जैसा होता है। यह रोग बहुत ही भयानक है।

(नकली या प्रकृत घुंड़ीमें) स्वर-भङ्गके साथ खाँसी, खाँसते-खाँसते दम अटक जाना ; बदनका चमड़ा सूखा, बेचैनी, बोखार, तेज़ प्यास वगैरह लक्षणोंमें, ऐकोनाइट ३x, दस मिनटके अन्तरसे सेवन कराना चाहिये। ऐकोनाइटके प्रयोगके

बाद ऊपर कहे लक्षणोंमें अगर कुछ कमी हो, तो स्पञ्जिया ३ नीचे लिखे लक्षणोंमें दस-पन्द्रह मिनटके अन्तरसे देना चाहिये। खाँसते-खाँसते दम अटक जानेकी वजहसे बिचली रातमें बच्चेकी नींद खुल जाये, खाँसनेके समय साँय-साँय शब्द हो, स्वर-लोप वगैरह लक्षण दिखाई दें, तो नकली घुंड़ीमें यह ज्यादा फायदा करता है। ऐकोनाइट और स्पञ्जियाके सेवनसे बीमारी कुछ घट जानेपर (अर्थात् बोखार छूट जाने और खाँसी कुछ सरल होनेपर) हिपर-सलफर ६। आक्षेपिक खाँसीके लिये सैम्बुकस २x अच्छी दवा है (खासकर रातके समय बच्चेको नींद खुलकर एकाएक साँस रुकनेका भाव दिखाई देता हो); साँस लेनेकी राहकी नकली झिल्ली मोटी होकर बच्चेको साँस लेनेमें तकलीफ़ हो, तो ब्रोमाइन २x फी पन्द्रह मिनटका अन्तर देकर सेवन कराना चाहिये। बच्चेका गला फैला हुआ और माथा पीछेकी ओर टेढ़ा हो पड़ना लक्षणमें, ऐण्टिम-टार्ट ६ देना चाहिये।

बेल ३ (सूखी कर्कश खाँसी, चेहरा तमतमाया, आँखें लाल, नाड़ी पूर्ण और कठिन); फास्फोरस ६ (स्वर-लोप, दर्द, रोगका हमला होनेके बहुत देर बाद बलगम निकलना); कास्टिकम ६ (खाँसी, छातीमें दर्द या टटाना, स्वर-भङ्ग या स्वर-लोप); आयोडिन ६ (स्वर-यन्त्र-प्रदेशमें दर्द, विरक्त करनेवाली सूखी खाँसी, खाँसते वक्त बच्चा गलेको कसकर पकड़ लेता हो, साँसमें तकलीफ़, गलेका साँय-साँय करना) वगैरह दवाएँ कभी-कभी आवश्यक हो जाती हैं।

कभी-कभी झिल्लीमें प्रदाह पैदा हो जाता है, उस समय "झिल्लीक-प्रदाह" (डिफ्थीरिया) रोगकी दवाओंमेंसे दवा चुननी पड़ेगी।

डाक्टर सण्डर कहते हैं, कि कैल्के-फास (१२x—३०), कैलि-सल्फ (१२x—३०) और फेरम-फास (१२x—३०) पर्यायक्रमसे आधे घण्टेका अन्तर देकर सेवन करानेपर "प्रकृत घुंड़ी खाँसी" आराम हो जाती है। उनके मतसे फेरम-फास १२x विचूर्ण—३० और कैलि-मूर १२x चूर्ण—३० (पर्यायक्रमसे प्रयोग) नकली घुंड़ी खाँसी रोगकी प्रधान दवा है। (Vide C. S. Saunder's Biochemic Medicines, pp. 41.)

आक्रमणवाली अवस्थामें सिर्फ गर्म पानी; इसके बाद पानीमें बना आरारोट, पानीकी बार्ली, दूध वगैरह हलका पथ्य देना चाहिये। बच्चेको कभी उठाकर बैठा देनेकी चेष्टा न करनी चाहिये। प्रसूताके खान-पानकी ओर भी नज़र रखनी पड़ेगी।

और-और दवाएँ तथा विवरण आदिके लिये स्नायु-मण्डलके रोगवाले अध्यायमें "कण्ठनलीका आक्षेप या घुंड़ी" देखना चाहिये।

बच्चेका ग्रन्थिल-ज्वर भी देखिये।

बच्चेका यक्ष्मा ।—आजकल निदान जाननेवालोंके मतसे बाप-माँसे बच्चेमें यह बीमारी नहीं आती है; परन्तु यह

निःसंशय रूपसे निश्चित हो गया है, कि यक्ष्मा रोगका होना वंशगत है। कभी-कभी न्युमोनिया भी यक्ष्मामें परिणत हो जाता है। "शिशु-न्युमोनिया" और "यक्ष्मा-कास" देखिये।

हूप खाँसी (Whooping cough)—यह बच्चेकी एक तरहकी लरछुत खाँसी है। इस खाँसीके जोरके समय लम्बी साँस लेनेमें "हूप" शब्द होता है। रोग तीन-चार हफ़्ते से लेकर छः महीनेतक रह सकता है। बहुत दिनोंतक भोगने बाद, बच्चेको क्षय-कासतक हो जानेकी सम्भावना रहती है। कोई दूसरी दवा देनेके पहले पोर्टसिन ३० (Pertussin), दिनमें तीन-चार बार करके खिलाना चाहिये। यदि एक हफ़्तेतक यह दवा खिलानेपर कोई फायदा न हो, तो मिफाइ-टिज ३x फी दो घण्टेके अन्तरसे सेवन करानेपर अकसर फायदा हो जाता है। जल्दी-जल्दी आक्रमण और साथ ही कै, पीला बलगम निकलना, तकलीफ़ देनेवाली खाँसी, स्वरभङ्ग, रातमें (खासकर आधी रातके बाद) रोग बढ़नेके लक्षणमें, ड्रोसेरा ३x। ज्यादा खिंचाव होनेपर कूप्रम ६, इपिकाक ६, नैफ्थे-लिन ३x विचूर्ण, बेलेडोना ३, हाइड्रोसियानिक ऐसिड ३x या ऐण्टिम-टार्ट ६ की भी बीच-बीचमें जरूरत पड़ जाती है। अच्छी तरह इलाज न होनेकी वजहसे अगर हूप-कास, न्युमोनिया या दमा, यक्ष्मा वगैरहमें बदल जाये, तो वह रोग और "श्वास-यन्त्रकी बीमारी" देखिये।

बच्चेकी डिफ्थीरिया।—गलेके भीतर घाव, तालुके बगलकी गांठ (tonsil) सूजना और उसपर सफेद पर्दा

पड़ जाना ; निगलने और साँस लेनेमें तकलीफ़, तेज़ बोखार वगैरह लक्षण प्रकट होनेपर, उसी समय अनुभवी चिकित्सककी सलाह लेनी चाहिये। जबतक डाक्टर न आ जाये, तबतक मर्क्यूरियस-सायानेटस ६ दो-दो घण्टेके अन्तरपर सेवन कराना चाहिये। "झिल्लीक-प्रदाह" देखिये।

भूख न लगना।—बहुत ज्यादा भारी चीजें खाना, खानेके बाद ही सो जाना, ज्यादा दवा सेवन करना, मेहनत बिलकुल न करना, आलसीकी तरह दिन काटना, हमेशा रातमें जागना, अस्वास्थ्यकर स्थानमें रहना वगैरह कितने ही कारणोंसे बालक-बालिकाओंको अग्निमान्द्यकी बीमारी हो जाती है। नक्स-वोमिका ६—३० इसकी बढ़िया दवा है। पलसेटिला ३, कार्बो-वेज ३x विचूर्ण, कैमोमिला १२, ऐण्टिम-क्रूड ६, सलफर ३०, जेण्टियाना लुटिया ३x वगैरहकी समय-समयपर जरूरत हो सकती है।

राक्षसी भूख।—पेटमें क्रिमि रहना, पाचन-यन्त्रकी गड़बड़ी वगैरह कारणोंसे बच्चेको बेतरह भूख लगा करती है। क्रिमिकी वजहसे ज्यादा भूख लगती हो, तो साइना २x—२००, पेट भरा रहनेपर भी राक्षसी भूख रहे, तो स्टैफिसाइग्रिया ६; भोजनके बाद भूख लगती हो, तो—लाइको ३०, साइक्यूटा ६ या चायना ३।

बच्चेकी कब्जियत।—गर्भावस्थामें माताकी कब्जियत, खाने-पीनेका दोष, माताका दूध न पीकर गायका दूध

पीने या यकृतकी क्रिया बिगड़नेकी वजहसे बच्चेको कब्जियत हो सकती है। ब्रायोनिया ३—३० या ऐल्यूमिना ६ इसकी बढ़िया दवा है। (खानेके बाद ही कै हो जानेपर, ब्रायोनिया खूब काम करता है)। खाई हुई चीजोंका कण मिला हुआ सफेद रङ्गका कड़ा मल, कब्जियतकी वजहसे बच्चा दिनोंदिन दुबलाया जाता हो, तो कैल्केरिया-कार्ब ६। कड़ा मल बहुत तकलीफ़से थोड़ा-सा निकलता है और पेट वायुके कारण गड़-गड़ाता हो, लाइकोपोडियम ३०; पेटमें ऐंठन या पेट फूला रहना; मोटा लम्बा लेंड़ बहुत तकलीफ़से निकलना लक्षणमें, नक्स-वोमिका ३०। पतले दस्तके बाद या जुलाब लेनेके बाद कब्जियत और उसी कारणसे गांठ-गांठ मल निकलना—ओपियम ३। कब्जियतकी ही धातु हो, तो बीच-बीचमें सल्फ़र ३०। किसी दवासे फ़ायदा न हो, पेट फूलता हो, मल कड़ा और लाल रङ्गका रहे, इन लक्षणोंमें, प्लम्बम ६। पाकाशयके यन्त्रोंकी गड़बड़ी और जीभपर सफेद दाग होनेपर, ऐण्टिम-क्रूड ३०। दूध पिलानेवालीको हलकी चीजें खानी चाहियें। जरूरत पड़नेपर ग्लिसरिनके साथ गर्म पानीकी बत्ती भी बच्चेके मलद्वारमें घुसा देनेपर सहजमें ही पाखाना हो जाता है। पेट फूलनेकी वजहसे बहुत तकलीफ़ होती हो, तो पाँच-छः बून्द तारपीनका तेल बच्चेके पेटपर छिड़ककर अंगुलीसे रगड़ देना चाहिये या मुक्ताझुरीका पत्ता पीसकर मलद्वारपर लेप कर देनेसे सहजमें पाखाना हो जाता है।

बच्चेकी पेटकी ऐंठन।—मांके खाने-पीनेकी गड़बड़ीसे अथवा बच्चेका ज्यादा गायका दूध पीना, सर्दी लगना या क्रिमिकी वजहसे पेटमें ऐंठन होनेपर बच्चा रह-रहकर रो उठता है। पेट फूला और कड़ा रहता है, इसी वजहसे बच्चा बेचैन रहता है और घुटने पेटमें गड़ाकर रखना चाहता है, हमेशा गोदोमें चढ़कर घूमना चाहता है, सब्ज रङ्गका पतला दस्त और हाथ-पैर ठण्डे रहनेके लक्षणमें, कैमोमिला १२। शिशु हगनेकी चेष्टा करता हो, पर मल न निकलकर वायु निकलता हो (या मल खूब कम निकलनेपर) तथा क्रिमि रहनेपर, साइना ३x फायदा करता है। रोज ठीक एक ही वक्तपर ऐंठन होनेपर चायना ६। सड़ी खट्टी बदबूसे भरा हरे रङ्गका पतला दस्त या भाँगकी गोलीकी तरह दस्त, नाभीके चारों ओर ऐंठन हो या मिचलीके लक्षणमें, इपिकाक २। मल रुकनेकी वजहसे ऐंठन या नाभीके ऊपरी भागमें ऐंठनके लक्षणमें, नक्स-वोमिका ३०। दाँत निकलनेके समय हैजेकी तरह दस्त और साथ ही अकड़न रहनेपर, कैम्फर ब्रोमाइड ३x विचूर्ण भी फायदा करता है। भारी चीजें खानेकी वजहसे पेटमें ऐंठन हो जाये तो गायका दूध पिलाना उचित नहीं है। थोड़ी अजवायन, कपड़ेमें बाँध, नर्मकर, नाभीमें चारों ओर सेंक देनेसे फायदा होता है।

बच्चेकी शूल-वेदना।—बच्चेकी नाभीके चारों ओर रह-रहकर बहुत ही तकलीफ़ देनेवाली ऐंठन या

खींचन हो जाती है इसीको शूल-वेदना कहते हैं। खटाई, कभी-कभी दाल, खीरा, ककड़ी, बरफ, खराब दूध, ज्यादा गुड़ या तीता खाना, क्रिमि रहना वगैरह कारणोंसे बच्चोंको यह तेज़ शूल-वेदना हुआ करती है। शूल-वेदना बहुत तरहकी होती है। जैसे—अम्ल-शूल, वायु-शूल, पित्त-शूल, सीस-शूल वगैरह।

(१) भोजनके तीन-चार घण्टे बाद—खाया हुआ पदार्थ खट्टा होकर कै हो जाना, उसके साथ सीनेमें जलन, पेटमें भयानक दर्द वगैरहका नाम "अम्ल-शूल" है। बीमारी पुरानी पड़ जानेपर खट्टी कै नहीं होती, सिर्फ पेटमें तेज़ दर्द होता है। पलसेटिला ६, नक्स-वोमिका ३, कोलोसिन्थ ६, एसिड-सल्फ २x, अम्ल-शूलकी उत्कृष्ट दवाएँ हैं।

(२) पेटमें ज्यादा वायु सञ्चित होकर वहाँ रुकी रहनेकी वजहसे पेटमें बहुत दर्द हुआ करता है। इसे "वायु-शूल" कहते हैं। बेलेडोना ३, कैमोमिला ६, कोलोसिन्थ ६, नक्स-वोम ३ और चायना ६ इसकी प्रधान दवाएँ हैं।

(३) यकृतसे छोटे-छोटे पित्तके टुकड़े आँतोंमें उतरनेसे यकृतमें बहुत दर्द होता है और पित्तकी कै होती है, इसीको "पित्त-शूल" कहते हैं। ब्रायोनिया ३, नक्स-वोम ३, चायना ६, इपिकाक २x वगैरह "पित्त-शूलमें" फायदा करते हैं।

(४) बहुत दिनोंतक सीसा (Lead) का काम करने-पर पेट, छाती और दोनों हाथोंमें बहुत दर्द पैदा होकर बेचैन कर देता है। इसीका नाम "सीस-शूल" है; ओपियम १x—

३x का सेवन और पेटपर गर्म पानीका सेंक देनेसे यह अच्छा होता है।

(५) क्रिमिकी वजहसे पेटमें तकलीफ़ देनेवाला दर्द हो, तो साइना २x या सेण्टोनाइन १x विचूर्णका प्रयोग करनेपर फायदा करता है (इस ग्रन्थका "शूल-वेदना" "सीसक-शूल" "क्रिमि" और "वक्रकोट" रोगको दवाएँ देखिये)।

बच्चेका उपाङ्ग प्रदाह।—"ऐपेण्डिक्स-प्रदाह" देखिये। आजकल अमेरिकाके बहुतसे बच्चोंका उपाङ्ग काट डाला जाता है; परन्तु होमियोपैथिकके मतसे अच्छी तरह इलाज होनेपर उतने डरकी बात नहीं रहती। लैकेसिस ६ दो घण्टेके अन्तरपर सेवन करानेसे आशातीत फल पाया जाता है (Dr. Kopp in the Hom. World. December 1911 देखिये)।

बच्चेका अतिसार।—भारी चीजें खाना, क्रिमि होना या दाँत निकलना वगैरह कारणोंसे पतले दस्त आते हैं। यदि सर्दी लगकर पतले दस्त आयें और उसके साथ ही बोखार रहे, तो ऐकोनाइट ३x देना चाहिये। भारी चीजें खानेके कारण अतिसार होनेपर, पल्सेटिला ६। दाँत निकलनेके समय या सर्दी लगकर अतिसार होनेपर (खासकर बच्चेका चिड़चिड़ा स्वभाव होनेपर), कैमोमिला ६। पतले दस्तके साथ ही कै या मिचली रहनेपर, इपिकाक ३x। पेट फूलनेकी वजहसे तकलीफ़; नाभीके चारों ओर पेड़ूमें ऐंठन, चेहरा

उतरा हुआ और कँपकँपीके लक्षणमें, पल्सेटिला ३० । पेटमें ऐंठनकी वजहसे सामनेको ओर झुक पड़ना, कोलोसिन्थ ६ । पेटके दर्दसे बच्चा बेचैन हो पड़े और इसका कारण समझमें न आये, तो मैग्नेशिया-फास १२x विचूर्ण गर्म पानीके साथ सेवन कराना चाहिये । खट्टी गन्ध मिला हुआ गांठ या फेनभरा ज्यादा परिमाणमें मल निकलनेके साथ-ही-साथ पेटमें ऐंठन रहनेपर, रियूम ३ (खासकर दाँत निकलनेके समय) । कीचकी तरह दस्त और प्यास रहनेपर, मर्क्यूरियस-डलसिस ६ । आम मिला दस्त और उसके साथ ही खून दिखाई देनेपर, मर्क-कोर ६ । चावलके धोवनकी तरह दस्त होनेपर, विरेट्रम-एल्बम ६ । कैल्केरिया-कार्ब ३०, कार्बो-वेज ३० की भी कभी-कभी जरूरत पड़ सकती है । पुराने अतिसार—आर्सेनिक ३०, सलफर ३० । "अतिसार" और "आमाशय" रोग देखिये ।

गर्मीके दिनोंमें बच्चेका अतिसार एक बड़ा ही सङ्कट-जनक रोग है । बड़ी होशियारीसे इसका इलाज करना चाहिये । एक तरहके उद्भिदाणु शायद इस बीमारीके मुख्य कारण हैं । रोगीके दस्तमें ये दिखाई देते हैं । मक्खियोंसे यह बीमारी फैलती है । जिससे बच्चेके बदनपर (खासकर हाथ और मुँहपर) मक्खियाँ न बैठने पायें, इसका बन्दोबस्त करना उचित है ।

बच्चेका अजीर्ण ।—भोजनके कुछ बाद ही पेटमें सर्दी मालूम होना, पेटमें हुदका लगना, हिचकी आना, हिचकी

बन्द होनेपर पेटमें ऐंठन, पेटमें गड़गड़ाहट, बिलकुल ही हज़म न होना, मल कभी खूब पतला, कभी कड़ा, इसके अलावा खूब भूख और प्यास, रोगीका धीरे-धीरे दुबला, कमजोर और विमर्ष रहना और पाखाना होना वगैरह इस बीमारीके प्रधान लक्षण हैं। जल्द न पचनेवाली चीजें खाना, ज्यादा दवा सेवन करना, तर जगहमें रहना वगैरह कारणोंसे बीमारी होती है। आर्सेनिक ६ या चायना ६ इस रोगकी महौषधि है। ओलियेण्डर ३, नक्स ३० और सलफर ३०की भी बीच-बीचमें जरूरत पड़ सकती है।

मुँहमें पानी भर आना।—खूब गरिष्ट चीजें खाना, बहुत गर्म या बहुत ठण्डा पानी पीना, उपवास करना, पेटमें क्रिमि रहना वगैरह कारणोंसे बच्चोंके मुँहमें पानी भर आया करता है। नक्स-वो ३, पल्स ३, कैल्क-कार्ब ६, आर्सेनिक ३, कार्बो-वेज ३x विचूर्ण, इग्नेशिया ६, सलफर ३० इसकी प्रधान दवाएँ हैं। क्रिमिकी वजहसे मुँहमें बराबर पानी भर आता हो, तो सांइना २x—२००। "मुँहमें पानी भरना" रोग देखिये।

अन्त्र-प्रदाह (Enteritis)—कम्प होकर बोखार, तारकी तरह तेज़ नाड़ी, प्यास, कै या ओकाई, पेटमें (खासकर नाभीके चारों ओर) तेज़ दर्द, घुटने हमेशा ऊँचे कर रखना और कब्जियत तथा पतले दस्त आनेपर समझना चाहिये, कि बच्चेको अन्त्र-प्रदाह हुआ है। सर्दी लगना, भोजनके दोष, विरेचक दवाओंका सेवन, क्रिमि-दोष वगैरह इस बीमारीके

पैदा होनेके खास कारण हैं। रोग शुरू होते ही (खासकर सर्दी लगकर बोखार वगैरह होनेपर), ऐकोनाइट ३x। नाभीके चारों ओर जलन करनेवाला दर्द, तेज़ कै, गहरी अवसन्नता वगैरह लक्षणोंमें, आर्सेनिक ३x—३०। पित्तको कै, पेट ढोलकी तरह फूलना, पेटमें तेज़ दर्द वगैरह लक्षणोंमें—कोलोसिन्थ ३। पेट कड़ा, फूला और दर्द, काँखना, आम-मिला खूनी दस्त वगैरह लक्षणमें, मर्क-कोर ६। अतिसार और कामला रोग होनेके लक्षणमें, पोडोफाइलम ६। पुरानी बीमारीमें, आर्ज-नाई ६। पेटपर गर्म पानीका सेंक देना और हलका पथ्य देना उचित है। "अन्त्र-प्रदाह" देखिये।

बच्चेका हैजा।—एकाएक पानीकी तरह पतला हरा या पीला (कभी-कभी लसदार या खून-मिला या अनपचका) दस्त, दूध आदि कै, सुस्ती, शरीर गर्म, परन्तु हाथ-पैर ठण्डे होना वगैरह बच्चेके हैजेके प्रधान लक्षण हैं। यह बहुत कड़ी बीमारी है। इथुजा ६—३० इसकी बढ़िया दवा है। ज्यादा बदबूदार दस्त और सवेरेके वक्त बीमारीका बढ़ना, पोडोफाइलम ६। शरीर नीला, हिमाङ्ग, सर हिलाना, खींचन या अकड़न, हिचकी, हाथ या हाथकी अंगुलीका आप-ही-आप हिलते रहना, सुस्ती वगैरह माथेमें खूनकी कमीसे पैदा हुए विकारके लक्षणमें कैलि-ब्रामेटम ३X विचूर्ण देना चाहिये। एकोनाइट ३, क्रोटोन ३, कैमोमिला ६, आर्सेनिक ३ या कैल्केरिया-ऐसेटिका ३ विचूर्ण, कार्बो-वेज ३०, इपिकाक ६,

फास्फो ६, चायना ३, विरेट्रम ६, क्यूप्रम ६, क्यूप्रम-आर्स ३x विचूर्ण, सिकेलि ६, सलफर ३०, रुबिनीका स्पिरिट-कैम्फर वगैरहकी कभी-कभी जरूरत पड़ सकती है। दूध पिलानेवालीको आरारोट वगैरह हलकी चीजें देनी चाहियें। पथ्य और दूसरी-दूसरी दवाओंके लिये "हैज़ा" और "बच्चेका अतिसार" देखना चाहिये। इस भयानक बीमारीकी पूरी-पूरी जानकारीके लिये हमारा "हैजा और उसकी चिकित्सा" का तीसरा परिच्छेद देखिये।

बच्चेका क्रिमि-दोष।—बच्चेके लिये क्रिमि बहुत ही नुकसान पहुँचानेवाली चीज़ है। पानीमें नमक मिलाकर पिचकारी देनेसे बच्चेकी छोटी क्रिमि अकसर पेटसे निकल जाती है। अगर इस उपायसे बीमारी अच्छी न हो, तो "क्रिमि" अध्यायसे दवा चुनकर बच्चेको सेवन कराना होगा। क्रिमिका दोष रहनेपर बच्चेको बोखार, हैज़ा वगैरह बीमारियाँ और रक्तामाशय बहुत बार कठिन और दुरारोग्य हो जाता है। इस बातको बच्चेके पालनेवालोंको याद रखनी चाहियें।

बच्चेकी पेशाबकी बीमारी।—किसी-किसी बच्चेके पेशाब वजन और बारमें इतना ज्यादा होता है, कि एक-एक बार सेर-दो-सेरतक हो जाता है और फी घण्टे एक बार या दो बार पेशाब होता है। इसलिये उन्हें पूरी तरहसे नींद नहीं आने पाती और शरीर एकदम रक्तसे शून्य पीला पड़

जाता है। ऐसिड-फास ३x—६ और इयुरेनियम नाइट्रिकम ३ विचूर्ण इस बीमारीकी महौषधि है।

नींदमें पेशाब।—स्नायविक उत्तेजना, क्रिमि-दोष वगैरह कारणोंसे मूत्राशयकी धारण-शक्ति घट जाती है और बच्चे नींदकी हालतमें अनजानमें ही पेशाब कर देते हैं। क्रिमिकी वजहसे होनेपर, साइना २x—२०० (खासकर यदि कुछ देरतक रखनेपर पेशाब दूधकी तरह हो जाये)। गहरी नींदमें होनेपर, बेलेडोना ६। दिनमें या रातमें पेशाब रोकनेमें अशक्त या पेशाब करनेके सपने देखनेपर, इक्विसिटम θ—६। दिनमें या रातमें पेशाब रोकनेमें अशक्त होनेपर, जेलसिमियम २x। पेशाबमें ज्यादा बदबू रहनेपर, बेञ्जोयिक-ऐसिड ३x। पेशाबमें यूरिक-ऐसिड रहनेपर—लाइकोपोडियम ६। मूलेन-आयल इसकी बढ़िया मशहूर दवा है। रातमें बच्चेको बीच-बीचमें जगाकर पेशाब करानेसे बिना किसी दवामें ही यह बीमारी अच्छी हो जाती है।

पेशाब बन्द।—तुरन्तके जनमे हुए बच्चेको अगर २४ घण्टेमें पेशाब न हो जाये, तो घबड़ाकर कोई दवा दे देनेकी जरूरत नहीं है; पर अगर छत्तीस घण्टेतक पेशाब न हो और बच्चा छटपट करता हो, तो ऐकोनाइट ३ दो-एक मात्रा देना होगा। बेलेडोना ६, कैन्थरिस ६ या ओपियम ३० की भी बीच-बीचमें जरूरत पड़ सकती है।

कुछ ज्यादा उम्रके बच्चोंको भी कभी-कभी पेशाब न होकर उनकी पेशाबवाली जगह फूल उठती है या गर्म हो जाती है।

और वह तकलीफसे छटपटाने लगता है। तलपेट (पेड़ू) पर गर्म पानीका सेंक देनेसे पेशाब हो सकता है। इससे फायदा न हो, तो "मूत्र-स्तम्भ" और "मूत्र-नाश" तथा "मूत्र-कृच्छ्रता" रोग देखना चाहिये।

खूनका पेशाब :—खसड़ा, चेचक, बवासीर, पथरी वगैरह बीमारियोंमें कभी-कभी खूनका पेशाब हुआ करता है। कैम्फर θ, कैन्थरिस ३x और मिलिफोलियम १x इसकी बढ़िया दवाएँ हैं। गिर जाने या चोट लगनेकी वजहसे खूनका पेशाब होनेपर, आर्निका ३x। काले खूनका पेशाब होनेपर, हैमामेलिस ३x सेवन कराना चाहिये।

बिगड़ा हुआ पेशाब

(क) पेशाबका रङ्ग बिगड़ना :—पेशाबका रङ्ग काला होनेपर, कोलचिकम ६। पेशाब गहरा काला होनेपर—एपिस ६ या टेरिबिन्थिना ६। पेशाबका रङ्ग खाकी होनेपर, एपिस ६ या टेरिबिन्थिना ६ या कैन्थरिस ६। पेशाब खूब गदला होनेपर—बेलेडोना ६, क्विनिनम-सल्फ ६, साइना ३—२००, लाइको १२, एसिड-फास ६ या टेरिबि ६। पेशाबका रङ्ग पीला होनेपर, सियोनोथस ३x। क्रिमिकी वजहसे सफेद रङ्गका पेशाब होनेपर, साइना ३x—२००। पेशाबका रङ्ग खड़िया घोला जैसा या दूधकी तरह होनेपर, साइना ३x—२००, ऐसिड-फास ६ या वायोला-ओडो ३x। पेशाब काले

रङ्गका होनेपर—ऐकोनाइट ३, एपिस ६, बेलेडोना ६, ब्रायो ६, कैन्थरिस ६ या टेरिबि ६। पीले रङ्गके पेशाबमें—स्ट्रियो-नोथस ३x, कैमोमिला ६ या केलि-फास १२x विचूर्ण। पेशाब धुमैला होनेपर, टेरिबि ६ या बेञ्जो-एसिड ६। पेशाब गाढ़ा होनेपर—बेञ्जो-एसिड ६, कैम्फर ३०, हिपर-सल्फ ६, मर्क-कोर ६ या फास्फोरस ६। काली आभा लिये या भूरे रङ्गका बहुत ज्यादा पेशाब और उसमें सफेद तलछटके लक्षणमें कार्बो-वेज ३०।

(ख) <u>पेशाबमें बदबू</u>—पेशाब सड़ी गन्ध-भरा होनेपर—बेञ्जो-एसिड ६, लाइको १२, नाइट्रिक-एसिड ३० या सिपिया ६। मछलीके धोवनकी तरह गन्ध होनेपर, यूरेनियम-नाइट्रि ३। लहसुनकी बदबू होनेपर, कूप्रम-आर्स ६। तेज़ गन्ध होनेपर नाइट्रिक-एसिड ३०, बेञ्जो-एसिड ६, बोरैक्स ६, किनिनम-सल्फ ६, सलफर ३०। बिल्लीके पेशाबकी तरह बदबू होनेपर, नाइट्रिक-एसिड ३० या बेञ्जो-एसिड ६। खट्टी गन्ध होनेपर कैल्केरिया-कार्ब ३० या ग्रैफाइटिस ३०। मीठी गन्ध होनेपर, टेरिबिन्थ ६।

(ग) <u>पेशाबका तलछट</u>—पित्त-मिले पेशाबमें, चेलिडो-नियम ३० या नेट्रम-सल्फ १२ विचूर्ण ("यकृतकी बीमारी" देखिये)। पेशाबके नीचे लाल तलछट जमता हो—बार्बे-रिस वल्गे ३x, मर्क-कोर ६, फास्फो ६, प्लम्बम ६, टेरिबि ६, कैन्थरिस ६ या लाइकोपोडियम १२ ("लाल रङ्गका पेशाब" देखिये)। पेशाबमें काफीके चूरकी तरह कुछ जमनेपर,

टेरिबिन्थ ६ या हेलिबो ३x। पेशाब गोंदकी तरह होनेपर, एसिड-फास ६, कैन्थरिस ६, पल्सेटिला ३० या सार्सा ३०। पेशाबमें लीथिक-एसिड या ईंटकी चूरकी तरह तलछट जमनेपर, लाइकोपोडियम ३०, नाइट्रिक-एसिड ३० या नक्स-वोमिका ३० ("मूत्र-पथरी" देखिये)। सफेद तलछट जमनेपर और उसके साथ पीठमें दर्द रहनेपर, आक्जैलिक-एसिड ६ या ग्रैफाइटिस ३०।

बच्चेका यकृत।—बार-बार बोखार (खासकर रातके आखिरी भागमें बोखार) होकर अगर बच्चा दुबला होता जाये और उसमें यकृतकी गड़बड़ी दिखाई दे और देखते-देखते यकृत बढ़ उठे और कड़ा हो जाये, इसके बाद भोजनमें अरुचि, पेट बढ़ा हुआ, कब्जियत या पतले दस्त (मलका रङ्ग सफेद या काला अथवा आम या खून-मिला), कामला, सब शरीर पीला हो जाना वगैरह कुलच्छण पैदा हो जाये, तो समझना चाहिये, कि उसका यकृत खराब हो गया है। अगर दो वर्षसे भी कम उम्रके लड़केको यह बीमारी हो जाये, तो बड़े डरकी बात है और बड़ी सावधानतासे उसका इलाज कराना चाहिये। **कैल्केरिया आर्सेनिकम ३०** इस बीमारीकी प्रधान दवा है। कब्जियतमें—सलफर ३० या कैल्के-कार्ब ६। पतले दस्त आनेपर—पोडोफाइलम ६। यकृत कड़ा रहनेपर—मर्क-आयोड ३ या कैल्के-कार्ब ६। कामलामें—मर्क ६। मुँहमें घाव होनेपर—नाइट्रिक-एसिड

६। कष्टकर खाँसीमें—फास्फोरस ६। बच्चा बहुत दुबला हो जानेपर—आर्ज-नाई ६। सूजन (शोथ) होनेपर—आर्स ६, एपिस ३ देना चाहिये। सलफर ३०, नक्स-वोमिका ६, ब्रायो-निया ६ वगैरह दवाओंकी कभी-कभी ज़रूरत पड़ सकती है। पथ्यकी तरफ ज्यादा नज़र रखनी चाहिये। दूध पीना एकदम मना है। पानीकी बार्ली देना चाहिये। दूध पिलानेवालीको अगर अम्लकी बीमारी न हो या स्तनका दूध बिगड़ गया हो, तो बीच-बीचमें उसको थोड़ा-थोड़ा दूध पीने देना चाहिये। गायके छोटे बच्चेका गोबर या पेशाब गर्मकर यकृतपर सेंक देना अच्छा है। "यकृत-प्रदाह", "कामला", "शोथ" और "बच्चेका कामला" देखना चाहिये। अगर पूर्णिमा और अमावस्याकी बीमारी बराबर बढ़ती रहे, तो साइलिसिया ६—२०० देना चाहिये।

बच्चेको या उसको दूध पिलानेवालीको चूनेका पानी न पिलाया जाये और दूध पिलानेवालीको भी पानके साथ चूना न खाना चाहिये।

बच्चेका रोना।—बच्चा रोता हो, तो समझ लेना चाहिये, कि उसे कोई बीमारी या किसी तरहकी तकलीफ़ है। इसको जाँचना उचित है, कि बच्चा किस वजहसे रो रहा है। रोते वक्त अगर कानपर हाथ लगाये तो कानकी बीमारी, मुँहमें अंगुली डालकर रोता हो, तो दाँत निकलनेकी तकलीफ़, घुटने सिकोड़कर पेटपर रखता हो, तो पेटका ऐंठना; कर्कश स्वरसे

रोता हो तो बोलनेवाले यन्त्रको तकलीफ़ ; खाँसते-खाँसते रो पड़े तो वक्षस्थलकी बीमारी ; करुण स्वरसे फूट-फूटकर रोता हो तो फिफड़ेकी बीमारी हो गयी है, ऐसा समझना चाहिये। कभी-कभी चूँटी काटनेकी वजहसे भी बच्चा तकलीफ़से व्याकुल होकर एकाएक रो पड़ता है।

गर्म सूखा शरीर और बहुत बेचैनी तथा नींद न आनेके लक्षणमें ऐकोनाइट ३x। सर गर्म, आँखें और मुँह लाल ; एकाएक चौंक उठनेके लक्षणमें, बेलेडोना ६। बच्चेका चिड़-चिड़ा स्वभाव, बराबर रोते रहना, गोदोमें चढ़कर घूमनेकी इच्छा करना, पेटमें ऐंठनकी वजहसे घुटनेको सिकोड़े रहना और बोखार रहनेपर, कैमोमिला ६ (खासकर दाँत निकलनेके समय बच्चा नाना प्रकारकी बीमारियोंके कारण बराबर रोया करता हो, इस अवस्थामें)। कैमोमिलासे फ़ायदा न हो, तो रुबिनीका कैम्फ़र दो-एक बून्द दिया जा सकता है। स्नायविक उत्तेजनाकी वजहसे नींद न आती हो, तो काफिया ६। कब्जियत या पेट फूलनेकी वजहसे रोता हो, तो नक्स-वोमिका ३०। पेटकी शूल-वेदनाकी वजहसे बच्चा रोता और बेचैन रहता हो, तो मैग्नेशिया-फास ६x विचूर्ण (गर्म पानीके साथ) सेवन कराना चाहिये। बहुत दिनोंतक न नहलानेकी वजहसे नींद नहीं आती, इस वजहसे भी बच्चा रोता है। इस अवस्थामें बीच-बीचमें तेल लगाकर बच्चेको नहला देना चाहिये। रोना बन्द करनेके लिये अफ़ीम मिली कोई दवा बच्चेको कभी न

खिलाई जाये। ऐसी दवाएँ देनेसे बच्चा सो अवश्य जाता है, पर इसका फल खराब अवश्य होता है।

बच्चेका प्रदर।—सर्दी लगना, गन्दे रहना, क्रिमिका दोष रहना वगैरह कारणोंसे छोटी बालिकाओंको प्रदर हो जाता है। कैल्के-कार्ब ६, सिपिया ६, साइना ३x, इस बीमारीकी प्रधान दवाएँ हैं। ज्यादा हालके लिये इस ग्रन्थका "श्वेत-प्रदर" देखना चाहिये।

बच्चेकी बेक़ायदा बाढ़।—बच्चा कभी बेतरह लम्बा होता है या सिर्फ उसकी छातीकी लम्बाई बढ़ती है। सदा सोनेकी प्रबल इच्छा रहती है, पचानेकी और याददाश्तकी ताक़त घट जाती है, चल नहीं सकता, दुबलापन, साँसमें कष्ट, कलेजीका धड़कना वगैरह उपसर्ग दिखाई देते हैं। पाइनस सिलवेस्ट्रीस θ—३ (खासकर नीचेका अङ्ग दुबला और घुटने कमजोर होनेपर, ग्रन्थि-वात, खुजलाहट वगैरह लक्षणमें) सलफर ३० (हाथ-पैर लिक-लिक, पतले और खेलने या चलनेमें असमर्थ होनेपर), कैल्के-फास १२ विचूर्ण, कैल्के-कार्ब ३० और एबिस-कैन ३x इस रोगकी बढ़िया दवाएँ हैं।

बच्चेका दुबलापन।—बच्चा दिनोंदिन सूखता जाता हो—सलफर ३०—२००, कैल्के-फास ६x—३० विचूर्ण, एसिड-नाई ६, कैल्के-कार्ब ३०, ऐब्रोटेनम ३—२००, नेट्रम-म्यूर ३x, साइलिसिया ६—३० वगैरह दवाएँ फायदेमन्द हैं।

साधारण स्वास्थ्यके नियम पालन करने चाहियें। थोड़ी और हलकी चीजें खानेको देनी चाहियें।

सुखण्डी (Marasmus)।—अच्छी तरह न पचनेकी वजहसे बच्चेका शरीर पुष्ट न होकर सूखता जाये और शरीरकी स्वाभाविक गर्मी (९८'४) से घटी रहे तो समझना चाहिये, कि सुखण्डीकी बीमारी हो गयी है। पहले सलफर ३० इसके बाद कैल्केरिया-कार्ब ३० इसकी उत्कृष्ट दवा है। बच्चा खाता भरपूर हो, पर दुबला होता जाता हो, तो ऐब्रोटेनम ३० अच्छा है। "धातु-दोषकी दवाओंमें" से दवाएँ चुनकर कभी-कभी प्रयोग करनी चाहियें। पुष्ट भोजन, शुद्ध हवाका सेवन, शुद्ध सरसोंका तेल बदनमें कुछ गर्मकर मालिश करना, अच्छे मकानमें रहना वगैरह स्वास्थ्यके नियम पालन करने चाहियें।

धवल रोग (Leucoderma)।—इसे बहुतसे "श्वेत कुष्ठ" भी कहा करते हैं; परन्तु वास्तवमें यह कुष्ठ या किसी तरहका चर्म-रोग नहीं है। इसलिये रोगीको अलग रखने या घृणा करनेकी कोई जरूरत नहीं है। वास्तवमें स्वाभाविक रञ्जक (pigment) की कमीकी वजहसे किसी-किसीका चमड़ेका रङ्ग बिगड़कर दूधकी तरह जब सादा दिखाई देने लगता है, तब हमलोग कहते हैं, कि इसे "धवल" रोग या सफेद कुष्ठ हो गया है। यद्यपि इसके निदान-तत्वका अभीतक पता नहीं लगा है, तथापि बच्चेकी सब बदनकी (या

सिर्फ स्नायुओंकी) कमजोरी ही इसका असली कारण है, इसमें कोई सन्देह नहीं है। अकसर आठ बरससे कम उम्र-वाले बच्चेको यह बीमारी होती देखी जाती है। हाथ, गलेके पीछे, चेहरा और छातीके ऊपर पहले छोटे-छोटे सादे दाग होते दिखाई देते हैं। इसके बाद ये दाग सादे चकत्तेके रूपमें हो जाते हैं। अन्तमें ये चकत्ते आपसमें मिलकर एक बड़े आकारके छालेकी तरह दिखाई देते हैं। पहले ही कहा गया है, कि यह कोई चर्म-रोग नहीं है। बच्चेके सब शरीरका स्वास्थ्य खराब होने या स्नायुमण्डलकी क्रियामें रुकावट पड़नेकी वजहसे उसका चमड़ा दूधकी तरह सफेद हो जाता है। इसलिये जो दवाएँ बच्चोंके सब बदनके स्वास्थ्य और स्नायु-मण्डलके ऊपर काम करती हैं, वे ही सब दवाएँ इस रोगमें भी फायदा करती हैं। चर्म-रोगकी दवाएँ देकर कोई फायदा नहीं हो सकता है। आर्सेनिक-ऐल्बम ३० या आर्सेनिक-आयोड ६x विचूर्ण कई सप्ताह व्यवहार करनेपर बीमारी धीरे-धीरे अच्छी होने लगती है, परन्तु हमें मालूम होता है कि आर्स सल्फ-फ्लेवस ६X विचूर्णके सेवनसे ज्यादा फायदा हो सकता है। यदि बहुत दिनोंतक आर्सेनिक देनेपर भी कोई फायदा न हो (खासकर छातीका धड़कना, साँस लेने और छोड़नेमें रुकावट वगैरह सुस्तीके लक्षणोंमें) तो फास्फोरस ६ के प्रयोगसे बहुतसे मौकेपर आशाके अनुसार फायदा होता है। सोये रहनेपर आराम मालूम होना, नींद न आना, (खासकर रातमें तीन बजेके बाद), मानसिक अवसन्नता,

स्मरणशक्ति गायब हो जाना वगैरह लक्षणोंमें जिङ्क-फास १x—३x विचूर्ण। हिस्टीरिया रोगवाली औरतोंके धवल रोगकी, इग्नेशिया ६ अच्छी दवा है। सलफर ३०, थूजा ६, कैल्केरिया-कार्ब ३०, कैल्केरिया-फास ६ विचूर्ण, ऐण्टिम-टार्ट ६, नाइट्रिक-एसिड ६, X-Ray 30, जिङ्कम ६ और रसटक्स ६ भी कभी-कभी फायदा करते हैं। किसी चीज़के बाहरी प्रयोगकी जरूरत नहीं है (पर अखरोटका गूदा धवलपर घसनेसे, फायदा हो सकता है), हमलोग बुचकी दाना और पीपलकी जड़ गायके छोटे बच्चेके पेशाबके साथ पीसकर लेप लगाकर एक बच्चेको आराम कर चुके हैं; पर आठ वर्ष बाद उसे फिर धवल रोग हो गया था, जो उपयुक्त होमियोपैथिक दवाओंके सेवनसे आराम हो गया।

बच्चेको अच्छी तरह भूख लगे और पचानेकी ताकत बढ़ती रहे, इसका बन्दोबस्त करना चाहिये। दूध, काडलिवर आयल, पेट्रोलियम-इमलशन, पके हुए पुष्ट करनेवाले फल और दूसरी-दूसरी पुष्टकर चीजें (जो स्नायु और खून पैदा करती हों) खाना और बढ़िया आब-हवावाले पहाड़ी स्थान या समुद्रके किनारेकी जगहमें कुछ दिनोंतक रहना अच्छा है। रोगवाले समूचे शरीरमें गङ्गाकी मिट्टी लगाना और गङ्गाका नहाना भी फायदा करता है। मिठाई, अँचार वगैरह खट्टी चीजें और जो पदार्थ पचनेकी क्रियामें बाधा पहुचाते हों, उन्हें छोड़ देना चाहिये (Dr. Fisher's Diseases of Children देखिये)।

कटे ओंठ।—किसी-किसी परिवारमें लगातार छिन्नोष्ठ या कटे ओंठ (hare-lip) पैदा होता है। आगे होनेवाले बच्चोंको इससे बचानेके लिये गर्भावस्थामें तीनसे सात महीनेतक गर्भिणीको कैल्क-सल्फ १२x विचूर्ण रोज़ सवेरे और शामको एक-एक ग्रेन खिला देना चाहिये।

ऐसे ओंठ पैदा होनेपर कोई-कोई अभिभावक नश्तर लगवा देते हैं। ऐसे मौकेपर (नश्तरका जखम सुखानेके लिये) कैलेण्डुला तेल लगानेसे खूब फायदा होता है।

तोतलाना (Stammering)।—स्ट्रैमोनियम ३ या हायोसायमस ३ कुछ दिनोंतक व्यवहार करनेपर फायदा हो सकता है। गुड़, मिठाई खाना और हमेशा क्रोधी बने रहना मना है। सवेरे, शामको जीभ धोना और बोलनेके वक्त मार्बल गोली या छोटे पत्थरका टुकड़ा जीभपर रख देना फायदेमन्द है। एक पत्रमें इसके विषयमें लिखा गया है :—

(To The Editor "I. D. News.")

Sir,—With reference to the rules for stammering cure appearing in the "Facts" column of your to-days issue, I cannot help suggesting the following rules which might help to cure stammering. The rules are as follows :—(1) Molasses and sweetmeats should be avoided. (2) At the time of speaking a "Marble" should

be kept on the tongue. (3). Anger should be given up. (4). Impurities and mucus of the tongue should be cleansed properly every morning and evening.

Kaikala.	Yours etc.
Jan. 19.	Bimala Charan Dutta.

लँगड़ाकर चलना (Limping)।—गिर जाने या चोट लगनेकी वजहसे लँगड़ाकर चलनेपर, आर्निका ३। कमजोरी या धातुगत दोषसे लँगड़ानेपर—सलफर ३० या कैल्केरिया-कार्ब ३० देना चाहिये।

बालास्थि-विकृति (Rickets)।—बच्चेकी हड्डीमें चूनेका भाग कम रहनेपर हड्डियाँ कायदेसे न गठित होकर धीरे-धीरे कोमल, बढ़ी हुई, टेढ़ी और कमजोर हुआ करती हैं। पतला दस्त, माथेपर पसीना, समयपर दाँत न निकलना, हाथ-पैरकी गांठें मोटी और दर्द-भरी, शिरकी हड्डी फूलकर बड़ी होना, छातीके पंजरेकी सन्धियाँ ऊँची होना, मांस-पेशियाँ कोमल, हड्डियाँ अपुष्ट, परिश्रम न कर सकना और पीठकी रीढ़ टेढ़ी हो जाना—इस बीमारीके प्रधान लक्षण हैं। कैल्केरिया-फास १२x विचूर्ण इस रोगकी प्रधान दवा है (खासकर दुबले और रक्त-हीन बच्चोंके लिये)। मोटे-ताजे बच्चोंके लिये कैल्केरिया-कार्ब ६—३०। दुबले

बच्चोंके लिये आर्सेनिक ६ या आर्सेनिक-आयोड ६x और अच्छी तरह पोषण न होनेकी वजहसे धूमल रोगके साथ रिकेट होनेपर, फास्फोरस ३—३० खूब फायदा करता है। साइ-लिसिया ६, एसिड-फास ६ या सलफर ३० भी कभी-कभी फायदा करते हैं। जिस जगहकी मिट्टी दूधिया हो, वहाँ बच्चेको वायु परिवर्त्तनके लिये भेजना अच्छा है। अच्छे दूध और तरकारीका भी प्रबन्ध रखना जरूरी है।

धातु-दोष* या कौलिक पीड़ा।—नीचे लिखी तीन बीमारियाँ बहुतसे मौक़ोंपर बाप-माँसे ही बच्चेमें आती हैं :—(क) गुटिका रोग। (ख) गण्डमाला। (ग) उपदंश।

(क) गुटिका-युक्त-धातु (Tuberculosis)।—फेफड़ा मस्तिष्क, आँत आदि बच्चेका कोई भी शारीरिक यन्त्र या तन्तुमें "गुटिकाएँ" (Tubercles) पैदा हो जाती हैं। ये गुटिकाएँ धुमैली या पीले रङ्गके पनीरके टुकड़े जैसी दिखाई देती हैं और उनमें जीवाणु (Tuberculous bacilli) पाये जाते हैं। फेफड़ेमें गुटिका होनेपर "क्षयकास" (Phthisis) रोग पैदा होता है। मस्तिष्कमें होनेपर "मस्तिष्क-झिल्ली-प्रदाह (Tubercular Meningitis)" रोग होता है इत्यादि।

---

* हैनिमैनके बतलाये हुए तीनों धातुदोष, यथा सोरा (Psora), उपदंश (Syphilis) और प्रमेह (Sycosis) के लिये परिशिष्ट "ख" देखिये।

फास्फोरस ६ इस रोगकी प्रधान दवा है। बच्चा एकदम सुस्त या रक्त-हीन हो, तो कैल्केरिया-फास्फोरस ६x चूर्ण देना चाहिये। मुँहसे खून आये या नाकसे खून निकले, ज्वर, ऋतुकालमें रजः-स्राव न हो वगैरह लक्षणोंमें, फेरम-फास ६x उपयोगी है। बोखार, पसीना, पतले दस्त, खाँसी (शामको और सवेरे बढ़ना), फेफड़ेमें तेज़ दर्द (हिलने-डोलनेसे बढ़ना) वगैरह लक्षणोंमें आर्सेनिक ६ सेवन कराना चाहिये। हिपर-सलफर ६, साइलिसिया ३०, सलफर ३०, लाइकोपोडियम १२ और आयोडियम ६ की कभी-कभी जरूरत पड़ सकती है। बैसिलिनम और पाइरोजेनके प्रयोगसे डाक्टर फियरको कोई लाभ नहीं मालूम हुआ।

पुष्ट चीजें खाना, खुली शुद्ध हवाका सेवन, साफ़-सुथरे प्रशस्त घरमें रहना वगैरह स्वास्थ्यके नियम पालन करने चाहियें।

(ख) **गण्डमाला** (Scrofula)—यह ऊपर कहे हुए गुटिका रोगको एक खास अवस्था है। इस बीमारीमें शरीरकी गांठें (खासकर गर्दनकी ग्रन्थियाँ) फूलकर दर्द पैदा होता है। अकसर पेटकी बीमारी या सर्दी हुआ करती है और आँख तथा कानसे भी पीव बहता है। कैल्केरिया-कार्ब ३०, आयोडियम ३० या नेट्रम-सल्फ १२x विचूर्ण—१०० इसकी प्रधान दवा है। "गुटिका" रोगकी दवाओंमेंसे दवाएँ चुनकर सेवन और पथ्य आदि नियम पालन करने चाहियें। "गण्डमाला" देखिये।

(ग) शिशु-उपदंश (Infantile Syphilis)।—पिता या माताके वंशमें उपदंशकी बीमारी ("उपदंश" देखिये) रहनेपर, सन्तान पैदा होते ही या कई दिन बाद इस बीमारीमें नीचे लिखे लक्षण प्रकट होते हैं :—बच्चा कमजोर होता जाता है और बराबर रोता है, साँस अच्छी तरह नहीं लेता और शरीरपर खुजली वगैरह हो जाती है। बच्चेके शरीरसे इस उपदंशका ज़हर अगर किसी तरह दूसरेके शरीरमें घुस जाता है, तो उसे भी बीमारी हो जाती है। मर्क-सोल ३० इसकी सबसे बढ़िया दवा है। खुजली और जखम ज्यादा होनेपर, नाइट्रिक-एसिड ३०। आरम-मेट ३०, थूजा ३०, सिफिलिनम ३०, बैडियेगा ३, सलफर ३० को भी बीच-बीचमें जरूरत पड़ सकती है। ("जन्मगत उपदंश" देखिये)।

धातुगत उपसर्ग और दवाएँ

जिनके शरीरसे सहजमें ही रस-रक्त आदि निकल पड़ता हो, उनके लिये—**फास्फोरस**।

जिनकी आँखें, नाक या शरीरके किसी छेदसे सहजमें खूनका स्राव होता हो, उनके लिये—**क्रोटेलस**।

किसी बीमारीकी वजहसे रोगी एकदम सूखा और दुबला होनेपर—**आर्जं-नाई**।

कुबड़े होकर बैठना, झुककर चलना वगैरह लक्षणोंमें—सलफर।

सुस्त करनेवाली किसी बीमारीके बहुत दिनोंतक भोगनेके कारण जीवनी-शक्ति बहुत कम पड़ जानेपर—कार्बो-वेज।

सूखे दुबले-पतले बालकोंके लिये—ऐल्यूमिना।

सूखी दुबली-पतली बालिकाओंके लिये—सिपिया।

पुरानी बीमारी भोगनेपर जिसे सर्दी लगती हो या पतले दस्त आने लगते हों, उनके लिये—एसिड-नाई।

कच्छु (Psora) धातु-ग्रस्त बच्चोंके लिये—सलफर प्रधान दवा है।

उपदंश धातु-ग्रस्त बच्चोंके लिये—मर्क प्रधान दवा है।

प्रमेह धातु-ग्रस्त बच्चोंके लिये—थूजा प्रधान दवा है।

उपदंश और मर्करी (पारा) के अपव्यवहारसे पैदा हुई बीमारी-वाले मनुष्योंके लिये—कैलि-आयोड या आरम।

ऋतु-परिवर्त्तनके समय बच्चोंकी बीमारीका बढ़ना।—आँधी-पानीके पहले बच्चेकी कोई बीमारी बढ़नेपर, रोडोडेण्ड्रन ३। सर्द तर हवामें रोग बढ़नेपर, रसटक्स ६। रोगी ऋतु परिवर्त्तन बिलकुल ही पसन्द न करता हो या अन्धड़-पानीमें रोग बढ़नेके लक्षणमें रैननक्युलस-बल्ब ३।

तर हवा या बरसातमें बीमारी बढ़नेपर—डाल्कामारा ६। गर्मीके दिनोंके अतिसारमें—आइरिस ६; कुहासा या अन्धड़ तूफानवाले दिनोंमें रोग बढ़नेपर—जेलसिमियम ३। वज्रपातके पहले बीमारी बढ़नेके लक्षणमें—ऐगरिकस ३।

"अकौता" "दमा" "क्रिमि" "खसड़ा" "चेचक" वगैरह रोगोंके लिये इस ग्रन्थमें उन-उन स्थानोंपर लिखी हुई ये बीमारियाँ देखनी चाहियें।

बच्चेकी प्रकृति और उपसर्गके अनुसार दवाएँ

(बाल-रोगमें—कैल्क-कार्ब, जेल्स, विरे-ऐल्ब, थूजा, टियुक्रियम, नक्स-मस्केटा, साइना, स्ट्रैमो, एसिड-सल्फ, स्पञ्जिया, साइक्यूटा, कैलि-ब्रोम, मर्क, पल्स, सैबाडिला, इपिकाक, सिलिका, लाइको वगैरह दवाएँ खासकर प्रयोग होती हैं)।

अचेतन अवस्था, इच्छा न रहनेपर भी एक हाथ और एक पैर हमेशा हिलाते रहता है—ऐपोसाइनम।

" " केवल अङ्गोंके इशारेसे बच्चा अपनी जरूरत बताये—स्ट्रैमो।

" " आँखें निश्चल—ओपि।

अचेतन अवस्था, प्रलाप, बेचैनीसे लोटना, शरीर फड़कना—कूप्रम।

„ „ जब ऊँचे स्वरसे पुकारा जाये, तब आँख खोले, बेवकूफकी तरह देखा करे और धीरे-धीरे जवाब देता हो—फास्फो-एसिड।

„ „ टकटकी लगा, मुँह फाड़े देखता हो, औंघाई, किसी सवालका जवाब न देना—हायोस।

„ „ के साथ मस्तिष्क आक्रान्त होना—कूप्रम।

अर्बुद और रक्त बच्चेके मस्तिष्कके पार्श्व-कपालकी हड्डीपर—कैल्के- क्युोर।

आँसू, चार महीनेके बच्चेकी आँखोंमें पानी एक बार भी न दिखाई देनेपर समझना चाहिये, कि इसे कोई गहरी बीमारी हुई है।

आक्षेप (अकड़न), बहुत हँसने या खेलने बाद—काफिया।

„ अमावस्या और पूर्णिमाको—सिलिका।

„ ग्यारह बजेके समय दूध पीने बाद पैदा होनेपर—कैलेण्डुला।

„ ठीक हर दस दिनके अन्तरपर—लैके।

„ माथेका दर्द, दाँत निकलने या पेटकी गड़बड़ीसे—स्कूटेलेरिया।

„ के समय या पहले चिल्लाना—ओपियम।

„ के साथ रोना या हँसना—इग्नेशिया।

चोट देना (आरामके लिये), चेहरा या माथेपर हाथको मुट्ठीसे—आर्सेनिक ।

चोट देना, दीवार या सहनपर सर पटकना—रसटक्स ।

उत्साह-हीन, सब विषयोंमें उदासीन—फास्फो-एसिड ।

कड़ा सूखा मल और सङ्गम-इन्द्रियकी चारों ओर फुन्सियाँ—मेडोरिनम ।

कानमें हमेशा अंगुली डालना—किनिन-सल्फ ।

काँपना, रोने और चिल्लानेके साथ सम्पूर्ण बदन काँपना—इग्नेशिया ।

रोनेके समय (क्रोध होनेपर भी) बच्चेकी साँस बन्द होनेपर—कूप्रम ।

बदबूदार रस-रक्त-पीव निकलनेके साथ बच्चेकी आँखोंमें जखम—कैलि-सल्फ ।

काटना और दाँत कड़मड़ाना (मस्तिष्क-झिल्ली-प्रदाह रोगमें) बेलेडोना ।

खाँसीका प्रकोप, क्रोध आनेपर—ऐण्टिम-टार्ट ।

खाँसनेके समय या खाँसनेके कुछ ही पहले बच्चा चिल्लाता हो—आर्निका ।

खाँसना और जम्हाई लेना—क्रमसे—ऐण्टिम-टार्ट ।

काममें तैयार न हो, फुर्ती नदारद, सुस्त—लाइको ।

किसी कड़ी चीज़को काटनेकी इच्छा—फाइटो ।

कोनेमें छिपता है, चोट समझे और हरएक विषयमें भूल करे—कैम्फर ।

चिड़चिड़ा, जिन चीज़ोंको तोड़-फोड़कर फेंक दिया है, उनके लिये रोना—स्टैफिसेग्रिया।

चूमनेपर बच्चेका प्रेम दिखानेके लक्षणमें—पल्स।

चूनेके पानीके अपव्यवहारसे अर्थात् ज्यादा दिनोंतक उसके पीनेकी वजहसे पैदा हुई पाचन-क्रियाकी गड़बड़ी होनेपर—कैल्के-कार्ब २००—१०००।

जननेन्द्रिय धो डालनेपर भी खट्टी गन्ध मालूम होना—सैनिक्युलस।

जीभ और मुँहमें बहुत छाले, चेहरेपर बहुत ही लाल फुन्सियाँ इयुपेटोरियम, ऐरोमेटिका।

झूलेसे उठाने, स्तनका दूध पिलाने या रोनेके बाद बच्चेको साँसकी तकलीफ़ पैदा होनेपर—कैल्के-फास।

तलपेट वायु-भरा—सेन्ना।

तेज़ दर्दके साथ अजीर्ण, एकाएक चिल्लाना, पीछेकी ओर सर झुकाना—बेल।

दाँत पीसता और काटता हो—बेल।

देरसे बातें करना सीखनेपर—नेट्रम-म्यूर।

नहाना, ठण्डे पानीसे नहाना चाहता हो, परन्तु गर्म पानीमें कोई उज्र नहीं करता हो—ऐण्टिम-क्रूड।

„ या धुलाना न चाहता हो, माथेमें फोड़ा होनेकी वजहसे चिल्लाता हो और हाथ-पैर पटकता हो—हिपर।

„ या धोना बिलकुल ही पसन्द न करे—ऐमोन-कार्ब, ऐण्टिम-टार्ट, सलफर।

नाक बन्द होकर दूध न पी सकता हो—कैलि-बाई, नक्स-वो।
" " " मुँहसे साँस ले और विचित्र आवाज़ होती हो—लाइको।

नाकसे लाल श्लेष्मा निकलना—कैल्क-कार्ब, सल्फ (नयी अवस्थामें), सिलिका (पुरानी अवस्थामें)।

नाक और आँखें, नींदसे उठते ही रगड़ता हो—सैनिक्यूलस।

नाभीसे पानीकी तरह और लाल आभा लिये स्राव निकलना—ऐब्रोटेनम, कैल्क-फास।

नाभी बाहर निकलना, लाल और जखम-भरी होना, बहुत रोना—थूजा।

" से रस, पीव आदि निकलना, नाल काटने बाद—कैल्क-फास, दूध-चीनी।

निजी हाथकी मुट्ठी काटता हो, मल कड़ा और सहजमें ही बाहर न निकलता हो—ऐकोन।

नींद—आध मिनट बाद ही जाग उठना, चौंक उठना या चिल्लाना—इपिकाक।

नींदकी हालतमें लोटना और रोना—कैलि-कार्ब।

नींदके समय रोना (क्रोधी और चिड़चिड़ा होने बाद) और जगानेपर भयसे व्याकुल होनेके लक्षण दिखाई दें—ज़िङ्क।
" " रोना, चौंक उठना, उछल पड़ना, करवट बदलना—ज़िङ्क।

नींदके समय रोना, अकसर चबाता हो, घूंट लेता हो और थूक निगले—कैल्के-कार्ब (ब्रायोनिया)।

„ „ चिल्ला उठे—साइना।

„ „ (खासकर रातमें), जोरसे चिल्लाना, क्या तकलीफ़ होती है ? पूछनेपर कुछ न बोले—एपिस।

नींद, दिन-रात न सोये, पर नींदके झोंक लेता रहे, चिड़-चिड़ाये, रोता हो—सोरिनम।

„ झुलानेपर आती हो, झुलाये बिना नींद न आये—साइना।

„ में अस्पष्ट बोलना, रोना और बुदबुदाकर चौंक उठना और उछल पड़ना—सलफर।

„ से चिड़चिड़ाकर उठ बैठना—आर्सेनिक, कैलि-कार्ब, लैके, लाइको।

निद्राहीन और अनस्थिर, इसके बाद नींद लगना—काफिया, ओपि।

नींद, दिन-रात नींद न आये—सोरिनम।

„ चिड़चिड़ाता हो—काफिया।

„ नींदके समय शरीर फड़कता हो, चिल्लाता, काँपता हो और डरकर जाग उठता हो—हायोस।

प्रति बार वायु निकलते समय मल निकलता हो—ओलि-ऐण्डा।

पतली चीज़ पीनेके समय साँस रुकती हो, परन्तु कड़ी चीज़ सहजमें ही निगल जाये—कैलि-ब्रोम।

पानी पीना, उत्सुक और जल्दी—ब्रायोनिया।

पानी या दूध पीनेके समय बच्चा वह बर्त्तन दाँतसे पकड़ लेता हो—कूप्रम।

पिता या माताके वंशमें उपदंश या प्रमेह रहनेकी वजहसे बच्चेका स्वास्थ्य भङ्ग होनेपर—स्टैफिसेग्रिया।

पेटमें शूल-वेदना, बराबर जारी रहना—जेल्स।

" " कब्जियतके साथ—सिलिका।

" " खानेके बाद ही—ग्रैफाइटिस।

" " पेटके दर्दके साथ वायु पैदा होना—सेन्ना।

" " पेशाबके वक्त—कैसो।

" " रातमें, पर दिनभर न हो—जेलापा।

" " जभी खानेकी चेष्टा करे और दूध पीनेके समय रोता हो—कैल्के-फास।

" " की वजहसे रोना, धायके कन्धेपर अपना पेट रखकर थोड़ा दबा रखने या धायके कन्धेपर चढ़कर घूमनेपर आराम मालूम होना—स्टैनम।

" " के साथ पेड़ूमें बेंगकी बोलीकी तरह आवाज़के लक्षणमें—थूजा।

" " दिनभर अच्छा रहकर ५ बजे शुरू हो, तलपेट कड़ा—कैलि-ब्रोम।

पेटमें शूल-वेदना, बढ़ना, हाथ-पैर खुले रहनेपर—रियुम।

पेशाब आक्षेपिक, थोड़ी उत्तेजना, पर बून्द-बून्द पेशाब होना—स्ट्रैमो।

„ करनेके पहले रोना, बार-बार पेशाब होना, गर्म और कड़वी गन्ध—बोरैक्स।

„ करनेके पहले डरना—ऐलम्।

„ करनेके पहले चिल्लाये और रोए—पेशाब हो जानेके बाद आराम मालूम होना—लाइको।

„ करनेके पहले या पीछे चिल्लाना—बोरैक्स, लैके, सार्सापैरिला।

„ मूत्राशयमें भरा हो, पर न होता हो; माताके क्रोधित होने बाद दूध पिलानेकी वजहसे—ओपि।

„ बन्द या तकलीफ़से होना—ऐकोन, एपिस।

„ के समय गों-गों शब्द, मानो पाखाना हो रहा है, पर सिर्फ़ वायु निकलना—कैलेण्डुला।

बच्चा, रातमें गहरी नींदमें जाग उठता है और डरकर चिल्ला उठता है—कैलि-ब्रोम, कैलि-फास।

बच्चेको रातमें डर मालूम होना—कैलि-ब्रोम।

बच्चेका गन्दा रहना; कानके पीछे और पुट्ठेमें लसदार तर खुजली—ग्रैफाइटिस।

बच्चा बेचैन—नींद न आना, गरमी और बदनका कपड़ा हटा दे—सिकेलि।

बच्चा बेचैन—इस करवट, उस करवट छटपटाता हो, बहुत कमजोर, रातको दो पहरके बाद बेचैनी बढ़ती हो—आर्सेनिक।

" " शामके ६ बजेसे सवेरे ३ बजेतक; शरीर मलने, दबाने या खाटपर लोटनेसे थोड़ी तन्द्रा होती हो—क्रियोज़ोट।

" " रातभर इधर-उधर लोटना; थोड़ा-थोड़ाकर बार-बार पानी पीना—सैनिकुत्रलस।

बच्चेका आमवात—फास।

" उदास भावसे पड़े रहना और कभी लम्बी साँस लेना, कभी काँपते हुए हाथोंसे सर छूना—हेलिबोरस।

" किसी तरह क्षणभर भी सन्तुष्ट न रहना—साइना।

" किसी तरह दूध पिलानेवालीको न छोड़ना, अलग होनेके डरसे उससे चिपट रहना—कूप्रम।

" क्रोधी, जबतक न खाये, तबतक उत्कण्ठित रहता हो, खाने बाद, कुछ देर शान्त रहे, अच्छा भोजन मिलनेपर भी बच्चा दुबला होता जाये—आयोड।

" गोदमें सोना चाहे, बिछावनपर न सोता हो—कूप्रम।

बच्चेका चिड़चिड़ा मिज़ाज, पागल-जैसा—मेरम-वेरम।

" " " किसीका अपनी ओर देखना या छूना पसन्द न करता हो—ऐण्टिम-क्रूड।

बच्चेका चिड़चिड़ा मिज़ाज, किसी तरह सन्तुष्ट न हो—एपिस।
बच्चा चिड़चिड़ा, कुछ बोलनेसे ही रञ्ज हो—आर्सेनिक, कैमो, जेल्स, आयोड, नेट्रम-म्यूर, नेट्रम-सल्फ, नक्स-वोमिका, रसटक्स।
,, ,, कोई उसे छूता हो, तो पसन्द न करे—साइना।
,, ,, दाँत निकलनेके समय या गर्मीसे और बोखार होनेपर—ऐकोन या काफिया सेवन कराना चाहिये; इससे फायदा न हो, तो—हाइड्रो-ब्रोमिक-एसिड।
,, ,, अनेक तरहकी चीजें चाहता हो, परन्तु उन्हें पानेपर फाड़-फाड़कर फेंक देता हो—क्रियोजोट, स्टैफिसाइग्रिया।
,, ,, डरनेपर रोये और हाथ पटके—सैम्ब्यूकस।
,, ,, रञ्ज, क्रोधित रहना—मूर्ख—कैल्के-फास।
बच्चा चिल्लाता हो, नींदके समय और मानो सपनेमें डरता हो, इसलिये दूध पिलानेवालीसे चिपट जाये और जाग उठे—बोरैक्स।
,, ,, हाथसे अपना गला पकड़ रखता हो—कैल्के-फास।
,, ,, कानकी दर्दसे—आरम।
,, ,, रह-रहकर रोज़ तीसरे पहरको ५ बजे—कल्के-कार्ब।

बच्चा चिल्लाता हो, दिन-रात (हूप खाँसीकी वजहसे)—स्ट्रैमो।

" " बिना कारण, रह-रहकर—बेल।

" " जोर-जोरसे किसी साधारण चीज़को भी मांगनेसे न मिलनेपर या प्यार करनेपर—बेल।

" " पेशाब करनेके पहले—बोरैक्स।

" " शान्त करनेकी चेष्टा करनेपर बढ़े—कैल्के-फास।

" " एकाएक—ऐनाकार्डियम, कार्बो-वेज, हायोस।

बच्चा जाग उठे—बहुत दुर्विनीत भावसे—लैके, लाइको।

" " " अस्वच्छन्दता-सूचक रुलाईके साथ (या रोनेके कुछ ही बाद)—ऐकोन और अपने बदनका ओढ़ना या वस्त्र लात मारकर फेंक दे या रञ्ज प्रकट करे—कैलि-कार्ब, लाइको।

" " " रोता हो और बिछावनपर लोटता हो—बेल।

" " " चिल्लाता हुआ और यह सोचे कि कोई मानो उसे मारने जा रहा है—कैलि-ब्रोम।

" " " तेज़ रुलाई और सब बदनमें कँपकँपीके साथ—इग्नेशिया।

" " " भयसे (मस्तिष्ककी बीमारीमें)—जिङ्क।

" " " डरसे घबड़ाया हुआ ; चारों ओर घबड़ाकर देखने बाद फिर सो जाये ; कुछ देर बाद बार-बार ऐसा ही करनेपर—हाइको।

" " " डरसे व्याकुल और हतबुद्धि होना—इस्कुलस।

बच्चा जाग उठे—सर खुजलाये—कैल्क-कार्ब।

" " " रातमें सोनेके दो घण्टे बाद हाथ-पैर पटकता हो, रोये, किसी सवालका जवाब न देता हो, पेशाब करनेको कहनेपर, नहीं करता हो, परन्तु पेशाब करनेको बैठानेपर उसी समय सो जाये—थूजा।

" " " रातके समय, हँसता हुआ खेले और बिलकुल ही सोना न चाहे—सिप्रि-पिडियम।

" " " रातमें एकाएक डरना और काँपना, ठण्डे पसीनेके साथ—ऐक्टिया रेसिमोसा।

" " " साँसमें रुकावट, तकलीफ़के साथ साँस खींच सके, पर छोड़ न सके—सैम्ब्यूकस।

" " " एकाएक और चिल्लाये तथा बिना कारण—पालना पकड़ रखता हो—बोरैक्स।

बच्चा अपने केश खींचता हो (माथेमें दर्द होनेपर)—बेल, डिजिटेलिस।

बच्चा तेज़ीसे और रुलाईके साथ बहुत तरहकी चीज़ें माँगे—रियुम।

बच्चा कै करता हो, कुछ खाने बाद दस मिनटमें ही—फास।

" " " खाने-पीनेके बाद और इसके पीछे खाता या पीता बिलकुल न हो, पर नींद अच्छी तरह आती हो—आर्सेनिक।

बच्चा कै करता हो, दूध पीनेके कुछ ही बाद सब खायी हुई चीजें बड़े वेगसे कै कर दे और गहरी नींदमें सो जाये—सैनिकूग्रला।

बच्चा देरमें चलना सीखे—कैल्क-कार्ब, सिलिका।

बच्चा शान्त न रहे, जितना ही दुलार किया जाये, उतना ही रुष्ट होता जाये—साइना।

" लिङ्ग खींचकर लम्बा करे—मर्क-वाई।

" सब विषयोंमें उदासीन रहे; श्रवणेन्द्रियके सिवा सब इन्द्रियाँ निस्तेज हो जायें—कैल्क-कार्ब।

" हमेशा अकेला रहना चाहे, चिड़चिड़ा—ऐण्टिम-क्रूड, आर्स, कैमो, साइना। तुरन्त हँसे, तुरन्त रोये—काफिया।

" समयपर न हँसता हो, न खेलता हो; सहजमें सोता भी न हो और नींदमें हँसता हो; मस्तिष्ककी उत्तेजना—सिप्रिपिडियम।

" हँसता न हो; खेलता न हो या कूद-फाँद न करना चाहता हो—हिपर-सलफर।

बच्चेको गोदमें लेकर घूमनेपर, करुण स्वरसे रोनेके लक्षणमें—साइना।

" " " रोता हो, पर धीरे-धीरे घूमनेपर रोना बन्द हो जाये—कैमो।

बच्चा गोदीमें चढ़कर तेजीसे घूमनेके लिये लालायित हो—आर्स ब्रोमिटम।

बच्चा धायके कन्धे पर चढ़कर घूमनेसे शान्त रहता हो, किसी दूसरी अवस्थामें शान्त न रहता हो—स्टैनम।

" गोदमें चढ़कर धीरे-धीरे टहलनेसे शान्त रहता हो, नहीं तो रोता हो और जोरसे झुलानेसे शान्त रहता हो—साइना।

" गोदमें लेकर घूमनेपर, उसके सरमें चक्कर आता हो और गिर पड़नेके भयसे धायसे चिपक जाता हो—जेल्स।

बच्चा गोदमें चढ़कर घूमनेके लिये लालायित—पल्स।

" गोदमें, माँकी गोदके सिवा किसी दूसरेकी गोदमें चढ़कर घूमना न चाहता हो। अगर कोई दूसरा बच्चेको छुए तो बड़े जोरसे चिल्ला उठता हो—ऐण्टिम-टार्ट।

बच्चेको गोदमें लेकर घूमनेसे और सीधी तरहसे पकड़ रखनेसे उपसर्ग कम हो जाते हों—ऐण्टिम-टार्ट।

बच्चा देखनेमें बुड्ढे की तरह, दुबला, मैला, तेलहा और पीला—सैनिक्यूला।

" देखनेमें गोलगाल (chubby)—केलिबाइक्रोम, सेनेगा।

बच्चेको अधिक मिठाई या दूध खाकर बीमारी हो—नेट्रम-फास।

" की आँत बढ़ी हुई, नाभीमें या वक्ष-देशमें—नक्स-वोमिका।

" आँत बढ़नेपर बहुत रोता हो और बायीं पसलीका चक्र-देश दबा न रखनेपर अथवा जंघा न सिकोड़नेपर शान्त न रहता हो—थूजा।

बच्चेकी अनिद्रा आक्षेपके वशमें हो—सैम्ब्युकस।
„ की सुस्ती लानेवाली या कमजोर करनेवाली बीमारीके बाद—कार्बो-वेज।
„ को अम्ल रोग होनेपर—नेट्रम-फास।
„ के कपालका चमड़ा झूलता हो और बीच-बीचमें चिल्ला उठता हो—हेलि।
„ रोता हो, प्यार करनेसे, एकदम—सिलिका।
बच्चेका रोना तेज़, अगर बच्चेको हाथ पकड़कर घूमानेकी चेष्टा की जाये—साइना।
बच्चेका रोना और बदन मरोड़ना; दूध पीनेके एक घण्टा बाद तक—नक्स-वोमिका।
„ „ इस चीज़ और उस चीज़के लिये ज़िद करना और उसे मिलनेपर चुप होना—कैमो।
„ „ बोखारके समय चलनेपर—ब्रायोनिया।
„ „ रातभर और दिनमें सोना—जेलापा।
„ „ घिघियाता हो और साँस लेनेमें डरता हो—बेल।
„ „ झूलेमें सुलाते हो और गिर जानेके भयसे पासकी चीज़ पकड़ रखता हो—बोरैक्स।
„ „ बिना कारण बदनपर हाथ फेरने या ठण्ढी हवामें ले जानेपर—सल्फ।
„ „ पैदा होते ही, ज्यादा मात्रामें—मेडोरि।
„ „ मानो कोई भयानक चीज़ देखकर डर गया है, ऐसा मालूम होना—स्ट्रैमो।

बच्चेका रोना, शूलका दर्द या सामान्य पेटके दर्दमें—कूप्रम।

" " दिनभर (खासकर ४ बजेसे रात ८ बजेतक)। पेड़ूमें पैर गड़ाकर रखता हो; रातमें अच्छी नींद आती हो; काँखकर पाखाना फिरता हो, मल कड़ा और खूब कम हो--कोलोसिन्थ।

" " दिन-रात बराबर—सोरिनम।

" " सब पेट वायुसे रुका मालूम हो, सब बदन नीला हो जानेके उपसर्गमें—सेन्ना।

" " रातभर, उषाके समय सोकर, दो पहरतक सोता रहे—कैल्क-कार्ब।

" " के साथ माथेके पिछले भागमें हाथ रखता हो, तकियेमें सर घसता हो—ब्रायोनिया।

" " एकाएक शुरू हो और एकाएक ही बन्द हो—बेल।

" " माँका दूध पीनेके समय—कैल्क-फास।

" " सामान्य वजहसे—कास्टिकम।

" " सारा दिन और सारी रात सोये—लाइको।

" क्रिमि, पेट लम्बा और उसके साथ पेटमें दर्द—स्ट्रैफिसाइग्रिया।

" अङ्ग कोमल—ब्रोमिटम।

" क्रोधसे पैदा हुए उपसर्गमें—एकोन।

" आकृति खर्व (बच्चेकी देह न बढ़ती हो)—इरिञ्जियम, मैग्ने-कार्ब, मैग्ने-मूर, लाइको।

बच्चेका खिलौना मांगना—दूधकी चीनी।
„ खिनखिनहा स्वभाव—हिपर, लाइको।
बच्चेकी गति, ऊपरसे नीचे उतरनेमें डर—बोरैक्स।
„ „ दिन-रात हमेशा घूमना चाहे—सैनिक्यूला (रसटक्स)।
„ „ अकसर हमेशा गोदमें चढ़कर घूमना चाहे और हिलना चाहे—साइना (रसटक्स)।
„ „ टेढ़ी गति न सहन कर सकता हो—काफिया।
„ गांठें कड़ी और बढ़ी हुई होनेपर—कैल्क-कार्ब।
„ गांठें सूजी—मर्क-डलसिस।
„ शरीरकी बू, धोने बाद खट्टी—हिपर, मैग्नेशिया-कार्ब।
„ शरीरकी गन्ध हमेशा सड़े पनीरकी तरह—सैनिक्यूला, सोरिनम।
बच्चेका गोंगियाना, अधखुली आखें, सर झूल पड़ना—पोडो।
„ „ और सुस्त रहना—बेल।
„ „ रात तीन बजे—कैलि-कार्ब।
„ „ अन्त रातमें—रसटक्स।
बच्चेकी जीभपर सफेद लेप चढ़ा—ऐण्टिम-क्रूड।
बच्चेका तलपेट और उसका चमड़ा जगह-जगह कड़ा हो, तुरन्तके पैदा हुए बच्चेका, वह तेजीसे बढ़ता हो और ज्यादा कड़ा होता जाये; कभी-कभी लाल रङ्ग चमड़ेपर आ जाये; धनुष्टङ्कारकी तरह अकड़न, माथा पीछेकी ओर झूल जाये—कैम्फर।

बच्चेका जोरसे चिल्लाना, रह-रहकर बहुत जोरसे—एपिस।
" " " नींदके समय—साइना।
" " " हृदय विदारक—क्यूप्रम।
" " " थुलथुला शरीर—मैग्नेशिया।
बच्चेका दाँत निकलनेके समय—इथूजा, मैग्नेशिया-फास, नेट्रम-म्यूर।
" दूध पीना एकदम सहन न होता हो—काडलिवर-आयल।
" शरीर दुर्बल, माथा पुष्ट और बुद्धि तेज़—लाइको।
बच्चेकी नाकसे खून गिरता हो—टेरिबिन्थिना।
" ओर देखनेसे वह चिल्लाये और रोता रहे, नींद खुलनेके बाद चिड़चिड़ा—ऐण्टिम-टार्ट।
बच्चेका प्रलाप और अगट-सगट चीजें देखना (कुत्ता, बिल्ली वगैरह)—इथूजा।
" प्रलाप, प्रचण्ड, अद्‌भुत दृष्टि, चेहरा लाल, बुदबुदाना, खाटके कपड़े खींचना (मस्तिष्क रोग)—हायोस।
" बाप-माँके सामने मौजूद रहनेपर भी उन्हें पुकारना—स्ट्रैमो।
" प्रलाप, खाटपर इधर-उधर करवट बदलना और बेचैनी (मस्तिष्क-आवरक-झिल्ली-प्रदाह)—आर्सेनिक।
" प्रलापके साथ झोंकसे उठना, गोंगियाना और पेशियोंको खींचना—बेल।
" प्रलापके साथ रातभर उष्ण-प्रधान ज्वर—बेल।

बच्चेका प्रलापके साथ हँसने-खेलनेका भाव (मस्तिष्क आक्रान्त होनेपर)—स्ट्रैमो।

" " साथ आरक्त ज्वर—ऐइलैन्थस।

बच्चेको दुर्दमनीय बीमारी होनेपर—लाइको।

" सुखण्डी—कोका θ-२।

" पीठ और अङ्ग-प्रत्यङ्गमें दर्द (मानो मार खायी है)—एसिड-फास।

" पेट बड़ा होनेपर—कैल्के-कार्ब, सलफर, सार्सापैरिला, सैनिकूला, सिलिका।

" पेटमें दर्द मालूम होनेपर—मैग्नेशिया-कार्ब।

" तालु न भरनेपर—कैल्क-फास, सिलिका।

" बालास्थि टेढ़ी रहनेकी वजहसे अतिसार वगैरह—मैडोरिनम।

" पाखाना-पेशाबकी हाज़त बराबर बनी रहना—कैलि-आयोड।

" मलिन चेहरा, फीका रङ्ग—सोरिनम, कैल्क, मर्क-वाइवस।

" माथेपर जरासेमें पसीना आ जाये—कैल्क।

" माथा बड़ा, जबड़ा छोटा—कैलि-आयोड।

" सर बड़ा होनेपर—कैलि-आयोड, कैल्क-कार्ब, सिलिका।

" मुँहकी चारों ओर नीली आभा लिये सफेद रङ्ग—साइना, सैबा।

" स्तन पीनेके कारण मुँहके घाव—वेरोनिका।

बच्चेका चेहरा बुड्ढे-जैसा हो—ऐब्रोटेनम, इथ्यूजा, एसिड-हाइड्रो, क्रियोजोट (बच्चा बुड्ढे की तरह मालूम होनेपर)।

" के चेहरेसे उत्कण्ठा मालूम होती हो—इथूजा, बेलेडोना, कूप्रम ।

" चेहरा हत-बुद्धिकी तरह दिखाई दे—प्लम्बम, स्ट्रैमो, ज़िङ्कम ।

" उपयुक्त परिपोषण न होना, देरसे चलना सीखना, पेट लम्बा, सर बड़ा, पर दाँत न निकलता हो—कैल्क-कार्ब या कैल्के-आयोड ।

" रोग प्रबल तर—सोरिनम ।

बच्चा दुबला—कैलि-आयोड, सलफर ।

" दुबला और बुड्ढे-जैसा दिखाई दे अथवा खींचन रहे और शूल-वेदनामें—आर्जे-नाई ।

" दुबला (या सुखण्डी), बहुत सुस्त, चमड़ा झूल जाना, चेहरा बुड्ढेकी तरह, पेट बड़ा, मल मुलायम मांड़की तरह, चमड़ा रस-भरा, छोटी-छोटी फुन्सियाँ, मुँहका घाव—सार्सापेरिला ।

बच्चेका दुबलापन, ऊपरके अङ्गसे नीचेकी ओर—सेनक्विस ।

" " गांठोंका बढ़ना, परन्तु शरीर क्षीण होता जाये—आयोड ।

" " छोटे बच्चोंका—मेरम-वेरम ।

" " नीचेके अङ्गसे ऊपरकी अङ्गकी ओर बढ़े—ऐब्रोटेनम ।

बच्चेका दुबलापन, खासकर गर्दनकी पोछेकी पेशी—कैल्के-फास, नेट्रम-म्यूर, सैनिकूयला।

" " (खासकर गर्दनके पोछे और उरुका); अतिसार रोगकी बाद—सैनिकूयला।

" " विषन्नता, माथेका पिछला भाग बैठ जाना—मैग्ने-कार्ब।

" " मुँहमें जखम, बदनपर पोला दाग—एसिड-सल्फ।

" " उचित भोजन मिलनेपर भी—मांस-चय—आयोड, नेट्रम-म्यूर।

" " एकाएक पतले दस्त रुक जाने बाद—ऐब्रो-टेनम।

" " सहजमें ही उत्तेजना—एम्ब्राग्रोशिया, लाइको, हायोस।

" " चौंक उठना—कैल्के-कार्ब।

बच्चेसे बात करनेसे रो पड़े—मेडो, नेट्रम, सिलिका, टियुबर।

बच्चेका हमेशा गोदमें चढ़कर घूमनेकी इच्छा करना लक्षणमें—ऐण्टिम-टार्ट, कैमो, चायना, स्टैनम, कैलि-कार्ब।

" हमेशा डरावना सपने देखना और सोनेकी इच्छा न करना—नक्स-वोमिका।

बच्चा स्तनकी घुण्डी एकाएक छोड़ दे और मानो साँस रुक जाती है, इस तरह रोये, सीधी तरह उठकर घूमनेसे अच्छा रहे—ऐण्टिम-टार्ट।

बच्चा स्तन पीने बाद तुरन्त ही पानी पीनेके लिये रोये, परन्तु पानी योंही फेंक दे—आर्निका।

" स्तन पीनेके समय और पानी पीनेके बाद रोता हो—आर्सेनिक।

" स्तन न पीना चाहे, चिल्लाता हो, पर स्तनके दूधसे उसके दोनों ओंठ तर होते हो वह जोरसे स्तन टानता हो—ब्रायोनिया।

" हमेशा स्तनका दूध पीता हो, पर उसके शरीरपर मांस न चढ़ता हो—सैनिक।

बच्चेके स्तन पीने बाद हिचकी या झटका आता हो; खाली डकार—मेरम-वेरम।

बच्चा, स्तन पीनेवाले बच्चेको दूध बिलकुल सहन न हो—सिलिका।

" स्नायविक दुर्बलता इतनी ज्यादा हो, कि कागज मोड़नेकी थोड़ी-सी खड़खड़ाहट या दूरकी जोरकी आवाज़से घबड़ाकर उठ बैठे और डरे—बोरैक्स।

बच्चा दुर्बलताकी वजहसे बच्चेका पेट फूला, पेटमें घरघर शब्द—पैसिफ्लोरा।

बच्चा, छूते ही डरसे एकाएक चौंक उठे, पर न चिल्लाये—कैलि-कार्ब।

बच्चा छूना सहन न कर सकता हो, छूनेसे ही रोता हो—ऐण्टिम-क्रूड, साइना, कैलि-आयोड।

बच्चा, अच्छी तरह सुखसे सोता न हो, इधर-उधर करे—
लाइको।

„ जम्हाई ले, हमेशा चिल्लाये और काँपकर जाग उठे—
इग्नेशिया।

„ चलना और बोलना देरसे सीखे—ऐगरिकस।

„ चलने, बोलनेमें असमर्थ (एक-दो वर्षका बच्चा इसी
दवासे अच्छा हुआ है)—नक्स-मस्केटा।

माथा—बायें कन्धेपर रख दे—सलफर।

„ पैदा होनेके वक्त कड़ा और कसकर लगा, कोई जोड़ न
रहे—सैनिक्युलस।

माता या धायके क्रोधके समय दूध पीनेपर, बच्चेका अनिष्ट
होनेसे—ऐकोन, ओपि।

माथेकी चाँदीपर गांठ और ज्यादा मांसकी गोटी उठनेपर—
कैल्क-फ्लुयोर।

गृहस्थोंमें हमेशा जो बीमारियाँ दिखाई देती हैं, उनका इलाज इस तरह ऊपर लिखा गया है। सदृश-विधानके मतसे इलाजकर फायदा होनेपर गृहस्थ-मात्रको श्रद्धा-पूर्ण हृदयसे आचार्य हैनिमैनको धन्यवाद देना चाहिये, कि बच्चोंको कड़वी और कष्टकर दवाओंसे उन्होंने बचाया है।

इस सम्बन्धमें सबको परिचित विदुषी धर्मपरायणा कुमारी कोब (Miss Cobbe) ने निरपेक्ष भावसे जो कुछ कहा है, उसे बताकर हम "बाल-रोग" की चिकित्साका उपसंहार करते हैं।

"Children, noticing the busts of Hahnemann in the shop-windows, may be properly taught to bless that great Deliverer who banished from the nursery those huge and hateful mags of misery—black founts of so many infantine tears—mugs of sobs and sighs and gasps and struggles nutterable, from one of which Madame Rolond drew the first inspiration of that martyr-spirit which led her onward to the guillotine when she suffered herself to be whipped six times running, secur than swallow the abdominable "contents"— Sacuficial Medicine in T. P, cobb's the Peak in Darien (p. p. 196)

पाँचवाँ अध्याय

भेषज-तत्व

सूचना

उपक्रमणिकावाले अध्यायमें दवाओंकी तैयारी (औषध-प्रस्तुत) और दवाओंका प्रयोग प्रकरण लिख दिया गया है। अब इस परिच्छेदमें होमियोपैथिक दवाओंका खास लक्षण, क्रम, सम्बन्ध निरूपण आदि बातोंकी आलोचना की जायगी। यह परिच्छेद नीचे लिखे पाँच अध्यायोंमें विभक्त है :—

(१) भेषज-लक्षण-संग्रह।—इस अध्यायमें ४२ प्रधान दवाओंका खास-खास लक्षण (peculiar symptoms) दिया गया है।

(२) ग्रन्थमें जिन दवाओंके नाम आये हैं, उनकी फ़िहरिस्त, हमेशासे व्यवहार होता हुआ उनका क्रम (डाल्यूशन) और उनकी क्रियाका स्थितिकाल—इस अध्यायमें लिखा जाता है।

(३) सभी प्रधान होमियोपैथिक दवाओंका सम्बन्ध-तथ्य—इस अध्यायमें लिखा गया है।

(४) रेपर्टरी—इस अध्यायमें रेपर्टरी क्या है और रेपर्टरीकी सहायतासे कैसे दवाका चुनाव होता है, यह संक्षेपमें बताया गया है।

(५) खाद्य-प्राण (विटामिन)- किस खाद्यमें कौन-कौन विटामिन कितना है और मानव-शरीरके ऊपर उनकी क्रिया बतायी गयी है।

(१) भेषज-लक्षण-संग्रह

(Materia-Medica)

अर्थात्

कई प्रधान दवाओंके खास लक्षण

(१) आर्निका ।—रक्त, मांस-पेशी और कैशिकाके ऊपर इसकी क्रिया होती है। चोट लगने, कुचल जाने अथवा घाव होनेपर जैसा दर्द होता है, समूचे शरीरमें वैसा ही दर्द मालूम हो; **शय्या कड़ी मालूम होना**; मस्तिष्कमें जलन या अर्द्धाङ्ग, माथा और चेहरा गर्म, पर शरीरके दूसरे अंग (खासकर हाथ-पैर) ठण्डे; **काले दाग पड़ना**; डकार, दस्त या जीभसे सड़े अण्डेकी बू आना, चोट वगैरहसे

खून बहना ; बेहोशी या मोह ; बोखारसे छटपटाता हो, पर पूछनेपर रोगी कहे कि "अच्छा हूँ ;" (बोखारमें जवाब देनेमें रोगीको मोह पैदा होना) ; सड़नेकी क्रिया ; चोटकी वजहसे शारीरिक परिश्रमसे पैदा हुई बीमारियाँ ; प्रसवके बाद पक्षाघात ; सान्निपातिक ज्वर, पेशियोंका शूल ; गिरने या चोटकी वजहसे धनुष्टङ्कार ; वात, शय्याक्षत (Bed-Sore), पुराना मैलेरिया बोखार ; नाक या मुँहसे खून गिरना ; खूनका स्राव और अनजानमें पेशाब हो जाना वगैरह लक्षणोंमें यह फायदा करता है। चोट, गिरना, चमड़ा छिल जाना, काला दाग पड़ना वगैरहमें इसका **बाहरी प्रयोग** हो सकता है।

(२) **आर्सेनिक**।—शरीरके सब यन्त्र और निःस्रावपर इसकी प्रधान क्रिया दिखाई देती है। शरीर या मनको **बहुत तकलीफ़** ; रोगी बहुत बेचैन, जरा भी स्थिर नहीं रहता, पर कमजोरीकी वजहसे हिल-डोल नहीं सकता, छटपटाया करता है ; एकाएक सुस्त हो पड़ता है और जीवनी-शक्तिका ह्रास हो जाता है। **बदनमें दाह, पर कपड़ेसे बदन ढँकनेसे जलन कम होती है, बहुत प्यास**—बार-बार थोड़ा पानी पीनेकी इच्छा, उठने-बैठने या सीढ़ी चढ़नेसे बहुत थकावट मालूम होती है और श्वास-कष्ट होता है ; **दस्त और कै** ; खाने या पीने बाद ही दस्त, कै बढ़ता है ; ठण्डी चीज़ खाने-पीने बाद ही दस्त, कै बढ़ जाता है ; फल खानेके कारण पतले दस्त ; हैज़ा,

आमाशय प्रभृति रोग। रातमें १२ बजेके बादसे लेकर तीन बजेतक कोई भी रोग बढ़ता है। ठण्डी हवा, ठण्डी कोठरी या ठण्ड लगने या हिलने-डोलनेसे रोग बढ़ता है। गर्म हवा, गर्म कोठरी या गर्मी लगनेपर रोगमें कमी मालूम होती है। सूखा मोमकी तरह चमड़ा। सर्दी लगकर मस्तिष्ककी श्लैष्मिक-झिल्ली और नाककी श्लैष्मिक-झिल्ली आक्रान्त होकर जलन और जखम पैदा करनेवाला स्राव निकला करता है; नाकका छेद रुक जाता है। हृत्पिण्डकी बीमारियाँ; पानीकी तरह दस्त या हरा और काले रङ्गका जलन करनेवाला दस्त; बीच-बीचमें कै; अतिसार या हैजा। सूतिका ज्वर; पाकस्थलीमें बेहद जलनका दर्द; पाकस्थलीमें जखम; चमड़ेपर जलन होनेवाली फुन्सियाँ और उसके साथ ही खुजलीसे चमड़ेकी छाल निकलना; मुँहके चारों ओर जलन पैदा करनेवाली खुजली—इस खुजलीसे सफेद रस निकलता है; पुराने सविराम ज्वरमें क्विनाइनसे फायदा न होने या क्विनाइनका अपव्यवहार होनेपर; जलन और दर्दसे भरी आँख उठना; शोथ; पुराना सड़ा घाव; नींद न आना; खूनकी कमी; स्नायु-शूल; शरीरको क्षय करनेवाली सब बीमारियाँ।

मृत्यु-भय, मानसिक अस्थिरता, शारीरिक दुर्बलता, जलन, प्यास, उत्तापसे आराम मिलना,

बिचली रातमें और दोपहरके समय रोग-वृद्धि, ये कई आर्सेनिकके विशेष लक्षण हैं।

(३) ऐकोनाइट।—माथे और पीठके सब स्नायुमण्डलपर इसकी प्रधान क्रिया है। भीड़में जानेसे भय, मृत्यु-भय या कहता है, कि मैं अब न जियूँगा, अमुक दिन मरूँगा। शारीरिक या मानसिक उद्वेग, तकलीफ़से बेचैन हो जाना। किसी नयी बीमारीका एकाएक झोंकसे हमला (खासकर मोटे-ताजे आदमियोंको); (जाड़ेके दिनोंमें) सूखी ठण्डी हवा लगने (या पसीना बन्द होनेकी वजहसे) कोई बीमारी पैदा होनेपर; प्रदाहसे पैदा हुई बीमारीकी पहली अवस्थामें—जैसे बोखार, पनसाहा माता, सर्दी, खसड़ा, सूखी खाँसी, घुण्डी खाँसी, ब्राङ्काइ-टिस, न्यूमोनिया, वात, सन्धि-वात वगैरह बीमारियोंकी पहली अवस्थामें। कपड़ा उतारने या खुली हवामें जानेपर बीमारीका कम हो जाना, गर्म कोठरीमें या बायीं करवट सोनेपर बीमारीका बढ़ना; तेज़ प्यास; बदन सूखा और गर्म; पसीना एकदम नदारद। नाड़ी कठिन, द्रुत और पूर्ण; चेहरा लाल; साँसमें कष्ट; पेशाब लाल; कलेजा धड़कना; रजोरोध।

(४) ऐण्टिमोनियम-टार्टरिकम।—यकृत, फेफड़े और पाकाशयकी श्लैष्मिक-झिल्लीके ऊपर इसकी प्रधान

क्रिया है। बालक और बूढ़ोंकी बीमारियाँ; सर्दी लगकर रोग; श्वास-रोगकी जिन बीमारियोंमें हवा निकलनेकी राहमें बहुत श्लेष्मा इकट्ठा होता है या घरघर शब्द श्लेष्मामें होता है, रोगी बलगम निकालनेमें असमर्थ रहता है। गलेमें घरघर शब्द होता है, ऐसा मालूम होता है, कि बहुत श्लेष्मा निकलेगा, पर कुछ नहीं निकलता। श्वास-यन्त्रकी बीमारीमें रोगी नीला हो जाता है, गलेमें श्लेष्माकी आवाज़ होती है, ऐसा मालूम होता है, कि अभी रोगीकी साँस रुक जायगी। कठिन रोगमें ऐण्टिमका रोगी गहरी तन्द्रामें बिछावनपर पड़ा रहता है; बहुत औंघाई या तन्द्राभाव। पसीना; कमजोरी; मिचली या कै; भोजनमें अरुचि रहती है; हमेशा कै करनेकी कोशिश, पर कै नहीं होती; देह ठण्डी; ठण्डा पसीना; चेहरा उदास या नीले रङ्गका; सब शरीरमें (खासकर हाथ और माथेमें) कम्प; दूधसे अरुचि, खट्टी चीजोंमें रुचि; जीभपर सफेद लेप; प्यास नदारद; हैज़ा; डकार या बलगम निकल जानेपर बीमारीकी कमी; शिवनेत्र; फेफड़ोंमें लकवा मार जाने या सूजन हो जानेकी आशङ्का; चमड़ेपर पीब-भरी खुजली; असली चेचक; बच्चोंका वायु-नली-प्रदाह; श्लेष्माकी कै होना; दमा; श्वास-कष्ट और कटि-वात। ऐण्टिमका बच्चा रोगी हमेशा गोदमें चढ़कर घूमना चाहता है, चिड़चिड़ा रहता है, कोई छूता या प्यार करता है, तो विरक्त होता है।

(५) **एसिड-नाइट्रिक।**—खून, श्लैष्मिक-झिल्ली, ग्रन्थियाँ और हड्डी, चमड़ा, गुर्दा और स्त्री-जननेन्द्रिय

वगैरहपर इस दवाकी क्रिया दिखाई देती है। ज्यादा परिमाणमें पारेके अपव्यवहारसे पैदा हुई बीमारियाँ। गर्मीकी बीमारी, गलेके भीतरका घाव; यकृतकी पुरानी बीमारी; गुदा-स्थानका नासूर; खूनी बवासीर; पाखाना होनेके समय और बाद गुदामें तेज़ दर्द; पसीना या पेशाबमें घोड़ेके पेशाबकी तरह बदबू; पुराना श्वेत-प्रदर; सर्दी; रक्तामाशय; अनिद्रा प्रभृति। जवानोंमें जिन्हें उपदंश या सूजाक हुआ है या बहुत पारा सेवन किया है, उनको सहजमें सर्दी लगना, अतिसार, बवासीर, मलद्वारमें, मुँहमें या मूत्रनली-मुखमें, आँखोंमें, नाकमें या योनिमें रक्त-स्रावी टेढ़े-मेढ़े किनारेवाले जखममें नाइट्रिक-एसिड खूब फायदा करता है।

(६) **एसिड-फास्फोरिक**।—स्नायु-मण्डल, मूत्राशय और लिङ्गेन्द्रियकी हड्डी और चमड़ेपर इसकी प्रधान क्रिया है। तन्द्रालुता, उदासीन भाव, सामने जो कुछ हो रहा है, रोगी वह जान नहीं सकता; परन्तु जगा देनेपर ज्ञान लौट आता है। शोक, शारीरिक और मानसिक परिश्रम या ज्यादा विषय-भोगकी वजहसे पैदा हुई बीमारियाँ (जैसे—सफेद केश, उतरा हुआ चेहरा); पेशाबका रङ्ग दूध या पानीकी तरह; जल्दी-जल्दी बढ़नेवाली देहकी गठन; पढ़ने वगैरहके कारण बालिकाओंका सर-दर्द; स्नायुमण्डल और जननेन्द्रियकी बीमारी; सफेद रङ्गका या पानीकी तरह अतिसार; ज्यादा पसीनेकी वजहसे शारीरिक दुर्बलता; खूनका

स्राव ; बहुत दिनोंका बिना कष्टका अतिसार ; शुक्रमेह ; हस्त-मैथुनका बुरा नतीजा ; गण्डमालासे पैदा हुआ हड्डीका जखम ; केश झड़ जाना (खासकर कमजोरीकी वजहसे) ; ध्वजभङ्ग ; श्वेत-प्रदर ; रातमें ज्यादा मात्रामें पेशाब होना या बार-बार थोड़ा-थोड़ा पेशाब होना, पेशाब दूधकी तरह सफेद अथवा अण्डलालकी तरह सादा ; बहुमूत्र ; कमजोरी करने-वाला स्वप्न-दोष ; हस्त-मैथुनकी वजहसे पैदा हुआ मुख-व्रण ।

(७) इपिकाक ।—श्वास-यन्त्र और पाकाशयपर इसकी प्रधान क्रिया है। दमा ; साँय-साँय या घरघर शब्द-मिला श्वास-कष्ट । हमेशा जी मिचलाना ; सर-दर्दके साथ मिचली ; जरायु, नाक, मुँह, गुदा या फेफड़ा वगैरह यन्त्रोंसे चमकीला लाल रङ्गका ज्यादा रक्त-स्राव ; फेन-फेन या पसीनेकी तरह या हरे रङ्गका दस्त ; एक दिन बाद नागा देकर आनेवाला जूड़ी बोखार ; क्विनाइनके अपव्यवहारसे पैदा हुआ बोखार ; अनियमित बोखार या बच्चोंके बोखारकी पहली अवस्था ; हरे रङ्गके आम-भरे पतले दस्त और उसके साथ थोड़े-थोड़े खूनके छींटे ; घासकी तरह हरे रङ्गका दस्त ; पित्तसे पैदा हुआ सरका दर्द ; हूपिङ्ग खाँसी, खाँसते-खाँसते कै कर देना ; अजीर्ण, आमाशय (हरी आम-मिला), नाभीके पास दर्द ; हड्डियोंमें तोड़नेकी तरह दर्द (टूट जानेकी तरह—ड्युपेट-पर्फ) ; कै और लगातार मिचली इसका प्रधान प्रयोग-लक्षण है ।

(८) ओपियम।—दिमाग और पीठकी रीढ़ और सहानुभूतिवाले स्नायुमण्डलके ऊपर इसकी प्रधान क्रिया है। वृद्ध और बच्चोंकी बीमारीमें इसका अधिक व्यवहार होता है। रोगी दर्द बिलकुल ही जान नहीं पाता; नींद आती है, पर सो नहीं सकता; मुँहसे पाखाना, कै करना। बदन खूब गर्म, पर पसीना नहीं होता है। एकदम बेहोश है, पर नाक बोलती खूब है। चेहरा लाल; बिछावन एकदम गर्म मालूम होता है। कब्जियत, पेशाब रुकना, हलका प्रलाप; आँखकी पुतली फैली, भय या उद्वेगसे पैदा हुई बीमारियाँ; चर्म रोग एकाएक बैठकर मस्तिष्क आवरक झिल्ली-प्रदाह; सान्निपातिक ज्वर; दिमागकी सुस्ती; गला घरघराकर साँस लेना; निस्तेज भाव; आँखोंकी पुतली सिकुड़ी हुई; पेटमें ज्यादा वायु संचय; गहरी नींद, उसके साथ अधखुली आँखें; नींदके समय बिछावनकी चादर नोंचता है (जागनेपर—हायोस, बेल); सर्दी-गर्मी। "तन्द्रा" का भाव ओपियमका प्रधान लक्षण है। जब किसी नयी बीमारीमें चुनी हुई दवा पूरा लाभ नहीं करती, उस समय ओपियमपर ध्यान देना चाहिये। (कार्बो-वेज, सलफर, बैसिलि)।

(९) कैल्केरिया-कार्बोनिका।—परिपोषणकी विकृतिसे पैदा हुए (गण्डमाला, गुटिका और हड्डियोंकी कोमलता) रोगोंपर इसकी प्रधान क्रिया है। नीचे लिखे किसी भी लक्षणमें कैल्केरिया फायदा करता है। (१) थुल-

थुला, गोरा चेहरावाला या कोमल हड्डीवाला मनुष्य। (२) जिसे सर्दी लगकर सहजमें ही कोई बीमारी हो जाती है। (३) रातमें पसीना। (४) जिनके पैर खूब ठण्डे रहते हैं और थोड़ेमें ही जाड़ा मालूम होता है। (५) पाचन-यन्त्रमें अम्ल (जैसे—स्वाद खट्टा, डकार खट्टी, कै खट्टी, मलमें खट्टी बदबू)। (६) आंशिक पसीना (जैसे—बच्चेके सरमें पसीना)। (७) हड्डियोंका अच्छी तरह पोषण न होना (जैसे—बच्चेका ब्रह्मतालु अपने समयपर न भर जाना या बच्चेका समयपर चल न सकना)। (८) धोबी आदि जो बहुत देरतक पानीमें काम करते हैं। बच्चेको दाँत निकलनेमें तकलीफ़; बच्चेका समयपर चल न सकना; आँखोंका प्रदाह; गांठें फूलीं; ज्यादा ऋतु-स्राव और उसके साथ घुटनेसे लेकर तलवेतक दोनों पैर बरफकी तरह ठण्डे और तर; नियमित समयके बहुत पहले ऋतु होना; दूधकी तरह श्वेत-प्रदर; सङ्गमके समय जल्दीसे वीर्यपात और उसके साथ ही कमजोरी; रातमें सरमें पसीना; अम्ल-रोग; पूर्णिमाके आस-पास या पूर्णिमाके दिन बीमारीका बढ़ना; ठण्डी हवा और रोगवाली करवट सोनेपर बीमारीका कम होना। हरे या काले रङ्गके जलन पैदा करनेवाले दस्त; बीच-बीचमें कै; अतिसार या हर तरहकी पुरानी बीमारीमें एक दिनका अन्तर देकर बीमारीका बढ़ना। इस दवाको खिलानेके बाद कभी सलफरका प्रयोग न किया जाये।

(१०) **कार्बो-वेजिटेबिलिस।**—रक्त, स्नायुमण्डल और पाकाशयकी श्लैष्मिक-झिल्लीके ऊपर इसकी प्रधान क्रिया होती है। तेज़ धूप या आगके पास काम करनेके कारण बीमारी, हिमाङ्ग अवस्थामें जब जीवनी-शक्ति एकदम खतम होना चाहती है (जब शरीर बरफकी तरह ठण्डा और नीला हो जाता है और रोगी हमेशा हवा करनेके लिये कहता है); किसी भी बीमारीकी अन्तिम दशामें जब बहुत ठण्डा पसीना, जीभ ठण्डी, साँस ठण्डी, स्वरभङ्ग वगैरह लक्षण दिखाई देते हैं; किसी बीमारी या चोटसे जो फिर अपना स्वास्थ्य न लौटा सका हो, क्विनाइन वगैरह दवाओंके अपव्यवहारसे पैदा हुई बीमारी; शरीरके भीतर मानो कोई चीज़ जल-भुन रही है—ऐसा मालूम होना, शरीरके किसी भी स्थानसे काले रङ्गका रक्त-स्राव; डकार; छातीकी जलन; पेटका सट जाना; पेट फूलनेके साथ ऊपरकी ओर वायु निकलना; सान्निपातिक ज्वर; बवासीर; अतिसार; दाँतका दर्द; मसूढ़ेसे सहजमें ही खून निकलना; सड़ी बदबूवाला घाव, स्वरभङ्ग, अपच; मुमूर्षु अवस्थामें पैरके तलवेसे कमरतक ठण्डा हो जानेपर इसका प्रयोग होता है। "रोगी एकदम लगातार हवा खाना चाहता है"—यह कार्बोका एक विशेष लक्षण है।

(११) **कैमोमिला।**—स्नायु-मण्डल, यकृत, पाकाशय और श्लैष्मिक-झिल्लीके ऊपर इसकी प्रधान क्रिया

है। चिड़चिड़ा स्वभाव; असहनीय दर्द (जैसे—बाधक वेदना, प्रसवका दर्द, दाँतका दर्द वगैरह उपसर्गों में रोगी सो नहीं सकता या बेचैनीसे रोने लगता है; असह्य दर्द और बीच-बीचमें दर्दवाली जगहका शून्य हो जाना या झुनझुनी होना (जैसे—वात, लकवा), रातके समय तलवेमें जोरकी जलन; नींदके समयकी खाँसी; बच्चेके दाँत निकलनेके समयकी बीमारियाँ (जैसे—पीले या हरे रङ्गका दस्त, अकड़न, पानीकी तरह फुटकी-फुटकी दस्त, सड़े अण्डेकी तरह बदबूदार पानीकी तरह हरी या पीली आभा लिये आम-मिले दस्त); दाँत निकलनेमें बहुत तकलीफ़, पेटमें काटनेकी तरह दर्द, दाँत निकलनेके समय बच्चेका एक ओरका गाल गर्म और लाल होना (दूसरी ओरका ठण्डा) और तकलीफ़ देनेवाली बेचैनी, गाल फूले और उसके साथ थोड़ा ज्वर-भाव; गर्म चीज़ पीनेसे दाँतका दर्द बढ़ता है; स्नायुशूल, ऋतुके समय खून काला थक्का-थक्का; गर्भावस्थामें औरतोंकी ऐंठन; बच्चा हमेशा चिड़चिड़ा रहता है और थोड़ी-सी बातमें ही रुष्ट हो जाता है, बच्चेको गोदमें लेकर घूमनेसे शान्त रहता है।

(१२) चायना।—ग्रन्थिवाले स्नायु-मण्डलपर इसकी प्रधान क्रिया है। शरीरसे बहुत ज्यादा खून या धातुका निकल जाना या पतले दस्त, पीव बहना या दूध बहनेकी वजहसे कमजोरी आ जानेपर चायनाके प्रयोगसे तुरन्त कमजोरी दूर होती है और रोगी आरोग्य हो जाता है। बँधे

वक्तपर (जैसे ठीक एक दिन नागा देकर) किसी बीमारीका प्रकोप ; आँख, मुँह, नाक प्रभृति किसी भी स्थानसे रक्त-स्राव-प्रवणता, काले रङ्गका या थक्का-थक्का खूनका स्राव, उसके साथ बेहोशी और देखनेकी ताक़तका कम होना और कानमें भों-भों शब्द ; खूनकी कमी ; खूनमें पानीका अंश ज्यादा, पेट फूलना, ऐसा मालूम हो, मानो पेट वायुसे भरा है (ऊपरी पेट फूलना—कार्बो-वेज ; तलपेट फूलना—लाइको), डकार या वायु निकलनेसे आराम न मालूम होना (आरम-कार्बो-वेज) ; बिना तकलीफ़का उदरामय (पीला, पानीकी तरह या मिट्टीके रङ्गका दस्त) ; जाड़ा या बहुत शीत ; प्यासके साथ पसीना ; नींदके समय या कपड़ेसे बदन ढँकनेपर पसीना ; पुराना गठिया वात ; फल खाने बाद उदरामय होनेपर ; चाय पीनेकी वजहसे पेट फूलना ; बदनको छूना (यहाँतक कि हवाका स्पर्श) रोगी सह न सकता हो ; खून इकट्ठा होनेकी वजहसे यकृत और प्लीहाका बढ़ना ; मैलेरिया से पैदा हुआ सविराम ज्वर (जिस बोखारमें जाड़ा, गर्मी और पसीना ये तीनों अवस्थाएँ साफ़-साफ़ मालूम होती हैं, ज्वर नित्य पहले दिनकी अपेक्षा दो घण्टे पहले आता है, रातमें ज्वर नहीं आता) ; सूजन, भयानक भूख, माथेमें टनककी तरह दर्द (ऐसामालूम होना :मानो, सर फट जायगा) ; कमजोर करनेवाला स्वप्न-दोष, ज्यादा स्त्री-सङ्गम करनेकी वजहसे ध्वजभङ्ग।

(१३) थूजा।—जनन और मूत्रयन्त्र, गुदा और चमड़ेपर इसकी प्रधान क्रिया है। हैनिमैनके मतसे थूजा प्रधान साषक दोषको दूर करनेवाला (anti-sycotic) है। मांसके अंकुर (vegetation) जैसी श्लेष्माकी गोटी, एक तरहका नोकदार फोड़ा (जो जरायु, कण्ठ, नाकके छेद, कान या गुदामें पैदा होता है), मसे, प्रमेहसे पैदा हुआ उपमांस वगैरह लक्षणोंका थूजा महौषध है; रुका हुआ प्रमेह, मूत्रमार्ग-प्रदाह, गाढ़ा स्राव, पेशाब हो जाने बाद काटनेकी तरह दर्द और पेशाबकी धारका बँटकर निकलना; कान या नाकसे लगातार हरे रङ्गका श्लेष्मा निकलना; तलपेटका फूलना; दाँत निकलनेके समय ही उसका मसूढ़ा क्षय होने लगता है, पर अगले भागमें जखम नहीं होता (मेजि; अग्रभाग क्षय होता है—स्टैफि); वस्त्रसे ढँके अङ्गके उद्भेद या न ढँके अङ्गमें पसीना; (विपरीत—साइलि) टीका लगवाने बाद या चेचक हो जाने बाद शरीरका अच्छी तरह न सुधरना; तर हवामें रोगका बढ़ना या सूजाकका मवाद रोक देनेके कारण पैदा हुए उपसर्ग; शोथ या अर्श; मलद्वारका फटना; पेशाबकी नलीके मुँहके पास पीले या हरे रङ्गका पीब जमा होना; बार-बार बून्द-बून्द पेशाब होना; प्रमेहके बाद बहुमूत्र; गर्मीकी बीमारीकी दूसरी अवस्था; किसी-किसीके मतसे थूजा चेचक रोगकी एक बढ़िया दवा है और प्रतिषेधक भी है। ऐसा मालूम होना कि उदरमें एक प्राणी हिल रहा है। यह थूजाका एक

विशेष लक्षण है। कब्जकी बीमारीमें कड़ा मल आधा निकल-कर फिर मलान्त्रमें घुस जाये तो थूजा एक उत्कृष्ट दवा है। अधकपारीका दर्द और प्रमेहके कारण चक्षु-प्रदाह होनेपर (मर्क, आर्ज-नाई) थूजाको स्मरण करें।

(१४) **नक्स-वोमिका।**—पीठ, मज्जा, गति-शक्ति और ज्ञान-शक्ति देनेपर स्नायुपर इसकी प्रधान क्रिया है। शीर्ण मलिन देह, चिड़चिड़ा मिज़ाज, सहजमें ही चिढ़ उठना; झगड़ना, ईर्षा, द्वेष, पित्त-प्रधान और दुश्चिन्ता-ग्रस्त, हमेशा पेटकी बीमारी भोगनेवालोंकी बीमारीमें यह मन्त्रकी तरह काम करता है। वायु-प्रधान धातु; जिसे सहजमें ही क्रोध आ जाता है; उद्वेग या दुश्चिन्ता; मानसिक परिश्रमसे (जैसे—पढ़ना, आफिसका हिसाब रखना) पैदा हुई बीमारियाँ; साधारणतः धनी लोगोंकी बीमारियाँ, जो दिनभर घरमें बैठकर लिखा-पढ़ा करते हैं, मानसिक परिश्रमकी तुलनामें शारीरिक परिश्रम बहुत कम करते हैं, बहुत ज्यादा मसालेदार, स्वादिष्ट और गुरुपाक भोजन करते हैं या साधारण बीमारीमें भी बलवर्द्धक दवाएँ सेवन करते हैं, उनकी बीमारीमें नक्सको पहले स्मरण करना चाहिये। स्पर्श-कातरता आवाज़, रोशनी, गन्ध आदि रोगी बिलकुल सहन नहीं कर सकता; खींचन या अकड़न; तेज बोखारमें भी जाड़ा मालूम होना, नशीली; उत्तेजक, तीती या "गर्म" दवाएँ सेवनकी वजहसे पैदा हुए उपसर्ग; बार-बार पाखाना

जानेकी चेष्टा, पर बहुत थोड़ा मल निकलता है या बिलकुल ही पाखाना नहीं होता, नींद खुलने बाद थकावट मालूम होती है; भोजनके दो-एक घण्टा बाद पेड़ूमें भार मालूम होता है; कै या मिचली; पाखाना हो जाने बाद दर्द, कुछ देरके लिये घट जाता है (खासकर रक्तामाशय रोगमें); बवासीरके साथ खुजली, बादी मसा; सर्दी दिनमें पतली और रातमें सूखी; सवेरे रोग बढ़ जाता है, ऐसा मालूम होता है मानो गलेमें कुछ अड़ा हुआ है; कब्जियतके साथ मलत्यागकी चेष्टा; सूखी खाँसी, सर्दी, रातमें जागना, ज्यादा भोजन या मादक पदार्थोंके सेवनसे पैदा हुई बीमारियाँ, कभी पतले दस्त और कभी कब्जियत; शूलका दर्द, पेट फूलना, छातीमें जलन; सर भारी और उसके साथ सरमें चक्कर, प्रसवके दर्दके समय बार-बार मलान्त्रमें वेग, कमरमें दर्द, आक्षेपिक दर्द होनेपर यह दवा देनी चाहिये। आँतोंका बढ़ना, जीभका पिछला भाग मैला; भयङ्कर सपने, नींदमें मानो कोई छातीपर चढ़ बैठा है; नाव या जहाज़पर चढ़नेसे मिचली, आक्षेपवाला दमा, निचले अङ्गमें ऐंठन; जल्दी-जल्दी और ज्यादा परिमाणमें ऋतु होना; ऋतुके समय और सवेरे ओकाई, पेशाब बून्द-बून्द होना; मूत्राशयका पक्षाघात और यकृतकी बीमारी; शराब आदि पीनेकी वजहसे हाथ-पैरका काँपना। कोई-कोई कहते हैं, कि सूर्यास्तके समय या सोनेके समय इसके सेवनसे ज्यादा फायदा होता है।

(१५) **नेट्रम-म्यूरियेटिकम** ।—खून, लसिका-मण्डल, परिपाक पथकी श्लैष्मिक-झिल्ली, यकृत और प्लीहापर इसकी प्रधान क्रिया है। दुर्निवार विषम-ज्वर ; ज्यादा मात्रामें क्विनाइन या आर्सेनिकके अपव्यवहारसे पैदा हुआ बोखार ; **दुबलापन** ; रोगी पौष्टिक पदार्थ परिमित मात्रामें खाता है, पर दुबला ही होता जाता है (आयोड, ऐब्रोट) ; खूनकी कमी, कब्जियत, प्लीहा और यकृतका बढ़ना, जीभपर नक्शेकी तरह मैल, प्रमेह, श्वेत-प्रदर। सर्दी, नाकसे खून गिरना, ज्वरके दाने, तीता या नमकीन स्वाद या स्वाद ही न मालूम होना, ओंठ और मलद्वार सूखे और फटे-फटे, **मैलेरिया ज्वर** (दस या ग्यारह बजे सिहरावन लगकर बोखार आता है) ; मुँह सरस, पर रोगीको सूखा मालूम होता है ; जीभ, ओंठ, नाक और अंगुलीमें टनक या चिलककी तरह दर्द मालूम होता है ; खुजली होती है, कलेजा धड़कता है। नेट्रम-म्यूरका रोगी दुबला, कमजोर रहता है, स्नायविक दुर्बलताके कारण रोगीके हाथसे प्रायः चीजें गिर जाया करती हैं। (एपिस, बोवि) रोगी सहजमें ही रो देता है, हमेशा दुःखित रहता है, बिना कारण ही रोता है ; पर यदि कोई सान्त्वना देता है, तो दुःख और रुलाईका भाव बढ़ जाता है। बहुत ज्यादा पढ़ना, सुईके काम करना या कोई दूसरा महीन काम करनेके कारण आँखोंमें स्नायुओंपर ज्यादा जोर पड़नेसे सर-दर्द हो जाये तो नेट्रम-म्यूरके प्रयोगसे खूब फायदा होता है। नेट्रम-म्यूरका

रोगी नमक और नमकीन चीज़ें खाना पसन्द करता है। यह याद रखना चाहिये। "तन्तुजायु" अध्यायमें "नेट्रम-म्यूर" देखिये।

(१६) **पल्सेटिला।**—शरीरकी श्लैष्मिक-झिल्ली, स्नैहिक-झिल्ली, शिराएँ, आँख, कान और जननेन्द्रियपर इसकी प्रधान क्रिया है। भारी चीज़ (जैसे—घी या तेलसे बनी), खाने-पीनेसे पैदा हुई बदहज़मी, जीभपर मैल चढ़ा या पीली ; पित्त और श्लेष्मा के करना ; अम्ल ; छातीमें जलन ; सफेद आम-मिले **पतले दस्त**, खसड़ा ; खसड़ेके बाद बहरापन, पनसाहा माता ; कानमें दर्द, कानसे पीव बहना ; वात ; सन्धि-वात ; सविराम और स्वल्प-विराम ज्वर ; मस्तिष्कमें सर्दी लगना और उसके साथ ही नाकसे गाढ़ा श्लेष्मा निकलना ; पलकोंका सट जाना ; **अनियमित ऋतु**, ऋतुका रक्त थक्का-थक्का काला ; ऋतु-स्रावके समय दर्द ; श्वेत-प्रदर ; अण्ड-कोषका प्रदाह ; ऋतुका रुक जाना ; प्रमेह। **रोगके उप-सर्ग हमेशा बदलते रहते हों**—कभी हँसना ; कभी रोना ; हर बार दस्तका ढङ्ग और रङ्ग अलग-अलग ; दर्द हमेशा जगह बदलता रहता है, दर्दके साथ रोगीको शीत मालूम होता है ; मुँह सूखता है, पर **प्यास नहीं रहती** ; श्लैष्मिक-झिल्लियोंसे **गाढ़ा कोमल पीली आभा लिये स्राव निकलता है** ; पैर गीले रहनेके कारण ऋतु-रोध ; खुली ठण्डी हवामें रहनेपर बीमारीका घटना। प्रसवका दर्द उठनेके समय सेवन करनेपर

जल्दी सन्तान होनेकी सम्भावना रहती है और भ्रूणका शरीर घूमकर सर सामनेकी ओर आ जाता है। थोड़ेमें ही रो देनेवाले धीर स्वभावके मनुष्य (खासकर औरतोंके) के लिये यह फायदेमन्द है।

(१७) फास्फोरस।—खून और पोषण करनेवाले स्नायु-मण्डलपर इस दवाकी प्रधान क्रिया है। लम्बा चिपटा चेहरा और गोरे रङ्गवाले बुद्धिमान व्यक्तियोंकी बीमारीमें फास्फोरस ज्यादा फायदा करता है। वृद्धोंकी अपेक्षा बच्चे और युवकोंकी बीमारीमें ज्यादा उपयोगी है। फास्फोरसका युवक लम्बे चेहरेवाला रहता है और सामनेकी ओर झुककर बैठता और चलता है। रक्त-स्रावक धातु—थोड़ी चोटसे ही शरीरसे बहुत ज्यादा रक्त-स्राव होता है; मुँह, पाकस्थली, गुदा वगैरह अङ्गोंमें बहुत जलन मालूम होना, मेरुदण्ड और पृष्ठफलकास्थिकी बीचकी जगहपर जलन; सन्ध्यासे रात दो पहरतक खाँसीका बढ़ना। मस्तिष्ककी बीमारी—सरमें चक्कर, सरका दर्द, बहरापन, नाकसे खूनका स्राव; खूनकी कमी; ज्यादा दस्त; पानीकी तरह बहुत दस्त, मलमें साबूदानेकी तरह छोटे-छोटे पदार्थोंका उतराना और मलद्वारका खुला रहना; ठण्डा पानी पीनेके लिये तेज प्यास; परन्तु उसे पीने बाद पाकाशयमें गर्म होकर कै हो जाना; नींदके बाद बीमारीका घटना; स्नायविक दुर्बलता; फेफड़ेका प्रदाह; खाँसीके साथ श्लेष्मा और खून निकलना; स्वर-भङ्ग और स्वर-

लोप ; यक्ष्मा ; यक्ष्मा रोग ; ध्वजभङ्ग ; जल्दी-जल्दी ऋतु होना ; रजः-स्राव ; स्त्री-संसर्गकी बहुत इच्छा ; निचले हनुकी हड्डीमें जखम ; दाँतकी जड़ अलग रहना और उससे सहजमें ही खून गिरना ; दाँतकी जड़का क्षय होना ; छातीका कोई फोड़ा नश्तर लगवाने बाद अगर नासूर पड़ जाये, तो यह दवा फायदा करती है।

(१८) फेरम-मेट ।—खूनपर इसकी प्रधान क्रिया क्रिया है। रक्त-स्वल्पता ; सब शरीरकी कमजोरी ; कम-जोरीकी वजहसे सर भारी ; मसाना और मूत्रनलीका प्रदाह ; कभी राक्षसी भूख और कभी भूख बिलकुल ही नहीं रहती, किसी शारीरिक यन्त्रसे खून जाना, चेहरा लाल (खासकर कम्प अवस्थामें) बिना दर्दके अजीर्ण दस्त ; मैलेरिया ; दिन-भरकी खायी चीज़की डकार रातमें आना या कै हो जाना ; चेहरा उतरा हुआ, छातीमें धड़कन, खूनकी कै, दमा वगैरह रोगमें धीरे-धीरे टहलनेपर रोगीको आराम मालूम होना ; पुराना अतिसार, गलक्षत, ज्यादा रजः-स्राव होना ; चाय या क्विनाइनके अपव्यवहारसे पैदा हुई बीमारियाँ। सुकुमारि औरतोंके लिये और स्नायु और रक्त-प्रधान धातुवाले मनुष्योंके लिये यह दवा बहुत ही फायदेमन्द है।

(१९) बेलेडोना ।—थुलथुला चेहरा और चमकीले लाल चेहरावालोंके लिये यह दवा ज्यादा व्यवहृत होती है। मस्तिष्क (cerebrum) और समूचे स्नायुमण्डल और

रक्त-सञ्चालन यन्त्रपर इसकी प्रधान क्रिया है। बेलेडोनाके रोगीको सहजमें ही सर्दी लग जाती है; चटपट, जल्दबाजीमें और हो-हल्लाकर काम करता है। सभी रोगोंमें बेलेडोनाके रोगीका चेहरा तमतमाया; नाड़ी कठिन, पूर्ण और उल्लम्फन-शील; प्रचण्ड सर-दर्द; प्रलाप; खींचन या अकड़न; आँखें लाल; सरके भीतर टपक; कनपटीमें टपक; टकटकी लगाकर देखना, मुँह, कण्ठ या जीभ सूखी या लाल। नयी बीमारीके प्रबल आक्रमणके समय बेलेडोनाका रोगी भूत, प्रेत और बाघ, भालू आदि जङ्गली जानवर देखता और डरकर बिछावनसे भागनेकी चेष्टा करता है। प्रलापमें हाथके पासकी चीजें तोड़ना चाहता है, काटने दौड़ता है, गाली देता है, जोरसे हँसता या दाँत कड़मड़ाता है। सारांश यह कि वह इतना उत्तेजित रहता है, कि सम्हालना मुश्किल होता है। (हलका प्रलाप, काम-विषयकी बातें इत्यादि लक्षणोंमें—हायोस; प्रलापमें लगातार हँसना, रोना या गाना लक्षणोंमें—स्ट्रैमो)। पेट फूला; भोजनके समय गलेमें सड़ी बदबूका स्वाद मालूम होना; शरीरका कोई स्थान उत्तप्त; लाल, टनक या जलनकी तरह दर्द; **किसी स्थान पर खूनका इकट्ठा होना और प्रदाह;** (पीव पैदा होनेके पहले अर्थात् फोड़ा और व्रणकी पहली अवस्थामें) स्नायु-शूल; पानीसे भय; आम-रक्त; थोड़ा रजः; अति रजः; प्रसव-वेदना; खाँसी; **आरक्त ज्वर; विसर्प; क्षत;** संन्यास। किसी तरहका

दर्द एकाएक आरम्भ और एकाएक बन्द होना, बेलेडोनाका एक खास लक्षण है।

(२०) ब्रायोनिया।—फेफड़े की झिल्ली, मस्तिष्क और यकृतपर इसकी प्रधान क्रिया है। वात और पित्त-प्रधान धातुवालोंकी बीमारीमें इससे विशेष लाभ होता है। सारे शरीरका सूखापन ही इसका निर्देशक लक्षण है। मुँह और पाकाशयमें सूखापनकी वजहसे प्यास, आँतोंमें सूखापनके कारण कब्ज, शरीरका चमड़ा सूखा रहनेके कारण पसीना न होना, सूखी खाँसी, फुसफुस-वेस्टका सूखापनके कारण खाँसी और प्लुरिसी (कैलि-कार्ब); पेशाब गाढ़ा और थोड़ा इस दवापर ध्यान देनेके विशेष विषय हैं। ओंठ, मुँह और पाकस्थली सूखी—इसीसे रोगी बहुत देर बाद ज्यादा पानी पीकर अपनी प्यास दबाता है; ज्यादा गर्मी या बरसातमें सूखी ठण्डी हवा लगकर बीमारी होना। ऋतुके समय ऋतु न होकर नाकसे खून गिरना; स्तन कड़े, गर्म और दर्द-भरे। कब्जियत, पर मल त्यागनेकी इच्छा बिलकुल ही न होना; दस्त देखनेमें सूखा, कड़ा, झामा ईंटकी तरह; वायुनली-प्रदाह; फेफड़ेका प्रदाह (पहली अवस्थामें); वक्षःस्थलमें सर्दी लगनेकी वजहसे दर्द (खाँसने और साँस लेनेमें दर्द मालूम होना); सूखी खाँसी; सन्धिवात (खासकर जब चलने-फिरनेमें तकलीफ मालूम हो) और कटि-वात; वात-ज्वर; कामला; पित्तसे पैदा हुआ

बोखार और सरमें दर्द; पित्तकी कै; वक्षस्थलमें जलन; तीती डकार; चिड़चिड़ा स्वभाव; सूतिका ज्वर; कांटा चुभने या कट जानेकी तरह दर्द; हिलने-डोलनेपर बीमारीका बढ़ना, स्थिर भावसे रहनेपर घटना, ब्रायोनिया प्रयोगका प्रधान लक्षण है। कोई भी बीमारी क्यों न हो, अगर रोगी प्रलापमें दिनभरके काम बोले या घर जानेका आग्रह करे, तो ब्रायोनियाके प्रयोगसे आरोग्य होगी।

(२१) विरेट्रम-ऐल्बम।—मस्तिष्क और पीठकी रीढ़के स्नायु-मण्डलके बीचमें परिपोषण यन्त्रोंपर इसकी प्रधान क्रिया है। कोई भी बीमारी क्यों न हो, शरीर जीर्ण-शीर्ण और बरफकी तरह ठण्डा, मलिन, उतरा चेहरा, आँख, मुँह बैठ जाना, मृत्यु निकट ऐसी अवस्थामें वेरेट्रमको स्मरण करना उचित है। (हाइड्रो-ऐसि, कार्बो-वेज, कैम्फर) खासकर मैलेरिया, हैजा, आमाशय, न्युमोनिया प्रभृति नयी बीमारीमें ऊपर लिखे लक्षण रहनेपर वेरेट्रम खूब लाभ करता है। हैजा, भातके नीचेका पानी या चावलके धोवनकी तरह ज्यादा परिमाणमें दस्त, कै, समूचे शरीरकी शीतलता, अकड़न; शूल; कमजोरीके साथ ठण्डा पसीना; स्नायु-शक्तिमें सुस्ती; प्रलाप; ओकाई या वमनके साथ कपालपर ठण्डा पसीना इसका निर्देशक लक्षण है। उन्माद रोग और उसके साथ चीजोंको फाड़ने या काट डालनेकी इच्छा; निस्तब्ध भाव; क्रोध आनेपर रोगीका पागल

हो जाना; वात रोग; सर्द हवामें बढ़ना; असह्य दर्द; तकलीफसे रोगीका अण्ट-सण्ट बकना। बहुत ज्यादा स्राव; पाखाना, पेशाब, लार, पसीना बहुत ज्यादा परिमाणमें निकलते हैं।

(२२) मर्क्युरियस-वाइवस।—प्रत्येक यन्त्र और विधान-तन्तुपर इसकी क्रिया है। डाक्टर नैशका कथन है, कि फोड़ा पकानेके लिये मर्क्युरियस नीचा क्रम और उसे बैठा देनेके लिये इसे ऊँचे क्रममें प्रयोग करना चाहिये। मर्क्युरियसके रोगीका मसूढ़ा फूलता है और उसमें छेद हो जाता है, उससे खून गिरता है; जीभ फूल जाती है और झूल पड़ती है और जीभपर दाँतके दाग दिखाई देते हैं; जीभ रसभरी; मुँह बदबूदार लार भरा, पर तेज प्यास रहती है, दिन-रात बहुत पसीना होता है, पर पसीनेसे रोग नहीं घटता। हड्डियोंकी बीमारियाँ, रातमें रोगका बढ़ना, दाहिने फेफड़ेका निचला अंश आक्रान्त होनेपर इसका प्रयोग होता है। ग्रन्थियोंका फूलना या पीब होना; गलेके भीतर घाव; लार बहना; लारमें धातुका स्वाद; मुँहके भीतर घाव; दाँतमें दर्द; कानसे पीब बहना; नाक या आँखसे श्लेष्मा या पीब निकलना; आँखें उठना प्रभृतिकी मर्क्युरियस उत्कृष्ट दवा है। यकृतका प्रदाह (दाहिनी करवट सोनेपर दर्दका बढ़ना), यकृत कड़ा और फूला और उसमें दर्द; खट्टा पित्त निकलना; कामला; पैत्तिक उदरामयमें भी सफलता-

पूर्वक इसका प्रयोग होता है। गर्मीके घावका स्पष्ट दिखाई देना ; पाकस्थलीका प्रदाह। उपदंश, वात ; बाघी ; उपदंशज बाघी और जिन घावोंमें सहजमें पीव नहीं होता। आमके साथ खूनके दस्त ; काँखना (खासकर पाखाना फिरते वक्त) लक्षणमें इसको निम्न-शक्ति लाभ करती है। रातके समय बिछावनकी गर्मीसे रोगका बढ़ना मर्क्यूरियसके प्रयोगका प्रधान लक्षण है।

(२२) रसटक्स ।—शारीरिक यन्त्र, श्लैष्मिक-झिल्ली, चर्म, पेशी और जोड़ोंके विधान-तन्तुपर इसकी प्रधान क्रिया है। जीभ लेप-चढ़ी, फटी-फटी और जीभका अगला भाग लाल, तिकोनिया ; बहुत बेचैनी ; हमेशा करवट बदलना ; आन्त्रिक ज्वरकी तरह उपसर्ग ; थोड़ा प्रलाप ; मोह ; पैशिक वात ; कमरका स्नायु-शूल (बाएँ भागमें) ; बाएँ बाहुका दर्द, उसके साथ हृद-रोग। निग-लनेके समय कन्धेमें दर्द ; बोखारकी शीतावस्थामें तकलीफ देनेवाली सूखी खाँसी और उष्णावस्थामें सब शरीरमें पित्ती निकल आना ; वात खासकर पुराना वात, सन्धि-वात, कटि-वात ; वातसे पैदा हुआ पक्षाघात ; "छालेवाला विसर्प" पनसाहा माता ; सब बदनमें खसड़ाकी तरह लाल दाने ; अतिसार मिला सान्निपातिक बोखार ; चर्म-रोग (असह्य जलन और खुजलाहट और अकौता) ; हिलने-डोलनेसे

बीमारी दबी मालूम होना, और शान्त रहनेपर वृद्धि (विपरीत—ब्रायो) रसटक्सके प्रयोगका प्रधान लक्षण है। तर ठण्ड लगकर बीमारियाँ या शरीरके किसी स्थानमें मोच आ जानेपर रसटक्सके प्रयोगसे लाभ होता है। मैलेरिया रोगमें मुँहमें ज्वरके दाने निकलनेके लक्षणमें इसकी नेट्रम-म्यूरसे तुलना करें।

(२४) लाइकोपोडियम।—श्वास-यन्त्र, परिपाक यन्त्र, जनन और मूत्र-यन्त्र, श्लैष्मिक-झिल्ली, चमड़ा और यकृतपर इसकी प्रधान क्रिया है। सुस्त मन, कमजोर, स्मरण-शक्तिवाले मनुष्य; सहजमें ही जिन्हें क्रोध आ जाता है, उनकी बीमारीकी यह उत्कृष्ट दवा है। दाहिने अङ्गकी बीमारियाँ होनेपर लाइकोपोडियमको याद करना चाहिये। न्युमोनिया (दूसरी अवस्थामें सुरखीके रङ्गका बलगम निकलनेपर भी नासा फलक दोनों ऊपर उठते और उतरते हैं), आँत उतरना, फोड़ा वगैरह जो कोई बीमारी दाहिनी बगल ही होकर बायीं ओर फैलती है; पेट फूलनेके साथ नीचेकी ओरसे वायु निकलना; तलपेटमें वायु-सञ्चय, पेटमें भड़भड़ आवाज़; पेशाबमें लाल रङ्गका तलछट जमनेपर लाइको खूब लाभ करता है। तीसरे पहर चार बजनेसे रातके आठ बजेतक किसी बीमारीका प्रकोप; एक पैर ठण्डा, दूसरा गर्म; भूख—पर थोड़ा खानेसे पेटका भर जाना या पेटमें भार मालूम होना; पसीनेके बाद ही प्यास, ये कई

लाइकोके विशेष उल्लेख योग्य लक्षण हैं। सविराव ज्वरमें खट्टा स्वाद, खट्टा पसीना, खट्टी डकार, खट्टी कै ; कब्जियत, पर मलद्वार सिकुड़ा रहनेकी वजहसे पाखाना नहीं होता ; पुरानी बीमारी ; खूनकी खराबी ; सवेरे नींद खुलते समय और बादमें सरमें चक्कर ; जलन करनेवाली डकार, मुँहमें पानी भर आना और छातीमें जलन ; मानसिक परिश्रमसे पैदा हुआ अग्निमान्द्य। डिफ्थीरिया रोगमें श्लैष्मिक-झिल्लीका पर्दा पहले दाहिनी तरफ आरम्भ होकर धीरे-धीरे बायीं ओर फैलता है (विपरीत—लैकेसिस, लैक-कैन), वृद्धोंका रति-शक्ति-दौर्बल्य और युवकोंका अतिरिक्त इन्द्रिय-सङ्गम या हस्तमैथुन आदि जनित ध्वजभङ्ग रोगमें लाइको विशेष लाभदायक होता है।

(२५) लैकेसिस।—पीठकी रीढ़के स्नायुमण्डल, फेफड़े और पाकाशयके स्नायुके ऊपर इसकी प्रधान क्रिया है। रोगके कारण जीर्ण-शीर्ण चेहरेका रोगी, चिड़चिड़ा मिज़ाज, सहजमें ही क्रोध आ जाता है ; कुटिल प्रकृतिके रोगी जो मीठी बातें करते हैं, उनकी बीमारीमें यह उपयोगी है। सुस्ती नींदके बाद ही किसी बीमारीका बढ़ना ; बाएँ अङ्गकी बीमारियाँ ; बाएँ अङ्गमें कोई बीमारी पैदा होकर दाहिनी ओर फैल जाये ; टानसिलाइटिस और डिफ्थीरिया रोग ; (लैकमैन, विपरीत लाइको) ; शरीर मानो सट या कस जाता है ; खूनकी खराबी ; कमजोरीकी वजहसे जीभ या किसी दूसरे अङ्गका काँपना, गलेमें दर्द ; गलेमें कोई कपड़ा

नहीं रख सकता, न गलेका बटन लगा सकता है, ऐसा मालूम होता है, कि साँस रुक जायगी। कानमें दर्द, गालकी हड्डीसे लेकर कानतक नोंच फेंकनेकी तरह दर्द। प्यास नहीं पर गला सूखा, सड़ी बदबू-भरे दस्त; अनजानमें मल निकल जाता है, गर्मीके दिनोंका उदरामय, चमड़ेपर काली आभा लिये नीले रङ्गका दूषित जखम। रक्त-स्राव प्रवणता; इसके जखम से भी बहुत खून निकलता है, रक्तस्राव नहीं जमता, दूषित क्षत, जखममें बेहद दर्द, कर्कटका जखम, पहले बायीं ओर फिर दाहिनी ओर आक्रमण करता है और फैल जाता है। रोगवाली जगह काली नीली या बैंगनी गरम पानी पीने और नींदके बाद दर्दका बढ़ना और कड़ी चीजकी अपेक्षा नरम चीज़ निगलनेमें अधिक कष्ट। बहुत सुस्ती। जरायुसे थोड़ा रजः-स्राव (खूनका रङ्ग काला), ऋतुके समय प्रसवके दर्दकी तरह दर्द, स्त्रियोंके रज निकलना बन्द होनेके समयके रोग और प्लेगकी बीमारी।

(२६) सलफर।—खासकर ग्रन्थिल स्नायुमण्डलके बीचसे समूचे शरीरपर इसकी क्रिया प्रकाशित होती है। सलफरका रोगी खूब गन्दा रहता है, उसमें सफाईका ज्ञान बिलकुल नहीं रहता (खूब साफ-सुथरा—आर्स) शरीरपर खुजली, अकौता प्रभृति रोग रहते हैं। सामनेकी तरफ झुककर चलता है, खड़ा नहीं रह सकता। खड़े रहनेपर बहुत तकलीफ होती है। सलफरका रोगी बच्चा नहाना नहीं

चाहता। जल्दी-जल्दी काम-काज करता है, देर सह नहीं सकता। हाथ-पैर, माथेका ब्रह्मतालु, सबमें हर समय जलन रहती है। सोनेके समय जलन बन्द रखनेके लिये दोनों पैर बिछावनके बाहर निकाल रखता है। सब तरहके चर्मरोग और प्रायः सब तरहकी पुरानी बीमारीमें यह लाभ करता है। खुजली, कब्जियत, बवासीर, कफ, घाव, वात, फोड़ा, अंगुल बेढ़ा, छोटी क्रिमि, अतिसार; सवेरे बिछावन छोड़ते ही पाखाना लगता है (ऐलोज, सोरिनम); माथेके भीतर मानो "गर्म" पानीसे दग्ध हो रहा है ऐसा मालूम होना; बार-बार पेशाब होना, पेशाब होनेके समय जलन, सब बदनमें (खासकर तलवेमें) बहुत जलन मालूम होना; ओंठ, कान, नाकके छेद; आँखोंकी पलकें, पेशाबकी नली; मलद्वार आदि का रङ्ग लाल—मानो खून-भरा है; कोई चमड़ेकी बीमारी दबकर कोई दूसरी तेज़ बीमारी होना; कोई बीमारी जल्दी छोड़ना न चाहती हो; चुनी हुई दवा देनेपर भी कोई फायदा न होता हो; और सोरा दोष आदि सलफरका प्रकृतिगत लक्षण रहनेपर सलफरके प्रयोगसे विशेष लाभ होता है। आँखें उठना, नियमित समयके बहुत पहले या बाद थोड़े दिन रहनेवाला ज्यादा परिमाणमें या थोड़े परिमाणमें रजः-स्राव; जलन और तकलीफ देनेवाला श्वेत-प्रदर। जिन रोगियोंको उपयुक्त दवा देनेपर भी कोई फायदा न होता दिखाई दे, उन्हें बीच-बीचमें सलफर खिलाकर दवा देनेसे ज्यादा फायदा होता है; कभी-कभी बीमारीके पहले और अन्तमें यह दवा

देकर इलाज करना पड़ता है। नहाने या बदन धोनेके बाद, बिछावनकी गर्मीसे या आधी रातके बाद, रोगका बढ़ना इस दवाके प्रयोगका प्रधान लक्षण है। सलफर प्रयोगके पहले कभी कैल्क-कार्ब न देना चाहिये।

(२७) साइलिसिया *।—("तन्तु-जायु" अध्यायमें साइलीसिया देखिये) शीर्णता रोग, पुष्ट भोजन मिलनेपर भी बच्चेका शरीर न बढ़ता हो और सूखता जाता हो—बच्चेके हाथ-पैर पतले लिकलिक, चलना या बैठना सीखनेमें देर, पेट बड़ा, चेहरा बुड्ढोंकी तरह, देहकी तुलनामें सर बड़ा रहता है, माथेका हाड़ नहीं जुड़ता; सरमें ज्यादा पसीना होता है; टीका (vaccination) के दुष्परिणामसे उत्पन्न बीमारियोंमें इसकी ऊँची शक्ति मन्त्रकी तरह काम करती है। सुई, काँटा, मछलीका काँटा वगैरह शरीरमें घुसनेपर सिलिकाके सेवनसे सहजमें ही उसके बाहर निकलनेमें सहायता मिलती है; श्लैष्मिक-झिल्ली, ग्रन्थि, अस्थि, और सन्धि ग्रन्थियोंकी सूजन; अंगुलबेढ़ा, नासूर, तरह-तरहके फोड़े, गण्डमालासे पैदा हुआ घाव, साइलिसियाके निर्वाचन का प्रधान क्षेत्र है। बेचैनी, मस्तकमें बदबूदार पीव-भरा पपड़ी जमना। चर्बीकी कमीकी वजहसे हाथ-पैरका पतला पड़ जाना; हड्डी और हड्डीको ढकनेवाली चमड़ीमें पीव

* साइलिसिया शब्द विशेषण है। इसके बदले "सिलिका" शब्द व्यवहार करना चाहिये।

पैदा हो जाना, सर दर्द, गर्दनके पिछले भागसे सर-दर्द आरम्भ होकर समूचे माथेमें फैल जाता है। गहरी कब्जियत, जली झामेकी तरह मल, खूब काँखनेपर कुछ निकलकर फिर मलान्त्रमें घुस जाता है। पूर्णिमा और अमावस्याके समय रोगकी वृद्धि। आँखमें नासूर, नखके कोनेमें जखम ; नख नष्ट हो जाना, चर्मरोगका शीघ्र आरोग्य न होना, मलान्त्र या शरीरके किसी भी स्थानमें नासूर, पुराने जखममें फिरसे पीव हो जाना। पाखाना होनेके समय मलान्त्रका फट जाना, शरीरमें खट्टी गन्ध, शरीर ठण्डा प्रभृति लक्षणोंमें भी साइ-लिसियाको स्मरण करना चाहिये।

(२८) सिकेलि-कौर।—मस्तिष्क और पीठकी रीढ़के स्नायु-मण्डलपर इसकी प्रधान क्रिया है। क्षीण, मलिन चेहरा और चिड़चिड़ा मिज़ाज रहनेवाले व्यक्तियोंकी बीमारियोंमें, खासकर स्त्रियोंकी बीमारियोंमें यह दवा ज्यादा फायदा करती है। जिन्हें ज्यादा रक्त-स्राव हुआ करता है। ऐसी धातुवालोंके लिये यह दवा विशेष लाभदायक होती है। स्त्रियोंको ऋतुस्रावके समय यदि स्राव आरम्भ होकर बन्द हो न होना चाहे, पानीकी तरह पतले रक्तका बराबर स्राव होता रहे या गर्भ-स्रावके बाद इस ढङ्गका स्राव हो, सिकेलि बहुत ज्यादा सहायता करता है। यदि वृद्ध मनुष्योंका कैन्सर प्रभृति दूषित फोड़ा जल्दी आराम न हो और माँसके धोवनकी तरह उससे रक्त बहा करे या सूखा सड़न रोग (गैंग्रीन) को

बीमारी हो जाये या रक्तार्बुद खूब चुनी हुई दवासे भी आरोग्य न हो, तो ऐसी अवस्थामें सिकेलि ही महौषध है। पक्षाघात ; प्रसवका दर्द, प्रसवके बादका दर्द, रक्त स्राव (खासकर चीणाङ्गी स्त्रियोंका)। **हैजा**—अकड़न, ऐंठन; हैज़ामें शरीरमें दाह—हमेशा हवा करनेके लिये रोगी कहा करता है ; हाथ-पैर अवश हो जाते हैं और श्वासरोधका भाव रहता है ; अनजानमें कमजोर करनेवाले हरे रङ्गके बहुत ज्यादा दस्त ; समूचा शरीर ठण्डा पर रोगी शरीरमें असह्य दर्दके कारण छटपटाया करता है, गरम प्रयोगसे या आवरणसे जलन घटनेके बदले बल्कि बढ़ जाती है, ठण्डसे आराम मिलनेके लिये जमीनपर सोना चाहता है। आमाशयसे रक्त-स्राव, अधिक परिमाणमें और अधिक दिवस स्थायी ऋतु, **गर्भ-स्रावकी आशङ्का** [तीसरे अथवा चौथे महीनेके गर्भ-स्रावकी आशङ्का की सिकेलि एक उत्कृष्ट दवा है (सैवाइना।] **प्रसव-क्रिया जल्दी होनेके लिये,** सिकेलि (खासकर θ या **निम्नक्रम**) **सेवन कराना बहुत बुरा काम है।** प्रसवके समय यदि दर्द नियमित रूपसे न हो या प्रसव-द्वार फैल जानेके बाद भी अनियमित दर्दके कारण प्रसव न होता हो, तो सिकेलि सुन्दर काम करता है।

(२९) **सिना***।—अन्त्र-नालीपर इसकी प्रधान क्रिया है। सिनाके बच्चेके पेटमें क्रिमि रहती है, मिज़ाज़

---

* इसका असली उच्चारण "साइना" (Cina) है।

चिड़चिड़ा रहता है, आँखोंके नीचे काला दाग पड़ता है यह वह मांगता है, किसी तरह सन्तुष्ट नहीं होता, हमेशा गोदमें चढ़कर घूमना चाहता है, रें-रें किया करता है, दिनभर खाना चाहता है, मीठा खानेका प्रबल आग्रह। हमेशा नाक खुजलाता है (क्रिमि रहे या न रहे), नाकमें अंगुली डालता है, चिड़चिड़ा स्वभाव, बच्चा हमेशा ही घूंट लेता रहता है, मानो कुछ गलेमें अटका है, एकाएक बार-बार तेज़ बोखार ; नींद न आना, धुंडी खाँसी, खींचन या अकड़न, दाँत कड़कड़ाता है, अघोर अवस्था (क्रिमिकी वजहसे), आँतोंमें क्रिमि, भोजनमें अरुचि या बुरी भूख, रातमें अनजानमें पेशाब हो जाना, नींदमें बिछावनमें छटपटाता है, दूधकी तरह पेशाब, हूपिङ्ग काफ या प्रबल खाँसी, क्रिमिसे पैदा हुए कितने ही उपसर्ग ; अविराम-ज्वर (क्रिमि रहे या न रहे)। प्रभृति लक्षणोंमें सिनाका प्रयोग करना चाहिये।

(३०) हिपर-सल्फर।—चमड़े और श्वास-यन्त्रकी श्लैष्मिक झिल्लीपर इसकी प्रधान क्रिया है। पीव पैदा करना और बढ़ाना इसका प्रधान गुण है ; ठण्डी हवा या सामान्य दर्द भी बिलकुल सहन नहीं होता ; स्पर्शद्वेष ; थोड़ी-सी चोट या छिल जानेसे भी जिन्हें पीव पैदा हो जाता है,—पीव पैदा करना या पीव बन्द करना। बोरिक वगैरह डाक्टरोंका कहना है, कि

फोड़ा पकानेके लिये और फाड़नेके लिये (अर्थात् पीव पैदा करनेके लिये) हिपर निचला क्रम (जैसे, २x विचूर्ण) देना चाहिये और फोड़ा बैठा देनेके लिये (अर्थात् पीव पैदा होना रोकनेके लिये) हिपर उच्च क्रममें (जैसे ३०-२००) देना चाहिये। खून और पीव-भरी फुन्सी, पीव-भरा जखम, सड़ा घाव, चारों ओर लाल रङ्ग, सूखी, ठण्डी, हवा लगकर घर-घर खाँसी, घुंडी या दमा ; "गलेमें मानो मछलीका काँटा अटका हुआ है" मालूम होना (गलत्ततमें पीव होनेका यह पूर्व लक्षण है), टपक या खोंचा मारनेकी तरह दर्द ; शीत मालूम होना, दिन-रात पसीना, पेशियोंकी कमजोरीकी वजहसे कष्टसे पाखाना होता है और धीरे-धीरे पेशाब होता है, पारेके अपव्यवहारसे पैदा हुए उपसर्ग ; सोरा और उपदंश धातु ; स्वरभङ्ग, श्वास-कष्ट (खासकर घुंडी खाँसीकी पहली अवस्थामें) फोड़ा, अंगुलबेढ़ा, माथेमें कड़ी फुन्सियाँ, पुरानी खाँसी, पुराना अग्निमान्द्य, बवासीर, कब्जियत कानसे पीव गिरना, गर्मीके घाव, और बदबूदार पीव निकलने में इसका प्रयोग होता है। गण्डमाला धातुग्रस्त मनुष्योंके लिये, पारेके अपव्यवहारसे पैदा हुई बीमारीमें और पश्चिमी हवासे रोग बढ़नेके लक्षणमें, यह दवा बहुत फायदेमन्द है।

(३१) हैमामेलिस।—खूनको ले जानेवाली रक्त-वहा शिराओंपर इसकी प्रधान क्रिया है। शरीरकी किसी

भी शिरासे काले रङ्गका (passive) रक्त-स्राव, हैमा-मेलिस प्रयोगका प्रधान लक्षण है। खूनी बवासीर, मलद्वार और कमरमें बहुत दर्द, भार और जलन; आभ्यन्तरिक यन्त्र (जैसे,—आँखें, कान, नाक, फेफड़े, जरायु, मलद्वार वगैरहसे) काला-काला थक्का-थक्का रक्त-स्राव। स्त्री-जननेन्द्रियकी नसें फूलीं, जरायुसे ज्यादा मात्रामें काला रजः-स्राव होनेपर इस दवका भीतरी और बाहरी प्रयोग होता है।

[मेटीरिया-मेडिकाका विशेष ज्ञान प्राप्त करनेके लिये हमारा प्रकाशित "पारिवारिक भेषज-तत्व" और पूर्ण ज्ञान प्राप्त करनेके लिये "भेषज-लक्षण-संग्रह" ग्रन्थ सब मनोयोगसे पढ़ना चाहिये।

———

तन्तु-जायु

(टीश्यू रेमिडीज या बायोकेमिक दवा)

बायोकेमिक निदान-तत्वके निकालनेवाले डाक्टर सुसलर कहते हैं, कि खूनका सफेद अंश या अण्डलाल (albumen) मेद, शक्कर, पानी अम्ल, क्षार आदि पदार्थ (inorganic salts अजैव लवण) जीव-तन्तु और खूनके प्रधान उपादान हैं। कैल्केरिया-फ्लोरिका, कैल्केरिया-फास्फोरिका, कैल्केरिया-सलफ्यूरिका, फेरम-फास्फोरिकम, केलि-म्यूरियैटिकम, केलि-

फास्फोरिकम, कैलि-सल्फ्यूरिक, मैग्नेशिया-फास्फोरिका, नेट्रम-म्यूरियैटिकम, नेट्रम-फास्फोरिकम, नेट्रम-सल्फ्यूरिकम और साइलिसिया—ये बारह साल्ट (या नमक) से जीव-देहके सभी तन्तु (tissue) या अणुकोष (cells) बने हैं। वे कहते हैं, कि इन साल्टमेंसे किसी एकको भी शरीरमें कमी होनेपर, तन्तुओंका क्षय होता है और बीमारी पैदा हो जाती है और उनका अभिमत यह है, कि उस खास साल्टसे उस क्षयको फिर भर देनेसे बीमारी अच्छी हो सकती है। इसीलिये उन्होंने उन बारह नमकोंका नाम "तन्तु-जायु (Tissue Remedies)" रखा है। उनका कथन कितना प्रामाणिक है, उस बातपर इस जगह विचार करना वृथा है। हाँ, नीचे लिखी दवाएँ होमियोपैथीके मतसे अच्छे शरीरपर परीक्षा की जा चुकी (proved) हैं और रोगी शरीरमें बार-बार फायदा करनेके कारण, हमलोगोंने इन बारह दवाओंके प्रधान लक्षण इस पुस्तकमें शामिल कर दिये हैं। डा० सुसलर पहले होमियोपैथ थे। इसके बाद अपने नामको स्थायी करनेके लिये ही शायद उन्होंने इस मतका प्रचार किया है।

होमियोपैथिक फार्माकोपियाके मतसे ही बायोकेमिककी दवाओंका क्रम तैयार होता है। सुसलर साहब साधारणतः ६x-१२x विचूर्ण व्यवहार करते थे; पर होमियोपैथ सभी क्रम (१x-१०००) अवस्थाके अनुसार व्यवहार किया करते हैं।

(१) कैल्केरिया-फ्लूयोरिका १२x, २००x ।—हड्डीमें अर्बुद ; कड़ा अर्बुद हड्डीके जोड़वाली जगहका बढ़ना, गाँठें फूलना, गाँठोंका कड़ा होना, आँखोंमें मोतिया-बिन्द, स्नायुओंमें सूजन, भगन्दर रोगमें नासूर, आँत उतरना, बवासीर, जरायुसे स्राव, कानमें कड़ा मैल, हाथ फटना, अलग असमान या दर्द-भरे दाँत, बच्चोंको देरसे दाँत निकलना, खाँसी और उसके साथ थक्का-थक्का पीला बलगम निकलना, शारीरिक यन्त्रोंका (खासकर जरायुका) अपनी जगहसे हटना, हृत्पिण्ड कोष और शिराओंका बढ़ना, स्वरयन्त्र या कण्ठनाली सूखा मालूम होना।

विश्रामके समय और तर ऋतुमें रोगका बढ़ना और गर्म प्रयोगसे दबना—इस दवाका विशेष लक्षण है।

(२) कैल्केरिया-फास्फोरिका २x, २००x ।—अण्डलाल (albumen) का निकलना, खूनकी कमी भोजन भरपूर मिलनेपर भी बच्चेका शरीर पुष्ट न होना ; अजीर्ण, शरीरका सूखते जाना, शरीरकी टूटी हुई हड्डीका जोड़ अच्छी तरह न बैठना, बच्चेका ब्रह्मतालु न भरना, हड्डीकी बीमारी, देरसे दाँत निकलना, घुटनेके जोड़की जगह सफेद सूजन, अकड़न खींचन और सुस्ती, हाथ-पैर ठण्डे, रक्त-सञ्चालन क्रियाकी गड़बड़ी, वंशगत धातुदोषसे पैदा हुआ गुटिका दोष (यक्ष्मा वगैरह) मूत्रपिण्डकी बीमारी, श्वेत-प्रदर, हरित्-रोग, रातका पसीना, जखम, दाँतोंका जल्दी-जल्दी

नष्ट होना, बरसातमें वात होना, माथेमें जल-सञ्चय, पीठकी रीढ़ और गर्दन कमजोर, सरमें दर्द, कपालमें बहुत पसीना (मोटे ताजे बच्चेको)। ऋतु परिवर्त्तन, तरी या हिलने-डोलनेसे रोगका बढ़ना और सोनेसे घटना इस दवाका विशेष लक्षण है।

(२) कैल्केरिया-सलफ्युरिका* ३x, २००x। —फोड़ा, सर्दी, सफेदी-लिये पीला स्राव, शरीरके किसी स्थानमें पीव पैदा हो जानेकी तैयारी, आँखोंका नासूर, कनीनिकामें (cornea) जखम या पुराना आमाशय या पुराने जखमसे पतला पीव निकलना या उसकी वजहसे धीमा बोखार होना, मसूड़े में छाले, यकृत और मूत्रयन्त्रकी बीमारी, न्युमोनिया और ब्राङ्काइटिसकी तीसरी अवस्थामें सरमें दर्द, मिचली, स्नायु-शूल, शरीरमें स्पर्शानुभव शक्तिकी ज्यादती, फल और खट्टी चीज खानेकी इच्छा, फुन्सी या फोड़ा (खासकर मुँहमें), पुराना वात, चमड़ेकी बीमारी, ऐलोपैथिक मतसे किसी बीमारीका इलाज होने बाद यह दवा खूब काम करती है।

* पहलेके शरीर-विधानके जानकारोंका मत खण्डनकर जर्मन शरीर-विधानके जाननेवाले कहते हैं, कि कैल्केरिया-सलफ्युरिका जीवके शरीरमें नहीं है, इसलिये, मृत्युके कुछ ही दिन पहले, २५ वर्षतक इलाज करने बाद डाक्टर शुसलरने इस दवाको अपनी मेटीरिया-मेडिकासे निकाल दिया है परन्तु हमलोगोंको इसे छोड़नेकी जरूरत नहीं है, क्योंकि इसने जायु-विचारण या होमियोपैथिक मतसे परीक्षा (Proving) के बाद बहुत ज्यादा फायदा दिखाया है।

(४) कैलिम्यूरियेटिकम ६X विचूर्ण २००X। —प्रदाहकी दूसरी अवस्थामें यह ज्यादा फायदा करता है। यह खासकर श्लेष्मिक-झिल्लीपर काम करता है। सफेद रङ्गका श्लेष्मा निकलना, जीभके पिछले भागमें सफेद या धुमैले रङ्गका दाग, बीमारीकी पुरानी अवस्थामें थक्का-थक्का बलगम, खाँसी, स्वरभङ्ग, सूखा श्लेष्मा, गले या कानकी गाँठका फूलना, वायुनली सम्बन्धी बीमारी, मिचलीके साथ सरमें दर्द, कानमें भों-भों शब्द, मुँहमें जखम, मुखमें लारकी कमी, डिपथीरिया (प्रधान दवा), बदहजमी, मृगी-रोग, वात, वातकी वजहसे जोड़ोंका सूजना, बिवाई फटना, बदन-भरमें रूसी, पृष्ठाघात (Carbuncles), कब्जियत, पाण्डु-रोग, इयुस्टैकियन ट्युबके प्रदाहसे पैदा हुआ बहरापन, कानमें पीव (पुरानी बीमारी), गलेका जखम, पनसाहा माता, चेचक, आरक्त-ज्वर, विसर्प-रोग, अकौता, फेफड़ेका प्रदाह (न्यूमोनिया), फेफड़ेके आवरणका प्रदाह (प्लुरिसि), श्वेत-प्रदर, उपदंश-रोग, प्रमेह, रजःकृच्छ्र, रक्त-प्रदर, शोथ, अतिसार, सान्निपातिक-ज्वर, प्लेग, अजीर्णकी वजहसे दमा, श्वेतसार मिला-पदार्थ खानेकी वजहसे पेटमें दर्द होना वगैरह। भारी चीजें खाना और हिलानेसे रोगका बढ़ना—इस दवाका प्रधान लक्षण है।

(५) कैलि-फास्फोरिकम ३X, २००X विचूर्ण। —यह मांस-पेशी, स्नायु, मस्तिष्क और खूनको

दवा है। मनका सुस्त पड़ जाना (बड़ी उम्रके आदमियोंका भी बच्चोंकी तरह रोना); स्नायविक अवसन्नता, स्नायु-रोग, खूनका बिगड़ जाना, सड़नेवाली अवस्था, सान्नि-पातिक ज्वर, दुष्ट-क्षत, मल और पसीना वगैरहमें बदबू; शरीरके किसी स्थानमें सड़नेकी पहली अवस्था; शरीरभरमें फुन्सियाँ; बदबूदार सर्दी; नाकके छेदसे बहुत बदबूदार श्लेष्मा बहना; पतले दस्त; कानमें दर्द; गर्दन अकड़ जाना; दमा; सर्दी खाँसीके कारण गर्मीके दिनोंका बोखार; आँखें लाल; लक़वाकी तरह अवस्था; मृगी रोग; ज्यादा शराब पीनेकी वजहसे नींदका न आना प्रभृति। पेटमें दर्द, बहुत कमजोरी (शारीरिक या मानसिक)। खूनका रङ्ग काली आभा लिये, नाड़ी कमजोर—गति पहले तेज़, पीछे बन्द, याददाश्तका कम पड़ जाना, बदहजमी, सूतिका ज्वर, काले रङ्गकी चेचक, रक्त-स्राव, शरीरभर रूसी, जरायुसे रक्त-स्राव, अण्डलाल-मिला पेशाब, गुल्म-वायु, उन्मत्तता, नींदमें घूमना, रोशनी या खुली जगहमें जानेसे डर सरमें चक्कर, आमाशय प्रदाह, पाकाशयका जखम, हूप खाँसी, वात, आमवात, नसोंका काँपना, मेहनतकी वजहसे हाँफना या अकड़न, रजआधिक्य।

आवाज़, सर्द हवा लगना, ज्यादा मेहनत या लिखने-पढ़नेसे बीमारीका बढ़ना, धीरे-धीरे घूमना, अच्छी बातें करना, भोजन करना और गर्मीसे आराम मालूम होना आदि इस दवाके लक्षण हैं।

(६) कैलि-सलफ्युरिकम ६X, २००X।—

श्लेष्मामय पीला, गोंदकी तरह स्रावकी और सब तरहकी प्रदाह और श्लेष्माकी तीसरी अवस्थाकी यह बढ़िया दवा है। बहुत तरहके चर्म-रोगमें भी यह फायदा करता है। गलेमें घरघर करनेवाला बलगम और सर्दीके साथ दमा, गला, कान और पाकाशयसे पीले रङ्गका कीचकी तरह श्लेष्मा निकलना, सरमें दर्द (सर्द हवा आराम), रूसी, आगकी आँच लगनेसे मानो सर झुलसा जाता हो; प्रदरका स्राव पीला, शरीरकी तकलीफ (मानो घूमती-फिरती है); शरीरभर दाद या रूसी, शरीरमें आक्सिजनकी कमीकी वजहसे सरमें चक्कर, जाड़ा मालूम होना, दाँतमें दर्द वगैरह। आरक्त ज्वर, छोटी माता, चेचक, विसर्प रोग, वायुनली-भुज-प्रदाह (Bronchitis), घुस्की खाँसी, डिफ्थीरिया, हूप-खाँसी, फेफड़ेका प्रदाह (न्यूमोनिया), हैज़ा, सान्निपातिक ज्वर वगैरह बीमारियोंकी तीसरी अवस्था, मैलेरिया ज्वर, पाकाशयमें श्लेष्माकी वजहसे पाण्डु रोग, शूल-वेदना, पाकाशयमें भार मालूम होना, अजीर्ण, ओंठकी छाल निकल जाना, चेहरा, जीभ, मुँह या किसी भी झिल्लीपर उपत्वक पैदा हो जाना। आधे अङ्गका पक्षाघात, नाककी छेद या कानसे बहुत बदबूदार स्राव निकलना, कानमें अर्बुद, एकज़िमा, विचर्चिका, फोड़ा, खसड़ाके बैठ जानेकी वजहसे पैदा हुए उपसर्ग, नख-रोग वगैरहमें।

कमरेके भीतर (खासकर खिड़की बन्द रहनेपर), गर्म जगहमें या गर्मी के दिनोंमें और सूर्यास्तके बाद ही बीमारीका बढ़ना। ठण्डी हवामें, खुली जगहमें, सूखी मातदिल ऋतुमें आराम मालूम होना आदि इस दवाके लक्षण हैं।

(७) **नेट्रम-म्युरियैटिकम १२x, २००x।— निराशा, अपनेको एकदम निराश्रय समझना, लगातार प्यास, शरीरका बहुत दुबलापन, मुँह सूख जाना, नमक खानेकी प्रबल इच्छा, कब्जियत** इस दवाका प्रधान लक्षण है। खूनकी कमी, चेहरा उतरा हुआ, सरमें दर्द, कलेजेकी धड़कन, मानसिक विषन्नता, गला पतला और क्षीण होना, ओंठ सूखे, ओंठके किनारे जखम, अधर या ओंठके बीचका स्थान फटा, बोखारके दाने, श्लेष्मा लसदार और साफ, अंगुलबेढ़ा, पैरके अंगूठेमें घट्ठा, नखकी बहुत तरहकी बीमारियाँ। **सविराम मैलेरिया ज्वर** (दस-ग्यारह बजनेके समय कँपकँपी होना, शीतावस्थामें या उसके पहले प्यास, गर्म उष्णावस्थामें प्यासका न रहना, सरमें तेज़ दर्द, क्विनाइनसे रुका हुआ बोखार वगैरह उपसर्गमें), साफ़ पानीकी तरह श्लेष्मा बहना, खाने-पीनेको मिलनेपर भी बच्चेका शरीर न बढ़ना, भगन्दर, मसूढ़ा जखम-भरा, पीठमें दर्द (रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो पीठ फटी जाती है); रोगीका शरीर हमेशा तेल लगाया मालूम होता

है ; सफेद लसदार गन्दी लार, एकाएक खूनका दौरान रुक जाता है, किसी भी नयी बीमारीकी वजहसे हृत्पिण्डकी पेशियोंका पक्षाघात, फेफड़ा, पाकाशय वगैरहसे रक्त-स्राव ; ज्यादा मात्रामें शराब पीनेकी वजहसे शोथ, गर्मीके दिनोंकी सर्दी, खाँसीका बोखार, गहरी नींद या अनिद्रा, मृगी रोग और उसके साथ मुँहसे फेन निकलना, सर्दी-गर्मी (६x सेवन और ब्रह्म-तालुपर ठण्डा पानी सींचना। सावधान, सरके पीछे या गर्दनके पीछे **पानी न लगे।**) वरें, भौंरा और विषैले साँपका काटना, क्विनाइनसे रुका हुआ बोखार, आमवात या बदनकी खुजली, अच्छा खान-पान रहनेपर भी रोगीका शरीर सूखते जाना, सन्धिवात।

जाड़ेके दिनोंमें, समुद्रके किनारे रहनेपर, पेशाबके बाद, क्विनाइन, आर्सेनिक, मर्करि, नाइट्रेट आफ सिलवर, सलफर वगैरहके अपव्यवहारसे—रोगका **बढ़ना।** खुली जगहमें रहना, ठण्डे पानीसे नहाना, दाहिनी करवट सोनेपर रोगीको **आराम मालूम होना** इसका लक्षण है। "नेट्रम-म्यूर" देखिये।

(८) **नेट्रम-फास्फोरिक २x, २००x।**—यह अम्ल-रोगकी बढ़िया दवा है। खट्टी डकार, कै, वात या सन्धिवात, पसीनेमें खट्टी बू ; शरीरमें यूरिक-एसिड (मूत्राम्ल) रहना। आँखोंसे पीले रङ्गका स्राव, मूत्राशयमें

पीले रङ्गका स्राव और जलन, सविराम मैलेरिया ज्वर और उसके साथ खट्टो कै, ज्यादा परिमाणमें खट्टा दूध निकलना। शुक्रमेह, मेरुदण्ड चोण, शरीर कमजोर, अम्लसे पैदा हुआ अतिसार, बच्चेके शरीरसे खट्टी बदबू आना, ज्यादा चीनी या मिश्री देकर दूध पीनेकी वजहसे बच्चोंमें लैक्टिक-एसिड बढ़ जानेसे पैदा हुई बीमारियाँ, मेद या रस बहनेवाली ग्रन्थिका फूलना, प्रमेहकी बीमारी, छातीमें जलन, मुँहमें पानी भर आना, पाकाशयमें अम्ल, अम्लसे पैदा हुई बदहजमी, पीव पैदा होना, मृगी रोग, विसर्प रोग, टीका लेनेके दुष्परिणामके कारण रोग, सरमें दर्द, सरमें चक्कर, साँसमें खट्टी गन्ध, आँखोंका प्रदाह, एक कानका गर्म और लाल होना और उसके साथ खुजलाहट रहना, नाक खुजलाना, नाकमें हमेशा बदबू मालूम होना, मुँह लाल होकर फूल उठना, खट्टा और ताँबेका स्वाद, जीभकी जड़में पीला दाग, पाकाशयमें जखम, पाकाशयमें वायु इकट्ठा होना; **क्रिमि रहनेकी वजहसे पेटमें दर्द या रक्त दूषित हो जाना**, कब्जियत, पाखाना फिरते समय काँखना, मलका रङ्ग सफेद या हरा; **बहुमूत्र रोग, अस्त्र रोगकी वजहसे पेशाब रोकनेकी ताकत न रहना।** श्वेत-प्रदर; चयकास; हृत्पिण्डका काँपना, कमजोरीकी वजहसे पैरका लड़खड़ाना, जाँघ, एँड़ी वगैरह सन्धि स्थानोंमें दर्द; खुजलीकी वजहसे नींद न आना, अकौता—शहदके रङ्गका स्राव, बच्चेका शरीर पतले होते

जाना, वज्रपातके समय, चर्बी-मिला या मीठा भोजन करनेसे बीमारीका बढ़ना।

(८) नेट्रम-सल्फ्युरिकम १२x, २००x।—पित्तसे पैदा हुई सभी बीमारियोंमें और जिनके शरीरमें पानीका हिस्सा ज्यादा है, उनके लिये यह एक महौषध है। पित्त-ज्वर, पित्त-मिली तीती कै, डकार या पतले दस्त, पित्तसे पैदा हुआ सरका दर्द, तीता स्वाद, मैली जीभ; बायोकेमिकके मतसे यह इन्फ्लुएञ्जाकी एकमात्र दवा है। पाण्डु-रोग, शीत ज्वर, पाकाशयमें वायुके कारण दर्द, मैलेरिया बोखार, यकृतकी बीमारी, सर्दी पीला या पीली आभा लिये स्राव, बहुमूत्र रोग, मूत्रपिण्डकी बीमारी; अजीर्ण रोग; दमा; वायु-भुजनलीमें श्लेष्माका जमा होना और साथ ही पीले या सब्ज रङ्गका बलगम निकलना नींदके समय हाथ-पैर मरोड़ना या खींचन, प्रलाप, मस्तिष्कमें चोटकी वजहसे मानसिक यातना, कब्जियत, हैज़ा, अतिसार, बच्चोंका हैज़ा, सीस-शूल Lead-colic or printer's colic) रोगमें २x सेवन कराना चाहिये। खूनमें श्वेत-कणकी अधिकता या लाल कणकी कमी; पित्त-कोषमें दर्द; पुराना प्रमेह रोग, विसर्प रोग, वात या सन्धिवात (खासकर श्लेष्मा-प्रवण धातुवाले मनुष्योंको) यकृतमें बीमारीकी वजहसे शोथ, मूत्रावरोध या पेशाब रोकनेकी ताकत न रहना, स्नायु-

शूल (मैलेरियासे पैदा हुआ), स्तनमें दूध कम करनेके लिये, पलकोंका सट जाना (रोगी रोशनीमें जानेसे डरता है); कर्ण-शूल, कानमें ठं-ठं आवाज़ मालूम होना (नाकसे गर्मी रोगके कारण) बदबूदार पीव बहना, नाक और मुँहमें (मिर्चाकी तरह) जलन, किसी तरहकी भोजनकी चीज़में स्वाद न मालूम होना, दाँतोंके दर्द और उसके साथ मसूढ़ेमें जलन (धूम्रपानसे आराम मालूम होना), पथरी रोग, गर्भावस्थामें कै, खाँसनेके समय छातीमें दर्दकी वजहसे छातीको दबा रखना, पैर और एँड़ियोंमें सूजन, गहरी नींद, दमाकी वजहसे रातमें नींद खुल जाना, फोड़ा, **दाद** (२००)।* बहुमूत्रमें (नेट्रम-फासके साथ पर्यायक्रमसे व्यवहार करनेपर बहुत फायदा होता है।)

बरसाती हवा, नम जमीन या जलाशयके पास रहना, पानीसे पैदा हुए पौधे या मछली खाने या बायीं करवट सोनेसे रोगका **बढ़ना**, सूखी गर्म खुली जगहमें सोनेकी वजहसे बीमारीका **आराम** मालूम होना, इस दवाका खास लक्षण है।

(१०) फेरम-फास्फोरिकम १X, २००X।— आँख कान, दाँत, पाकाशय, जखम वगैरह जिस किसी स्थानमें

---

* डाक्टर वनडार गल्टेज कहते हैं, कि नेट्रम-सल्फ २०० दादकी अव्यर्थ दवा है। हमलोगोंने भी १९१० ई० में बरसातके समय इस दवाकी ५०० शक्ति खिलाकर एक बालकको एकदम अच्छा कर दिया है।

प्रदाहकी पहली अवस्थामें इसका प्रयोग होता है। वायु-नली भुज-प्रदाह (ब्राङ्काइटिस), फेफड़ेका प्रदाह (न्यूमोनिया), फुसफुस वेस्ट-प्रदाह (प्लुरिसि). सभी प्रदाहिक बोखार, सरका दर्द, सर घूमना। वात, कटिवात, विसर्प-रोग, गलेका जखम, खाँसी, सर्दी, मस्तकमें श्लेष्मा वगैरह रोगकी पहली अवस्थामें चमकीला लाल खून जाना, बवासीर, आमाशय, नाकसे खून जाना, फोड़ा, पीठका फोड़ा, शरीर जहाँ-तहाँ फूला और उन-उन जगहोंका गर्म रहना. पेशाब रोकनेकी ताकतका न रहना, सरके दर्दकी वजहसे माथेमें टनक, सर्दी लगनेकी वजहसे दर्द-भरा अतिसार, बदहजमी, कै होना।

फिरम फास ३x की जलपट्टी या मरहम, अर्श रोगमें लगाना चाहिये।

हिलने-डोलने या सेंकनेसे ऊपर लिखी बीमारियोंका बढ़ना और सर्द प्रयोगसे घटना होनेपर, फिरम-फास फायदा करता है।

(११) मैग्नेशिया-फास्फोरिका १X, २००X।— ऐंठन, अकड़न, स्नायुशूल वगैरह बहुत तरहकी दर्दोंमें यह बहुत ज्यादा फायदा करता है। खूब गर्म पानीके साथ नीचे क्रमका विचूर्ण सेवन करना चाहिये, इससे दर्द घट जाता है। सर, मुँह दाँत, पाकाशय वगैरहमें दर्द, स्नायु-शूल, प्राण

शक्तिकी कमी, अकड़न, खींचन, क्रुप खाँसी, पेशियोंमें अकड़न, धनुष्टङ्कार, आक्षेपकी वजहसे पेशाबका रुकना, आक्षेपके साथ खाँसी, शरीर काँपना, इच्छा न रहनेपर भी मुँह तथा हाथ-पैरोंकी पेशियोंका काँपना, ज्यादा दिनोंतक शराब पीनेकी वजहसे बहुत तरहके उपसर्ग, क्लर्क वगैरहका हाथ काँपना गुल्म-वायु, बहुत खुजलाहट, हृत्पिण्डमें दर्द, दमा, खूनी बवासोर, पानीकी तरह पतली सर्दी निकलना (ठण्डमें बढ़ना, गर्मीमें घटना) वात-वेदना, दाँती लग जाना, हिचकी, लकवा की वजहसे प्रत्यङ्गोंका काँपना, तोतलाना, शरीर भर खुजली, तालुमूल-प्रदाह, पित्त-शिला और उसके साथ शूल-वेदना (३x गर्म पानीके साथ सेवन और बाहरी प्रयोग) मिचली या कै, पाकाशयमें वायु इकट्ठी होना, मृगी, रोग, जम्हाई आना, बहुत ज्यादा पसीना होना ; नींद न आना।

धीरे-धीरे छूने या सर्दी लगनेसे दर्दका बढ़ना (खासकर दाहिने अङ्गका, सेंकने, जोरसे दबा रखने, मलने या शरीरको दोहरा मोड़नेसे दर्द कम होना इस दवाका लक्षण है।)

(१२) साइलिसिया २X, २००X ।— पृष्ठाघात, अंगुलबेढ़ा, जखम, फोड़ा, व्रण, टीका लगवानेसे पैदा हुआ घाव, अर्बुद वगैरह जिन सब प्रदाहोंसे पतला पीव निकलता है। मोटे-ताजे बच्चोंके मस्तकमें पसीना, पेट बड़ा, पर हाथ-पैर छोटे, कब्जियत, मलका कुछ अंश निकलकर फिर भीतर घुस जाता है ; शरीरमें जीवनी

शक्ति और गर्मीकी कमी, थोड़ेमें ही सर्दी लग जाना, सरका पुराना दर्द, **पैरमें या बगलमें अस्वास्थ्यकर बदबू-दार पसीना,** हड्डीका जखम, जाँघकी सन्धिकी बीमारी वगैरह हड्डीके रोग, रातमें पसीना (खासकर माथे और गर्दन के पीछे), बहुत दिनोंतक ठहरनेवाला धीमा बोखार, यक्ष्मा रोग, पुराना वात या सन्धिवात, शारीरिक ताकतकी बनिस्वत मानसिक शक्तिकी ज्यादतीकी वजहसे जल्द क्लान्त हो पड़ना, सुननेकी ताकतकी ज्यादती, अनमना रहना, न बोलना और चुपचाप बैठे रहनेकी इच्छा करना, मिचली, भीतर खूब सर्दी मालूम होना, माँस या गर्म भोजनसे अरुचि, केशोंका झड़ जाना, **पैरका पसीना बन्द**❀ होनेकी वजहसे आँखोंमें मोतियाबिन्द, पक्षाघात, संन्यास रोग, बहरापन, नाककी ठोर लाल होना या फोड़ा हो जाना, नाककी हड्डीमें अर्बुद या घाव और उससे पीव बहना, जीभ या ओंठके किनारे घाव, श्वेत-प्रदर, स्नायुशूल, नाककी श्लैष्मिक झिल्लीके मोटेपनकी वजहसे नाकका बन्द हो जाना, पत्थर काटनेवाले या जांतावालोंका दमा पथरी रोग, आँखमें पीव होना, जांघकी सन्धिमें सूजन, मृगी रोग (अमावस्या या पूर्णिमाको बढ़ना), दर्दवाला बवासीर, बदबूदार पतले दस्त, भगन्दर, मूत्राम्ल या यूरिक एसिड ;

❀ पसीना बन्द करनेके लिये बहुतसे आदमी फुट-पाउडर (foot Powder) व्यवहार करते हैं। इससे पसीना तो तुरन्त बन्द हो जाता है, परन्तु ऊपर लिखी कड़ी बीमारियाँ पैदा हो जाती हैं। साइलिसियाके प्रयोगसे बदनका पसीना और उपर्युक्त बीमारियाँ शान्त होती हैं।

पुराना प्रमेह रोग, स्तन या स्तनके बोंटेमें जखम, पुराना भुज-नली प्रदाह, क्षयकाससे पैदा हुआ फेफड़ेका फोड़ा, हृत्पिण्डका जोरसे काँपना, पुरानी बीमारियाँ, खूनकी उत्तेजनाकी वजहसे नींदका न आना ("साइलिसिया" देखिये) ।

अमावस्या और पूर्णिमाकी रातमें, ठण्डी हवामें रोगका **बढ़ना**, उत्ताप या गर्म कोठरीमें, सरमें गर्म कपड़े बाँधने या खूब गर्म पानीमें नहानेसे बीमारीका **घटना**, इस दवाका खास लक्षण है ।

अङ्ग विशेषकी दवाएँ

दाहिना अङ्ग आक्रान्त होनेपर :—आराम, आर्जेण्ट-नाई, एपिस, कोलोसिन्थ, कैन्थरिस, कैल्क-कार्ब, चेलि, नक्स-वो, पल्स, बेल, ब्रायो, बोरैक्स, बैप्टीशिया, सिकेलि, लाइको ।

बायाँ अङ्ग आक्रान्त होनेपर :—ऐसाफिटिडा, आर्ज-नाइ, फास्फो, इयुफोर्बिया, क्रोकस, कैप्सिकम, मेजेरियम, लैकेसिस, स्टैनम, साइना, सल्फ, साइलिसिया ।

दाहिना और बायाँ अङ्ग पर्यायक्रमसे (alternately) आक्रान्त होनेपर :—ऐगा, ऐण्टिम-क्रुड, लैकेसिस ।

किसी अङ्गके विपरीत दोनों कोने (diagonally) आक्रान्त होनेपर :—ऐगा, फास्फो ।

२। भेषज-शक्ति और भेषज-क्रिया-स्थितिकाल

सम्बलित

ग्रन्थोक्त भेषज-तालिका



सूचना

[दि = दिन। घ = घण्टा। वि = विचूर्ण।]

इस अनुच्छेदकी हरएक सफेमें चार खाने हैं। पहले वर्णानुक्रमसे हिन्दीमें दवाओंके **नाम**, दूसरेमें उनके **संक्षिप्त नाम**, तीसरेमें भेषज-शक्ति (drug potency) किंवा बराबरसे व्यवहारमें आनेवाली दवाओंका क्रम (dilutions) या "शक्ति (potencies)" और चौथे स्तम्भमें उस दवाकी शक्तिका **स्थिति-काल** (duration of action of the potentised drug—अर्थात् शक्तिकृत दवाओंका कार्य-फल शरीरमें कितनी देरतक* ठहर सकता है), लिखा गया है।

---

* किसी होमियोपैथिक दवाका स्थितिकाल, रोगकी प्रकृति और रोगीपर बिलकुल निर्भर करता है (Dr. Gibson Miller's *Relationship of Remedies* पृष्ठ १ देखिये)। इसीलिये, चौथे स्तम्भ (खाने) का मतलब साधारण स्थितिकाल समझना चाहिये। जैसे—नक्स-वोमिकाका कोई डाइल्यूशन सेवन करनेपर उसका कार्य-फल हमेशा एकसे सात दिनोंतक

दवाका नाम	संक्षिप्त नाम	क्रम या डा०	स्थितिकाल
अर्जेण्टम-नाइट्रिकम	आर्ज-नाई	३—३०	३० दिन
अर्जेण्टम-मेटालिकम	आर्ज-मेट	३—६ वि	२१-३० दिन
आरम म्यूर-नेट्रो	आरम मिनेट्रो	२—३ वि	—
आरम-मेटालिकम	आरम	३x वि ३०	५०-६० दिन
आस्त्रिया-वार्जेनिका	आस्त्रि	१—३	—
आस्मियम	आस्मि	६	—
आइबेरिस	आइबे	θ—३	—
आइरिस वर्सिकलर	आइरि	θ—३०	—
आयोडियम	आयोड	θ, ३, ३०	३०-४० दिन
आर्टिका-युरेन्स	आर्टि	θ—६x	—
आर्निका-माण्टेना	आर्नि	x—३, २००	६-१० दिन
आर्सेनिकम-आयोड	आर्स-आयोड	३x, ३ वि	—
(पानीके साथ विचूर्ण खाना मना है)			
आर्सेनिकम-एल्बम	आर्स	३x, २००	३६-४० दिन
आर्सेनिकम-ब्रोम	आर्स-ब्रोम	θ—(पानीके साथ)	—
आर्सेनिकम-हाइड्रो	आर्स-हाइड्रो	३	—
आर्सेनिकम-सल्फ-फ्लो	आर्स-सल्फ	३ वि	—

या ऐकोनाइटके क्रमका कार्य-फल आध घण्टेसे लेकर दो दिनोंतक, रोगीके शरीरमें मौजूद रहता है।

※ स्वनामधन्य फ्रेंच डाक्टर जारने कहा है, कि साधारणतः नयी बीमारीकी तेजीके अनुसार किसी होमियोपैथिक दवाका स्थिति-काल कम-से-कम १५ मिनटसे लेकर ४८ घण्टेतक और पुरानी बीमारीमें उसका

दवाका नाम	संक्षिप्त नाम	क्रम या डा०	स्थितिकाल
इयुकैलिप्टस	इयुकैलि	θ	—
इयुपैटोरियम-पर्पि	इयुपैट-पर्प	१	—
इयुपैटोरियम-पार्फो	इयुपैट-पार्फ	θ—३	१-७ दिन
इयुफोर्बियम	इयुफोर्बि	३—६	५० दिन
इयुफ्रेशिया	इयुफ्रे	θ—३	७ दिन
इयुरेनियम्-नाइट्रि	इयुरे	२—३ वि	—
इग्नेशिया	इग्ने	θ—२००	२ घ० ८ दिन
इन्फ्लुएञ्जिनम्	इन्फ्लु	३०-२००	—
इनैन्थि (उच्चारण "औनन्थि" किसीके मतसे)" "औनैन्थि" देखिये।			
इपिकैकुआन्हा	इपि	३x—३०	२ घ० ४ दिन
इरिजेरन	इरिजि	θ—३	—
इलैटेरियम	इलैटे	२—६	—
इलैप्स-कोरालिनस	ईलैप्स	६—३०	—
इस्कूयलस	इस्कूय	θ—३	३० दिन
इस्कूलस (प्रकृत उच्चारण 'एस्कियुलस') 'एस्कियुलस' देखिये			
इलैपस कोरालिनम	इलैप्स		६—३०
ईथूजा	ईथू	३—३०	२०—३० दिन
एकिनेशिया	एकिनेशिया	θ	—
एपिष-मेलिफिका	एपि	θ—३०	—

स्थितिकाल अन्दाजन ५ दिनसे लेकर ८ दिनतक, मान लिया जा सकता है। इसके बाद (जरूरत पड़नेपर) दवा बदलकर दूसरी दवा दी जा सकती है (Hull's Jahr, 6th American Edition पृष्ठ १५—१७ देखिये)।

दवाका नाम	संक्षिप्त नाम	क्रम या डा०	स्थितिकाल
एपियम ग्रै वियोलेन्स	एपिग्रे	१—३०	—
एबिज-कैनाडेन्सिस	एबिज	θ—३	—
„ नाइग्रा	एबि-नाइग्रा	१—३०	—
एरम ट्राइफाइलम	एरम	३—३०	१-२ दिन
एलैन्थस	एलैन्थ	१—६	—
ऐकालिफा-इण्डिका	ऐकालि	३—१२	—
ऐकोनाइट-नैप	ऐकोन	३x-३०	$\frac{१}{२}$—४८ घ०
ऐक्टिया-रैसिमोसा	ऐक्टि-रै	θ, ३-३०	८-१२ दिन
ऐक्टिया-स्पाइकेटा	ऐक्टि-स्पा	३	१ घ०-२१ दिन
ऐगेव अमेरिकाना	ऐगेव	θ	—
ऐगरिकस-मस्को	ऐगार	३-२००	४० दिन
ऐग्नस कैक्टस	...ऐग्नस	...१—६	८-१४ दिन
ऐङ्गस्टयूरा	...ऐङ्गस्टयू	...३—६	...२०-३० दिन
ऐड्रोपिन	...ऐड्रोपि	...२ वि	... —
ऐण्टिमोनियम-क्रूडम	ऐण्टि-क्रूड	३—६	...४० दिन
ऐण्टिमोनियम-टार्टारि	ऐण्टि-टार्ट	२—३ वि, ६—३०	२०-३० दिन
ऐड्रिनेलिन	...ऐड्रि	...२—३x	— —
ऐनाकार्डियम-ओर	ऐनाकार्डो	३—६	३०-४० दिन
ऐन्थ्रासिनम	...ऐन्थ्रा	...३०	... —
ऐपो मार्फियम	...ऐपोमार्फि	३—६	—

दवाका नाम	संक्षिप्त नाम	क्रम या डा०	स्थितिकाल
ऐपोसाइनम कैनाबिनम	ऐपोसाइन	…θ	… —
ऐब्सिन्थियम	ऐब्सिन्थ	…१—६	… —
ऐग्रोटेनम	ऐग्रो	…३—३०	— —
ऐबिना-सैटाइवा	ऐविनां	…θ (गर्म पानीके साथ सेव्य)	
ऐमिल-नाइट्रोसम	ऐमिल-नाइट्रे	…१x—३	—
ऐमोनियम-कार्ब	ऐमोन-कार्ब	निम्नक्रम ३	४० दिन
ऐमोनियम-कास्टिकम	ऐमोन कास्ट	…१—३	—
ऐमोनियम-पिक्रिक	ऐमोन-पिक	…२—३ वि	—
„ फास	„ फास	३x वि	—
„ बेञ्जोयिक	„ बेञ्ज	२ वि	—
„ ब्रोम	„ ब्रोम	१	—
„ म्यूर	„ म्यूर	३—६	२०-३० दिन
ऐम्ब्रा-ग्रिसिया	ऐम्ब्रा	२—३	४० दिन
ऐर्टिमिसिया-वलगैरिस	आर्टि	१—३	—
ऐरानिया-डायडे	ऐरानिया	६—३०	—
ऐलस्टोनिया-कन्सट्रिक्टा	ऐलस्टो	θ-३x	—
ऐल्युमिना	ऐल्युमि	६—३०	४०-६० दिन
ऐल्युमेन	ऐल्युमे	१—३०	बहुत दिनोंतक
ऐलो-सोकोट्रिना	ऐलो	१—२००	३०-४० दिन
ऐलिट्रस-फेरिनोसा	ऐलिट्रि-फेरि	θ—३	—
ऐलियम-सिपा	ऐलिसि	१—३	—१ दिन

दवाका नाम	संक्षिप्त नाम	क्रम या डा०	स्थितिकाल
ऐलियम-सैटाइवा	ऐलिसै	३—६	—
ऐसक्ले पियस-ट्यूब	ऐसक्ले पिट्यूब	θ—१	४०-६० दिन
ऐसाफिटिडा	ऐसाफि	२—३०	२०-४० दिन
ऐसाराम-युरोप	ऐसाराम	३—६	८-१४ दिन
ऐसिड-ऐक्ज़ैलिक	ऐसि-अक्स	३—३०	—
ऐसिड-ऐसैटिकम	ऐसि-ऐसे	३—३०	१४-२० दिन
ऐसिड-कार्बोलिकम	ऐसि-कार्ब	१—३, २००	—
ऐसिड-नाइट्रिकम	ऐसि-नाई	३x-३०	४०-६० दिन
ऐसिड-पिक्रिकम	ऐसि-पिक्रि	१—६	—
ऐसिड-फास्फोरिकम	ऐसि-फास	२x—३०	४० दिन
ऐसिड-फ्लूयोरिकम	ऐसि-फ्लू	६	३० दिन
ऐसिड-म्यूरियैटिक	ऐसि-म्यूर	१—६	३५ दिन
ऐसिड-लैकटिक	ऐसि-लैक	३—३०	—
एसिड-सलफ्यूरिक	ऐसि-सल्फ	θ—३०	३०-६० दिन
ऐसिड-हाइड्रोसियानिक	ऐसि-हाइड्रो	१—३	—
ओपियम	ओपि	३- २००	७ दिन
ओरिगीनम	ओरि	३	—
ओलियेण्डर	ओलि	३—३०	३-३० दिन
ओसिमम् कैनम	ओसि	३—२००	—
ओनैन्थि क्रोकेटा	ओनैन्थि	३—६	—
कक्यूलस-इण्डिका	कक्यू	३—३०	३० दिन
कक्कस-कैक्टाई	कक्कस	१x वि, ३०	—

दवाका नाम	संक्षिप्त नाम	क्रम या डा०	स्थितिकाल
कण्डयूरैङ्गा	कण्डयू	θ—१x	—
काफिया क्रूडा	काफि	३—२००	१-७ दिन
कास्टिकम	कास्टि	३—३०	५० दिन
कार्डुयस मैरियैनस	कार्डु	θ—३x	—
कार्बो-ऐनिमैलिस	कार्बो-ऐ	३ वि—३०	४०-६० दिन
कार्बो-वेजिटेबिलिस	कार्बो-वेज	१ वि—३०	४०-६० दिन
कार्सिनोसिन	कार्सि	३०—२००	—
कोरैलियम-टियुब्रम	कोरैल	३—३०	—
कोलचिकम	कोलचि	θ—३०	१४-२० दिन
कोलिन्सोनियम	कोलिन्सो	θ—३, २००	३० दिन
कोलेस्टरिनम	कोलेस्ट	३ वि	—
कोलोफाइलम	कोलोफाइ	θ—३	—
कोलोसिन्थ	कोलोसि	३—३०	१-७ दिन
कूप्रम-आर्सेनिकम	कूप्र-आर्स	२—६ वि	—
कूप्रम-ऐसेटिकम	कूप्र-ऐसे	३—६ वि	—
कूप्रम-मेटैलिकम	कूप्रम	६—३०	—
कूप्रबेबा	कूप्रबे	२—३	—
किनिनम-आर्स (चिनिनम-आर्स)	किनि-आर्स (चिनिन-आर्स)	२—३ वि	—
किनिनम-सलफ्यू (चिनिनम-सलफ्यू)	किनि-सल्फ (चिनि-सल्फ)	१x वि—३०	—

दवाका नाम	संक्षिप्त नाम	क्रम या डा०	स्थितिकाल
कियोनेन्थस	कियोनेन्थ		
(चियोनेन्थस)		θ—१	—
केनोपोडियम-ऐन्थे	केनोपोआ		
	(चेनोपोड)	३	—
केलि-आयोडेटम	केलि-आयोड	θ—१२	२०-३० दिन
केलि-आर्सेनिक	केलि-आर्स	३—३०	—
केलि-कार्बोनिकम	केलि-कार्ब	३०-२००	४०-५० दिन
केलि-फ्लोरिकम	केलि-फ्लोर	१—६	—
केलि नाइट्रिकम	केलि-नाइ	३—३०	३०-४० दिन
केलि परमेङ्गनेटम	केलि-परमेङ्ग	३x वि (पानीके साथ)	
केलि-फास्फोरिकम	केलि-फास	३ वि, २००	—
केलि-बाइक्रोमिकम	केलि-बाई	२ वि, १२	३० दिन
केलि-ब्रोमेटम	केलि-ब्रोम	θ—३ वि	—
केलि-म्यूरियेटिकम	केलि-म्यूर	३—६	—
केलि-सायेनेटस	केलि-साये	२x वि	—
केलि-सल्फ्यूरिकम	केलि-सल्फ	३—१२	—
कैक्टस	कैक्ट	θ—६, ३०	७-१० दिन
कैडमियम-सल्फ	कैडमि	३—३०	—
कैनाबिस-इण्डिका	कैना-ई	θ—३	—
कैनाबिस-सैटाइवा	कैना-सैट	θ—१२	१—१० दिन
कैन्थेरिस	कैन्थे	३x—३०	३०-४० दिन
कैप्सिकम	कैप्सि	३-६ (θ दूधके साथ)	७ „

दवाका नाम	संक्षिप्त नाम	क्रम या डा०	स्थितिकाल
कैमोमिला	कैमो	१—३०	२०—३० दिन
कैम्फर	कैम्फ	θ—३x	१ घं०—१ दिन
कैल्केरिया-आयोड	कैल्क-आयोड	२—३ वि	—
कैल्केरिया-आर्सेनिक	कैल्क-आर्स	३x वि—३०	—
कैल्केरिया-कार्बोनिका	कैल्क	६—३०	६० दिन
कैल्केरिया-फास्फो	कैल्क-फास	१ वि—२००	६० दिन
कैल्केरिया-फ्लुरेटा	कैल्क-फ्लू	३—१२ वि	—
कैल्केरिया-सल्फ	कैल्क-सल्फ	२—६ वि	—
कैल्मिया	कैल्मि	१—६	७—१४ दिन
कैलेडियम	कैले	३—६	३०-४० दिन
कैलेण्डुला	कैलेण्डु	θ—३	—
कोनायम	कोनायम	३—३०	३०-५० दिन
कोका	कोका	θ—३	—
कोपेवा	कोपेवा	१—३	—
कोब्रा (नैजा)	कोब्रा (नैजा)	६—३०	—
क्रियोजोटम	क्रियो	३—२००	१५-२० दिन
क्रोकस-सैटाइवा	क्रोकस	θ—३०	८ दिन
क्रोटन-टिग्लियम	क्रोटन	३x—६	३० दिन
क्रोटेलस हराइडस	क्रोटे	३—६	३० दिन
क्रैटिगस	क्रैटि	θ	—
क्लिमेटिस-इरेक्टा	क्लिमे	३—३०	१४-२० दिन
क्लोरम	क्लोरम	४—६	—

दवाका नाम	संक्षिप्त नाम	क्रम या डा०	स्थितिकाल
क्लोरैल-हाइड्रेट	क्लोरैल	१ वि—६	—
गुयेकम (उच्चारण) ग्वयेकम	गुये	६	४० दिन
गैम्बोजिया	गैम्बो	३—३०	१—७ दिन
ग्रैफाइटिस	ग्रैफा	६—३०	४०-५० दिन
ग्रैटिओला	ग्रैटि	२—३०	—
ग्लोनोइन	ग्लोनो	३—३०	१ दिन
चायना	चायना	θ—३०	७ दिन
चिमैफिला	चिमै	θ—३	—
चेलिडोनियम	चेलि	θ—३x	७-१४ दिन
जिज़िया	जिज़िया	θ—३	—
जिङ्कम-मेटालिकम	जिङ्क	२—३०	३०-४० दिन
जिञ्जिबार	जिञ्ज	१—६	—
जिन्सेंग	जिन्सेंग	θ—३	—
जेन्सियाना-लुटिया	जेन्सि-लूट	θ—२x	—
जेलसिमियम	जेल्स	θ—३०	—
जैकेरैण्डा	जैके	θ—३०	—
जैट्रोफा	जैट्रो	३—३०	—
जैन्थकजाइलम	जैन्थो	१—६	—
जैबोरैण्डि	जैबो	२ वि—२	—
टाइफायडनाम	टाइफायड	३०—२००	—
टियुक्रियम	टियुक्रि	१—६	१४-२१ दिन

दवाका नाम	संक्षिप्त नाम	क्रम या डा०	स्थितिकाल
टियुबर-कुयलिनम	टियुबर	३०—२००	—
टेवेकम	टेवे	३—२००	—
टेराक्से कम	टेराक्स	θ—३०	१४-२१ दिन
टेरिबिन्थिना	टेरिबि	१—६	—
टेल्यूरियम	टेल्यू	६—३०	३०-४० दिन
टेरेण्टुयला	टैरेण्ट	६—३०	—
ट्राम्बिडियम	ट्रम्बिड	६—३०	—
डलिकस	डलि	६	—
डायस्कोरिया	डायस्क	θ—३	१—७ दिन
डल्कामारा	डल्का	२—३०	३० दिन
डिजिटेलिस	डिजि	२x—३०	४०—५० दिन
डिफ्थीरिनम	डिफ्थी	३०—२००	—
डेफ्नि-इण्डिका	डेफ्नि	१—६	—
ड्रोसेरा	ड्रोसे	१—६	२०—३० दिन
थिरिडियन	थिरि	३x—३०	—
थिया	थिया	३—३०	—
थूजा	थूजा	θ—२००	६० दिन
थ्लैस्पि-बार्सा-पा	थ्लैस्पि	θ—६	—
नाइट्रि-स्पिरिटस डलसिस	नाइट्रि-स्पि-डा	θ	—
नक्स-वोमिका	नक्स-वो	१x—२००	१—७ दिन
नक्स-मस्केटा	नक्स-म	१—३	८—२१ दिन

दवाका नाम	संक्षिप्त नाम	क्रम या डा०	स्थितिकाल
नियुफर-लियुटियम	नियुफर	θ—६	—
निकोटिनम	निकोटि	३—६	—
नेट्रम-आर्सेनिकम	नेट्र-आर्स	३—३०	—
नेट्रम-कार्बोनिकम	नेट्र-कार्ब	३—६	३० दिन
नेट्रम-नाइट्रिकम	नेट्र-नाई	२ वि	—
नेट्रम-फास्फोरिकम	नेट्र-फास	३—१२x वि	—
नेट्रम-म्यूरियैटिकम	नेट्र-म्यूर	६—२००	४०-५० दिन
नेट्रम-सल्फ्यूरिकम	नेट्र-सल्फ	३—१२ वि	३०-४० दिन
नेफैलियम	नेफैल	३—३०	—
नैजा (या कोब्रा)	नैजा (कोब्रा)	६—३०	—
नैफथैलिनम	नैफ्थ	१—३ वि	—
पोडोफाइलम	पोडो	θ—६, २००	३० दिन
पाइरोजेन	पाइरो	६—३०	—
पाइलो-कार्पस	पाइलो-कार्प	३	—
पल्सेटिला	पल्स	३x—३०	४० दिन
पल्सेटिला नैट	पल्स-नैट	३—३०	—
पेट्रोलियम	पेट्रो	३—६	४०-५० दिन
पेट्रोसेलिनम	पेट्रोसे	१—३	—
पेरिरा-ब्रेवा	पेरि-ब्रे	θ—३	—
पैरिस	पैरिस	३	—
पैसिफ्लोराइनकार्नेटा	पैसिफ्लो	θ (मात्रा २०-६० बून्द)	
प्लम्बम	प्लम्ब	३—३x	२०-३० दिन

दवाका नाम	संक्षिप्त नाम	क्रम या डा०	स्थितिकाल
प्लेगिनम	प्लेगि	६—३०	—
प्लैटिनम	प्लैटि	३—३०	३५-४० दिन
प्लैण्टेगो	प्लैण्टे	θ—३	—
फार्मिका	फार्मि	६—३०	—
फास्फोरस	फास्फो	३—३०	४० दिन
फाइजसटिग्मा	फाइजम	३	—
फाइटोलैका	फाइटो	θ—३	—
फिलिक्स-मास	फिलिक्स	१—३	—
फेरम-आयोडेटम	फेरम-आयोड	३ वि	—
फेरम-पिकरिक	फेरम-पिक	२—३ वि	—
फेरम-फास्फोरिकम	फेरम-फास	३—६	—
फेरम-मूरर	फेरम-मूरर	३x	—
फेरम-मेटालिकम	फेरम	१—६	३० दिन
फेलाण्ड्रिक्रम्	फेलाण्ड्रि	θ—६	—
बर्बेरिस-वल्गेरिस	बर्बा	θ—६	२०-५० दिन
बिस्मथ	बिस्मथ	१—६	२०-५० दिन
बियुफो	बियुफो	६	—
बेलिस-पेरैनिस	बेलिस	θ—३	—
बेलेडोना	बेल	३x—३०	२-७ दिन
बोथ्राप्स	बोथ्रा	६—३०	—
बोविष्टा	बोवि	३—६	७—१४ दिन
बोरैक्स	बोरैक्स	१—३ वि	३० दिन

दवाका नाम	संक्षिप्त नाम	क्रम या डा०	स्थितिकाल
बैडियेगा	बैडि	१—६	—
बैप्टोशिया	बैप्टो	θ—३०	—
बैराइटा-आयोड	बैरा-आयोड	२—३ वि	—
बैराइटा-कार्बोनिका	बैरा-कार्ब	३—३०	४० दिन
बैराइटा-म्यूरियेटिकम	बैरा-मि	३ वि	—
बैसिलिनम	बैसिलि	३०—२००	—
ब्रायोनिया	ब्रायो	१—३०	७—२१ दिन
ब्रोमियम	ब्रोमि	१—३	२०—३० दिन
ब्लैटा-ओरियण्टैलिस	ब्लैटा	θ—३x	—
वाइवर्नाम-ओपियुलस	वाइवर	θ—३x	—
वायोला-ओडोरेटा	वायोला-ओ	θ—६	२—४ दिन
वायोला-ट्राइकलर	वायो-ट्रा	निम्नक्रम, ३	८-१४ दिन
वार्बेस्कम	वार्बा	θ	८—१० दिन
विरेड्रम-ऐल्ब	विरे	३—३०	२०—३० दिन
विरेड्रम-विरिडि	विरे-वि	८-६	—
विस्कम-ऐल्बम	विस्कम	θ—निम्नक्रम	—
वेरियोलिनम्	वेरियो	६—३०	—
वेलेरियेना	वेलेरि	θ	८-१० दिन
वैक्सिनिनम	वैक्सि	६x वि—३०	—
मार्फिनम	मार्फि	३—६ वि	—
मार्बिसिनम	मार्बि	३०—२००	—

दवाका नाम	संक्षिप्त नाम	क्रम या डा०	स्थितिकाल
मस्कस	मस्क	१—३	१ दिन
("मर्क्यूरियस" के अर्थमें "मर्क-सोल" या "मर्क-व")			
मर्क्यूरियस-कोरोसाइवस	मर्क-कोर	३—६	—
मर्क्यूरियस-डलसिस	मर्क-डल	३—६ वि	—
मर्क्यूरियस-प्रोटो-आ	मर्क-प्रोटो	१—२ वि	—
मर्क्यूरियस-बिन-आयोड	मर्क-बिन	३ वि	—
मर्क्यूरियस-वाइवस	मर्क-वा	२—३ वि	१—२ दिन
मर्क्यूरियस-सौल्यूबिलिस	मर्क-सोल	२—३०	—
मर्क्यूरियस-सायेनेटस	मर्क-साये	६—३०	—
मिनियैन्थिस	मिनि	३—३०	१४—२० दिन
मिफाइटिस	मिफाइ	१—३	१ दिन
मिल्लिफोलियम	मिलि	θ—१	१—२ दिन
मेजिरम	मेजि	६—३०	३०—६० दिन

दवाका नाम	संक्षिप्त नाम	क्रम या डा०	स्थितिकाल
मेडोरिनम	मेडोरि	३०—२००	—
मेरिका	मेरिका	θ—३	—
मेलिलोटस	मेलिलो	θ—निम्न-क्रम	—
मैग्नेशिया कार्बोनिका	मैग्ने-कार्ब	३—३०	४०—५० दिन
मैग्नेशिया फास्फोरिका	मैग्ने-फास	३x वि, ३, २००	—
मैग्नेशिया-म्यूर	मैग्ने-म्यूर	३—२००	४०-५० दिन
मैग्नेशिया-सल्फ	मैग्ने-सल्फ	θ—३	—
मैङ्गनम-ऐसेटिकम	मैङ्ग	३	४० दिन
मैलेरिया आफिसिनैलिस	मैले-आफि	३०—२००	—
मैलेण्ड्रिनम	मैलेण्ड्रि	३०—२००	—
रसटक्स	रस	३—२००	१—७ दिन
रस-वेनेनेटा	रस-वेन	३—२००	—
रस-रैड	रस-रैड	३—२००	१-७ दिन
रियुम	रियुम	३—६	२-३ दिन
रियुमेक्स-क्रिस्पस	रियुमेक्स	३—६	—
रिसिनस	रिसि	३—६	—
रूटा	रूटा	१—३०	३० दिन
रेडियम-ब्रोमाइट	रेडि	३०—२००	—
रोडोडेण्ड्रन	रोडो	१—३	३५-४० दिन
रोबिनिया	रोबिनि	θ—३	—

दवाका नाम	संक्षिप्त नाम	क्रम या डा०	स्थितिकाल
रैटानह्विया	रैटान	३—६	—
रैनैनक्यूलस-बल्ब	रैनैन	θ, ३, ३०	३०-४० दिन
रैफेनस	रैफेन	३—३०	—
लोरोसिरेसस	लोरो	θ—३	४—८ दिन
लाइकोपस	लाइकोपस	θ—३०	—
लाइकोपोडियम	लाइको	६—२००	४०-५० दिन
लिडम	लिडम	३—३०	३० दिन
लिथियम-कार्ब	लिथि-कार्ब	१—३ वि	—
लिलियम-टाइग्रिनम	लिलि	३	१४-२० दिन
लिसिन	लिसि	३०	—
लेपट्रेण्ड्रा	लेपटे	θ—३	—
लोबेलिया	लोबे	θ—३	—
लैककेनिनम	लैके-केनि	३०—२००	—
लैकेसिस	लैके	८—२००	३०-७० दिन
लैकनेन्थिस	लैक्नान	θ—३	—
लैथाइरस	लैथा	३	—
स्टिक्टा-पल्मोनेरिया	स्टिक्टा	θ—६	—
स्टिलिञ्जिया-सिलवैटिका	स्टिलिञ्जि	θ—२x	—
स्टैनम	स्टैने	३—३०	—
स्टैफिसाइग्रिया	स्टैफे	३—३०	—
स्ट्रिकनिनम	स्ट्रिक्नि	१ वि, ३—३०	—

दवाका नाम	संक्षिप्त नाम	क्रम या डा०	स्थितिकाल
स्ट्रनसिया-कार्ब	स्ट्रन-कार्ब	६ वि	—
स्ट्रोफैन्थस	स्ट्रोफै	θ	—
स्ट्रैमोनियम	स्ट्रैमो	θ—३०	—
साइक्यूटा-वाइरोसा	साइक्यू	३—२००	३५—४० दिन
साइना (सिना)	साइना (सिना)	१—२००	१४—२० दिन
साइमेक्स	साइमे	६—२००	—
साइलिसिया ["सिलिका" देखिये]।			
सार्सापैरिला	सार्सा	१—६	३५ दिन
सलफर	सल्फ	६—२००	४०—६० दिन
सिकेलि	सिके	θ—३०	२०—३० दिन
सिक्लामिन	सिक्ला	३	१४—२० दिन
सिनकोना ["चायना" देखिये]।			
सिजीजियम जैम्बो	सिजि	θ।	—
सिनिसियो	सिनिसि	θ—३	—
सिना ["साइना" देखिये]।			
सिनेरेरिया मैरिटिमा (साक्कास)	सिनेरि		—
सिनैबेरिस	सिनाबार	१—३ वि	—
सिपिया	सिपि	६—२००	४०—५० दिन
सिफिलिनम	सिफिलि	३०—२००	—
सिमिसिफ्यूगा-रेसिमोसा ["ऐक्टिया-रेसिमोसा" देखिये]।			
सिम्फाइटम	सिम्फाइ	θ	—

दवाका नाम	संक्षिप्त नाम	क्रम या डा०	स्थितिकाल
सियानोथस अमेरिकाना	सियानो	θ	—
सिला-मैरिटिमा	सिला	१—६	१४—२० दिन
सिलिका (साइलिसिया)	सिलि (साइलि)	३ वि ६-२००	४०-६०,,
सिलिनियम	सिलिनि	३—३०	४० दिन
सिस्टस	सिस्टस	१—३०	—
सोड्रन	सोड्र	θ—६	—
सेनेगा	सेनेगा	θ—३०	—
सेबाल-सेरूलेटम	सेबाल	θ—(१०-१२ बून्द)	—
सोरिनम	सोरि	३०—२००	३०-४० दिन
स्कूकम-चक	स्कूकम	३ वि	—
स्कुइला ("सिला" देखिये)।			
स्कुटेलैरिया	स्कुटे	θ—३	—
सोलेनम-नाइग्रा	सोले-ना	२—३	—
स्पाइजिलिया	स्पाइजि	२—३०	२०-३० दिन
स्पञ्जिया	स्पञ्जि	θ—३	१ घं—१ दिन
स्पिरिट-कैम्फर	कैम्फ	θ	१ घं—१ दिन
सैंगुइनेरिया-कैम	सैंगु	θ, ३—६	—
सैण्टोनाइन	सैण्टो	१x—३ वि	—
सैबाइना	सैबाई	१, ३—३०	२०-३० दिन
सैम्ब्यूकस	सैम्ब्यू	θ—६	३—४ घं

दवाका नाम	संक्षिप्त नाम	क्रम या डा०	स्थितिकाल
सैरासिनिया	सैरासि	३—६	—
हाइड्रोकोटाइल	हाइड्रोकोट	३—६	—
हाइड्रोफोबिनम	हाइड्रोफो	३०—२००	—
हाइपेरिकम	हाइपे	θ—६	१—७ दिन
हायोसायमस	हायोसा	θ—२००	६—१४ दिन
हाइड्रैस्टिस	हाइड्रा	θ—१, ३०।	—
हिपर-सलफर	हिपर	३x वि—२००	८ सप्ताह
हेक्ला-लावा	हेक्ला	निम्नक्रम वि ३०	—
हेलियेन्थस	हेलि	θ—३०	—
हेलोडर्मा-होराइडस	हेलोडर्मा	३०	—
हेलोनियस	हेलोनि	θ—६	—
हेलिबोरस	हेलि	θ—३	२०—३० दिन
हैमामेलिस	हैमा	θ—३x	१—७ दिन

(३) भेषज-सम्बन्ध तथ्य

(Drug-Relationship)



सूचना

इस अध्यायमें शक्ति-कृत (potentised) होमियोपैथिक दवाओंका आपसमें सम्बन्ध बताया गया है। अध्याय तीन भागोंमें बँटा है :—

(क) किस दवाके बाद कौन दवा चल सकती है।

(ख) किस दवाके बाद कौन दवा नहीं चलती।

(ग) किस दवाकी विष-क्रिया किस दवाको नाश करती है।

अर्थात्—

"(क)" विभागमें शक्ति-कृत किसी दवाके बाद शक्ति-कृत दूसरी कौन-सी दवा अच्छी चलती है, वह लिखा गया है। जैसे :—"ऐलो" दवाके बाद कैलि-बाइक्रोम, सिपिया, सलफ्यूरिक-एसिड या **सलफर** खूब चलता है—रोगीके शरीरमें कोई नुकसान नहीं पहुँचाता। इसीसे कैलि-बाइक्रोम सिपिया, सल्फ्यूरिक-एसिड और **सलफर** दवाओंको ऐलोके **बादवाली अनुकूल दवाएँ** (the remedy is followed well by) कहते हैं।

इस "बादवाली अनुकूल दवाओंमें" जो बड़े अक्षरोंमें छापी

गयी हैं, उन्हें उन आलोच्य औषधका अनुपूरक * कहते हैं। जैसे—ऐलोके बादवाली अनुकूल दवाओंमें सलफर शब्द बड़े अक्षरोंमें छापा गया है, अतएव समझ लेना चाहिये कि सलफर दवा ऐलोकी "अनुपूरक" है। यह तो बताना वृथा ही है, कि ऐलोके साथ सलफर दवाका बादवाली अनुकूल और अनुपूरक, दोनों ही तरहका सम्बन्ध समझ लेना चाहिये।

"(ख)" किस शक्ति-क्रत दवाके सेवनके बाद कौन-सी शक्ति-क्रत दवा नहीं चलती या नुकसान पहुँचाती है, वही लिखा गया है। जैसे—ऐलोके बाद "ऐलियुम-सैट" सेवन करनेपर कोई कड़ी बीमारी पैदा हो जा सकती है। इसीलिये ऐलियम-सैटाइवा दवा ऐलोके बादवाली प्रतिकूल या व्याघातक (inimical or incompatible) दवा कही जाती है।

"(ग)" विभागमें किस शक्ति-क्रत दवाकी ज्यादा मात्रा सेवन करनेके बाद शक्ति-क्रत कौन-कौन-सी दवाकी व्यवस्था

---

* अर्थात् (complements) या "क्रिया-विशेष पूरक" दवाएँ; जैसे ऐलोके प्रयोगसे बीमारी कुछ दब जानेपर बीमारीका बाकी हिस्सा सलफरसे हट जा सकता है। इससे मालूम होता है, कि "सभी अनुपूरक दवाएँ" बादवाली "अनुकूल दवाओंके" अन्तर्गत हैं, यद्यपि "सभी बादवाली अनुकूल दवाएँ "अनुपूरक नहीं हैं। [एक बात और भी याद रखने लायक है :—"अनुपूरक दवा" आलोच्य औषधिके पहले भी दी जाती है :— (जरूरत पड़नेपर) सलफर दवा ऐलोके पहले भी बिना किसी विघ्नके सेवन की जा सकती है]।

करनेपर उसकी विष-क्रिया नष्ट हो जाती है, यह लिखा गया है। जैसे—"ऐलो" सेवनके बाद कैम्फर, लाइको, नक्स या सलफरके प्रयोगसे ऐलोकी विष-क्रिया नष्ट हो जा सकती है अर्थात् यदि ऐलोके सेवनके बाद रोगीके शरीरमें उसकी विष-क्रिया (poisoning) या कोई नया उपसर्ग स्पष्ट दिखाई दे, तो उस विष-दोषको नष्ट करनेके लिये, कैम्फर, लाइको, नक्स या सल्फकी व्यवस्था करनी पड़ेगी। इसीसे कैम्फर, लाइको, नक्स और सलफर दवाएँ ऐलोकी **विषघ्न या विषको मारनेवाली या प्रतिकारक दवा या प्रतिविष** (antidotes) कहलाती हैं।

इस भेषज-सम्बन्धका ज्ञान हुए बिना दवा देनेका दायित्वपूर्ण गुरु भार किसीको भी अपने ऊपर न लेना चाहिये। आजकलके होमियोपैथोंकी अपेक्षा पहलेके चिकित्सकोंको इसका ज्ञान बहुत अधिक था; इसीलिये, इलाजमें उन्हें बहुत ज्यादा कामयाबी हासिल होती थी और उनकी वजहसे ही सभ्य जगतमें आज होमियोपैथीका इतना अधिक आदर है। दवाओंके सम्बन्धका ज्ञान रहे बिना दवा देना या चिकित्सा करना, रोकने वाले यन्त्रके (brake) कौशलको जाने बिना मोटर गाड़ी चलाना एक समान है; पद-पदपर भयानक विपत्ति आ सकती है। वर्त्तमान अध्यायके सहारे होमियोपैथिक दवाओंका बेकायदा प्रयोग बन्द होगा, ऐसी आशा करना शायद असङ्गत न होगा।

इङ्गलैण्डके वर्त्तमान होमियोपैथिक डाक्टरोंमें अग्रणी डाक्टर क्लार्क साहबका कथन है, कि—मैं जानता हूँ, कि एक पुरानी बीमारीके इलाजमें कैल्केरियाके प्रयोगसे कुछ-कुछ फायदा हो रहा था; परन्तु कैल्केरियाके बाद ही ब्रायोनिया सेवन करनेपर बीमारी असाध्य हो पड़ी (the case was irretrievably spoiled)। एक बार मुझे स्वयं ही तकलीफ़ देनेवाले कुछ उपसर्ग पैदा हो गये, उसका कारण खोजनेमें ही कई दिन लग गये; इसके बाद कारण समझमें आया, कि कुछ दिन पहले नेट्रम-म्यूर २०० एक मात्रा खानेका ही यह नतीजा है। उस समय Jahr का लिखा ग्रन्थ खोलकर उसका प्रतिविष (नाइट्रि-स्पिरिट डलसिस Nitri spiritus-dulcis) सूँघनेसे ही मैं उसी समय एकदम अच्छा हो गया। उस समय इन शक्ति-कृत होमियोपैथिक दवाओंकी सार-वत्ता मेरी समझमें आ गयी। (Dr. Clarke's Dictionary of Practical Medicine, Vol. I. page viii and Vol. II. page 549 देखिये)।

गृहस्थ और नये चिकित्सकोंको औषध देनेके कामकी सुविधाके लिये दवाओंके ऊपर लिखे तीनों तरहका सम्बन्ध-विवरण* क्रमसे लिखा जाता है :—

---

* कहना वृथा है, कि "अनुपूरक सम्बन्ध परवर्ती" अनुकूल [अर्थात् (क) किस दवाके बाद कौन दवा चलती है दवाओंके अन्तर्गत है। इसलिये इसे अलग नहीं माना गया है।

(क) किस दवाके बाद कौन दवा खूब चलती है :—

(The Remedy is followed well by) :—

दवाका नाम — दवाके बादवाली अनुकूल दवाएँ।

अर्जेण्टम-नाई—कैल्क, केलि-कार्ब, लाइको, मर्क, पल्स, सिपि, साइलि, स्पाई, स्पञ्जि, ब्रायो, विरे, ह्वाइड्रो।

अर्जेण्टम-मेट—कैल्क, पल्स, सिपि।

आरम-मेट—एकोन, बेल, कैल्क, चायना, लाइको, मर्क, एसिड-नाई, पल्स, रस, सिपि, सल्फ, साइलिसिया।

आयोडियम—बैडि, लाइको, पल्स, एकोन, आर्ज-नाई, कैल्क, कैल्क-फास, केलि-बाई, मर्क-सोल, फास्फो।

आर्निका—ऐकोन, इपि, रस, विरे, ह्वाइपे, आर्स, बेल, ब्रायो, बैरा-मि, कैक, कैल्क, चायना, कैमो, कैलेण्डुला, कोनाय, हिपर, आयोड, नक्स, फास, लिडम, पल्स, सोरि, रूटा, ऐसि-सल्फ, सल्फ, वार्बा।

आर्सेनिक-ऐल्ब—ऐलि-सैट, कार्बो-वेज, नेट्र-सल्फ, फास्फो, पाइरो, थूजा, एपि, बेल, कैक, कैमो, चायना, साइक्लूप, फेरम, एसि-फ्ल, हिपर, आयोड, इपि, केलि-बाई, लाइको, मर्क, नक्स, बैरा-कार्ब, कैल्क-फास, चेलि, लैके, सल्फ, विरे, रस।

(क) किस दवाके बाद कौन दवा खूब चलती है :—

दवाका नाम — दवाके बादवाली अनुकूल दवाएं।

ऐकोनाइट—आर्नि, काफि, सल्फ, ऐम्ब्रा, आर्स, बेल, ब्रायो, कैक्ट, कैल्क, काकुप्र, कैन्थे, हिपर, इपि, केलि-ब्रो, मर्क, पल्स, रस, सिपि, स्पाइजि, स्पञ्जि, साइलि।

ऐगारिकस—बेल, कैल्क, कूप्रम, मर्क, ओपि, पल्स, रस, साइलि, टैरेण्ट, ट्यूबा।

ऐग्नस-कैक्टस—आर्स, ब्रायो, कैलेडियम, इग्ने, लाइको, सल्फ, सिलिनि।

ऐङ्गस्टियुरा—बेल, इग्ने, लाइको, सिपि।

ऐण्टिम-क्रूड—कैल्क, लैकेसिस, मर्क, पल्स, सिपि, सल्फ, सिला।

ऐण्टिम-टार्ट—बैरा-कार्ब, सिना, कैम्फ, पल्स, सिपि, सल्फ, टेरि, कार्बो-वेज, इपि।

ऐनाकार्डियम—लाइको, पल्स, प्लैटि।

ऐन्थ्रासिनम—आरम-मि-ने, साइलि।

ऐमोन-कार्ब—बेल, कैल्क, लाइको, फास्फो, पल्स, रस, सिपि, सल्फ, विरे, ब्रायो।

ऐमोन-म्यूर—एण्टिम-क्रूड, काफिया, मर्क, नक्स, फास्फो, पल्स, रस।

(क) किस दवाके बाद कौन दवा खूब चलती है :—

दवाका नाम दवाके बादवाली अनुकूल दवाएँ।

ऐम्ब्राग्रिसिया—लाइको, सिपि, पल्स, सल्फ।

आर्टिमिसिया—कस्ट्रि "wine" नामक शराबके साथ आर्टिमिसिया दवा सेवन करनी चाहिये।

ऐल्यूमिना—आर्ज-नेट, फेरम।

ऐलो—केलि-बाई, सिपि, एसिड-सल्फ, सल्फ।

ऐलियम-सिपा—कैल्क, साइलि, फास्फो, पल्स, सार्सा, थूजा।

ऐलियम-सैटाइवा—आर्स।

ऐसाफिटिडा—चायना, मर्क, पल्स।

ऐसाराम-इयु—बिस्मथ, कास्टि, पल्स, साइलि, एसिड-सल्फ।

ऐसिड-ऐसेट—चायना।

ऐसिड-नाइट्रिक—आर्नि, एरम, बेल, कैल्क, कार्बो-वे, सिके, केलि-कार्ब, क्रियो, मर्क, फास्फो, पल्स, सिपि, साइलि, सल्फ, थूजा, आर्स, कैलेडियम।

ऐसिड-फास—आर्स, बेल, कैल्क-फास, कास्टि, चायना, फेरम, ऐसि-फ्लू, फेरम-फास, केलि-फास, लाइको, नेट्रम-फास, नक्स, सिपि, पल्स, रस, सिलिनि, सल्फ, विरे।

(क) किस दवाके बाद कौन दवा खूब चलती है :—

दवाका नाम — दवाके बादवाली अनुकूल दवाएँ।

ऐसिड-फ्लू—ग्रै फा, एसि-नाई, साइलि।

ऐसिड-म्यूर—कैल्क, केलि-कार्ब, पल्स, सिपि, सल्फ, साइलि, नक्स।

एसिड-सल्फ—आर्नि, रूटा, कैल्क, कोनाय, लाइको, प्लैटि, सिपि, सल्फ पल्स।

इयुपैटोरियम-पर्फ—नेट्र-मि, सिपि, टूयब।

इयुफोर्बियम—फैरम, लैके, पल्स, सिपि, सल्फ।

इयुफ्रे शिया—ऐकोन, ऐल्यू-मि, कैल्क, कोनाय, मर्क, नक्स, फास्फो, पल्स, रस, साइलि, सल्फ, लाइको।

इग्नेशिया—बेल, कैल्क, चायना, काकुल, लाइको, पल्स, रस, नक्स, सिपि, सल्फ, जिङ्क, साइलि, नेट्र-मि।

इथ्यूजा—कैल्क।

इपिकाक—ऐण्टि-क्रूड, आर्स, बेल, ब्रायो, कैल्क, एपिस, कैक्ट, कैडमि, कैमो, चायना, इग्ने, नक्स, फास्फो, पल्स, पोडो, रियुम, सिपि, सल्फ, टैबे, विरे, ऐण्टिम-टार्ट, कूप्रा, आर्नि।

(क) किस दवाके बाद कौन दवा खूब चलती है :—

दवाका नाम — दवाके बादवाली अनुकूल दवाएँ ।

एपिस—आर्सें, ग्रैफा, आयोड, केलि-बाई, लाइको, फास्फो, पल्स, स्ट्रैमो, सल्फ, आर्निं, नेट्र-मि ।

एरम—इयुफोर्बि ।

ओपियम—ऐकोन, ऐण्टि-टार्ट, बेल, ब्रायो, हायोस, नक्स-म, नक्स-वो, सैम्ब्यू ।

ओलियेण्डर—कोनाय, लाइको, नेट्र-मि, पल्स, रस, सिपि, स्पाई ।

ओसिमम—डायस्क ।

काकुग्लस—आर्स, बेल, हिपर, इग्ने, लाइको, नक्स, रस, पल्स, सल्फ, ओपि ।

काफिया—आरम, बेल, ऐसि-फ्लू, लाइको, नक्स, ओपि, सल्फ, ऐकोन ।

कास्टिकम—ऐण्टिम-टार्ट, एरम, गुए, केलि-आयोड, कैल्क, नक्स, पल्स, रस, रूटा, सिपि, साइलि, स्टैनम, सल्फ, लाइको, पेट्रोसि, कालोसि, कार्बो-वे ।

कार्बो-ऐनिमेलिस—आर्स, बेल, ब्रायो, ऐसि-नाई, फास्फो, पल्स, सिपि, साइलि, विरे, (कार्बो-वे ?) कैल्क-फास ।

(क) किस दवाके बाद कौन दवा खूब चलती है :—

दवाका नाम — दवाके बादवाली अनुकूल दवाएँ।

कार्बो-वेज—आर्स, ऐकोन, चायना, लाइको, नक्स, ऐसि-फास, पल्स, सल्फ, विरे, ड्रोसि, कैलि-कार्ब, फास्फो।

कूप्रम-ऐसेट—कैल्क, जेल्स, साइकूप्र, जिङ्क।

कूप्रम-मेट—आर्स, बेल, कास्टि, साइकूप्र, हायोस, पल्स, स्ट्रैमो, विरे, जिङ्क, कैल्क।

कैलि-आयोड—ऐसि-नाई।

कैलि-कार्ब—कार्बो-वे, नक्स, ऐसि-नाई, फास्फो, सिपि, आर्स, ऐसि-फ्लू, लाइको, पल्स, सल्फ।

कैलि-नाइट्रिकम—बेल, कैल्क, पल्स, रस, सिपि, सल्फ।

कैलि-बाई—ऐण्टिम-टार्ट, आर्स, पल्स, बार्बा।

कैलि-ब्रोमेटम—कैक्ट।

कैलि-सल्फ—ऐसिड-ऐसे, आर्स, कैल्के, हिपर, कैलि-कार्ब, पल्स, रस, सिपि, साइलि, सल्फ।

कैक्टस—डिजि, इयुपेट-पर्फ, लैके, नक्स, सल्फ।

कैडमियम—बेल, कार्बो-वे, लोबे, ऐसिड-नाई।

कैनाबिस-सैटाइवा—बेल, हायोस, लाइको, नक्स, ओपि, पल्स, रस, विरे।

(क) किस दवाके बाद कौन दवा खूब चलती है :—

दवाका नाम — दवाके बादवाली अनुकूल दवाएँ।

कैन्थरिस—कैम्फ, बेल, कैलि-आयोड, कैलि-बाई, मर्क, फास्फो, पल्स, सिपि, सल्फ।

कैमोमिला—बेल, मैग्ने-कार्ब, पल्स, ऐकोन, आर्नि, ब्रायो, कैक्ट, कैल्क, काक्यु, फार्म्मि, मर्क, नक्स, रस, सिपि, साइलि, सल्फ।

कैम्फर—कैन्थ, आर्स, ऐण्टिम-टार्ट, बेल, काकुल, नक्स, रस, विरे।

कैल्केरिया-आर्स—कोनाय, ग्लोनो, ओपि, पल्स।

कैल्केरिया-कार्ब—बेल, रस, ऐगार, बोरैक्स, बिस्मथ, ड्रोसे, डल्का, इपि, कैलि-बाई, लाइको, नेट्र-कार्ब, ग्रैफा, नक्स-वोम, फास्फो, पल्स, पोडो, प्लैटि, साइलि, सिपि, सार्सा, टियुबर, थेरिडियन। "कैल्के-कार्ब" के बाद सलफर या ऐसि-नाई कभी न देना चाहिये; खिलानेसे तेज़ बीमारियाँ पैदा हो सकती हैं।

कैल्केरिया-फास—हिपर, रूटा, सल्फ, जिङ्क, रस, आयोड, सोरि।

कैल्केरिया फ्लुयोरेटा—कैल्के-फास, एसिड-फास, नेट्रम-मि, साइलि।

(क) किस दवाके बाद कौन दवा खूब चलती है :—

दवाका नाम दवाके बादवाली अनुकूल दवाएँ

कैल्मिया--कैल्क, लाइको, नेट्रम-मि, पल्स, स्पाइजि, ऐसिड बेञ्जोयिक।

कैलेडियम—ऐसि-नाई, ऐकोन, कास्टि, पल्स, सिपि।

कैलेण्डुला—हिपर, आर्नि, आर्स, ब्रायो, ऐसि-नाई, फास्फो, रस।

कोनायम—बेरा-मि, आर्नि, आर्स, बेल, कैल्क, कैल्क-आर्स, साइक्लू, ड्रोसे, लाइको, नक्स, सोरि, फास्फो, पल्स, रस, स्ट्रैमो, सल्फ।

कोरैलियम—सल्फ।

कोलचिकम—कार्बो-वेज, नक्स, पल्स, रस, सिपि।

कोलोसिन्थ—बेल, ब्रायो, कास्टि, कैमो, नक्स, सल्फ, स्पाइजि, स्टैफि, मर्क।

क्रियोजोटम—आर्स, बेल, कैल्क, कैलि-कार्ब, लाइको, ऐसिड-नाई, नक्स, रस, सिपि, सल्फ।

क्रोकस—चायना, नक्स, पल्स, सल्फ।

क्रोटन-टिग्लियम—रस।

क्लिमेटिज-इरेक्टा—कैल्क, रस, सिपि, साइलि, सल्फ।

(क) किस दवाके बाद कौन दवा खूब चलती है :—

दवाका नाम — दवाके बादवाली अनुकूल दवाएँ।

गुयेकम—कैल्क, मर्क।

ग्रैफाइटिस—आर्स, कास्टि, हिपर, फेरम, लाइको, इयुफोर्बि, नेट्र-सल्फ, साइलि।

चायना—फेरम, ऐसि-एसे, आर्स, आर्नि, ऐसाफि, बेल, कैल्क, कार्बो-वे, कैल्क-फास, लैके, मर्क, पल्स, फास्फो, ऐसि-फास, सल्फ, विरे।

चेलिडोनियम—ऐकोन, आर्स, ब्रायो, इपि, लिडम, लाइको, नक्स, सिपि, स्पाई, सल्फ, कोरैल।

जिङ्कम-मेट—कैल्क-फास, हिपर, इग्ने, पल्स, सिपि, सल्फ।

जेलसिमियम—बैप्टी, कैक्टा, इपि।

टियुक्रियम—चायना, पल्स, सिपि।

टियुबरकूल—सोरि, हाइड्रो, सल्फ, बेल, कैल्क, कैल्के-फास, कैल्क-आयोड, साइलि, बैरा-कार्ब, फास्फो, पल्स, सिपि, थूजा। "बैसिलिनम" देखिये।

टैबेकम—कार्बो-वे, हाइड्रोफो।

टेरिबिन्थिना—मर्क-कोर।

टेराक्से कम—आर्स, बेल, चायना, ऐसाफि, लाइको, रस, सल्फ, स्टैफा।

(क) किस दवाके बाद कौन दवा खूब चलती है :—

दवाका नाम — दवाके बादवाली अनुकूल दवाएँ।

डल्कामारा—बैरा-कार्ब, कैल्क, कैलि-सल्फ, सल्फ, बेल, लाइको, रस, सिपि।

डिजिटेलिस—ब्रायो, बेल, कैमो, चायना, लाइको, नक्स, ओपि, फास्फो, पल्स, सिपि, सल्फ, विरे, ऐसि-ऐसे।

ड्रोसेरा—नक्स, कैल्क, सिना, पल्स, सल्फ, विरे, कोनाय।

थूजा—आर्स, नेट्र-सल्फ, सैबाई, मेडौरि, साइलि, ऐसाफि, कैल्क, इग्ने, कैलि-कार्ब, लाइको, मर्क, ऐसि-नाई, पल्स, सल्फ, वैक्सि।

नक्स-वोमिका—कैल्के, कैलि-कार्ब, सिपि, सल्फ, आर्स, ऐकि—साई, बेल, ब्रायो, कैक, कार्बो-वे, काकुर, कोलचि, हायोस, लाइको, फास्फो, पल्स, रस, सिपि, ऐसि-फास, इस्कूर, सल्फ।

नक्स-मस्कोटा—ऐण्टिम-टार्ट, लाइको, पल्स, रस, स्ट्रैमो, नक्स।

नेट्रम-कार्ब—कैल्क, नक्स, ऐसि-नाई, पल्स, सल्फ, सिलिनि, सिपि।

नेट्रम-म्यूर—एपिस, कैप्सि, इग्ने, सिपि, ब्रायो, कैल्के, हिपर, केलि-कार्ब, पल्स, रस, सल्फ, थूजा।

(क) किस दवाके बाद कौन दवा खूब चलती है :—

दवाका नाम — दवाके बादवाली अनुकूल दवाएँ।

नेट्रम-सल्फ—आर्स, थूजा, बेल।

पोडोफाइलम—सल्फ।

पार्टूसिन—कोरैल, कास्टि, पोडो, एपि।

पल्सेटिला—ऐलि-सिपा, ऐसि-सल्फ, आर्जे-नाई, लाइको, साइलि, स्ट्रैमो, कैलि-म्यूर, कैलि-सल्फ, (टियुबर), कैमो, ऐण्टिम-क्रूड, ऐण्टिम-टार्ट, ऐनाका, ऐसाफि, आर्स, बेल, कैल्क, इयुफोर्बि, ग्रैफा, इग्ने, कैलि-बाई, ऐसि-नाई, नक्स, रस, सिपि, सल्फ, फास्फो।

पेट्रोलियम—ब्रायो, कैल्क, लाइको, ऐसि-नाई, नक्स, पल्स, साइलि, सल्फ, सिपि।*

पेरिस—कैल्क, लिडम, लाइको, नक्स, फास्फो, पल्स, रस, सिपि, सल्फ।

प्लम्बम—आर्स, बेल, लाइको, मर्क, फास्फो, पल्स, सिलि, सल्फ।

---

* सिपिके पहले "पेट्रोलियम" सेवन किया जा सकता है ; किन्तु सिपियाके बाद "पेट्रोलियम" सेवन नहीं किया जा सकता।

(क) किस दवाके बाद कौन दवा खूब चलती है :—

दवाका नाम — दवाके बादवाली अनुकूल दवाएँ।

प्लैटिनम—ऐनाका, आर्ज-मेट, बेल, लाइको, पल्स, रस, सिपि, विरे, इग्ने, पैलेडियम।

फास्फोरस—आर्स, ऐलि-सिपा, कार्बो-वे, डूपि, बेल, ब्रायो, चायना, केलि-कार्ब, कैल्क, लाइको, नक्स, पल्स, रस, सिपि, सिलि, सल्फ।

फेरम—ऐलूमि, चायना, हैमा, ऐकोन, आर्नि, बेल, कोनाय, लाइको, मर्क, फास्फो, सल्फ, विरे।

बार्बेरिस—लाइको।

बिस्मथ—बेल, कैल्क, पल्स, सिपि।

बेलेडोना—कैल्क, ऐकोन, आर्स, कैक, कार्बो-वे, कैमो, कोनाय, डाल्का, हिपर, हायोस, लैके, मर्क, मर्क-बिन, मस्क, ऐसि-मि, नक्स, पल्स, रस, सेनेगा, सिपि, साइलि, स्ट्रैमो, सल्फ, वेलेरि, विरे, चायना।

बैडियेगा—आयोड, मर्क, सल्फ, लैके।

बैप्टीशिया—हैमा, ऐसि-नाई, टेरिबि, क्रोटे, पाइरो।

बैराइटा-कार्ब—डाल्का, ऐण्टि-टार्ट, कोनाय, (कैल्क), चायना, फाफो, पल्स, रस, सिपि, सल्फ, लाइको, मर्क, ऐसि, नाई, सोरि, टियुबर।

(क) किस दवाके बाद कौन दवा खूब चलती है :—

दवाका नाम — दवाके बादवाली अनुकूल दवाएँ।

बैसिलिनम—कैल्क-फास, लैके, कैलि-कार्ब, हाइड्रो, ("टियुबरकूग्रलिनम" देखिये)।

बोविष्टा—ऐल्यूमि, कैल्क, रस, सिपि, विरे।

बोरैक्स—कैल्क, नक्स, आर्स, ब्रायो, लाइको, फास्फो, सिलि।

ब्रायोनिया—ऐल्यूमि, रस, कैलि-कार्ब, नेट्र-मि, आर्स, ऐब्रो, ऐण्टि-टार्ट, बेल, बार्बे, कैक्ट, कार्बो-वे, डाल्का, हायोस, केलि-कार्ब, ऐसि-मि, नक्स, फास्फो, पल्स, रस, साइलि, सैबाडि, सिला, सल्फ, ड्रोसि।

ब्रोमियम—आर्ज-नाई, केलि-कार्ब।

बायोला-ओडो—बेल, रस, सिपि, स्टैफाइ।

बार्बेस्कस—बेल, चायना, लाइको, पल्स, स्ट्रैमो, सिपि, रस, सल्फ।

विरेट्रम-ऐल्बम—आर्नि, ऐकोन, आर्स, आर्ज-नाई, बेल, कार्बो-वे, कैमो, चायना, कूप्रम, ड्रोसे, इपि, पल्स, रस, सिपि, सल्फ, सैम्ब्यू, डाल्का।

वेलेरियेना—फास्फो, पल्स।

मर्क्यूरियस*—बेडि, आर्स, ऐसाफि, बेल, कैल्क, कैल्क-

---

* मर्क्यूरियस कहनेसे "मर्क्यूरियस-सोल" या "मर्क्यूरियस-वाइवस" समझना चाहिये।

(क) किस दवाके बाद कौन दवा खूब चलती है :—

दवाका नाम — दवाके बादवाली अनुकूल दवाएँ।

फास, कार्बो-वे, चायना, डाल्का, हिपर, आयोड, लैके लाइको, ऐसि-मि, ऐसि-नाई फास्फो, पल्स, रस, सिपि, सल्फ, थूजा।

मर्क्यूरियस-वाइवस } ऊपर कहा हुआ "मर्क्यूरियस"
„ साल्यूबिलिस } देखिये।

मिनियैन्थिस—कैप्सि, लाइको, पल्स, रस।

मेजिरियम—कैल्क, कास्टि, इग्ने, लाइको, मर्क, नक्स, फास्फो, पल्स।

मेडोरिनम—सल्फ, थूजा।

मैग्नेशिया-कार्ब—कैमो, कास्टि, फास्फो, पल्स, सिपि, सल्फ।

मैग्नेशिया-म्यूर—वेल, लाइको, नेट्र-मि, नक्स, पल्स, सिपि।

मैंगेनम-ऐसे—पल्स, रस, सल्फ।

रसटक्स—ब्रायो, कैल्क, आर्स, आर्नि, वेल, बार्ब, कैक्ट, कैल्क-फास, कैमो, कोनाय, ग्रैफा, हायोस लैके, मर्क, ऐसि-मि, नक्स, पलस, फास्फो, ऐसि-फास, सिपि, सल्फ, ड्रोसे।

रस-वेन्—रसटक्स।

रस-रैड—"रसटक्सके बादवाली अनुकूल दवाएँ" देखिये।

(क) किस दवाके बाद कौन दवा खूब चलती है :—

दवाका नाम — दवाके बादवाली अनुकूल दवाएँ।

रूटा—कैल्क-फास, कैल्क, कास्टि, लाइको, ऐसि-फास, पल्स, सिपि, सल्फ, ऐसि-सल्फ।

रियुम—मैग्ने-कार्ब, बेल, पल्स, रस, सल्फ।

रियुमिक्स—कैल्क।

रैनिन्कूलस-बाल्बो—ब्रायो, इग्ने, केलि-कार्ब, नक्स, रस, सिपि, सैबाडि।

रेडियम-ब्रोमाइड—रस-वेन, सिपि, कैल्के।

रोडोडेण्ड्रन—आर्नि, आर्स, कैल्क, कोनाय, लाइको, मर्क, नक्स, पल्स, सिपि, साइलि, सल्फ।

लाइकोपोडियम—आयोड, लैके, पल्स, चेलि, इग्ने, इपि, केलि-आयोड, ऐनाका, बेल, ब्रायो, कार्बो-वे, कोलचि, डाल्का, ग्रैफा, हायोस, केलि-कार्ब, लिडम, नक्स, फास्फो, स्ट्रैमो, सिपि, साइलि, विरे, ड्रोसे, (कैल्क) थेरिडियन।

लिडम—ऐकोन, बेल, ब्रायो, चेलि, नक्स, पल्स, रस, सल्फ, ऐसि-सल्फ।

लिसिन—("हाइड्रोफोबिनम" देखिये)।

लैकेसिस—लाइको, ऐसि-नाइ, हिपर, केलि-आयोड,

(क) किस दवाके बाद कौन दवा खूब चलती है :—

दवाका नाम — दवाके बादवाली अनुकूल दवाएँ।

आयोड, ऐकोनं, आर्स, ऐल्यूमि, बेल, ब्रोम, कार्बो-वे, कास्टि, कोनाय, कैक्ट, कैल्क, चायना, हायोस, केलि-बाई, मर्क, साइक्रूप्र, नक्स, नेट्र-मि, ओलि, फास्फो, रस, साइलि, सल्फ, टैरेण्ट, इयुफोर्बि, मर्क-प्रोटो-आयोड।

लोरोसिरिसस—बेल, कार्बो-वे, फास्फो, पल्स, विरे।

सलफर—ऐलो, नक्स, सोरि, ऐकोन, पल्स, आर्स, बैडि, एस्क्यु, ऐल्यूमि, एपिस, बेल, ब्रायो, बैरा-कार्ब, बार्ब, बोरैक्स, कैल्क, कार्बो-वे, इयुफोर्बि, ग्रैफा, गुये, सार्सा, केलि-कार्ब, मर्क, ऐसि-नाई, फास्फो, पोडो, रस, सिपि, सैम्ब्यु, ड्रोसे।

साइक्रूप्रटा-वाइरोसा—बेल, हिपर, ओपि, पल्स, रस, साइलि, स्टैन।

साइना (सिना)—कैल्क, चायना, इग्ने, प्लैटि, पल्स, रस, साइलि, स्टैन।

साइलिसिया—("सिलिका" देखिये)।

सार्सापैरिला—ऐलि-सिपा, मर्क, सिपि, बेल, हिपर, फास्फो, रस, सल्फ।

सिकेलि-कोर—ऐकोन, आर्स, बेल, चायना, मर्क, पल्स।

सिक्लामेन—फास्फो, पल्स, रस, सिपि, सल्फ।

(क) किस दवाके बाद कौन दवा खूब चलती है :—

दवाका नाम दवाके बादवाली अनुकूल दवाएँ।

सिङ्कोना—("चायना" देखिये)।

सिपिया—नेट्र-कार्ब, नेट्र-मि, नक्स, सैबाडि, सल्फ, बेल, कैल्क, कोनाय, कार्बो-वे, डाल्कामारा, ड्युफोर्बि, ग्रैफा, लाइको, पेट्रो, पल्स, सार्सा, साइलि, रस, टैरेण्ट, फास्फो, ऐसि-नाई।

सियेनोथस-अमेरिकाना—बार्बे, कोनाय, कायेकस।

सिला-मेरिटिमा—आर्स, इग्ने, नक्स, रस, साइलि, वैरा-कार्ब।

सिलिका (साइलिसिया)—कैल्क, सल्फ, थूजा, ऐसि-फ्लू, आर्स, ऐसाफि, बेल, क्लिमे, ग्रैफा, हिपर, लैके, लाइको, नक्स, मर्क, रस, सिपि, सल्फ, टियुबर।

सिलिनियम—कैल्क, नक्स, मर्क, सिपि।

सिष्टस—बेल, कार्बो-वे, मैग्ने-कार्ब, फास्फो।

सिनेगा—एरम, कैल्क, लाइको, फास्फो, सल्फ।

सैबाइना—थूजा, आर्स, बेल, पल्स, रस, स्पञ्ज, सल्फ।

सैबाडिला—सिपि, आर्स, बेल, मर्क, नक्स, पल्स।

सैम्ब्यूकस—आर्स, बेल, कोनाय, ड्रोसे, नक्स, फास्फो, रस, सिपि।

(क) किस दवाके बाद कौन दवा खूब चलती है :—

दवाका नाम — दवाके बादवाली अनुकूल दवाएँ।

सोरिनम—सल्फ, टियुबर, एल्युमि, बोरैक्स, बैरा-कार्ब, कार्बो-वे, चायना, हिपर, लाइको।

स्कुइला ("सिला" देखिये)।

स्टैनम—पल्स, कैल्क, केलि-कार्ब, नक्स, फास्फो, रस, सल्फ, बैसिलि, हाइड्रोफ।

स्टैफिसाइग्रिया—कास्टि, कोलोसि, कैल्क, एसिड-फ्लू, केलि-कार्ब, इग्ने, लाइको, नक्स, पल्स, रस, सल्फ, सिलिनि।

स्ट्रैमोनियम—ऐकोन, बेल, ब्रायो, कूप्रम, हायोस, नक्स।

स्पाइजिलिया—आर्नि, ऐकोन, आर्स, बेल, कैल्क, सिमिसि, डिजि, आइरिस, केलि-कार्ब, कैल्मि, नक्स, पल्स, रस, सिपि, सल्फ, जिङ्क।

स्पञ्जिया—ब्रोमि, ब्रायो, कोनाय, कार्बो-वे, ऐसि-फ्लू, हिपर, केलि-ब्रोम, नक्स, फास्फो, पल्स।

स्पिरिट-कैम्फर ("कैम्फर" देखिये)।

हाइड्रोफोबिनम—नेट्र-कार्ब, नेट्रम-मूर, जेल्स, लैके, नैजा, वगैरह सर्प-विष।

हायोसायमस—बेल, फास्फो, पल्स, स्ट्रैमो, विरे।

(क) किस दवाके बाद कौन दवा खूब चलती है :—

दवाका नाम — दवाके बादवाली अनुकूल दवाएँ।

हिपर-सलफर—कैलेराड्, ऐब्रो, ऐकोन, एरम, बेल, ब्रायो, आयोड, लैके, मर्क, ऐसि-नाई, पल्स, नक्स, रस, सिपि, स्पञ्ज, साइलि, सल्फ, आर्नि, जिङ्क।

हेलिबोरस—बेल, ब्रायो, चायना, लाइको, नक्स, फास्फो, पल्स, सल्फ, जिङ्क।

हैमामेलिस—फेरम, आर्नि।

(ख) किस दवाके बाद कौन-सी दवा नहीं चलती या नुकसान करती है :—

(Inimical or Incompatible Remedies)

दवाका नाम — दवाके बादवाली प्रतिकूल दवाएँ।

आरम-मूर-नै—काफि, सुरासार।

आर्जेण्टम-नाई—काफि।

आर्निका—सुरा (पागल या तेज़ कुत्ता या सियार या बिल्ली आदिके काटनेपर "आर्निका" का सेवन बहुत नुकसान करता है)।

इग्नेशिया—काफि, नक्स, टैबे।

(ख) किस दवाके बाद कौन-सी दवा नहीं चलती या नुकसान करती है :—

दवाका नाम दवाके बादवाली प्रतिकूल दवाएँ।

एपिस—रस, फास्फो।

एरम-ट्राइफाइलम—कैलेडियम।

ऐट्रोपिन—जेल्स।

ऐमोनियम-कार्ब—लैके।

ऐलो-सोक्रोटिना—ऐलि-सि, ऐलि-सै।

ऐलियम-सिपा—ऐलो, ऐलि-सै, सिला।

ऐलियम-सैट—ऐलो, ऐलि-सि, सिला।

ऐसिड-ऐसे—आर्नि, बोरैक्स, कास्टि, रैनान, सार्सा, बेल, लैके, मर्क।

ऐसिड-नाई—लैके (हैनिमैनने कहा है, कि कैल्क-कार्बके बाद एसि-नाई नहीं चलता)।

ऐसिड-लेक्टिक—काफि।

काकुलस-इण्डिका—काफि, कास्टि।

काफिया-क्रूडा—कैन्थ, कास्टि, काकुल, इग्ने, सिष्टस, मिलि, स्ट्रैमो (आर्ज-नाईके बाद "काफिया" नहीं चलता)।

कास्टिकम—ऐसि-ऐसे, काफि, फास्फो, काकुल, सब तरहके एसिड।

कार्बो-एनि—(कार्बो-वेज ?)

(ख) किस दवाके बाद कौन-सी दवा नहीं चलती या नुकसान करती है :—

दवाका नाम	दवाके बादवाली प्रतिकूल दवाएँ।

कार्बो-वेज—(कार्बो-ऐ ?) क्रियो।

कैलि-नाई—कैम्फर या कपूरकी गन्ध लेना।

कैलि-बाई (कैल्केरियाके बाद "कैलि-बाई" नहीं चलता)।

कैनाबिस-सेटाइवा—कैम्फर।

कैन्थरिस—काफि।

कैमोमिला—जिङ्क, नक्स।

कैम्फर—कैलेण्डु, (काफियाके बाद या "केलि-नाइट्रिक" के बाद कैम्फर नहीं चलता)।

कैल्केरिया-कार्ब—सल्फ, बैरा-कार्ब, ब्रायो। (कैलि-बाईके बाद या एसि-नाईके बाद "कैल्केरिया-कार्ब" नहीं चलता है)।

कैलेडियम—ऐरम।

कैलेण्डुला—कैम्फर।

कोलचिकम—ऐसि-ऐसे।

कोलोफाइलम—काफि।

कोनायम—(सोरिनमके बाद "कोनायम" कभी नहीं चलता)।

क्रियोजोटम—(कार्बो-वेजके बाद या चायनाके बाद "क्रियोजोटम" नहीं चलता)।

(ख) किस दवाके बाद कौन-सी दवा नहीं चलती या नुकसान करती है :—

दवाका नाम — दवाके बादवाली प्रतिकूल दवाएँ।

चायना—क्रियो (डिजिटेलिसके बाद या सिलिनियमके बाद "चायना" नहीं चलता)।

जिङ्कम—कैमो, नक्स, सुरा।

जेलसिमियम—(ओपि ?)। [एट्रोपिनके बाद "जेलस" नहीं चलता]

टैबेकम—इग्ने।

डाल्कामारा—लैके, बेल, ऐसि-ऐसे।

डिजिटेलिस—चायना, नाइट्रि-स्पिरिटस-डलसिस।

थिया—फेरम।

नाइट्रि-स्पिरिटस-डलसिस—डिजि, रैनान।

नक्स-वोमिका—ऐसि-ऐसे, इग्ने, जिङ्क, सब तरहका एसिड।
[नक्स-वोमिकाके पहले या बाद "ऐसि-ऐसे" नहीं चलता]

नेट्रम-म्यूर—("नेट्र-म्यूर" पोडोफाइलमकी क्रिया बढ़ाता है)।

पेरिस—फेरम-फास।

पोडोफाइलम—नमक (लवण "पोडोफाइलम" की क्रिया बढ़ा देता है)।

फास्फोरस—कास्टि, एपिस।

फेरम-फास—पेरिस।

फेरम-मेट—ऐसि-ऐसे ; चाय और "बियर" नामक शराब।

(ख) किस दवाके बाद कौन-सी दवा नहीं चलती या नुकसान करती है :—

दवाका नाम — दवाके बादवाली प्रतिकूल दवाएँ।

बेलेडोना—डाल्का, ऐसि-ऐसे, विनिगर।

बोविस्टा—काफि।

बोरैक्स—ऐसि-ऐसे, विनिगर और शराब।

बैराइटा-कार्ब—[कैल्क-कार्बके बाद "बैरा-कार्ब" नहीं चलता]।

ब्रायोनिया—कैल्क।

मर्क्यूरियस*—ऐसि-ऐसे, साइलि [सिलिकाके पहले या बाद शक्तिकृत (potentised) "मर्क्यूरियस" नहीं चलता]।

मार्फिनम—विनिगर।

मिलिफोलियम—काफि।

रस-टक्स—एपिस (रस टक्सके पहले या बाद एपिस" नहीं चलता)।

रस-रेड—"रसटक्स" की प्रतिकूल दवा।

रैनानक्युलस-बाल्बो—ऐसि ऐसे, स्टैफा, सल्फ, नाइट्रिक-स्पिरिटस-डलसिस, शराब, अलकोहल और विनिगर।

लाइकोपोडियम— काफि (केण्टका कथन है, कि लाइकोके बाद "सल्फ" चलता है; परन्तु सलफरके बाद लाइको

* "मर्क्यूरियस" का मतलब "मर्क्यूरियस-सोल" या "मर्क्यूरियस वाइवस" समझना चाहिये।

(ख) किस दवाके बाद कौन-सी दवा नहीं चलती या नुकसान करती है :—

दवाका नाम | दवाके बादवाली प्रतिकूल दवाएँ।

नहीं चलता); "सल्फ, कैल्क, लाइको"—इस तरह पर्यायक्रमसे दिया जाता है।

लिडम—चायना।

लैकेसिस—ऐसि-ऐसे, ऐसि-कार्ब, ऐसि-नाई, ऐमोन-कार्ब, डाल्का, सोरि (सिपि ?)।

सलफर—रैनान (हैनिमैनका कथन है, कि कैल्क-कार्बके बाद कभी सल्फ सेवन न किया जाये और केएट कहते हैं, कि लाइकोके बाद "सल्फ" चलता है, पर सल्फके बाद लाइको नहीं चलता)।

स्टैफिसाइग्रिया—रैनान। (स्टैफिसाइग्रियाके पहले या बाद रैनान नहीं चलता)।

स्ट्रैमोनियम—काफि।

साइलिसिया—("सिलिका" देखिये)।

सार्सापैरिला—ऐसि-ऐसे।

सिङ्कोना—("चायना" देखिये)।

सिपिया—ब्रायो, लैके।

सिला-मैरिटिमा—ऐसि-सि, ऐलि-से।

सिलिका—मर्क।

सिलिनियम—चायना, शराब।

(ख) किस दवाके बाद कौन-सी दवा नहीं चलती या नुकसान करती है :—

दवाका नाम　　दवाके बादवाली प्रतिकूल दवाएँ ।

सिष्टस—काफि ।

सोरिनम—कोनाय, लैके (सिपि ?) ।

स्कुइला—("सिला" देखिये) ।

ह्रिपर—स्पञ्ज (Dr. Smith) ।

(ग) किस दवाकी विष-क्रिया किस-किस दवाकी नष्ट करती है :—

(The Remedy is Antidoted by)

दवाका नाम　　दवाका प्रतिविष (antidotes) ।

आरम-मेट—बेल, चायना, काक्यु, काफि, क्यूप्र, मर्क, पल्स, स्पाई, कैम्फ ।

आस्ट्रिया—ब्रायो, नक्स ।

आइरिस—नक्स ।

आयोडियम—एण्टि-टार्ट, एपिस, आर्स, एकोन, बेल, कैम्फ, चायना, काफि, किनि-सल्फ, फेरम, ग्रैफा, ग्रैटि, ह्रिपर, ओपि, फास्फो, स्पञ्ज, सल्फ, थूजा, पानी मिला, गेहूँका, मैदा ।

(ग) किस दवाकी विष-क्रिया किस-किस दवाको नष्ट करती है :—

दवाका नाम दवाका प्रतिविष (antidotes)।

आर्जेण्टम-नाई—आर्स, कैल्क, लाइको, नेट्र-मूर, मर्क, सिलि, फास्फो, पल्स, रस, सिपि, सल्फ, आयोड, दूध।

आर्जेण्टम-मेट—मर्क, पल्स।

आर्टिका—घासुकका रस।

ओस्मियम—बेल, मर्क, हिपर, स्पञ्ज, ऐसि-फास, सिलि।

आर्निका—ऐकोन, आर्स, कैम्फ, चायना, साइक्लू, इग्ने, इपि, ऐमोन-कार्ब, सेनेगा, फेरम।

आर्सेनिक-आयोड—ब्रायो।

आर्सेनिक-ऐल्ब—किनि-सल्फ, कैम्फ, कार्बो-वेज, चायना, युफोर्बि, फेरम, ग्रैफा, हिपर, आयोड, इपि, कैलि-बाई, मर्क, नक्स-व, नक्स-म, ओपि, सैम्बियु, सल्फ, टैबे, विरे, लैके।

आर्सेनिक-हाइड्रो—ऐमोन-ऐसेट, नक्स।

ऐकोनाइट-नैप—ऐसि-ऐसे, बेल, कार्बो, काफि, नक्स, सल्फ, कैमो, विरे, सिमिसि, पेट्रो, सिपि, विनिगर, सुरासार और शराब।

ऐक्टिया-रेसि—ऐकोन, बेप्टी।

ऐगरिकस—कैल्क, पल्स, रस,।।कैम्फ, शराब, चर्बी या तेल, काफि।

(ग) किस दवाकी विष-क्रिया किस-किस दवाको नष्ट करती है :—

दवाका नाम — दवाका प्रतिविष (antidotes)।

ऐग्नस-कैक्टस—कैम्फ, नक्स, नेट्र-मि, नमक मिला पानी।
ऐङ्गास्टियुरा—ब्रायो, चेलि, काफि।
ऐट्रोपिन—बेल, ओपि, फाइजस।
ऐण्टिमोनियम-क्रूड—कैल्क, हिपर, मर्क।
ऐण्टिमोनियम-टार्ट—ऐसाफि, चायना, काकुत्र, इपि, लोरो, ओपि, पल्स, रस, सिपि, कोनाय, मर्क।
ऐनाकार्डियम—क्लिमे, क्रोटोन, काफि, रैनान, रस।
ऐन्थ्रासिनम—एपिस, आर्स, कैमो, ऐसि-कार्ब, कार्बो-वे, क्रियो, लैके, पल्स, रस, सिलि, ऐसि-सल्फ, चायना।
ऐमिल-नाइट्रेट—कैक्ट।
ऐमोन-काष्ट—आर्ज-नाई, उद्भिजोंकी खटाई, विनिगर।
ऐमोन-कार्ब—आर्नि, कैम्फ, हिपर, लैके, उद्भिजकी खटाई, रेंड़ीका तेल, जायतूनका तेल वगैरह।
ऐमोन-म्यूर—कैम्फ, हिपर, काफि, नक्स।
ऐम्ब्राग्रोसिया—कैम्फ, काफि, पल्स, नक्स, स्टैफा।
ऐरानिया—तम्बाकूका धुआँ पीना।
ऐल्यूमिना—ब्रायो, कैम्फ, कैमो, इपि, पल्स।
ऐल्यूमेन—ऐलो, कैमो, नक्स, इपि, सल्फ।
ऐलो-सोकोट्रिना—कैम्फ, लाइको, नक्स, सल्फ, ऐल्यमे, सरसों।

(ग) किस दवाकी विष-क्रिया किस-किस दवाको नष्ट करती है :—

दवाका नाम — दवाका प्रतिविष (antidotes)।

ऐलियम-सिपा—आर्नि, कैमो, काफि, नक्स, थूजा, विरे।

ऐलियम-सैट—लाइको।

ऐसाफिटिडा—कैम्फ, कास्टि, चायना, मर्क, पल्स, वेलिरि।

ऐसाराम—ऐसि-ऐसे, कैम्फ, पौधोंकी खटाई, विनिगर।

ऐसिड-अक्सैलिक—मैग्ने-वार्ब, कैल्क-कार्ब।

ऐसिड-ऐसे—ऐकोन, नेट्र-मि, मैग्ने-कार्ब, नक्स, सिपि, टैबा।

ऐसिड-कार्ब—खड़िया, दूध चीनी मिला चूनेका पानी।

ऐसिड-नाइट्रि—कैल्क, हिपर, कोनाय, मर्क, मेजि, सल्फ, पेट्रो।

ऐसिड-फास—स्टैफा, काफि, कैम्फ।

ऐसिड-फ्लू—सिलि।

ऐसिड-म्यूर—ब्रायो, कैम्फ, इपि (Dr. Teste)।

ऐसिड-लैक—ब्रायो।

ऐसिड-सल्फ—इपि, पल्स।

ऐसिड-हाइड्रो—कैम्फ, काफि, फेरम, इपि, ओपि, नक्स, विरे-विर।

इयुफार्बियम—ऐसि-ऐसे, कैम्फ, ओपि, नेबूका रस (ज्यादा परिमाणमें)।

इयुफ्रेशिया—कैम्फ, कास्टि, पल्स।

(ग) किस दवाकी विष-क्रिया किस-किस दवाको नष्ट करती है :—

दवाका नाम दवाका प्रतिविष (antidotes)।

इग्नेशिया—पल्स, आर्नि, कैम्फ, काफि, ऐसि-ऐसे, काकुल, कैमो, नक्स।

इथ्यूजा—उद्भिज्ज-अम्ल।

इपिकाक—आर्नि, आर्स, चायना, नक्स, टैबे।

इलैप्स-कोरैलिनस—आर्स, सुरासार, ताप।

एपिस-मेल्लिफिका—कैन्थ, इपि, लैके, लिडम, नेट्र-मि, प्लैण्टे, ऐसि-कार्ब, आर्टिका, जैतूनका तेल, प्याज़।

एरम—ऐसि-ऐसे, बेल, पल्स, मक्खन निकाला दूध या मठा।

एलेन्थस—नक्स, रस, सुरासार।

एस्कियुलस-हिप—नक्स।

आर्ज-नाई—कैम्फ, सार्सा, सल्फ, शराब, काफि।

ओपियम—ऐसि-ऐसे, बेल, कैमो, साइक्लू, काफि, क्रूप्रम, जेल्स, इपि, मर्क, ऐसि-मूर, नक्स, पल्स, विरे, जिङ्क।

ओलियेण्डर—कैम्फ, सल्फ।

काकूलस-इण्डिका—कैम्फ, कैमो, क्रूप्र, इग्ने, नक्स, स्ट्रैफा।

काफिया—ऐकोन, नक्स, ऐसि-ऐसे, कैमो, चायना, ग्रैफि, मर्क, पल्स, इग्ने, सल्फ, टैबे।

कास्टिकम—ऐण्टिम-टार्ट, काफि, कोलोसि, डल्का, गुये, नाइट्रि स्पिरिट-डलसिस, नक्स, ऐसाफि।

(ग) किस दवाकी विष-क्रिया किस-किस दवाकी नष्ट करती है :—

दवाका नाम   दवाका प्रतिविष (antidotes)।

कार्बो-ऐनि—आर्स, कैम्फ, नक्स, लैके, काफि, विनिगर, शराब।

कार्बो-वेज—आर्स, कैम्फ, काफि, लैके, नाइट्रि-स्पिरिटस-डलसिस, काष्टि, फेरम।

कूप्रम-आर्स—("आर्सेनिक" का प्रतिविष देखिये)।

कूप्रम-ऐसि—बेल, चायना, साइकूप्र, डाल्का, हिपर, इपि, मर्क, नक्स।

कूप्रम-मेट—बेल, कैम्फ, साइकूप्र, चायना, काकूप्र, कोनाय, डाल्के, हिपर, इपि, मर्क, नक्स, पल्स, विरि, आरम, कैमो, चीनी, अण्डेका सफेद अंश (दूधके साथ) सेवन करना चाहिये।

किनिनम-सल्फ—आर्नि, आर्स, कैल्क, कार्बो-वे, फेरम, हिपर, लैके, नेट्र-मि, पल्स।

कैलि-आयोड—ऐमोन-मूर, आर्स, चायना, मर्क, रस, सल्फ, वैलेरि, आर्जे-नाइ, अरम, हिपर, एसि-नाइ ३०।

कैलि-काब—कैम्फ, काफि, नाइट्रि-स्पिरिटस-डलसिस, डाल्के।

कैलि-क्लोर—हाइड्रै।

कैलि-नाइ—इपि, नाइट्रि-स्पिरिटस-डलसिस सूँघना।

कैलि-बाइ—आर्स, लैके, पल्स, खटाई, खड़िया, दूध।

कैलि-ब्रोम—कैम्फ, हेलोन, नक्स, जिङ्क, पौधोंकी खटाई।

(ग) किस दवाकी विष-क्रिया किस-किस दवाको नष्ट करती है :—

दवाका नाम दवाका प्रतिविष (antidotes)।

कैलि-म्यूर—बेल, कैल्क, सल्फ, हाइड्रै, पल्स ।

कैक्टस—ऐकोन, कैम्फ, चायना, इयुपेट-पर्फ ।

कैनाबिस-सैट—कैम्फ, मर्क ।

कैन्थरिस—ऐकोन, कैम्फ, सिम्फि, लोरो, पल्स, रियुम।

कैप्सिकम—ऐकेलेडियम, कैम्फ, चायना, साइना, ऐसि-सल्फ, गन्धकका धुआँ ।

कैमोमिला—ऐकोन, ऐल्यूमि, बोरैक्स, कैम्फ, चायना, काकुअ, काफि, कोलोसि, कोनाय, इग्ने, नक्स, पल्स, वेलेरि ।

कैम्फर—कैन्थ, नाइट्रि-स्पिरिटस-डलसिस, ओपि, फास्फो ।

कैल्केरिया-आर्स—ग्लोनो, पल्स, कार्बो-वे ।

कैल्केरिया-कार्ब—ब्रायो, कैम्फ, चायना, इपि, नाइट्रि-स्पिरिट-डलसिस, नक्स, सिपि, सल्फ, हिपर, आयोड, ऐसि-नाइ ।

कैल्मिया—ऐकोन, बेल, स्पाइ ।

कैलेडियम—कैप्स, कार्बो-वे, हायोस, इग्ने, मर्क, जिञ्जि ।

कैलेण्डुला—आर्नि ।

कोका—जेल्स ।

कोनायम—काफि, डाल्के, ऐसि-नाइ, नाइट्रि-स्पिरिट-डलसिस, शराब ।

(ग) किस दवाकी विष-क्रिया किस-किस दवाको नष्ट करती है :—

दवाका नाम दवाका प्रतिविष (antidotes)।

कोपेबा—बेल, कैल्क, मर्क ("मर्क-कोर" मर्दोंके लिये और "मर्क-सोल" औरतोंके लिये उपयोगी है), सल्फ।

कोब्रा (नैजा)—टैबे।

कोरैलियम—कैल्क, मर्क।

कोलचिकम—बेल, कैम्फ, काकुप्र, लिडम, नक्स, पल्स, स्पाई, चीनी, शहद।

कोलिन्सोनिया—नक्स।

कोलोसिन्थ—कैम्फ, काष्टि, कैमो, काफि, ओपि, स्ट्रैफा।

क्रियोजोटम—ऐकोन, नक्स, फेरम (Dr. Teste)।

क्रोकस-सैट—ऐकोन. बेल, ओपि।

क्रोटन-टिग्लि—ऐनाका, ऐण्टि-टार्ट, क्लिमे, रस, रैनेन।

क्रोटेलस-होराइडस—लैकी, (कैम्फ, काफि, ओपि और सुरासार और ताप हलका प्रतिविष है)।

क्लिमेटिज- ब्रायो, कैम्फ, कैमो, ऐनाका. क्रोटन, रस, रैनान।

क्लोरम—ब्रायो, लाइको, प्लम्बम-ऐसेट।

क्लोरैल-हाइड्रेट—डिजि, मस्कस, ताड़ित।

गुयेकम—नक्स।

गैम्बोजिया—कैम्फ, काफि, कोलोसि, केलि-कार्ब, ओपि।

ग्रैफाइटिस—ऐकोन, आर्स, नक्स, चायना, शराब।

(ग) किस दवाकी विष-क्रिया किस-किस दवाको नष्ट करती है :—

दवाका नाम — दवाका प्रतिविष (antidotes)।

ग्रे टियोला—काष्टि, बेल, युफोर्बि, नक्स।

ग्लोनोइन—ऐकोन, कैम्फ, काफि, नक्स।

चायना—आर्नि, एपिस, आर्स, ऐसाफि, बेल, ब्रायो, कार्बो-ऐ, कार्बो-वे, कैल्के-कार्ब, कैप्सि, कास्टि, सिड्रन, साइना, युपेट-पर्फ, फेरम, इपि, लैके, लिडम, लाइको, मिनि, मर्क, नेट्र कार्ब, नेट्र-मि, नक्स, पल्स, रस, सिपि, सल्फ, विरे।

चेलिडोनियम—ऐकोन, कैमो, काफि, कैम्फ, अम्ल (acids) शराब।

जिङ्कम-मेटालिकम—कैम्फ, हिपर, इग्ने, लोबे (Dr. Testes)।

जिजिया—कार्बो-ऐ।

जिञ्जिबार—नक्स।

जेलसिमियम—ऐट्रोपि, चायना, काफि, डिजि, नेट्र-मि, नक्स-म, स्ट्रिकिन (Jephson)।

जैबोरैण्डि—बेल।

टियुक्रियम—कैम्फ।

टेरिबिन्थिना—फास्फो।

टेल्यूरियम—नक्स।

टेराक्सेकम—कैम्फ।

(ग) किस दवाकी विष-क्रिया किस-किस दवाको नष्ट करती है :—

दवाका नाम दवाका प्रतिविष (antidotes) ।

टैबेकम—ऐसि-ऐसे, आर्स, क्लिमे, काकुर, इग्ने, इपि, लाइको, फास्फो, नक्स, पल्स, सिपि, विरे, स्टैफा, कैम्फ, काफि, जेल्स, कैल्म, प्लैण्टे, स्पाई, विनिगर, शराब, खट्टा सेवन।

टैरण्टुला—(आंशिक प्रतिविष बोविष्टा, कार्बो-वे, चेल, कुप्र, जेल्स, मैग्ने-कार्ब, मस्कस, पल्स ।)

ड्राम्बिडियम—मर्क-कोर, स्टैफा ।

डलिकस—ऐकोन ।

डाल्कामारा—कुप्र, इपि, केलि-कार्ब, मर्क, कैम्फ ।

डिजिटेलिस—एपिस, कैम्फ, कैल्क (कोलचि), नक्स, ऐसि-नाई, ओपि, उद्भिज-अम्ल, विनिगर, ईथर ।

डेफने-इण्डिका—ब्रायो, डिजि, रस, सिपि, सिलि, जिङ्क ।

ड्रोसेरा—कैम्फ ।

थिया—फेरम, थूजा, सुरासार बियर नामक शराब, चाय ।

थूजा—कोलचि, कैम्फ, कैमो, काकुर, मर्क, नक्स, पल्स, सल्फ, स्टैफ ।

नाइट्रि-स्पिरिटस-डलसिस—कैल्क, कार्बो-वे, कास्टि, कोनाय, केलि-कार्ब, नेट्र-कार्ब, नेट्र-मूर, ओपि, सिपि ।

नक्स-वोमिका—ऐकोन, आर्स, बेल, कैम्फ, कैमो, काकुर, काफि,

(ग) किस दवाको विष-क्रिया किस-किस दवाको नष्ट करती है :—

दवाका नाम — दवाका प्रतिविष (antidotes)।

युफोर्बि, ओपि, पलस, थूजा, ऐम्ब्रा, इग्ने, आइरिस, प्लैटि, स्ट्रैमो, शराब।

नक्स-मस्कोटा—कैम्फ, जेल्स, लोरो, नक्स-वो, ओपि, वैलेरि, जिङ्क।

निकोटिनम—"टैबाकम" का प्रतिविष देखिये।

नेट्रम-कार्ब—कैम्फ, नाइट्रि-स्पिरिटस-डलसिस।

नेट्रम-फास—एपिस, सिपि।

नेट्रम-म्यूर—आर्स, फास्फो, सिपि, नक्स, कैम्फ, "नाइट्रि-स्पिरिटस-डलसिस" सूँघना।

नेजा—"कोब्रा" का प्रतिविष देखिये।

पोडोफाइलम—कोलोसि, लेप्टा, नक्स।

पल्सेटिला—ऐसाफि, काफि, कैमो, इग्ने, नक्स, स्टैनम, ऐण्टि-टार्ट, कैल्क-फास (Dr. Teste), अम्ल (acids) मात्र ही। [कैमोमिला और पल्सेटिला परस्पर "प्रतिविष" है अथवा आपसमें एक दूसरेकी "बादवाली अनुकूल दवा" है]।

पल्सेटिला-नेट—ऐण्टि-क्रूड।

पेट्रोलियम—ऐकोन, काकूल, नक्स, फास्फो।

पैरिस—कैम्फ, काफि।

(ग) किस दवाकी विष-क्रिया किस-किस दवाको नष्ट करती है :—

दवाका नाम दवाका प्रतिविष (antidotes)।

प्लम्बम—ऐल्यूमि, ऐल्यूमि, ऐण्टि-क्रूड, आर्स, बेल, काक्यु, काष्टि, हिपर, ओपि, हायोस, केलि-ब्रोम, क्रियो, नक्स-वो, नक्स-म, पेड्रो, प्लैटि. ऐसि-सल्फ, ऐसि-ऐसे, कैमो, जिङ्क, इथ्यूजा (Dr. Teste)।

प्लैटिनम—बेल, नाइट्रि-स्पिरिटस-डलसिस, पल्स, कोलचि, (Dr. Teste)।

प्लैण्टेगो—मर्क।

फास्फोरस—काफि, कैल्क, मिजि, नक्स, सिपि, टेरि, आर्स, कैम्फ, क्लोरोफार्म।

फाइजस्टिग्मा—आर्नि, काफि, लिलि, वमन, करानेवाली, दवाएँ।

फाइटोलैक्का—बेल, काफि, इग्ने, आइरिस, मर्क, मिजि, नाइट्रि, स्पिरिटस-डलसिस, ओपि, सल्फ, दूध, नमक।

फेरम-आर्स—आर्नि, बेल, चायना, हिपर, इपि, पल्स, सल्फ, विरे, "बियर" नामक शराब।

फैलेण्ड्रियम—रियुम।

बार्बेरिस—कैम्फर, बेल।

बिस्मथ—काफि, कैल्क, कैप्स, नक्स।

बियुफो—लेके, सेनेगा।

(ग) किस दवाकी विष-क्रिया किस-किस दवाको नष्ट करती है :—

दवाका नाम — दवाका प्रतिविष (antidotes)।

बेलेडोना—ऐकोन, काफि, हिपर, हायोस, मर्क, ओपि, पल्स, सैवाडि शराब।

बैराइटा-कार्ब—ऐण्टि-टार्ट, बेल, कैम्फ, डाल्का, मर्क, जिङ्क।

बोविष्टा—कैम्फ।

बोरैक्स—कैमो, काफि।

ब्रायोनिया—ऐकोन, ऐल्यूमि, कैम्फ, कैमो, चेलि, क्लिमे, काफि, इग्ने॰, नक्स, ऐसि-मि, पल्स, रस, सेनिगा, ऐण्टिम-टार्ट, फेरम (Dr. Teste)।

ब्रोमियम—एमोन-कार्ब, कैम्फ, मैग्ने-कार्ब, ओपि, (कोलचि ?)

वाइबर्नम—ऐकोन, विरे।

वायोला-ओडोरेटा—कैम्फ।

वायोला-ट्राइकलर—कैम्फ, मर्क, पल्स, रस।

वार्बेस्कम—कैम्फ।

विरेट्रम-ऐल्ब—ऐकोन, आर्स, कैम्फ, चायना, काफि, (स्टैफा ?)

विरेट्रम-विरिडि—बहुत गर्म, काफि।

विस्कम-ऐल्बम—कैम्फ, चायना।

वैरियोलिनम—ऐण्टि-टार्ट, मैलेण्ड्रि, सेरासि, थूजा, वैक्सि।

वैलेरियाना—बेल, कैम्फ, पल्स, मर्क, साइना, काफि।

वैक्सिनिनम—एपिस, ऐण्टि-टार्ट, मेलाण्ड्रि, सिलि, १ ...

(ग) किस दवाकी विष-क्रिया किस-किस दवाको नष्ट करती है :—

दवाका नाम — दवाका प्रतिविस (antidotes)।

मार्फिनम—ऐकोन, ड्रपि, ऐट्रोपि, ऐवेना-सेट, बेल, काफि।

मस्कस—कैम्फ, काफि।

मर्क्यूरियस*—आर्स, अरम, ऐसाफि, बेल, ब्रायो, कैलेडियम, कार्बो-वे, कैल्क, चायना, क्यूप्र, कोनाय, क्लोरैल, क्लिमे, डाल्के, फेरम, गुये, हिपर, आयोड, केलि-आयोड, केलि-क्लोर, केलि-बाई, लैके, मिजि, ऐसि-नाई, नक्स-म, ओपि, पोडो, फाइटो, रैटा, सार्सा, स्टैफा, सिपि, स्टिलिञ्जि, सल्फ, स्ट्रैमो, वेलिरि, कैप्सि, कास्टि, साइना, हाइड्रै, हायोस, आइरिस, लैके, केलि-मि, लाइको, ऐसि-मि, नक्स-वो, पल्स, टेरि, थूजा।

मर्क्यूरियस-कोर—लोबे, मर्क-सोल, सिपि, और ऊपर कहे हुए "मर्क्यूरियस" के लगभग सभी प्रतिविष।

मर्क्यूरियस-डलसिस—हिपर।

मर्क्यूरियस-प्रोटो-आयोड—हिपर, लाइको।

मर्क्यूरियस-बिन-आयोड—हिपर।

" वाइवस } पहले बताये हुए "मर्क्यूरियस" के
" सोल } प्रतिविष सब देखिये।

---

* "मर्क्यूरियस" का मतलब "मर्क्यूरियस-सोल" या "मर्क्यूरियस-वाइवस" समझना चाहिये।

(ग) किस दवाको विष-क्रिया किस-किस दवाको नष्ट करती है :—

दवाका नाम — दवाका प्रतिविष (antidotes)

मिडोरिनस—ड्रपि, नक्स-वो, (Allen)।

मिनिऐन्थिस—कैम्फ।

मिफाइटिज—कैम्फ, क्रोटे।

मेजेरियम्—ऐलोन, ब्रायो, कैल्क, कैलि-आयोड, मर्क, नक्स-कैम्फ, खटाई (acids) मात्र।

मेरिका—डिजि।

मैग्नेशिया-कार्ब—आर्स, कैमो, मर्क-सोल, नक्स, पल्स, रियुम, कोलोसि।

मैग्नेशिया-फास—बेल, जेल्स, लैके।

मैग्नेशिया-म्यूर—आर्स, कैल्क, कैमो, नक्स।

मैङ्गनम-एसेटिकम—काफि, कैम्फ, मर्क-सोल।

मैलेरिया-आफि—ब्रायो, नक्स, आर्स, रस।

रस-टक्स—ऐनाका, (एकोन ?), ऐमोन-कार्ब, बेल, ब्रायो, कैम्फ, काफि, क्लिमे, क्रोटन, ग्रैफा, गुये, लैके, रैनेन, सल्फ, सिपि, क्रूप्रम, सैङ्ग, लिडम (Dr. Teste), मर्क, प्लैण्टे।

रस-वेन—ब्रायो, क्लिमे, ऐसि-नाई, फास्फो, रैनेन।

रस-रैड—रस-टक्सका प्रतिविष देखिये।

रियुटा—कैम्फ।

(ग) किस दवाकी विष क्रिया किस-किस दवाको नष्ट करती है :—

दवाका नाम दवाका प्रतिविष (antidotes) ।

रियुम—कैम्फ, कैमो, कोलोसि, मर्क, नक्स, पल्स ।

रियुमेक्स—बेल, कैम्फ, कोनाय, हायोस, लैके, फास्फो ।

रेडियम-ब्रोमाइड—रस-वेन (टेल्य ?) ।

रैनेल-बल्बो—ऐनाका, क्लिमे, बायो, कैम्फ, क्रोटन, पलस, रस ।

रफेनस—ज्यादा परिमाणमें ठण्डा पानी पीना ।

रोडोडेण्ड्रन—ब्रायो, कम्फ, क्लिमे, रस, नक्स-वो ।

लोरोसिरैसस—कम्फ, काफि, इपि, ओपि, नक्स-म ।

लाइकोपोडियम—ऐकोन, कम्फ, कास्टि, काफि, कैमो, ग्रैफा, नक्स, पल्स ।

लिडम—कम्फ, रस ।

लिलियम-टाई—हेलोनि, नक्स, पलस, प्लैटि ।

लोबेलिया—इपि ।

लैकेसिस—ऐल्यूमि, आर्स, बेल, कल्क, कमो, काकूल, कार्बो-वे, काफि, हिपर, लिडम, मर्क, ऐसि-नाई, ऐसि-फास, नक्स, ओपि, सिपि, टैरेण्टु, सिड्रन ।

स्टिलिञ्जिया—इपि ।

स्टैन—पलस ।

स्टैफिसाइग्रिया—ऐम्ब्रा, कैम्फ ।

(ग) किस दवाकी विष क्रिया किस-किस दवाको नष्ट करती है :—

दवाका नाम — दवाका प्रतिविष (antidotes)।

स्ट्रिकनिनम—ऐकोन, कैम्फ, क्लोरोफार्म, ऐमिल-नाइ, आर्ज काफि, हायोस, विरे-व, सलफर ३० (टैबे ?)।

स्ट्रैमोनियम—ऐसि-ऐसे, बेल, हायोस, नक्स, ओपि, पलस, टैबे, कैम्फ, नेबूका, रस।

साइक्लूटा—आर्नि, काफि, ओपि. कूप्र-ऐसे, टैबे।

साइना—आर्नि, कैम्फ, चायना, कैप्सि।

सार्सापैरिला—बेल, मर्क, सिपि।

सलफर—ऐकोन, कैम्फ, आर्स, कैमो, चायना, कोनाय, कास्टि, नक्स. मर्क, पल्स, रस, सिपि, सिलि, थूजा।

सिकेल—कैम्फ, ओपि।

सिक्लेमेन—कैम्फ, काफि, पल्स।

सिनाबेरिस—हिपर, ऐसि-नाइ, ओपि, सल्फ।

सिपिया—ऐकोन, ऐण्टि-टार्ट, रस, सल्फ, ऐण्टि-क्रूड, पौधोंकी खटाई (acids) मात्र ही "नाइट्रि-स्पिरिटस-डलसिस" सूँघना।

सिफिलिनम—नक्स-वो (Allen's Nosodes देखिये)।

सियानोथस—नेट्र-मि।

सिला-मेरिटिमा—कैम्फ।

सिलिका—कैम्फर, ऐसि-फ्लू, हिपर।

(ग) किस दवाकी विष-क्रिया किस-किस दवाको नष्ट करती है :—

दवाका नाम दवाका प्रतिविष (antidotes)।

सिलिनियम—इग्ने, पल्स, (ऐसि-मि ?)
सिष्टस—सिपि, रस, कैन्थ।
सीड्रन लैके, बेल।
सेनेगा—आर्नि, बेल, ब्रायो, कैम्फ।
सेवाल-सेरुलेटा—सिलिका, पल्स।
सोरिनम—काफि।
स्कूइला-मेरिटिमा—सिलाका प्रतिविष देखिये।
स्कूकम-चक—टैबे।
स्पाइजिलिया—अरम, कैन्थ, काक्कुस, पल्स।
स्क्विया—ऐकोन, कैन्थ।
सैबाइना—कैन्थ, पल्स।
सैवेडिल्ला—कैन्थ, कोनाय, पल्स।
सैम्बियुकस—आर्स, कैम्फ।
सेगासिनिया—पोडो।
हाइड्रोफोबिनम—ऐग्नस, बेल, सीड्रन, हायोस, लैके, स्ट्रैमो।
हाइपेरिकम—आर्स, कैमो, सल्फ।
हायोसायमस—ऐसि-ऐसे, बेल, चायना, स्ट्रैमो, विनिगर।
हाइड्रेस्टिस—सल्फ।

(ग) किस दवाकी विष-क्रिया किस-किस दवाको नष्ट करती है :—

दवाका नाम दवाका प्रतिविष (antidotes) ।

हिपर-सल्फ—ऐसि-ऐसे, आर्स, बेल, कैमो, सिलि ।

हेलिबोरस—कैम्फ, चायना ।

हैमामेलिस—आर्नि, कैम्फ, चायना, पल्स ।

४। रेपर्टरी*

रेपर्टरी होमियोपैथिक दवाओंके चुनावका प्रधान सहायक है। चिकित्साके समय सभी होमियोपैथिक दवाओंके लक्षण याद कर, दवाका चुनाव सम्भव नहीं है। चिकित्सक रेपर्टरीकी सहायतासे सहज हो लक्षणावलीके किसी एक विषयका प्रभेद समझ लेते हैं और सदृश-विधानकी नीतिके अनुसार सटीक औषधका निर्वाचन कर सकते हैं।

हुपिङ्ग खाँसीका इलाज करते समय पहले "ड्रोसेरा" दवा ही याद आती है, पर यदि सर-दर्दके साथ भौंवोंके ऊपर और नीचे फूल उठे, तो उस समय "कैलि-बाई" से फायदा होता है। "ड्रोसेरा" के सब लक्षण रहनेपर भी वमनके समय यदि कपालमें ठण्डा पसीना हो तो "वेरेट्रम-एल्बम" लाभ करता है। इसलिये, दिखायी पड़नेवाले बादके लक्षण एक रहनेपर भी किसी एक विशेष उपसर्गके प्रभेदसे औषधमें भी उलट-फेर हो जाता है। इसीलिये, होमियोपैथिक मतसे औषध-निर्वाचन सहज नहीं है। साधारण गृहस्थ किसी दवाके प्रयोगसे जब इच्छानुसार लाभ होता नहीं देखते, तो उनको

---

* पारिवारिक चिकित्साके रेपर्टरी अध्यायमें सिर्फ मूत्राशय और ज्वरकी रेपर्टरी ही दी गयी है। सम्पूर्ण और विस्तृत रेपर्टरीके लिये हमारी प्रकाशित हिन्दी रेपर्टरी या Knerr's Repertory अथवा Lippe's Repertory (अंगरेजी) देखिये।

श्रद्धा हट जाती है। इसके अलावा कोई वृहत मेटिरिया-मेडिका या भेषज-लक्षणको यादकर सब तरहकी अवस्थाके भेदसे पार्थक्य करते हुए, दवाके चुनावका अवसर या सुभीता सबको नहीं मिलता। इन सब असुविधाओंको दूर करनेके लिये ही रेपर्टरीकी जरूरत है।

जिस लक्षणमें, जिस दवाकी याद पहले आ सकती है, सर्वसाधारणकी सुविधाके लिये वही मोटे अक्षरोंमें छापी गयी है।

मूत्राशय
(Kidneys)

अकड़न,दबानेसे दर्द करता है (Soreness)—ऐकोन, कैल्के, आर्स, चेलि, ग्रैफा, हेलोनि, हिपर, मैनसि, रैटा।

„ दाहिने—हेलोनि, नक्स-वोम, फाइटो।

„ बायें—बेञ्जो-ए, जिङ्क।

„ मूत्राशय प्रदेशमें—बार्बे, चेलि, हाइड्रो, मर्क-कोर, नक्स-वोम।

„ खींच रखनेकी तरह—क्लिमे, कक्स, नक्स-मस्का टा, टेरि।

„ कुचल जानेकी तरह (Bruised)—कैल्के, क्लिमे, मैनसि, पेरिरा, फाइसो।

„ „ मूत्राशय-प्रदेशमें—बार्बे, फाइसो, जिङ्क।

धकड़न कुचल जानेकी तरह उरुदेशतक फैलता है—बार्बें।
„ मूत्राशय प्रदेशमें—बार्बें, कैना-सैट, आयो, टेरि, जिङ्क।
„ „ फैलता है, पुट्ठेमें—कैना-सैट।
„ „ „ दाहिने पुट्ठेमें—टेरि।
„ सुई वेधनेकी तरह, डङ्क मारने जैसा—ऐकोन, आर्नि, बेल, बार्बें, कैन्थ, चेलि, कोलोसि, कैलि-बाई, कैलि-कार्ब, कैलि-नाई, लैके, मेजि, नक्स-वोम, टेरे।
„ „ फैलता है, मूत्रनली होकर नीचेकी तरफ—कैलि-बाई, ग्रैफा, लाइको।
„ „ मूत्रनलीमें—बार्बें।
„ „ „ मूत्राशयतक—आर्ज-नाई, बेल, बार्बें, कैलि-बाई, लैके।
„ घटना, हिलने-डोलनेपर—टेरि।
„ बढ़ना, हिलने-डोलनेपर—कोलचि, हैमा।
„ „ छींकनेपर—इथू।
एडिसन्स बीमारी (Addison's Disease)—आर्स, बेल, कैल्के, फेरम, फेरम-आयोड, आयो, कैलि-कार्ब, नेट्रम-म्यूर, नाइट्रि-ए, फास, साइलि, स्पाई, सल्फ।
गरमी मालूम होना (Heat)—कैलि-आयोड, लैके, नक्स-वोम, जिङ्कि।
„ मूत्राशय-प्रदेशमें—बार्बें, सिमि, हेलोनि, फाइटो, प्रुनम, टेरिबि।

ठण्डा मालूम होना (Coldness)—स्पाइरो।

" मूत्राशय प्रदेशमें—कैमो।

दर्द—ऐकोन, इस्कि, ऐग्न, एलि-सि, ऐल्यूमि, एपिस, आर्नि, बेल, बेञ्जो-ऐ, बार्बे, कैना सै, कैनाई, कैन्थ, चेलिडो, चिमा, कोलचि, इयुपे-पर्पि, हेलोनि, हिपर, इपि, हिपोमि, कैलि-क्लोर, लिथि-कार्ब, लाइको, मिलि, नेट्रम-म्यूर, नक्स-वोम, पैरिरा, फास, प्लम्ब, पल्स, टैरे, टेरि।

" मूत्रनलीमें-दाहिनो तरफ (Right ureter)—एलियम-सिपा, बार्बे, कैना-सै, कैन्थ, डायस्को, लाइको, नक्स-वोम, डलि, सार्सा।

" " बाईं तरफ—बार्बे, हिपोमि, लाइको, पेरिरा।

" " फैलता है, उरुमें और दोनों पैरोंमें (Thighs and feet) पैरिरा।

" " अण्डमें (Testis)—सिफि।

" " उरुमें (Thigh)—नक्स-वोम।

" " दाहिने उरुमें—नक्स-वोम।

" " मूत्रनलीमें—बार्बे।

" " लिङ्ग और अण्डमें—कैन्थे, कोना, डाय, नक्स-वोम।

" " सोनेकी जड़में (Epigastrium)—हाइड्रो-एसिड।

दर्द—मूत्रनलीमें, दाहिनी तरफ, मूत्राशयमें—आर्स, कैन्थ, चेलि, ओसि, फाइटो, टैबे।

„ „ पेशाब करनेके समय, उरुदेशमें—बार्बे।

„ „ चारों तरफ (Radiating from renal region)—बार्बे।

„ „ नीचेकी तरफ—सार्सा।

„ फैलता है, मूत्रनलीमें (ureters)—कैन्थे, चेलिडो, ओसि, फाइटो।

„ „ मूत्राशयमें—कक्कस, फाइटो।

„ ऋतुके आरम्भमें—बार्बे, रैफि, विरे।

„ नाक छिड़कनेपर—कैल्के-फास।

„ बैठे रहनेपर—पैले, टैरि, वेले।

„ घूमनेके समय—क्लिमे

„ पेशाब करते समय, वेग देनेपर—आर्स-आ, फेरम, ग्रैफा, मर्क-कोर, रूटा।

„ पेशाब करते समय—इक्कि, बार्बे, रियुम, मिलि।

„ हँसनेके समय—कैना-इ।

„ मूत्राशय-प्रदेशमें—ऐलि-सैटा, आर्स-हा, ब्रायो, कैल्के-फास, कैना-इ, केन्थ, चेलि, चिमा, कोपे, फेरम, कैलि-नाई, लोबे, मिलि, आक्जेलिक-ऐ, फास, फाइटो, प्लम्ब, रस-टक्स, सार्सा, टेरि।

दर्द, मूत्राशय-प्रदेशमें, उठानेके समय, कुछ—कौल्क।
" झुकनेपर—सल्फ।
" नाक छिड़कनेके समय—कैल्के-फास।
" कनकन करता है—कैना-इ, कैन्थ, क्रोटे, इयुपे-पर्फि, हेलोनि, लाइको, टेरि।
" " पेशाब करनेके समय—इस्कि, इग्ने, ऐण्टिम-क्रूड, बार्बे।
" " घटना, पेशाब होनेपर—लाइको, टेरि।
" " मूत्राशय-प्रदेशमें—ऐकोन, ऐगा, ऐलियम-सिपा, बार्बे, कास्टि, इलाटे, हाइड्रो, लाइको, पैरे, सिपि।
" काट रहा है मानो—ऐकोन, आर्ज-नाइ, आर्नि, बार्बे, कैन्थ, कोलोसि, कैलि-बाई, कैलि-आयोड, मर्क, स्टैफि।
" " पेशाब होनेके पहले—ग्रैफा।
" " मूत्राशय-प्रदेशमें—प्लम्ब, स्टैफि, जिङ्क।
" " " गरमसे घटना, ठण्डसे बढ़ना—स्टैफि।
" " इयुरेटर (मूत्रनलीमें)—एपिस, आर्ज-नाइ, आर्नि, आर्स, बेल, बार्बे, कैन्थ, कार्बो-ऐनि, डालका, कैलि-कार्ब, लाइको, नक्स-वोम, ओसि, ओपियम, टेरिरा, फास, सार्सा, टैबे, वेरे।

दर्द, दबा रखनेकी तरह—कैल्के, कैन्थ, कार्लस, कैलि-कार्ब, नाइट्रि-ए, नक्स-वॉम, थूजा।

» पेशाब होनेके पहले—ग्रैफा।

» मूत्राशय-प्रदेशमें—ऐग, बार्बे, सिमि, हैमा, हाइड्रो, पैले।

» घटना, हिलने-डोलनेपर—टेरि।

» फाड़ डालनेकी तरह (Tearing)—इस्क्रियु, बार्बे, कैन्थ, मेजे, रसटक्स।

» » मूत्राशय-प्रदेशमें—बार्बे, कैलि-कार्ब, लाइको, रसटक्स, जिङ्क।

» चारों ओर फैल जाता है (Radiating)—बार्बे।

» » मूत्रनलीमें फैलता है, नीचेकी तरफ छूनेसे, हिलने-डोलने और साँस लेनेपर बढ़ता है—आर्ज-नाई, बेल।

» ज्वाला—आर्स, बेल, बेञ्जो-ए, बार्बे, कैन्थ, हेलोनि, हिपर, कैलि-कार्ब, कैलि-आयोड, नक्स-वोम, टेरि।

» » पेशाब होनेके पहले—रियुम, थूजा।

» » » समय—रियुम।

» » मूत्रस्थलीतक फैल जाता है—बेल, टेरि।

» » मूत्राशय-प्रदेशमें—बार्बे, कोलोसि, लेक-डि, फाइटो, टेरि

पथरी (Calculi)—बेल, बार्ब्रे, कैन्थ, कोलोसि, इकुई, लिथि-कार्ब, लाइको, मिलि, ओसिमम, पेरिरा, फास, सार्सा।

प्रदाह (Nephritis)—ऐकोन, ऐलियम-सिपा, ऐपिस, आर्निका, एसक्लि, बेल, बेञ्जो-ऐ, ब्राइयो, बार्ब, कैना-सेट, कैन्थ, कैप्सि, कार्बो ऐ, चेलिडो, चिना, कोलचि, इरिजि, इयुपे-पर्फ, जेल्स, हेलोनि, कैलि-कार्ब, कैलि-क्लोर, कैलि-आयोड, लाइको, मर्क, नक्स-वोम, ओसिमम, फास, फाइटो, पलिगो, सार्सा, साइलि, सल्फ, टेरि, थूजा।

" पैरिनकाइमर (नवीन) कोरण्डघटित मूत्र-ग्रन्थि-प्रदाह (Acute parenchymatous nephritis) एपिस, कैन्थ, कोलचि, कोनायम, कैलि-क्लोर, नेट्रम-सल्फ, स्ट्रैमो, इयुरे।

" पीव पैदा करनेवाला (Suppuration)—आर्स, हिपर, मर्क, साइलि।

" रक्त-दोष-जनित (Toxœmic)—क्रोटे-होर।

" हृत्पिण्ड और यकृत-सम्बन्धी रोगके साथ (With cardiac or hepatic affection)—आरम, कैल्के-आर्स।

भारी मालूम होना (Heaviness)—कार्लस, इकुई।

भारी मालूम होना, मूत्राशय-प्रदेशमें—सिमि, हेलोबि, फास, टेलूर, टेरि।

मूत्रलोप (Suppression of urine)—ऐकोन, एपिस, इथू, आइलैन्थ, ऐन्थ्रा, एपिस, आर्नि, आर्स, आर्स, अरम-ट्रि, बेल, कैक्ट, कैम्फ, कैन्थ, कार्बो-ए, कार्बो-वेज, कास्टि, सिकि, कोलोच, क्रोटेलस-हो, कूप्रम, कूप्रम-ए, डिजि, डूलाटे, इरिजि, इयुपे पर्पि, हेलि, हाइड्रो, हाइयो, कैलि-बाई, लैके-कै, लैके, लौरो, लाइको, मर्क-कोर, मार्फि, ओपियम, फास, प्लम्ब, पोडो, पल्स, रोबि, सिकी, साइलि, स्ट्रैमो, विरे।

„ कालेरामें—आर्स, कार्बो-वेज।

„ खींचन (Convulsions) के साथ—कूप्रम, डिजि, हाइयो, स्ट्रैमो।

„ सूजाक बन्द होकर (Suppressed gonorrhœa)—कैम्फ, कैन्थ।

„ ज्वरमें—आर्नि, आर्स, बेल, कैक्ट, कैन्थ, हाइयो, ओपियम, प्लम्बम, सिके, स्ट्रैमो।

„ पसीनेके साथ—ऐकोन, एपिस, आर्स, कैम्फ, डाल्का, हाइयो, लाइको, ओपियम, पल्स, स्ट्रैमो, सल्फ।

„ मेरुदण्डमें चोटकी वजहसे (From concus-ion of spinal column)—आर्नि, रसटक्स, टैरे।

मूत्रलोप, सुन्न हो जाना, मूत्राशय प्रदेश (Numbness in the region of)—बोवि।

ज्वर (Fever) उत्ताप

अनियमित (Irregular paroxysm)—आर्स, कार्बो-वेज, युपे-पर्फो, इग्ने, इपि, मिनि, नक्स-वोम, पल्स, सिपिया।

अविराम टाइफायड "टाइफस (Continued fever)—Typhoid, Typhus)—आर्स, एरम-ट्रि, बैप्टो, ब्राइयो, कैन्थ, कैम्फि, कार्बो-एनि, चायना, चिनि-आ, चिनि-स, क्लोरे, काकुग, कोलचि, क्रोटे-होर, इचिने, जेल्स, हेलि, हाइयो, लैके, लाइको, मस्क, म्यूर-ए, नाइट्रि-ए, नक्स-वोम, ओपि, फास-ए, फास, सोरि, पल्स, रसटक्स, रस-वेन, सिके, साइलि, स्ट्रैमो, सल्फ, सल्फ-ए, टेरि, जिङ्क।

" तीसरे पहर—आर्स, ब्राइयो, कैन्थ, जेल्स, हाइयो, लैकि, नाइट्रि-ए, नक्स-वोम, फास, पल्स, रसटक्स, सल्फ।

" " ४ बजेसे ८ बजेतक—लाइको।

" " ४ " ८ " आधीरातमें—स्ट्रैमो।

अविराम—सन्ध्यामें—आर्स, ब्राइयो, कार्बो-वेज, कैमो, लैकै, लाईको, मूर-ऐ, फास-ऐ, फास, पल्स, रसटक्स, सल्फ।

„ „ ७ बजे—लाइको, रसटक्स।

„ „ ८ बजेसे १२ बजेतक—ब्राइयो।

„ „ १० बजे—लैके।

„ रातमें—आर्स, बैप्टो, ब्राइयो, कार्बो-वेज, चायना, चिनि-आ, कोल्चि, लैके, कलि-बा, मर्क, मूर-ऐ, नक्स-वोम, ओपि, फास-ऐ, फास, पल्स रसटक्स, स्ट्रैमो, सल्फ।

„ „ उत्ताप ज्यादा—बेल, ब्राइयो, हाइयो, रसटक्स, स्ट्रैमो।

„ आच्छन्न भावके साथ—आर्नि, आर्स, बैप्टो, बेल, ब्राइयो, कार्बो-वेज, डाय, क्रोटे-होर, जेल्स, हेलि, हाइयो, लैके, मूर-ऐ, ओपि, फास-ऐ, फास, रसटक्स, स्ट्रैमो, जिङ्क।

„ आधी रातमें—आर्स, रसटक्स, कैमो, सल्फ, वेरे।

„ „ पहले—आर्स, ब्राइयो, बैप्टो, कार्बो-वेज, नक्स-वोम, स्ट्रैमो।

„ „ बाद—आर्स, ब्रायो, फास, रसटक्स, सल्फ।

अविराम—उदर-सम्बन्धी (Abdominal)—आर्स, बैप्टी, ब्राइयो, कोलचि, लाइको, म्यूरियेटि-ए, नाइट्रि-ए, फास-ए, फास, रसटक्स, सिके, सल्फ, टेरि।

„ उद्भेद-सम्बन्धी (Exenthematic)—आइलैन्थिस, एपिस, बेल, ब्राइयो, ड्युफ्रे, लैके, मर्क, फास, रसटक्स, सल्फ।

„ पक्षाघातके साथ फुसफुसमें—ऐण्टिम-टार्ट, आर्स, कार्बो-वेज, लाइको, फास, सल्फ।

„ मस्तक-सम्बन्धीमें—एपिस, बैप्टी, ब्राइयो, जेल्स, हाइयो, लैके, लाइको, ओपि, फास, रसटक्स, स्ट्रैमो।

„ रक्त अधिक होनेकी वजहसे (Congestive)—ब्राइयो, जेल्स, ग्लोनो, लैके।

„ पक्षाघातकी सम्भावनाके साथ, मस्तिष्कमें—हेलि, लैके, लाइको, ओपि, फास-ए, फास, जिङ्क।

„ वक्ष-रोग-सम्बन्धी—ऐण्टिम-टार्ट, ब्रायो, कार्बो-वेज, हाइयो, लाइको, फास, रसटक्स, सल्फ।

„ संज्ञाहीनताके साथ—बेल, हेलि, हाइयो, ओपि, फास-ए, स्ट्रैमो।

आगे बढ़कर आता है (Anticipating)—ऐण्टिम-टार्ट, आर्स, बेल, ब्राइयो, चिनि-सल्फ, चायना, ड्युपे-पर्फो, गैम्बो, इग्ने, नेट्रम-म्यूर, नक्स-वोम।

आधे अङ्गमें (अर्द्धाङ्गमें—one sided)—"उत्ताप" देखिये—
ऐल्यूमि, बेल, ब्राइयो, कास्टि, कैमो, डिजि, ग्रैफा, कैलि-कार्ब, लाइको, मस्क, नक्स-वोम, पैरिरा, फास, जैल्स, रसटक्स, सल्फ, टैरे।

„ दाहिने—बेल, ब्रायो, कैमो, नक्स-वोम, फ़ास, पल्स, रैना-बो।

„ बायें—लाइको, मेजे, प्लाटि, रैना-ब, रसटक्स, सल्फ, स्टैनम।

„ एक तरफका गाल गरम और दूसरा ठण्डा और उजला—ऐकोन, कैमो।

उत्ताप, साधारण (Heat in general)—ऐकोन, ऐम्ब्रा, ऐङ्गा, ऐण्टिम-टार्ट, एपिस, आर्निका, आर्स, एरम-ट्रि, बैप्टो, बैरा-कार्ब, बेल, ब्रायो, कैक्टस, कैल्के, कैन्थ, कैप्सि, कार्बो-वेज, कैमो, चेलिडो, चायना, चिनि-स, सिना, काकूल, काफि, कोलचि, क्रूपि, क्यूरे, साइक्ला, डिजि, डाल्का, डूलै, ड्युपे-पर्फो, फेरम, फेरम-फास, फ्लु-ऐ, ग्रैफा, जैल्स, हेलि, हिपर, हायो, इग्ने, आइयो, इपि, कैलि-आ, लैक-कै, लैके, लोरो, लिडम, लाइको, मैग-कार्ब, मर्क, मर्क-कोर, मर्क-स, मेजे, म्यूरे, नेट्रम-म्यूर, नाइट्रि-ऐ, नक्स-वोम, ओपि,

फास, पोडो, पल्स, रसटक्स, रस-वै, सैबाई, सैम्बु, सैंगुइ, सिकै, सिपि, साइलि, स्पञ्जि, स्कूइ, स्टैनम, स्टैफि, स्ट्रैमो, सल्फ-ऐ, सल्फ, टैरे, टैरेण्ट, बेल, वेरे, वेरे-वि, वायोला।

उत्ताप, सवेरे—ऐड्डा, एपिस, आर्निका, आर्स, बेल, ब्रायो, कैल्के, कास्टि, कैमो, चायना, ड्युपे-पर्फो, हिपर, कैलि-आ, नेट्रम-म्यूर, नक्स-वोम, रसटक्स, सल्फ।

" " सिहरावनके साथ—एपिस, आर्स, कैमो, सल्फ।

" दोपहरके पहले—ऐमोन-कार्ब, बैप्टी, ब्रायो, कैमो, ड्युपे-पर्फो, जेल्स, मैग-कार्ब, नेट्रम-म्यूर, नक्स-वोम, फास, रसटक्स, सल्फ।

" " सिहरावनके साथ—आर्स, बैपटी, कैमो, सल्फ।

" " ८ बजे—ऐमोन-कार्ब, कैमो।

" " ८ बजेसे ५ बजेतक—कैलि-कार्ब।

" " १० बजे, शरीरपर गर्म पानी ढाला जा रहा है या शिराके भीतरसे गर्म पानी बह रहा है मानो—रसटक्स।

" दोपहरमें—आर्स, मर्क, स्ट्रैमो, सल्फ।

" " १ बजे—आर्स, लाइको।

" " २ बजे—पलस, रसटक्स।

उत्ताप, तीसरे पहर—ऐकोन, ऐनाका, ऐङ्गा, **एपिस**, आर्स, ऐसाफि, बेल, ब्रायो, कैन्थ, चेलिडो, चायना, कोलचि, जेल्स, इग्ने, कैलि-कार्ब, **लैकि**, लाइको, नेङ्गम-म्यूर, नाइट्रि-ऐ, **फास**, **पल्स**, रसटक्स, रूटा, सिपि, साइलि, स्कुइ, स्टैफि, सल्फ।

" " सिहरावनके साथ—**एपिस**, आर्स, कोलचि, पोडो, सल्फ।

" " ४ बजे—हिपर, इपि, लाइको।

" सन्ध्यामें—**एकोन**, इस्कि, आर्स, बैप्टी, **बेल**, बार्ब, कैल्क, कार्बो-वेज, कैमो, चेलिडो, **चायना**, सिना, हिपर, हाइयो, **लैकि**, **लाइको**, मर्क, मेजि, फास-ऐ, **फास**, सोरि, **पल्स**, **रसटक्स**, सार्सा, सिपि, साइलि, सल्फ, थूजा।

उत्ताप, सन्ध्यामें सिहरावनके साथ—**एकोन**, आर्स, कैमो, इलै, हिपर, साइलि, सल्फ।

" " ५ बजे—फास, रसटक्स, सल्फ।

" " ६ बजे—ऐण्टिम-टार्ट, चायना, हिपर, नक्स-वोम, रसटक्स।

" " ६ बजेसे ८ बजेतक—कैल्क, **लाइको**।

" " ७ बजे—लाइको, पल्स, रसटक्स।

उत्ताप, सन्ध्यामें ८ बजे—ऐण्टिम-टार्ट, हिपर, फास, सल्फ।

„ रातमें (Night)—ऐकोन, ऐल्यूमि, ऐपिस, आर्स, बैरा-कार्ब, बैप्टी, बेल, ब्रायो, कैल्क, कैन्थ, कार्बो-वेज, कैमो, सिमि, सिना, कोलचि, ड्रोसे, हिपर, कैलि-बाई, मर्क, लाइको, मर्क, मर्क-सल्फ, मार्फि, म्यूर-ए, नेट्रम-ए, नाइट्रि-ए, नक्स-वोम, ओपि, पेट्रो, फास-ए, फास, पल्स, रसटक्स, सैबाडि, सिपि, साइलि, स्ट्रैमो, सल्फ।

„ „ उद्भेदके साथ (Nettle rash)—एपिस, डूल्के, रसटक्स।

„ „ पसीनेके साथ—ऐण्टिम-क्रूड, बेल, कोलचि, मर्क, फास, सोरि, पल्स, रसटक्स, सिपि, सल्फ।

„ „ शीत मालूम होनेके साथ—ऐकोन, आर्स, डूल्के, कोलचि, कैलि-बाई, साइलि, सल्फ।

„ „ सूखा जलन करनेवाला—ऐकोन, आर्स, बैरा-कार्ब, बेल, ब्रायो, सिना, कोलचि, लैके, नाइट्रि-ए, नक्स-वोम, फास, पल्स, रसटक्स।

उत्ताप, रातमें अनिद्राके साथ—वैरा-कार्ब, कैमो, ग्रैफा, ह्वाइयो।

" " उद्वेगके साथ—ऐकोन, एपिस, आर्स, ब्राइयो, रसटक्स।

" " सूखा जलन करनेवाला, प्यास न लगनेके साथ—एपिस, आर्स।

" " ९ बजे—ब्राइयो, लाइको।

" " ११ बजे—मैग-मूर।

" " २ बजे—आर्स।

" आधीरातमें—आर्स, नक्स-वोम, रसटक्स, स्ट्रैमो, सल्फ।

" " और दोपहरमें—आर्स, इलै, स्ट्रैमो, सल्फ।

" " पहले—ऐकोन, ऐण्टिम-क्रूड, आर्स, ब्राइयो, कैलेडि, कार्बो-वेज, चिनि-स, लोरो, मैग-मूर, फास, पल्स।

" " बाद—आर्स, कैलि-कार्ब, लाइको, रैना, सल्फ।

" उत्ताप ऊपरके भागमें—आधे अङ्गमें देखिये—ऐगा, ऐनाका, आर्नि, ब्राइयो, सिना, नक्स-वोम, पैरिरा, पल्स, रसटक्स।

" नीचेके भागमें—ओपि।

" पिछले भागमें—कैमो।

" सामने—कैमो, इग्ने, रसटक्स।

उत्ताप, अत्यधिक (Intense heat) ऐकौन, ऐण्टिम-टार्ट, एपिस, आर्नि, आर्स, एरम-ट्रि, आरम, बेल, ब्राइयो, चिनि-स, कोलचि, जेल्स, हाइयो, लैके, लाइको, मेजे, नेट्रम-मूर, नेट्रम-स, नक्स-वोम, ओपि, फास, पल्स, रसटक्स, सिके, साइलि, स्ट्रैमो।

" आच्छन्न भाव और होश न रहनेके साथ—बेल, नेट्र-म्य, ओपि।

" निद्रावस्थामें—ऐण्टिम-टार्ट, जेल्स, लैके, मेजे, नेट्रम-मूर, नक्स-मस, ओपि, रसटक्स।

" विकारके साथ—(With delirium)—एपिस, आर्स, बेल, ब्राइयो, चिनि-सल्फ, नेट्रम-मूर, ओपि, पल्स, स्ट्रैमो।

" सिर और चेहरा गर्म, शरीर ठण्डा—आर्निका, बेल, ओपि, स्ट्रैमो।

" अवस्था-हीन (Heat absent)—ऐरानि, बोवि, कैम्फि, कास्टि, हिपर, लाइको, मेजे, सैबाड, स्टैफि, सल्फ, थूजा, वेरे।

" ज्यादा देरतक ठहरनेवाला (Long lasting) ऐण्टि-टार्ट, आर्नि, आर्स, बेल, कैक्टस, कैम्फि, जेल्स, हिपर, नक्स-वोम, सिके।

उत्ताप, भीतरी (Internal heat) "भीतरी देखिये"।

" बाहरी (External heat)—ऐकोन, ऐनाका, ऐण्टिम-टार्ट, आर्नि, आर्स, बेल, ब्राइयो, कैल्के, कैन्थ, कैमो, चायना, चिनि-स, इग्ने, मर्क-कोर, नक्स-वोम, ओपि, पल्स, रसटक्स, साइलि, स्ट्रैमो, टेरे।

" बाहरी उत्ताप मालूम होना, उत्ताप न रहनेपर भी—कैमो, इग्ने।

" सिहरावन मालूम होनेके साथ—ऐकोन, ऐनाका, आर्नि, आर्स, बेल, कैल्के, काकुल, काफि, हेलि, इग्ने, लैके, लोरो, नक्स-वोम, सिपिया, सल्फ, थूजा।

" सूखी (Dry heat)—एकोन, एपिस, आर्नि, आर्स, बेल, ब्राइयो, कैल्के, सिड्री, कैमो, चायना, कोलचि, डाल्का, लाइको, मर्क, नक्स-वोम, ओपि, पेट्रो, फास-ए, फास, पल्स, रसटक्स, सैम्बु, सिके, स्पिजि, स्ट्रैमो, सल्फ।

" " सवेरे—आर्नि, ब्राइयो, सल्फ।

" " संध्यामें—पुम्ब, पल्स।

" " " शिरायें फैली हुईं, हाथमें जलन, ठण्डा स्थान खोजता है—पल्स।

उत्ताप सूखा, रातमें—एकोन, आर्स, बैरा-कार्ब, बेल, ब्राइयो, कास्टि, कोलचि, लैके, नाइ-ऐ, नक्स-वोम, फास, पल्स, रसटक्स, रस-वे।

" " विकारके साथ—आर्स, बेल, ब्राइयो, चिनि-स, काफि, लैके, लाइको, रसटक्स।

" जलन करनेवाला—"जलन" देखिये।

" तरङ्गकी तरह—ऐकोन, आर्नि, बेल, कैक्टस, कैल्के, कार्बो-वेज, चायना, कालचि, डूलै, ग्लोनो, ग्रैफा, इग्ने, आयो, कैलि-बाई, कैलि-कार्ब, कैलि-आ, लैके, लाइको, मैंङ्ग, मिनि, नाइट्रि-ऐ, नक्स-वोम, पेट्रो, फास, रसटक्स, सैंगु, सिपि, साइलि, सल्फ-ऐ, सल्फ, थूजा, जैन्थ।

" " सिहरावन मालूम होनेके साथ—आर्स, कार्बो-वेज, कोलचि, मर्क, पल्स, सल्फ।

" " पसीनेके साथ—हिपर, सिपि, सल्फ, ऐसिड, थूजा, जैन्थ।

" " गरम पानी मानो माथेपर ढाले देता है—आर्स, जेल्स, रसटक्स, सिपि।

उद्भेद-सम्बन्धी (Exanthematic)—ऐकोन, ऐपिस, आर्स, डूयुफे, हिपर, पल्स, रसटक्स, सल्फ।

ऋतुके समय—ऐकोन, बेल, कैल्के, ग्रैफा, फास, सिपि, सल्फर।

कँपकँपीके साथ (with shivering)—ऐपिस, आर्निका, बेल, कास्टि, कैमो, कूप्रम, ड्रोसेरा, डूले, इयुपे-पर्फ, जेल्स, हेलि, हिपर, लैके, नक्स-वोम, पोडो, पल्स, रसटक्स, सल्फ।

„ उत्तापके साथ पर्यायक्रमसे—ऐकोन, आर्स, बेल, ब्रायो, ड्रोसेरा, डूले, डूपि, नक्स-वोम, प्लैटि, काकुय।

„ ओढ़ना उतारनेके कारण—आर्निका, चायना, लैके, नक्स-वोम, रसटक्स, स्ट्रैमो।

„ पसीना और उत्तापके साथ—नक्स-वोम, रसटक्स।

„ हिलने-डोलनेकी वजहसे—पोडो, स्ट्रैमो, ऐपिस, आर्निका, नक्स-वोम।

कृमिकी वजहसे—ऐकोन, सिकि, सिना, डिजि, फिलिक्स, हाइयो, मर्क, नक्स-वोम, सैबाडि, साइलि, स्पाई, स्टैनम, स्ट्रैमो, सल्फ, वैलेरि।

क्रोधकी वजहसे—ऐकोन, काकुय, कोलोसि, कैमो, इग्ने, नक्स-वोम, पेट्रो, सिपि, स्टैफि।

खोलनेसे, गात्रावरण (uncovering)—आर्निका, आर्स, बेल, कैम्फ, कार्बो-ऐनि, कोलचि, ग्रैफा, हिपर, मैग-कार्ब, मैग-म्यूर, मर्क, नक्स-वोम, पल्स,

रसटक्स, सैम्बु, साइलि, स्कूई, स्ट्रैमो, स्ट्रैफि।

खोलनेसे मौतके कारण—ऐकोन, आर्निका, बेल, चायना, नक्स-वोम।

" इच्छा—ऐकोन, एपिस, आर्निका, आर्स, बोवि, चायना, काफि, ड्रयुस्रो, फेरम, हिपर, डूस्ने, लैके, मैग-कार्ब, मस्क, म्यू-ऐ, नाइट्रि-ऐसिड, ओपि, पेट्रो, फास, प्लैटि, पल्स, सिपी, स्टैफि, सल्फ।

ग्रीष्म ऋतुमें—आर्स, बेल, ब्रायो, कैल्के, कैप्सि, इपि, जेल्स, लैके, नेट्रम-म्यूर, पल्स, सल्फ, थूजा, वेरे।

छोटी माताकी वजहसे ज्वर—"उद्भेद ज्वर" देखिये।

जलन करनेवाला उत्ताप (Burning heat)—ऐकोन, एपिस, आर्स, बेल, ब्रायो, कार्बो-वेज, कैमो, सिना, डाल्का, इले, जेल्स, हिपर, लाइको, मर्क-कोर, नक्स-वोम, ओपि, फास, पल्स, रसटक्स, सैम्बु, सिकेलि, स्पिजि, सल्फ।

" करनेवाला उत्ताप—सवेरे—ब्राइयो, कैमो।

" दोपहरके पहले—नेट्रम-म्यूर, नक्स-वोम, फास।

" " ८ बजेसे १२ बजेतक—कैमो।

जलन, तीसरे पहर—आर्स, बेल, ब्रायो, हिपर, फास, पल्स।

" " ४ बजेसे आरम्भ होकर रातभर रहनेवाला—हिपर।

" " ४ बजेसे थोड़ी देरतक रुकनेवाला—लाइको।

" " सन्ध्यामें—एकोन, आर्स, बेल, ब्रायो, कार्बो-वेज, कैमो, हायो, लाइको, मर्क-कोर, फास, पल्स, रसटक्स, सल्फ।

" रातमें—एकोन, आर्स, बैप्टी, बार्बे, बेल, ब्राइयो, कैक्ट, कार्बो-वेज, कैमो, हिपर, ओपि, फास, पल्स, रसटक्स, स्ट्रैमो।

" " आधी रातमें—आर्स, रसटक्स।

" " " पहले—ब्रायो, कैमो।

" " " बाद—आर्स, फास, थूजा।

" भीतरी, ज्यादा, मानो शिराओंके बीचमें जलन हो रही है—आर्स, ब्रायो, रसटक्स।

" विकारके साथ ज्यादा—बेल, स्ट्रैमो, वेरे।

" शिराओंमें होकर फैलता है—बेल, चायना, हाइयो, लिडम, मर्क, पल्स।

" सूखा, जलन करनेवाला उत्ताप, पर्यायक्रमसे शीत मालूम होनेके बाद—बेल।

डेंगू ज्वर—ऐकोन, बेल, ब्रायो, इयुपे-पर्फो, जेल्स, पल्स, रसटक्स, रस-वे।

दूधका ज्वर (Milk fever)—ऐकोन, आर्निका, बेल, ब्रायो, कैमो, काफि, इग्ने, मर्क, ओपि, रसटक्स।

धीमा बोखार (Slow fever)—आइलैन्थ, आर्निका, आर्स, बैप्टी, कैम्फर, लैके, म्यूरि-ऐसिड, फास-ऐ, फास, रसटक्स।

पसीना नहीं होता है (Perspiration absent)—"पसीना" देखिये।

पर्यायक्रमसे शीतके साथ (Alternating with chill)—ऐग्नस, ऐमोन-म्यूर, ऐण्टिम-टार्ट, आर्स, बैप्टी, बैरा-कार्ब, बेल, ब्रायो, कैल्के, कैमो, चायना, काफि, डिजि, इस्के, हेलि, हिपर, हाइयो, इग्ने, क्रियो, लोरो, लाइको, मैंग-म्यूर, मर्क, नक्स-वोम, फास-ऐ, फास, रसटक्स, सैंगुइ, सिके, साइलि, सिपि, सल्फ, वेरे, जिङ्क।

परिवर्त्तन होनेवाला (Changing paroxysm)—इलैट, इग्ने, पल्स, सिपि।

" क्विनाइनके अपव्यवहारकी वजहसे—आर्स, इलाटे, इयुपे-पर्फ, इग्ने, इपि, नक्स-वोम, पल्स।

पाकाशय-सम्बन्धी (Gastric)—ऐकोन, ऐण्टिम-क्रूड, एण्टिम-टार्ट, आर्स, बेल, ब्राइयो, कार्बो-वेज, कैमो, चेलि, चायना, कोलोसि, जेल्स, डूपि, मर्क, नक्स-वोम, फास, पोडो, पल्स, रसटक्स, सिकेलि, सल्फ, वेरे।

पाला ज्वर—"शीत" देखिये।

प्रदाह-जनित (Inflammatory)—ऐकोन, बेल, ब्रायो, कैक्ट, कैमो, कोलचि, लैके, मर्क, फास, पल्स, रसक्सट, सल्फ।

विरक्तिको वजहसे (from vexation)—पेट्रो, फास-ए, सिपि।

भीतरी उत्ताप (Internal heat)—एकोन, आर्नि, आर्स, बेल, ब्रायो, कास्टि, कैमो, मैग-कार्ब, फास-ए, फास, पल्स, रसटक्स, सैबाडि।

„ जलनसे भरा हुआ—आर्स, कैम्फि, बेल, मस्क, सिकि।

„ „ शिराओंके बीचमें—आर्स, आरम, ब्रायो, ह्यायो, रसटक्स।

„ „ शरीर छूनेसे ठण्डा—कार्बो-वेज, फेरम।

„ बाहरी शीतके साथ—एकोन, आर्स, बेल, कैल्के,

कैमो, डल्के, डूपि, मेजे, मर्क, पल्स, रसटक्स, सिके, सल्फ, वेरे।

मैलेरिया (Malaria)—आर्निका, कैड्मि, कार्बो-एनि, चिनि-स, चायना, चेलिडो, ड्युके, ड्युपे-पर्फो, जेल्स, एपि, मैले-आ, नेट्रम-सल्फ, नक्स-वोम, पोडो, सोरि, सल्फ-ए, टेरि, वेरे-वि।

शीतावस्था नहीं रहती है (Chill absent)—ऐनाका, एकू, एपिस, आर्स, बैप्टी, बेल, ब्रायो, कैल्के, कैमो, चायना, सिना, फेरम-फास, जेल्स, डूपि, ल्यूको, नक्स-वोम, रसटक्स, स्ट्रैमो, सल्फ, थूजा।

शीतावस्था नहीं रहती है, सवेरे—आर्निका, आर्स, ब्रायो, कैल्के, कास्टि, युपे-पर्फो, हिपर, नेट्रम-म्यूर, रसटक्स, सल्फ, थूजा।

" दोपहरके पहले—कैमो, जेल्स, नक्स-वोम, रसटक्स, सल्फ।

" " ९ बजेसे १२ बजेतक—कैमो।

" " १० बजे—जेलस, नेट्रम-म्यूर, रसटक्स।

" " १० से ११ बजेतक—नेट्रम-म्यूर ; थूजा।

" " ११ बजे—बैप्टि, कैल्के, नेट्रम-म्यूर।

शीतावस्था, तीसरे पहर—आर्स, बेल, ब्राइयो, जेल्स, पल्स, रसटक्स, साइलि।

" " १ से २ बजेतक—आर्स।

" " २ बजे—पल्स।

" " ३ बजेसे ४ बजेतक—एपिस, लाइको।

" ४ बजे—ऐनाका, एपिस, हूपि, लाइको।

" सन्ध्यामें—बैप्टी, बेल, ब्रायो, कैमो, सिना, पेट्रो, पल्स, रसटक्स, सल्फ।

" " ६ बजे—नक्स-वोम।

" " ६ बजेसे सारी रात—नक्स-वोम, रसटक्स।

" " ६ " ७ बजे—कैल्के, नक्स-वोम।

" " ७ बजे—कैल्के, नक्स-वोम।

" रातमें—आर्स, बैप्टी, बेल, ब्रायो, कैल्क, कार्बो-वेज, सिना, कैलि-बाई, फास, पल्स, रसटक्स, सल्फ।

" " १० बजे—आर्स, हाइड्रो।

" " १२ बजेसे २ बजे—आर्स।

" " १२ बजेसे ३ बजे—आर्स, कैलि-कार्ब।

" " १ बजेसे २ बजेतक—आर्स।

" " २ बजे—आर्स, बेञ्जो-ए।

शीतके साथ (with chill)—**ऐकोन, आर्स, बेल,** ब्रायो, **कैल्के, कैमो,** चेलिडो, डिजि, फेरम, **हेलि, इग्ने,** मर्क, मेजि, **नाट्र-ऐ, नक्स-वोम,** ओलियै, प्लम्ब, पोडो, पल्स, **रसटक्स,** सैङ्ग, सिपि, स्ट्रैमो, सल्फ, थूजा, वेरे, जिङ्कि।

शीत मालूम होना (सिहरावनके साथ—with chilliness)—एपिस, आर्नि, बेल, कास्टि, **कापि,** इग्ने, कैलि-बा, कैलि-कार्ब, मर्क, पोडो, **पल्स,** सिपि, स्पाइजि, स्कुई, सल्फ, **थूजा, वेरे,** जिङ्क।

„ ज्यादा देरतक, उत्तापके साथ—पोडो।

„ बिछावनसे हाथ बाहर निकालनेपर—बैरा-कार्ब, बोरा, हिपर, **नक्स-वोम,** स्ट्रैमो।

सर्दीको वजहसे (catarrhal)—**ऐकोन,** आर्स, **ब्राइयो,** कार्बो-वेज, कोना, फेरम-फास, **हिपर,** कैलि-आयोड, लैके, मर्क, फास-ऐ, रसटक्स, सैबाडि, सिपि।

सविराम, पुराना (Intermittent chronic)—**आर्स, केल्के,** कैल्क-फास, कार्बो-वेज, हिपर, **लाइको, नेट्रम-मूर,** नक्स-वोम, सिपि, साइलि, सल्फ।

„ नया—**आर्स,** बैप्टी, ब्राइयो, चिनि-स, चायना, **जेल्स,** इग्ने, **नेट्रम-मूर,** नक्स-वोम।

सविराम यकृत बढ़नेके साथ—लाइको, नेट्रम-म्यूर, नाइट्रि-ऐ।

सम्बन्ध—शीत, उत्ताप और पसीनेकी अवस्थाका आपसका (Succession of stages)

„ शीतके बाद उत्ताप—**एकोन**, एल्यूमि, ऐण्टिम-टार्ट, आर्नि, बेल, कार्बो-वेज, चायना, सिना, कोलचि, ड्रोसेरा, ड्युपे-पर्फो, ग्रैफा, हिपर, **हाइयो**, **आइयो**, **इग्ने**, **इपि**, **लाइको**, मैग-कार्ब, मर्क-कोर, नेट्रम-कार्ब, **नेट्रम-म्यूर**, नक्स-वोम, ओपि, पेट्रो, फास, **पल्स**, **रसटक्स**, सिके, स्पञ्जि, स्पाइजि, **स्ट्रैमो**, **सल्फ**, वैले।

„ „ पसीनेके साथ—एकोन, **बेल**, ब्राइयो, कैम्फि, **कैमो**, चायना, फेरम, नक्सवोम, ओपि, पल्स, **रसटक्स**, सैबाडि, सल्फ।

„ „ बाद पसीना—**आर्स**, बेल, ब्राइयो, **चायना**, ड्युपे-पर्फो, ग्रैफा, इग्ने, लैके, नेट्रम-म्यूर, **नक्स-वोम**, **पल्स**, रसटक्स, सैबाडि, स्पञ्जि, सल्फ, वेरे।

„ शीतके बाद ही पसीना—(बीचकी उत्ताप अवस्था नहीं रहती)—ब्राइयो, **कैम्फि**, कार्बो-ऐनि, **कास्टि**,

क्विमि, डिजि, लाइको, मेजे, ओपि, पेट्रो, रसटक्स, थूजा, वेरे।

„ उत्तापके बाद शीत—बेल, ब्राइयो, कैल्के, कास्टि, हेलि, नाई-ए, नक्स-वोम, पल्स, कैमो, सिपि, स्टैनम, स्टैफि।

„ „ के बाद पसीना—ऐमोन-म्यूर, आर्स, कैमो, चायना, कार्फि, इग्ने, इपि, मैगी, नक्स-वोम, रैनान्कुल, रसटक्स, साइलि, वेरे।

„ „ ठण्डा—वेरे।

सूर्यकी गरमीकी वजहसे (Heat of sun)—ऐगिटम-क्रूड, बेल, कैक्टस, ग्लोनो।

सूतिका ज्वर (Puerperal fever)—बैप्टी, ब्राइयो, फेरम, लैकी, लाइको, नक्स-वोम, फास, पल्स, रस-रेड, रसटक्स, सल्फ।

„ लोकिया (प्रसवान्तिक स्राव) बन्द होकर—लाइको, पल्स, सल्फ।

सेप्टिक फीवर (Septic fever)—ऐसे-ए, ऐन्थ्रा, एपिस, आर्निका, आर्स, बेल, बेप्टी, ब्रायो, कैडमि, कार्बो-वेज, क्यूरे, कार्बो-ए, क्रोटेलस-हर, एकिने, कैलि-फास, लैकी, लाइको, मर्क, म्यूर-ए,

ओपि, फास, फास-ऐ, पल्स, पाइरो, रसटक्स, रस-वे, सल्फ, सल्फ-ऐ, टैबे, टेरि।

सेरिब्रो स्पाइनल ज्वर (Cerebro spinal fever)—एकोन, ऐण्टिम-टार्ट, एपिस, आर्ज-नाई, आर्नि, आर्स, बैप्टो, बेल, ब्राइयो, सिकि, सिमि, क्रोटे-हो, क्यूप्रम, जेल्स, ग्लोनो, हायो, इग्ने, नेट्रम-म्यूर, नेट्रम-स, नक्स-वोम, ओपि, फास, रसटक्स, वेरे-वि, जिङ्क।

स्वल्प-विराम ज्वर (Remmittent fever)—ऐकोन, ऐण्टिम-टार्ट, बेल, ब्राइयो, कैमो, चायना, जेल्स, इपि, लैके, लाइको, मर्क, नेट्रम-स, नक्स-वोम, पोडो, पल्स, रसटक्स, सल्फ।

" सवेरे—आर्नि, ब्रायो, रसटक्स, सल्फ।

" तीसरे पहर—आर्स, बेल, ब्राइयो, जेल्स, लैकै, लाइको, नक्स-वोम।

" सन्ध्यामें—ऐकोन, बेल, ब्राइयो, लाइको, नक्स-वो, फास, पल्स, रसटक्स, सल्फ।

" रातमें—ऐकोन, आर्स, बैप्टी, कैमो, मर्क, नक्स-वोम, फास, पल्स, रसटक्स, सल्फ।

" एक तरफका गाल लाल, दूसरी तरफका सफेदीके साथ—ऐकोन, कैमो।

स्वल्पविराम ज्वर, टायफायडमें बदल जानेकी सम्भावना—
एण्टिम-टार्ट, आर्स, बैप्टी, ब्राइयो, म्यूर-ए, फास-ए, फास, रसटक्स, सिके।

स्वल्पविराम ज्वर—क्विनाइनके अपव्यवहारके कारण—आर्स, इपि, पल्स, रसटक्स।

" बच्चोंका—एकोन, आर्स, बेल, ब्राइयो, कैमो, जेल्स, इपि, नक्स-वोम, सल्फ।

हाम ज्वर (खसड़ाका बोखार)—"उद्भेद-ज्वर" देखिये।

हेक्टिक ज्वर (क्षय-ज्वर Hectic fever)—एसि-ए, आर्स, आर्स-आयोड, ब्राइयो, कैल्के, कैल्के-फास, कैल्के-स, कैप्सि, कार्बो-वेज, चायना, चिनि-आर्स, क्लोरो, हिपर, आइयो, इपि, कैलि-आर्स, कैलि-कार्ब, कैलि-फास, कैलि-स, लैके, लाइको, मर्क, फास-ए, फास, पल्स, पाइरो, सैंगू, सिनि, सिपि, साइलि, स्टैनम, सल्फ, टेरे, थूजा, टियुबकुर।

" " घटना भोजनके बाद—ऐनाका, आर्स, चायना, फेरम, इग्ने, आइयो, नेट्रम-कार्ब, फास, रसटक्स, स्ट्रान्सि।

" " घटना खोलनेसे, गात्रावरण—ऐकोन, आर्स, बोवि, कैमो, चायना, फेरम, इग्ने, लेडम, लाइको, म्यूर-ए, पल्स, वेरे।

हेक्टिक ज्वर घटना, हिलनेसे—कैप्सि, लाइको, पल्स, रसटक्स, वैले।

„ „ खुली हवामें—कैन्थ, मस्क, नेट्रम-म्यूर।

„ „ घूमनेसे, खुली हवामें—फास, पल्स।

„ बढ़ना, खानेके, बाद—ओडो, बेल, ब्राइयो, कास्टि, कैमो, लैके, लाइको, नाई-ए, नक्स-वोम, फास, सिपि, सल्फ।

„ घटना, ओढ़ना उतारनेपर—ऐकोन, कैमो, मैग-कार्ब, साइलि।

„ „ गरम ओढ़नेसे—ऐकोन, एपिस, कैमो, इग्ने, लीडम, पेट्रो, पल्स, रसटक्स, सल्फ, वेरे।

„ „ „ घरमें—ऐमोन म्यूर, एपिस, ब्रायो, इपि, लाइको, पल्स, सल्फ।

„ „ गरममें—एपिस, ब्राइयो, इग्ने, पल्स, ओपि, स्टैफि।

„ „ पीनेसे जलीय पदार्थ (Drinking)—बैरा-कार्ब, कैल्के, कैमो, काफि।

„ „ हवासे खुली हुई—चायना, नक्स-वोम।

५। खाद्यके उपादान और खाद्य-प्राण

इस पुस्तकके "उपक्रमणिका अध्यायमें—"स्वास्थ्य-रक्षाके सम्बन्धमें कइएक जरूरी बातें" अनुच्छेदमें खाद्यके सम्बन्धमें संक्षिप्त आलोचना की गई है। खाद्यके सम्बन्धमें साधारण ज्ञान सबको ही रहना आवश्यक है। हमलोग इस अध्यायमें कुछ विस्तृत भावसे खाद्यके सम्बन्धमें आलोचना और हिन्दुस्तानियोंके दैनिक खाद्योंके उपादान और खाद्य-प्राणकी (विटामिन) एक सूची प्रकाशित कर रहे हैं।

वैज्ञानिकगणने गवेषणा और परीक्षाके द्वारा खाद्यको प्रधानतः ६ भागोंमें विभाजित किया है। जैसे—(१) प्रोटीन या छाना या आमिष जातीय, (२) कार्बो-हाइड्रेट या शर्करा जातीय, (३) फैट (चर्बी) या स्नेह-जातीय, (४) पानी, (५) नमक और (६) वाइटामिन या खाद्य-प्राण। परीक्षा द्वारा देखा गया है कि खाद्य और मनुष्य-शरीरके रासायनिक उपादान प्रायः एक ही समान हैं और पानी और खनिज पदार्थ समूह भी दोनों ही वस्तुओंमें प्रायः समान परिमाणमें वर्त्तमान रहते हैं। जीवन-यात्राके निर्वाहके लिये अनुक्षण शरीरका जो क्षय हो रहा है, उस क्षयको रोकनेके लिये शक्तिका संरक्षण करना पुष्ट रखनेके लिये और रोगको प्रतिरोधक क्षमता पैदा करनेके लिये प्रत्येक मनुष्यको ही परिमित उपयोगी खाद्यका ग्रहण करना आवश्यक है।

प्रोटीन ।—शरीरमें ताप पैदा करना और शरीरको दहन-क्रियापर नियन्त्रण करना, शरीरके क्षयको पूरा करना, शरीरके उपादान-समूहोंका निर्माण करना, प्रोटीन खाद्यका काम है।

कार्बो-हाइड्रेट ।—शरीरका तेज़, कर्म-क्षमता और ताप पैदा करना और चर्बीका गठन, कार्बो-हाइड्रेट या शर्करा-जातीय खाद्योंका प्रधान काम है। इस जातिके खाद्य ही हमलोगोंके शरीर-गठन और संरक्षणके प्रधान उपादान हैं।

फैट (चर्बी) या स्नेह-जातीय ।—शरीरमें तेज़ और उत्ताप पैदा करना और चर्बी तैयार करना, इस जातिके खाद्यका प्रधान काम है।

जल ।—शरीरमें इससे परिवर्त्तन होनेपर भी शरीरको दूसरी क्रियाओंके स्वाभाविक परिचालनके लिये और शरीरके अस्वास्थ्यकर पदार्थ समूहोंके निकालनेके लिये यह बहुत जरूरी खाद्य है।

लवण ।—पानीकी तरह ही नमक भी एक जरूरी खाद्य है, हमलोग खाद्यके साथ साधारण नमकके अलावा ताजे फल-मूल, शाक-सब्जी और दूसरे-दूसरे खाद्यादिसे चूना, पोटास, सोड़ा इत्यादि नमक जातीय खाद्य आवश्यकताके अनुसार ग्रहण करते हैं, इन सब नमकोंके अभावसे स्कर्वी (शीताद) रोग हो सकता है।

वाइटामिन या खाद्य-प्राण ।—खाद्यके उल्लिखित उपादानोंके अलावा खाद्योंमें ऐसा एक सूक्ष्म उपादान है, जिसके अभावसे मनुष्य जी नहीं सकता है। उल्लिखित उपादान सब बहुत अधिक या जरूरतसे ज्यादा परिमाणमें मौजूद रहनेपर भी केवल इस सूक्ष्म उपादानके अभावसे जीवनी-शक्ति तेजीसे घट जाती है और रोगकी प्रतिषेधक और प्रतिरोधक क्षमता घट जाती है और जीव पुष्ट होनेके बदले तेजीसे दुर्बल और शीर्ण होता रहता है। खाद्य-तत्वविद् पण्डितोंने इसका नाम—वाइटामिन खाद्य-प्राण रखा है।

वाइटामिन कितने ही प्रकारके हैं, इनकी कार्य-कारिताओंका आविष्कार अवश्य हुआ है; लेकिन इसके असली रूपका आविष्कार नहीं हुआ है। इसलिये ए, बी, सी, डी, इनका नामकरण हुआ है। वाइटामिन ए, डी और ई खाद्यके स्नेह-जातीय पदार्थमें गल जानेवाले और वाइटामिन बी और सी पानीमें गलनेवाले होते हैं।

(क) वाइटामिन "ए" ।—इस जातिके वाइटामिनके अभावसे अतिसार, सूतिका, रतौंधी, आँख, कानके प्रदाहादिकी बीमारियाँ, सर्दी, इन्फ्लुएञ्जा, खाँसी, न्युमोनिया, मूत्र-पथरी इत्यादि बीमारियाँ पैदा हो जाती हैं: और श्लैष्मिक-झिल्लियोंके क्षय और क्रियाहीनताकी वजहसे रोगकी प्रतिरोधक क्षमता घट जाती है।

बथुआकी तरकारी, खट्टा बैंगन (टमाटो), शकरकन्द, सेम, गाजर, मटरकी छीमी, कोबी, पपीता, कद्दू, पके आम प्रभृति

हरे पीले रङ्गके साग-सब्जी और फल, दूध, मक्खन, ननी, अण्डे, मछलीका तेल, बकरेका मांस, बकरा और भेंड़की चर्बी प्रभृति स्नेह-जातीय खाद्यमें "ए" वाइटामिन मिलता है। चावलकी भूँसीमें भी "ए" वाइटामिन रहता है। हवा द्वारा बहुत देरतक औंटाने या पकानेसे "ए" वाइटामिन नष्ट हो जाता है। इसलिये पकानेके समय थोड़ी आँचमें ढँककर रसोई बनानी उचित है।

(ख) वाइटामिन "बी" ।—इस जातिके वाइटामिनके अभावसे कब्जियत, अजीर्ण, भूख न लगना बेरी-बेरी, पेलाग्रा प्रभृति बीमारियाँ पैदा हो जाती हैं और मातृ स्तनके दूधके अभावसे और दूधसे बच्चोंको परिपुष्ट न होनेके कारण बच्चोंका वजन घट जाता है और शीर्णता प्रभृति पैदा हो जाती हैं।

ईख, चक्कीका पीसा आँटा, ढेँकीका कूटा चावल, जवकी सत्तू, चना, भुट्टा, दाल, मटर छीमी, सायाबिन, चीना बादाम, सेम, मछलीका अण्डा, अण्डाका फूल, बकरे और भेंड़ेका मांस प्रभृतिमें बहुत ज्यादा परिमाणमें और कमला नीबू, नारियल, आलू, कोबी, प्याज, खट्टा बैंगन (टमाटो), दूध, गुड़, मांस इत्यादिमें थोड़े परिमाणमें वाइटामिन "बी" रहता है। चावलकी भूँसी, चावलका शीर्ष या अंकुर स्थान चावलके मांड़ प्रभृतिमें भी बहुत ज्यादा परिमाणमें "बी" वाइटामिन रहता है। कलका चावल या ढेकीमें छाँटकर महीन और साफ़

करनेपर और पकाये हुए धानका चावल बार-बार धोकर राँधकर मांड़ बहा देनेपर यह "बी" वाइटामिन प्रायः सब ही नष्ट हो जाता है। इस तरहका अन्न ग्रहण करनेके कारण अन्नजीवि हिन्दुस्तानी आज जीवन युद्धमें सर्वत्र पराभव स्वीकार कर रहे हैं। कम पानीमें, कम कड़ा अरवा चावलका भात तैयारकर मांड़ न निकालकर भोजन करनेसे यह "बी" वाइटामिन बहुत ज्यादा परिमाणमें मिल सकता है।

(ग) वाइटामिन "सी"।—इस जातिके वाइटामिनके अभावसे स्कर्वीकी बीमारी होती है. रोग-प्रतिरोधक-शक्ति घट जाती है, दाँत और हड्डीकी पुष्टिमें गड़बड़ी पैदा हो जाती है और बच्चेका वजन घट जाता है, शीर्णता और चिड़चिड़ा मिज़ाज प्रभृति उपसर्ग पैदा हो जाते हैं।

सब तरहके नेबू, खट्टा बैंगन (टमाटो), तरबूज, अनारस, ईख, सेव, खीरा मूँग, जव, अंकुरित चना, प्याज, बथुआ, बाँधा कोबी, आलू, मटर छीमी, दूध, दही, दहीका शरबत प्रभृतिमें "सी" वाइटामिन रहता है। पहले ही कहा गया है, कि यह पानीमें जमनेवाली चीज़ है, इसलिये रसोई करनेके समय तरकारीका पकाया पानी फेंक देनेपर या खुले बर्त्तनमें अधिक देरतक पकानेपर "सी" वाइटामिन नष्ट हो जाता है।

(घ) वाइटामिन "डी"।—इस जातिके वाइटामिनके अभावसे बच्चोंको रिकेट्स और स्त्रियोंको ओस्टियोमेलासिया प्रभृति बीमारी होती है। दाँतमें

कीड़ा लगता है, हड्डी शीर्ण हो जाती है, टेढ़ी पड़ जाती है, खाद्यमें कैलसियम और फास्फोरस आदि लवण-जातीय पदार्थ शोषण और परिपोषणके लिये वाइटामिन "डी" की आवश्यकता होती है।

धूप और काडलिवर आयलमें बहुत ज्यादा परिमाणमें "डी" है। इसलिये धूपमें खड़े होकर शरीरमें तेल या काडलिवर आयल बच्चोंको लगाना—बालक, युवक, वृद्ध सबोंके लिये ही विशेष हितकर है। मछलीका अण्डा, बकरेका मांस, अण्डेका सफेद अंश, दूध, मक्खन, बड़ी, पापड़, अँचार प्रभृतिमें वाइटामिन "डी" मिलता है। यह गरमीसे भी नष्ट नहीं होता है।

(ङ) वाइटामिन "ई"।—इस जातिके वाइटामिनके अभावसे गर्भस्थ बच्चेकी मृत्यु हो जाती है। बार-बार गर्भ-स्राव होता है, इसलिये इसे गर्भ-संरक्षक वाइटामिन कहते हैं।

ढेकीका चावल, चक्कीका आँटा, नारियल, केला, दूध, मांस, अण्डा प्रभृतिमें भी वाइटामिन "ई" मिलता है। यह भी गरमीसे नष्ट नहीं होता है।

———

खाद्यका परिमाण

प्रत्येक जवान स्वस्थ हिन्दुस्तानियोंको रोज़ प्रोटीन ६०-७० ग्राम, फैट ५०-६० ग्राम, कार्बो-हाइड्रेट ४५०—५०० ग्राम, पानी ३-४ सेर और जरूरतके अनुसार खनिज लवण और बहुत ज्यादा परिमाणमें वाइटामिन या खाद्य-प्राणका ग्रहण करना आवश्यक है।

प्रत्येक जवान मनुष्योंके लिये लाल आँटा ६ छटाँक—ताप ११९०˚, ढेंकीका छाँटा चावल ४ छटाँक—ताप ८१८˚, दाल २ छटाँक—ताप—४००, तरकारी ६ छटाँक—ताप १०२˚. सरसोंका तेल आधा छटांक—ताप २५२˚, गुड़ चौथाई छटांक—ताप ५०˚, मछली २ छटांक—ताप ८८˚, दूध २ छटाँक ताप ७२˚, नमक कमवेशी आधा छटाँक, थोड़ा नीबू तेल ३०७˚३ ताप विशिष्ट २३ छटाँक खाद्य ग्रहण करना आवश्यक है।

उल्लिखित तालिकामें पूर्णवयस्क हिन्दुस्तानियोंके साधारण खाद्यका हिसाब दिया गया है। खाद्य ग्रहणका कोई बँधा नियम नहीं हो सकता है। प्रत्येकको व्यक्तिगत आवश्यकताके अनुसार उपयोगी खाद्य ग्रहण करना आवश्यक है।

प्रोटीन, कार्बो-हाइड्रेट और फैट खाद्यांशसे उत्तापकी सृष्टि होती है। इस उत्तापका परिमाण कैलरीके हिसाबसे ठीक किया जाता है। एक हजार ग्राम वजनके पानीका उत्ताप १ डिग्री बढ़ाना हो तो जिस परिमाणमें गरमीकी

आवश्यकता है, शरीर विज्ञानके मतसे उसे कैलरीके हिसाबसे ग्रहण किया जाता है। एक ग्राम आमिषसे इस तरहकी चार कैलरी, एक ग्राम चीनीसे चार कैलरी और एक ग्राम चर्बीसे नौ कैलरी उत्तापकी सृष्टि होती है। थोड़े परिश्रमी व्यक्तिके लिये २४०० कैलरी, ज्यादा परिश्रमी व्यक्तिके लिये २९००-३२०० कैलरी गरमीकी आवश्यकता है।

———

खाद्यका परिमाण

प्रत्येक जवान स्वस्थ हिन्दुस्तानियोंको रोज़ प्रोटीन ६०-७० ग्राम, फैट ५०-६० ग्राम, कार्बो-हाइड्रेट ४५०—५०० ग्राम, पानी ३-४ सेर और जरूरतके अनुसार खनिज लवण और बहुत ज्यादा परिमाणमें वाइटामिन या खाद्य-प्राणका ग्रहण करना आवश्यक है।

प्रत्येक जवान मनुष्योंके लिये लाल आँटा ६ छटाँक—ताप ११९०˚, ढेंकीका छाँटा चावल ४ छटाँक—ताप ८१९˚, दाल २ छटाँक—ताप—४००, तरकारी ६ छटाँक—ताप १०२˚. सरसोंका तेल आधा छटांक—ताप २५२˚, गुड़ चौथाई छटांक—ताप ५०˚, मछली २ छटांक—ताप ८८˚, दूध २ छटाँक ताप ७२˚, नमक कमवेशी आधा छटाँक, थोड़ा नीबू तेल ३०७˚३ ताप विशिष्ट २२ छटाँक खाद्य ग्रहण करना आवश्यक है।

उल्लिखित तालिकामें पूर्णवयस्क हिन्दुस्तानियोंके साधारण खाद्यका हिसाब दिया गया है। खाद्य ग्रहणका कोई बँधा नियम नहीं हो सकता है। प्रत्येकको व्यक्तिगत आवश्यकताके अनुसार उपयोगी खाद्य ग्रहण करना आवश्यक है।

प्रोटीन, कार्बो-हाइड्रेट और फैट खाद्यांशसे उत्तापकी सृष्टि होती है। इस उत्तापका परिमाण कैलरीके हिसाबसे ठीक किया जाता है। एक हजार ग्राम वजनके पानीका उत्ताप १ डिग्री बढ़ाना हो तो जिस परिमाणमें गरमीकी

आवश्यकता है, शरीर विज्ञानके मतसे उसे कैलरीके हिसाबसे ग्रहण किया जाता है। एक ग्राम आमिषसे इस तरहकी चार कैलरी, एक ग्राम चीनीसे चार कैलरी और एक ग्राम चर्बीसे नौ कैलरी उत्तापकी सृष्टि होती है। थोड़े परिश्रमी व्यक्तिके लिये २४०० कैलरी, ज्यादा परिश्रमी व्यक्तिके लिये २९००-३२०० कैलरी गरमीकी आवश्यकता है।

———

हिन्दुस्तानियोंके दैनिक ग्रहण करनेवाले कई खाद्यके उपादान, खाद्य-प्राण और शक्तिको सूची❀

खाद्य	वाइटामिन या खाद्य-प्राण				प्रोटीन या छाना-जातीय	कार्बोहाइड्रेट या शर्करा-जातीय	फट या स्नेह-जातीय	कैलरी या शक्ति (ताप)
	ए	बी	सी	डी				
दूध और दूधकी वस्तुएँ—								
गायका दूध	+++	++	+	+	०.६४	१.३६	१.०२	१८
बकरीका दूध	+++	+	+	+	१.२१	१.२१	१.५३	२०
भैंसका दूध	+++	+	+	+	१.३५	१.२४	२.१८	३०
दही	++	++	...	...	१.४०	०.८०	१.००	१९
छाना	++	++	...	...	६.३	०.१	०.७	३२
मक्खन	+++	...	...	+	०.३	—	२३.१०	२१६
घी	...	...	...	...	—	—	२८.३५	२६३

❀ इस सूचोमें प्रति आउन्स ½ छटाँक (२८.३ ग्राम) खाद्य-शक्ति या तापका परिमाण और खाद्यका उपादान किसमें कितने परिमाणमें हैं, यह दिखाया गया है।

खाद्य	वाइटामिन या खाद्य-प्राण ए	बी	सी	डी	प्रोटीन या छाना-जातीय	कार्बोहाइड्रेट या शर्करा-जातीय	फैट या स्नेह-जातीय	कैलरी या शक्ति (ताप)
तैल—								
सरसों या समस्त उद्भिज तेल	०	०	०	०	—	—	२८·००	२५२
मछलीका तेल	+++	—	...	++	—	—	२८·००	२५२
मांसकी चर्बी	++	...	...	...	०·३४	—	२६·४०	२३६
मांस-मछली—								
टटकी तालाबकी मछली	...	+	...	...	५·५०	—	१·१५	३२
तेलकी मछली	+++	+	...	—	५·३२	—	३·१०	५५
बिना तेलकी मछली	...	+	...	—	५·१५	—	०·२०	२२
बकरेका मांस	—	+	...	—	७·२०	—	०·७५	३६
मुर्गीका मांस	+	+	...	...	५·५	—	४·६	६५
अण्डा	++	+++	—	+	३·७६	...	२·६७	४२
चावल, आँटा प्रभृति—								
मीलका साफ़ किया चावल ...	...	...	...	...	१·७६	२६·०६	०·१३	११३
बिना छांटा चावल	+	+	०	...	२·३०	२२·३०	०·०८५	६६

खाद्य	वाइटामिन या खाद्य-प्राण				प्रोटीन या	कार्बोहाइड्रेट या	फट या	कैलरी या
	ए	बी	सी	डी	छाना-जातीय	शर्करा-जातीय	स्नेह-जातीय	शक्ति (ताप)
भात कलमें साफ़ किया, पकाया—								
चावलका फेन निकाला	...	?	...	...	१·४	१६·७	०·३	६७
फरुई	...	...	...	...	२·१	१९·४	०·३	१०८
चिवड़ा	+	+	...	...	१·७	२१·६	...	६४
लाल आँटा	+	++	०	...	३·६०	२०·३५	०·५४	१०२
सफेद मैदा	०	—	०	...	३·१४	२१·५४	०·३७	१०२
सूजी	+	+++	०	...	४·२०	१४·२०	०·६८	८०
दाल—								
दाल	+	++	०	...	६·५०	१६·२०	०·९९	१००
चना	+	++	०	...	५·७०	१५·३०	१·३०	९६
सोयाबीन	+	++	०	...	९·६०	९·५०	४·७०	११९
मीठे पदार्थ—								
सफेद चीनी	०	०	०	...	—	२८·३०	—	११३
लाल चीनी		—	...	०	...	२६·८९	—	१०८

खाद्य	वाइटामिन या खाद्य-प्राप्य				प्रोटीन या छाना-जातीय	कार्बोहाइड्रेट या शर्करा-जातीय	फैट या स्नेह-जातीय	कैलरी या शक्ति (ताप)
	ए	बी	सी	डी				
गुड़	०	—	०	...	०.०८	२५.०३	—	१००
शहद	—	—	...	...	०.११	२०.२१	—	८१
मूल—								
गोल आलू	—	+	+	...	०.७०	८.१५	०.०४	३६
शकरकन्द	++	+	++	...	०.२	६.०	०.६	३४
कच्चू	...	+	+	...	०.३	५.७	—	२५
मूली	—	+	+	...	०.२८	०.६६	०.०३	५
प्याज़	—	++		...	०.३७	३.०६	०.०३	१४
फल—								
केला	—	+	+	...	०.४५	२.२६	०.०३	११
अंगूर	...	+	—	...	०.१७	०.६३	३.०३	१७
पपीता	+	+	+++	...	०.१६	०.१०	...	१
नारङ्गी	+	+	+++	...	०.२५	२.६६	०.०३	१२
आम	+	...	++	—	००.४	५.२०	०.२२	२३
नारियल	+	++	...	+	१.६१	७.९०	१४.३१	१६७

खाद्य	वाइटामिन या खाद्य-प्राण				प्रोटीन या छाना-जातीय	कार्बोहाइड्रेट या शर्करा-जातीय	फट या स्नेह-जातीय	कैलरी या शक्ति (ताप)
	ए	बी	सी	डी				
तरकारी—								
फूलकोबी	+	+	+	...	०·५४	१·६७	०·०६	९
बाँधा कोबी	+++	++	+++	...	०·३६	१·२७	०·०२	७
बैंगन	...	+	+	...	०·२५	१·४४	०·०६	८
बथुआ शाक	+++	+++	+++	...	०·५१	०·८२	०·०६	६
विलायती बैंगन	—	+++	+++	...	०·२०	१·२७	०·०२	६
तरोई	...	+	+	...	०·५१	१·७०	०·२३	१२
बादाम—								
चीना बादाम	—	++	०	...	७·३०	६·९०	१०·६२	१५५
काबुली बादाम	—	++	०	...	५·२६	४·३०	१५·६६	१८२
अखरोट	+	+++	०	...	२·८५	३·६६	१६·६२	२११
जलपान—								
सन्देश	०	०	०	...	५·४०	१२·००	६·००	१२४
चाय	०	०	०	...	...	...	...	...

परिशिष्ट (क)

परमाणु-पात या शक्ति-विकासवाद

("एक बून्द दवासे लाभ क्यों होता है ?"—
पृष्ठ १४८ की टीका देखिये)।

"परमाणु ही निखिल ब्रह्माण्डका सूक्ष्मतम जड़ उपादान है। जड़ जगतके उपादान कारण परमाणुओंका न तो विभाग हो सकता है और न उनका नाश ही हो सकता है (या नित्य है); इतनेपर भी सभी नैसर्गिक कार्यों का (जैसे—मेघ, बिजली, अन्धड़, भूमिकम्प प्रभृति) के यही मूल हैं।" प्राचीन दर्शनकार महर्षि कणादसे लेकर प्रतीचीन महात्मा डल्टन प्रमुख वैज्ञानिकतक सभी प्रायः इसी सिद्धान्तपर पहुँचे हैं, पर जड़ परमाणुका यह माहात्म्य मालूम होता है, कि अब ठहर नहीं सकता :—

(१) वस्त्र, घर, पानी, भाफ़, वृक्ष, जीव, देह प्रभृति सभी पदार्थ छिद्र-भरे, सङ्कोचनशील और विभाज्य है अर्थात् बाँट दिये जा सकनेवाले हैं, इसीसे विद्वानोंका अनुमान है, कि सभी पदार्थ सूक्ष्म कणोंसे गठित हैं। इन सूक्ष्म-कणिकाओंका नाम "अणु (Molecules)" है। जैसे—एक बून्द जलका भाग करते-करते जब ऐसे एक सूक्ष्मांशमें पहुँच जाता है कि उसका फिर भाग नहीं हो सकता—तो इसी क्षुद्रतम कठिन

अंशका नाम "पानीका अणु" है अर्थात् ऐसे करोड़ों अणुसे एक बून्द पानी तैयार होता है। इसके अलावा रासायनिक प्रक्रियाके द्वारा पानीका विश्लेषण करनेपर जब "उद्जान (hydrogen)" और "अम्लजान (oxygen)" नामक दो वाष्प पाये जाते हैं, तब ऐसा भी अनुमान करना असङ्गत नहीं है, कि जलके प्रत्येक अणुमें उद्जान और "अम्लजानके अणु अवश्य ही वर्त्तमान हैं—इस अणुके अणुको "परमाणु (atoms)" कहते हैं। अतएव, सभी यौगिक पदार्थ "अणु" के समष्टि-मात्र हैं और सभी अणु परमाणुके समष्टि है (जैसे—पानीके प्रत्येक अणुमें दोके हिसाबसे "उद्जान परमाणु" और एकके हिसाबसे "अम्लजान-परमाणु" विद्यमान रहते हैं) इससे मालूम होता है, कि पदार्थ मात्रमें ही सान्तरता (छेद), विभाज्यता (भाग हो सकना) प्रभृति धर्म देखकर पदार्थ विद्यामें "अणुकी" कल्पना की गयी है और कई मूल पदार्थके परस्पर संयोगसे सभी यौगिक पदार्थ* उत्पन्न हुए हैं—यही

* जो पदार्थ एक उपादानसे बने हैं, जिन्हें तोड़नेपर दो या उससे अधिक पदार्थ नहीं पाये जाते, उन्हें मौलिक पदार्थ (elements) कहते हैं। जैसे—सोना, पारा, उद्जान प्रभृति सत्तर मूल पदार्थ हैं।

और जिन पदार्थोंका विश्लेषण करनेपर दो या उससे अधिक मूल पदार्थ पाये जाते हैं, उन्हें यौगिक पदार्थ (compounds) कहते हैं, जैसे—जल, एक यौगिक पदार्थ है, क्योंकि पानीका विश्लेषण करनेपर "उद्जान" और "अम्लजान" नामके दो वाष्प इसमें पाये जाते हैं, (कहना वृथा है, कि ये दोनों पदार्थ "जल" से एकदम अलग है)।

समझानेके लिये पाश्चात्य रसायन शास्त्रमें "परमाणुकी" कल्पना हुई है। वास्तवमें "अणु" और "परमाणु" का अस्तित्व हमारा अनुमान मात्र है।

(२) वास्कोविच, फैराडे प्रभृति भुवन-विख्यात बहुतसे गणितज्ञ, पदार्थ-विद्यावित् और रसायन-वेत्ताओंने नाना प्रकारकी परीक्षाओं और गवेषणाओंके बाद एक स्वरसे यह मीमांसा की है, कि "**जड़पदार्थ**" केवल बल-केन्द्र-समवाय है—अच्छेद्य कणिकाएँ किसी तरह भी "जड़" का गठन नहीं कर सकतीं (What is constitutive of matter is not indivisible particles, but mere centres of force)"। इसके अलावा ब्रिटिश सायन्स ऐसोसियेशनके भूतपूर्व सभापति सर्व-विज्ञान-विशारद सर विलियम क्रूक्स साहबने प्रमाणित किया है, कि **कठिन** (Solid), **तरल** (Liquid) और **वायवीय** (Gaseous)—इन तीन प्रकारकी अवस्थाओंके सिवा पदार्थोंकी और भी एक अवस्था है। पदार्थोंकी यह चतुर्थ या **तेजोमय** (radiant) अवस्थाकी पर्यालोचना करनेपर भी स्पष्ट मालूम होता है, कि "जड़ या अचल परमाणु" कभी भी इस विश्वका उपादान कारण नहीं हो सकता।

परन्तु पाठक यह कह सकते हैं कि यह तो अठारहवीं या उन्नीसवीं शताब्दीकी बात है। अतएव, इसकी भी कुछ आलोचना होनी चाहिये, कि इसपर बीसवीं शताब्दीका विज्ञान क्या कहता है—

(३) आजकलके वैज्ञानिकोंमें यह बात जड़ जमाती नहीं दिखाई देती, कि परमाणु पदार्थ मात्रके ही अविभाज्य चरम अंश हैं। विख्यात प्रोफेसर लै-बोनका कथन है, कि जिसे हमलोग जड़-पदार्थ कहते हैं, उसके अति सूक्ष्म-प्रति-कणिकाके भीतर भी एक शक्ति (energy) छिपी हुई है, उन्हें यदि बाहरसे शक्ति न भी मिले तो भी वे आप-ही-आप बढ़ सकते हैं। जब कोई जड़ पदार्थ किसी कारणसे चूर्ण-विचूर्ण हो जाता है, उस समय उसके परमाणुको इस छिपी हुई शक्तिका विकास होता दिखाई देता है। सूर्यका तेज और बिजली भी इसी भावसे उत्पन्न हैं। जड़ वस्तु (matter) और शक्ति (force) एक ही पदार्थकी दो विभिन्न मूर्त्तियाँ हैं। जब परमाणुगत शक्ति (intra atomic energy) अचल भावसे विराजमान रहती है, उस समय वे जड़ पदार्थ रहते हैं, जब वह सचल भावसे विराजित रहती है, तब वह तेज़, आलोक, विद्युत इत्यादिके रूपमें रहती है।—(तत्वबोधिनी-पत्रिका बैशाख १८२९ शाके देखिये।)

(४) वैज्ञानिकोंकी बातोंके भावसे इतना ही आभास मिलता है, कि जिसे हम "जड़" कहते हैं, वह वास्तवमें जड़ नहीं है, निरन्तर गतिशील ईथर (æther) स्थित शक्ति केन्द्र पुञ्ज है।* एक वैज्ञानिक † तो यहाँतक आगे बढ़ गये हैं,

* Karl Pearsons "Grammar of Science" 2nd Ed. Ch. VII. देखिये।

† Gustave le Bons "Evolution of matter" देखिये।

कि उनके मतसे "जड़" शक्ति-संघात, परमाणु विश्लेषण द्वारा शक्तिका उद्भावन हो सकता है और नये आविष्कृत रेडियम (Radium) की क्रिया इसी श्रेणीका कार्य है। × × × "जड़" शक्ति संघात होनेपर भी वह शक्ति उसमें छिपे भावसे रहती है। उसका प्रकाश केवल अवस्था विशेषमें ही होता है।" कलकत्ता विश्व-विद्यालयके भूतपूर्व वाइस चेन्सलर सर्वजन समादृत बङ्गालके अति उज्वल रत्न परलोकगत सर गुरुदास बन्दोपाध्याय (Kt.) M. A. DL. Ph. d. महोदय लिखित "ज्ञान और कर्म" देखिये।

(५) बीसवीं शताब्दीके प्रारम्भमें (१९०२ ईस्वीमें) क्युरी दम्पति (Mr. & Madame Pierre Currie) ने रेडियमका आविष्कारकर वैज्ञानिक जगतको स्तम्भित कर दिया है। यह मौलिक पदार्थ एक किरण-विशिष्ट पदार्थ है, ताप, ज्योति, वाष्प, इससे लगातार निकाला करते हैं, पर अबतक यह नहीं मालूम हुआ कि इसका भार अणुभर भी घटता है। उद्भिद या जीव-देहमें कुछ देरतक रेडियमकी रश्मि लगा रखनेपर इसकी विलक्षण शक्ति प्रकट होती है— छोटे वृक्ष लता आदि ध्वंस हो जाते हैं, मनुष्यका चमड़ा जल जाता है और पींजड़ेमें बन्द, पक्षी और चूहे आदि प्राणी पक्षाघातग्रस्त और अन्तमें नष्ट हो जाते हैं (*the Pall Mall Magazine* Oct. 1903, *Raues Experiments* 1904; *British Medical Journal* Sept. 21. 1907 देखिये) और रेडियमसे तर हवा सेवन करनेपर सन्निपात आराम होता

है (The *Berlin Radium Emanatoria Reports* and the Indian Daily News for Nov. 6. 1911 देखिये) इस स्थानपर ऐसा कहना शायद असङ्गत न होगा, कि पियरी कुरी साहबके पिता और पितामह विख्यात होमियोपैथिक चिकित्सक थे। एक ग्रेन रेडियमका मूल्य छः हजार रुपयेसे कम नहीं है और समस्त भूमण्डलमें कुल चार आउन्स रेडियम वर्त्तमान है।

१९१८ ईस्वीमें अमेरिकाके मूर साहब (Dr. R. N, Moore, of United states Burean of Mines) ने "मेसोथोरियम" (Mesothorium) नामक एक धातुका आविष्कार किया है। यह पदार्थ ब्रेजिल देशके Monazite आकारमें मिट्टी मिली धातुके आकारमें प्राप्त होता है। इससे भी रेडियमकी तरह ही किरणें हमेशा निकलती हैं, इसलिये इसे भी रेडियमका प्रतिद्वन्द्वी कहा जा सकता है, पर इसकी किरणें रेडियमकी किरणोंकी तरह देरतक नहीं विकीर्ण हुआ करतीं। रेडियम रश्मि दो हजार वर्षोंतक विकीर्ण हो सकती है; पर मेसोथोरियम रश्मिकी परमायु एक या दो वर्ष-भर है, जो हो, इसकी रश्मिके प्रयोगसे भी कितने ही रोग आरोग्य हो रहे हैं। इसका मूल्य थोड़ा है। इसलिये चिकित्सकोंको आशा होती है कि समय पाकर इसकी सहायतासे दरिद्र मनुष्य भी आरोग्य हो सकेंगे।

(६) कुछ दिन पहले रसायन शास्त्रमें यही शिक्षा दी जाती थी, कि न्यूनाधिक्य सत्तर मूल पदार्थोंसे इस जगतका

निर्माण हुआ है ; परन्तु बीसवीं शताब्दीका आविर्भाव होनेपर विज्ञानाचार्योंने बहुत-सी परीक्षाओंके बाद बाध्य होकर यह कहना आरम्भ किया है, कि सत्तर या उससे भी अधिक मूल पदार्थ नहीं—बल्कि एक ही मूल पदार्थसे इस ब्रह्माण्डको रचना हुई है। उसका नाम **तड़िताणु** या तड़ित बिन्दु (एलेक्ट्रन—electron) है।* अब किसी-किसीके मतसे ये एलेक्ट्रन विद्युत्पन्न जड़-कणिका अर्थात् "वस्तु" या matter

* १७४६—१७४७ पृष्ठोंमें कहा गया है, कि पदार्थका लगातार विभाग करते-करते अन्तमें एक ऐसी अवस्था आ पहुँचती है, जब उनका फिर विभाग नहीं हो सकता। इसीका नाम "परमाणु" कल्पित किया गया है। एक उद्‌जान परमाणु (hydrogenatom) को अपेक्षा छोटा और कुछ भी हो नहीं सकता। यही अभीतक माना जाता था, पर अन्तमें एक दिन ऐसा आ पहुँचा, जब वैज्ञानिकोंने स्पष्ट समझ लिया कि पदार्थके गठनतत्त्वका पता इतने सहजमें नहीं लग सकता। सूर्यको घेरकर जिस तरह ग्रह-उपग्रहोंका समूह चक्कर लगाया करता है (और इन सबको लेकर जिस तरह सौर-जगत बना है), उसी तरह एक परमाणुके भीतर संयोग तड़ितयुक्त (positive electrons) एक कणिकाको घेरकर वियोग तड़ितयुक्त (negative electrons) को असंख्य छोटी-छोटी कणिकायें बहुत वेगसे घूमती-फिरती हैं, इनका ही नाम तड़िताणु (electrons) है। रेडियम परमाणु आपसे आप ही टूटते जाते हैं और उसीसे तड़िताणु बड़े वेगसे बाहर निकलते हैं। इनके नाना प्रकारके वेग होते हैं—किसीका कम और किसीका अधिक। एक द्रुतगामी तड़ितकण जभी वायु भेदकर चला करता है, तभी उसका वेग मन्द पड़ जाता है। [इस प्रसङ्गमें Sir E. Rutherfords Lecture on the Structure of Matter at British Association Edinbergh 1921 देखिये।]

हैं और किसी-किसीके मतसे वे स्वयं ही तड़ित या मूर्त्तिमान विद्युत (अर्थात शक्ति या energy) हो रहे हैं ; परन्तु यह सब मानते हैं, कि सृष्टिका मूल उपादान इलेक्ट्रन है। इलेक्ट्रनका गठनतत्व घोर अन्धकारमें छिपा रहनेपर भी उसका आयतन आदि बहुत कुछ निरूपित हो गया—हजार इलेक्-ट्रनोंकी समष्टि एक हाइड्रोजेन परमाणुके आयतन (size) या गुरुत्व (weight) के बराबर होती है और उसका वेग अर्थात् गति (velocity) रोशनीके वेगके दो तृतीयांश होती हैं। एक फ्रेञ्च वैज्ञानिकके मतसे परमाणुका व्यास १०—७mm (अर्थात् एक मिलिमिटरका करोड़ अंश है) और इलेकट्रनका व्यास १०—८८mm होता है। वास्तवमें परमाणु सब कितने ही तड़ित बिन्दु (electric points) की समष्टि-मात्र हैं। इन बिन्दुका आयतन हमलोग हृदयङ्गम भी नहीं कर सकते। दैर्घ्य विस्तार-वेध-विहीन ज्यामितिक बिन्दु जिस तरह मानस-चक्षुमें केवल अनुभव ही होते हैं, उसी तरह परमाणुके उपादान ये तड़ित बिन्दु (electrons) भी हैं। इनके आकार आदिको कल्पना-शक्तिमें धारणा करनेके लिये गणितकी जीवनी-शक्ति ओष्ठ-प्रान्तमें दौड़ पड़ती है। लार्ड केलविन कहते हैं, कि एक बूंद पानीको पृथिवी समझकर यदि उसकी परिधि २४००० मील स्थिर की जाये, तो उसके परमाणु इस कल्पित आयतनकी तुलनासे बन्दूककी गोलीकी तरह होंगी ; इसके अलावा इस परमाणुको १६० फीट लम्बा, ८० फीट चौड़ा और ४० फीट ऊँचा एक मकान मान लिया

जाये तो उसके अङ्गीभूत तड़ितकण एक-एक फुलस्टाप (.) की तरह होंगे। इस सम्बन्धमें कलकत्ता विश्वविद्यालयके भूतपूर्व विज्ञान-परीक्षक परलोकगत अध्यक्ष रामेन्द्रसुन्दर त्रिवेदी M. A. महाशयने कहा है :—

"......परमाणुकी अपेक्षा सूक्ष्मतर पदार्थ मानो इस संसारमें और कुछ नहीं है। अब पता लगता है......परमाणु तोड़कर टुकड़े मिल सकते हैं। एक-एक टुकड़ा कितना सूक्ष्म होता है! इन कणिकाओंकी चाल-ढाल बड़ी अद्भुत है। इनके लिये एक सेकेण्डमें एक लाख मील जाना भी कोई असम्भव नहीं है, कभी-कभी तो ये अपनेहीके समान वेगसे बड़े झोंकसे चलते हैं। नये आविष्कृत रेडियमके परमाणु भङ्ग-प्रवण हैं, उनके परमाणु बराबर बाहर निकला करते हैं। उनका भी वेग कितना प्रबल रहता है? सभी परमाणुओंके भीतर ये सब कणिकाएँ सैकड़ों या हजारोंकी संख्यामें अड़ी हैं, पर वे क्यों अड़ी रहना नहीं चाहती हैं? वे भीतरकी ओर आबद्ध रहनेपर भी केवल वेगसे घूमती हैं और आकाश-रूपी समुद्रमें आघात कर आलोककी तरंगें फैला देती हैं। सुविधा मिलते ही वे बन्धन-मुक्त होकर बाहर निकल आती हैं।......जिस बिजली या इलेक्ट्रिसिटी द्वारा मनुष्य इन सौ बरसोंसे इतने काण्ड कर रहा है, उसका स्वरूप वह बिलकुल ही नहीं जानता। अब मालूम होता है, कि जड़ परमाणुकी ये सूक्ष्म कणिकाएँ उस बिजलीके सिवा और कुछ नहीं है। यह कहना भी कठिन है, कि ये सूक्ष्म कणिकाएँ जड़ पदार्थ हैं या नहीं। तड़ित

जड़ पदार्थ हो या न हो, जड़ पदार्थ तड़ित कणोंसे निर्मित अवश्य है। जगतमें केवल तड़ित ही तड़ित है, यही जड़ पदार्थका उपदान है ; परन्तु हमारी भाषा क्रमशः दुर्गम होती जाती है। विज्ञान यदि बुद्धिमें न समाये, तो वह अज्ञान हो जाता है। अतएव यहीं समाप्त कर देना श्रेयस्कर है।"—प्रकृति १९०९ ईस्वी, संस्करण १७८-१७९ पृष्ठ देखिये।

वास्तवमें वे इलेक्ट्रन (या तड़ित बिन्दु) सब तरहकी शक्तिके (energy) आधार हैं अर्थात् प्राचीन कणाद ऋषिका और प्रतीचीन डल्टन साहबका "परमाणुपुञ्ज (atoms)" इस तड़ित बिन्दुसे ही गठित है।* तड़ित स्वयं ही शक्तिमय पदार्थ है, तड़ितके कार्य द्वारा ही परमाणुओंका संयोग वियोगादि होकर हजारों ब्रह्माण्ड बनते और सभी नैसर्गिक कार्य हुआ करते हैं। एक-एक परमाणुमें करोड़ों इलेक्ट्रन आस-पास रहते हैं—परस्पर विच्छिन्न इलेक्ट्रन-समूह स्थिर आकाश (æther) सागरमें बराबर इधर-से-उधर दौड़ा करते हैं, दो इलेक्ट्रन कभी एकदम नहीं मिल जाते या एक

---

* मैकेन साहब वर्त्तमान युगके एक विख्यात जड़वाद प्रचारक हैं। उन्होंने भी इस मतका समर्थन किया है। वे कहते हैं कि प्रत्येक परमाणु ही बता रहा है कि वह तड़ित बिन्दुओंकी समष्टि है और प्रत्येक तड़ित बिन्दु (या इलेक्ट्रन) शक्तिके विशाल भण्डार (*Reservoir of energy*) है। *Mc. Cabes Evolution of Mind*) नामक पुस्तकका १४ वाँ पृष्ठ देखिये।

दूसरेसे नहीं सटते और प्रत्येक इलेक्ट्रनके बीचमें कुछ-न-कुछ स्थान खाली रहता है। उस प्रदेशमें कोई दूसरा इलेक्ट्रन प्रवेश नहीं कर पाता।

(७) लगातार बहुत तरहकी परीक्षा करनेपर, हालमें कैम्ब्रिज-ट्रिनिट कालेजके अध्यापक स्ट्रट (Strut) साहबने कहा है कि थोड़ा-सा रेडियम-ब्रोमाइड एक कांचकी नलीमें रखकर धीमा-धीमा ताप देनेपर उससे बहुत थोड़ी भाफ़ निकला करती है। इस वाष्पका घन-परिमाण आल्पीनके माथेके घन-परिमाणकी अपेक्षा अधिक नहीं होता। इस निकली हुई भाफ़में, उसका कई लाख-गुण वायु मिल जानेपर भी विशुद्ध रेडियमके सभी गुण इस मिश्र-पदार्थमें मौजूद रहते हैं। इसकी अद्भुत शक्ति और बहुत अधिक कार्यकारिता देखकर चकित हो जाना पड़ता है—इसके प्रयोगसे शरीरके तन्तु ध्वंस करनेवाले दूषित जखमकी बीमारी आराम हो जाती है। अन्यान्य विज्ञान-वेत्ताओंने नाना प्रकारकी परीक्षाओंके बाद निःसंशय-रूपसे प्रमाणित किया है, कि उसमें आँखसे न दिखाई देनेवाला एक प्रकारका सार "इकट्ठा" होता है। अध्यापक स्ट्रट कहते हैं, कि इस सारकी अन्तर्निहत शक्तिके विषयमें सोचनेपर विस्मय होता है (The Becquerel Rays)।

(८) जिस भीषण सूक्ष्म विषसे खसड़ा, चेचक, मैलेरिया, हैज़ा, इन्फ्लुएञ्जा या प्लेग रोग उत्पन्न होते हैं, उसे क्या

कभी किसीने इन आँखों देखा है या तौल या माप-जोखसे उसका परिमाण आदि निर्द्धारित कर सकते हैं ; पर आँखोंसे अगोचर, इस दुर्दमनीय शक्तिको परास्त करनेके लिये आज समस्त सुसभ्य जगतकी राज-शक्ति लगी हुई है।

(८) प्राणी-विद्या-विशारदोंने (Biologist) प्रमाणित किया है, कि "जीवोज (Protoplasm)" ही जीव-शरीरका भौतिक उपादान है—यही जीवाणु-कोषका आदिम उपादान है (अर्थात् उद्भिद और प्राण-देहका मूल उपादान Material basis of life) ; जीवाणु-कोषका यह "जीवोज" सुश्रृङ्खल अवस्थामें रहनेपर, उसे हमलोग "स्वस्थ" कहते हैं और जब यह विश्रृङ्खल हो जाता है, तब उसको "रोग" कहते हैं। उत्तेजक पदार्थोंसे जीवनकी क्रियाशीलता परिवर्त्तित की जा सकती है ; इसलिये, जीवनी-शक्तिकी विश्रृङ्खलता (या ह्रासावस्था) होनेपर उत्तेजक पदार्थों से जीवनी-शक्तिकी क्रिया बढ़ायी जा सकती हैं। अतएव, औषधोंको जीवोजका रासायनिक उत्तेजक (Chemical Stimulii)" या जीवनी-शक्तिकी क्रिया बढ़ानेवाला सोचना असङ्गत नहीं है। "शक्तिशाली उत्तेजक (a large stimulas)" द्वारा जीवनकी क्रियाशीलता रुकती है और अपेक्षाकृत "न्यून-शक्तिशाली उत्तेजक" द्वारा जीवनी-शक्तिकी क्रियाशीलता बढ़ जाती है।

अब यदि रोग होनेपर सदृश-विधानवाले यह सोचें, कि बहुसंख्यक या अल्पसंख्यक जीवाणु-कोषके "जीवोज" विश्रृङ्खल

अवस्थामें जा पहुँचे हैं, तो उनका अनुमान आयोक्तिक नहीं कहा जा सकता। हमलोगोंने ग्रन्थके आरम्भ (पृष्ठ संख्या १२८) में कहा है, कि स्वस्थ शरीरमें कोई दवा सेवन करनेपर शरीरमें जो सब लक्षण उत्पन्न होते हैं, वैसे लक्षणवाले रोगोंमें उस दवाका बहुत थोड़ी मात्रामें प्रयोगकर उस रोगको आराम करनेका नाम होमियोपैथी है अर्थात् जीवाणु-कोषके जीवोज विशृङ्खल होनेपर सूक्ष्मांशमें विभाजित होमियोपैथिक औषध सेवन करनेपर जीवनी-शक्तिकी क्रियाशीलता बढ़ जाती है या रोगी-देह आराम हो जाया करती है ; यदि होमियोपैथिक-वाले ऐसी आशा करें, तो भित्तिहीन नहीं है। अतएव, स्वस्थ शरीरमें होमियोपैथिक परीक्षित औषध वेशी मात्रामें देनेपर रोग क्यों बढ़ता है और सूक्ष्म मात्रामें प्रयोग करनेपर क्यों आराम होता है (पृष्ठ १२६—१२७ देखिये)। यह परम-तत्व मालूम करनेके कारण प्रकृत होमियोपैथ जरा भी विचलित हुए बिना शान्त तथा आश्वस्त चित्तसे अपने कर्त्तव्य पालनमें सदा लगा रहता है और होमियोपैथीमें आस्थाहीन अथच सत्यान्वेषी चिकित्सक अनायास ही परीक्षाकर देख सकता है कि सुनिर्वाचित होमियोपैथिक दवा अधिक मात्रामें प्रयोग करनेपर रोग बढ़ता है या नहीं ? दवा सूक्ष्म मात्रामें प्रयोग करनेपर रोग आरोग्य होता है, कि नहीं ? कुछ दिनोंतक धीर-भावसे इसी तरह परीक्षा करने बाद यदि उसे यह विश्वास हो जाये, कि उल्लिखित तत्व सत्यपर प्रतिष्ठित है, तो हमलोग उसे विनीत-भावसे अनुरोध करते हैं, कि वे

होमियो-चिकित्सा-प्रणाली अवलम्बनकर सूक्ष्मतम (पृष्ठ १२९ की पाद-टीका देखिये) औषधके शक्तितत्वके सम्बन्धमें गवाही देकर जगतका कल्याण करें।

(१०) सभी जानते हैं; कि आजकलके (Pasteur's Kouch Von. Behring) वगैरह विख्यात प्राचीन सम्प्रदायके चिकित्सकोंकी रक्ताम्बुज (antitoxin) चिकित्सा-प्रणालीमें सूक्ष्माणु सूक्ष्मांशमें विभाजित औषध प्रयोग हुआ करता है और इसीके द्वारा पागल कुत्ता आदिके काटे घाव, यक्ष्मा, डिफ्थीरिया, धनुष्टङ्कार प्रभृति दुःसाध्य रोग आरोग्य होनेके कारण जगतका अशेष उपकार हो रहा है; पर सम्भव है कि बहुतसे आदमी यह नहीं जानते हैं कि सभी अज्ञेय महोदयगण (विशेषकर डाक्टर बैरिङ्ग) ने एक वाक्यसे सबके सामने स्पष्ट शब्दोंमें होमियोपैथिक डाल्यूशनकी उपकारिता और सारवत्ता स्वीकार की है (Beitrage Zur Experimenteller Thera Heft II, by Prof. E. Von Behring Berlin 1906 देखिये)।*

* Here is a free English translation of interesting passages:—Thirteen years ago I (Von Behring) demonstrated before the Berlin Physiological Society the immunising action of my "Tetanus-antitoxin" in *infinitesimal dilution* and spoke of the production of the serum by treating animal with a poison which *acted the better the more it was diluted.* ××××, Gentlemen......if I

(११) शिकागो विश्वविद्यालयके विज्ञानाचार्य मल्लिकैन और गेल इन दोनों साहबोंके मतसे सब तरहके परमाणुमें ही प्रभूत परिमाण-शक्ति छिपी हुई हैं (vide their First Course in Physics page 142; यह पहले कलकत्ता विश्वविद्यालय द्वारा निर्वाचित कालेजोंकी पाठ्य-पुस्तक थी), तो सूक्ष्मांशमें विभाजित होमियोपैथिक दवाओंके परमाणुओंमें भी यदि यह छिपी रहे, तो कोई विचित्र बात नहीं है।

कहना वृथा है, कि पूर्वोक्त विद्वानोंमें कोई भी सदृश-विधानवादी नहीं है या होमियोपैथिक शक्ति-तत्वकी पोषणके लिये उन्होंने लेखनी न उठाई थी।

(१२) लिवरपुलके डाक्टर हेवर्ड (Hayward) साहबका कथन है, कि "परमाणु ही जड़-पदार्थका सूक्ष्मतम अंश है"—यह शिक्षा कुछ दिन पहले दी जाती थी; पर विद्युत-कणके साथ तुलना करनेपर एक-एक परमाणु बहुत ही बड़े हैं—प्रत्येक परमाणुमें स्थित तड़ित-बिन्दुओंमें आपसमें इतना अन्तर या आकाश अर्थात् शून्य-स्थान (space) पड़ा है, कि सौर-जगतके महाकाशमें अपने-अपने कक्षमें प्रचण्ड

---

had set myself the task of rendering an incurable disease curable by artificial means and should find that only the road of *Homœopathy* led to my goal. I assure your dogmatic considerations would never deter me from taking that road.

वेगसे भ्रमण करनेवाले ग्रहोंकी तरह वे तड़ित-बिन्दु बिना किसी बाधाके बड़े वेगसे इस परमाणुके भीतर ही लगातार चक्कर लगाया करते हैं। (Dr. C. W. Hayward's paper on "Loss" *in the British Hom. Journal* for Feb. 1911. F. B. Grosvener M. A. M. D. डाक्टर साहबका article "Matter and Medicine" in the Homœopathic Recorder for August 1916 देखिये); Vide also *Mysteries of the atom* by E. Hendrick. Dr. Sc. *Homœ world* (Jan. 1923 pp. 5-7), besides the valuable articles on *Electrons* recently contributed by Prof. Niels Bohr (Noble prize holder 1922), J. J. Thompson, Rutherford, Curie, Seddy, Entsin, Plack, Aston, Michelson, Millikan, Gilbert, Lewis and Langmeir.

(१३ इस स्थानपर हम आजीवन विज्ञान दर्शन साहित्य प्रेमिक चिन्ताशील आचार्य स्वर्गीय त्रिवेदी महाशयकी कई बातें उद्धृत किये बिना नहीं रह सकते—होमियोपैथिक चिकित्साको अधिकांश मनुष्य एकदम अवैज्ञानिक कार्य समझते हैं। अन्य देशोंके सम्बन्धमें तो हम कुछ नहीं कह सकते, परन्तु हमारे इस देशमें होमियोपैथीके साथ विज्ञान-चर्चाका एक घनिष्ट सम्बन्ध घटना क्रमसे आ मिला है। बङ्गालके गौरव मनस्वी डाक्टर महेन्द्रलाल सरकार

जिस तरह एक ओर बङ्गालमें होमियोपैथिक चिकित्साकी जड़ जमा गये हैं, उसी तरह उन्होंने विज्ञान चर्चाकी प्रतिष्ठाके लिये भी अपना जीवन पात कर दिया है। × × × × जिन्होंने इस देशमें होमियोपैथीके प्रचारके लिये जीवन समर्पण किया है, उनमेंसे कितनोंको ही साधक कहा जा सकता है। डा० महेन्द्रलाल सरकार भी एक साधक थे। इस साधनामें एक गौरव है। चारों ओरके मनुष्य व्यङ्ग करते हैं, दिल्लगी करते हैं, पर उस व्यङ्ग विद्रूपको तुच्छ मानकर एकाग्रनिष्ठा और श्रद्धाके साथ होमियोपैथीकी साधना करनी पड़ती है। एकनिष्ठ श्रद्धा हुए बिना यह साधना अग्रसर नहीं होती। यह श्रद्धा अकसर अन्धश्रद्धामें परिणत हो जाती है। इसमें भी क्षोभका कोई कारण नहीं है, क्योंकि इस अन्धश्रद्धाके मूलमें एकनिष्ठ श्रद्धा मौजूद रहती है। × × × × होमियोपैथिक डाक्टरोंकी इस अन्धश्रद्धाका दृष्टान्त आपमेंसे बहुतोंने देखा होगा और मन-ही-मन हँसे भी होंगे। × × × आप इसे अन्धश्रद्धा यदि कहना चाहें तो कहें, पर मुझे इसमें साधककी एकमात्र निष्ठाका परिचय प्राप्त होता है। इस एकाग्रता और इस वायस-निष्ठाके बिना साधना नहीं होती। आपलोग इस देशके वैष्णवोंकी अन्धश्रद्धाकी दिल्लगी उड़ाया करते हैं; अन्धश्रद्धालु वैष्णव दूसरे देवताओंकी बात भी नहीं करता। वहाँ भी मूलमें वही एकनिष्ठ व्यक्ति है। विज्ञान चर्चामें जो अपना जीवन बिताया करते हैं; उनमें ऐसे अन्धश्रद्ध साधक बहुत कम दिखाई देते हैं। वे विज्ञानको

हो आनन्द और विज्ञानको ही ब्रह्म-स्वरूप यदि मान लें तो आपको आश्चर्य न करना चाहिये। ऐसी साधना हुए बिना सिद्धि नहीं प्राप्त होती।

"मैं यह नहीं जानता कि होमियोपैथिक विज्ञान सङ्गत है या नहीं है; पर विज्ञान चर्चाका मेरा कुछ अभ्यास है, पर मैं भिक्षार्थी भर हूँ—सिर्फ विज्ञान-भिक्षु। भिक्षाकी झोली कन्धे पर रख विज्ञानाचार्यों के दरवाजे-दरवाजे मैं घूमता रहा हूँ। क्या विज्ञान है और कौन-सा विज्ञान नहीं है—इस सम्बन्धके अनेक तर्क कोलाहल; आचार्यों के मुँहसे मैंने सुने हैं। यह भी देखा है, कि आज जिस तत्व या सिद्धान्तकी ध्वजा वैज्ञानिक समाजमें फहरा रही है, दो दिन बाद वही तत्व और सिद्धान्तकी ध्वजा धूलमें लोट रही है। कितनी ही ध्वजाएँ इस तरह जमीनमें लोट पड़ी हैं; पर समस्त विज्ञानोंके भित्तिरूपमें एक स्थूल तत्व खड़ा है। उस भित्तिको त्याग देनेपर विज्ञानका कोई भी मन्दिर खड़ा नहीं रह सकता। वह भित्ति है, प्रत्यक्ष प्रमाणकी भित्ति। विज्ञानके लिये प्रत्यक्ष प्रमाणके सिवा और कोई प्रमाण नहीं है। इन्द्रियोंकी यथोचित तीक्ष्णा रखकर उसपर सान चढ़ाकर, उन इन्द्रियोंके योगसे प्रमाण संग्रह करना पड़ता है। प्रत्यक्ष प्रमाण-लब्ध, बहुतसे मनुष्यों द्वारा प्रत्यक्ष प्रमाण-लब्ध जो सत्य है, विज्ञान उसे ही एकमात्र सत्य मानता है। होमियोपैथीकी वैज्ञानिकताके सम्बन्धमें

मैंने बहुतसे तर्क सुने हैं, बहुतसे वाद-प्रतिवाद, बहुतसे सिद्धान्त समावेश, बहुत-सी तत्व-कथाएँ मैंने सुनी हैं, पर वे मेरे मनपर असर न कर सकीं। गोमुखीमें एक चम्मच बेलेडोना ढालकर गङ्गासागरमें एक चम्मच पानी पीनेपर यदि उसका फल दिखाई दे, यदि विज्ञान सम्मत वैज्ञानिक रीति द्वारा संस्कृत प्रत्यक्ष प्रमाणमें मैं उसका फल देख सकूँ और यह मालूम हो कि और भी बहुतसे मनुष्योंको फायदा दिखाई दे रहा है तो मैं उसे अकुतोभय सत्य मान लेनेके लिये तैयार हूँ। यह फल किस तरह प्राप्त हुआ उसे लेकर तार्किक सर फोड़वल किया करें। विज्ञान विद्याकी निकट प्रत्यक्ष प्रमाण ही एकमात्र प्रमाण है।" १९१८ ईस्वीकी ३ री मार्च तारीखको शिवपुर विज्ञान मन्दिरकी स्थापनाके समय सभापति परलोकगत रामेन्द्रसुन्दर त्रिवेदी महोदयका "अभिभाषण" देखिये।

(१४) और १९१२ ईस्वीमें विशुद्ध रेडियमके ६०x क्रमकी विचूर्ण रश्मिकी सहायतासे अमेरिकाके सुप्रसिद्ध चिकित्सक ए० पी० ऐन्सटूज एम० डी० साहब फोटोग्राफ लेकर कृत्यकृत्य हो गये हैं* अर्थात् हमारे चर्म-चक्षु या प्रखर अनु-

* आधा ड्राम परिमाण ३०x विचूर्ण रेडियम रश्मिमें कोई पदार्थ और आलोक चित्र-फलक (Plates) अड़तालीस घण्टे रखकर (exposed

वीक्षण यन्त्रको सहायतासे न दिखाई देनेवाले ६०x क्रममें भी जो रेडियम विद्यमान है, उसे प्रतिपादितकर उन्होंने विद्वानोंकी आँखें खोल दी हैं।

अतएव, जब ६०x (या तीस) क्रमका रूप, रस, गन्ध, वर्जित औषध व्यवहार करते हैं, उस समय भी कम-से-कम हमलोग विज्ञान-राज्यकी सीमा अतिक्रम नहीं करते।

(१५) जर्मनीके स्टूटगर्ट बायोलोजिकैल इन्स्टिट्यूटकी डिरेक्टर महिला वैज्ञानिक मैडम एल० कालिस्कोने १९२० — ३७ ईस्वीतक उद्भिद्-जीवनपर शक्तिकृत औषधके प्रभावके सम्बन्धमें गवेषणा की है और वे निम्न-लिखित सिद्धान्तपर पहुँची हैं—भेषज वस्तु वर्त्तमान रहती है, इसीलिये निम्न-शक्तिकी दवाओंसे तर किये हुए बीजसे उत्पन्न उद्भिदोंकी उपयुक्त वृद्धि नहीं होती; पर उच्चतर शक्तिके औषधोंसे भेषज-वस्तुकी मात्रा जितनी घट जाती है, इन सब औषध-सिक्त बीजसे उत्पन्न उद्भिदोंकी उतनी ही ज्यादा वृद्धि होती है। प्राच्य और पाश्चात्य बहुतसे वैज्ञानिकोंने उनकी गवेषणा प्रत्यक्ष की है और स्वीकार भी कर ली है।*

(१६) अब उल्लिखित परमाणु-प्रलय-प्रसङ्ग अर्थात् जड़-

to) एक्सपोज देने बाद स्पष्ट फोटोग्राफ उठा था। विशेष विवरणके लिये कौतूहली पाठक The *Hom recorder* April 15, 1913 (p. p. 145—146) देखिये।

* Homœopathic Herald नामक मासिक पत्रिकाकी १९३८ ई० सनकी मार्चकी संख्या देखिये।

वादियोंका परम-प्रिय **परमाणु-वपु** बीसवीं शताब्दीके विज्ञानकी रेडियम-रश्मिके तीव्र आघातसे चूर्ण-विचूर्ण होकर अरूप सूक्ष्म-शक्ति रूप (या बिजलीके कणके या कणमें) परिणत होनेके रहस्य-तत्व **"जड़-कल्पान्त"** की घोषणा करती हुई **"शक्ति-युग"** के शुभ आविर्भाव समाचारको क्या जगतके सामने सूचना गम्भीर स्वरमें न दे रही है ?

विज्ञान दर्शन-सुनीति त्रिवेणीके पुण्य-सलिलमें स्नात एक-निष्ठ दूरदर्शी हैनिमैनने, सैकड़ों बरस पहले गम्भीर ध्यान-योगसे पदार्थोंके अन्तरतम प्रदेशमें जो अतीन्द्रिय शक्ति देखी थी और जिनकी **विकाशन-वार्त्ता** या * **शक्ति-करण प्रचार** निबन्ध लिखकर वे शिक्षित लोक-समाजमें इतने दिनोंतक उपहासास्पद बने हुए थे। आज उच्च अङ्गके विज्ञानकी नाना प्रकारकी परीक्षाएँ और पर्यवेक्षणके बाद जड़वादियोंके बड़े आदरकी सामग्री "जड़" (matter) को उड़ाकर हमारी स्थूल इन्द्रियमें अगोचर शुद्ध उसी शक्तिकी सत्ता स्वीकार कर रहे हैं और उसीकी महिमाका कीर्त्तन करते हुए हैनिमैनकी अमानुषिक प्रतिभा और उत्पीड़न सुख-प्रभाकी गवाही दे रहे हैं और रक्षणशील इङ्गलैण्डके भूतपूर्व युवराज—वर्त्तमान भारत-सम्राटने गत १० वीं जून (१९२१ ईस्वीको) ब्रिस्टल होमियोपैथिक अस्पतालकी नीव अपने हाथों डालनेके

* Theory of Dynamisation परिभाषामें "शक्ति-विकाशनवाद" शब्द देखिये।

पहले यह कहा था, कि मैं भी एक होमियोपैथिक चिकित्सा-धीन रोगी हूँ ।* इस तरह उन्होंने बड़े आनन्दके साथ सबके सामने परिचय प्रदान किया था। उसके बाद सन् १९२६ ईस्वीमें लण्डन होमियो अस्पतालके डाक्टर Weir Burnett, Professor of Hom. materia medica साहबको अपना चिकित्सक a Physician in Ordinary to H. R. H. the Prince of Wales रूपमें वरण किया था (अर्थात् राज-कर्मचारीके रूपमें ग्रहण किया था)। इस तरह अचल शिखरमें प्रतिष्ठित हैनिमैनका ही सदृश-विधान अधिकतर गौरवपूर्ण हुआ था। इसमें तो कोई सन्देह नहीं, कि महात्मा हैनिमैन! तुम्हारे सुविमल ज्योति-पूर्ण शुभ्र शिर-शोभित विजय-मुकुटका निर्माल्य सदा लिखा हुआ ही रहेगा, वह कभी भी कुम्हला नहीं सकता है। जड़जायु-युगान्तक† रासाय-निक ताड़ित विज्ञानकी भित्ति स्थापित करनेवाले, तुम्हारे समसामयिक डाक्टर गलवानीको भी एक दिन आक्षेपके साथ कहना पड़ा था, कि "बिज्ञान-वित्त" और "कुछ न समझमें आना" इन दोनों प्रकारके सम्प्रदायवाले ही मुझपर आक्रमण किया करते हैं—इन दोनों पक्षोंके ही मनुष्य मुझे

---

* H. R. H. The prince of wales stated in joyous tone "I am a Homœopathic patient too," The *Homœopathic World* Feb.—July 1921. पृष्ठ ३५४—२५१ और Feb. २३ पृष्ठ २५—१३ देखिये।

† Materialistic medicine—Meterialism in Medicine.

"भेक कुलका नर्त्तन शिक्षक" कहकर व्यङ्ग किया करते हैं; परन्तु मुझे निःसंशय रूपसे मालूम है, कि प्रकृतिके अन्तर्गत छिपी हुई एक महीयसी शक्तिका मैंने आविष्कार किया है।

परिशिष्ट (ख)

धातुदोष और उसका निराकरण

("तरुण और चिर-रोग"—१८७—१८८ पृष्ठ देखिये)

[होमियोपैथिक चिकित्सामें थोड़ी बहुत अभिज्ञता हुए बिना विद्यार्थी पाठक इस "परिशिष्ट (ख)" का प्रकृत मर्म ग्रहण नहीं कर सकते]।

प्रणिधान योग्य:—उपक्रमणिका अध्यायमें कहा गया है, कि १७९० ईस्वीमें महाप्राण हैनिमैनने "होमियोपैथीका" आविष्कार किया है; परन्तु बहुत दिनोंतक होमियोपैथिक मतसे चिकित्सा करके उन्होंने देखा कि यथोपयुक्त औषधको प्रदान करनेपर किसी-किसी रोगीकी बीमारी एकदम आरोग्य नहीं होती, कुछ दब-भर जाती है। ऐसा क्यों होता है, १८१९ ईस्वीमें उन्होंने इस तथ्यकी खोज आरम्भ की। प्रायः बारह बरसोंतक गवेषणा करने बाद उन्होंने यह सिद्धान्त स्थिर

किया कि "प्रमेह" "उपदंश" या "सोरा-विष" रोगोंके शरीरमें वर्त्तमान रहनेपर ऐसा होता है। इस अध्यायके उन तीनों प्रकारके धातुदोषका वर्णन किया जायगा। "रतिज-रोग" (पृष्ठ १०८४) "हैनिमैनके बताये हुए नये और पुराने रोगोंके लक्षण (पृष्ठ १८४) और होमियोपैथिक मतसे रोग लक्षण लिखनेका संकेत" (पृष्ठ-१९१) के साथ इस परिशिष्टको मिलाकर पढ़नेपर, सदृश-विधानाचार्यके मतसे सब तरहके पुराने रोगको चिकित्सा करनेको और होमियोपैथीके मूल-तत्व (First principles) के समझनेमें बहुत सहायता मिलेगी। होमियोपैथी या "समविधि" के मूलतत्वको अच्छी तरह हृदयङ्गम न कर होमियोपैथिक चिकित्सा करनेकी चेष्टा एक विडम्बना मात्र है। वर्त्तमान होमियोपैथिक चिकित्सा-जगतके एकछत्र सम्राट महात्मा केण्टने यथार्थ ही कहा है, कि "यह सत्य है, कि होमियोपैथी सम्पूर्ण भूमण्डलमें परिव्याप्त हो पड़ी है; परन्तु बड़े ही विस्मयका विषय यह है, कि जो होमियोपैथीकी उपासनाका दावा करते हैं, उनके द्वारा ही होमियोपैथीका मूलतत्व अधिकतर बिगड़ता जा रहा है।* नवीन चिकित्सक और ज्ञतविज्ञ गृहस्थ महाशयोंको यह वाक्य

---

* Homœopathy is now extensively disseminated over the world ; but strange to say by none are its doctrines so distored as by many of its pretented devotees. *Kents Lectures on Homœopathy philosophy* page 3. Memorial Edition देखिये।

विशेष रूपसे स्मरण रखना चाहिये ; परन्तु बड़े ही परितापका विषय है, कि आजतक बङ्गालके किसी होमियोपैथिक ग्रन्थमें होमियोपैथीके प्रकृत मूलतत्वकी आलोचना न होनेके कारण, नये और पुराने रोगकी चिकित्साका संकेत नहीं पाया जाता। अतएव आशा है कि ये ऊपर बताये चारों अध्याय ध्यानसे पढ़नेपर यह कमी बहुत कुछ पूरी हो जायगी।

धातुदोषत्रय ।—नये रोगकी चिकित्सा करते समय ठीक-ठीक चुनी हुई दवाका प्रयोग करनेपर भी कभी-कभी इच्छानुसार लाभ नहीं दिखाई देता। ऐसी अवस्थामें समझना चाहिये कि रोगीका रक्त दूषित हो गया है और वही दूषित रक्त (उपयुक्त होमियोपैथिक दवा सेवन करनेपर भी) आरोग्यमें विघ्न पैदा करता है। हैनिमैन कहते हैं, कि तीन कारणोंसे (जैसे—सोरा-विष, उपदंश विष और प्रमेह विष रक्तमें प्रवेश करनेपर), यह रक्तदोष या "धातुदोष (Dyscrasia)" पैदा हो जाता है अर्थात् धातुमें (Constitution) कच्छु-विष (Psora) प्रवेश करनेपर "कच्छु-दोष" उपदंश (Syphilis) विष संक्रमण करनेपर उपदंश दोष और प्रमेह विष (Sycosis) संक्रमण करनेपर "साइकोसिस" (मेषक-दोष" पैदा हो जाता है। ये विष तीनों अलग-अलग स्वतन्त्र रूपसे हों या सम्मिलित आकारमें हों, रोगी शरीरमें रहते हैं, तो हमलोग उसे "चिर-रोग" कहते हैं (नया और चिर-रोग अनुच्छेद पृष्ठ १८७ देखिये)। सभी धातुदोष या चिर-रोग

स्पर्शाक्रमक (Contagious), कुल संक्रामक (hereditary)* और अन्तर्मुख (From Outward to Inward) होते हैं और इनको "प्रारम्भ" और "विकास" ये दो ही अवस्थाएँ होती हैं (ह्रासावस्था नहीं होती)। यह भी याद रखना चाहिये, कि निसर्गज रोगनाशिनी-शक्ति† धातु-दोषको दूर नहीं कर सकती।

जिन्हें कोई धातुदोष रहता है, उनको कोई नयी बीमारी या सामान्य बीमारी होनेपर भी वह जटिल हो जाती है। यह सन्देह होते ही कि "धातुदोष" है, रोगीका पूर्व वृत्तान्त (past history) वगैरह अच्छी तरह जानकर, यह निर्णय करना चाहिये, कि इसे कौन-सा धातु-दोष हैं और इसके बाद उस धातुदोषको दूर करनेके लिये पहले दवा देनी चाहिये; इसके बाद (अर्थात् धातुदोष कुछ दब जानेपर) आवश्यकतानुसार नयी बीमारीको दवा देनी चाहिये। कितनी ही बार ऐसा भी होता है, कि धातुदोषघ्न दवाके सेवन करते ही

* यदि एक वर्षके किसी बच्चेको सुखण्डी (marasmus) हो जाये और दो वर्षकी उम्रमें यदि उसमें यक्ष्मा रोगके लक्षण तथा वृद्धोंकी तरह चेहरा दिखाई दे, तो समझना होगा, कि उसने अपने माता-पितासे कोई धातु-दोष ग्रहण किया है अर्थात् बच्चेकी शीर्णता और यक्ष्मा-रोग-प्रवणता ये दोनों ही शिशु धातु-दोषत्रयके साधारण लक्षण हैं। उनका प्रकृतिगत या विशेष लक्षण पूर्वोक्त प्रत्येक "धातु-दोष" के वर्णनके समय स्वतन्त्र भावसे लिखा जायगा।

† परिभाषामें "निसर्गज रोग-नाशिनी शक्ति" शब्द देखिये।

धातुदोषके साथ-ही-साथ नयी बीमारी भी आरोग्य हो जाती है। अतएव, ऐसे स्थानपर नये रोगकी अलगसे चिकित्सा ही नहीं करनी पड़ती है। डा० रिडपथका कथन है, कि धातुदोष ही नये रोगका पूर्ववर्ती कारण है—धातुदोष यदि न रहे, तो कभी नये रोगकी उत्पत्ति ही नहीं हो सकती (D. Ridpath's Law of Cure page 6 देखिये)।

हैनिमैनोक्त त्रिदोषका लक्षण और औषधय आदि अब संक्षेपमें बताये जाते हैं :—

(क) **कच्छु-दोष** (Psora—सोरा)—कई हजार बरस पहले कुष्ठव्याधि (या अकौताकी तरहके एक प्रकारका चर्मरोग) इतना फैला कि मनुष्य घबड़ा उठे। नाना प्रकारकी दवाओंके सेवन और बाहरी प्रयोगके कारण उक्त रोग नष्ट न होकर शरीरके भीतर दब (Suppressed) गया और इस तरह उसने रक्तको दूषित बना दिया। इसी दबी हुई खुजली या चर्म-रोगका नाम "सोरा" या भीतरी "कच्छु-विष" है। वंशपरम्परासे यह "सोरा" नाना प्रकारके आकारोंमें (जैसे—अर्बुद, कुरूपता, सर्दी, यक्ष्मा, बहुमूत्र, हृत्कम्पन या मानसिक रोग आदिके रोगमें) प्रकट हुआ करता है। महामति केण्टका कथन है, कि "सोरा" मानव-प्रकृति-गत दोष या आदि व्याधि हैं और प्रमेह रोग (तथा सभी नयी बीमारियाँ) सोराके ऊपर ही अधिष्ठित हो रही हैं"—"सोरा" यदि न रहता, तो मानव-शरीरपर कोई भी बीमारी आक्रमण नहीं कर सकती। रतिज-रोग (Veneral disea-

ses) के सिवा समस्त धातुगत (Constitutional) और यान्त्रिक (Organic) रोग भी भीतरी सोराके ही दिखावे हैं। जैसे—पुरानी यकृतकी बीमारी एक अलग या स्वतन्त्र बीमारी नहीं है। यह यकृतमें सोराका रहना—अधिष्ठान (Localisation) भर है; इसी तरह हृत्पिण्ड, फेफड़ा, मस्तिष्क, गुर्दा (Kidney) आदिकी पुरानी बीमारियाँ भी अलग-अलग नहीं हैं, उन-उन यन्त्रोंमें यही समझना चाहिये कि सोरा पैदा हुआ है। "रुका हुआ सोरा" से कर्कट (Cancer) रोग हृत्पिण्ड और फेफड़ेकी बीमारियाँ और यक्ष्मा आदि शरीरको ध्वंस करनेवाली बीमारियाँ पैदा होती हैं।*

सोरा विष साधारणतः रक्तवहा नाड़ियों (Blood vessels) और यकृत (Liver) को दूषित

---

* हैनिमैनने निम्नलिखित रोगोंका उल्लेख किया है :—स्नायविक-दौर्बल्य, गुल्म-वायु (hysteria), अवसाद वायु (hypochondria) उन्माद रोग (mania), विषाद वायु (melanchondria), जड़ता (idiocy), क्षिप्तता (madness), मृगी और सब तरहके आक्षेप (epilepsy and convulsions of all sorts), अस्थि-विकार (rachitis), कर्कटिका (cancer), अस्थिक्षत (caries), रक्तकी तरह उपमांस या मसा (fungus hæmatodes), अर्बुद (neno-plasms), ग्रन्थिवात (gout), बवासीर, पाण्डु (icterus), नील-रोग (cyanosis), शोथ (dropsy), रजोरोध, पाकस्थली, नाक या फेफड़ा या मूत्राशय अथवा जरायुसे रक्त-स्राव, दमा, फेफड़ेमें पीव-सञ्चय, ध्वजभङ्ग, और बन्ध्यत्व, अधकपारी सर-दर्द, बहरापन, मोतियाबिन्द, अस्वच्छ

बना देता है और चर्ममें पीव और फोड़ा (boils) उत्पन्न कर देता है। स्पर्श (जैसे—हाथ मिलाना, पहने हुए वस्त्रका व्यवहार) द्वारा—यहाँतक कि साँस या छींकके साथ सोरा-ग्रस्त व्यक्तिसे यह विष स्वस्थ शरीरमें संक्रमित हो जाया करता है। विद्यालयके सहपाठियोंके श्वासके साथ वह स्वस्थ बालकोंमें संक्रमित हो जाया करता है।

यदि देखिये कि यथोपयुक्त होमियोपैथिक दवाका प्रयोग-कर भी कोई नयी बीमारी आरोग्य न हो रही है या उसका भोगकाल बेहद बेकार बढ़ता जा रहा है अथवा यदि यह दिखाई दे, कि किसीका चर्म फटना या अकौता, खुजली, घाव या एकज़िमा बराबर ही लगा रहता है या कभी-कभी शरीरपर जलभरी फुन्सियाँ पैदा हो जाया करती हैं या हाथकी कलाईके पास बीच-बीचमें चर्म-रोग हो जाया करते हैं अथवा बीस बरस पहले हाथकी सन्धियोंमें घमौरीकी तरह उद्भेद निकलते थे और इसके बाद नखोंमें विकार पैदा हो गया अथवा यदि यह सुननेमें आये कि जस्ता (zinc) अथवा गन्धक आदिका मरहम या कोई दूसरे अनिष्टकर धातु आदिसे बनी बाहरी प्रयोगकी दवा लगानेकी वजहसे कोई चर्म-रोग बैठ गया है और उसके बादसे ही कोई तेज़ बीमारी पैदा हो गई है, तो

दृष्टि (glaucoma), मूत्र-पथरी (renal calculus), पक्षाघात, इन्द्रियोंके यथोपयुक्त कार्य करनेमें असमर्थता, सब तरहका शारीरिक दर्द प्रभृति इस सोराके ही अभिव्यक्ति हैं [The Organon Section 80 देखिये)।

समझना चाहिये, कि रोगीके शरीरमें "सोरा" छिपा हुआ बैठा है।

सोराका दोष दूर करनेके लिये सलफर ३०---२०० प्रधान दवा है। सोरिनम, कैल्क-कार्ब, लाइको, सिपिया, सिलिका, हिपर, नेट्रम-म्यूर, ग्रैफाइटिस, आर्सेनिक, ऐल्यूमिना, कास्टिकम, मिजिरियम, पेट्रोल, कार्बोलि-ऐसिड, टियुबर्क्युलिनम, आरम-मेट, नाइट्रिक-ऐसिड, गुयेकम, बोरैक्स, जिङ्क, आयोड, बैराइटा-कार्ब, लैकेसिस, फास्फोरस प्रभृति दवाएँ (ऊँचे क्रमसे) सोरा-दोषको नाश करनेवाली होती हैं (antipsorics)।

सलफर वगैरह सोरा दोषघ्न दवाएँ सेवन करनेपर कभी-कभी दबा हुआ भीतरी सोरा, किसी चर्म-रोगके आकारमें शरीरके बाहरी भागमें प्रकट हो जाता है। ऐसी अवस्थामें समझना चाहिये कि रोग आरोग्यकी ओर अग्रसर हो रहा है और दवा कुछ दिनोंतक बन्द रखनी चाहिये।

सोरा दोष-नाशक दवाएँ सेवन करनेका मुख्य समय—सवेरे, गर्भावस्थामें, ऋतुके पाँचवें दिन; ऋतुके समय और ऋतु होनेके कुछ ही पहले या बाद दवा सेवन मना है।

(ख) **उपदंश-दोष** (Syphilis सिफिलिस)—उपदंश विषसे दूषित मनुष्यके साथ सङ्गम करनेपर अथवा चर्मके कोई पतले (या छिन्न) अंशमें उस विषका स्पर्श हो जानेपर, स्वस्थ शरीरमें भी उपदंश दोष फैल जाता है। इस विषके संक्रमणके बाद लगातार तीन अवस्थाएँ एकके बाद दूसरी दिखाई देती हैं:—(१) विष संक्रमणके एक या दो सप्ताहके बाद उस विष लगे स्थानपर पहले एक जलभरी फुन्सी (vesicle) की तरह दिखाई देती है, इसके बाद यह जलभरी फुन्सी एक कठिन क्षत (chancre) हो जाती है और वंक्षण-देश या पुट्ठे तथा बगलमें गांठ पैदा हो जाती हैं। पुट्ठेकी गांठको बाघी कहते हैं। (२) कठिन क्षत होनेसे कम-से-कम दो महीनोंके भीतर गलेमें जखम, ज्वर, अस्थियोंमें दर्द, नाना प्रकारके चर्मोद्भेद (Syphilides), जखम, केश झड़ जाना, नख विकार, उपतारा प्रदाह (Iritis), लसिका ग्रन्थियोंका बढ़ना वगैरह लक्षण प्रकट होते हैं और अन्तमें (३) लगभग डेढ़ वर्ष बाद—अस्थिवेष्टार्बुद या गमेटा (Gummata) अर्थात् अस्थि, चर्म, मस्तिष्क, यकृत, अण्डकोष, जरायु वगैरह शरीरके सभी यन्त्रोंमें और अङ्ग-प्रत्यङ्गमें ट्यूमर या अर्बुदकी उत्पत्ति या पीव पैदा हो जाता है। नाक, कण्ठनाली, मस्तक, तालु, मलनाली प्रभृति स्थानोंकी हड्डीमें जखम होना या सड़ जाना प्रभृति उपसर्ग दिखाई देने लगते हैं। कमजोर देहमें उपदंश विष संक्रमित होनेपर, ये तीनों अवस्थायें बहुत धीरे-धीरे प्रकट होती हैं; पर बलवान शरीरमें बहुत तेजीसे

और बड़े प्रचण्ड वेगसे ये तीनों अवस्थाएं उपस्थित हो जाया करती हैं। होमियोपैथिक मतसे ठीक चिकित्सा होनेपर, वह यथा-समय निर्दोष रूपसे आरोग्य हो सकता है (उपदंश रोग देखिये); परन्तु कुचिकित्सा या नाना प्रकारकी अनिष्ट-कर औषधि आदिके प्रयोगकी वजहसे उपदंश विष शरीरके भीतरी प्रदेशमें प्रवेश करनेपर रोग प्राय: भयङ्कर हो जाता है, उस समय बहुत होशियारीसे उपयुक्त होमियोपैथिक औषधका प्रयोगकर वह कल्मष शरीरके भीतरसे बाहर लाना पड़ता है।

किसी पुरानी बीमारीमें यदि **दोनों पार्श्वकी कपा-लास्थिमें बेहद दर्द**, एकदम स्वास्थ्यनाश, मानसिक दुर्बलता, **अस्थि-वेष्टका अर्बुद** (Gummata) और गहरा जखम (deep-seated ulceration) प्रवणता, **रातकी समय** (अर्थात् सूर्यास्तसे सूर्योदयतक) तकलीफका बढ़ना प्रभृति लक्षण दिखाई देते हैं तो यह सब देखते ही समझना होगा कि रोगीकी देहमें उपदंश दोष छिपकर बैठा हुआ है। इसके अलावा यदि किसी बच्चेका कपाल ऊँचा, सामनेके ऊपरी भागमें चारों दाँत कंघीकी तरह कटे-कटे और नाककी जड़ बैठी हुई अर्थात् चिपटी दिखाई दे तो स्पष्ट मालूम होता है, कि इसके खूनमें उपदंश विष घुसा हुआ है*—अर्थात् उसके

* ऊँचा कपाल, कंघी-जैसा दाँत और चपटी नाक—इस बातको उपदंशके सम्बन्धमें याद रखना चाहिये।

पिता या माताके ऊपरी अर्थात् तीन-चार पुश्तमें किसी-न-किसीको निश्चय ही उपदंश हुआ है।

उपदंश-दोषमें प्रधानतः अस्थि और अस्थि-वेष्ट (Periosteum) और मस्तिष्कपर रोगका आक्रमण हुआ करता है। उपदंश-दोषके चर्मोद्भेद गांठें (tubercular), यह वास्तविक स्फोटक (boils) नहीं है; इसलिये सोरा-जात स्फोटकादि चर्म-रोगके साथ उसका भ्रम होनेकी सम्भावना कोई भी नहीं है।

उपदंश-दोष निराकरणार्थ मर्क-सोल ६—२०० उत्कृष्ट दवा है। सिफिलिनम, हिपर, नाइट्रिक-ऐसिड, आरम-मेट, नेट्रम-म्यूर, साइलिसिया, नेट्रम-सल्फ, लेकेसिस, आर्सेनिक, गुयेकम, ग्रैफाइटिस, लाइको, कैलि-बाई प्रभृति दवाएँ (उच्चक्रममें) उपदंश दोषघ्न हैं। यदि चुनी हुई दवा सेवन करनेपर भीतरी उपदंश कल्मष शरीरकी बाहरी भागमें गलक्षत, उपताराका प्रदाह (Iritis) प्रभृति आकारमें प्रकट हो तो समझना चाहिये, कि रोग आरोग्यकी ओर अग्रसर हो रहा है।

पिता-मातामें किसीको भी उपदंश दोष रहे, तो इस बातके लिये कि वह उनके वंशमें न फैले—निम्नलिखित उपाय करना चाहिये—गर्भावस्थामें और जितने दिनोंतक बच्चा स्तन पीता रहे, तबतक माताको पक्षमें एक मात्रा सिफिलिनम

३० और नित्य मर्क-सोल ६ (सवेरे) सेवन करना चाहिये। इसके सेवन करनेपर भी यदि बच्चेमें शीर्णता वगैरह लक्षण पाये जायें, तो बच्चेको नित्य सवेरे और सन्ध्याके समय मर्क-सोल ६ एक-एक मात्राके हिसाबसे देना चाहिये (बाल-रोग अध्यायमें "धातु-दोष" या "वंशगत रोग" देखिये)।

(ग) **प्रकृत-प्रमेह-विष** (Sycosis साइकोसिस)—डाक्टर केण्ट और हैनिमैनका कथन है, कि प्रमेह-विष दो प्रकारके हैं :—नया और पुराना। नया विष फैलनेपर, स्थानिक (Local) प्रमेह रोग पैदा होता है, इस कारणसे इसको "प्रारम्भ" "विकास" और "क्षय" ये तीनों अवस्थाएँ एकके बाद दूसरी आती हैं और पुराना कल्मष संक्रमण करनेपर सार्वाङ्गिक (Constitutional) प्रमेह रोग पैदा होता है; इसलिये इसको "प्रारम्भ" और "विकास" दो ही अवस्थाएँ होती हैं। "प्रकृत प्रमेह-दोष" या साइकोसिस (अर्थात् मायक-दोष) है। दोनों प्रकारके विष ही संक्रमण करनेवाले हैं और विष फैलनेके प्राय: आठ-दस दिन बाद मूत्र-मार्गका प्रदाह (Urethritis) रोगकी तरह इन दोनों ही प्रमेह रोगोंमें मूत्र-मार्ग (Urethra) से श्लेष्मा पीव मिला मवाद (muco-purulent discharges) निकला करता है। पिचकारी द्वारा नाइट्रेट आफ सिलवर वगैरह स्थानिक दवाएँ प्रयोग करनेपर कितनोंका ही यह स्राव बन्द हो जाता है, परन्तु इन सब उपायोंसे स्राव बन्द करना बहुत ही अनिष्ट-

कारक है। "मूत्र-मार्ग-प्रदाह" और रतिज-रोगवाले अध्यायमें "प्रमेह" रोग देखिये।

"स्थानिक (या साधारण) प्रमेह रोग" में सिर्फ मूत्र-यन्त्रपर ही आक्रमण हुआ करता है, सारा शरीर दूषित नहीं होता। पेट्रोसेलिनम θ इसकी उत्कृष्ट दवा है। कैनाबिस-सैट, कैन्थरिस या कोपेवाकी भी कभी-कभी आवश्यकता पड़ा करती है। दोनों प्रकारके प्रमेह रोगोंमें, इस देशमें स्थानिक प्रमेह रोगकी संख्या ही अधिक दिखाई देती है। "सोरा" धातुग्रस्त मनुष्यको स्थानिक प्रमेह रोग होनेपर पहले सोरा-दोषको नष्ट करनेवाली दवाका प्रयोग करना चाहिये और उसके बाद स्थानिक प्रमेह रोगकी चिकित्सा करनी चाहिये।

हैनिमैन कहते हैं, कि "साइकोटिक (या प्रकृत) प्रमेह" एक गुरुतर बीमारी है, यह सारे शरीरको दूषित बना देती है। "हमेशा बीमारीका आरम्भ होते ही उसका स्राव पीवकी तरह गाढ़ा, पेशाबमें तकलीफ़, अपेक्षाकृत कम, पुरुषाङ्ग (लिङ्गेन्द्रिय) फूली और कुछ कड़ी और किसी-किसीको पुरुषाङ्गकी पीठपर गांठदार गुटिकाएँ (Glandular tubercles) होती हैं और दर्द हुआ करता है [Hahnemann's *Chronic Diseases*, Tafels edition, page 146 देखिये]। सङ्गम-इन्द्रियकी चारों ओर गूलर या फूलकोबीकी तरह मसे या उपमांस (excrescenes) हो जाते हैं। यह साइकोसिसका प्रधान लक्षण है।

गूलरकी तरह होनेवाले मसे प्रायः सूखे रहते हैं और फूल-कोबीका फूल (या मुर्गेकी चोटी) के आकारवाली श्लेष्मा-गुटिकाएँ साधारणतः स्पञ्जकी तरह कोमल रहती हैं और उनसे सहजमें ही रक्त-स्राव होता है। कास्टिकसे जलाना, छुरी आदि अस्त्रसे काटना या कसकर बाँधना प्रभृति किसी भी उपायसे यदि यह उपमांस शरीरसे हटा दिया जाता है या पिचकारीका (injection) प्रयोगकर स्राव बन्द कर दिया जाता है अथवा यदि बहुत अधिक मात्रामें पारद आदि (mercury etc.) सेवन किया जाता है, तो स्राव क्रमशः बन्द होता जाता है और हमेशा नीचे लिखे उपसर्ग पैदा हो जाया करते हैं :—अत्यधिक पैशिक (muscular) दुर्बलता और उपदाहिता (irritability), उत्कण्ठा, यातना या विकट भय, स्नायविक दुर्बलता (neurasthenia), दमा या वायुनलीके रोग-समूह (bronchial affections); हाथकी अंगुलीका नख-विकार और तलहत्थीमें (palms) उद्भेद ; मूत्र-मार्गका स्राव बन्द करनेके बादसे या उपमांसको हटानेके बादसे वात रोगका (विशेषकर घुटना और एँड़ी) सूत्रपात हो जाता है। केश सूखे, मानो जले-जले, रोगिनीको बाधकका दुःसह दर्द होता है या डिम्बकोष-प्रदाह या बन्ध्यत्व पैदा होता है, अंधड़-पानीके दिनोंमें दिनके समय (अर्थात् सूर्योदयसे सूर्यास्ततक) यन्त्रणाकी वृद्धि हो जाती है (Boerick's *Compend* page 83, under "Symptoms of suppressed gonorrhœa" देखिये)।

और अधिक दिन (अर्थात् दस-पन्द्रह वर्षतक) रोग भोगनेपर साधारणतः नीचे लिखे लक्षण दिखाई देते हैं। रक्त-हीनता, मोमकी तरह चेहरा, सफेद ओंठ, कान स्वच्छ, शरीरमें कितने ही स्थानोंमें मसे ; आँख और नाकसे गाढ़ा पीली आभा लिये हरा (Yellowish green) श्लेष्मा निकलना ; मूत्र-यन्त्र, श्वास-यन्त्र या यकृतके कड़े रोग ; बहुत ही तेज़ वात रोग (मूत्र-मार्गका स्राव रुकनेकी वजहसे) अण्डकोष या सरलान्त्रका प्रदाह पैदा होकर रोगीको तकलीफसे बेचैन बना डालता है। उरुदेशमें, पैरकी पोटलीमें और तलवेमें ऐंठन या अकड़नकी वजहसे रोगी खड़ा नहीं हो सकता या बड़ी तकलीफ़से लँगड़ाकर चलता है।

यदि किसी बच्चेका चेहरा मोमकी तरह रक्तहीन हो जाये या अजीर्णके कारण दस्तके साथ खायी हुई चीज निकले या प्रत्येक गर्मीकी ऋतुमें हैजाकी तरह दस्त हुआ करे तो समझना चाहिये, कि बच्चेकी देहमें "साइकोसिस" उसके माता-पितासे आया है और छिपा हुआ बैठा है।

थूजा ३०, २०० ।—रुके हुए साइकोसिस रोगकी प्रधान दवा है। मिडोरिनम, कैल्के-कार्ब (विशेषकर नाकसे गाढ़ा पीली आभा लिये हरे रङ्गका श्लेष्मा निकलता रहनेपर) नाइट्रिक-ऐसिड, कैल्के-फास (विशेषकर रक्तहीनताके साथ एकशिरा रहनेपर), कैलि-आयोड θ—२०, हिपर-सलफर, पल्सेटिला, मिलिफोलियम, ऐसिड-फास, साइलिसिया, नेट्रम-

मूत्र, कैलि-सल्फ, नेट्रम-सल्फ, नेट्रम-फास, सैबाइना, आर्जं-नाइट्रिकम, आर्स, बोरेक्स, कास्टिकम, क्लिमेटिज, ग्रेफाइटिस, हाइड्रैस्टिस, नक्स-वोम, कैलि-बाई, सिपिया प्रभृति दवाएँ भी (३-३० शक्तिमें) साषक-दोषको नाश करती हैं, चुनी हुई दवा सेवन करनेपर यदि रुका हुआ स्राव मूत्रमार्गसे निकलने लगे तो समझना चाहिये, कि रोग आरोग्योन्मुख हो गया है।

मिश्रधातुदोष।—कभी दो और कभी-कभी तीन धातुदोष एक साथ ही एक ही रोगी देहमें वर्त्तमान रहते हैं; इसपर भी तेज-तेज ऐलोपैथिक दवाएँ अधिक मात्रामें सेवन करनेकी वजहसे चर्मरोग आदि शरीरके भीतर प्रवेश करनेपर रोग अकसर दुरारोग्य हो जाता है। ऐसे स्थलपर हैनिमैनका यही उपदेश है, कि सबसे पहले सोरादोष नाशक दवाका प्रयोग करना चाहिये; इसके बाद उपदंश या प्रमेह दोष इन दोनोंमें जिसके लक्षण अधिक स्पष्ट हों, उसकी ही चिकित्सा पहले करनी चाहिये और इसके बाद बाकी धातुदोषका निराकरण करना चाहिये।

त्रिदोषके सम्बन्धमें कुछ और बातें :—

(१) सभी धातुदोषकी "प्रारम्भ" और "विकास" ये दो अवस्थाएँ होती हैं। इनके अलावा "विकासावस्था" की प्राथमिक (primary) "गौण (secondary)" परिणत

(advanced)" प्रभृति अवान्तर अवस्थाएँ (Sub-stages) होती हैं। जिस अवान्तर अवस्थामें कोई धातुदोष स्वस्थ व्यक्तिमें संक्रमित होता है, उसी अवान्तर अवस्थाके ही लक्षण, उस समयसे ही उस व्यक्तिमें प्रकाशित होने लगते हैं, जिसमें रोग संक्रमित होता है और यथा समय उसकी परवर्त्ती अवस्थाके लक्षण सब दिखाई देते हैं; परन्तु उक्त अवान्तर अवस्थाके पूर्ववर्त्ती कोई भी उपसर्ग संक्रमित व्यक्तिमें उपस्थित नहीं होते। जैसे—यदि स्त्री-पुरुष दोनोंमें स्वामीको उपदंश दोष रहे और यदि गौणावस्थामें सङ्गम द्वारा वह स्त्रीमें संक्रमित हो जाये तो प्राथमिक अवस्थाके जखम आदि कोई लक्षण उस स्त्रीके शरीरमें प्रकाशित नहीं होते; परन्तु गौणावस्थाके चर्म-रोग आदि (Syphiloderma) और बादके उपसर्ग उसमें यथा समय प्रकट होते हैं।* "मायक-दोष" के

* एक सहृदय माननीय अस्त्र-चिकित्सक the late lamented Dr. J. Kanjilal who died of heart disease in Sep. 22 last ने हमारी ऊपर लिखी उक्तिपर कहा था "Not true—Primary and Secondary symptoms not observed-always. The poison of Syphilis taken from any stage is the same poison and will produce the same symptoms with stages. Similarly, with the gonorrhœa virus."

इस सम्बन्धमें हमारी उक्तिके समथनके लिये, हैनिमैन प्रणीत साधन या Organon की व्याख्या करते समय महामति केण्ट साहबने Post Graduate school of Homœopathics नामक विद्या मन्दिरमें जो सब अमूल्य उपदेश प्रदान किये थे और इसके बाद जो Homœopathic

सम्बन्धमें भी ठीक ऐसा ही नियम है। परिणतावस्थामें सोरा दोषवाली स्त्रीसे संसर्ग करनेपर उसी परिणतावस्थामें ही सोरा पुरुष देहमें जाता और बढ़ा करता है; परिणतावस्थामें सोरा-ग्रस्तके साथ खेल-कूदमें निश्वास-वायु लगकर भी स्वस्थ बालकमें सोरा चला जाता है और बढ़ा करता है।

(२) वंश-परम्परागत या कुल संक्रमण भी ऊपर बताये नियमके ही अधीन है—और प्रमेह आदिसे दूषित माता-पिताके सन्तानोत्पत्तिके समयकी "धातुदोष अवस्था" के उपसर्ग उस शिशुमें जा पहुँचते हैं और ऐसे बच्चोंमें जो धातु-दोष

Philiosophy के नामसे ग्रन्थाकार प्रकाशित हुए थे, उससे पाठकोंकी जानकारीके लिये निम्नलिखित कई पंक्तियाँ उद्धृत की जाती हैं :—

Syphilis is transferred from husband to wife and it is *taken up in the stage in which it then exists* and from thence goes on in a progressive way. The woman catches it from the man in the stage in which he has it at the time of their marriage; she takes that which he has; if he has it in advanced stage; she takes it in that stage; she takes from him the stage he has to offer. *This is equally true of psora and sycosis.* Such things never occur in the acute miasms, but the three chronic miasms have contagion in the from in which they exist at the time. (Lecture XX).

कहना वृथा है, कि कुछ दिनोंतक धीरताके साथ परीक्षा करनेके बाद अभिज्ञता पैदा होनेपर नवीन चिकित्सकोंको जो मत ठीक मालूम हो, वही उन्हें ग्रहण करना चाहिये।

प्रवेश करता है, वही धातुदोष-प्रवणता (अर्थात प्रमेह आदि रोग ग्रहणका प्रभाव) उसके धातुमें बादके समयमें भी दिखाई देता है।

(३) "सिफिलिस" "सोरा" या "साइकोसिस" मानव-देहपर **केवल एक बार** आक्रमण किया करते हैं; जीवनमें कभी भी दो या उससे अधिक बार किसीको भी प्रकृत उपदंश या सोरा अथवा असली प्रमेह रोग हो नहीं सकता। यदि

---

* "एक बार सूजाक आराम हो जाने बाद फिर नया विष लगनेपर नये सिरेसे गोनोरिया (सूजाक) होता है"—यह बात एक प्रसिद्ध बङ्गला होमियोपैथिक चिकित्सा ग्रन्थमें पढ़कर बहुत आश्चर्य हुआ; उस पुस्तकके बहुतसे संस्करण हो गये हैं, इसलिये इस सम्बन्धमें कुछ न कहना ही अच्छा है; परन्तु विशुद्ध होमियोपैथीकी विवृतिके लिये अपना जीवन जिन्होंने उत्सर्ग कर दिया था, उन्हीं धर्मप्राण बहुदर्शी चिकित्सक डा० केण्ट रचित ग्रन्थ सभी शिक्षार्थियोंको बहुत ध्यानसे पढ़ना चाहिये।"

इसके अलावा पारिवारिक चिकित्सा बङ्गलाका नवम संस्करण प्रकाशित होनेपर कलकत्तेके एक विख्यात डाक्टरने हमलोगोंकी बातोंका प्रतिवाद किया था, उसके उत्तरमें उन्हें विनम्र भावसे हमारा कथन है, कि "As regards the note with reference to a fresh attack of Sycosis or of Syphilis, we would observe that we are firm believers in Dr. Kent's view which has been frequently confirmed during our limited experience."

जो हो, विद्यार्थी और सुधी पाठक महाशयोंकी जानकारीके लिये शिकागो हैनिमैन होमियोपैथिक मेडिकल कालेजके मेटीरिया-मेडिकाके अध्यापक विख्यात डा० काउपरथायट (M. D., Ph. D.LL-D) पेरिसके सुविख्यात Saint Jacques Hospital के चिकित्सक और होमियोपथिक अन्त-

कोई कहे कि उसे छः बार (सूजाक) हुआ है तो समझना होगा, कि असली प्रमेह उसे केवल एक बार हुआ था—माषक-दूषित धातु कभी भी दूसरी बार "प्रकृत प्रमेह विष" ग्रहण नहीं कर सकता।

(४) चिर-रोगमें दवा सेवन करनेके बाद—(क) यदि पहले ऊर्द्धाङ्गके (जैसे—माथेके) और इसके बाद निम्नाङ्गके

राष्ट्रीय महासभा (held at the Paris, Worlds fair in july 1900) के सभापति फ्रेंच डाक्टर Pierre Jousset M. D. न्यूयार्क होमियोपैथिक मेडिकल कालेजके चिकित्सा शास्त्रके अध्यापक और फ्लावर अस्पतालके बहुदर्शी चिकित्सक डाक्टर सैंण्डज मिल्स (A. B., M. D.), होमियोपैथिक जगतका आदरणीय The Homœopath Recorder नामक मासिक पत्रके भूतपूर्व सम्पादक, डा० ऐम्स्लटज M. D. और विशुद्ध हामियोपैथिक दर्शन-शास्त्रके प्रणेता डनहम मेडिकल कालेजके अध्यापक पुरानी बीमारियोंकी चिकित्सामें सिद्धहस्त डाक्टर केण्ट (A. M. M. D.) प्रभृति साहबोंके ग्रन्थ आदिसे कुछ अंश उद्धृत कर दिया।

"A person having once acquired Syphilis can *rarely* be reinoculated" और "the consequences of the tertiary stage often remain *permanently*—Cowperthwaite's *Practice* pp. 749 and 755 देखिये।

2, When a physician permits a syphilitic to marry he should inform him before hand that his security is *not absolute* as tertiary manifestations have occurred ten twenty thirty and even fifty seven years after an *apparent* cure—Pierre Joussets *Practice of Medicine* Translated by J. Archagouni, M. D. page 67 देखिये।

जैसे—हाथ-पैर आदिके) उपसर्ग गायब हों (Symptoms disappearing from above downwards), (ख) यदि पहले शरीरके भीतरके उपसर्ग और इसके बाद शरीरके बाहरी (जैसे—चर्म आदिके) उपसर्ग आराम हों (Symptoms

---

3. Tertiary symptoms (of syphilis) may develop even *fifty years after the disease has apparently disappeared*." और "A simple gonorrhœa may be cured although at best cure is very *uncertain*. Many patients have *recurrent* attacks, which are probably *only* recrude *scenes* of the original trouble,"—Walter Sands Mills *Practice*. Pages 184 and 175 देखिये। Needless for us to add that Mills work is the latest best Homœopathic *Practice of Medicine*.

8. Many physicians *of experience* contend that a man *never gets rid of this virulent poison of gonorrhœa*. Those who have contracted it got rid of discharge attending discomfort, think they are cured and the many ills they may suffer afterwards............may be *due directly to the infection*"—E. P. Anshutz's the Sexual Ills, page 50 देखिये।

9. "Man can only have one *attack* in his natural lifetime of one of the *three chronic miasms* ; *a man cannot take syphilis twice, he cannot take sycosis twice, he cannot take psora twice*. This is not known ; a man when asked how many times he has had gonorrhœa will say ; "About half a dozen times" ; but only one of these was sycotic. The *Sycotic constitution cannot be taken a second time* One attack gives immunity to that persons for ever after." —Kent's *Lectures on Homœo. Philosophy*, 1st Edition, page 174 देखिये।

The italics are ours.

disappearing from within outwards) या (ग) किसी रोगके धारावाहिक उपसर्गोंमें यदि सबके अन्तवाला उपसर्ग सबके पहले आराम हो और इसके बाद उसके पूर्ववर्त्ती उपसर्ग क्रमसे आरोग्य हों (Symptoms disappearing in the reverse order of their coming), तो समझना होगा, कि प्रकृत होमियोपैथिक दवाका चुनाव हुआ है। जैसे—हृद्गह्वरको ढँकनेवाली झिल्लीके प्रदाहमें (endocarditis) दवा सेवन करनेके बाद यदि घुटनेमें या एँड़ीमें सूजन दिखाई दे या कलेजेमें दर्दकी दवा प्रयोग करनेके बाद यदि कोई चर्म रोग प्रकट हो, तो समझना होगा, कि ठीक दवाका चुनाव हुआ है।

(५) रोगके लक्षण-समूहोंका सादृश्य देखकर चिर-रोगकी दवाका चुनाव करना पड़ता है और चुनी हुई दवाकी उच्च-शक्ति (जैसे—३०—२०० एक-एक मात्रा सप्ताहमें केवल एक बार) या उच्चतम शक्ति (१०००—१०,००,००० एम, एम, क्रम ४५ दिनोंमें या महीनेभरका अन्तर देकर या तीन-चार मासके अन्तरसे एक-एक मात्रा) देनी पड़ती है। औषध सेवनके बाद कुछ लाभ दिखाई देनेपर दवा कुछ दिनोंतक स्थगित रखनी पड़ती है। इसके बाद आवश्यक होनेपर वह दवा या कोई दूसरी दवा रोगोकी अवस्थाके अनुसार प्रयोग करनी पड़ती है।*

* १९२१ ईस्वीके अन्तिम भागमें हैनिमैनका "साधन (या आर्गेनन ग्रन्थका जो छठाँ संस्करण प्रकाशित हुआ है, उसमें उल्लिखित नियमका

अधिक विवरणके लिये, इस ग्रन्थका हैनिमैनोक्त नया और पुराना रोग अध्याय (Hahnemann's *Chronic Diseases*, Kent's *Lectures on Hom. Phylosophy*, Allen's Chronic Miasms Vol I & II और Bidwells *How to use the Repertory*) देखिये ।

———

व्यतिक्रम स्पष्ट दिखाई देता है।—जैसे पुरानी बीमारींकी चिकित्साके आरम्भमें निर्वाचित होमियो दवा कुछ दिन अधिक मात्रामें नित्य तीन-चार बार सेवन कराने बाद क्रमशः (कुछ दिन बाद) वह दवा उत्तरोत्तर उच्च शक्तिमें प्रयोग करना होगा। सोरा, सिफिलिस या साइकोसिस रोग-चिकित्साके मात्रा-प्रसंगमें सदृश-विधानाचार्य यही अन्तिम परामर्श देते हैं। *Organon* ६ ठा संस्करण, २८२ अनुच्छेदकी पादटीका देखिये।

परिशिष्ट (ग)

जीवाणु-तत्व या जीवागम-रहस्य

("गर्भ-धारण"—पृष्ठ १३८१ देखिये)

पाँचवें या छठे संस्करणके किसी-किसी वयोवृद्ध सम्माननीय समालोचकने यह कहा है, कि "वर्त्तमान कालमें जो कल्पनाका विषय है, भविष्यमें उसीके वास्तविक विषय होनेमें बाधा क्यों पड़ेगी ? अद्भुत-कर्मा आधुनिक विज्ञान जब पूर्वके कवियोंके कल्पनातीत विषयको भी कार्यमें परिणतकर अघटन सङ्घटित कर रहा है, तब यह जीव सम्भव समस्या वह क्यों न परिपूर्ण कर सकेगा। इसके अलावा किसी-किसी जानकार पाठकके मुँहसे भी यह सुननेमें आता है, कि जब कृमि, मच्छड़, जूँ, मत्कुण आदि प्राणिगण क्लेदसे आप-ही-आप उत्पन्न होते हैं, तब रासायनिक प्रक्रियाके बलसे जड़में प्राण-प्रतिष्ठा करनेकी चेष्टा क्या किसी समय भी फलवती न होगी ? इन दोनों श्रेणियोंके ही प्रश्न करनेवाले महोदयोंको आगे कहे हुए चारों विषय खूब धीर-भावसे समझनेका अनुरोध करता हूँ :—

१। स्मरणातीत कालसे ही सब देशोंके मनीषियोंने नाना प्रकारके पदार्थोंके संयोग, वियोग आदि कार्य द्वारा चेतना-शक्ति उत्पन्न करनेकी बारम्बार चेष्टा की है और बार-बार असफल हुए हैं। पाश्चात्य रसायन-शास्त्र भी यह काम

असम्भव समझकर इस सम्बन्धमें हस्तक्षेप करनेके लिये तैयार नहीं हैं। १८७२ ईस्वीमें डाक्टर बैस्टियनने जब "स्वतःजनन" के मतके अनुकूल युक्ति प्रदर्शन करनी चाही, तो वैज्ञानिक-जगतमें उपहासास्पद हो गये और उनका रचा हुआ ग्रन्थ Beginings of Life (1872) and Evolution of Life (1907) नामक दोनों ग्रन्थ काल-विस्मृतिके अतल जलमें डूब गये। उस दिन कैम्ब्रिजके वैज्ञानिक बर्क साहबको कैवेण्डिसकी परीक्षाशाला (Laboratory) में रासायनिक प्रक्रियाके प्रभावसे रेडियम (Radium), बावरिल (Bovril) आदिके संयोगसे जीव उत्पन्न हुआ करता है—इस ढङ्गकी एक घोषणा हुई है (Vide Burke's *Origin of life* and Mc Cabe's from *Nebula to man*); परन्तु शायद पाठक भूले न होंगे, कि इस महा आडम्बरका क्या परिणाम हुआ था और जीवकी सृष्टि न होकर निरर्थक वितण्डा रङ्गालयकी सृष्टि हुई थी।*

---

* सम्प्रति Dundee British Association नामक सभामें डाक्टर जेफर (Dr. Schafer) ने कहा है कि थोड़े ही कालके बाद वैज्ञानिक-गण अपनी-अपनी प्रयोगशालामें जड़ पदार्थके सम्मिलनसे जैव-पदार्थ उत्पन्न कर सकेंगे।

अच्छी बात है, तर्ककी खातिरसे मान भी लिया जाये, कि वैज्ञानिक प्रक्रिया द्वारा जैव उत्पादन (Protoplasm bioplas) मात्र उत्पन्न होना सम्भव है, परन्तु उस उपादानमें प्राण प्रतिष्ठा और चैतन्य किस तरह उत्पन्न होगा।

२। अण्डेमें कुछ अम्लजान (oxygen), कुछ उद्‌जान (hydrogen) और कुछ परिमाणमें यवक्षारजान (nitrogen) रहता है। विज्ञानने खूब खोज-ढूँढ़कर यह पता तो लगा लिया है; परन्तु कोई भी वैज्ञानिक पण्डित उन उक्त उपादानोंको यथोचित परिमाणमें मिलाकर, आजतक ऐसा अण्डा तैयार न कर सका, जिसके फूटनेपर पक्षीके बच्चे, यहाँतक कि बेंगचोंके समान निकृष्ट जीव भी पैदा हो सके? अर्थात् विज्ञान जिन कई उपादानोंके सम्बन्धमें कहा करता है, उनके अलावा और भी कुछ ऐसा पक्षी आदिके अण्डेमें अवश्य है, जिसका पता वर्त्तमान विज्ञानको आजतक नहीं लगा है और जिस उपकरणकी कमीके कारण रासायनिक प्रक्रिया द्वारा तैयार किये हुए अण्डेमें जीवका पैदा होना सम्भव नहीं होता।

३। वर्त्तमान कालके रसायनवेत्ताओंने बहुत तरहकी परीक्षाओंके बाद यह सिद्धान्त किया है, कि हंसनी और मुर्गीके अण्डेके उपादान सहधर्मक—एक ही प्रकारके हैं, उनमें कोई पार्थक्य नहीं है और वे समानुपातिक (अर्थात् सूक्ष्मतम कांटेके वजनके अनुसार सम-परिमाणवाले) हैं। दोनों ही रासायनिक उपादान समजातीय और समान परिमाणमें मिश्रित हैं और दोनों ही अचेतन अण्डेका आवरण फोड़कर विचित्र साज-सज्जासे विभूषित दो अपूर्व जीव निकला करते हैं; पर एकका अण्डा क्यों मराल शावकके रूपमें बदल जाता है और तैर सकता है और दूसरेके अण्डेसे निकला हुआ जीव क्यों

चोटीवाले वेशमें पैदा होता है और पानीमें तैर नहीं सकता ? इससे स्पष्ट मालूम होता है, कि विभिन्न जातिके अण्डेमें विभिन्न प्रकृतिके और भी मौलिक उपादान विशेष अवश्य ही छिपे हुए भावसे मौजूद हैं, जिनका पता लगा लेना रसायन विज्ञानकी सामर्थ्यके परे है और जिस अतीन्द्रिय उपकरणके प्रभावसे हंसनीका अण्डा फटकर हंस-शावक ही निकलता है और मुर्गीका अण्डा तोड़कर मुर्गीका बच्चा ही अभ्रान्त रूपसे निकलता है। इसके अलावा क्या यह भी एक रहस्यमय व्यापार नहीं है, कि नारी-गर्भके भीतरवाला भ्रूण पहले (१) अणु-कोष (cell) मात्र रहता है, इसके बाद वह क्रमसे (२) शून्य गर्भ थैली, (३) वज्र-माणु (४) मत्स्य, (५) नाना प्रकारके नभचर और स्तन्यपायी जीव और (६) बन्दरका वेश धारणकर अन्तमें (७) नरदेह धारणकर इस पृथ्वीपर आ पहुँचता है (Hæckel's Evolution of Man देखिये) ? जिस तरह कई बून्द दधि बीज, बहुतसे दूधको दहीमें परिणत कर सकता है और यीस्टका एक कण जिस तरह चार-पाँच मन चीनीको पदार्थान्तरके रूपमें बदल सकता है; दर्शनके अध्यापक फिशर (Fischer) प्रमुख विद्या-विशारदगण कहते हैं, कि प्राणी और उद्भिदके शरीरसे निकला हुआ बहुत तरहका रस भी उसी तरह शरीरस्थ बहुतसे पदार्थोंको रूपान्तरितकर जीवनी शक्तिको प्रकट करता है (अर्थात् "जीवन-व्यापार थोड़ेसे रासायनिक व्यापारके परिणामके सिवा और कुछ नहीं है*)—

* भारतवर्ष चैत्र १३२२ पृष्ठ ५८४ देखिये।

इसी धारणासे सङ्गठन विधानके बलपर परीक्षागारमें नकली प्राणी तैयार करनेकी वे आशा कर रहे हैं। अतएव, क्या हम उनसे पूछ सकते हैं कि अन्न, जल प्रभृति शरीर गठनोपयोगी पदार्थोंमें जो विपुल शक्ति छिपी हुई है और जिस छिपी हुई शक्तिको जागरितकर प्रकृति जीवसे जीवन क्रिया करा लेती है—जो अद्भुत शक्ति उद्भिज और प्राणी देहमें आजीवन विद्यमान रहकर शरीरकी समस्त रासायनिक क्रियाका परिचालन करती है—उस शक्तिका क्या किसीने अबतक परिचय पाया है अथवा उस अपरिचित महाशक्तिके पैर सींकलमें बाँध क्या कोई वैज्ञानिक उसे किसी दिन परीक्षाके काँचके नलमें प्रवेश करा सका है? अतएव, जो विज्ञानकी दोहाई देकर बड़े हर्षके साथ इस प्रहेलिका पारावारको पार किया चाहते हैं, उन्हें पूर्वोक्त कृपापात्र वैस्टियन और बर्क साहबकी उछल-कूदके अवश्यम्भावी फलकी बात फिर याद कर लेनी चाहिये।

(४) पाकाया हुआ अन्न अथवा दूध, दही प्रभृति खानेकी चीजें कई दिन रख छोड़नेपर उसमें छत्ता लग जाता है और कुछ दिनों बाद यह चीज सड़नी आरम्भ हो जाती है तथा उसमें छोटे-छोटे कीड़े दिखाई देने लगते हैं। ये छोटे-छोटे कीड़े कहाँसे आये? प्राचीन कालके विद्वानोंकी धारणा थी कि ये कीटाणु इन खाद्योंसे स्वयं ही पैदा हो जाते हैं। क्रिमि, केचुआ, कीड़े आदि नाली, पाखाना आदिमें दिखाई देते हैं, इसलिये इनकी उत्पत्ति क्लेदसे होनेके कारण ही एक धारणाके

वशवर्त्ती हो, इनका नाम क्लेदज रख दिया और यह भी विश्वास करने लगे कि ये "स्वतः जनन" है (Abiogenesis or Spontaneous Generation)। परन्तु रेडि, लीनवेल, होयेक, हेल्म-होल्तज, पैस्टेडर, टिण्डल, लीस्टर, प्रभृति लब्धप्रतिष्ठ विज्ञानाचार्यों ने दो सौ बरसतक (१६६०—१८६९ ईस्वीतक) प्रभूत अध्यवसाय और सूक्ष्मतम यन्त्र आदिकी सहायतासे बहुत तरहकी कठोर परीक्षाओंके बाद निःसंशय रूपसे युद्ध निरूपित किया है, कि ये पूर्वोक्त कीट स्वतः जात (आप-ही-आप उत्पन्न) नहीं हैं—इनकी उत्पत्ति हवामें उड़ते हुए धूलके कण दिखाई देते हैं। पृथ्वीके सभी स्थानोंमें हमलोगोंको धूल कण दिखाई देते हैं; आचार्य टिण्डलने परम यत्नसे नाना प्रकारकी परीक्षाके बाद प्रमाणित किया है कि सारे जगतमें फैली हुई यह धूल वास्तवमें सर्वांशमें धूल नहीं है (इसका स्थूल भाग धूलके कण और सूक्ष्मांश-जैव पदार्थ क्षुद्र-क्षुद्र प्राणी हैं। ये धूलकण रूपी असंख्य आनुवीक्षणिक जीवाणु बीज (Germs or Bacilli) जल, स्थल, हवा, आकाश सब जगह छाये हुए हैं; हमलोग साँस या खान-पानके समय हजारों जीवाणु नित्य शरीरमें ग्रहण करते हैं। ये ही वास्तवमें मैलेरिया, हैजा, प्लेग, चेचक, यक्ष्मा प्रभृति रोगोंके मुख्य * कारण और फैलानेवाले हैं; गले हुए

* वर्तमान कालके कीटाणु तत्वविदोंका कथन है, कि एक जातीय जीवाणुसे एक-एक स्वतन्त्र प्रकारके रोग उत्पन्न हुआ करते हैं; जैसे—„कौमा-बैसिलस" नामक कीटाणु हैजा रोगोत्पादक है, "बैसिलस-पेस्टिस"

पदार्थं या सड़े जखममें जो कोड़े दिखाई देते हैं, वे इन्हीं सूक्ष्म-शरीर जीवोंके वंशधर हैं। इन वायुमें रहनेवाले अप्रत्यक्ष जीवाणुके प्रभावसे ही दूध खट्टा हो जाता है। शराब, खजूरका रस वगैरह तरल मीठे पदार्थों में फेन या उफान (Fermentation) या ताड़ो पैदा हो जाती है, मानव-शरीरका कोई स्थान कट जानेपर ये जीवाणु उसी स्थानपर आक्रमण करते हैं और रोगवाली जगहपर पीव पैदा हो जाता है। वास्तवमें, आधुनिक वैज्ञानिक जगतने स्वतःजनन मत त्याग दिया है। जीव-समागमके सम्बन्धमें वर्त्तमान कालके विज्ञानाचार्यों ने यह सिद्धान्त निश्चित किया है, कि केवल प्राणीसे प्राणीकी उत्पत्ति हुआ करती है—इसके विपरीत नहीं होता। अनुसन्धित् सुस्पष्टवादी विज्ञानने दो शताब्दीकी अनवरत गवेषणा और कठोर साधनाके परिणाम स्वरूप यह परम तत्व जगतके सामने निःसंशय रूपसे प्रतिपादित किया है, (vide Spencer's *Biology*, Huxley's Presidential address of 1870 to the British Association,

---

प्लेग महामारीका उत्तेजक कारण इत्यादि (पृष्ठ ५०—५५ देखिये)। हैजा, प्लेग प्रभृति रोग-ग्रस्त व्यक्तियोंके दस्त-कै आदिमें उक्त जीवाणु दिखाई देते हैं, इसीलिये कीटाणु तत्वज्ञ उक्त जीवकुलको उस-उस रोगके आक्रमणका मुख्य कारण समझते हैं (अर्थात् वे कीटाणु स्वस्थ शरीरपर आक्रमण करनेसे ही रोग आदि पैदा होते हैं), पर क्या ऐसा नहीं हो सकता है, कि किसी कारणसे हमारा स्वास्थ्य भङ्ग होनेसे ही उक्त जीवाणु हमारे शरीरको उनकी आवास भूमि बना लेते हैं अर्थात् हमलोग अपने कामोंसे उन्हें अपने शरीरमें बुला लेते हैं। "रोग-बीज" १६६ देखिये।

Tyndalls Article in the *Nineteenth Century* for January 1878, Haeckels *Natural History of creation*, Tyndalls *Floating Matter in the Air* and Chambers Encyclopoedia article "Spontaneous Generation."

परन्तु इस स्थानपर यह कहना उचित है, कि इन उल्लिखित जीवाणुओंके जनक (अर्थात प्राथमिक जीवाणु अंकुर) किस तरह इस धरातलपर आ पहुँचे, इस विषयमें आधुनिक वैज्ञानिकोंमें घोर मतभेद दिखाई देता है। "अतीत युगके किसी शुभ मुहूर्त्तमें अद्भुत रासायनिक शक्तिके प्रभावसे एकाएक जड़में प्राणकी प्रतिष्ठा होकर विवर्त्त (या क्रम विकास) के नियमानुसार बहुत दिनोंसे और बहुत-सी अवस्थाओंका विपर्य्यय होनेपर भी भूमण्डल क्रमशः नाना प्रकारके जीवोंसे भर गया है; स्वाती नक्षत्र पूर्ण सिद्धियोगका वह महेन्द्रक्षण अब बीत गया है, इसलिये जगतकी वर्त्तमान अवस्थामें रासायनिक प्रक्रियासे जीव उत्पन्न होता नहीं दिखाई देता है" कहकर जो सब विज्ञान सम्बन्धी प्रबन्ध लेखक मासिक पत्रोंमें भाषाके आडम्बरसे सजाकर या किसी तरह भानमतीका पेटारा सजाकर अपनी-अपनी कल्पना-शक्तिकी पराकाष्ठा दिखाते हुए जीवोत्पत्ति समस्याको पूर्ण कर डालते हैं, उनकी तो बात ही छोड़ देनी चाहिये; क्योंकि उल्लिखित उत्कट मीमांसाका विश्लेष यही है, कि **स्वतःजनन-मत** विवर्त्तवादकी सहायतासे प्रमाणित होता है और (पक्षान्तरमें) **विवर्त्त-मत**

स्वतःजनन-वाद द्वारा अनायास ही प्रतिपन्न किया जाता है—यह नया निकाला युक्ति-जाल उनके सरल विश्वासका यद्यपि परिचय प्रदान करता है, पर यह विस्मृत प्राय "बीजांकुर" की तरह या धोखाकी अपेक्षा भी सूक्ष्मतर हो सकता है, पर दूर्भाग्य-वश परीक्षा पर्यवेक्षण मूलक नवीन विज्ञान या विचार-मूलक प्राचीन न्याय-शास्त्र उसका बिलकुल ही समर्थन नहीं करता।*

---

* पर्यवेक्षण (observation और परीक्षण (experiment) द्वारा हमलोग वर्त्तमान कालमें पदार्थोंका (या विषयका) तत्व वा सत्ता निर्णय कर सकते हैं और वर्त्तमान कालके तत्वोंको आलोचनाकर अतीत कालके सत्यतक या तथ्यतक पहुंच सकते हैं—विज्ञान शास्त्रका यही अभिमत है। इसके सिवा (अर्थात् जो हमारे ज्ञानमें आता नहीं वह) विज्ञान (विशेष विज्ञान या पदार्थ-तत्व निर्णायक शास्त्र) नहीं है। कल्पना या युक्तिहीन अनुमान मात्र—अर्थात् "वर्तमानके ज्ञानसे" अतीतका ज्ञान वसूल करना विज्ञानकी प्रतिज्ञा है। अब पर्यवेक्षण और परीक्षण द्वारा वर्त्तमान कालमें स्वतः जननवाद प्रमाणित नहीं होता, अतएव "वर्त्तमान" की आलोचनाकर "अतीत" कालका स्वतःजनन हुआ था—वैज्ञानिक युक्तिके बलपर इस तरहके सिद्धान्तपर किसी तरह भी पहुँचा नहीं जा सकता। इसलिये "स्वतःजननवाद" को विज्ञानसम्मत कहनेसे सत्यका क्या अपलाप नहीं किया जाता ?

और स्वतः जननवादकी युक्ति-प्रणालीमें न्याय वाक्यके (Syllogism) अवयव (premises) संस्थान ठीक-ठीक स्थानपर नहीं दिखाई देते ; इसलिये वह अनुमान (inference) सिद्ध या तर्कशास्त्र (logic) सङ्गत भी नहीं है—अर्थात् अयथाभूत दर्शन-शास्त्र है।

इससे स्पष्ट प्रमाणित होता है, कि विज्ञान-लब्ध सत्य या युक्ति-मूलक अनुमान (inference) स्वतः जननवादकी भित्ति नहीं है—अन्धविश्वास

विज्ञान-जगतके सम्राट असामान्य प्रतिभा सम्पन्न लार्ड केलविन कहते हैं, कि आदिमें जीवाणु अंकुर उल्कापिण्डमें विद्यमान था, इसके बाद उल्कापिण्डके साथ वह जमीनपर गिरकर युग-युगान्तरसे वंश विस्तार करता हुआ क्रम-विकासके नियमानुसार नाना प्रकारके जीवमें परिणत हुआ है। सब प्रकारके विज्ञान विशारद जर्मन पण्डित हेल्म-होल्तज और युरोपके बहुतसे प्रसिद्ध विद्वान इसी मतका समर्थन करते हैं, पर आचार्य जोलनर (Zollner) ने इसका प्रतिवाद किया है। प्राज्ञ रिक्टर (Richter) साहब कहते हैं कि महाकाशका सभी स्थान अति सूक्ष्म जीवाणु अंकुरसे भरा हुआ है—ब्रह्माण्डव्यापी ये अंकुर उपयुक्त भोजन, वायु, ताप पानीपर बढ़ते हैं और कालक्रमसे कितने ही विभिन्न लोकोंमें नाना प्रकारके जीवके रूपमें आविर्भूत हुआ करते हैं। १५०८ पृष्ठमें कहा गया है, कि जड़में शक्ति (energy) छिपे रूपसे रहा करती है, खास-खास अवस्थाओंमें वह प्रकट होती है। बङ्गाल देशके गौरव विश्वविख्यात यशस्वी विज्ञानाचार्य Sir J C. Bose, Kt., M. A., Dsc., C. I. E., C. S. I. महाशयके गवेषणापूर्ण Response in the Living and

---

या युक्तिहीन अमूलक अनुमानके (Speculation) ऊपर ही वह अवलम्बित हो रहा है अथवा विज्ञान और सुयुक्तिके नामपर ख-पुष्प-वासित अनुमान निर्यासके अनुमानके साथ उत्कट उक्त सब-संशय दूर करनेवाले चटक हमें सुशील शिशुकी तरह अबोध मुंह फाड़कर दोनों आँखें बन्दकर चुपचाप निगल जानेकी अकुतोभय रूपसे व्यवस्था दे रहे हैं।

the Non-Living नामक ग्रन्थ पढ़नेपर इस बातका बहुत कुछ आभास मिलता है, कि "ज्ञान या बोध" (अर्थात् चेतना शक्ति Sensitivity भी) उसी तरह प्रच्छन्न भावसे मौजूद है और अवस्था विशेषमें प्रकट हुआ करती है।* अपने-

---

* वेदान्तिकोंके लिये यथ्य बिलकुल ही नया नहीं है। युरोपीय विद्वानोंतकने इसे स्वीकार किया है ; (Barclay Lewis Day) साहब लिखित (*Our Heritage of Thought*) नामक ग्रन्थसे नीचे लिखी कई पंक्तियाँ उद्धृत की जाती हैं।

"The Vedanta boldly asserts that *life* is latent even in what we call inorganic substance. There is no such thing as dead *matter* says the vedantist. "The whole universe is one life, is one thought, is *Brahma*."

All honours however, to our Dr. Bose for the unique service he has renderd to modern science by demonstrating *unity of life*. A deep sense of awe is evoked in us when we think that it was reserved for an Indian to substantiate by *experimental* methods the bold ascertion that life is latent in all things—of our hoary forefathers of venerable antiquity. In the words of his Excellency the late Governor of Bengal (Lord Ronaldshay)." 'Sir Jagdish appears to be one of the ancient sages re-incarnated in the modern epoch to prove by rigid scientific demonstration the existence of a world in which *life* is *omnipresent*."

A. Neatby M. D. in his *reflections presented to theInternational Homœopathic Council* of the Hague on August 26, 1920 says :—

The very latest acceptance of the principle (the dual action of drugs the Similia Similibus Curentur of Hahne-

अपने बनाये यन्त्रोंसे उन्होंने प्रमाणित किया है, कि उद्भिजके स्नायु भी उत्तेजित होनेपर शब्द करते हैं अर्थात् सुखदुःख या सजीवताका परिचय प्रदान करते हैं। हेकेल प्रमुख मार्जित जड़द्वैतवादीगणने कहना आरम्भ किया है (vide Haeckels *Reedle of the Universe*) pp. 57—868 Wonders of Life) कि ब्रह्माण्डके प्रत्येक अणु परमाणुमें तीन गुण वर्त्तमान हैं :—(१) व्याप्ति (Extension), (२) बल (Force) और (३) अनुभूति (Sensation); परन्तु जड़वादियोंके बड़े आदरके परमाणु अपनी कायाका*

---

mann) I noticed in the column of the *Morning Post*, a London Newspaper, in its issue of July 28th that Journal Comments on the works of an Indian scientist Sir Jagadish Bose. After stating that Bose believed that plants react to influences - e. g. wireless electric stimulation—not felt by the most sensitive human beings, he adds and stranger still *he has proved* (italics mine) that even metals are stimulated by small doses of poison. large doses abolishing the response. Here is our cardinal principle extended to the inorganic world. It is of course acknowledged every where in vaccine therapy......—In the *Lancet* of February last an annotation states that there is urgent need to stir the mystery surrounding the fact that the same agent can set up an ugly pathological process, meaning a—Similar not an identical process. The *Lancet* has never heard of....... .Hahnemann's Law ? —The *Homœopathic World*, February, 1921 (pp. 47-56) देखिये।

* नित्य, ना, नश्वर वपुः ?

अपवर्त्तनकर अरूप शक्तिसागर-गर्भमें सदाके लिये लीन होनेका रहस्य-तत्व ("परिशिष्ट क" देखिये) क्या उस जड़ाद्वैतवादका पोषण करते हैं ? वर्त्तमान विज्ञानके एक प्रधान नायक ऐरेनियस (Arrhenius) साहबके मतसे किसी दूरके सजीव नक्षत्रसे आदिम अति सूक्ष्म जैव-बीज विश्वव्यापी आलोकके दबावके कारण परिचालित हो पृथ्वीपर आ पड़ा है ; परन्तु आधुनिक पण्डितोंके अन्यतम नेता बेकेरेल (Becquerel) इस मतके प्रतिकूल मत देते हुए कहते हैं, कि "इस आलोक तरङ्गमें ऐसी जीवाणु नाशक रश्मि वर्त्तमान है, कि उससे उक्त जीवाणु अंकुर कभी सजीव अवस्थामें पृथ्वीपर पहुँच ही नहीं सकते" और "उल्कापिण्ड या आलोकके आघातसे किसी दूसरे ग्रहसे जीवाणु बीज जमीनपर गिरना या महाशून्यमें जीवाणु बीजका उड़ते रहना" वाला मत यदि मान भी लिया जाये तो यह प्रश्न सहजमें ही उठ खड़ा होता है, कि "उक्त उल्कापिण्ड या ग्रहमें अथवा अन्तरीक्षमें आदिम जीवाणु अंकुर किस तरह पैदा हो गये ?" अर्थात् **जीवागम समस्या हमलोगकी विद्या-बुद्धिकी माप-जोखके परे हैं**—जड़ विज्ञान आजतक इसकी मीमांसा न कर सका और मालूम होता है, कभी भी कर न सकेगा।

बल्कि, जीवोत्पत्तिके प्रसङ्गमें रसायन शास्त्रकी ओरसे पण्डिताग्रगण्य सर हेनरी रस्को. प्राण विद्याके नामसे विवर्त्त-मतोद्भावयिता भुवन विख्यात डार्विन और विद्वान वालेस

साहब तथा वैज्ञानिक अज्ञेयवादके आदि प्रचारक आबाल-वृद्ध-परिचित आचार्य हक्सली, जड़-विज्ञानकी ओरसे असमान्य बुद्धिमान आधि-विद्य विज्ञान-कवि महात्मा टिण्डल और विवर्त्तन दर्शनके पक्षसे स्वनामधन्य महान दार्शनिक मनस्तत्व-विद् ऋषिकल्प हर्बर्ट स्पेन्सर और बीसवीं शताब्दीके क्रम-विकासवादके समर्थनकारियोंके अग्रणी फ्रेञ्च दर्शन-शास्त्रवेत्ता पूज्यपाद वर्गसोने विनम्र भावसे यही आभास दिया है, कि उनकी अपनी-अपनी आराधिता विद्या इस विषम समस्याके परिपूर्ण करनेमें एकदम असमर्थ हैं; बल्कि दीर्घ कालतक मस्तिष्क-चालनके बाद आजीवन विज्ञान सेवी महामहोपाध्याय सुकीर्त्तिके साथ-साथ यह विशेषज्ञ बुद्धमण्डली एक वाक्य और सम-स्वरसे स्वीकार कर गयी कि दृश्यमान इस माया-पटकी ओटमें छिपी हुई अवाङ—मनसगोचर कोई एक ऐसी अव्यय विराट-शक्ति (One Infinite and Eternal Energy) है, जिसके प्रभावसे यह आश्चर्यजनक व्यापार हुआ करता है।*

अब हमारा यह कहना है, कि सर्ववाद सम्मत विश्व-व्यापिनी मनोवाणीसे अतीत वह महागूढ़ महाशक्ति जो जीवका

---

* क्या वरहस नवीन युरोपीय विज्ञान साधक श्रेष्ठ उन महात्माओंका अप्रत्याशित अनुभूति-राज्यके क्षीण आलोकसे तरङ्गित चरम सीमापर पहुंचनेका रहस्यवाद भारतके मुकुट विश्ववन्दित प्राचीन आर्य ऋषिकुलका ध्यान-लब्ध वह नित्य शाश्वत चिर देदीप्यमान "परम सत्य" या महासत्यके सम्बन्धमें साक्षी नहीं दे रहा है।

जीवन और प्राणीका प्राण तथा जो जीव और उद्भिदके हितार्थ अधीन स्थूल शक्तियोंको लगातार कल्याणके पथपर परिचालित करती है, वह **आद्या-शक्ति** अन्ध है या चिन्मयी—वह **परा-शक्ति** ज्ञानहीन है या उसके मूलमें मङ्गलमय सदिच्छा छिपी हुई है अर्थात् नवीन विज्ञान शास्त्रमें भी शुभादृष्टवाद प्रसङ्ग* क्या समीचीन है—क्या ऐसा आभास पाया जाता है ?

---

* Sir Arther Keith ने अपनी एक वक्तृतामें आडम्बर-शून्य भाषामें कहा है, कि—जिस आदिम जीवाणुसे हमारे आदि पितामहकी उत्पत्ति हुई हैं, उसमें ही विधाता पुरुषने मानव जातिकी अदृष्ट लिपि सदाके लिये लिख दी है—यह सुसभ्य और माजित जातिमें आजतक जो कुछ हुआ है या उसे जो कुछ मिला है (या जो भविष्यमें मिलेगा) उसकी सूचना विचित्र विधान द्वारा कालस्रोतके आरम्भकालमें हुआ था अर्थात् मनुष्यकी शक्ति-सामर्थ्य, उसकी गुणावली और सृष्टि रहस्यके समाधानकी उसकी अद्भुत सूक्ष्म-दृष्टि प्रभृति सभी उपादान अस्फुट या अंकुरावस्थामें उसमें मौजूद थे।" अतएव कीथ वगैरह विद्वानोंका बताया नवयुगका यह अदृष्टवाद अपूर्व होनेपर भी विज्ञानके लिये अपरिहार्य है।

Lamark the real founder of organic Evolutionism, says in his *System Analytique* [1830.] "Nature is but an order of things subject to laws originating from the *Will of the Supreme Being* (page 43) of whose existence and boundless power man has from observation conceived an indiret though sound idea (page 8)."

Even Darwin, whom many represent as an atheist, concludes his epochmaking *Origin of Species* (page 193, cheap edition) thus :—I infer that all organic beings have descended from one primordial form into which *life was first*

उत्तरका भार चिन्ताशील पाठक और भक्तिमती पाठिकाओंको अर्पणकर विश्ववरेण्य कई विज्ञानाचार्य्योंका मत उद्धृतकर इस रहस्यमय अप्रासङ्गिक विषयका उपसंहार करते हैं।

breathed by the Creator." Again in his letters to Sir J. D. Hooker (March 29—1863), to V. Carus (Nov. 29—1865). to D. Mackintosh (Feb. 28—1882, i. e. only two months before his death) respectively Darwin writes :—(1) "It is mere rubbish thinking at present of the origin of life ; one might as well think of the origin of the matter" ......(2) The principle of life seems to me to be *beyond the confines of Science*'......(3) "No *evidence* worth anything has as yet in my opinion, been advanced in favour of a *living being, developed from inorganic matter.*"

"There are at least three stages in the development of the organic world where some *New* cause *or power* must necessarily have come into action, The first stage is the *change from inorganic to organic*, when the earliest vegetable-cell (or the living protoplasm out of which it arose) first appeared...........There is in this something quite *beyond* and *apart from chemical changes* however complex ; and it has been well said that the *first vegetable cell was a new* thing in the world *possessing* altogether *new powers.*" [The other stages presenting similar difficulties are the *introduc-tion of sensation* or consciousness (animal life) and at *rational thought & speech*]—Wallace's *Darwinism.* pages 474—475.

"Of the causes that have led to the origination of living matter it may be said that we *know absolutely nothing*...... Science has no means to form an opinion *on the commence-ment of life ; we can only make conjectures without any*

और अन्तमें जन्मके समय क्षुद्र और असहाय अवस्थामें शक्ति सागरमें फेंक दिया था। उस समय बाहरकी शक्ति

---

scientific value"—Huxley (article *Biology* in "The Encyclopœdia Britannica)."

"There are those who profess to for-see that the day will arrive when the chemist by a succession of constructive efforts, may pass beyond albumen and gather the elements of lifeless matter into a living structure. Whatever may be said of this from other standpoints, the *chemist* can only say that at present *no such problem lies within his province.*"—Sir Henry Rofcœ's *Presidential Address*, British Association 1887.

"The *evidence* in favour of spontaneous generation *crumbles* in the grasp of the competent inquirer—Tyndall's *Frangments of science* (article "Spontaneous Generation").

"In the present state of the world *no* such thing happens as the *rise of living creature out of non-living matter*"—Herbert Spencer (the Philosopher of Evolution *par excellence*) in the *Nineteenth century* May 1886, page 769,

Sir Issac Newton declared that the existence of a Being endowed with intelligence and wisdom is a necessary inference from a study of celestial mechanics (vide *Principia*, School. Gen.)

"The production of life is *not* within the present range of practical Chemistry"—Prof. Matchinkoff.

"It does not follow" says Sir Oliver Lodge "that the nature of life is much better understood even when living protoplasm has been artificially put together, the thing which by its interaction matter confers on it what we

भीतर प्रवेशकर हमारे शरीरका पालन और वृद्धि हुई है। मातृ-स्तनके दूधके साथ स्नेह, माया, ममता भीतर प्रवेशकर और बन्धुओंके प्रेम द्वारा जीव जीवन प्रफुल्लित हो गया है। दुर्दिनोंमें और बाहरके आघातके परिणाम-स्वरूप अन्तरमें शक्ति सञ्चित हुई हैं और उसीके बलपर बाहरके साथ जूझनेमें समर्थ हो सका हूँ × × × × इसमें मेरा अपमान कहाँ है; इन सबके मूलमें मैं हूँ या तुम? × × × × भीतर और बाहरके इस शक्ति-संग्राममें ही जीवनका कितने ही ढङ्गोंसे विकास होता है। दोनोंके मूलमें एक ही महाशक्ति है,

---

know as 'vitality' will still in all probability elude us. It does not appear to be a form of energy but it certainly is a guiding principle utilising forces known to Chemistry and Physics and all the ordinary laws of nature........... which appear to be outside the known laws of the physical world," Again, in his recent work entitled *The Making of Man*, Sir Oliver infers that "some Divine Activity and Purpose is suggested by what we know of the course of Evolution."

Lord Kelvin (*vide* report of his words amended by himself *The Nineteenth Century and After*, June 1903) says:—"I cannot say that with regard to the origin of life, Science neither affirms nor denies Creative power—*Science positively affirms creating and directive power*. which she compels us to accept as an article of belief."

(The *Italics* are ours)

जिसके द्वारा अजीव और सजीव, अणु और ब्रह्माण्ड, अणु-प्राणित हो रहे हैं। उस महाशक्तिका उच्छ्वास ही जीवनकी अभिव्यक्ति है। उस पराशक्तिसे ही मानव दानवत्वको छोड़कर देवत्वको पहुँचेगा।" —आचार्य जगदीशचन्द्र वसु प्रणीत "नवीन ग्रन्थ" अव्यक्त (आश्विन १३२८ सन्में प्रकाशित) पृष्ठ २२७—२२८ देखिये।

परिभाषा (Glossary)

और

कुछ कठिन शब्दोंका अर्थ

अचल ।—गति-शक्ति-हीन (Passive) ।

अज्ञेयवाद ।—Agnosticism.

अणु ।—यौगिक पदार्थोंका सूक्ष्मतम अंश, जिसमें यौगिक पदार्थके सभी गुण विद्यमान रहते हैं ; Molecule.

अणु-वियोजन ।—किसी यौगिक पदार्थके एकदम गल जानेपर, उसके अणु सबका ताड़ित बिन्दुमें परिणत होना (dissociation of molecules) ।

अद्व्यर्थ ।—जिसके दो अर्थ न निकलें ; एकार्थ बोधक या सुस्पष्ट (Unequivocal) ।

अनन्य विधान ।—Isopathy, इसका दूसरा नाम "अभेद विधान" "स एव विधान" है ।

अनुपूरक-औषध ।—Complementary remedies या Complements ।

अभिव्यक्ति—अव्यक्त ।—(या अप्रकाशित या अस्फुट) से व्यक्त (प्रकाशित या स्फुट) होना । प्राचीन आर्य दार्शनिक पण्डितोंके मतसे आकाश आदि सूक्ष्म भूतसे

यह स्थूल जगत प्रकाशित होनेका (वर्त्तमान युगके वैज्ञानिकोंके मतसे किसी अज्ञेय एक ही वस्तुके विवर्त्तनसे सभी जड़ और सजीव पदार्थोंका उत्पन्न और स्वतन्त्र रूपसे परिणत होना) नाम "अभिव्यक्ति" Evolution) है।

अभिव्यक्ति वाद।—Theory of Evolution ("अभिव्यक्ति" शब्द देखिये)।

अवरुद्ध प्रमेह।—साइकोसिस (Sycosis)।

आकाश।—सूक्ष्मानुसूक्ष्म पदार्थ जो ओत-प्रोत भावसे विश्वमें वर्त्तमान है—जो ब्रह्माण्डके प्रत्येक अणु परमाणुतकमें व्याप्त है (Ether)।

आनर्त्तन।—ताण्डव रोग (St. Vitu's Dance)।

आक्षेप।—अनिच्छा रहनेपर भी मांसपेशीकी खींचन, ऐंठन या अकड़न (Spasm)।

उत्तेजक औषध।—जो दवा किसी शारीरिक यन्त्रमें उत्तेजना उत्पन्न करती है (Stimulant)।

उत्तेजक कारण।—किसी रोगका उद्दीपक या मुख्य कारण (Exciting cause) "पूर्ववर्त्ती कारण" देखिये।

उद्गम।—रक्त-सञ्चारकी वजहसे कोई अङ्ग कड़ा या फूल जाना (Eruption)।

उदरी।—पेटका शोथ (Ascites)।

उपदाह ।—शरीर-विधानकी अतिशय उत्तेजनाकी वजहसे स्नायु और पेशीकी क्रियाका अधिक होना (Irritation)।

उपादान ।—जिस-जिस पदार्थसे कोई पदार्थ बना हो (Ingredients)।

एकाङ्गीन रोग या स्थानिक रोग ।—जिस रोगका आक्रमण केवल एक अङ्गपर होता है, समूचा शरीर दूषित नहीं होता (अर्थात् रक्त-दोष नहीं पैदा हो जाता), उसका नाम "एकाङ्गीन" या "स्थानिक" (local) रोग है। "कोमल क्षत उपदंश" एक एकाङ्गीन रोग है ; क्योंकि इस रोगका विष (virus) किसी स्वस्थ मनुष्यके शरीरमें प्रवेश करनेपर उसकी जननेन्द्रियमें ही एक कोमल जखम पैदा हो जाता है (समूचे शरीरपर रोगका आक्रमण नहीं होता)। "सर्वाङ्गीन रोग" देखिये ।

कटिपेशी वात ।—Lumbago.

कटिस्नायु-वात, कटिस्नायु-शूल ।—Sciatica।

कणा या कणिका ।—क्षुद्र अंश (Particles)।

कल्मष या किल्मिष ।—पूतिवाष्प (Miasms) परिशिष्ट (ख)—धातु-दोष और उसका निराकरण देखिये ।

कार्य ।—किसी वस्तुको यदि "बल" (force) के विपरीत चलाया जाये, तो कार्य (work) करना हुआ।

"कार्य" सभी "शक्ति" संहति (Cohesion) के विरुद्ध होते हैं। सभी "कार्य" में "शक्ति" एक स्थानसे दूसरे स्थानमें संक्रमित होती है [इस परिभाषामें "गति", "बल" और "शक्ति" शब्द देखिये]।

कुक्षि-रोग ।—(Hypochondria)।

कुलसंक्रमण ।—वंशगत (Hereditary)।

क्रम ।—औषधका विभाग किया हुआ सूक्ष्म अंश (Attenuation)।

क्रम-विकास ।—Evolution ("अभिव्यक्ति" शब्द देखिये)।

गति ।—वस्तुकी अवस्थितिके परिवर्त्तनको "गति" (motion) कहते हैं। परिभाषाका "बल" और "शक्ति" शब्द देखिये।

गतिशील ।—(Dynamic)।

गौण कारण ।—पूर्ववर्त्ती कारण देखिये।

जड़ ।—किसी पदार्थमें परमाणुगत शक्ति जब अचल भावसे मौजूद रहती है, तभी उस पदार्थको "जड़" (matter) कहते हैं। "परिशिष्ट (क) (३) अङ्क" देखिये।

जड़-जायु ।—Materialistic medicine (materialism in medicine)।

जड़-जायु-युग ।—The age of materialistic medicine.

जायु-विचारणा ।—स्वस्थ शरीरमें औषधका गुण परीक्षण (provings)* अर्थात् स्वस्थावस्थामें कोई दवा सेवन करनेपर देह और मनके जो सब लक्षण या भाव प्रकट होते हैं, उन सभी लक्षण और भावोंका लिखना।

जायुज-व्याधि ।—अफीम, पारा या क्विनाइन प्रभृति दवाओंके अपव्यवहारको वजहसे रोगीके शरीरमें पुरानी बीमारीके लक्षणको तरह उपसर्ग दिखाई देते हैं, उसीका नाम "जायुज-व्याधि" (Drug-diseases) है।

जीवनी-शक्ति ।—(Vital energy)।

जीवाणु ।—आंखोंसे न दिखाई देनेवाले क्षुद्र-प्राणी (Germs or Bacilli); अनुवीक्षण यन्त्रको सहायतासे मैलेरिया, प्लेग, उपदंश, हैजा प्रभृति बीमारीमें रक्तमें मिले दिखाई देते हैं। इसीलिये, इसे रोगोत्पादक कहते हैं (रोग-बीज पृष्ठ १८५, २५६ और परिशिष्ट (ग) "जीवाणु और जीवागम (४) अङ्क" देखिये)।

झिल्ली ।—कोमल सूक्ष्म जालको तरह स्वच्छ आवरण (Membrane)।

* Adopted from German word "Prufung" which means test or trial.

तन्तु ।—"विधान-तन्तु" देखिये ।

तन्तु-जायु ।—Tissue remedies १८१६ पृष्ठ देखिये ।

तड़िताणु या तड़ित-कण या तड़ित-बिन्दु—Electrons "परिशिष्ट (क)" देखिये ।

द्रव ।—द्रवीभूत द्रव्य या गली चीज़ (A solution) ।

द्रवी-करण ।—गलाना (Process of solution)।

धातुगत रोग ।—(Constitutional disease) "सर्वाङ्गीन रोग" देखिये ।

धातुदोष ।—"Dyscrasia" "परिशिष्ट (ख)" देखिये ।

नर्त्तन रोग ।—"आनर्त्तन" देखिये ।

निसर्गज रोग-नाशिनी-शक्ति ।—देहमें प्रकृति-दत्त व्याधि नष्ट करनेकी क्षमता (*Vis Medicatrix Naturae*)—The healing power of Nature).

परमाणु ।—मूल पदार्थका सूक्ष्मतम अंश (Atoms) "परिशिष्ट (क)" देखिये ।

परमाणुगत शक्ति ।—Intra-atomic energy.

परांगपुष्ट ।—जो समस्त प्राणी दूसरेके शरीरमें वास किये बिना जी नहीं सकते (parasites)।

परीक्षण ।—Experiments.

परीक्षित ।—Proved.

पर्यवेक्षण ।— Observation.

पार्श्ववात ।—(दाहिने या बायें पार्श्वका)—पञ्जरास्थिकी बीचकी पेशियोंका दर्द (Pleurodynia)।

पिकचंचु अस्थि, गुदास्थि ।—Coccyx.

पिकचंचु अस्थि प्रदाह ।—Coccygodynia. २३८० पृष्ठ देखिये।

पीड़का ।—व्रण, फुन्सियाँ या फोड़ा (eruptions).

पूर्ववर्त्ती कारण ।—किसी रोगका दूरवर्त्ती (या गौण कारण (predisposing cause)। "उत्तेजक कारण" देखिये।

प्रतिविष ।—Antidotes.

प्रतिषेधक चिकित्सा ।—किसी रोगका आक्रमण होनेके पहले ही उसको रोकनेकी चेष्टा (Preventive or prophylactive treatment)।

प्रदाह ।—जीवदेहके किसी अङ्गमें दर्द, गर्मी, लाली और सूजन होना (inflammation), जैसे—पैर कट जानेपर,

गर्दनमें फोड़ा होनेपर, हाथ टूटनेपर, अंगुलीमें कांटा गड़नेपर प्रदाह होता है।

प्राण-विद्या।—Biology.

प्राण-शक्ति।—Vital Energy.

बल।—आकर्षण या खींचन (attraction), भार (weight), दबाव (pressure) प्रभृति, जिससे गति उत्पन्न होती है, उसीका नाम "बल (force)" है। न्यूटन कहते हैं, कि गति-उत्पादन बलका काम है—बल गति पैदा करता है। गतिकी उत्पत्ति होनेपर समझना चाहिये, कि "बल" है। (गति-उत्पादन—बल-प्रयोग); पर गतिकी उत्पत्तिका कारण "बल" नहीं है; गतिकी उत्पत्तिका कारण कोई नहीं जानता। अतएव "बल" नामक कोई पदार्थ नहीं है; पदार्थ यदि कुछ हो भी तो वह "शक्ति" है (इसी परिभाषा प्रकरणमें "कार्य" "गति" और "शक्ति" देखिये।

बहुव्यापक।—जिस बीमारीका हमला एक ही समय बहुतसे आदमियोंपर होता है (Epidemic)।

भेषज-क्रिया।—Drug action or action of remedies.

भेषज-क्रियाका स्थितिकाल।—Duration of drug action.

भेषज-लक्षण-संग्रह।— Meteria Medica.

भेषज-शक्ति ।—Drug-potency.

भेषज-सम्बन्ध ।—Drug relationship (or relationship of remedies).

मात्रा ।—औषधका परिमाण (Dose) ।

मात्रा-तत्व ।—औषधका परिमाण विषयक शास्त्र (Posology) ।

मूल पदार्थ या रूढ़ पदार्थ ।—जो पदार्थ स्वजातीय पदार्थके सिवा किसी दूसरी जातिके पदार्थके संयोगसे उत्पन्न नहीं होते (Elements) । "परिशिष्ट (क)—(१) अङ्क" देखिये ।

यौगिक पदार्थ ।—संयोग सम्भूत वस्तु (Compounds) "परिशिष्ट (क), (१) अङ्क" देखिये ।

रक्त-सञ्चय या रक्ताधिक्य ।—जीव-देहके किसी स्थानमें या किसी यन्त्रमें अधिक रक्त इकट्ठा या जमा होना (Congestion) ।

रक्त-सञ्चार ।—किसी अङ्गमें अधिक परिमाणमें और तेजीसे खूनका दौड़ना (Determination of blood) ।

रक्ताम्बुज चिकित्सा-प्रणाली ।—(Serum Therapy) पृष्ठ २६० देखिये ।

रसायन शास्त्र।—मूल पदार्थका गुण और उनके परस्परके संयोग वियोग आदिसे किस तरहकी क्रिया होती है या कैसे यौगिक पदार्थ उत्पन्न होते हैं—इस विषयकी विद्या (Chemistry)।

रोग-विष।—रोगोत्पादक जीवाणु या संक्रामक विष (Virus)।

रोग-बीज।—Disease germs (पृष्ठ २५६ देखिये)।

रोगज-जायु।—Nosodes.

रोगज-जायु-विधान।—हैजा, प्लेग आदि संक्रामक रोगोंका विष (virus) या बीज (bacilli)—जैसा, उसका रस, पीव, रक्त आदि—शरीरमें प्रवेश कराकर उन रोगोंको हटाने या प्रतिकार करनेकी चिकित्सा-प्रणाली (Isopathy)।

विज्ञान।—परीक्षण और पर्यवेक्षण-मूलक विशेष-ज्ञान (Science)।

विधान।—शरीर-यन्त्रका निर्माण या गठन (Structure)।

विधान-तन्तु।—जीव-देहके गठनके उपयुक्त सूतकी तरह उपादान (Tissues)।

विवर्त्त या विवर्त्तन।—परिवर्त्तन (Evolution) "अभिव्यक्ति" शब्द देखिये।

विवर्त्त-दर्शन।—Philosophy of evolution.

विवर्त्त-वाद।—Theory of evolution ("अभिव्यक्ति वाद" शब्द देखिये)।

विवर्तमतोद्भावयिता।—The originator of evolutionism.

विमर्द्दन।—चूर करना (Process of Trituration)।

विश्लेष।—वियोग या विच्छिन्नकरण (Analysis)।

विषघ्न औषध।—Antidotal remedies.

विषमगुण औषध।—In-compatible or inimical remedies.

विषम ज्वर।—जिस ज्वरकी विराम अवस्था कम या दीर्घकाल स्थायी होती है।

विसदृश विधान।—Antipathy.

वेग।—गतिका परिमाण अर्थात् प्रति सेकेण्ड दूरी जितना फुट बढ़ती या घटती है, उसी परिमाणको "वेग" Velocity कहते हैं। जैसे—घोड़ा दो घण्टेमें (अर्थात २×६०×६० सेकेण्ड) पन्द्रह मील (अर्थात् १५×१७६०×३ फुट) जानेपर उसका वेग $\frac{१५\times१७६०\times३}{२\times६०\times६०}$ = ११ फुट प्रति सेकेण्ड।

व्याप्ति।—स्थान-व्यापकता, विस्तार (Extension)।

शक्ति।—कार्य करनेकी (अर्थात प्रतिकूल "बल" रहनेपर भी कोई चीज़ चलानेके लिये) सामर्थ्यको "शक्ति" (energy) कहते हैं। जैसे—फेंके हुए ईंटके टुकड़ेमें शक्ति है; कारण वह मध्याकर्षणके विरुद्ध बहुत कुछ बढ़ सकता है। "शक्ति" की सृष्टि या नाश नहीं है। "शक्ति" ही एक जड़ पदार्थका उपादान है ("परिशिष्ट (क)" देखिये) और "शक्ति" ही एक पदार्थसे दूसरे पदार्थमें प्रवेश करती है। बाहरके किसी पदार्थसे "शक्ति" हमारे इन्द्रिय-द्वारोंमें प्रवेश करनेपर रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, शब्द आदिके साथ हमलोग उस पदार्थका अस्तित्व अनुभव करते हैं। (इस परिभाषामें "कार्य", "गति" और "बल" शब्द देखिये)। अध्यापक लाज (Sir Oliver Lodge, LL., D., D. Sc), साहब कहते हैं, कि शक्ति ही "बल (force)" है। जनक या उत्पादक (force generator)—Lodge's Elementary Mechanics पृष्ठ १ देखिये।

पदार्थ विद्यामें कहे हुए "शक्ति" शब्दके उक्त लक्षणके प्रति नज़र रखकर होमियोपैथीमें "क्रम और शक्ति" (potency or power) शब्द एकार्थमें व्यवहृत होता आ रहा है। (पृष्ठ १४२ देखिये)।

शक्ति-तत्व या शक्तिरूप-वाद या शक्ति-विकासनवाद।—विमर्दन, द्रवीकरण, विलोड़न आदि होमियोपैथिक प्रक्रिया द्वारा, किसी दवाका स्थूल भाग (जड़ांश

या अचल भाव त्यागकर वह अपना रूप या सूक्ष्मांश (या सचल भाव) अर्थात् अन्तर्निहित "शक्ति (energy or potency)" का विकास किया जा सकता है। इसी मतका नाम "शक्ति-विकासनवाद" (Theory of potentiation or dynamisation)" १४८ पृष्ठ और इस परिभाषामें "अणु-वियोजन शब्द" देखिये।

शक्तिकृत।—Potentized.

संक्रामक रोग।—प्रत्यक्ष (direct) स्पर्श द्वारा, हो या पदार्थान्तर (जैसे—वायु, दूध, जल, खाद्य, वस्त्र, पत्र, मक्खी आदि) के द्वारा किसी मनुष्यसे दूसरे किसी स्वस्थ मनुष्यमें रोग-बीज संक्रमित (अर्थात् प्रवेश करना) होता है, उस रोगको संक्रामक (infections) रोग कहते हैं; जैसे—प्लेग, खसड़ा, चेचक। (स्पर्शाक्रमक रोग पृष्ठ २५२ देखिये)।

सङ्गठन या संश्लेष।—संयोगकरण (Synthesis)।

संश्लेष-वाद।—Scepticism.

सचल।—गति-शक्ति-विशिष्ट (Active)।

सदृश-विधान, सदृश व्यवस्था, समविधि, सम-मत, सम-शास्त्र या सम-सूत्र।—Homœopathy—The Law of Similars (The Method of Cure) पृष्ठ १२९ देखिये।

समगुण औषध ।—Allied or kindred remedies.

सर्वाङ्गीन रोग या धातुगत रोग ।—जिस रोगसे समूचा शरीर दूषित हो जाता है (अर्थात् रक्तमें दोष आ जाता है), उसका नाम "सर्वाङ्गीन रोग" या "धातुगत रोग (Constitutional disease)" है जैसे—"कठिन-क्षत उपदंश" एक "सर्वाङ्गीन रोग" है ; क्योंकि यह भयङ्कर रोग-विष (virus) किसी स्वस्थ मनुष्यके शरीरमें संक्रमित होनेपर उसमें रक्त-दोष हो जाता है (जैसे—सहवासके बाद विष सङ्गमेन्द्रियमें पहले एक जखमके आकारमें निकलता है, इसके बाद सङ्गमेन्द्रियसे वह ओंठ, अंगुली, स्तनवृन्त, नाड़ी, मलद्वार प्रभृतिके और-और अंशोंमें फैल जाता है) । "एकाङ्गीन रोग" देखिये ।

साइकोसिस ।—अवरुद्ध प्रमेह-विष (sycosis); "परिशिष्ट (ख)" देखिये ।

स्थानिक रोग ।—"एकांगीन रोग" देखिये ।

स्नायु ।—Nerves.

स्नायु-चक्र या स्नायु-मण्डल ।—Nervous system.

स्वास्थ्य-विधि ।—Hygienic rules.

सूक्ष्माणुसूक्ष्म ।—Infinitesimal,

स्पर्श-संक्रमण या स्पर्शाक्रमक रोग।—प्रत्यक्ष (direct) संस्पर्शकी सहायतासे जो रोग-बीज किसी रोगी मनुष्यसे किसी दूसरे स्वस्थ-व्यक्तिमें संक्रमित (प्रविष्ट) होता है, उसको "स्पर्शाक्रमक या लरछुत (Contagious)" रोग कहते हैं। जैसे—कर्णमूल-प्रदाह (mumps), हुपखाँसी (Whooping Cough), हैजा, इन्फ्लुएञ्जा, कुष्ठ, यक्ष्मा, डिफ्थीरिया, चेचक, रक्तामाशय, न्यूमोनिया, आन्त्रिक ज्वर प्रभृति रोग "संक्रामक" और स्पर्श-संक्रमण" (दोनों प्रकारके धर्मसे भरे) रोग हैं। "संक्रामक" रोग पृष्ठ २५३ देखिये।

"स्वतः जनन"।—A biogenesis of spontaneous generation.

स्वयम्भूत।—Idiopathic.

N. B.—अन्यान्य पारिभाषिक अथवा दूरूह शब्दोंका अर्थ ग्रन्थमें यथा-स्थान लिखा गया है।



हमारी प्रकाशित अन्यान्य हिन्दी पुस्तकें

(१) संक्षिप्त पारिवारिक चिकित्सा ।—२२४ पृष्ठ कागज़ जिल्द १॥)

(२) स्त्री-रोग चिकित्सा—(सचित्र) समस्त स्त्री-रोगोंका इलाज। ५०० पृष्ठ। सजिल्द ३)

(३) होमियोपैथिक सार-संग्रह ।—जेबी गुटका साइज़। ४७० पृष्ठ मूल्य १)

(४) पारिवारिक भेषज-तत्व ।—१६०० पृष्ठ, सुन्दर सजिल्द मूल्य ५)

(५) जननेन्द्रियके रोग (सचित्र) ।—मूल्य १)

(६) नरदेह-परिचय ।—१८६ पृष्ठ, मूल्य—१॥)

(७) हैजा चिकित्सा ।—३१२ पृष्ठ। सजिल्द १।)

(८) बायोकेमिक चिकित्सा-सार ।—मूल्य १)

(९) भेषज-विधान ।—पृष्ठ २७४। मूल्य १।)

(१०) ऐलेन्स कीनोट्स—मूल्य ३॥)

(११) भेषज-लक्षण-संग्रह ।—दो खण्ड। मूल्य १७)

(१२) आर्गेनन होमियोपैथी-विज्ञानका शिक्षक, मूल्य २॥)

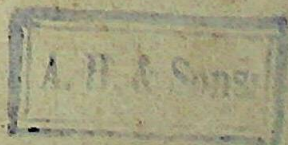
(१३) कीएट मेटिरिया-मेडिका ।—खूब सरल भाषामें हिन्दी भाषान्तर पृष्ठ—१४८४ दो खण्डोंमें—१८)

इनके अलावा अङ्गरेजी उर्दू, गुजराती, उड़िया आदि भाषाओंमें भी ग्रन्थ तयार हैं।

पता :—एम० भट्टाचार्य एण्ड को०

इकानमिक फार्मेसी, ८४ नं० क्लाइव स्ट्रीट, कलकत्ता।


537
1.4.86
निजी पुस्तकालय


A. H. & Sons